श्री नाथ रहस्य

(खण्ड १-२-३)



लेखक-योगी विलासनाथ

प्रकाशक-

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार



आशीर्वाद

आशीर्वाद

श्री श्री १००८ श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ गद्दी मठ अस्थल बोहर की असीम कृपा से यह पुस्तक नाथ सम्प्रदाय के सभी योगेश्वरों एवं अनुयायी भक्तजनों के उपयोगार्थ (उपासना हेतु) सिद्ध परम्पराओं की जानकारी रखने हेतु अनेक सिद्ध नाथों का आशीर्वाद प्राप्त करके योगी विलासनाथ ने जो प्रयास किया है वह यथा स्थिति के अनुसार मानव प्राणीमात्र के उपयोगार्थ कर्मकाण्ड एवं जीव शिव के मिलन हेतु योग परम्परा की जानकारी देते हुए यथा योग्य समझ कर यह आशीर्वादात्मक दो शब्द यह लिखकर देते हैं कि भविष्य में विलासनाथ इससे भी अधिक उन्नति करेगा ताकि सभी मानव प्राणीमात्र को सिद्ध योगी सम्प्रदाय की जानकारी होवे।

इति शुभम्!

योगी आनन्दनाथ

महामंत्री

अवधूत योगी महासभा

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार

भूमिका

सृष्टि के आध्यात्म क्षेत्र में परमार्थ प्राप्ति, इष्ट प्राप्ति तथा सिद्धि प्राप्ति, मोक्ष, मुक्ति की प्राप्ति, जिसमें मन्त्रानुष्ठान, तन्त्र विधि विधान, साधना, पूजा–पाठ इत्यादि कर्मों की अखण्ड एवं अनन्त महिमा है।

हमारे नाथ सिद्धों ने ऐसे ही मन्त्र योग, तन्त्र योग, हट योग, लय योग, नाद योग, ज्ञान योग इत्यादि साधनाओं के द्वारा परम परमात्मा अलख निरन्जन का साक्षात्कार प्राप्त किया है। अपने सिद्ध सद्गुरुजी एवं विराट शक्तियों द्वारा अनुग्रहीत अनुष्ठान से साधक परम पद, मोक्ष, मुक्ति तक प्रतिष्ठित हो जाता है।

इस पावन भूमि पर मानव मात्र प्राणी पूजा साधना कर्म किये बिना नहीं रह सकता। वह किसी न किसी की पूजा अवश्य करेगा। कोई मातृ–पितृ या सद्गुरुजी की सेवा पूजा करता है तो कोई भाई, बहन, पति, पत्नी, मित्र, अतिथि की सेवा पूजा करता है या कोई अपनी मातृभूमि, गांव देश इत्यादि की सेवा पूजा करता ही है। बिल्कुल सहजता से किसी न किसी रूप में किसी न किसी की सेवा पूजा जरूर करेगा। विशेषतः विभिन्न देवी देवता एवं अपने इष्ट की पूजा साधना बड़ी श्रद्धा से करते हैं। यह एक उत्तम संस्कार है जहां सद्हृदय प्रेम–भक्ति–वात्स्यल्य एवं परम शान्ति का अटूट सत्य अनुभव होता है। इस कर्मों द्वारा सह–आदर, सदाचार, सद्गुण, शिष्टाचार शिस्त एवं आध्यात्मिक शाश्वत आनन्द की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार की पूजा पाठ साधना कोई सत्य–अविनाशी एवं शाश्वत की करते हैं तो कोई असत्य–अनित्य नाशवत एवं अशाश्वत की करते हैं। कोई शास्त्रीय करते हैं तो कोई अशास्त्रीय करते हैं या तो कोई मनमानी से करते हैं, कोई–कोई तो भ्रम में लिप्त हो जाते हैं।

अतः शास्त्रों में तीन प्रकार की होती है पूजा पाठ साधना, एक तो वैदिक विधि से होती है, दूसरी तान्त्रिक विधि से होती है और तीसरी वैदिक तान्त्रिक दोनों विधि से होती है। शास्त्रोक्त तन्त्रों में, वैदिक, शाबर, बौद्ध

कापालिक कौल विद्या घोर–अघोर तिब्बतीय तन्त्र तथा विभिन्न भाषाओं में इत्यादि तन्त्र–मन्त्रों का समावेश है और यह पूजा पाठ साधना करने का अधिकार शास्त्र विधि विधान जानने वाले को ही होता है। विशेषत: सद्गुरु प्राप्त साधक को।

अत: इन पूजा साधनाओं में या भक्ति साधना में या कर्म साधनाओं में या किसी भी प्रकार के सेवा साधनाओं में मुख्यत: तीन भागों में विभाजन होता है–

(१) सात्विक साधना

(२) राजसी साधना

(३) तामसी साधना

(१) सात्विक साधना–बिल्कुल नि:स्वार्थ होती है, जिससे साधक अन्त में मोक्ष मुक्ति को प्राप्त होता है।

(२) राजसी साधना–इसमें साधक का कोई न कोई स्वार्थ अवश्य होता है जिससे पुण्य प्राप्ति पाकर भविष्य में स्वर्ग सुखों को प्राप्त होता है। किन्तु जब तक पुण्य संचय साधक के पास होता है तब तक ही वह स्वर्ग सुखों का भागी होता है। आगे फिर वही जन्म–मृत्यु के चौरासी योनि चक्र में आना पड़ता है।

(३) तामसी साधना–यह साधना शास्त्रों के या धर्म के विरुद्ध करते हैं। जो नीति नियम बाह्य होती है। इससे साधक अन्त में दु:ख, क्लेश को प्राप्त होता है।

अत: शास्त्रीय पूजा अर्चना, विधि विधान कर्मकाण्ड एवं साधना करने हेतु नाथ सिद्ध महात्मा, सन्तगण तथा साधक भक्त सेवकों एवं समस्त मानव प्राणीमात्र की आकांक्षा–आग्रह को मद्देनजर रखते हुए मेरे सद्गुरु जी योगी आनन्दनाथ जी (महामंत्री–योगी महासभा) इन्हीं की कृपा–आदेश प्राप्त होने पर मैंने यह "श्री नाथ रहस्य" नामक ग्रन्थ की रचना करने का प्रयास किया है। यह मेरा अहोभाग्य है कि मेरे सद्गुरुजी की असीम कृपा आशीर्वाद से यह परिश्रम करने का अवसर मुझे मिला।

कलियुग में शाबरी मन्त्र–तन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली एवं कल्याणकारी हैं। पूर्वकाल में परम ईश्वर आद्य पुरुष योगी आदिनाथ जी और उन्हीं के शिष्य माया रूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी इन्होंने शाबरी मन्त्रों की रचनायें की थी तथा क्षेत्र त्र्यम्बक अनुपान शिला (महाराष्ट्र) एवं दुल्ल धर्मराज गद्दी पर बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने नवनाथ एवं अनन्त कोटि सिद्धों को इस शाबरी मन्त्र–तन्त्र का ज्ञान–ध्यान का पाठ सुनाया था और भी कुछ मंत्र रचनायें माँ बिमला, योगिनी, शक्ति पार्वती स्वरूपी उदयनाथ तथा नागार्जुन नाथ जी इत्यादि नाथ सिद्धों ने भी की थी। अतः यहां कुछ पुराने हस्तलिखित मन्त्र कुछ प्राचीन गुप्त एवं गोपनीय मन्त्र तथा कुछ हमारे नाथ सिद्धों द्वारा प्राप्त किये हुये मन्त्र रचनायें इन सबकी सुचारू बद्ध रचना शाबर मन्त्र विधि विधान इस ग्रन्थ में विस्तृत रूप से की है जिसके तीन खण्डों में विभाजन किया है।

प्रथम खण्ड में आपको नाथ सिद्धों का नित्यकर्म, श्री गणेश–गौरी, मुख्य कलश (चौकी) इनका स्थापना पूजन तथा नाथ सिद्ध योगियों की शक्ति पूजन तथा यन्त्र, श्री नाथ सिद्धों का परम्परा पूजन, साधक कर्म, नवनाथ चौरासी सिद्धों का यन्त्र एवं विधि विधान पूजन, श्री सर्वतो महारुद्र चक्र, विशेषतः श्री नाथ सिद्ध यन्त्र का सम्पूर्ण विवरण, गुरु गोरक्षनाथ जी का सम्पूर्ण रूप से पूजन एवं उनका शाबरी बीज मन्त्र का अनुष्ठान तथा ज्ञान चालीसा, ज्ञान तिलक आदि ज्ञानों के पाठ का समावेश है।

द्वितीय खण्ड में श्री नाथ सिद्धों का धूना एवं हवनादि पूर्ण विवरण, प्रातः संध्या आरती वर्णन तथा पारम्परिक नाथ सिद्धों का भण्डार घर (ऋद्धि–सिद्धि) का सम्पूर्ण विधि विधान प्राप्त होगा; कुछ पंचतत्व, योगिक सिद्धि साधना एवं तन्त्र–मन्त्र सिद्धि साधना का विधि विधान प्राप्त होगा। श्री नाथ जी की शब्दियां एवं विभिन्न अभिषेक तथा निद्रा के विधि नियम इत्यादि विषय की जानकारी विस्तृत भाव से प्राप्त होगी।

तृतीय खण्ड में प्रचलित नाथ शब्द निवृत्ति, सद्गुरु महिमा एवं यन्त्र, गुरु–चेला (शिष्य) बनाने की विभिन्न विधि नियम नवनाथ उत्पत्ति, अनेकों

गायत्रियाँ, नवनाथ बोध, शाबर मन्त्र महिमा, शाबर मन्त्रों द्वारा नाथ साहित्य त्रिशूल, खप्पर, चिमटा इत्यादि को सिद्ध करने की विधियां तथा गोरक्ष किल, मोहम्मद बोध जैसे प्रधान मन्त्रों के विधि नियम, नाथ सम्प्रदाय के बारह पंथ वर्णन तथा हरिद्वार, इलाहाबाद, उज्जैन एवं त्र्यम्बक क्षेत्रों में नाथ सिद्धों की महाकुम्भ पर्व के विधि विधान, पात्र—छत्र पूजन, ५१ शक्ति पीठ, नाथ सिद्धों की जमात तथा मृत्यु उपरान्त नाथ सिद्धों की समाधि क्रियाओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी। अन्त में नाथसिद्धों की बोली—भाषा, कोड भाषा एवं सम्पूर्ण पूजा—पाठ विधि की साहित्य सूची इत्यादि का बहुत ही रोचक एवं सुचारुबद्ध विश्लेषण का लाभ होगा।

अतः यह कहते हुये हर्ष होता है कि गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर के पीठाधीश्वर श्री महन्त योगी अवेद्यनाथ जी सभापति—योगी महासभा (पूर्व सांसद लोकसभा) इन्हीं की कृपा आशीर्वाद से एवं सद्हृदय प्रेरणा से मेरा यह प्रयास सफल रहा।

हमारे गुरु गद्दी अस्थल बोहर (हरियाणा) के महासिद्ध श्री बाबा मस्तनाथ मठ के मठाधीश सिद्ध योगी महन्त चांदनाथ जी महाराज (उपसभापति योगी महासभा) इन्हीं की कृपा एवं शुभाशीर्वाद से मुझे इस लक्ष्य की प्राप्ति हुई है।

इस ग्रन्थ के साधना द्वारा सगुण अर्थात् द्वैत सिद्धान्त से निर्गुण अर्थात् अद्वैत सिद्धान्त की प्राप्ति हो सकती है। इस ग्रन्थ के अन्तर्गत देवी—देवता नाथ सिद्धों के पूजन द्वारा कर्म योग एवं भक्तियोग का लाभ होगा, तो मन्त्र तन्त्र अनुष्ठानादि द्वारा ध्यान योग का लाभ होगा तथा तन्त्र सिद्धियों द्वारा तन्त्रयोग का लाभ होगा तो यौगिक सिद्धियों द्वारा समाधि योग, हटयोग, लय योग की प्राप्ति होगी, उसी प्रकार ज्ञान पाठों द्वारा ज्ञान योग का अनुभव होगा।

इस ग्रन्थ में नाथ सिद्ध सम्प्रदाय की समूची सभी गुप्त एवं अत्यन्त गोपनीय प्रकार की कर्म—साधना एवं अनुभव का सम्पूर्ण विवरण मिलेगा। जहां जो भी आवश्यकता हो वहां वह चित्र—आकृति द्वारा रचनायें सरलता

से जानकारी देने का प्रयास किया है। यह तीनों खण्डों की कर्म–विधि साधना साधक अखण्ड अनुष्ठान करके शुरु से लेकर अन्तिम तक सम्पूर्ण विधि विधान कर सकता है। जिसका रचना चित्र पृष्ठ संख्या ६४२ पर दिया है। उसी प्रकार साधक यह विधि विधान पृथक–पृथक भी समय अनुसार कर सकता है। इसमें धनवान धन द्वारा विस्तृत रूप में विधि कर्म कर सकता है तो विरक्त या सर्वसाधारण व्यक्ति भी केवल विभूति द्वारा एवं मानस कर्म द्वारा विधि विधान कर सकता है। इस प्रकार की सुविधा के कारण साम्प्रदायिक एवं सामाजिक कोई भी व्यक्ति इससे लाभान्वित हो सकता है। इस ग्रन्थ में मन्त्र–तन्त्र पूजन पाठ विधि विधान एवं साधना इत्यादि सभी उच्चारण, अर्थपूर्ण और साधना सरल भाषा में वर्णित है, इसलिये सर्वसाधारण व्यक्ति को भी सुलभता से जानने का या करने का अवसर अवश्य मिलेगा।

इस ग्रन्थ रचना कार्य में मेरे गुरु भाई योगी राकेशनाथ जी (सहायक मंत्री योगी महासभा) योगी प्रमोदनाथ जी (प्रबन्धक), योगी मोतीनाथ जी (उपप्रबन्धक) योगी देवनाथ जी (सम्पादक आदेश जगत) एवं मेरे नाथ साम्प्रदायिक नाथ सिद्ध महात्माओं ने सद्‌हृदय सद्‌प्रेरणा दी। अतः इन सभी का मैं सविनय आभारी रहूंगा।

मुझे पूर्ण आशा है कि सभी सिद्ध योगेश्वर, सन्त, भक्तगण इस ग्रन्थ से लाभान्वित होंगे।

टंकण में हुई अशुद्धियों के लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

योगी विलासनाथ

(योगी विलासनाथ–पुजारी)

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, हरिद्वार

अनुक्रमणिका

(प्रथम खण्ड)

चित्र

शाबर मन्त्र अनुक्रमणिका

(प्रथम खण्ड)

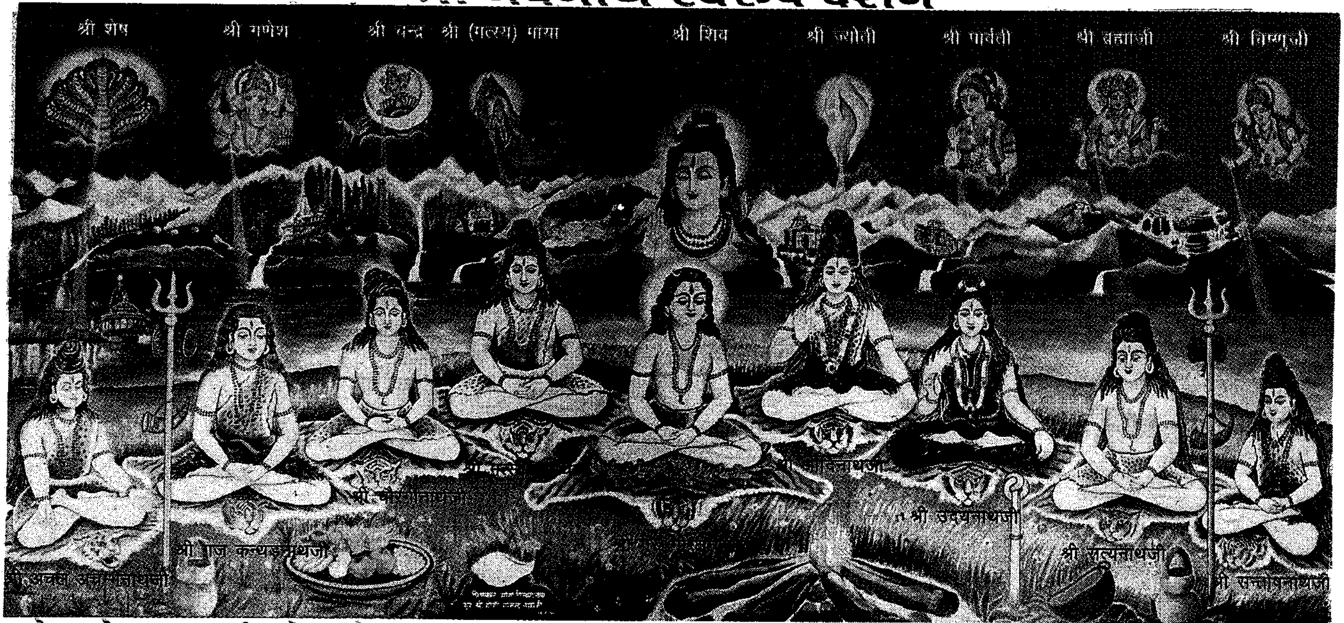
(द्वितीय खण्ड)

(तृतीय खण्ड)

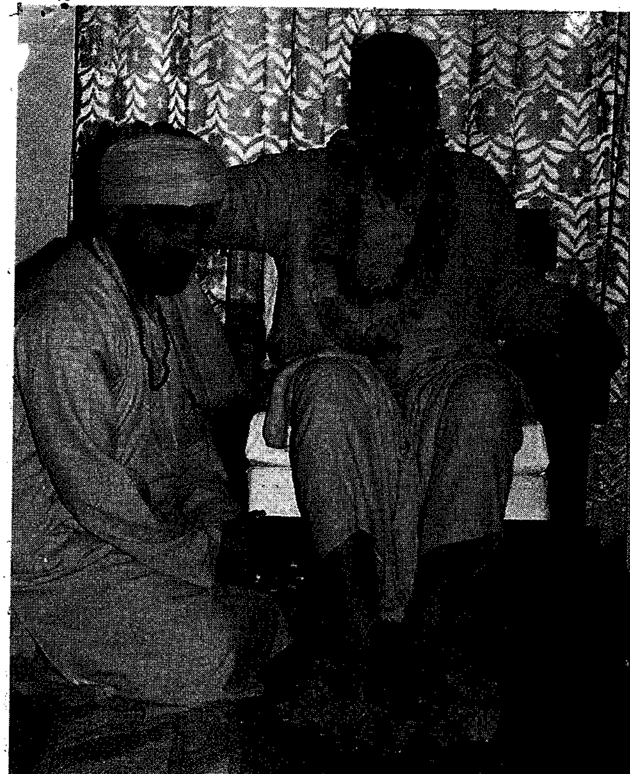
इतना शाबर मन्त्र अनुक्रमणिका समाप्त

सूचना-अनुक्रमणिका में (*) इस चिन्ह के मन्त्र दुबारा लिख दिये हैं।

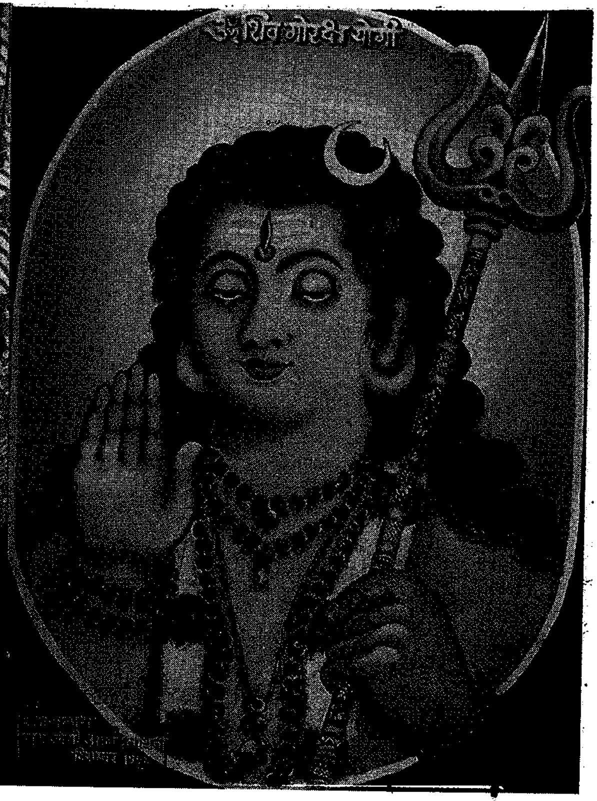
श्री नवनाथ स्वरूप दर्शन



सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐकार आदिनाथ (ॐकार) ज्योति स्वरूप बोलिये। उदयनाथ पार्वती (धरती) स्वरूप बोलिये। सत्यनाथ ब्रह्मा जी (जल) स्वरुप बोलिये। सन्तोषनाथ विष्णुजी (खड्ग खाण्ड़ा तेज) स्वरुप बोलिये। अचल—अचम्भेनाथ शेष (वायु) स्वरुप बोलिये। गजबेलि गज कंथड़नाथ गणेशजी (गजहस्ती) स्वरुप बोलिये। ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ चन्द्रमा (अठारह भार वनस्पति) स्वरुप बोलिये। माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ (मत्स्य) माया स्वरुप बोलिये। घटे पिण्डे नव निरन्तरे रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ शिव (बाल) स्वरुप बोलिये। *श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।*



सत्गुरु कृपा



श्री गुरु गोरक्षनाथ जी

ॐ शिव गोरक्ष योगी

श्री योगी विलासनाथ (पुजारी)

गुरु श्री सिद्धयोगी आनन्दनाथ जी (महामन्त्री)

विरचिता

श्री नाथ-रहस्य

(प्रथम खण्ड)

साधक तथा योगेश्वरों का प्रतिदिन अखण्ड-नित्यकर्म

साधक तथा योगेश्वर प्रातः चौथे प्रहर में उठकर अपने आसन पर पदमासन सिद्धासन, गोरक्षासन इ० अपने अनूकूल आसन में शरीर को बिल्कुल सीधा रखते हुये बैठ जाये। अपनी आंखों की दृष्टि दोनों भौंओं के बीचों बीच कपाल भ्रूमध्य में स्थिर करे। अपने शरीर में हंस मन्त्र जपा-अजपा का अभ्यास करे। अर्थात यह जपा-अजपा का जाप इक्कीस हजार छैसो स्वांस संख्या नित्य निरंतर चलती रहती हैं।

अतः साधक प्रथम अपने सतगुरुजी का स्मरण करे फिर गुरु मन्त्र का जाप करे या गुरु गोरक्षनाथ जी के बीज मन्त्र का ध्यान करें।

बीज मन्त्रः- "ॐ शिव गोरक्ष योगी"

तथा गुरु गोरक्षनाथ जी के द्वादश नाम का सुमिरण करें।

गुरु गोरक्ष द्वादश नाम जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। श्री शंभुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी के द्वादश नाम तै कौन-कौन बोलिये। ॐ गुरुजी प्रथमे निरंन्जननाथ जी द्वितीय श्री सुधबुधनाथजी, तृतीय श्री कलेश्वरनाथ जी चतुर्थ श्री सिद्ध चौरंगी नाथ जी, पंचमे श्री लालग्वाल नाथ जी, षष्टमे

श्री विमलनाथजी, सप्तमे श्री सर्वांगनाथ जी, अष्टमे श्री सत्यनाथजी नवमे श्री गोपालनाथजी, दशमे श्री क्षेत्रनाथजी, एकादशे श्री भूचरनाथजी द्वादशे श्री गुरु गोरक्षनाथजी। ॐ नमो नमो गुरुदेव को, नमो नमो सुखधाम। नामलिये से नर उबरे, कोटि कोटि प्रणाम।। इति श्री शम्भुजती गोरक्षनाथ जी के द्वादश नाम पठन्ते हरन्ते पाप मोक्ष मुक्ति पदे पदे।

नादमुद्रा जोति ज्वाला पिण्ड ज्ञान प्रकासते।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अत: साधक नवनाथ नाम स्वरुप का जाप करें।

नवनाथ स्वरुप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐकार आदिनाथ ॐकार स्वरुप बोलिये। उदयनाथ पार्वती धरत्री स्वरुप बोलिये। सत्यनाथ ब्रह्माजी जल स्वरुप बोलिये। सन्तोषनाथ विष्णुजी खड़ग–खाण्डा तेज स्वरुप बोलिये। अचल अचम्भेनाथ आकाश स्वरुप बोलिये। गजबेलि गजकन्थडनाथ गणेश जी गज हस्ती स्वरुप बोलिये। ज्ञानपारखी सिद्धचौरंगी नाथ अठारह भार बनस्पति स्वरुप बोलिये। माया रुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ माया स्वरुप बोलिये। घटे पिण्डे नव निरन्तरे सम्पूर्ण रक्षा करन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाल स्वरूप बोलिये। इतना नौनाथ स्वरुप मन्त्र सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहाया नाथजी गुरुजी आदेश।

तदनन्तर योगेश्वर ने धरत्री गायत्री का जाप करके अपने नासिका कि बायां स्वर चले तो प्रथम बायां पैर या दायां स्वर चले तो दायां पैर अथवा दोनों स्वर चले तो दोनों पैर धरती के ऊपर रखें और नमस्कार करें।

धरत्री गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐगुरुजी! आद अलील अनाद उपाया सत्यकी धर्ती जुहारलो काया, पहले जल, जल पर कमल, कमल पर मच्छ, मच्छ पर कोरम कोरम पर वासुकी, वासुकी पर धौल बैल धौल बैल पर सींग, सींग पर राई, राई पर श्री नाथजी ने नवखण्ड पृथ्वी ठहराई। प्रथमे धरत्री द्वितीये विश्वंभरा तृतीय मेरु मेदिनी, चतुर्थे चतुर्भुजी, पंचमे कृतिका, षष्टमे

ब्रह्मचण्डी, सप्तमे शिवकुमारी, अष्टमे बाला बज्रजोगिनी नवमे नवदुर्गा दशमे सिंहभवानी एकादशे मृतिका नाक द्वादशी वरदायनी। माता धरत्री पिता आकाश, पिण्ड प्राण का तो पर वास। तोपर टेकू दोनों पांई, आगमदे मैलागू पाई॥ धर्ती माता तू बड़ी तुमसे बड़ा न कोय। जो पग टेकू तोपर मोपर कृपा सुहोय॥ धर्ती द्वादश नाम पठै गुणै मनमे धरे। जोगी का सब काम, सिद्ध होय वाचा फुरै। इतना धरत्री गायत्री द्वादश नाम जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटि सिद्धों में श्री नाथजी ने कहा श्री नाथजी गुरुजी को आदेश दादा मत्स्येन्द्रनाथ की पादुका कौ नमस्ते नमः। औषधी पूरित पात्र दधाना सुमुखाम्बुजा सर्व सस्यालया शुभ्रा भूदेवी शरण भजे॥ समुद्रवसने देवी। पर्वत स्तनमण्डले॥ विष्णुपत्नी नमस्तुभ्य पाद स्पर्श क्षमस्व मे॥ अतः पांव उठाते समय निम्न मन्त्र पढ़े।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जिस दिशा को सुर वहत चलै, अवर चलनको चित्तु। सोई पग आगे धरौ वेद कहे यहु हित्तु॥ चारी मंगला पांचों रवि प्रियणे शशि सूर। गोरख जोगी भाखिया यही जीवन का मूर॥

यह प्रक्रिया होने के बाद धरत्री पर पांव रखे तथा धरत्री माता को नमस्कार करे। अतः निम्न जल मन्त्र से हाथ पांव धोये तथा पानी पीवे।

जल मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विदमहे नील पुरुषाय धी मही तन्नो अलील प्रचोदयात। नाथजी गुरु जी को आदेश।

अतः श्री गणेश मन्त्र से काया शुद्ध करे।

गणेश मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ मूल चक्रको करलो पाक परसो परम ज्योति प्रकाश। गणपत स्वामी सनमुख रहे, सुद्धि बुद्धि निर्मली गहे॥ गमकी छोड़ अगमकी कहे। सतगुरु शब्द भेद पर रहे॥

ज्ञान गोष्टि की काया थर्पी सतगुरु दियो लखाय। मूल-महल में पिण्डक जड़िया गगण गरजियो जाय॥ ॐ गणेशाय विद्यहे महागणपताये धीमही तन्नौ एक दन्तः प्रचोदयात ! इति गणेश गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया अनन्त कोटि सिद्धों में बैठकर गुरुगोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथकर सुनाया। नाथजी गुरुजी को आदेश।

अतः नेती धोती निपटकर अन्य योगेश्वर आसन तथा योगासन करते हैं। श्री योगेश्वरों के एक सौ पचहत्तर योगासन है। नित्य प्रतिदिन योगेश्वर आसन प्राणायाम क्रियायें करते हैं और शरीर अपने वश में रखते हैं जिससे शरीर में स्थायी आरोग्य स्फूर्ति की प्राप्ति होती है। योगासन योग साधनों में बहुत सहायक हैं। आसन सिद्ध होते हैं और शरीर की जीवनी, शक्ति, अग्नि और बिन्दु नष्ट नहीं होते।

"निश्चल आसन पवना ध्यान ध्यान अगनी ब्यंद न जाई।"

अतः साधक आवश्यक उतने ही आसन करे। कुछ योगी मुद्राओं का अभ्यास करते है। जो कि मुद्रायें सिद्धि प्रद होती हैं।

अतः निम्न मन्त्र पाठ से साधक स्नान करे तथा अलील गायत्री का पाठ करे।

स्नान मन्त्र

ॐ हर गंगे हर नर्मदे हर जटा शंकर। काशी विश्वनाथ गंगे, गंगा, गोदावरी तीर्थ बड़े प्रयाग। छालाबड़ी समुद्र की पाप कटे हरिद्वार॥ ॐ गंगेय ॐ यमुने चैव गोदावरी सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी, जल स्नान च करु॥ सत्यशील दोय स्नान तृतीय गुरु वाचकं। चतुर्थ क्षमा स्नान, पंचम दया स्नान॥ ये पांच स्नान निर्मल नित प्रति करत गोरषबाला। जो जानो स्नान ध्यान का भेद आपही कर्ता आपहि देव॥

तथा साधक अलील गायत्री और शिव गाथत्री का पाठ करे और जल अर्पण तर्पण करे।

अलील गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। तन मंजन जल देवता, मन मंजन गुरु ज्ञान। हाथ मंजन को धर्तरी, अलख पुरुष का ध्यान॥ जागो जल थल आत्मा जागो अलील देव। जोगी आया करमकूचा वसेदरस परस की टेव॥ अलील गायत्री सबसे न्यारी, माता कुवारी पिता ब्रह्मचारी। पीया अलील बांधा बंध, बाला जोगी थिरहै कंध॥ उलटन्त अलील पलटन्त काया जति गुरु गोरखनाथ चलाया। सेत पुरुष अलील निधान, अविचल आसन निहचल ध्यान॥ आद अलील अनाद अलील तारण अलील तरण अलील। अलीलाय विद्महे महा अलीलय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात॥ इति अलील गायत्री सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटि सिद्धों में बैठकर श्री नाथजी गुरुजी ने कहायी॥ श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: शिव गायत्री का पाठ करे और तर्पण करे।

शिव-गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी, जल का दान, जल का स्नान, जलमे ऊपना ब्रह्मज्ञान। जल ही आवै जल ही जाय, जल ही जल में रहया समाय॥ जल ही ऊंचा जल ही नीचा, उण पाणी सौ लीजै सींचा। भूख्याकू अन्न प्यास्याकू पाणी तहां आये गुरु गोरख निरवाणी॥ पिणा पाणी उत्तम जात, जैसा दीवा तैसी वात। जल में ब्रह्मा, जल में शिव, जल में शक्ति, जल में जीव॥ जल में धर्ती, जल में आकाश, जल में जागे ज्योति प्रकाश। जल में निरन्जन अवगति रुप, जागी ज्योत जहां अटल अनूप॥ जहां से उपनी शिव गायत्री, तार तार माता शिव गायत्री। अघोर पिण्ड पडंता राख ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख। जपो शिव गायत्री सारे प्राणी पावै मोक्ष द्वार। जोगी जपे जोग पट ध्यावे राज जपे राजे पद पावे गृही जपे भण्डार भरती दूधपूत सत धरम फलती। जो फल मागू फल होय, शिव गायत्री माता सोय॥ इतना शिव गायत्री मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र कौलागढ़ पर्वत अनुपान शिला कप्लवृक्ष तहा गादी पर बैठे श्री शम्भुजती गुरु

गोरखनाथजी ने नौनाथ चौरासी सिद्ध अनन्त कोट सिद्धों को कथ पढ़ के सुनाया। सिद्धों गुरुवरों को आदेश। आदेश।

साधक-योगश्वरों ने अपने कुल देवता तथा देवी देवताओं का जल तर्पण करे और धूना कक्ष में जाकर बभूत चढ़ाके योगेश्वर भस्म गायत्री मन्त्र से बभूत रमाते हैं तथा भस्म गायत्री महात्म का तथा योग गायत्री का पाठ करते हैं।

भस्म गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। बभूत माता बभूत पिता, बभूत तरण तारणी। मानुषते देवता करे, बभूत कसट निवारणी। सो भस्मती माई, जहा पाई तहा रमाई। आदके जोगी अनादकी बभूत सत के जाती धरम के पूत ॥ अमृत झरे धरती फरे, सो फल माता गायत्री चरे। गायत्री माता गोवरी करी, सूरज मुख सुखी अग्नि मुख जरी। अष्ट टंक बभूत नवटंक पाणी, ईश्वर आणी पार्वती छाणी सो भस्मती हस्तक ले मस्तक चढ़ी। चढ़ी बभूत दिल हुवा पाक, अलख निरन्जन आपो आप इति भस्म गायत्री सम्पूर्ण भया नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

इसके बाद योगेश्वर भगवा बाना पहनते हैं। भगवा बाना भगवा मन्त्र पढ़कर या गोरक्ष गायत्री से पहनते हैं।

भगवा धारण करने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ सोंह धुन्धुकारा-शिव शक्ति ने मिल किया पसारा,नख से चीर भग बनाया- रक्त रुप में भगवा आया। अलष पुरुष ने धारण किया। तब पीछे सिद्धों को दिया। आवो सिद्धों धरो ध्यान, भगवा मन्त्र भया प्रणाम इतना भगवा मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश।

तद पश्चात नाद जनेऊ मन्त्र द्वारा जनेऊ पहनते हैं।

नाद जनेऊ मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी आदि से शून्य, शून्य में ओंकार आवो सिद्धों नाद बिन्द का करो विचार। नादे चन्द्रमा, नादे सूर्य

नाद रहा घट पिण्ड भरपूर । नाद काया का पेखना, बिन्द काया की राह । नादे बिन्दे योगिया तीनों एक स्वभाव । बाजे नाद भई प्रतीत, आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी अतीत । नाद बाजे-काल भागे, ज्ञान टोपी गोरक्ष साजे । डंकनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्दाई, बाडे घाटे टल्ल जागे । सुन सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई टिल्ला शिवपुरी का स्थान-चार युग में मान, मूल चक्र मूल थान । पढ़ मन्त्र योगी नाद बजाने, छत्तीस भोजन अमृत कर पावे । बिना मन्त्र योगी नाद बजावे, तीन लोक में कहीं ठौर न पावे । जो जाने नाद बिन्द का भेद- आप की कर्ता आपही देव । संध्या शिवपुरी का बेला अनन्त कोटी सिद्धों का युग युग मेला । इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण भया । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश ।

तदपश्चात योगेश्वर रुद्राक्ष, मृगछाला इ० का मन्त्र द्वारा धारण करते हैं । योगेश्वरों के प्रत्येक क्रियाओं के मन्त्र होते हैं । अर्थात वह मन्त्र तथा पाठ कण्ठस्थ करते हैं । अतः धूना कक्ष में अपने कर्म के बाद योगेश्वर गोरक्ष गायत्री का पाठ करते हैं ।

गोरक्ष गायत्री

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी ॐ कारे शिव रुपी संध्या ने साध रुपी मध्याने हंस रुपी हंस-परमहंस द्वि अक्षर गुरु तो गोरक्ष-काया तो गायत्री ॐ तो ब्रह्मा सोंह तो शक्ति, शून्य तो माता, अवगति पिता, अभय पंथ अचल पदवी निरन्जन गोत्र अलील वर्ण विहगंम जाति असंख-प्रवर अनन्त शाखा सूक्ष्म वेद, आत्म ज्ञानी ब्रह्मज्ञानी श्री ॐ गो गोरक्षनाथाय विद्महे शून्य पुत्राय धी मही तन्नो- गोरक्ष निरंजन प्रचोदयात्, इतना गोरक्ष गायत्री पठयन्ते हरते पाप श्रूयते सिद्धि निश्चय । जपन्ते परम ज्ञान अमृतानंद मनुष्याते ॥ नाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश ।

ॐ ह्रीं श्री हुं फट् स्वाहाः ॥
ॐ ह्रीं श्री गो गोरक्ष हुं फट् स्वाहाः ॥
ॐ ह्री श्री गो गोरक्ष निरंजनात्मने हुं फ़ट् स्वाहाः ।

इस प्रकार योगेश्वर प्रातः को नित्यकर्म करते हैं । धूने पर सभी अधिकारी

महन्त पीरों को और योगेश्वरों को तथा धूनामाता को आदेश करते हैं तथा मन्त्र और पाठ के पश्चात् अपने–अपने कक्ष में जाते हैं।

धूनी के पुजारी अपने पूजा पाठ में व्यस्त होते हैं। मन्दिर के पुजारी अपने गुरु गोरक्षनाथ जी की पूजा में कार्यान्वित होते हैं। नाथ भण्डारी अपने भण्डार कर्म में व्यस्त होते हैं। तपस्वी आसन लगा के अपने योग क्रिया में लगते हैं। पीर जी महन्त जी अपनी सिद्ध गादी पर उन्मनी ध्यान में लग जाते हैं। इत्यादि कारोबारी मठ सेवाधारी शिष्य साधक अपने–अपने कार्य साधना में रत होते हैं।

अत: साधक इसी विधि द्वारा स्नान–ध्यान पूजा करें और अपने पूजा पाठ विधि को प्रारम्भ करें। अर्थात् श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी की षोडशोपचार पूजा पाठ को प्रारंभ करें।

यह गुरु गोरक्षनाथ पूजा पाठ विधि श्रावण मास में सोमवार के दिन को प्रारंभ करे तथा भाद्रपद, अश्विन कार्तिक इन मास में रवि, सोम, गुरुवार तथा पूर्णमासी, वरुथिनी एकादशी इन दिनों प्रारंभ करना उचित है।

प्रथम पूजा स्थल (मन्दिर या घर) में सम्पूर्ण स्वच्छ तथा शुद्ध कराके पूजा विधि की सब सामग्री साहित्य अर्जित करके पूजा आसन, श्री नाथ पूजार्थी नाथ सिद्ध पीर जी महन्त, शिष्य, योगेश्वर तथा भक्तगण के लिये आसन तथा पूजा व्यवस्था करके पूजन विधि रचना अन्तिम पृष्ठ के ऊपर दिखाया गया है। उसी मार्ग दर्शन से व्यवस्था करे।

ध्वज–स्थापन

ध्वजारोहन–प्रथम पूजा स्थल में बड़ा एवं ऊंचा ध्वज लगाये। ध्वज सवा मीटर या सवा पांच या सवा नौ मीटर भगवा या गेरुवा रंग के वस्त्र का बनाये, उसके ऊपर 'ॐ' या 'ॐ शिव गोरक्ष योगी' यह मन्त्र लिखे, अत: नाथ सम्प्रदाय के अधिकारी या अपने सद्‌गुरुजी के हस्ते (स्पर्श) कराके तथा लाल पुष्प या पुष्प माला, गुलाल धूप से पूजा करे तथा गीला नारियल फोड़े, ध्वजारोहन के पश्चात् उपस्थित सभी भक्तों को गुलाल टीका लगावे एवं प्रसाद बांटें।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की पूजा-पाठ विधि

श्री नाथ सिद्ध योगेश्वर तथा साधक पुजारी अपने अनूकूल ग्रह, अच्छे दिन एवं शुभ लग्न में अपने दैनिक नित्य क्रिया से निवृत होकर पूजा स्थल अर्थात् गुरु गोरक्षनाथ जी की मूर्ति के सामने अपना आसन कुश-मृग-ऊनी-सूती-कम्बल जो भी उपलब्ध होगा वही आसन लगावे तथा निम्न आसन ग्रहण करने का मन्त्र पढ़े। नाथ योगेश्वर मन्त्रों द्वारा आसन सिद्ध करते हैं। आसन पूजा-पाठ-जाप-साधना इत्यादि के लिये महत्वपूर्ण होता है।

आसन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी मन मारु मैदा करु, करु चकनाचूर। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो बैठू आसन पूर। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: ॐ सत नमो आदेश।

ॐ गुरुजी को आदेश।

ॐ सद्गुरुजी, नाथजी गुरुजी को आदेश।

यह पढ़कर तीन बार आचमन करे तथा तीन या नव मुख रुद्र की माला २७ दाने की अपने दाहिने हथेली में डाले। अब गुरु मन्त्र द्वारा या गोरक्ष बीज मन्त्र द्वारा ग्यारह बार प्राणायाम करें।

अत: जल गायत्री मन्त्र से जल को स्वयं अपने ऊपर तथा पूजा सामग्री के ऊपर छोड़कर सब पवित्र करे।

जल गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जल मन्जन, जल देवता, गुरु मन्जन गुरु ज्ञान। हाथ मन्जन धर्तरी अलष पुरुष का ध्यान। पानी पानी महापानी सोती काया अमर कर जानी। उड़े न हंस बिखरे न काया, शिव शक्ति ने ध्यान लगाया। ॐ अलील आदि अलील ,अलील पुरुष की माता

क्वारी, पिता यती, नित्ययोगी धरे धीर, निरोग हो काया, वज्र हो शरीर। झड़े पारा पीवे योगी उड़े काया। अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात। इतना जल गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी आदेश। आदेश।

अत: साधक योगेश्वर पूजा स्थल में प्रथम दीपक शुद्ध घी का प्रज्वलित करें तथा निम्न जोत जगाने का मन्त्र का पाठ करे।

ज्योत जगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जोत जोत महाजोत, सकल जोत जगाय, तूमको पूजे सकल संसार ज्योत माता ईश्वरी। तू मेरी धर्म की माता मैं तेरा धर्म का पूत ॐ ज्योति पुरुषाय विद्महे महाज्योति पुरुषाय धीमहि तन्नो ज्योति निरंजन प्रचोदयात्॥

अत: धूप प्रज्वलित करें।

धूप लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। धूप कीजे, धूपीया कीजे वासना कीजे। जहां धूप तहां वास जहां वास तहां देव जहां देव तहां गुरुदेव जहां गुरुदेव तहां पूजा। अलख निरंजन ओर नही दूजा निरन्जन धूप भया प्रकाशा। प्रात: धूप-सन्ध्या धूप त्रिकाल धूप भया संजोग। गौ घृत गुग्गल वास, तृप्त हो श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। इतना धूप मन्त्र सम्पूर्ण भया नाथजी गुरु जी को आदेश।

***

गणेश गौरी स्थापना

अतः साधन योगेश्वर ने दो सुपारी लेकर लाल वस्त्र में रखे। पाटले के आसन पर रख उस पर श्री गणेश तथा गौरी माँ की मृतिका (मूर्ति) रखे और पूजा पाठ करे तथा निम्न मन्त्रों द्वारा स्थापना करे।

प्रथम स्वस्ति वाचन करे दाहिने हाथ में लाल फूल तथा अक्षदा लेकर निम्न पाठ पढ़ें और हाथ जोड़कर नमस्कार (आदेश) करे।

स्वस्ति वाचन पाठ

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश ॐ गुरुजी
ॐ श्री मनमहा गणाधिपतये को आदेश नमो नमः
ॐ सतगुरु श्री..... (अपने सतगुरुजी का नाम) को आदेश नमो नमः
ॐ श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी को आदेश नमो नमः
ॐ श्री आदिनाथ शिव-पार्वती को आदेश नमो नमः
ॐ श्री सत्यनाथ ब्रह्माजी-सावित्री जी को आदेश नमो नमः
ॐ श्री सन्तोषनाथ विष्णु जी-महालक्ष्मी जी को आदेश नमो नमः
ॐ श्री नवनाथ चौरासी सिद्धों को आदेश नमो नमः
ॐ श्री नाथ सिद्ध इष्ट देवताओं कुल देवताओं को आदेश नमो नमः
ॐ श्री वास्तुदेवता, ग्राम देवता स्थान देवताओं को आदेश नमो नमः
ॐ श्री पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-आकाश देवताओं को आदेश नमो नमः
ॐ श्री क्षेत्रपाल, रक्षपाल, दिग्पाल, प्राणपाल को आदेश नमो नमः
ॐ श्री अष्टभैरव बावनवीर देवता को आदेश नमो नमः
ॐ श्री पीर महन्त अनन्त करोड़ नाथ सिद्धो योगेश्वरों आदेश नमो नमः

अतः साधक योगेश्वर दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प पाठ करे।

संकल्प-पाठ

सत नमो आदेश। गुरुजी का आदेश। ॐ गुरुजी। प्रथम बोलिये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षदेव-विष्णुदेव-महेश्वरदेव-ब्रह्मदेव, शक्तिदेव, आकाश पाताले शेष अनन्त कोट ब्रह्माण्ड कर लो आदेश। ॐ आदि सो प्रकाश सत का जोगी आद्य पुरुष। आद पुरुष आदि नाथ जी के पद कमल में कल्पद्रुम

कल्पद्रुम में वैवस्वत मन्वन्तर का वास-वैवस्वत-मन्वन्तर ऊपर पञ्च युग बोलिये प्रथम असंख्य युग अलील नाथजी के नाम बोलिये! द्वितीय सतयुग आदि नाथजी के नाम बोलिये ! तृतीय त्रेतायुग अवगतीनाथ (उदयनाथजी) के नाम बोलिये ! चतुर्थ द्वापरयुग दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी नाम बोलिये! पंचम कलयुग गुरु गोरक्ष नाथ जी के नाम बोलिये ! कलियुग प्रथम चरन ऊपर ठहरे मां धर्तरी, मां धर्तरी ऊपर ठहरे भुर्लोक, भुर्लोक ऊपर ठहरे जम्बुक द्विप, जम्बुक द्विप ऊपर ठहरे नवखण्ड, नवखण्ड ऊपर ठहरे देशकाल, देशकाल ऊपर ठहरे वर्षकाल,। ॐ शिव अवतारे सतगुरु सवत्सरे, विक्रम शके श्री नाथजी की पूजा पाठ कराया। कौन होता है ऋतु। कौन होता है मास। कौन होता है पक्ष। कौन होती है तिथि, कौन होते है वासरे, कौन होते है नक्षत्र। कौन होते है योग, कौन होते करण। ॐ गुरुजी। षष्टम-ऋतु में.. ऋतु बोलिये। बारह मास में..मास बोलिये। द्वि पक्ष में.. पक्ष बोलिये। पंद्रह तिथि में.. तिथि बोलिये। सप्तम वासरे में.. वार बोलिये। सत्ताईस नक्षत्र में.. नक्षत्र बोलिये। सत्ताईस योग में.. योग बोलिये। ग्यारह करण में.. करण बोलिये। ॐ सत की धर्ती सत का आकाश चांद सूरज दो भरे। ॐ कौन राशी चंद्रमा स्थान स्थापले। कौन राशी सूरज स्थान स्थापले। कौन राशी स्थान ग्रह मण्डले। ॐ गुरुजी.. राशी स्थान चन्द्रमा.. राशी स्थान सूरज स्थापले.. राशी स्थान ग्रह मंडले। ॐ सत नमो आदेश। ॐ गुरु जी हम नाथ, निरंजन गोत्र। (अपने पंथ व देवता का नाम) नाम बोलिये। विहंगम जाति (अठारह के या बारह के पंथ का नाम) के नाम बोलिये। अचल पदवी (जोगी, मौनी, तपस्वी, पीरजी, महन्त पुजारी इत्यादि) के नाम बोलिये। अभयपंथ (पंथ का नाम) के.. नाम बोलिये। असंख्य प्रवर (प्रवर का नाम) के नाम बोलिये। अनन्त शाखा (अपने शाखा के नाम) नाम बोलिये। श्री नाथजी के चरण कमल ऊपर पान फूल चढ़ाये। युग युग जन्मान्ते-पाप कटन्ते-मोक्षफल लभन्ते। काल कन्टक को भखन्ते-शत्रु मार भगन्ते। यशवन्त राजा प्रजा को वश करन्ते। किर्ती लाभ को लभन्ते। आओ सिद्धों धरो ध्यान श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ पूजन। तत पूर्व कलश पूजन, जोगनमातृ का पूजन, धरत्री

गायत्री पूजन। नाथ परम्परा पूजन। साधक कर्म, सर्वतो रुद्र सिद्ध पूजन। पीठ पूजा दीप जोत जगान, पाठ पूजन करन्ते। रक्षा करे श्री गौरी गणेश।

इति संकल्प सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी को नमो नमस्ते।

सूचना-रिक्त स्थान पंचाग चोपड़ी देखकर भरें।

* * *

गणेश गौरी अम्बिका पूजन

साधक योगेश्वर ने दाहिने हाथ में दुर्वा से जल लेकर निम्न मन्त्रों से गणेशजी का आवाहन करें।

आवाहन गणेश कूंची

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। गणेश आया ऋद्धि-सिद्धि लाया ऋद्धि सिद्धि का भरे भण्डार। देह कूंची हिंगलाज की ज्ञान कूंची ग्रहों की, कंठ कूंची गुरु गोरक्षनाथजी की, लागी कूंची खुले कपाट अब देखो ब्रह्माण्ड का ठाठ। अक्षय घर का भरे भण्डार। अनन्त कोटि सिद्धों में खीर खाण्ड का होवे प्रवान। लावो धरो धनी का ध्यान, आगच्छ, आगच्छ श्री गणेश। एता श्री गणेशावाहन सम्पूर्ण भया। नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: हाथ में कुंकुम अक्षद लेकर गौरी का आवाहन निम्न मन्त्र से करे।

गौरी आवाहन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ उत्तर दिशा से जोगण आई आद कुंवारी का उपदेश। चौक पूरे जोगन गौरी, रक्षा करे श्री गणेश। गौरी जोगन जुगत की जाने, चार जुग की पूजा से जुग में आने, आसन

बैठे होमे काया। सो जोगण परतकक्ष गौरजा महामाया। इति गौरजा आवाहन सम्पूर्ण भया। श्री आदि शक्ति को आदेश। आदेश।

अतः साधक योगेश्वर ने अक्षदा अष्ठगंध गणेश गौरी ऊपर निम्न गायत्री मन्त्र से प्राण-प्रतिष्ठा करे।

गणेश गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। साचा मन्त्र भजन महेश। मूल महल में बसे गणेश। गुदाचक्र पदम चक्र करलो पाक, हृदय परम ज्योति प्रकाश गणपति स्वामीजी सन्मुख रहे हृदय ज्ञान अगम से कहे। ॐ सोंह सत्य का शब्द कोई नर योगीश्वर विरला लहे। ऊर्ध्वमुख वेद कहे सर्व कमल में फिर करले। झिलमिल -झिलमिल ज्योति जगावे, इडा पींगला सुषुम्ना तीनों को एक घर ल्यावे बंक जाल बैठकर आवे हंस परम हंस का घट भीतर दर्शन पावे। कहे श्री नाथजी सुन भाई औघड़ पीर त्रिकुटी समाधि शिव शून्य में लगावे। नाद बिन्द की गांठ ले ब्रह्माण्ड चढ़ जावे। योनि संकट बहुड नही आवे, गणेश का मन्त्र सत्य कर ध्यावे। अयोनि शंकर प्रसन्न हो जावे। झिलमिल झणकार बाजा बाजे तंत्त सार बतसार, गुरु के रहम से अकल के फन्द से, मूलस्थान चतुर्दल पंखडी। जहां गणेश देवता का वासा। शक्ति स्वरुप मूसावाहन गंगा, गोदावरी करते स्नान। कोई चढ़ावे जान, कोई चढ़ावे अनजान। जान चढ़ावे मुक्ति फल पावे। अनजान चढ़ावे अकारथ जावे। छः हजार जप अश्वमेध किये का फल। तीन हजार जाप की पूजा गणेश देवता तुम्हारे अर्पण। ॐ वक्रत्तुण्डाय, विद्महे एक दन्ताय धीमही तन्नो गणेश प्रचोदयात, ॐ गं.गं.गणपतीय नमः। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

ॐ गौरी गौरजा विदमेह अम्बिकाय धीमही तन्नो रुद्र प्रियः प्रचोदयात। श्री आदि शक्ति को आदेश। आदेश।

अतः निम्न मन्त्र द्वारा षोडोपचारे पूजन करे।

अतः जल छिड़ककर प्राणप्रतिष्ठा करे। **प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र :-** ॐ सों हंसाय विद्महे प्राण-प्राणाय धीमही तन्नो ज्योति स्वरूप प्रचोदयात। इतना प्राण गायत्री मंत्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

षोडशोपचारे पूजनं जाप

★ (आसन चढ़ावे) ॐ आसन तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई आसन तो धर्ती भिटर्या ॐ गणेश गौरी आसनम् समर्पयामि।।१।।

★ (जल चढ़ावे) ॐ जल तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई जलाम्बर भिटर्या ॐ गणेश-गौरी जलस्नानं समर्पयामि ।।२।।

★ (मधु चढ़ावे) ॐ मधु तो चढ़ाऊ देवा नहीं है अछूता सोई मधु मधुमक्खी भिटर्या ॐ गणेश गौरी मधु स्नानं समर्पयामि।।३।।

★ (घृत चढ़ावे) ॐ घृत तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई घृत दुग्ध भिटर्या ॐ गणेश गौरी घृत स्नानं समर्पयामि।।४।।

★ (दधि चढ़ावे) ॐ दधि तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई दधि दुग्ध भिटर्या ॐ गणेश गौरी दधि स्नानं समर्पयामि।।५।।

★ (दुग्ध चढ़ावे) ॐ दुग्ध तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई दुग्ध गौ माँ भिटर्या, ॐ गणेश गौरी दुग्ध स्नानं समर्पयामि ।।६।।

★ (पंचामृत चढ़ावे) ॐ पंचामृत तो चढ़ावू देव नहीं है अछूता सोई पंचामृत पंचतत्व भिटर्या, ॐ गणेश गौरी पंचामृत च समर्पयामि।।७।।

★ (पुनः जलस्नान कराये) ॐ गंगा जल सो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई गंगा हिमालय भिटर्या, ॐ गणेश गौरी पवित्र स्नानं समर्पयामि।।८।।

★ (वस्त्र चढ़ावे) ॐ वस्त्र तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई वस्त्र कपासी भिटर्या, ॐ गणेश गौरी वस्त्रं समर्पयामि।।९।।

★(अलंकार चढ़ावे) ॐ अलंकार तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई अलंकार सुवर्ण भिटर्या ॐ गणेश गौरी अलंकार समर्पयामि।।१०।।

★ (जनेऊ चढ़ावे) ॐ जनेऊ तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई जनेऊ ऊन के भिटर्या, ॐ गणेश गौरी नाद जनेऊ समर्पयामि।।११।।

★ (कुण्डल चढ़ावे) ॐ कर्ण कुण्डल तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई कुण्डल मृतिका के भिटर्या ॐ गणेश गौरी मृतिका कुण्डलम समर्पयामि।।१२।।

★ (नादिशैली चढ़ावे) ॐ नादि शैली तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई नादी नादब्रह्म भिटर्या ॐ गणेश गौरी नादी शैली समर्पयामि।।१३।।

★ (रुद्राक्ष या माला चढ़ावे) ॐ रुद्राक्ष तो चढ़ावू देवा नहीं है, अछूता सोई रुद्राक्ष बीज के भिटर्या, ॐ गणेश गौरी रुद्राक्षं समर्पयामि।।१४।।

★ (चन्दन टीका लगावे) ॐ चन्दन तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई चन्दन सुगंधीम भिटर्या, ॐ गणेश गौरी चन्दनम समर्पयामि।।१५।।

★ (अक्षद चढ़ावे) ॐ अक्षदां तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई अक्षदां अन्नब्रह्म भिटर्या, ॐ गणेश गौरी अक्षदां समर्पयामि।।१६।।

★ (पुष्प चढ़ावे)ॐ पुष्पं तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई पुष्पं वास भिटर्या, ॐ गणेश गौरी पुष्पं समर्पयामि।।१७।।

★ (दूर्वा चढ़ावे)दूर्वाङ्कर तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई दूर्वाङ्कर मंगल भिटर्या, ॐ गणेश गौरी दूर्वाङ्करान समर्पयामि।।१८।।

★(धूप दीप दिखावे) ॐ धूपं दीपं तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई धूपं दीप च तैजस भिटर्या, ॐ गणेश गौरी धूपं दीपं च समर्पयामि।।१९।।

★ (मोदक-लड्डू भोग चढ़ावे) ॐ भोग तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई भोग पूर्ण ब्रह्म भिटर्या, ॐ गणेश गौरी नैवेद्यम् समर्पयामि।।२०।।

★ (फल या नारीयल चढ़ावे) ॐ फलां तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई फलानी प्रतिऋतु भिटर्या, ॐ गणेश गौरी ऋतु फलं समर्पयामि।।२१।।

★ (लंवग-इलायची इ.चढ़ावे) ॐ तांबूलं तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई तांबूलं मुखशुद्धि भिटर्या, ॐ गणेश गौरी तांबूलं समर्पयामि।।२२।।

★ (दक्षिणा चढ़ावे) ॐ दक्षिणां तो चढ़ावे देवा नहीं है अछूता सोई दक्षिणां समृद्धि भिटर्या, ॐ गणेश गौरी दक्षिणां समर्पयामि।।२३।।

★ (आरती (कर्पूर) उतारे) ॐ आर्तिक्यम् उतारू देवा नहीं है अछूता सोई अर्तिक्यं आत्मज्योति भिटर्या ॐ गणेश गौरी आर्तिक्यं समर्पयामि।।२४।।

★ (जल अक्षद पुष्प दुर्वा गंध अर्पण करे) ॐ मन्त्र पुष्पांजलि तो चढ़ावू देवा नहीं है अछूता सोई पुष्पांजलि पूर्ण पवित्रो भिटर्या, ॐ गणेश गौरी पुष्पांजलि समर्पयामि।।२५।।

★ दया क्षमा तो मांगू देवा नहीं है अछूता सोई क्षमा शीश नमाऊँ भिटार्या ॥२६ ॥ यह कहकर क्षमा मांगे ।

★ भनत गोरख नाथ सुनो गत गंगा सोता सबद चढ़ावू अछूता ॥२७ ॥ यह कहकर नमस्कार करे । इस प्रकार गणेश गौरी की सामुपचारे पूजन करें । अतः श्री गणेश गौरी जी का स्तवन करे ।

अथ गौरी गणेश स्तवन

सत नमो आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ कण्ठे बसे सरस्वती हृदय देव महेश भूल्या अक्षर ज्ञान का जोत कला प्रकाश, सिद्ध गौरी नन्द गणेश बुध को विनायक सिमरीये बल को सिमरीये हनुवन्त, ऋद्ध सिद्ध को श्री ईश्वर महादेव जी सिमरिये, श्री गंगा गौरी पार्वती माई जी तुम्हारे कन्त उमादेवी गौर्जा पार्वती भस्मंती देवी हिरख मन अगर कुंकु केशर कस्तूरी मिला कूपिया तिसते भया, एक टीका अमर सेंचो जी जीव संचिया शक्त स्वरुपी हाथ धरिया नाम धरियो श्री गणपतनाथ पूता जी तुम बैठो स्थान में जावा नहावण आवण-जावण किसी को न दीजिये अंकुश मारपर संग लीजिये । बण खण्ड मध्य से आये श्री ईश्वर महादेव छूटी ललकार ईश्वर देख बालक क्रोप भरीया ज्यो घृत बसन्तर धरिया शिवजी आनी मन सा रीस फिरयो चक्र ले गयो शीश तीन भवन से भई हलूल श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी आ कहने लगी स्वामी जी पुत्र मरिया तिसका का कौन बिचार देवी जी मैं नहीं जानो तुमरा पूत मैं जानो कोइ दैत्य न दूत गज हस्ती का शीश लियाऊं काट आन अलख निरन्जन के पास बैठाऊं, शंकरजी ल्याये हस्ती का शीश श्री गंगा गौरजा पार्वती माई जी करी असीस जब गणपत उठंते खेल करन्ते, महिमा उवरन्ते गणपत बैठे स्थान मकान उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम ल्याये श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी के आगे स्वामी जी तुम को सिमरे सोची मोची तेली तंबोली ठठिहारा गनिहारा लुहारा क्षेत्र सिमरे क्षेत्रपाल अजुनी शंभू सिमरे महाकाल लांबी सूंड बालक भेस प्रथमे सिमरो आद गणेश पांचकोस ऋद्ध उत्तर से ल्याऊं, पांच कोस ऋद्ध दक्षिण से ल्याऊं, पांच कोस ऋद्ध पूर्व से ल्याऊं, पांच कोस ऋद्ध पश्चिम से ल्याऊं, दस कोस

ऋद्ध अज गायब से ल्याऊ, इतनी ऋद्ध सिद्ध दिये बिना ना जाऊं श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी तुम्हारी माया प्रथमे एक दन्त, द्वितीय मेघवर्ण तृतीय गज करण, चर्तुथे लंबोधर पंचमे विघ्नहरण षष्टमे धूम्ररुप सप्तमे विनायक अष्टमे भालचन्द्र नवमे शील संतोष दशमे हस्तमुख एकादश द्वारपाल द्वादशे बरदायक एते गणपत गणेश नाम द्वादश सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

(लक्ष्मी-सरस्वती-ऋद्धि-सिद्धि प्राप्ति के लिए यह मन्त्र अमोघ है। १०८ बार करें।)

इति श्री गणेश गौरी अम्बिका पूजन समाप्त। श्री गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। दादा मत्स्येन्द्रनाथजी को आदेश। आदेश

* * *

कलश-स्थापन-पूजा

शुभ कार्य-पूजा पाठ तथा किसी भी धार्मिक विधि में कलश स्थापना पूजा का महत्व है। कलश स्थापना अर्थात् पूजनार्थ देवता की स्थापना मानी जाती है।

अत: साधक योगेश्वर ने प्रथम भूमि को स्पर्श करके तथा अक्षद-अष्टगंध से नवदल कमल बनाकर निम्न मन्त्र पढ़े।

धर्ती गादी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ वसुंधरा कौन दिशा की बोलिये। वसुंधरा पाताल लोक की बोलिये। पाताल लोक का कौन राजा कौन घोड़ा, कौन अस्वार बोलिये। पाताल लोक का बासुकि राजा, नीला घोड़ा-अस्वार बोलिये। मैं तुझे बुझू बासक राजाजी यह लो कुंजी ताला खोलो देवपुरी दरबार कलश स्थापना कीजिए पाठ मांडता कीजिये नौ कोटी ग्रह भान तप्ता कीजिये जुमला जागना कीजिये चट पट चढ़ दीदार दीजिए साई को सलाम गुरु को प्रणाम जोत को जुहारी गत गंगा को हर नाम। नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: सप्त धान नवदल कमल के ऊपर डाले तथा निम्न मन्त्र पढ़े।

धान स्थापन

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी प्रथम सुमिरो श्री गणेश। ऋद्धि- सिद्धि को ईश्वर महादेव। अन्न पुरे अन्नपूर्णा माई सप्तम धान स्थापना कराई। इतना धान स्थापना मन्त्र सम्पूर्ण भया नाथजी गुरुजी को आदेश।

और निम्न मन्त्र से कलश में जल गंगाजल या समुद्र जल या त्रिवेणी संगम जल या गोदावरी जल भरना उचित है। जल शंख द्वारा भरें।

जल गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी जल मंजन जल देवता गुरुजी मन्जन गुरु ज्ञान। हाथ मंजन धर्तरी अलष पुरुष का ध्यान। पानी पानी महापानी सोति काया अमर कर जानी। उडे न हंस बिखरे न काया, शिव शक्ति ने ध्यान लगाया। ॐ अलील आदी अलील, अलील पुरुष की माता क्वारी पीता यती, नित्य योगी घरे धीर निरोगी हो काया बज्र हो शरीर, झड़े पारा पीवे योगी उड़े काया। अलख निरंजन तेरी माया जल बिम्बाय विदमहे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात् इतना जल गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: निम्न मन्त्र से तिलक अक्षदा चढ़ावे।

गंध-अक्षदा-मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ माटी का कुण्डा, गंगा निर चन्दन बनाये हनुमन्त बीर, ऋद्धि, सिद्धि भण्डार भरे, अक्षदा लाये गौरी गणेश। चढ़े अक्षदा, चढ़े चन्दन ज्योत जगाय महेश। देवदेवत्या लागे ध्यान, ब्रह्म कथे ब्रह्मज्ञान। इति गंध अक्षदा मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: साधक ने पंच पल्लव कमल पुष्प के सामन घट के ऊपर रखे। निम्न मन्त्र पढ़े।

पंच पल्लव

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी यह पंच पल्लव प्रमाण भूले चूके अक्षर बरसे गुरु मेहेरबान अलख पुरुष का ओंकार नाद, पंच पल्लव कोट बान्धा चौंसठ जोगन खेले संगा, बावन पीर खेले साथ, तले धरती उपर आकाश। पिण्ड प्राण सूरत निरत सतगुरु के पास पांच महेश्वर आज्ञा दीन्ही पल्लव चढ़े हनुमन्त वीर। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

अत: साधक ने श्री फल पंच पल्लव के ऊपर रखे।

श्री फल का मन्त्र

ॐ गुरु जी पीर जी बोले एक ओंकार योगन मनमे किया विचार। अक्षद श्रीफल करपर धरे नीचे से पर्वत ऊपर से चिन्हा कहे महादेव अनन्त कोट सिद्धों ने दिया। इतना श्रीफल मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अब साधक ने भगवा वस्त्र कलश के ऊपर चढ़ाये।

भगवे का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सों धुन्धुकारा, शिव शक्ति ने मिल किया पसारा नख से चिर भग बनाया। रक्त रुप में भगवा आया। अलष पुरुष ने धारण किया, तब पीछे सिद्धों को दिया। आवो सिद्धों धरो ध्यान। भगवा मंत्र भये प्रमान। इतना भगवा मंत्र संपूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

तदनन्तर कलश स्थापना करे।

कलश स्थापना

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ आदि शक्ति ले आगे खडी, आदि कमल के कुम्भ पर धरी, तले बैठे ब्रह्मा बैठे कन्ठ रुद्र मुख पर बैठा महाविष्णु। शक्ति बैठी दो कर जोड़, देव मुण्डे तेतीस करोड़, बहे गंगा बहे जमना बहे सरस्वती, कलश थापा निरंजन यति। अरवा तरे गत तरे तिसकी रक्षा श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ करें। तार तार माता तारीणी-सकल

दु:ख निवारणी। पंचपांडव छटे तलाई, धर कर कलश थाप्या आदी शक्ति महामाई। थर्पे धर्ती थर्पे आकाश थरपे, सुमेर मण्डाल कैलाश। थापे कलश रक्षा करें शम्भुजती गुरु गोरषबाला। श्रीनाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: साधक कलश की प्राण प्रतिष्ठा के लिए जल तथा अक्षत छोड़े।

प्राण प्रतिष्ठा

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोंह हंसाय विद्महे प्राण-प्राणाय धीमही तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात्। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अब कलश की सामोपचारे पूजन करे और नमस्कार आदेश करे।

कलश देवता को नमन

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ कलश-देवता तुम्हे आदेश। हृदय तन्त लगाय। सत्गुरु पूरा मिल्या, जिन मार्ग दिया बताय। शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु जी के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करें तो लागू कलश देवता के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

इति कलश देवता-स्थापन-पूजन समाप्त। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश।

* * *

सतगुरु हुकम जाप

अतः साधक कलश के निकट अपने गुरुजी का आसन लगावे, सत् गुरुजी नहीं हो तो उनकी तस्वीर आसन पर विराजे या गुरु गोरक्षनाथ जी की स्थापना करे और सतगुरु हुकम आदेश द्वारा पूजा कर्म करा रहे है। इस विधान से पूजा करे। प्रथम दोनों घुटनों को पृथ्वी ऊपर मोड़कर कमल के सदृश अपनी अंजली को शीश के ऊपर दाहिने हाथ से जल पूर्ण कलश को अपने शीश से स्पर्श कर साधक सतगुरु से हुकम आदेश तथा आर्शीवाद के लिए प्रार्थना करे।

साधक :- आदेश। गुरु गुसाई चरण कमल को आदेश नमो नमः। कृपा करो नाथ निरंजन मैं बालक आपका।

सत गुरुजी:- अलख निरंजन आदेश।

साधक अतः दो बार सिर से उस कलश का स्पर्श करें। उसी स्थान पर नवदल कमल ऊपर रखे। ॐ गंगा माता नमो आदेश। सत् गुरुजी को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। यह कहकर सत् गुरुजी के हाथ में गंगाजल देना।

साधक :- ॐ गुरुजी गंध अक्षद देवता तुम्हारे अर्पण। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- ॐ नमो आर्शीवाद।

साधकः- ॐ गुरुजी पूजा पुष्प देवता तुम्हारे अर्पण। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- ॐ नमो आदेश। शुभं भवतु।

साधकः- ॐ गुरुजी नाद जनेऊ देवता तुम्हारे अर्पण। श्रीनाथ जी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- ॐ ब्रह्मनाद को नमो आदेश।

साधक :- ॐ गुरुजी। कानन, कुण्डल देवता तुम्हारे अर्पण। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- सत नमो कल्यानम्।

साधक :- ॐ गुरुजी भगवे वस्त्र देवता तुम्हारे अर्पण। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- अलष पुरुष को आदेश।

साधक :- ॐ गुरुजी जल पात्र कमण्डल देवता तुम्हारे अर्पण। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- ॐ नील पुरुष को आदेश।

साधक :- ॐ गुरुजी पद कमल को खडाऊं तुम्हारे अर्पण। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- सुमंगल आदेश।

साधक :- ॐ गुरुजी गुरु दक्षणा तुम्हारे अर्पण। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- शुभ लाभ नमो आदेश।

साधक :- ॐ गुरुजी कृपा करो, वज्र हो शरीर अमर हो काया। गुरु शब्द ज्ञान प्रकाशा। श्री नाथ गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी:- ॐ तथास्तु नमो आदेश।

साधक :- ॐ गुरुजी, हुकम करायो जाप का हुकम जाप पाठ का। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

सत् गुरुजी :- सुन बा गुरु पूता। हुकम भया जाप का। शुभं भवतु।

हुकम जाप

ॐ नमो आदेश। गुरुजी को पहली पूजा अलील की दूजी नाद पाती सर्व देवत्या मिल थापना थापी, जुगत मुक्ति तत सार अलख उतारे पहिले पार भैरो सुन्दरी, ज्योत जागी कलश रिआ भरपूर चौक पुराऊ खंड धराऊ बरसो तत सार, फूल धरो ध्यान धरो शब्दों से जोत जगाऊं जागी अखण्ड भई परचण्ड भण्डारी भण्डार से जागे टैलुआ चूर्मा बाटे शब्दों की घनघोर गत में रही छा: बोले ज्ञान पुरी ऋद्ध सिद्ध भण्डार भरपूर करें हिंगलाज महामाया पैले ओंकार जोग जुक्त का दूजे ओंकार मोक्ष मुक्त का तीजे ओंकार थापी

धर्मसाल जहां बैठे महेश्वर । धूप दीप ले ज्योत जगाई जहां बैठी त्रिपुरा माई माता धरती पिता आकाश चन्द सूर्य दो भरे साख धर्नपाट धीरधाया आकाश पाट सिर पर छाया पवन पाट सिर पर बाजे इन्द्र पाट सिर पर गाजे चन्द्रमा पाट सर्वपर चानणा सूर्य पाट सोरिया करंत कहे अलख सात पाट कहा होते पदम पाठ कहा होते अलख आप कौन होते कोटवाल कौन होते भण्डारी कौन होते जति कौन होते सती, इक्कीसो ब्रह्मांड होते पदम पाट, हुआ होते अलख आप ब्रह्मा होते कोटबाल विष्णु होते भण्डारी शिवजी होते जति उमादेवी पार्वती होती सती । शिव नर पूजिते पंच तत संख जुग यतीक जोत ।

ॐ नमो आदेश गुरुजी को आदेश । ओ हुकम से रची धरती हुकम से रचे प्रकाश हुकम से रची मेरु मेदनी गिर पर्वत कैलास हुकम चलाया श्री ईश्वर आदिनाथ हुकम से पांच तत्व का भया प्रकाश हुकम गादी गोरक्षपीर हुकम से शक्ति आद ततबीर हुकम से ब्रह्मा भरदीनी साख हुकम से हनुवंत बीर चलाई हांक हुकम से भण्डारी ऋद्ध सिद्ध पाई हुकम से टैलवा टैल कमाई हुकम से अंत चक्रपूर हुकम से गत में बरसे नूर, हुकम से भैरों प्रकाश भैरों बाला सुन्दरी के पास केशर हुकम पीर मुख चले हुकम बिन मथन न हले टैलुवे केसर मथकरी त्यार जुगती चढ़ी देव दरबार केसर सुरती है जग मेसा आपे गुरु ते आपे चेला जुगती संग कौन कौन आय ब्रह्मा विष्णु महादेव पाय जुगती संग चन्द्र सूरज दो तपे निरधार जुगती संग धर्मराजा धरम गुसाई जी ले उत्पन्न भयो सकल सृष्टि संहार, टैलुआ ठाडा दो कर जोड़ दरबार हुकम होय अलख पुरुष का टैल करूं दरबार कर पवित्री गल गिरेवान टहल करु गत की सर्व जोत का करो ध्यान पहला पात्र धर्ती माई किन्नर गण गंधर्व देवता चार जुगों की थापना थपाई, दूसरा पात्र श्री माई सुन्दरी जी को चढ़े हीरे मानक मोती रत्न जवाहिर से पत्र पूरे तीसरा पात्र श्री भैरव जी को चढ़े लख चौरासी जीआ जून चरबण बोलिये तेल सिन्दूर की पूजा भैरव जी को चढ़े, चौथा पात्र कूण्डे में आवे पांच महेश्वर नौ नाथ चौरासी सिद्ध बवंजा बीर चौसष्ट जोगण तैतीस करोड देवता सब कूण्डे में समावे पांचवा पात्र गुरु बिचार

सत सत शब्द ले उतारो पार गादी बैठे श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ मन में करत बिचार सार की छुरी अमृत की धार जो प्रमाण चीरा दिया सकल सृष्टि संसार ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य शूद्र चार वर्ण को कौली दीनी सबको किया संत कौली आवे कौली जावे कौलीगत में जाय समावे जे कर कौली बरसे आप सत सत अमरापुर पावे न माई न बाप छेवा पात्र भाई जोगनी को दीजे नौगरही दहिने कर लीजे नौ नाथ का पत्र पृरीजे तीन अग्न तृप्त कर लीजे दो कर जोड जोत जगावु सप्त ऋषि हृदय में ध्याऊ ग्यारह रुद्र की पूजा करी जे दस दिगपाल का ध्यान धरी-जे चार वेद का पाठ करी जे षट रस का त्याग करी जे भैरों सुन्दरी गत भण्डार चार साखिये मिल जोत जगाऊ अखण्डी भई प्रकाश सतवा पात्र सतनाथ ब्रह्मा को दीजे आवो श्री सतनाथ ब्रह्माजी बैठो गुरु विचार के पाप असंख जुगा की भर दीजे साख आठवा पात्र बीर बंकनाथ को दीजे अठारह वर्ण की हाक सुणी जे अठारह वर्ण का इको प्याला अलख जगावे बीरबंकनाथ चेते हनुमन्त बाला नौवा पात्र कुबेर भण्डारी सर्वगत की ऋद्ध सिद्ध सारी सर्वगत का इको रुप ऐकोएक पुरुष अनूप आद अन्तबीज संचरे बाला सुन्दरी की पूजा सत सत श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी करे, दसबा पात्र गत में फिरे अजर बजर अम्बर अघोर बिरला साधू कोई नर जरे इकादश पात्र टैलवे को दीजे दो कर जोड़ टैलवा लीजे कर लगावे गुरु बिचार टैलवा चेते गत मझार मूल द्वार से बंक उठावे दसमें द्वार की खबर बतावे दसमें द्वार का उल्टा ख्याल सर भरिया नीर बिन पार सोई नीर जोगी जन पीवे सूई धागे बिन खिंथा सीवे सीवत सीवत लागे जुग चार पहन खिंथा होय भवसागर से पार अमर लोक की क्या निशानी हुकुम होय अलख पुरुष का ज्ञान कथे सत सत श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी निरवाणी, द्वादश पात्र अन्त को दीजे देकर जो अन्त कर लीजे जो आद सोई अन्त ईश्वर गौरा थाप्या भगवन्त ईश्वर गौरा करे बिचार सत सत भाखन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ओ मूल द्वारे सिद्ध गणपत जी का वासा चतुरदल कमल करे निवासा मेरु डण्ड जे सूदा करे नाभ कमल में सुरती धरे षटदल कमल ब्रह्मा जी का बासा श्री सनकादिक

आवे जरे अष्ठदल, कमल विष्णु जी का बासा कष्ठ द्वारे शिवजी का निवास षोडस दल कमल शक्ति का बास ओंकार ज्योति प्रकाश सहस्त्र दल कमल निरंजन बसे शिव शक्ति मिल मेला बसे खेचरी मुद्रा मुख बसे बैखरी करे निवास जोगी जनभैबोलिया बैखरी करे निवास जोगी अनभैबोलिया बैखरी के अभ्यास जोगी वाय संकोच न करे द्वादश ले कुम्भक में धरे षोडस अंगुल पूरक कहावे रेचक शने शने फिर आवे बारा सूर्य सोला चन्द जो न जाने सो नर अंध एडा पींगला सुखमण मेले सोहं हंस निरन्तर खेले त्रिकुटी महल झरोखे बास मन पवन का सुख सुरत मिलाप सो हंस अजपा जाप सकार के मध्य में जोगी करे निवास उन्मन सूं लागा रहे दृढ़ कर जोग अभ्यास भूचरी मुद्रा नासा बसे स्वास घोड़े असवास जोगी आठों प्रहर में स्वासों करे निवास चाचरी मुद्रा चक बसे जहां आठों प्रहर निवास धर्णा गगन के मध्य में रवि शशि सोंह परकाश गोचरी मुद्रा श्रोणी बसे जहां सुरती करे मिलाप स्वाल शब्द की धुन में होत शब्द प्रकाश उन्मुन मुद्रा उर्ध बसे जहां आठों प्रहर निवास उन्मुन सू लागा रहे दृढ़ कर योग अभ्यास पांचों मुद्रा यह कही छटवीं गोरक्षनाथ महा मुद्रा छटी कहो दस द्वार की बात महा मुद्रा छटवी जहां निरन्जन नाथ जहां योगीजन जाय के हो अश्चरज हैरान नाद बिन्द हुआ मिले शिव शक्ति मिल जाय रज बीरज ऊपर चढ़े तत मो तत समाय चक्र धरती चक्र आकाश जागी जोत भागी छोत चौदश भया उजाला वाला चक्र पूजते सत सत श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला महादेव पार्वती श्री आदनाथ घटे चंदा घटे सूर घटे गंगा भरी भरपूर आकाश तारा पाताल घट ज्योति लिंग नमो स्तुते ब्रह्म हत्याटले अमृत हो पड़े पड़े अमृत, अमृत कुरु कुरु स्वाहा आदका जोगी जुगद की माया सत का जोगी वज्र की काया करे करे न करे तो भी बाहर भीतर कभी न मरे एकांगन गंधर्व जाया छीजे ना उपजे बिन से न काया शब्द होय कोल तां काल ना खाया एता हुकुम जाप सम्पूर्ण भया श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने गत गंगा को पठ कथ के सुणाया श्री नाथजी की चरण कमल पादुका को नमस्ते नमस्ते नमस्कारा।

अतः यह हुकम जाप पाठ होने के पश्चात सत गुरुजी को दक्षणा चढ़ावे और पाठ करने वाले नाथ सिद्धों को दक्षणा देवें। इसके बाद गंगा जल से गुरुजी द्वारा साधक के ऊपर गंगा जल छिड़के निम्न मन्त्र पढ़कर अभिषेक करे।

जल अभिषेक

सतगुरुजी : -

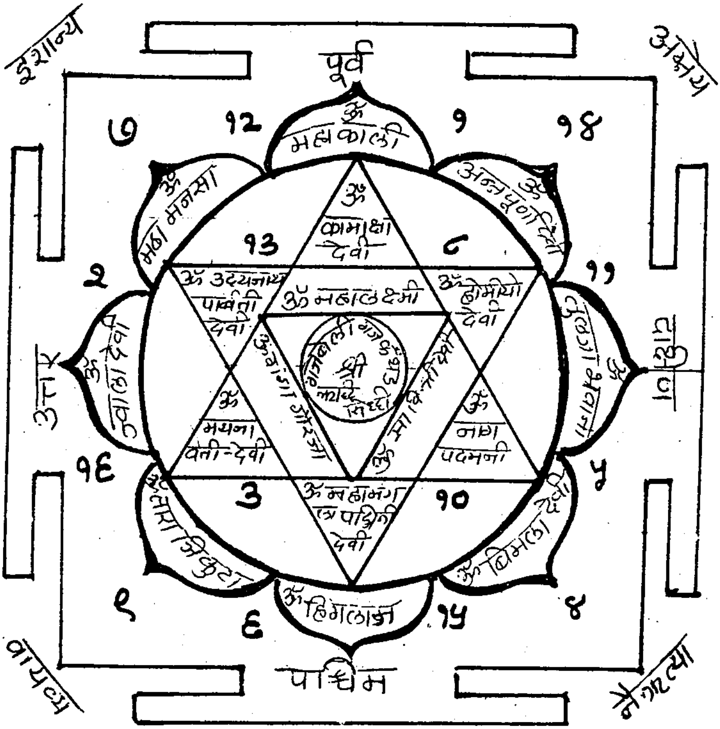
जल गायत्री

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जल मन्जन जल देवता गुरु मन्जन गुरु ज्ञान। हात मन्जन धर्तरी अलष पुरुष का ध्यान। पाणी पाणी महापाणी, सोती काया अमर कर जागी। उड़े न हंस बिखरे न काया, शिव शक्ति से ध्यान लगाया। ॐ अलील आदी अलील अलील पुरुष की माता क्वारी पिता यती नित्य योगी धीर धरे निरोगी हो काया। वज्र हो शरीर। झड़े पारा पीवे योगी। उड़े काया। अलख निरन्जन तेरी माया। ॐ जल बिम्बाय विदमहे निल पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात इतना जल गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु को आदेश-आदेश।

तदनन्तर कलश पूजन और गुरुजी आसन समीपे नाद पूजा आदेश करे।

इती सत् गुरु हुकम जाप तथा अभिषेक सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश।

* * *



श्री नाथ सिद्ध योगिणी मन्त्र,

श्री नाथ सिद्ध योगिणी यन्त्र

श्री नाथ सिद्ध योगिणी यन्त्र पूजन

यन्त्र बनाने की विधि—यह यन्त्र पूजन के लिए एक पाटला के ऊपर सफेद कपड़ा डालकर अष्टगंध शाई से आख, कनेर या अनार के कलम से लिखे और मन्त्र द्वारा आवाह्न तथा पंचोपचारे पूजन करे। इसी प्रकार यह यन्त्र ताम्र पट के ऊपर या सुवर्ण तथा चांदी के पटपत्र ऊपर उपरोक्त क्रिया से पूजन प्रति बना सकते हैं अथवा पूजनार्थ पाटला के ऊपर भोज पत्र रखकर प्रत्येक मन्त्र द्वारा यन्त्र स्थान में रखे नित्य इन मन्त्रों से पूजन करें मनोवांछित प्राप्ति होये।

प्रथम श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र के मध्य वर्तुल में श्री गणेश गजबेली गजकंथड नाथ जी का निम्न मन्त्र से आवाहन करें।

श्री गणेश (गजबेली गजकन्थडनाथ)

गायत्री—ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो बुद्धि ऋद्धि—सिद्धि प्रचोदयात्।

यह कहकर अष्टगंध से यन्त्र के मध्य वर्तुल में लिखे।

मन्त्र—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ गणेश आया, ऋद्धि—सिद्धि को लाया। ऋद्धि—सिद्धि को भरे भण्डार, देह कूंची हिंगलाज की ज्ञान कूंची ग्रहों की कण्ठ कूंची गोरक्षनाथजी की लागी कूंची खुले कपाट अब देखो, ब्रह्माण्ड का ठाठ। अक्षय घर का भरे भण्डार। अनन्त कोटी सिद्धों में खीर खाण्ड का होवे प्रवान लावो धरो धनी का ध्यान। आगच्छ आगच्छ गजबेली गजकंथडनाथ जी गणेश जी को आदेश। आदेश।

इस मन्त्र से अक्षदा छोड़े तथा पूजन करें। मोदक भोग लगावे। अत: यन्त्र के पूर्व दिशा में वर्तुल बाहरी त्रिकोन के ऊपर श्री महालक्ष्मी देवी का आवाहन निम्न मन्त्र से करें।

" ॐ महालक्ष्मी देवी"

गायत्री– ॐ महालक्ष्मी विद्महे विष्णु प्रियायै धीमही तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात। यह कहकर अष्टगंध या सौभाग्य कुंकुम से लिखे।

मन्त्र– सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ महामाया महालक्ष्मी देवी गरुड़ वाहणी द्वारिका क्षेत्र बैठकर थापना थापी। सन्तोष नाथ विष्णु जी खडखण्ड तेज स्वरुप जिनकी अर्धांगनी कहालो। ५६ करोड़ यादव की राजरानी कहालो। ५६ करोड़ यादव के हाथ से सेवा पूजा आरति धूप–ध्यान करालो। लक्ष ८४ जीया जून को चोगा दाना पानी आहार पूरालो । हमारे घट पिण्ड भयहरण दोजक तारण नाद बिन्द जोती कला का धर्म–इतना महामाया महालक्ष्मी मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश–आदेश।

इस मन्त्र से अक्षदा छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करे तथा पंचमेवा मिष्ठान भोग लगावे, जायफल पान बीड़ा इत्यादि। अत: यन्त्र के उत्तर दिशा में वर्तृल बाहरी त्रिकोन ऊपर श्री गंगा गौरजा देवी का आवाहन निम्न मन्त्र द्वारा करे।

" ॐ गंगा गौरजा देवी"

गायत्री– ॐ गंगाजल बिम्बाय विद्महे निल पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात।

इस मन्त्र को अष्टगंध से लिखे।

मन्त्र– सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पार ब्रह्म से ब्रह्माजी आये। विष्णुजी के चरण कमल से गंगा लाये। ईश्वर महादेव जटा में समाये। उपज्या गंगा भगीरथ जाप। साध संत भवसागर तार। सत का नीर सत् की गंगा, नील पुरुष ने ध्यान लगाया। अनन्त करोड़ देव देवत्या स्नान कराया मकर सवार गंगा सदा सहाई ९ नाथ चौरासी सिद्धों ने मानी। जागती ज्योत गंगामाई अनन्त कोट सिद्ध ने मिलकर थापना थापी। अनभय काया स्नान करन्ते पाप कटन्ते मोक्ष मुक्त फलन्ते इतना गंगा मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अक्षदा छोड़े और पंचोपचारे पूजन करे तथा दही चावल का भोग लगावे पान बीड़ा देवें।

अत: यन्त्र के दक्षिण दिशा में वर्तुल बाहरी त्रिकोन पर सती सावित्री देवी का आवाहन पूजन करें।

"ॐ सावित्री देवी"

गायत्री—ॐ सावित्री देवी विद्महे ब्रह्मप्रिया: धीमहि तन्नो सती सावित्री प्रचोदयात्।

मन्त्र—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ देवी सावित्री सतवन्ती हंसवाहिणी पुष्कर तीर्थ बैठकर थापना थापी। सतनाथ ब्रह्माजी जल स्वरुप की अर्धांगनी कहाई। ४ वेद ६ शास्त्र १८ पुरान ९ व्याकरण संध्या तर्पण, ॐ गीता गंगा गायत्री सूर्य मन्त्र बीज मन्त्र गायत्री जाप, होम जाप सूतन पातक १६ श्रृंगार की रानी कहालो। ८८ हजार ऋषियों की महादेवी कहालो ८८ हजार ऋषियों के हाथ से सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करालो लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा दाना पानी आहार पूरा लो सावित्री देवी हमारे घट पिण्ड का भय हरण दोजक तारण नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म इतना सावित्री मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश आदेश।

यह कहकर अक्षदा छोड़े पंचोपचारे पूजन करे तथा पंच पदार्थ खीर, हलवा, पूरी का भोग लगावे पान बीड़ा देवे अत: यन्त्र के पूर्व दिशा में षष्ट त्रिकोन में देवी कामाख्या की मन्त्रों से स्थापना पूजन करें।

"ॐ कामाख्या देवी"

गायत्री—ॐ कामाक्षा विद्महे त्रिपुर सुन्दरी धीमहि तन्नो ईश्वरी महामाई प्रचोदयात्।

यह मन्त्र कहकर यन्त्र में अष्टगंध से लिखें।

मंत्र—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ देवी कामाक्षा सुन्दरी कामरु देश बैठकर थापना थापी शक्त की नाती ईश्वर

महादेव की चेली ॐ कामाक्षा माता धर्म का चोला, अजरी बजरी चेते भैरव मतवाला शक्ति की डिब्बी रजवन्ती सतवन्ती हाथ खप्पर गले रुण्डमाला शिव शक्ति जपो तपो कामाक्षा सुन्दरी थान बान्धा मकान बान्धा, काम बान्धा काल बान्धा दश दरवाजे का कोट बान्धा, तहां हाथ जोड़ भैरु खड़ा । ऋद्ध फूरो सिद्ध फूरो भजो भजो मन्त्र कामाक्षा ईश्वरी वाचा । ॐ फट स्वाहा, श्री नाथजी गुरुजी को आदेश ।

इस मन्त्र से अक्षदा बरसे और पंचोपचारे पूजन करे तथा मिष्ठान भोग लगाये । केशर पान बीड़ा देवें ।

अतः यन्त्र के अग्नेय दिशा षटकोन त्रिकोन में देवी होमीयो की मन्त्रों द्वारा स्थापन पूजन करे ।

"ॐ होमीयो देवी"

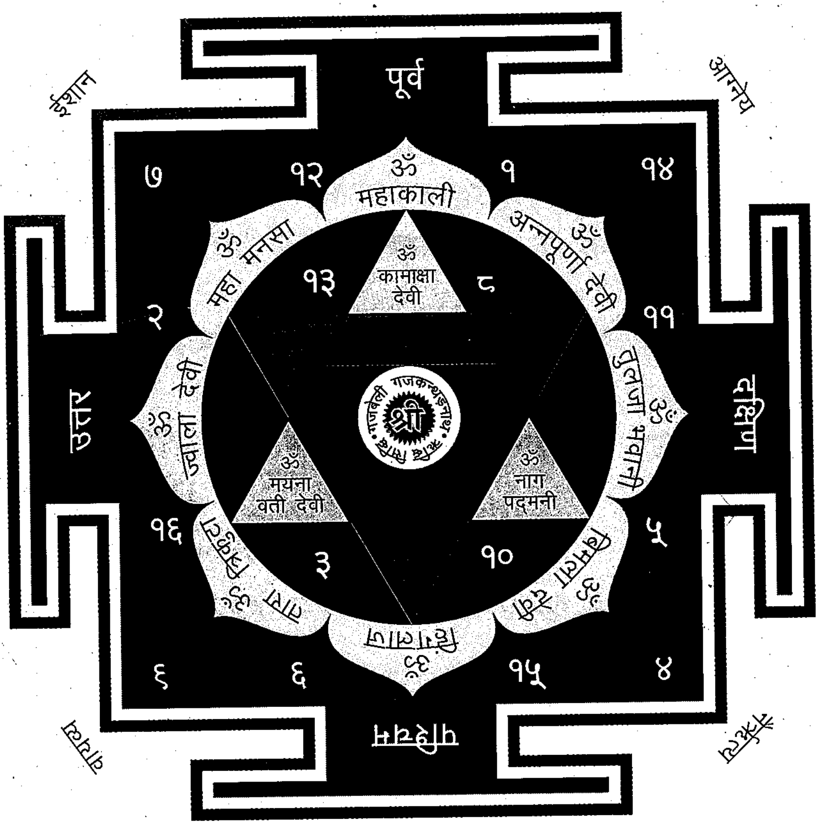
गायत्रीः- ॐ होमीयो देवी विद्महे वज्र हस्ताय धीमही तन्नो आद-कुवारी अग्नी प्रचोदयात ।

इस मन्त्र द्वारा अष्ठगंध से यन्त्र में स्थापन करें ।

मन्त्रः- सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ होमीयो देवी पुछैत है । परम गुरुजी कैसे धरती कैसे आकाश कहे महादेवजी । विभूती की धरती धूएं का आकाश । अपने तन से ऋकेशर उपाया, ऋकेशर गऊ ल्याया-गौघृत दिखाया, लौंग सुपारी तिल दहेडा, सार खोपडा और मिष्ठान बादाम छुहारा नागरपान । होमियो गायत्री का किये पाठ लै बसन्तर होम के हाथ । होम गगन मण्डल में नव लक्ष तारा होम किया गुरुजी सब जग सारा । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश ।

यह मन्त्र पढ़ अनुसार अक्षदा छोड़े और पंचोपचारे पूजन करें तथा लौंग सुपारी तिल दहेडा खोबरा गौघृत इत्यादि से पूजन करे तथा गौघृत खीर तथा मिष्ठान का भोग लगाये । मिष्ठान पान बीड़ा देवे । अतः यन्त्र के दक्षिण दिशा में नाग पदमणी देवी की स्थापन पूजन करे ।

श्री नाथ सिद्ध योगिणी यन्त्र



चित्रांकन : योगी विलासनाथ

NEW TECH PRINTERS

"ॐ महालीला नाग पदमणी देवी"

गायत्री:—ॐ महालीला नाग पदमणी देवी विद्महे पातालेश्वरी धीमही तन्नो बासुकी प्रिया प्रचोदयात।

इस मन्त्र को कहकर अष्ठगंध से यंत्र के ऊपर स्थापन करें।

मन्त्र:—ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नागपदमणी देवी, महालीला कुर्म वाहणी पाताल लोक बैठकर थापना थापनी बासुकी शेष स्वरुप अचल अचम्बेनाथ जी की आर्धांगनी कहायी। ॐ नवकुली नागों की महारानी कहायी। नवकुली नागों के हाथ सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करा लो। लक्ष चौरासी जीया जून को चोगादाना पानी आहार पूरा लो। हमारे घट पिण्ड का भय हरण दोजक तरण। नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

यह मन्त्र पढ़कर अक्षदा बरसे तथा पंचोपचारे पूजन करे तथा केशर दूध का भोग लगावे, छुआरे—पान बीड़ा देवें।

अत: यंत्र के पश्चिम दिशा में षष्ट त्रिकोन में श्री महामंगला पद्मिनी देवी की स्थापना पूजन करे।

"ॐ महामंगला पद्मिनी देवी"

गायत्री:—ॐ पद्मिनी देवी विद्महे महामंगला धीमही तन्नो जोगमाया प्रचोदयात।

इस मन्त्र से अष्टगंध से लिखकर स्थापन करें।

मन्त्र:—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ महामंगला पद्मिनी देवी मच्छवाहणी कदली कोट सिंहलद्वीप स्थान बैठकर थापना थापलो। मायास्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी की चेली कहालो। ५२ पीर ६४ जोगण सवालक्ष भूतावली की राणी कहालो। ५२ पीर ६४ जोगण सवालक्ष भूतावली के हाथ से सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करालो। हमारे घट पिण्ड का भय हरण—दोजन तरण नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

इस मन्त्र को कहकर अक्षद बरसे और पूजन करे तथा मिष्ठान (मूंग दाल

बड़ा) भोग लगावे–मिश्री, दूध, आम्रफल, पान मीठा देवे। अतः यन्त्र के वायव्य दिशा में षष्ट त्रिकोन पर देवी मयनावती की स्थापन पूजन करे।

"ॐ मयनावती देवी"

गायत्री :- ॐ मयनावन्ती विदमहे जोगमाया धीमही तन्नो जालंदर प्रिया प्रचोदयात।

इस मन्त्र का पढ़कर अष्ट गंध से लिखे।

मन्त्र :- सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सत का जोगी जुगत की माया गुरु शब्द पर ध्यान लगाया। घट पिण्ड अष्ट कमल बज्र की काया। शून्य ओंकार में शिव साकार तब बन्या ब्रह्माण्डाकार। कहे जलंदर सुन बा मयनावती यह जोग अलख पुरुष ने बताया। ॐ मयनावती देवी उज्जैन क्षेत्र बैठकर थापना थापी। जहां पर गुरु जालंधर नाथ की पूजा करा ली। पूजा करन्ते पाप कटन्ते, मुक्ता फल लभन्ते। श्री नाथजी गुरु जी को आदेश। आदेश।

यह कहकर अक्षद छोड़े और पंचोपचारे पूजन करे तथा मिष्ठान भोग पान बीड़ा इत्यादि अर्पण करे। अतः यन्त्रस्थ षटकोन त्रिकोन के इशान्य दिशा में सती पार्वती देवी का स्थापन पूजन करे।

"ॐ उदयनाथ पार्वती देवी"

गायत्री :- ॐ सती पार्वती विदमहे शिव प्रियाये धीमही तन्नो आद शक्ति प्रचोदयात।

यह मन्त्र पढ़कर अष्ठगंध से लिखकर स्थापन करे।

गायत्री :- सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गंगा गौरजा पार्वती देवी (डोल्मा माता) वृषभ वाहनी उत्तराखण्ड मानस सरोवर बैठकर थापना थापी ॐकार आदि नाथजी की चेली कहायी। तैतीस करोड़ देवी देवताओं ने सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करायी। लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा दाना–पानी आहार पुरालो हमारे घट पिण्ड का भय हरण दोजक तरण नाद

बिन्द ज्योति कला का धर्म । इतना उदयनाथ पार्वती मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया । श्री उदयनाथ गुरुजी आदेश । आदेश ।

यह पढ़कर अक्षद बरसों और पंचोपचारे पूजन करे । पंच फल भोग पान बीडा, बिल्वफल चढ़ाये ।

तदपश्चात यन्त्र के षष्टकोन त्रिकोन के बाहरी अष्टदल पंखडी वतृल के ऊपर पूर्व दिशा में । महाकाली देवी की स्थापना करे ।

"ॐ महाकाली देवी"

गायत्रीः- ॐ महाकाली विदमहे ब्रह्म पुत्रीये धीमही तन्नो रुद्र प्रियाये प्रचोदयात् ।

इन मन्त्र पढ़कर अष्टगंध से लिखकर यन्त्रस्थ स्थापन करे ।

मन्त्रः- सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश ॐ गुरुजी । ॐ काली काली महाकाली ब्रह्मा की बेटी, इन्द्र की साली, मांद्यमास-कारी विजया खाय मांस भखे मसाने जो जो चीतावू सो सो आन, ऋद्धि सिद्धि लीयावो हो हो भसमन्ती माई जहां पाई तहां लगाई-सती नाती धरम की बेटी अचल नाथ की चेली मनमाने तो संग जमाई नहीं तो फिरी अकेली गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फूरो मन्त्र श्री नाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश ।

यह पढ़कर अक्षदा बरसो और पंचोपचारे पूजन करे । दही, पान, उड़द डाल या खीर हलवा भोग लगावे । मीठा केशर पान बीड़ा देवे फल नारियल चढ़ावे ।

अतः अष्टदल वर्तृल के ऊपर अग्नेय दिशा में ॐ अन्नपूर्णा देवी की स्थापन पूजन करे ।

"ॐ अन्नपूर्णा देवी"

गायत्रीः- ॐ अन्नपूर्णाय विदमहे, महाअन्न पूर्णाय धीमही तन्नो अन्नपूर्नी प्रचोदयात् ।

इस मन्त्र से अष्ठगंध से लिखकर स्थापन करे ।

मन्त्रः-सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ गणपत गणपत राजकुमार ऋद्ध पर बैठे गणपत आप देवी पूजो केसर काफूर दोहरा

कोट तेहरी खाई कंटक मार खप्पर में लीजे ऋद्धि टूटे नहीं विघ्न व्यापे नहीं हाजर हाजर गणपत की दुहाई गणपत पूजे अमृते सदा फल दीजे धर्म की डिब्बी पाताल का ठीया नौ नाथ चौरासी सिद्धों मिल भंडार किया भूरी पाली काली डिब्बी शिवजी के पास मडी मसाणी में फिरा गुरु हमारे साथ धरत की डिब्बी ब्रह्म कपाली ब्रह्मा विष्णु मिल अग्नि जाली नीचे–नीचे आग ऊपर पानी तपे रसोई आद भवानी प्रतती गणपत पूरे तत पूरे गणेश ऋद्ध सिद्ध तो श्री ईश्वर पूरे तब प्रसाद महेश अन्न पूर्णाय विदमहे महा अन्न पूर्णाय धीमहि तन्नो अन्नपूर्णी प्रचोदयात्। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

यह पढ़कर यन्त्र पर अक्षत बरसो और पंचोपचारे पूजन करे। अतः यन्त्र के अष्ठदल में दक्षिण दिशा में तुलजा भवानी की स्थापना पूजन करे। पंच पकवान भोज मीठा पान पंच फल चढ़ावे।

"ॐ तुलजा भवानी देवी"

गायत्री—ॐ तुलजा भवानी विद्महे चण्डीकाय धीमहि तन्नो जोगमाया प्रचोदयात्।

यह पढ़कर यन्त्र के ऊपर अष्टगंध से लिखे।

मन्त्र—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ तुलजा भवानी आदभवानी, सिंह वाहनी तुलजापूर मध्ये थापना थापी। ॐ सतवन्ती आगम से आयी, सीता भयी निगम को जायी, भई माता सीता जपो जाप रामचन्द्रजी तुलजा भवानी, कुल स्वामिनी गौरी गोदी बिठाया बालक को चिन्ता चिता करे चन्डी मंगला मंगल करे भवानी तुलजा भवन दरबार भरे ऋद्ध सिद्ध भण्डार भरपूर। इतना मन्त्र ईश्वर महादेव ने बताया। श्री नाथ गुरुजी को आदेश। आदेश।

यह पढ़कर यन्त्र पर अक्षत बरसों और पूजन करे। मिष्ठान्न भोग, आम्र–लाल रंग का फल। पान बीड़ा देवे। तत्पश्चात् यन्त्र के अष्टदल के नैवृत्य दिशा में देवी बिमला माता की स्थापन पूजन करे।

"ॐ बिमला देवी"

गायत्री—ॐ बिमला देवी विद्महे सन्तोषी धीमहि तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात्।

यह मन्त्र पढ़कर अष्टगंध से लिखे।

मन्त्र—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ बिमला देवी, परम सन्तोषी मन पवन वाहिनी, पिशोर स्थान बैठकर स्थापना थापी। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथजी की चेली कहायी। अनन्त कोटि सिद्ध की कुल स्वामिनी कहायी। अनन्त कोटि सिद्धों के हाथ से सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करालो लख चौरसी जीया जून को चोगा दाना पानी आहार पूरा लो। ॐ बिमला देवी हमारे घट पिण्ड का भय हरण दोजक तारण नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म इतना बिमला देवी मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

यह मन्त्र पढ़कर अक्षत बरसो तथा पंचोपचारे पूजन करे। मिष्ठान खीर का भोग, मीठा पान चढ़ावे, पंचफल चढ़ावे।

अतः यन्त्र के अष्टदल के पश्चिम दिशा में हिंगलाज देवी की स्थापना पूजन करे।

"ॐ हिंगलाज देवी"

गायत्री—ॐ हिंगलाज देवी विद्महे महामाई धीमहि तन्नो शंकर प्रिये प्रचोदयात्।

इस मन्त्र से अष्ठगंध से लिखकर स्थापना करे।

मन्त्र—सत् नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पश्चिम दिशा से जोगन आई। दो कर जोड़ आगे ब्रह्मा विष्णु महेश। पीछे देवी देवता तैंतीस करोड़ करे सेवा पूजा आरती धूप ध्यान। जपो तपो श्री हिंगलाज माया, ॐ जुग—जुग मध्ये काहे का तेरा दीवडा, काहे की तेरी बात काहे के सिंहासन बैठे गुरु गोरखनाथ। ॐ गुरुजी जुग—जुग मध्ये सत्त का दीवडा, सत्त की तेरी बात, सत्त के सिंहासन बैठे गुरु गोरखनाथ। पैले ओंकार जोग

ओंकार मोक्ष मुक्ता का तृप्त हो जोगन महामाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

यह मन्त्र जाप पढ़कर अक्षद बरसो तथा पंचोपचारे पूजन करे तथा मिष्ठान, भोग, बिल्व फल का भोग, नींबू की माला डालें। पान का बीड़ा चढ़ावे।

तदनन्तर यन्त्र के अष्ठदल के वायव्य दिशा में श्री तारा त्रिकुटा माता की स्थापन पूजन करे।

"ॐ तारा त्रिकुटा देवी"

गायत्रीः–ॐ तारा त्रिकुटा विदमहे त्रिदेव पुत्रीये धीमही, विश्वकर्मा तोतला प्रचोदयात।

मन्त्रः–ओं ऐं ह्रीं क्रीं हूं फट स्वाहाः सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ तारा त्रिकुटा तोतला बल वाहिनी स्थान कोट क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। अठारह भार वनस्पति के राजगुरु चौंरगीनाथ जी की चेली कहालो अठारह भार वनस्पति के हाथ सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करालो। त्रिकुटा देवी हमारे घट पिण्ड का भय हरण दोजक तारण नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म इतना तारा त्रिकुटा मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

मिष्ठान, भोग पंचफल, मीठा पान देकर पंचोपचारे पूजन करे।

अतः यन्त्र षष्टदल के उत्तर दिशा में ज्वाला देवी की स्थापना पूजन करे।

"ॐ ज्वाला देवी"

गायत्रीः–ॐ ज्वालाये विदमहे वज्र हस्ताय धीमही तन्नो ज्वाला प्रचोदयात।

इस मन्त्र को अष्ठगंध से लिखकर स्थापन करे।

मन्त्रः–सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ निरन्जन ज्योति ज्वाला सतवन्ती बारह वर्ष की कुवारी देवी अेकोंकार सुमरे चौदह भुवन कांगड़ा देश ज्वालाजी बैठ कर स्थापना थापी। जहां पर जती गोरख ने अलख जतायी। भिक्षा लेना का किया आदेश। पर नहीं लिया आदेश।

श्री नाथजी ने खिचड़ भिक्षा का दिया उपदेश । ॐ निरन्जन शक्ति ज्वालाम्बा माया निचे खिचड़ उबाल्या उपर थण्डा पानी । अनन्त कोट सिद्ध ने मन मानी । जल देवत्या को आदेश । उबल्या ज्वालाई को आदेश । गुरु शब्द ज्योति ज्वाला जपो जाप पाप ताप कटन्ते आपो आप इता ज्वाला देवी मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया । नाथजी गुरुजी को आदेश ।

यह पढ़कर अक्षद बरसो और पंचोपचारे पूजन करे । खीचड़ का भोग लगावे पंच फल, पान बीड़ा तथा ११ लवंग की माला चढ़ावे ।

अतः यन्त्र अष्टदल के ईशान्य दिशा में महामनसा देवी पूजन करे ।

"ॐ महा मनसा देवी"

गायत्रीः- ॐ महा मनसा देवी विदमहे मनसा धाती धीमही तन्नो अलील प्रिये प्रचोदयात ।

यह मन्त्र पढ़कर अष्टगंध से लिखे ।

मन्त्रः- सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी ॐ स्थूल मन, स्थूल दृष्टि मनसा धाती कूप वाहनी । २१ वे ब्रह्माण्ड पर बैठकर थापना थापी । ब्रह्मा विष्णु महेश की जननी कहायी । ब्रह्मा विष्णु महेश के हाथ से सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करा लो लक्ष चौरासी जिया जून को चोगा दाना पानी आहार पुरालो, प्रतिपाल करालो, अलीलनाथजी की चेली कहालो, ॐ महामनसा देवी हमारे घट पिण्ड की करे रक्षा दोजक तरण नाद बिन्द ज्योती कला का धर्म इतना महामनसा देवी मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश ।

यह पढ़कर अक्षद बरसो और पंचोपचारे पूजन करे । ब्रह्मकमल, सूर्य फूल से पूजा, आम्र फल दूध का भोग, मीठा पान देवे ।

इस प्रकार श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्रस्थ स्थापन पूजन करे ।

अतः निम्न "प्राण गायत्री मन्त्र" पढ़कर यन्त्र के ऊपर गंगाजल हस्त स्पर्श या अक्षदा छोड़कर प्राण प्रतिष्ठा करे ।

"प्राण प्रतिष्ठा"

प्राण गायत्री—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अपरम्पार में अपरम्पार अपरम्पार में ब्रह्मपार ब्रह्मपार में गिरि कैलाश, कैलाश गिरि पर गगन मण्डल छाया। ज्योति से त्रिकुटी भई ॐ सोहं से मार्ग पाया। कैलाश में महादेव पार्वती ने किया निवासा। प्राण गायत्री का भया प्रकाशा। ॐ गुरुजी कौन पुरुष ने बान्धी काया, कौन डोर से हंसा आया, कौन कमल से संसार रचाया, कौन कमल से जीव का वासा, कौन कमल से निरंजन निराई, कौन कमल में फिरी दुहाई। कहो सिद्धों असंख्य युग की बात, नहीं तो धरो सब ठाट—बाट। ॐ गुरुजी अलख पुरुष ने बान्धी काया बेगम डोर से हंसा आया। नाभी कमल से संसार रचाया, हृदय कमल से जीव का वासा कुन्ज कमल में निरन्जन निराई, त्रिकूट महल में फिरी दुहाई। कौन के हम शिष्य है कौन हमारा नाम, कौन हमारा इष्ट है, कौन हमारा गांव, ॐ गुरुजी शबद के हम शिष्य है सोंह हमारा नाम, प्राण हमारा इष्ट है, काया हमारा गांव। ॐ सोंह हंसाय विदमहे प्राण प्राणाय धीमहि तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात्। इतना प्राण गायत्री सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अतः साधक ने स्थापित नाथ सिद्ध योगिनी के सम्पूर्ण यन्त्र की सामुपचारे षोडशोपचारे या पंचोपचारे या यथा लब्धोपचार से पूजन करे तथा यन्त्र को नाद पूजा आदेश करके प्रार्थना करे।

"प्रार्थना"

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आदि का जोगी जुगत कि माया सत् का जोगी वज्र हो काया। दर्शन किये सुख उपजे सुफल हमारी जात नाथ निरन्जन आज्ञा दीनी शीश नवाऊं मात। ॐ प्रथम ज्योत तेरी ज्वालाम्बा खोलो कपाट देहे दरस परस सज्जा हाथ सुमन गलेबीच माला, हरख सिंह महाकाली, चण्डी डोले भूतना पिशाच् प्रेत डंकनी शंखनी समेत, शंख, चक्र, गदा, पदम समर बीचे डोले तुलजा कामाक्षा तारा त्रिकुटा बन्धन किन रक्तबीज एककीन खण्डक—खप्पर हाथ लिना सती सावित्री शिवा पार्वती महापदमा रूण्ड—मुण्ड हेरे देवताना सुखराज दिना दैत्यों को

संहार कीना माता महालक्ष्मी, महामनसा राणी गंगाई गौरजा बिनती करे बारम्बार तेरे, अरब खरब दशगुण कष्ट कटे, दरिद्र हटे, छटे पाप—रहे पुण्य ब्रह्माी वामनी—शिवा दामीनी देखे सब हरे सुखदाता, सुन्दरी मयनावती—बिमला राणी राज करे, ज्वाला माई होमयो गायत्री—माता हिंगलाज कष्ट हरे—सहस्त्र दु:ख दरिद्रे दूर करे, ॐ नाग पदमा देवी सकल धरत्री आधर धारे, धारे आधार सकल सृष्टी सारे ओ जगन्माता अन्नपूर्णा जेही कर भर्ता सम्पत्ति, ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर भरें। बिनती सुन लिजो सकल जगत को सुख दिजो। इति श्री नाथ सिद्ध शक्ति को आदेश। सिद्ध योगनी आद्य शक्ति माया को आदेश। ॐ योगमाया को आदेश।

इति नाथ सिद्ध योगिनी स्थापना पूजन समाप्त

❋❋❋

यन्त्र को सिद्ध करना

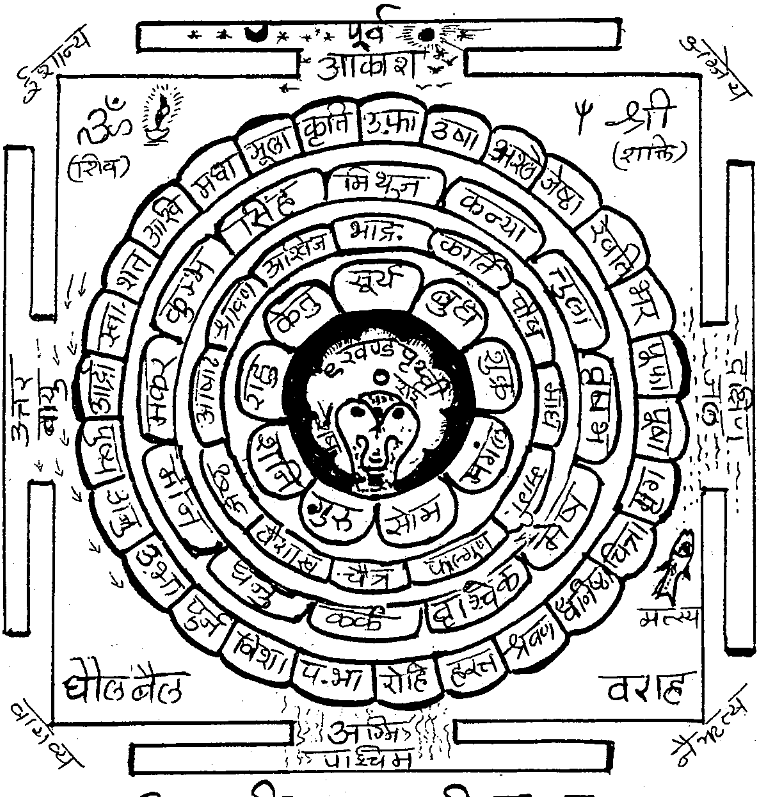
इस यन्त्र की श्रद्धा अनुसार सर्वातो पूजन करने के पश्चात इस यन्त्र को सिद्ध करने हेतु यन्त्र के प्रत्येक मन्त्र तथा गायत्री को प्रथम सिद्ध करें। तत्पश्चात् यन्त्र भोज पत्र के ऊपर १८१८ बार अष्टगंध स्याही से आंख, कन्हेर या अनार के कलम से लिखकर बहते जल में छोड़ें। विशेषता: त्रिवेणी संगम में प्रवाहित करें। सर्व कार्य सिद्धि होती है।

पूजन विधि में यह यन्त्र धातु के ऊपर (ताँबा, चाँदी, सोना इत्यादि) बनावे और पूजन करें यंत्र घर मकान में रखे तथा नित्य पूजन करने से घर में किसी चीज की कमी नहीं होती तथा शांति समाधान अनुभव में आता है। यह यन्त्र सिद्ध करके गले में बांधन से सर्व कार्य सफलता प्राप्त होती है तथा भूत—प्रेत इत्यादि से निर्भय होते हैं। यह यन्त्र भोज पत्र पर बनावे और १००८ बार हवन करें सर्व ऋद्धि सिद्धि एवं ज्ञाता हो।

यह यन्त्र सिद्धि सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण काल में करें, होली एवं दिवाली के अमावस्या के दिन एवं सोमवती अमावस्या तथा गुरु पूर्णिमा इस कालावधि में तथा शक्ति पीठ स्थानों में जल्द सिद्ध होते हैं।

इति श्री नाथ सिद्ध योगिनी स्थापना पूजन सम्पूर्ण भया।

श्री नाथजी। गुरुजी को आदेश।



-धरत्री-गायत्री यन्त्र

यन्त्र-विश्लेषण

(धरत्री गायत्री) पृथ्वी रचना– यन्त्र के ईशान्य दिशा में ज्योति स्वरुप शिव (ॐ) है तथा अग्नेय दिशा में शक्ति (Ψ श्री) विराजमान है । इनके चरण कमल पर जल (दक्षिण दिशा में) जल पर थल (यन्त्र के मध्य में पृथ्वी) थल पर मच्छ (दक्षिण दिशा में) मच्छ पर कच्छ (नैऋत्य दिशा में वराह रुप में विष्णु अवतार) कच्छ पर कमल का फूल (यन्त्र के मध्य में ९ पंखडी की कमल ९ खण्ड पृथ्वी रुप में) फूल पर शेष नाग (यन्त्र के मध्य में) शेष नाग पर धौल बैल (वायव्य दिशा में) धौल बैल के सिंग पर राई का दाना (यन्त्र के मध्य में) जिस पर श्री नाथ जी ने ९ खण्ड पृथ्वी ठहराई (यन्त्र) ।

ग्रह रचना– सूर्य से ग्रहों का अन्तर प्रमाण से प्रथम नजदीक बुध, शुक्र, पृथ्वी, चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि, राहु-केतु यन्त्र में स्थापित किये हैं ।

१२ मास– शेष के मुख दिशा अनुसार मास रचना की है ।

राशि रचना– राशि के स्वामी ग्रह अनुसार उसी दिशा में स्थापित है ।

स्वामी ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	सोम (चन्द्र)	गुरु	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	मिथुन कन्या	वृषभ तुला	मेष वृश्चिक	कर्क	धनु मीन	मकर कुम्भ	गौन —	गौन —

नक्षत्र रचना– नक्षत्रों के स्वामी ग्रह से उसी दिशा में स्थापित है ।

स्वामी ग्रह	नक्षत्र	दिशा यन्त्र में	स्वामी ग्रह	नक्षत्र	दिशा यन्त्र में
सूर्य	कृति, उ.फा, उषा	पूर्व में	चन्द्र	रोहि, हस्त, श्रवण	पश्चिम में
बुध	आश्ले, ज्येष्ठा, रेवती	अग्नेय में	गुरु	पुर्न, वि.शा. पू.भा.	वायव्य
शुक्र	भर, पू.फा. पू.षा.	दक्षिन में	शनि	पुष्य, अनु. उ. भा.	उत्तर
मंगल	मृग चित्रा घनिष्ठा	अग्नेय में	राहु	आर्द्रा, स्वा, शत,	ईशान्य
			केतु	अर्शि मघा मूला	ईशान्य

तत्व रचना– यन्त्र के पूर्व दिशा में आकाश तत्व, पश्चिम दिशा में अग्नि तत्व तथा दक्षिण दिशा में जल तत्व उत्तर दिशा में वायु तत्व तथा यन्त्र के मध्य में पृथ्वी तत्व इस प्रकार सृष्टि में पांच तत्व, ९ ग्रह, १२ राशि, २७ नक्षत्र, १५ तिथि इत्यादि के साथ १२ मास पृथ्वी भ्रमण करती रहती है ।

"धरत्री गायत्री पूजन"

विधिः- प्रथम गौ-गोबर से धरती पर धरत्री चक्र के आकार का लेपन करें। वह सुकने पश्चात अष्ठगंध से चक्र में दिखाया शेष नाग जैसा शेष केतकी डंठल से अष्ठगंध स्याही से या अक्षदा से बनावे अब भोज पत्र के ऊपर या पाटला के ऊपर या शुभ्र वस्त्र के ऊपर चक्र बनावे दर्शित २७ नक्षत्र १२ राशि, ९ ग्रह इत्यादि नाम देकर यह यन्त्र चक्र शेष ऊपर स्थापन करे, यंत्र चक्र के पूर्व दिशा में दीप गौघृत धूप, दक्षिन दिशा में शस्त्र त्रिशूल, चिमटा, खडांग इत्यादि रखे तथा पश्चिम दिशा में कलश जल त्रिवेणी संगम या समुद्रजल रखे उत्तर दिशा में खनिज सुवर्ण,चान्दी, कोयला तथा वनस्पति वटवृक्ष, पीपल, नीम इत्यादि में एक स्थापन करे।

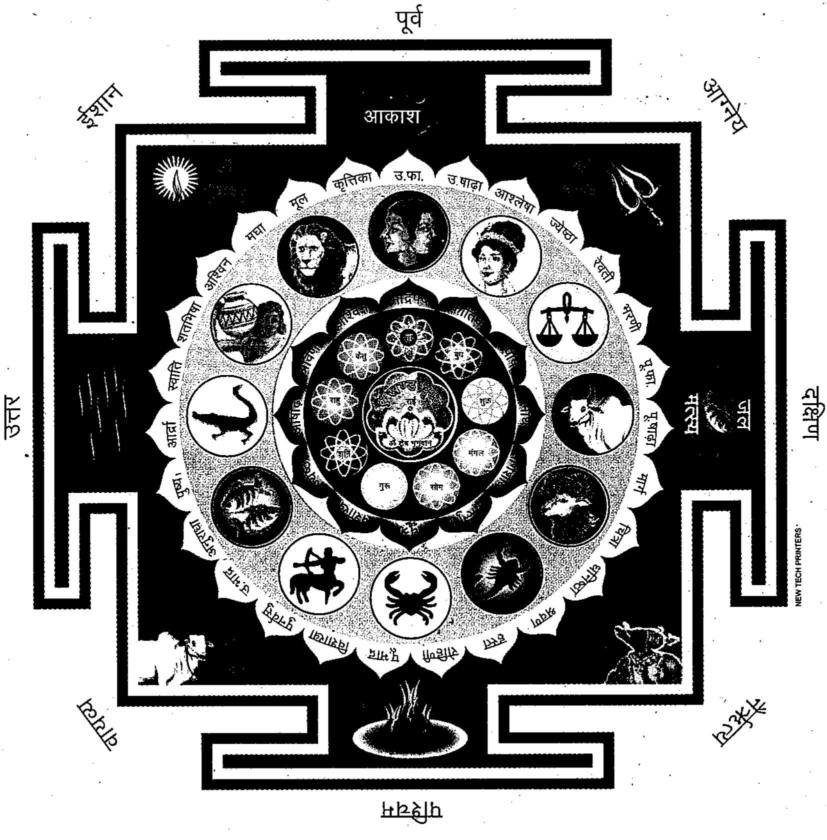
विवरणः- शेषनाग उपर धरत्री विराजमान हैं तथा नक्षत्र राशी में वह भ्रमण कराते हैं। जब सिंह कन्या तुला राशी के सूर्य में शेषनाग का मुख इशान में अग्नि दिशा में खो देवें, तथा वृश्चिक, धनु मकर के सूर्य में शेषनाग का मुख नैवृत्य वायत्य दिशा में होता हैं। वृषभ मिथुन कर्क के सूर्य में शेषनाग का मुख अग्नि में नैऋत्य में दिशा में होता है।

अब १२ मास में अश्विन, भाद्रपद कार्तिक मास में शेषनाग का सिर पूर्व दिशा में मार्गशीष, पौष माघ मास में दक्षिण में, तथा फाल्गुण चैत्र वैशाख पश्चिम में और जेष्ठ आषाढ़ श्रावण में मुख उत्तर दिशा में रहता है।

फलः- यदि शेषनाग के सिर पर खुदवायें तो मातृपितृ गुरु की हानी होती है। पीठ पर खुदवाये तो भय रोग और पूंछ पर खुदवाये तो तीन गोत्र की हानि होती है। खाली जगह पर खुदवाये तो शुभ लाभ होता है।

शयनः- सूर्य के नक्षत्र में पांचवे, २०वे, ९वे, १२वे, १९वे, २६वे, इन पर पृथ्वी धरत्री सोयी शयन करती हैं। सोयी हुई पृथ्वी तालाब, बावड़ी, कुंआ हवेली मठ मन्दिर कभी नहीं खोदना चाहिए। अर्थात अतः धरत्री गायंत्री पूजन जेष्ठ, आषाढ़ श्रावण में करें पूजन के लिये, सौभाग्य सूचक कुंकुम, हल्दी अक्षदा कमल का फूल गंगा जल कलश, धूप दिश धृत इत्यादि साहित्य से

धरत्री-गायत्री यन्त्र



चित्रांकन : योगी विलासनाथ

धरत्री का निम्न मन्त्र पढ़कर पूजन पाठ करें तथा निम्न धरत्री गायत्री द्वादश मन्त्र पढ़कर चक्र में दिखाये हुये यन्त्र के ऊपर अक्षदा छोड़े।

धरत्री गायत्री द्वादश मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जो समान धर्ती तिल समान काया, फाटक खोल धर्ती माता तेरे में योगीश्वर आया। हिन्दू को जलाया, मुसलमान को दबाया-तीसरा सिक्का श्री नाथजी ने चलाया। सातवें पाताल एक निरन्जन निराकार ज्योति स्वरुप उनकी चरण कमल पादुका पूजिये जो! चरण कमल पर जल, जल पर थल, थल पर मच्छ, मच्छ पर कच्छ, कच्छ पर कमल का फूल, कमल के फूल पर शेषनाग, शेषनाग पर धौल बैल धौल बैल के सींग पर राई का दाना। राई के दाने पर श्री नाथजी ने नवखण्ड पृथ्वी ठहरायी। प्रथम नाम धर्ती (यन्त्र के ऊपर "ॐ धर्ती माता को आदेश" कहकर अक्षद छोड़े) द्वितीये नाम विश्वम्भरा (यन्त्र के ऊपर "ॐ विश्वम्भरा माता को आदेश "कहकर अक्षद छोड़े) तृतीय नाम मेद मेदिनी (यन्त्र के ऊपर "ॐ मेद मेदनी माता को आदेश " कहकर अक्षद छोड़े) चतुर्थ मनसा (यन्त्र के ऊपर "ॐ माता मनसा को आदेश" कहकर अक्षद छोड़े) पांचवे नाम कृतिका (यन्त्र के ऊपर "ॐ कृतिका माता को आदेश" कहकर अक्षद छोड़े) छटे नाम ब्रह्मचण्डी (यन्त्र के ऊपर "ॐ माता ब्रह्मचण्डी को आदेश" कहकर अक्षद छोड़े।) सातवें कन्या कुमारी (यन्त्र के ऊपर "ॐ माता कन्या कुमारी को आदेश" कहकर अक्षद छोड़े) अष्ठमें वज्रबाला भव योगनी (यन्त्र के ऊपर "ॐ वज्रबाला माता को आदेश" कहकर अक्षद छोड़े) नवमे नौ करोड दुर्गा ("ॐ नौ करोड दुर्गा माता को आदेश" कहकर यन्त्र के ऊपर अक्षद छोड़े) दशमें सिंह भवानी ("ॐ भवानी माता को आदेश" कहकर बाहरी षष्टकोन त्रिकोन पर अक्षद छोड़े) ग्यारहवे चन्द्रघण्टा मृतका ("ॐ माता चन्द्रघण्टा को आदेश" कहकर यन्त्र के ऊपर अक्षद छोड़े) बारहवें बरदायनी। ("ॐ माता बरदायनी को आदेश" यन्त्र के ऊपर अक्षद छोड़े) आदि सत्य, नाद सत्य, मुद्रा सत्य, सत्य धर्ती माई, धर्ती ध्यान सदा से लायी,

अरणी–अरणी सूर्य चान्द को धाई। धर्ती माता तुम बड़ी तुमसे बड़ा न कोय। जो धर्ती पर पग धरे तो कन्चन काया होय। आदि की धर्ती अन्त की काया। अमर हो धर्ती वज्र हो काया। धर्ती माता के पिण्ड प्राण सदा बालक स्वरुपी हो रहे। काटया न काटे जाल्या न जले, डुबाया न डूबे, ब्रह्म तेज हो रहे धर्ती द्वादश पढ़न्ते सुनन्ते मोक्ष मुक्ति फल पावन्ते। गर्भ योनी कभी न आवन्ते। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

इसी तरह मन्त्र पढ़कर सामुपचारे पंचोपचारे या षोडशोपचारे या यथालब्धोपचार धर्ती माँ की पूजा करे।

सूचना सिद्धि– गुफा में या जमीन खोदकर धर्ती के अन्दर बाघांबर आसन लगाकर जेष्ठ, आषाढ़, श्रावण मास में या शरद ऋतु में सूर्य उत्तरायण में यह मन्त्र ४१ दिन तक जाप करे तो भूमि के अंदर, द्रव्य दर्शन, जल दर्शन, खनिज दर्शन इत्यादि सिद्धियां प्राप्त होती हैं। साधक ने अनुष्ठान करके तथा गुरु आज्ञा से यह साधना करे।

विशेष– कर्मकाण्ड (अभिषेक, यज्ञ–हवन–जप अनुष्ठान इत्यादि धार्मिक विधि) करते समय तथा नया घर (मकान, दुकान) जमीन खरीदने तथा नये घर में गृह प्रवेश करने के समय उपरोक्त मन्त्र विधि से धरत्री पूजन करें और धरत्री माता की प्रार्थना करें कि " हमे हमारे कार्य के लिये (जगह) स्थान प्रदान करने की कृपा करें" (ऐसा करने पर, शुभ–अशुभ, मुहूर्त या काल इत्यादि देखने की आवश्यकता नहीं पड़ती)।

खेती में उत्तम फसल आने के लिये

उपरोक्त मन्त्र विधि से किसान अपने खेत में भूमि पूजन करके फसल के बीज बोये तो उस खेत में ऋद्धि–सिद्धि युक्त भरपूर फसल आयेगी और धन धान्य से भरपूर लाभ होगा।

इतना धरती गायत्री पूजन सम्पूर्ण भया।
श्री गुरु गोरक्षनाथजी को आदेश। आदेश।

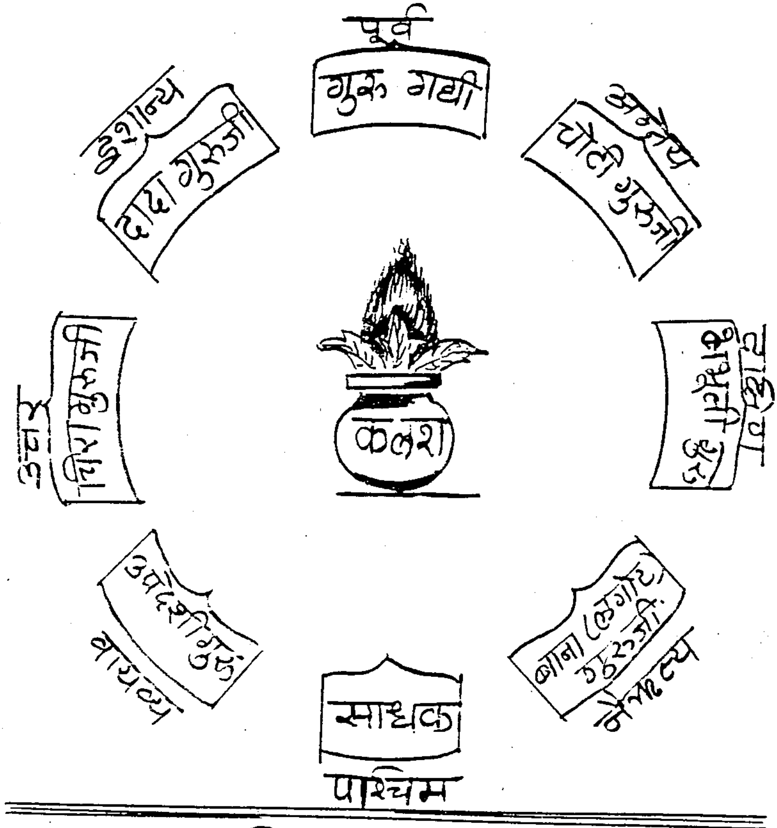
*****

श्री नाथ परम्परा पूजन

पूजा रचना विधिः- साधक ने अपने आदि परम्परा पूर्वजों की पूजा संकल्प विधि से करें चित्र में दर्शित अनुसार श्री गुरुजीयों के आसन लगावे । पूर्व दिशा में गुरुगद्दी के (पंथ के मूल गुरु) आसान, ईशान्य दिशा में दादागुरु (अपने गुरु के गुरु) अग्नेय दिशा में अपने चोटी गुरु का आसन तथा उत्तर दिशा में चिरा गुरुजी के आसन दक्षिण दिशा में, बभूत गुरुजी का आसन वायव्य दिशा में उपदेशी गुरुजी का आसन तथा नैवृत्य दिशा में लंगोट(बाना) गुरुजी का आसन लगावे । सभी आसन उन का बनावे या भगवा वस्त्र का बनावे, शक्य हुवा तो निम्न दिये हुयें प्रकार से आसन बनावे ।

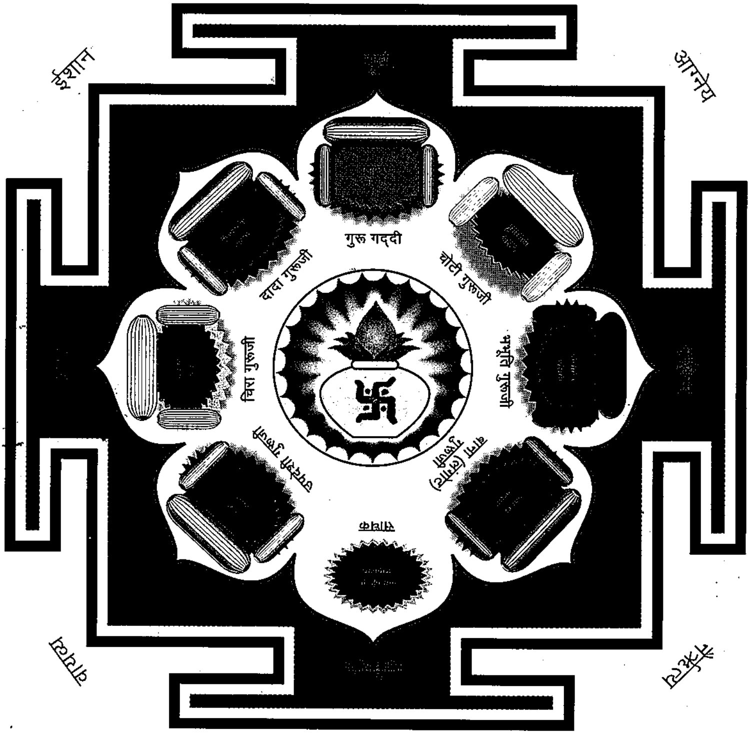
गुरुजी	आसन विवरण
गुरु गद्दीः-	सुवर्ण, चांदी, बाघाम्बर इत्यादि
दादा गुरुः-	बाघाम्बर, मृगछाला, ऊनका
चोटी गुरुः-	बाघाम्बर, मृगछाला, ऊन, कम्बल इत्यादि
चिरा गुरुः-	कम्बल
बभूत गुरुः-	कम्बल, बाघाम्बर, मृगछाला मृतिका
उपदेशी गुरुः-	ऊन, कम्बल या कुशा सन
लंगोट गुरुः-	भगवा वस्त्रम कम्बल

सभी आसनों में एक एक रुद्राक्ष गुरुओं के नाम से रखें । नाद जनेऊ, सिंगी, नादी पवित्री, कुन्डल, चिमटा,फावडी, त्रिशूल झोली इत्यादि नाथों के साहित्य अर्पण करे शक्य नहीं है, तो केवल अक्षदा या बभूत रखे सभी आसन बीच कलश (संकल्प) की स्थापना करे तथा दीप, धूप सुगन्धित करे । फलों का भोग लगावे (दक्षणा) चिप्पी पूजा चढ़ावे । अतः निम्न मन्त्र पढ़कर आसन दान सभी दिशाओं में करे उपर दिखाये गये आसन दान करे । प्रथम दाहिने हाथ में गंगाजल लेकर सभी आसन सामने पाद प्रक्षालम करें । निम्न मन्त्र पढ़कर जल छोड़े ।



श्री नाथ सिद्ध परम्परा का पूजन मण्डल

श्री नाथ सिद्ध परम्परा का पूजन मण्डल



चित्रांकन : योगी विलासनाथ

NEW TECH PRINTERS

पाद प्रक्षालमः- सत नमो आदेश । गुरुजी का आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ भुर्भवः स्वः जल बिम्बाय विद्महे निल पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात । श्रीनाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश । आदेश ।

आसन दानः- सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । ओ आसन मारो सिंहासन पाओ, बैठो गुरु की छाया पांच महेश्वर (पंचगुरु) आज्ञा करे तां शबद गुरु से पाया । थिर कर आसन स्थित कर ध्यान सत सत श्री शम्भुयती गुरु गोरक्षनाथ जी बैठे गादी परवान, गादी ब्रह्मा, गादी इन्द्र, गादी बैठे गुरु गोविन्द आओ बाल गोपाल तुम लागो पाव तब तुम पूजो ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा की कूंची महादेव का ताला नरसिंह बीर भैरों रखवाला । इति गादी आसन दान मन्त्र सम्पूर्ण भया । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश ।

अतः आसन के सभी दिशा में क्षेत्रपालों की स्थापना करे निम्न मन्त्र पढ़कर अष्ठगंध अक्षद छोड़े ।

क्षेत्रपाल संस्थाप्यः- ॐ नमो आदेश । ॐ गुरुजी को आदेश, प्रथम भैरवदेवाय, द्वितीय भूत विडारन, तृतीये रुण्ड माल, चतुर्थे क्षेत्रपाल, पंचमें बावरा बिवराल, षष्ट में महाबली, सप्तमे अनन्त कोट सिद्धों में आज्ञावान, अष्टमें बनारस जी के थान, नवमे कमल नाभ, दशमें बृजनाथ, एकादश कालसैन, द्वादशे बटुक नाथ ऐते भैरवनाथ जी के द्वादश नाम सम्पूर्ण भया रक्षती । श्री नाथजी । गुरुजी को आदेश ।

अब निम्न मन्त्र पढ़कर सभी गुरुजी को चन्दन तिलक दान करें ।

तिलक दानः- ॐ सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । ओम सोंह धुंदुकार पांच तत का किया पसारा उल्टी पवन गगन में डोले सभी देवता गुरुओं के तिलक लगावे । आदेश नाम करो उपाय रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश-आदेश ।

अतः आसन के बीच में निम्न मन्त्र से कलश की स्थापना करे ।

कलश संस्थाप्यः- सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । मन मारु मैदा करु करु चकनाचूर पांच महेश्वर हुकम करे तो कलश बैठाये आसन पूर । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश ।

अब कलश समीपे गौ धृत का दीप जलायें ।

दीपज्योत जागण:- ॐ गुरुजी आदेश ओ अन्न पूरे अनपूरी तत पूरी गणेश पांच महेश्वर हुकम करे ता ज्योत जगाय महेश। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

तदपश्चात धूपदान करे निम्न मन्त्र पढ़कर।

धूपदान:-सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। धूप कीजे धुपीया कीजे, वासना कीजे। जहां धूप वहां वास जहां वास वहा देव जहां देव वहां गुरुदेव जहां गुरुदेव वहा फूल पूजा, अलष निरंजन एक और नही दूजा इति धूप दान सम्पूर्ण भया श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अत: पूजा का पात्र में गंध पुष्प अक्षदा इत्यादि साहित्य लेकर सभी गुरुओं की सामुपचारे या पंचोपचारे या षोडशोपचारे या यथालब्धोपचारे पूजन करें।

दश पात्र पूजा- सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ब्रह्माजी चार वेद पढ़न्ते, महेश्वर ध्यान धरन्ते, विष्णुजी जाप जपन्ते, गणेशजी ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरन्ते, शंभुजती गोरक्षनाथजी रक्षा करन्ते, पाप कटन्ते लख चौरासी का फेरा कटन्ते, काल कुट का हरन्ते।

ॐ पहली पूजा पूर्व की कीजे गद्दी गुरु श्री योगी....... नाथजी की कीजे। लो सिद्ध साधक भर पात्र पूजा फूल रखीजे। ॐ दूसरी पूजा ईशान्य की कीजे, दादागुरु श्री...... नाथजी की कीजे, लो सिद्ध साधक भर पात्र पूजा फूल राखीजे। ॐ तिसरी पूजा अग्नेय की कीजे, सदगुरु श्री...... नाथजी कीजे, लो सिद्ध साधक भर पात्र पूजा फूल राखीजे

ॐ चौथी पूजा उत्तर की कीजे चिरागुरुजी श्री......नाथजी की कीजे लो सिद्ध साधक भर पात्र पूजा फूल राखीजे। ॐ पंचमी पूजा दक्षिण दिशा की कीजे, बभूत गुरु श्री.......नाथजी की कीजे। लो सिद्धसाधक भर पात्र पूजा फूल राखीजे। ॐ छटी पूजा वायव्य कीजे, उपदेशी गुरु श्री.......नाथजी की कीजे लो सिद्धसाधक भर पात्र पूजा फूल राखीजे। ॐ सप्तम पूजा नैवृत्य कीजे, लंगोट (बाना) गुरु श्री.....नाथजी की कीजे। लो सिद्धसाधक भर पात्र पूजा फूल राखीजे।

ॐ अष्ठम पूजा अष्ट भैरो की कीजे रोट प्रसाद खप्पर भरीजे । लो सिद्ध साधक भर पात्र पूजा फूल राखीजे । ॐ नवमी पूजा नौनाथ चौरासी सिद्ध की कीजे, खीर खण्ड पात्र पुरीजे । लो सिद्धसाधक भर पात्र पूजा फूल राखीजे । ॐ दशमी पूजा दसों दिशा की कीजे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की कीजे । कलश थापना की कीजे, लो सिद्ध साधक भर पात्र पूजा फूल रखीजे । इतना दश पात्र पूजा सम्पूर्ण भया । श्री नाथजी । गुरुजी को आदेश । आदेश ।

अतः नाथजी गुरुजीयों को भोजन प्रती भोग लगावे तथा वस्त्र भगवा, दान दक्षणा अर्पण करे ।

भोगः- खीर, पंचमेवा या फल श्रीनाथजी का रोट प्रसाद, गौ दूध इत्यादि विशेष भोग लगावे और निम्न मन्त्र पढ़े ।

भोग लगाने का मन्त्रः- ॐ गुरुजी आदेश । सतगुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी ॐ ज्वाला सरस्वति लगे भोग कटे रोग, अन्न भूतो दानी, अन्न भूतो पाणी, अन्न खाया अलील पीया उसी की पूजा उसी का पुण्य जोगी अवधूत का पाप और ना पून्य कहे महादेव सून बा पार्वती अन्नदाता सदा सुखी वस्त्र का दाता कमलापती सुखी दे सन्तोषी खाय उसकी वासना तीन लोक में जाय, इतना भोग सम्पूर्ण भया श्री नाथजी गुरुजी को आदेश ।

अतः सभी गुरुजी की प्रार्थना करे और निम्न पाठ पढ़े ।

असंख युग की रौरास

सत नमों आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । सत्त की पारखा सिद्ध का योग । उचारन्ते विचारन्ते नही व्यापन्ते रोग । धुन्धु योगी क्षेत्र मेला, काया नगरी हृदय स्थान । पान्च तत्व का स्थान पांच तत्व में रुप न रेखा बोलनहारा आपे आप अलेखा ! नही देही नही देवरा, नहीं पूजा नहीं पाती, नहीं उपजे नहीं विनाशे, नहीं शून्य, नहीं मूल, नहीं डाल नहीं वृक्ष नहीं छाया । जिसका ध्यान सदा शिव ने लगाया । सुर नर मुनि जन गौरा पार्वती देवी आय लो खाय लो छुपा लो जा बैठी शिवा के संग । ॐ गुरुजी असंख युग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये । सत्युग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये । त्रेतायुग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये । द्वापर युग मध्ये कौन पीर कौन

तदबीर बोलिये। कलयुग मध्ये कौन पीर कौन तदबीर बोलिये। ॐ गुरुजी असंख्य युग मध्ये अलील नाथ जी पीर अनहद तदबीर बोलिये। सतयुग मध्ये, श्री ईश्वर आदिनाथजी पीर, पागल तदबीर बोलिये। त्रेतायुग मध्ये सिद्ध चौरंगी नाथजी पीर, बखत (भगत) तदबीर बोलिये। द्वापर युग मध्ये दादा मत्यस्येन्द्र नाथजी पीर, गुरु गोरक्षनाथ तदबीर बोलिये। कलयुग मध्ये गुरु गोरक्षनाथ जी पीर औघड़ तदबीर बोलिये। रोट लंगोट लिंगोपा सोने की मुद्रा, रुपे का नाद छींट की झोली, पाट का मेखला, चन्द्र से योगी गुप्त रहेंगे, बाण, हथियार चलावेंगे, गुरुजी को नहीं मानेंगे शब्द को नहीं झेलेगें दमडी-चमडी का लोभ लालच करेंगे गुरां का नाम ले दोजक भरेंगे कहता हूँ सुनता हूँ देता हूँ हेला, गुरुजी की करनी गुरु जायेगा चेला की करणी चेला। गंगा गोदावरी व्यम्बक क्षेत्र कौलागढ़ पर्वत अनुपान शिला पर राजा रामचन्द्र जी की पीरी उठी श्री सत्यनाथ ब्रह्म को बैठी, खड़े सिद्ध बैठे पाषाण। सत्य सत्य भाखन्ते आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के निर्वाण। कौन गोरक्ष कपला गोरक्ष आकाश भैरो पिशाचर स्थान गोरख खटडी चार थान पांचवा मकान टिल्ला शिवपुरी का स्थान। असंख युग की रौरास पीरां महन्ता के पास। सन्ध्या शिवपुरी का बेला अनन्त कोटी सिद्धों का युग-युग मेला। सिद्धों गुरु पीरों को नाद ओंकार।

एक ओंकार तेरा आधार तीन लोक में जय जयकार, नाद बाजे काल भागे गोरक्ष टोपी ज्ञान साजे गले नाद पुष्पन की माला रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला चार खाणी चार बाणी चन्द्र सूर्य पवन पानी, एक देवा सर्व सेवा जोत पाटले परसो देवा, कानन कुण्डल गलेनाद करो सिद्धों नादोंकार। श्रीनाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अपने अपने गुरु मन्त्र से नाद पूजा आदेश करे।

इती श्रीनाथ परम्परा पूजन सम्पूर्ण भया।

श्री गुरु गोरक्षनाथजी को आदेश। आदेश।

***

साधक कर्म

साधक उत्तर दिशा में मुंह कर बैठे। सामने एक खप्पर नहीं हो तो पूजा का पात्र तथा पूजा साहित्य गंध, पुष्प, अक्षदा इत्यादि लेकर बैठे। निम्न कुलाचार संकल्प करे।

संकल्प

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सिद्ध साधक किस मूण्डा किस मुण्डाया, किसका भेजा नगरी आया। सतगुरु मुण्डा लेख मुण्डाया गुराका भेजा नगरी आया। अलष पुरुष का ध्यान लगाया। गुरु प्रसादे हुकम माग्या। ओ अवधु कौन कुलगुरु कौन कुलक्षेत्र कौन वंश का कौन शिंगार। ॐ गुरुजी कुलगुरु आदीनाथ शिवजी बोलिये। कुलक्षेत्र कैलाश स्थान बोलिये। नाथ वंशका नदी गंगा कल्पवृक्ष रुद्राक्ष शिंगार शैली शृंगी नाद और मुद्रा धूरी तत वस्त्र लोणीबानी अलख निरंजन बाना नादी डमरु मन्त्र अघोर सोंह। ओ बालक कौन कुलदेवी का कौन श्रृंगार। ॐ गुरुजी कुलदेवी अम्बाजी ध्वज भगवती निशान भगवा नगाए शब्द भेदी शस्त्र त्रिशूल जनेऊ शिवगाढ प्रवत्री ब्रह्मा विष्णु महेश ॐ सों गुरु मन्त्र शिवोऊहंस।

औ साधक कौन पंथ के कौन स्थान कौन पीर बोलिये। ॐ गुरुजी नाथ सिद्धों के पंथ बारा बोलिये। प्रथमे सतनाथ पंथ पाताल भुवनेश्वर स्थान ब्रह्मा जी पीर बोलिये। द्वितीय पंथ राम के नोहर स्थान परशुराम पीर बोलिये। तृतीय धर्मनाथ पंथ दुल्लु देवल स्थान धर्मराज पीर बोलिये। चतुर्थ पावपंथ जालौर स्थान जालन्धरनाथ जी पीर बोलिये। पंचम पागलपंथ रोहताश स्थान सिद्धपालक नाथ जी पीर बोलिये। छटे रावल पंथ स्थान गैलपुर विष्णुजी पीर बोलिये। सप्तम पंथ कपलाणी गोरखबन्सी स्थान कपिलमुनी पीर बोलिये। अष्ठम पंथ गंगनाथी गंगासागर जखवड स्थान भगीरथ पीर बोलिये। नवम पंथ नटेश्वरी गोरखटिला स्थान लक्ष्मणजी पीर बोलिये। दशमे पंथ आई बंगाल बिमला स्थान बिमला नाथ जी पीर बोलिये। एकादश पंथ बैराग राताडूण्डा स्थान भर्तृहरी नाथ जी पीर बोलिये। बारह पंथ मन्नाथी टाइया स्थान चन्द्रमा पीर बोलिये।

ओ अवधू कौन दिशा में कौन मठ बोलिये। ॐ गुरुजी चारों दिशा चतुर्थ मठ बोलिये। पूर्व दिशा गोरखपुर पश्चिमे गोरखमठी दक्षिण दिशा, कदली मठ उत्तरे हरिद्वार बोलिये। ओ साधक कौन क्षेत्र, कौन नदी बोलिये। ॐ गुरुजी, चार क्षेत्रराज में पुष्करराज, कटाक्ष राज, प्रयाग राज, त्र्यम्बक राज पुण्य क्षेत्र बोलिये। गंगा, जमुना, सरस्वती प्रयागराज गोदावरी त्रिम्बक क्षेत्र क्षिप्राजी गंगा माता हरिद्वार बोलिये।

ओ बालक कौन दिशा कौन–कौन सिद्ध पीठ बोलिये। ॐ गुरुजी गंगासागर सिद्धपीठ पूर्व में पश्चिम में सिद्ध पीठ गिरनार बोलिये। दक्षिण दिशा कदली मठ। सिद्धपीठ उत्तर में कैलाश पर्वत सिद्धपीठ बोलिये।

ओ बालक कौन गुरां का चेला, किस पंथ का योगी किस परम्परा का अवधू बनाया, कौन कारज हुकम मांग्या। ॐ गुरुजी श्री योगी.......नाथजी का चेला योगी...नाथ भया। पंथ.....का योगी भया। गुरु गद्दी...नाथजी स्थान....परम्परा का अवधू भया।....मासे........दिने....तिथि श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ पूजा पाठ कारज हुकम मांग्या। ओ गुरुजी मैं बालक आपका किरपा करो कारज हमारा पूरा करो। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

इस प्रकार साधक ने कुलाचार प्रति संकल्प पढ़कर पात्र में (या खप्पर) में जल अक्षदा अष्ठगंध छोड़े।

तत्पश्चात पूजा स्थल (मन्दिर, मठ, मकान इत्यादि) के 'सुरक्षा' रक्षणार्थ के लिये एक पात्र में (खप्पर में) मिठाई, सुपारी, लवंग, इलायची, पान, लाल फूल रखे उसके ऊपर आटे का दिया बना के सरसों तेल में दीपक जला के निम्न मन्त्र पढ़े।

"बन्ध मन्त्र"

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सौ–सौ–सौ कोस श्मशान टापू, टापू में पारस पीपल, पारस पीपल तले कौन बसै घरबारी राजा बेताल बसै घरबारि कौन कौन नाम बोलिये। श्मशानी खोचडी, बौचडी डाकणी भूत भूतनी, जिन्दा जिन्द प्रेत पलित इन घरबारी भख–भगाये। सौ

योजन मार भगाये तुझे काल भैरव की आन। आते कि सीमा बान्ध जाते कि सीमा बन्ध हमारी सीमा बान्ध ना बान्धै तो अजयपाल कि आन। बंगाल देश की काली माई उसमें बैठे मलतानी वीर, दारनी वीर, नहारदावीर, मीरावीर ४ वीर ४ द्वारे पांचवे द्वार बाल भैरव वीर आदि भैरव, अनादि भैरव त्रिकाल भैरव, काल भैरव ने हांक पुकारा जती गोरक्षनाथ का चिमटा बाजा। दादा मत्स्येन्द्र जी का डंका बाजा, सूरत नाथ जी का सूर बाजा काले पीर का खन्जर बाजा। ओ मिष्ठान बोले, सुपारी लवंगायत्री पाणफूल राखे सूरा पान का अमृत राखे। बला भखे बला टले, काल कन्टक कटे, जती-सती को राखे, कारज हमारा पूरा किजे तिसकी रक्षा श्री शम्भूजती गुरु गोरक्ष नाथजी करे। मेरी भक्ति गुरौं की शक्ति विरोधी नाम कुल विनाशाय ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

यह मन्त्र पढ़कर दीपक प्रज्वलित करने के पश्चात यह पात्र ग्राम के सीमा पर रख कर आये। आते समय पीछे ना देखे। स्थान में आने के पश्चात हाथ पैर धो लें। यह क्रिया निर्भय होकर करें। अतः

श्मशान सिद्धि

यह क्रिया अर्थात् एक पात्र खप्पर में ७ प्रकार की मिठाई रखे, साथ में २पान, २ सुपारी, २ इलायची, २ लवंग तथा मदिरा रखते हैं। ग्राम के श्मशान में ४१ दिन प्रतिदिन रखकर दीपक सरसों तेल रखकर पीछे बिना देखे स्थान पर आये। काली माई मां के रूप में, बहन के रुप में तथा स्त्री के रुप में दर्शन देती है। उसे मां रुप में स्वीकार करके खप्पर का प्रसाद देवे। माता प्रसन्न होने पर श्मशान सिद्धि देती है। इस क्रिया में चिमटे जोर जोर से बजते हैं। बड़ी ऊंची आवाजे हांक आती है। इत्यादि डरावने प्रकार होते है। साधक को बहुत सावधान तथा निर्भय से कार्य करे। इस विधि में डर गये या स्त्री को गलत इच्छा में देखे इत्यादि किसी भी चीज में कमी आने पर साधक पागल होता है। या मृत्यु का डर होता है। इसलिये श्मशान सिद्धि सिद्ध गुरुजी के मार्गदर्शन में करें।

श्मशान में काली मां का मन्त्र :-

सत नमो आदेश। गुरुजी का आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ काली काली महाकाली ब्रह्मा की बेटी इन्द्र की साली, मद्यमासकारी विजया खाय मांस भखे मसाने जो जो चीतवू सो सो आन। ऋद्धि सिद्धि लियावो हो हो भस्मन्ती माई जहा पाई तहां लगाई। सती नाती धरम की बेटी अचल नाथ की चेली मन माने तो संग रमाई, नहीं तो फिरे अकेली ओ महाकाली सुन्दरजी माई चारो वीर अष्ट भैरव अब पूजू पान की मिठाई बोल काली माई की दुहाई गुरु की शक्ति मेरी भक्ति, ईश्वरु वाचा गुरु गोरख नाथ जी का युग युग वचन साचा वाचा चूके तो ऊबा सुके इतना काली मन्त्र सम्पूर्ण भया फूरो मन्त्र हूँ फट् स्वाहा।

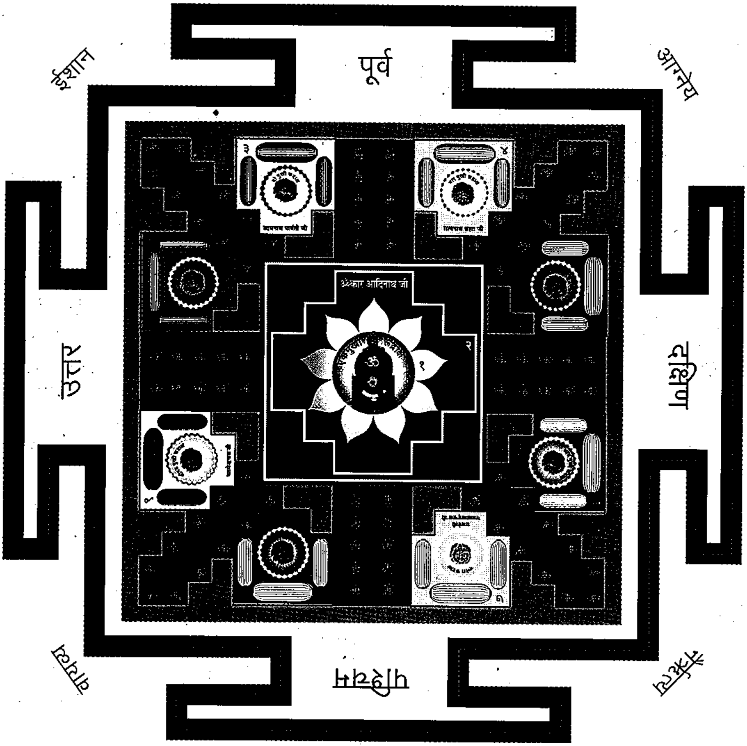
यह मन्त्र श्मशान में सवा लाख बार करें।

उपाय :- श्मशान सिद्धि ४१ दिन करते समय अगर डर गये या कुछ गलती से या व्यवधान हुआ तो माँ काली का संक्षिप्त पूजन भोग (७ प्रकार की मिठाई, पान ताम्बूल देवे) लगाकर क्षमा मांग कर यह विधि पुनः ४१ दिन के लिये प्रारम्भ कर सकते हैं।

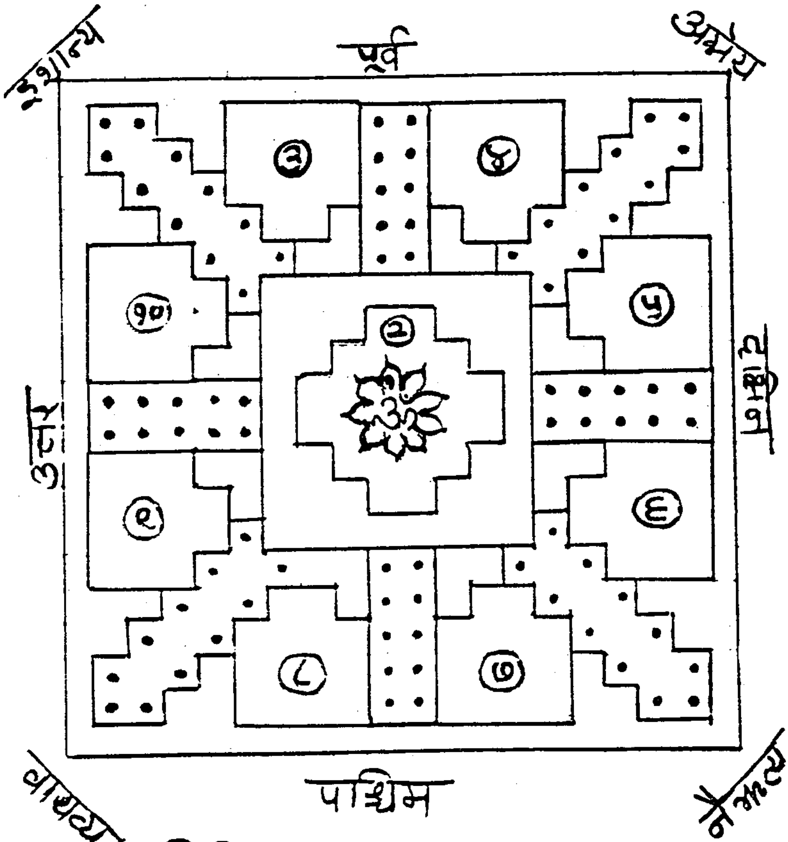
इति साधक कर्म सम्पूर्ण भया। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश। आदेश।

* * *

सर्वतो महारूद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध चक्र



चित्रांकन : योगी विलासनाथ



सर्वतो महारुद्र नवनाथ
चौरासी सिद्ध-चक्र.

सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध चक्र

विधि-२० x २० (खाने) चौकी के ऊपर चक्र निर्माण करें				
क्र. सं.	नाथ जी के नाम	रंग	दिशा	बड़े रुद्राक्ष (मुखी)
(१)	९ पंखडी कमल पुष्प	सर्वरंग	मध्य	ॐ अष्टगंध से कलश
(२)	ॐकार आदिनाथ जी	नीला	मध्य	१ मुखी
(३)	उदयनाथ पार्वती	पीला	पूर्व	२ या ९ मुखी
(४)	सत्यनाथ ब्रह्मा जी	बभूती	पूर्व	४ मुखी
(५)	सन्तोषनाथ विष्णु जी	लाल	दक्षिण	१० या २० मुखी
(६)	अचल अचंबेनाथ जी	नीला	दक्षिण	८ मुखी
(७)	गजबेली गज कन्थड नाथ जी	बभूती	पश्चिम	गणेश रुद्राक्ष
(८)	सिद्ध चौरंगीनाथ जी	हरा	पश्चिम	१८ मुखी
(९)	मत्स्येन्द्रनाथ जी	पीला	उत्तर	१४ या १६ मुखी
(१०)	श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी	भगवा	उत्तर	१ या निर्मुखी रुद्राक्ष
बिन्दू	चौरासी सिद्ध	काला	सर्व दिशा	५ या ६ मुखी रुद्राक्ष छोटे

सर्व तो महारुद्र ९ नाथ ८४ सिद्ध चक्र स्थापना

विधि—चक्र आकृति के अन्दाज से शुद्ध—स्वच्छ बारीक वाले चावल गंगाजल में धोये वह गीले चावल अलग—अलग रंग, लाल, नीला, पीला, श्वेत (सफेद) काला भगवा बभूति इन रंगों में स्वतंत्र रंगाये। धूप में सूखायें। तत्पश्चात् एक समकोण चौकी ऊपर नया भगवा वस्त्र बिछावे जो कि चौकी से थोड़ा बड़ा हो। लाल धागे से ९ फेरे लगा के चौकी के नीचे से बांध देवे। अत: वस्त्र ऊपर सर्व तो महारुद्र ९ नाथ ८४ सिद्ध चक्र का निर्माण करे। चक्र आकृति में दर्शित खानों में रंगीन चावल भरकर चक्र तैयार करें या रंगीन दालों का प्रयोग करें। अत: ९ बड़े आकार के रुद्राक्ष दानों से नवनाथ सिद्धों की स्थापना करें। प्रथम चक्र मध्य में नव पंखड़ी कमल पुष्प में सभी रंगों से बनाये और उसी १२ कोन चौरस (५ मुख शिवलिंग) में नीलकंठ स्वरुप नीले रंग चावल भरे और ॐकार आदिनाथजी की स्थापना १ मुखी रुद्राक्ष रखकर दिये गये मन्त्र से आवाहन पूजन करें। अत: चक्र के पूर्व दिशा में प्रथम शिवलिंग में उदयनाथ पार्वती की स्थापना करें। जहां धरत्री स्वरुप पीला रंग के चावल भरे और मन्त्र पढ़कर २ मुखी या ९ मुखी रुद्राक्ष जो कि २ मुखी अर्धनारी नटेश्वर और ९ मुखी ९ दुर्गा अवतार दुर्गा पार्वती स्वरुप से स्थापना आवाहन तथा पूजन करें। अत: इसी दिशा में दूसरे शिवलिंग में सत्यनाथ ब्रह्माजी की स्थापना करें जहां जल स्वरुप बभूती रंग के चावल भरें। ४ मुखी रुद्राक्ष जहां ४ मुखी ब्रह्मा जी के ४ मुखी रुद्राक्ष शक्ति का प्रतीक है। मन्त्र द्वारा स्थापन आवाहन पूजन करें।

अत: चक्र के दक्षिण दिशा में प्रथम शिवलिंग में सन्तोष नाथ विष्णु जी की स्थापना करें खड़ग खाण्डा तेज स्वरुप लाल रंग चावल से भरें, १० मुखी या २० मुखी रुद्राक्ष जो कि भगवान विष्णु के १० अवतार प्रतीक माने हैं। रखकर मन्त्र द्वारा आवाहन स्थापन पूजन करें। अब इसी दिशा के दूसरे शिवलिंग में अचल अचम्भेनाथ जी की स्थापना करें। आकाश (शेष) स्वरुप

होने के कारण नीले रंग के चावल भरें तथा मन्त्र द्वारा ८ मुखी रुद्राक्ष जो कि अष्टकुली नाग शक्ति स्वरुप माना गया है। रखकर आवाहन स्थापन पूजन करे।

अतः चक्र के पश्चिम दिशा में प्रथम शिवलिंग में गजबेली गजकन्थड़-नाथ जी की स्थापना करें। गणेश गजमुख स्वरुप होने के कारण बभूति रंग के चावल भरें। गणेश रुद्राक्ष गणेश स्वरुप माना गया है वह रखकर मन्त्र द्वारा आवाहन स्थापन पूजन करें। इसी दिशा के दूसरे शिवलिंग में सिद्ध चौरंगीनाथ जी की स्थापना करें १८ भार वनस्पति स्वरुप होने के कारण हरे रंग के चावल भरे और १८ मुखी रुद्राक्ष रखकर मन्त्र द्वारा स्थापन आवाहन पूजन करे।

अतः चक्र के उत्तर दिशा में प्रथम शिवलिंग पर माया स्वरुप दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी की स्थापना करें। माया स्वरुप् होने के कारण पीला रंग के चावल भरे। पृथ्वी पर १४ भवन में रमत प्रथम इन्होंने की थी तथा १६ श्रृंगार स्वरुप माया इनके प्रति १४ और १६ मुखी रुद्राक्ष रखकर मन्त्र आवाहन स्थापन पूजन करें। इसी दिशा के दूसरे शिवलिंग में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी कि स्थापना करें। योग त्याग तपस्या इत्यादि विरक्त स्वरुप भगवा रंग के चावल भरे। यहां श्रीनाथजी १ ओंकार जोती स्वरुप होने के कारण,१ मुखी रुद्राक्ष या निर्गुण निराकार स्वरुप होने के कारण निर्मुख रुद्राक्ष रखकर मन्त्र द्वार आवाहन स्थापन पूजन करें। इस प्रकार ९ नाथ स्थापना करें। अतः ८४ छोटे रुद्राक्ष दोंनों से ८४ सिद्धों की स्थापना चक्र के अग्नेय नैवृत्य, वायव्य, ईशान्य दिशा में तथा पूर्व दक्षिण उत्तर काले रंग चावल काला रंग त्याग का प्रतीक हे भरे यहां ५ मुखी या ६ मुखी रुद्राक्ष सभी दिशाओं में मन्त्र द्वार आवाहन स्थापन पूजन करें। अतः अपेक्षित रुद्राक्ष न मिलने पर ५-६ मुखी रुद्राक्ष सर्वथा मिलते हैं। वह लीजिये और यह भी नहीं हो तो ९ बड़ी ८४ छोटी सुपारी का उपयोग कर सकते है। अतः चक्र के मध्य ९ दल कमल ऊपर एक कलश स्थापित करें तथा गुरुगोरक्षनाथ जी की प्रतिमा या पादुका रखे। अतः निम्न मन्त्र जापों से आवाहन और पूजन करें।

अतः प्रथम नवनाथ सिद्धों का निम्न मन्त्रो द्वारा आवाहन करें तथा प्रत्येक मन्त्र उच्चारण पश्चात रुद्राक्ष दानों की चक्र में दिशा के अनुसार स्थापना करे।

नाथ, सिद्धों का आवाहन

प्रथम नवनाथ सिद्धों का आवाहन करें।

ॐकार आदिनाथ जी आवाहन :- ॐ गुरुजी। ॐकार आदिनाथ जी। अलख निरंजन निराकार अविगत पुरुष तत्वसार, तत्वसार मध्ये जोत, ज्योत मध्ये परम ज्योत परम ज्योत मध्ये उत्पन्न भई शम्भू शिव गायत्री विश्वनी विश्वमूर्ति पाताले ग्रहणी चतुर्थे वेद मुखी दाहिनी नासिका गंगा जमना सरस्वती त्रिकुटी देवता देखे चन्द्रमा आद ललाट नक्षत्र पुष्पमाला १८ भार वनस्पति सेली सिंगी मीन मेंखला धारी हृदय ३३ कोटी देवी देवता कुक्षौ सप्त सागरा रोमावलिते चार खाणी चार बाणी चन्द्रसूर्य पवन पाणी। धर्ती आकाश पांच तत्व पिण्ड प्राण ले किया प्रकाश। शून्य निरालम्ब दिया निवास यति निरालम्ब जी के चरण कमल पादका को नमस्कार नमाम्यहम। लक्ष चौरासी जीयाजून ये मंत्र ऽऽ घोर मन्त्र क्षीर मन्त्र बीज मन्त्र अभय जाप जपन्ते अगम जाप जपन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। शिव गोरक्ष नमो नमः ॐ प्रातः काले ले उत्पन्नी माता शम्भू शिव गायत्री जटाजुट मुकुट त्रिशूल धारणी, नादमुद्रा विभूति धारीणी रक्तवर्णी वृषभ वाहनी रुद्र देवता को पोषनी ऋद्धि सिद्धि वरदायिनी सो योगी को मोक्ष मुक्त फल दायकम्। मध्याह काले उत्पन्न भयी माता शम्भूशिव गायत्री दण्ड कमण्डल पुस्तक कर धारणी श्वेत वर्णी हंसवाहनी ब्रह्म देवता को पोषनी ऋद्धि सिद्धि वरदायिनी सो योगी को मोक्ष मुक्तफल दायकम्। सायंकाल ले उत्पन्न भई शम्भू शिव गायत्री शंख चक्र गदा, पद्म धारणी, श्याम वर्णी गरुड़ वाहणी विष्णु देवता को पोषनी ऋद्धि सिद्धि वरदायिनी। सो योगी को मोक्ष मुक्ति फलदायक शिवोम हर हर हर।

(मध्यकर्णियाम) ॐ भुर्भूवः स्वः योगी आदिनाथ जी आवाहन स्थापना स्थापयामि।

अतः चक्र के मध्ये ९ पंखड़ी कमल के ऊपर १ मुखी रुद्राक्ष स्थापन करे।

उदयनाथ पार्वती :- ॐ गुरुजी कुलदेवी माई पार्वती आदिनाथ अम्बा ध्वजा भगवती, निशान भगवा, न गाये शब्द भेदी शस्त्र त्रिशूल जनेऊ शिवगांठ प्रवित्री ब्रह्मा विष्णु महेश शब्द ॐ सोहं गुरु मन्त्र शिवोऽम मन्त्र जपे माता

खुले हृदय का ताला कहा आसमान कुन्जी कहा आसमान ताला। आसमान शून्य धरत्री स्वरुप उदयनाथ पार्वती। जपे जाप कटे पाप बूढ़ा जपे बालक हो जावे। बालक जपे काल न खाये। जिसकी रक्षा उदयनाथ पार्वती करें।

(पूर्व व्याप्याम) ॐ भूर्भुवः स्वः उदयनाथ पार्वती आवाहन स्थापयामि। अतः चक्र के पूर्व दिशा में २ या ९ मुखी रुद्राक्ष स्थापन करें।

सत्यनाथ ब्रह्माजी- ॐ गुरुजी। सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ नमो परब्रह्म, परब्रह्म ऊपर ब्रह्मा का वासा। न था युग, न थी जुग, न थी धरती, न था आकाश, नहीं वृक्ष, नहीं डाल, नहीं शून्य, नहीं मूल, नहीं देही, नहीं देवरा, नहीं पूजा, नहीं पाती, न था पवन, न था पाणी जहां सदाशिव ने ध्यान लगाया। ब्रह्मा विष्णु के नाभ से पाया सिद्धां ने सतनाथ ब्रह्मजी नाम से सजाया। जा ब्रह्मा सतनाथ जलस्वरुपी जा जा तेरा शिवलोक में वासा कहे शिव जी सुन पार्वती चार वेद, छः शास्त्र, अठारह पुराण नव व्याकरण संध्या तर्पण गंगा गायत्री मन्त्र सूर्य मन्त्र बीज मन्त्र होम जाप सूतक पातक सोलह श्रृंगार यह सब ब्रह्मा जी का काज। जपे जाप ब्रह्म लोक में जाय। ना जपे नर नरक में जाय। इतना सत्यनाथ ब्रह्माजी जाप सम्पूर्ण भय श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

(पूर्व मध्यमा) ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यनाथ ब्रह्माजी आवाहन स्थापयामि। अतः इसी दिशा में दूसरे शिवलिंग पर ४ मुखी रुद्राक्ष स्थापन करे।

सन्तोषनाथ विष्णुजी- ॐ गुरुजी। ॐ विष्णुजी तेज स्वरुप वज्र काया शम्भू महादेव का ध्यान लगाया। शंख चक्र, पद्म हस्त गदा। श्याम वर्ण गरुड वाहन विष्णु देवता अवतार लिया सन्तोषनाथ जी। हाथ खप्पर बभूत रमाय। शत्रु को मार काल कंटक मार दैत्य दानव संहार तिन लोक का रक्षपाल विष्णु देवता चरण कमल को आदेश। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

(दक्षिण व्याप्याम) ॐ भूर्भुवः स्वः सन्तोषनाथ जी आवाहन स्थापयामि। चक्र के दक्षिण में प्रथम शिवलिंग पर १० या २० मुखी रुद्राक्ष स्थापन करें।

अचल अचम्बे नाथजी- ॐ गुरुजी। पातल लोक का कौन राजा कौन घोड़ा, पाताल लोक नवकुल नागों का राजा नीला घोड़ा बासुकि राजा, धरती आसन आकाश का स्वरुप। गौरी शंकर आप अलेख, दिया आसन किया

उपदेश। अनन्त सिद्धों करो आदेश। अचल आसन अकुल वासन, अचम्भेनाथ, गुरु शब्द का ध्यान लगाया। ब्रह्मलोक का खुल गया ताला। अचल धरत्री नाम अचम्भेनाथ श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

(दक्षिण मध्ये व्याप्याम) ॐ भूर्भुवः स्वः अचल अचम्भेनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

इसी दिशा में दूसरे शिवलिंग पर ८ या ६ मुखी रुद्राक्ष स्थापन करें।

गजबेली गजकंथडनाथ जी- सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। गणेश आया ऋद्धि-सिद्धि लाया। ऋद्धि-सिद्धि का भरे भण्डार। देह कूंची हिंगलाज की ज्ञान कूंची ग्रहों की कंठ कूंची गुरु गोरक्षनाथ की लागी कूंची खुले कपाट अब देखो ब्रह्माण्ड का ठाठ। अक्षय घर का भरे भण्डार अनन्त कोटि सिद्धों में खीर खाण्ड का होवे प्रवान। लावो धरो धनी का ध्यान आगच्छ आगच्छ गजकंथड़ नाथ जी। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

(पश्चिमा मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः गजबेली गजकंथड़नाथ जी आवाहन स्थापयामि। चक्र के पश्चिम दिशा प्रथम शिवलिंग पर गणेश रुद्राक्ष स्थापन करें।

सिद्ध चौरंगीनाथ जी- ॐ सत नमो आदेश। श्री नाथ सिद्धों, चौरंगीनाथ जी राजा शाली वाहन के धर्मपुत्र कहालो। बिना दोष हाथ पैर कटाय कुंए में गिरालो। बारह वर्ष दूध भात घड़ा, भरपूर राख कुंए के बाहर निकाल रक्षा करें गुरु गोरक्ष बाला। अठरह भार वनस्पति के राजगुरु कहालो। शीतल रुप चन्द्र अवतार दशवेद्वारी अमृत धार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

(पश्चिम व्याप्याम)ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध चौरंगीनाथ जी आवाहन स्थापयामि। इसी दिशा में चक्र में दूसरे शिवलिंग पर १८ मुखी रुद्राक्ष स्थापन करें।

श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी- ॐ सत नमो आदेश। श्री दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी राघो मच्छ के घर अवतार लिया। क्षीर सागर बैठ शिव ने गौरी को पाठ पढ़ाया। मत्स्यगर्भ से दादा मत्स्येन्द्रनाथ ने पाया। कदली कोट सिहल द्वीप पर बैठकर थापना थापलो। बावन वीर, चौसष्ठ योगिनी सवालक्ष भुतावली के राजा कहालो। सब सिद्धों को शीश निवाऊं दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी के चर्ण कमल पादुका पर मस्तक झुकाऊं। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

(उत्तर मध्ये वाप्याम) ॐ भूर्भुवः स्वः दादा मत्स्येन्द्रनाथ आवाहन स्थापयामि।

चक्र के उत्तर दिशायें प्रथम शिवलिंग पर १४ या १६ मुखी रुद्राक्ष स्थापन करे।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथः—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलख निरन्जन कौन स्वरुपी बोलिये। अलख निरन्जन ज्योति स्वरुपी बोलिये। ओमकार, शिवरुपी सांख्या ने साधरुपी, मध्याने हंस रुपी हंस परमहंस दो अक्षर, गुरु तो गोरक्ष काया तो गायत्री, ॐ ब्रह्मा सो शक्ति शून्य माता अविगत पिता, अभय पंथ अचल पदवी निरन्जन गोत्र, विहंगम जाति, असंख्य प्रवर, अनन्त शाखा सूक्ष्मवेद आत्मज्ञानी, बह्मज्ञानी श्री ॐ गो गोरक्षनाथाय विदमहे शून्य पूत्राय धीमही तन्नो गोरक्ष निरन्जन प्रचोदयात इति गोरक्ष गायत्री सम्पूर्ण भया श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

(उत्तर वाप्याम) ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

इसी दिशा में दूसरे शिवलिंग पर १ मुखी या निर्मुखी रूद्राक्ष स्थापना करें। इसी प्रकार नौ नाथ जी के आवाहन चक्र के ऊपर करके बड़े रुद्राक्षों को दर्शित स्थान पर स्थापन करें अतः चौरासी सिद्धों के आवाहन करें और प्रत्येक मन्त्र उपरान्त ५ या ६ मुखी रुद्राक्ष ८४ (रुद्राक्ष) की स्थापना करें रुद्राक्ष छोटे आकार के लेना है।

चौरासी सिद्धों का आवाहन

१. कपिलनाथः— ॐ सिद्ध कपिलनाथ जी गंगासागर स्थान बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के चेले कहालो। सिद्ध पन्थ कपलानी योगी कपिल नाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(पूर्व मध्ये वाप्याम) ॐ भूर्भवः स्वः सिद्ध कपिलनाथजी आवाहन स्थापयामि।

२. सनकनाथ:— ॐ सिद्धयोगी सनकनाथ जी चक्रवती अग्निय खण्ड क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। प्रत्यक्ष आदिनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ—सतनाथ के सिद्ध योगी सनकनाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(अग्नेय श्रृंङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुव: स्व: योगी सनकनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३. लंकनाथ रावण:— ॐ पंडित रावण लंकनाथजी लंका क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथजी के चेले कहालो। सिद्ध पंथ रावल के योगी लंकानाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(दक्षिणे) ॐ भूर्भुव: स्व: श्री सिद्ध पण्डित लंकानाथजी आवाहन स्थापयामि।

४. सनातन नाथ:— श्री सिद्धयोगी सनातन नाथजी चक्रवर्ती नैवृत्य खण्ड क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री आदिनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ—सतनाथ ब्रह्मा के श्री सिद्धयोगी सनातननाथ जी को आदेश। आदेश। आदेश।

(नैवृत्य खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध योगी सनातननाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५. (विचारनाथ) भर्तृहरिनाथ:— ॐ श्री सिद्ध योगी विचारनाथ उज्जैन क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी के शिष्य कहालो पन्थ—भर्तृहरि बैराग श्री सिद्ध विचारनाथ जी को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिम श्रृंङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध योगी विचारनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६. चक्रनाथजी:— ॐ श्री सिद्धयोगी चक्रनाथजी सिन्धु (वायव्य खण्ड) क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ नटेश्वरी श्री सिद्ध चक्रनाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्य खण्डैन्दौ) ॐ भूर्भव: स्व: सिद्ध चक्रनाथजी आवाहन स्थापयामि।

७. नरमाईनाथजी:— ॐ श्री सिद्धयोगी नरमाईनाथजी खोथ स्थान क्षेत्र जिन्द बैठकर थापना थापलो। गुरु योगी ब्रह्माई नाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ—आई के योगी नरमाई नाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(तदुत्तरे परिधौ) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी नरमाईनाथजी आवाहन स्थापयामि।

८. रतननाथ जी:- ॐ सिद्ध योगी पीर रतननाथजी भटिण्डा क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के परम शिष्य कहालो। महमूद साहब दर्शनी, दीर्घायुष्यी सिद्ध पीर आत्मज्ञानी पंथ-सतनाथ ब्रह्मा के श्री योगी रतननाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(इशान्या मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः पीर रतननाथ जी आवाहन स्थापयामि।

९. श्रृंगेरीनाथ जी (गोपीचन्द नाथ):- ॐ सिद्ध श्रृंगेरीनाथ (गोपीचंद) रानी मयनावती के पूत, अमरावतार ब्रह्मज्ञानी गौड़ बंगाल क्षेत्र बैठकर थापलो। गुरु योगी जालंदर नाथजी के शिष्य कहालो। पाव पंथ योगी श्रृंगेरी (गोपीचंद) नाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(पूर्व मध्ये श्रृंङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी श्रृंगेरीनाथजी आवाहन स्थापयामि।

१०. सनन्दननाथ जी:- ॐ सिद्ध योगी सनन्दननाथजी चक्रवर्ती अग्नेय (मध्य-खण्ड) क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ-सतनाथ ब्रह्मा के सिद्धयोगी सनन्दन नाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(अग्निया मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी सनन्दन नाथजी आवाहन स्थापयामि।

११. निवृत्तिनाथजी:- ॐ सिद्ध योगी निवृत्तिनाथजी नेवासा स्थान बैठकर थापना थापलो। सिद्धयोगी गहणीनाथ जी के शिष्य कहालो। गोरखपन्थ वारकरी के सिद्धयोगी निवृत्ति नाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(दक्षिण मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः योगी निवृत्तिनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१२. सनत्कुमार:- ॐ सिद्ध योगी चक्रवर्ती सनत्कुमार नाथजी नैवृत्य खण्ड क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। प्रत्यक्ष आदिनाथ शिव से उपदेश लियो। पंथ-सतनाथ के श्री सिद्ध सनत्कुमार नाथ जी को आदेश। आदेश। आदेश।

(नैवृत्य श्रृंखला मध्ये) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध सनत्कुमार नाथजी आवाहन स्थापयामि।

१३. ज्वालेन्द्रनाथ:— ३ॐ सिद्धयोगी ज्वालेन्द्रनाथ जी मरुभूमि कलशाचल पर्वत बैठकर थापना थापलो। शिव आदिनाथ जी के परम शिष्य कहालो। पावपन्थी श्री सिद्धयोगी ज्वालेन्द्रनाथजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिमा मध्ये) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध योगी ज्वालेन्द्रनाथजी आवाहन स्थापयामि।

१४. सारस्वाताई नाथ:— ३ॐ श्री योगी सारस्वाताईनाथ वायव्य खण्ड कैकेय क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। आई पन्थ सिद्ध सारस्वाताई नाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश

(वायव्यखण्डौदी) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध योगी सारस्वाताई नाथजी आवाहन स्थापयामि।

१५. ब्रह्माईनाथजी:— ३ॐ सिद्ध ब्रह्माईनाथजी हरियाणा क्षेत्र खोत—स्थान बैठकर थापना थापलो। गुरु भगाई नाथजी के मानस शिष्य कहालो। आई पंथी के सिद्ध ब्रह्माईनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तरा मध्ये) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध योगी ब्रह्माईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१६. प्रभुदेवनाथ:— ३ॐ सिद्धयोगी प्रभुदेवनाथ सिक्कीम क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। गुरु दादा मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्य कहालो। पन्थ अरजनंगा के सिद्ध योगी प्रभु देवनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईशान्य) ३ॐ भूर्भुव: स्व: योगी प्रभुदेवनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१७. कनकाईनाथ जी:— ३ॐ योगी सिद्ध कनकाईनाथ जी बंगाल क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ के चेला कहालो। आई पंथ के सिद्ध कनकाईनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(ततपूर्व) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्धयोगी कनकाई नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१८. धुन्धकारनाथजी:— ॐ नाथ सिद्ध धुन्धकार नाथ जी खण्ड अग्नेय बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो चक्रवर्ती सिद्ध योगी धुन्धकारनाथ जी को आदेश। आदेश। आदेश।

(अग्नेया मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी धुन्धकार नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१९ नारद देवनाथजी:— ॐ सिद्ध योगी नारद देवनाथ जी महाराष्ट्र क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। दादा मत्स्येन्द्रनाथजी के शिष्य कहालो। पंथ सतनाथ के सिद्धयोगी नारद देवनाथजी के चरण कमल में आदेश। आदेश। आदेश।

(दक्षिण मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध नारद देवनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२०. मन्जुनाथजी:— ॐ योगसिद्ध मन्जुनाथ जी कदलीकाल स्थान सिहंलद्विप पर बैठकर थापना थापलो। मायारुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथजी के पुत्र शिष्य कहालो। पंथ मिननाथी के सिद्ध मन्जुनाथजी के चरण कमल में आदेश। आदेश। आदेश।

(नैऋत्यौ दक्षिण परिधौ) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धयोगी मन्जुनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२१. मनसाईनाथ जी:— ॐ माया सिद्ध मनसाईनाथ जी मथुरा क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगी भगाईनाथ जी के परम शिष्य कहालो। पंथ आई के सिद्ध योगी मनसाईनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(ततपूर्व पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध मनसाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२२. विरनाथजी:— ॐ योगी विरनाथजी पंजाब क्षेत्र सिन्ध देश पर बैठकर थापना थापलो। श्री गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। पंथ दर्यानाथी योगी विरनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्य खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध विरनाथजी आवाहन स्थापयामि।

२३. श्रृताईनाथः— ॐ सिद्धयोगी श्रृताईनाथजी कुरुक्षेत्र बैठकर थापना थापलो। गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। पंथ आई के श्रृताईनाथजी के पद कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तरा मध्ये श्रृंङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धयोगी श्रृताईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२४. नागार्जुन नाथ जीः— ॐ सिद्धयोगी नागार्जुन नाथ जी तिब्बत क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। गोरखपंथ पारसनाथी के तंत्र मंत्र सिद्ध योगी नागार्जुननाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(इशान्य खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी नागार्जुन नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२५. भुसकाईनाथ जीः— ॐ सिद्ध योगी भुसकाईनाथजी बंगाल क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। गुरु योगी गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। सिद्ध योगी भुसकाईनाथ पंथ आई के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(तत्पूर्वा मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः योगी भुसकाईनाथजी आवाहन स्थापयामि।

२६. मद्रनाथ जीः— ॐ शिव मद्रनाथजी मद्र देश क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। सिद्ध (पंडित रावण) लंकनाथजी के चेले कहालो। पंथ रावल के योगी मद्रनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईन्द्रीग्निय मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः योगी मद्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२७. गहीणीनाथजी (गैनी):— ॐ शिव गहिनीनाथ जी त्र्यम्बक क्षेत्र ब्रह्मगीरी गोदातीर बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। गोरख पंथी वारकरी के योगी गहिनीनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(दक्षिण मध्ये श्रृंङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धोयोगी गहिणीनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२८. भूचरनाथजी:— ॐ नमो सिद्ध भूचरनाथजी हजारा स्थान पर बैठकर थापना थापलो। गुरु योगी भर्तृहरिनाथ के शिष्य कहालो। पंथ बैराग सिद्ध योगी भूचरनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(नैवृत्य खण्ड़ौदी) ॐ गुरुजी भूर्भुवः स्वः सिद्ध भूचरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२९. जम्भनाथजी:— ॐ गुरुजी सिद्ध जम्भनाथजी क्षेत्र राजस्थान जालौर स्थान पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। मन्नाथी पंथ के सिद्ध जम्भनाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिम मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध जम्भनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३०. वक्रनाथजी:— ॐ पीर योगी वक्रनाथ जी वायव्य खण्ड कैकेय देश पर बैठकर थापना थापलो। गुरु योगी पीर चक्रनाथजी के शिष्य कहालो। पंथ नटेश्वरी के पीर वक्रनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्य खण्ड़ौदी मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः पीर वक्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३१. चर्पटनाथजी:— ॐ शिव सिद्ध चर्पटनाथ उत्तराखण्ड चम्बा क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। गोरक्ष कोपीन से चर्पट सिद्ध पालो। पंथ चर्पटनाथी सिद्ध योगी चर्पटनाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(तदउत्तरे वायव्यदी) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी चर्पटनाथजी आवाहन स्थापयामि।

३२. बिलेशयनाथजी:— ॐ नमो सिद्ध बिलेशयनाथ जी पर्वत क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। गुरु चर्पटनाथ जी के चेला कहालो। पंथ चर्पटनाथी सिद्ध बिलेशयनाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईशान्या मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध बिलेशयनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३३. कानिपानाथजीः– ॐ शिव सिद्ध कानिपानाथ जी (कृष्ण नाथ) पूर्वखण्ड बिहार क्षेत्र पहाडपुर स्थान बैठकर थापना थापलो। गुरु सिद्ध ज्वालेन्द्रनाथ जी के शिष्य कहालो। शिव कर्ण से उत्पन्न भया स्वयम् पाव पंथ के योगी कहाया। कापालीक पेवा के सिद्ध कानिपानाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(पूर्व मध्ये श्रृंङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध कानिपानाथ (कृष्णनाथजी) आवाहन स्थापयामि।

३४. बिरबंकनाथजीः– ॐ नमः सिद्ध बिरबंकनाथ जी ऋषिमुक स्थान बैठकर थापना थापलो। गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ ध्वज के योगी बिरबंकनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(अग्नेयम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध बिरबंकनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३५. ज्ञानेश्वरनाथजीः– ॐ नमः सिद्ध ज्ञानेश्वरनाथ जी (ज्ञाननाथ) आलन्दि स्थान बैठकर थापना थापलो। भ्राता सिद्ध निवृतिनाथ जी के परम शिष्य कहालो। पंथ वारकरी के ज्ञानेश्वर नाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(दक्षिणो मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध ज्ञानेश्वरनाथजी आवाहन स्थापयामि।

३६. तारानाथजीः– ॐ शिव तारानाथ जी पंचजन्य क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। श्री दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ पारसनाथी सिद्ध योगी तारानाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(नैर्ऋत्य खण्ड़ोन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी तारानाथजी आवाहन स्थापयामि।

३७. सुरानन्दनाथजीः– ॐ नमो सिद्ध सुरानन्दनाथजी क्षेत्र राज़स्थान डुंगरपुरा स्थान पर बैठकर थापना थापलो। गुरु सिद्ध बालकनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ उदासी के सिद्ध सुरानन्दनाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिम खण्ड़ौन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध सुरानन्दनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३८. सिद्धबुद्धनाथजी:- ॐ नमो सिद्धबुद्ध नाथजी कैकेय देश बैठकर थापना थापलो। सिद्ध गुरु दरियानाथजी के चेला कहालो। सिद्ध पंथ नटेश्वरी के पीर सिद्धबुद्धनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्य खण्ड़ोण्दौ) ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्धबुद्धनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३९. भगाईनाथजी:- ॐ आदिमाया सिद्ध भगाईनाथजी स्थान कुरुक्षेत्र बैठकर थापना थापलो। गुरु सिद्ध श्रृताईनाथजी के शिष्य कहालो। आई-पंथ के सिद्ध भगाईनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तर मध्ये भद्र) ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध भगाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४०. पिप्पलनाथजी:- ॐ शिव सिद्ध पिप्पलनाथजी खंडौ ईशान्य प्रयाग क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगी रामनाथजी के शिष्य कहालो। पंथ रामके के सिद्ध पिप्पलनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईशान्यैं) ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध पिप्पलनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४१. चन्द्रनाथजी:- ॐ मुनी सिद्ध चन्द्रनाथजी पूर्व बंगाल क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगी कपिलनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ-कपलानी के सिद्ध चन्द्रनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(तत्पूर्व मध्ये) ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध चन्द्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४२. भद्रनाथजी:- ॐ पण्डित भद्रनाथ जी आन्ध्र क्षेत्र भद्र प्रदेश बैठकर थापना थापलो। पण्डित योगी लंकानाथ (रावलनाथ जी) के शिष्य कहालो। पंथ-रावल के सिद्ध भद्रनाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईन्द्राग्नेय भद्रे) ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध पण्डित भद्रनाथजी आवाहन स्थापयामि।

४३. एकनाथजी:- ॐ संत योगी एकनाथजी महाराज पैठण क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। सन्त योगी जनार्धन नाथ जी के शिष्य कहालो। श्री पन्थ

वारकरी के एकनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(दक्षिण मध्ये श्रृंङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः सन्त एकनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४४. मानिकनाथजी:— ॐ शिव सिद्ध मानिकनाथजी माणिक चौक अहमदाबाद क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी के चेला कहालो। पंथ—वारकरी सिद्ध योगी मानिकनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईन्द्राग्नियम् मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी मानिकनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४५. गेहल्लारावलनाथजी:— ॐ नमो सिद्ध योगी गेहल्लारावलनाथ जी पश्चिम क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। योगी गुरु गोरक्षनाथ जी के चेले कहालो। रावलपंथी गेहल्लारावलनाथजी के चरण पदुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिम मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी गेहल्लारावलनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४६. काय (काया) नाथजी:— ॐ नमः सिद्ध कायनाथजी पाकिस्तान क्षेत्र भेरा (भद्रवती) स्थान बैठकर थापना थापलो। सिद्धयोगी विचारनाथ जी के चेले कहालो। पंथ भर्तृहरी बैराग के सिद्ध कायनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी कायानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४७. बाबा मस्तनाथजी:— ॐ शिव योगी बाबा मस्तनाथ जी अस्थल बोहर स्थान पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगी नरमाईनाथजी के परम सिद्ध शिष्य कहालो। पंथ आई के सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः बाबा मस्तनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४८. याज्ञवाल्क्यनाथजी:— ॐ आदिशिव सिद्धयोगी याज्ञवाल्क्यनाथ जी प्रयाग क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। गुरु सिद्ध योगी सत्यनाथजी के शिष्य

कहालो। पंथ सतनाथ के सिद्ध याज्ञवाल्क्यनाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(ब्रह्मईशान्याम्)ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी याज्ञवाल्क्यनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४९. गोरनाथजी:- ॐ शिव सिद्ध गोरनाथजी बंगाल खण्ड गौर क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ धर्म नाथी के सिद्ध गोरनाथ जी के चरण कमलो को आदेश। आदेश। आदेश।

(सोम मध्ये पूर्व) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध गोरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५०. टिण्टीणीनाथजी:- ॐ शिव सिद्ध टिण्टीणीनाथ जी दक्षिण खण्ड क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्धयोगी ज्वालेन्द्रनाथ जी के चेला कहालो। पंथ-पाव के सिद्ध योगी टिण्टीणीनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(सोम मध्ये दक्षिणाम) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी टिण्टीणी नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५१. दयानाथजी:- ॐ नमो सिद्ध दयानाथ जी गिरनार क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गोरक्षानाथजी के चेले कहालो। पंथ भर्तृहरी बैराग के सिद्ध दयानाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।
(सोम मध्ये नैवृत्य) ॐ भूर्भुवः स्वः योगी दयानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५२. हवाईनाथजी:- ॐ नमो सिद्ध हवाईनाथजी पश्चिम क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के चेले कहालो। पंथ आई के सिद्ध हवाईनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिम मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी हवाईनाथजी आवाहन स्थापयामि।

५३. दरियावनाथजी:- ॐ शिव सिद्ध दरियावनाथजी काबुल कंधार (अटक) पाकिस्तान क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। पीर जी

पंथ नटेश्वरी के दरियावनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्याम) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध दरियावनाथजी आवाहन स्थापयामि।

५४. खेचरनाथजी:— ३ॐ नमो सिद्ध योगी खेचरनाथजी कश्मीर क्षेत्र पूंछ स्थान पर बैठकर थापना थापलो। गुरु गोरक्षनाथजी के शिष्य कहालो। पंथ—आई के योगी खेचरनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तर खण्ड़ेन्दौ) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध खेचरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५५. घोडा चोलिपानाथजी:— ३ॐ आदि सिद्ध घोडाचोलीपा नाथ जी इशान्ये खण्डेन्दौ क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। गुरु गोरक्षनाथ जी के चेले कहालो। सिद्ध पंथ आई के योगी घोडा चोलीपानाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईशान्याम् उत्तराखण्ड़ेन्दौ) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध योगी घोडाचोलीपा नाथजी आवाहन स्थापयामि।

५६. सहजाईनाथजी:— ३ॐ शिवाय सिद्ध सइजाईनाथजी बंगाल क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध गुरु कणकाईनाथ जी के चेला कहालो। पंथ आई के सिद्ध सहजाईनाथजी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(सोम मध्ये पूर्व) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध योगी सहजाईनाथजी आवाहन स्थापयामि।

५७. सुकदेनाथजी:— ३ॐ नम: सिद्ध सुकदेवनाथ जी द्विपखण्ड पर बैठकर थापना थापलो। गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ रामके सिद्ध सुकदेवनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(ब्रह्माग्नेय मध्ये भद्रे) ३ॐ भूर्भुव: स्व: सिद्ध सुकदेवनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५८. औघड़नाथजी:— ३ॐ शम्भु सिद्ध औघड़नाथ जी गिरनार गिरि (पर्वत) पर बैठकर थापना थापलो सिद्ध गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। गोरखपंथी सिद्ध औघड़नाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(तद् दक्षिणेयाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध औघड़नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५९. देवनाथजी– ॐ नमः सन्त योगी देवनाथ जी अमरावती ओलियापुर क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सन्त सिद्ध गोविन्दनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ वारकरी के सन्त देवनाथजी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(इन्द्र–नैऋत्वृत्या मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सन्त देवनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६०. प्रकाशनाथ जी– ॐ नमः शिवाय सिद्ध प्रकाशनाथ पश्चिमे देश बैठकर थापना थापलो। गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ भर्तृहरि बैराग के योगी प्रकाशनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिम मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः योगीराज प्रकाशनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६१. कोरण्टनाथ जी– ॐ नमो सिद्ध कोरन्टनाथ जी तक्षशिला क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। सिद्ध पीर रतननाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ भर्तृहरि बैराग के सिद्ध कोरन्टनाथ जी के पद कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्या श्रृंखलाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध कोरन्टनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६२. बालकनाथ जी– ॐ शिवः सिद्ध बाबा बालकनाथ जी हमिरपुर क्षेत्र शाहतलाई पर बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के चेले कहालो। पंथ भर्तृहरि बैराग के सिद्ध योगी बाबा बालकनाथ जी के चरण कमल पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तरे मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध बाबा बालकनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६३. बालगुन्दाईनाथ जी (लक्ष्मण इक्ष्वाकु)– ॐ माया सिद्ध बालगुन्दाईनाथ जी करनाल क्षेत्र, बैठकर थापना थापलो। श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ–मन्नाथी के सिद्ध बालगुन्दाईनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईशान्यादि भद्रे)– ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध बालगुन्दाई नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६४. शबरनाथजीः– ॐ आदीमाया सिद्ध बाबा शबरनाथ जी बंगाल क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। श्री माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी का चेला कहालो। पंथ–कापालीक सिद्ध शबरनाथ जी को चरण को आदेश। आदेश। आदेश।

(तत्पूर्व) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध शबरनाथ आवाहन स्थापयामि।

६५. विरुपाक्षनाथजीः– ॐ शिव सिद्ध विरुपाक्षनाथजी अग्नेय खण्ड पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध आदिनाथ जी के शिष्य कहालो। सिद्ध योगी विरुपाक्षनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(अग्नेयाम् मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः विरुपाक्षनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६६. मल्लिकानाथजीः– ॐ नमो सिद्ध मल्लिकानाथ जी निवार देश पर बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के चेला कहालो। सिद्ध योगी मल्लिकानाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(दक्षिणे मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध मल्लिकानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६७. गोपालनाथजीः– ॐ सन्त सिद्ध गोपालनाथजी त्रिपुरा क्षेत्र कोरेगांव स्थान पर बैठकर थापना थापलो। गुरु सन्त योगी एकनाथ महाराज के शिष्य कहालो। पंथ–वारकरी के सिद्ध गोपालनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(नैॠत्य मध्ये श्रृंखलाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः योगी गोपालनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६८. लधाईनाथजीः– ॐ आदिशक्ति सिद्ध लधाईनाथ जी पश्चिमे उत्तरा क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगी भुसकाईनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ–आई के योगी लधाईनाथ जी के चरण कमल पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिमे वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध लधाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६९. अल्लमनाथजी:— ॐ पीर अल्लमनाथ जी क्षेत्र कैकेय देश में बैठकर थापना थापलो। गुरु योगी गोरक्षनाथ जी के चेला कहालो। पंथ—सूफी के पीर (फकीर) अल्लमनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्य मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः पीर सिद्ध अल्लमनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७०. सिद्धपादनाथजी:— ॐ नमः सिद्धयोगी सिद्धपाद नाथ जी हिमाचल क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। गुरु योगी निरन्जन नाथ जी के शिष्य कहालो। शैव पंथ के योगी सिद्धपादनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तरा मध्ये वायव्यादी) ॐ भूर्भुवः स्वः योगी सिद्धपाद नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७१. अड़बंगनाथजी:— ॐ शिव सिद्ध अड़बंगनाथ जी ईशान्याम क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। गुरु शम्भुजती योगी गोरक्षनाथ जी के परम शिष्य कहालो। पंथ—पागल के सिद्ध अड़बंगनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध अड़बंगनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७२. गौरवनाथजी:— ॐ मायासिद्ध गौरवनाथ जी बिहार क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। गुरु मत्स्येन्द्रनाथ जी के चेला कहालो। पंथ—कापालिक के सिद्ध गौरवनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(तत्पूर्व मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध गौरवनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७३. धीरनाथजी:— ॐ नमः सिद्ध धीरनाथ जी अग्नेय खण्ड बैठकर थापना थापलो। पीर अल्लमनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ सूफी के सिद्ध धीरनाथ के चरण कमल पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(अग्नेय खण्ड़ेण्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध धीरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७४. साहिरोबानाथजीः— ॐ सिद्ध सन्त साहिरोबानाथ जी गोवा क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगी गहनीनाथ जी के चेला कहालो। पंथ वारकरी के सन्त साहिरोबानाथ जी के पद कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(नैर्ऋत्य मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सन्त साहिरोबानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७५. प्रौढनाथजीः— ॐ नमो सिद्ध प्रौढनाथ जी उज्जैन क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगी भर्तृहरिनाथ जी के शिष्य कहालो। भर्तृहरि बैराग पंथ के योगी प्रौढनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(पश्चिम मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध प्रौढनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७६. गरीबनाथजीः— ॐ नमः सिद्ध गरीबनाथ कांगडा (हिमाचल) क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। सिद्धयोगी बालकनाथ जी के चेला कहालो। पंथ बैराग के योगी गरीबनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी गरीबनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७७. कालनाथजीः— ॐ सिद्धमाया कालनाथ जी कुल्लु स्थान पर बैठकर थापना थापलो। मायारुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ कापालिक के सिद्ध योगी कालनाथ जी के चरण कमल पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(तत्उत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध कालनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७८. धर्मनाथजीः— ॐ शिवः सिद्ध धर्मनाथ जी ईशान्य क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के शिष्य कहालो। पंथ—पाव के सिद्ध योगी धर्मनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(इद्राइशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध धर्मनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७९. मेरुनाथजीः— ॐ नमो सिद्ध मेरुनाथ जी बिहार क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगी गौरवनाथ जी के चेला कहालो। पंथ—कापालिक के सिद्ध मेरुनाथ जी के पद कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(सोममध्याग्नेयाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध मेरुनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८०. सिद्धासननाथजी:— ॐ सिद्धमाया सिद्धासननाथ जी नैऋत्य खण्ड बैठकर थापना थापलो। दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी के चेला कहालो। पंथ—अरजनंगा के योगमाया सिद्धासननाथ जी के पद कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(नैऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धासननाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८१. सूरतनाथजी:— ॐ शिव सिद्ध सूरतनाथ पंजाब क्षेत्र बैठकर थापना थापलो। शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ के शिष्य कहालो। पंथ—आई के सिद्ध योगी सूरतनाथ जी के पद कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(वायव्य मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध सूरतनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८२. मार्कण्डेयनाथजी:— ॐ आदि योगी मार्कण्डेयनाथ जी ईशान्य खण्ड बैठकर थापना थापलो। गुरु योगी सिद्ध आदिनाथ जी के चेला कहालो। शैव पंथ सिद्ध योगी मार्कण्डेयनाथ जी के चरण पादुका को आदेश। आदेश। आदेश।

(ईशान्यमध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध मार्कण्डेयनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८३. मीननाथजी:— ॐ सिद्ध योगी मीननाथ जी कश्मीर क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। ॐ सिद्ध आदिनाथ जी के परम शिष्य कहालो। पंथ—पाव के सिद्ध योगी मीननाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(सोमवायव्य मध्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी मीननाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८४. काकचण्डीनाथजी:— ॐ नमो सिद्ध योगी काकचण्डीनाथ जी कश्मीर क्षेत्र पर बैठकर थापना थापलो। सिद्ध योगीराज चौरंगीनाथ जी के परम शिष्य कहालो। पंथ—पागल के सिद्ध योगी काकचण्डीनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

(उत्तरामध्ये—वायव्याम) ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्ध योगी काकचण्डीनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

इतना चौरासी सिद्ध आवाहन स्थापन सम्पूर्ण भया नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अतः साधक ने सर्वतो महारुद्र चक्र में स्थापित ९ नाथ ८४ सिद्ध की "प्राण गायत्री मन्त्र" से प्राण प्रतिष्ठा करके यथा उपचारे पूजन करें।

यंत्र के ऊपर कमल पुष्प लाल तथा अक्षदा छोड़कर या केवल जल छोड़कर मन्त्र द्वारा प्राण प्रतिष्ठा करें।

प्राण गायत्री—मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अपरम्पार—अपरम्पार में ब्रह्मपार—ब्रह्मपार में गिरि कैलाश। कैलाश पर गगन मण्डल छाया ज्योति से त्रिकुट भई ॐ सोहं से मार्ग पाया। कैलाश में महादेव पार्वती ने किया निवासा। प्राण गायत्री का भया प्रकाशा। ॐ गुरुजी कौन पुरुष ने बान्धी काया, कौन डोर से हंसा आया। कौन कमल से संसार रचाया, कौन कमल से जीव का वासा। कौन कमल में निरंजन निराई, कौन कमल में फिरी दुहाई। कहो सिद्धों असंख्य युग की बात, नहीं तो धरो सब ठाट बाट।

ॐ गुरुजी अलख पुरुष ने बान्धी काया, बेगम डोर से हन्सा आया, नाभि कमल से संसार रचाया। हृदय कमल में जीव का वासा, कुन्ज कमल में निरन्जन निराई। त्रिकुट महल में फिरी दुहाई। कौन के हम शिष्य हैं। कौन हमारा नाम। कौन हमारा इष्ट है। कौन हमारा गांव। शबद के हम शिष्य हैं, सोहं हमारा नाम प्राण हमारा इष्ट है। काया हमारा गांव।

ॐ सोहं हंसाय विद्महे प्राण प्राणाय धीमहि तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात्। इतना प्राण गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अतः साधक ने नवनाथ नाम स्वरुप पाठ तथा चौरासी सिद्ध गायत्री पाठ पढ़कर सर्वतो महारुद्र की पूजन समोपचारे करें।

नवनाथ नाम स्वरुप पूजन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐकार आदिनाथ जी ॐकार स्वरुप बोलिये। (रुद्रचक्र के मध्य में १ मुखी रुद्राक्ष के ऊपर बिल्वपत्र छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करें।)

उदयनाथ पार्वती धरत्री स्वरुप बोलिये। (रुद्रचक्र के पूर्व दिशा में २ मुख रुद्राक्ष के ऊपर मृतीका या भभूत छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करें।)

सत्यनाथ ब्रह्माजी जल स्वरुप बोलिये। (रुद्रचक्र के पूर्व दिशा में ४ मुख रुद्राक्ष के ऊपर गंगा जल छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करें।)

सन्तोषनाथ विष्णुजी खड़ग खाण्डा तेज स्वरुप बोलिये (रुद्रचक्र दक्षिण दिशा में १०/२० मुख रुद्राक्ष के ऊपर तुलसी दल छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करें।)

अचल अचम्बेनाथ आकाश (शेष) स्वरुप बोलिये। (रुद्रचक्र के दक्षिण दिशा ८ मुख रुद्राक्ष के ऊपर सांप की कंचली या दूध छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करें।

गजबेलि गजकंथडनाथ गणेशजी गज हस्ती स्वरुप बोलिये। (रुद्रचक्र के पश्चिम दिशा में गणेश रुद्राक्ष के ऊपर दुर्वा छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करें।)

ज्ञानपारखी सिद्ध चौरंगी अठारह भार वनस्पति स्वरुप बोलिये। (रुद्रचक्र के पश्चिम दिशा में १८ मुख रुद्राक्ष पर भोजपत्र छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करें।)

मायास्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी माया स्वरुप बोलिये (रुद्रचक्र के उत्तर दिशा में १४ मुख रुद्राक्ष के ऊपर अक्षद सिन्दूर छोड़े तथा पंचोपचारे पूजन करें।)

घट पिण्डे नव निरन्तरे रक्षा करन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाल स्वरुप बोलिये। (रुद्रचक्र के उत्तर दिशा में ९ मुख या निरमुखी रुद्राक्ष के ऊपर पंचोपचारे पूजन करे तथा गौघृत का (छोटा) दीपक रखें।)

इतना नवनाथ नाम स्वरुप जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अतः चौरासी सिद्ध गायत्री पाठ पढ़कर चौरासी सिद्धों के ५ मुख या ६ मुख रुद्राक्षों पर पंचोपचारे पूजन करें और निम्न पाठ करें। पूजन सभी दिशा के रुद्राक्ष पर करें।

चौरासी सिद्ध गायत्री पाठः-

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गंगा गोदा अनुपान शिला, सुमीर बैठे गुरु गोरक्षनाथ बाला। अनभय पंथ, अनन्त शाखा, ऋद्धि सिद्धि सिद्धां का मेला।

ॐकार आदिनाथ तां अनुपम शिष्य, माया मछन्दर, जालंदर शिष्य। सनक-सनातन-सनन्दन सिद्ध, सनत्कुमार-मार्कण्डेय जी सिद्ध। मिन सिद्ध-सिद्ध विरुपाक्ष, सिद्ध श्रृंगेरीपा-चोली घोड़ा शिष्य। माया पार्वती उदय नाथ सिद्ध, शील नाथ-टिण्टीणी योगी सिद्ध। कानीपा उत्पत्ति गजकर्ण-गजकंन्थड़ नाथ, इनकी कथनी, करनी बज्र काया भ्रवर गुफा अमिरस प्याला। रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।।१।।

ॐ मछन्दर पूता गोरख सिद्ध, मन्जु-तारा-शाबर सिद्ध। सिद्धासन सिद्ध-कालनाथ सिद्ध, प्रभुदेव ता प्रकाशनाथ शिष्य। नारदा शारदा ता परमानन्द शिष्य, गौरवनाथ जी का मेरु सिद्ध सन्तोषनाथ विष्णु जी गोपाल सिद्ध। अचल अचम्बेनाथ शेष सिद्ध, सत्यनाथ ब्रह्माजी जल रुप सिद्ध। इनकी योग युगति सान्धे काया, काल लागै ना लिपै माया। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।।२।।

ॐ जती गोरख आप विराजे, अपना गुरु आपै चेले। कनकाई-भुसकाई-बालगुन्दाई, बालकनाथ-सारस्वताई। राजा भर्तृहरि-गोपीचंद सिद्ध भर्तृहरि बैराग कायानाथ सिद्ध, मुनि कपिल-धुन्धली सिद्ध। बीरबन्क सिद्ध-लधाई सिद्ध, भूचर-खेचर-हवाई सिद्ध। ब्रह्माई-नरमाई-मस्तनाथ सिद्ध, श्रुताई-भगाई-मनसाई सिद्ध। सहजाई सिद्ध-काकचण्डी सिद्ध, लंका रावण-राजा राम सिद्ध। गेहल्ला रावल, गोरनाथ सिद्ध दया-दरिया सुखदेव सिद्ध, अल्लम-मल्लक-अड़बंग सिद्ध। एकनाथ औघड-वरदा सिद्ध, रतननाथ जी का कोरन्ट शिष्य। सिद्ध पूरनमल चौरंगी सिद्ध, नागार्जुन नागा-मानिक-सिद्ध, गहनी-निवृत्ति-ज्ञानदेव सिद्ध, सिद्ध चरपट सोहिरोबा सिद्ध। चक्रनाथ-वक्रनाथ सूर्य सिद्ध, भद्रनाथ-मद्रनाथ, चन्द्र सिद्ध। नाथ

निरन्जन–सिद्धपाद शिष्य, पीर सत्यनाथ याज्ञवाल्क्य शिष्य। सिद्धबुद्ध–बिलेशाय सिद्ध, धीर–वीर–पिप्पलनाथ सिद्ध। बाल–प्रौढ जम्भ–सुरानन्द सिद्ध, देव–धर्म गरीबनाथ सिद्ध, इनकी ज्योत से ज्योत भया प्रकाशा। चौरासी सिद्धां का भया उजियाला, गोरख कहे निरन्तर मेला, योगी जागो योग, जगाना, अपना माही आपही प्रगटया गुरु शबद अनहद बाजा, रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला इतना ९ नाथ ८४ सिद्ध नाम लेते, जाप जपन्ते–जल में अग्नि प्रगटे, अग्नि में अम्बर बरसे–अम्बर में वायु उड़े–बिना पंख जोगी उड़े यही योगी जल ऊपर तरे, यही योगी अग्नि में ना जले जिसकी रक्षा शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी करें। श्रीनाथ जी। गुरु जी को आदेश।

आवाहन प्राण प्रतिष्ठा तथा पाठ होने के पश्चात महारुद्रनाथ सिद्धचक्र की षोडशोपचारे पंचोपचारे या यथालब्धोपचार से पूजन करें।

प्रथम साधक ने चौकी को हाथ स्पर्श करके आसन लगाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १७५) का उच्चारण करें। पाद्यस्नान मन्त्र (पृष्ठ नं० १७५) का उच्चारण करके जल गायत्री से शंख द्वारे जल चढ़ावें। अलील गायत्री मन्त्र (पृष्ठ नं० १७६) से पढ़कर अर्ध्य दे। मधुबीज मन्त्र (पृष्ठ नं० १७७) से पढ़कर मधुस्नान कराये। घृतमन्त्र (पृष्ठ नं० १७७) से घृत स्नान कराये। दधिजाप मन्त्र (पृष्ठ नं० १७८) से दधि स्नान कराये। मधुकर्प जाप मन्त्र (पृष्ठ नं० १७८) से मधुकर्प स्नान कराये। कामधेनु गायत्री मन्त्र (पृष्ठ नं० १७९) से पयः स्नान कराये। पंचामृत जाप मंत्र (पृष्ठ नं० १८०) से पंचामृत स्नान तथा केशर मन्त्र (पृष्ठ नं० १८०) से केशर स्नान और चन्दन रस मन्त्र (पृष्ठ नं० १८१) से उबटन स्नान तथा जल गायत्री मन्त्र (पृष्ठ नं० १८१) शुद्धोद्क स्नान कराये। अतः लंगोट मन्त्र (पृष्ठ नं० १८२) से लंगोट कपड़ा चढ़ावे। भस्म गायत्री मन्त्र (पृष्ठ नं० १८२) से भभूती चढ़ावे।

अतः जटा बन्धन मन्त्र (पृष्ठ नं० १८४) कहकर सवा मीटर कपड़ा चढ़ावे या रुद्राक्ष माला चढ़ावे। तत्पश्चात भगवा धारण करने का मन्त्र (पृष्ठ नं०

१८५) से भगवा वस्त्र अर्पण करें तथा वाघाम्बर मृगछाला हो, तो बाघम्बर मृगछाला मन्त्र (पृष्ठ नं० १८५) से बाघाम्बर मृगछाला चौकी के नीचे डालकर फिर आसन मन्त्र (पृष्ठ नं०१८५) से डाले। उसी प्रकार कुण्डल दर्शन मन्त्र (पृष्ठ नं० १८६) से मृतीका के कुण्डल अर्पण करें। नाद जनेऊ मन्त्र (पृष्ठ नं० १८७) से उनका नाद जनेऊ नादी पवित्री इत्यादि सह अर्पण करें। अत: रुद्राक्ष का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९०) से १ रुद्राक्ष या १०८ दाने वाली माला अर्पण करें। तिलक मन्त्र (पृष्ठ नं० १९१) से चन्दन या अष्टगंध का टीका लगावे। अत: चक्र के ऊपर बिल्व पत्र चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९३) से बिल्वपत्र १०८ चढ़ावे या ११ बिल्व पत्र की माला चक्र को चढ़ावे तथा अक्षद मन्त्र (पृष्ठ नं० १९४) अक्षदा और पुष्प मन्त्र (पृष्ठ नं० १९५) पुष्प या पुष्प माला चढ़ावे। अत्तर चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९६) से रुई से अत्तर चक्र को स्पर्श करें। धूप वासना का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९८) से धूप (उदगुग्गल घी खोबरा मिष्ठान) का धूपीया करें। अत: ज्योत जगाने का बीज मन्त्र (पृष्ठ नं० १९९) से दीपक ज्योत चक्र के समीप लगावे। अत: भोग लगाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० २०३, २०४) भोग मूंग की दाल के वडे, खीर,पूड़ी, रोट प्रसाद, चावल का भोग लगावे तथा ताम्बुल मन्त्र से (पृष्ठ नं० २०४) मुखशुद्धी सुपारी, लवंग, इलायची, केशर चढ़ावे। इसी प्रकार छत्र चवर (पृष्ठ नं० २०५) से छत्र चवर, झोली मन्त्र (पृष्ठ नं० २०५) से झोली खप्पर मन्त्र (पृष्ठ नं० २०६) से खप्पर, चिमटा मन्त्र (पृष्ठ नं० २०७) से चिमटा, त्रिशूल मन्त्र (पृष्ठ नं० २०७) से त्रिशूल, डमरु मन्त्र (पृष्ठ नं० २०८) से डमरु कमण्डल मन्त्र (पृष्ठ नं० २०८) कमण्डल, शंख गायत्री मन्त्र (पृष्ठ नं० २०९) शंख भैरव दण्ड मन्त्र (पृष्ठ नं० २१०) दण्ड, कड़ा मन्त्र (पृष्ठ नं० २११) कड़ा, नागफनी मन्त्र (पृष्ठ नं० २१२) नागफणी, तूम्बेका मन्त्र (पृष्ठ नं० २१३) तूम्बा कुबड़ी मन्त्र (पृष्ठ नं० २१३) से कुबड़ी, भैरव मतन्गा मन्त्र से (पृष्ठ नं० २१४) भैरव मतन्गा चरण पादुका मन्त्र (पृष्ठ नं० २१५) खड़ावा, ९ नाथ ८४ सिद्ध महारुद्र चक्र के ऊपर चढ़ाये। अतः कपूर चेताने का मन्त्र (पृष्ठ नं० २१५) से कपूर चेतन करें।

अतः नादपूजा आदेश करके नमस्कार करें।

एक ओंकार तेरा आधार
तीन लोक में जय जय कार।
नाद बाजे काल भागे
गोरख टोपी ज्ञान छाजै।
गलेनाद पुष्प की माला

रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

चार खानी चार बानी, चन्दा सूरज पवन पानी। एक देवा सर्वत्र सेवा, जोत पाटले परसो देवा।

काने कुण्डल गले नाद करो सिद्धो नाद ओंकार।

श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। बाले गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

अतः प्रार्थना करें।

सुने सुनावे प्रेमवश पूजे अपने हाथ
मन इच्छा सब कामना पूरे गोरक्षनाथ
अगम अगोचर नाथ तुम पारब्रह्म अवतार।
कानन कुण्डल सिर जटा अंग विभूति अपार।
सिद्ध पुरुष योगेश्वरों दो मुझको उपदेश।
हर समय सेवा करु सुबह शाम आदेश।
नवनाथ सिद्ध को नमन करुं
चौरासी सिद्ध के चरण को आदेश।

इतना सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध चक्र आवाहन स्थापन-पाठ पूजन सम्पूर्ण भया।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी के चरण कमल को नमो आदेश।

केवल नामोल्लेख सर्वतो
महारुद्रनाथ सिद्ध स्थापना

नवनाथ आवाहन—

१—(मध्यकर्णियाम) ॐ भूर्भुव: स्व: आदिनाथ जी को आदेश। योगी आदिनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२—(पूर्व व्याप्याम) ॐ भूर्भुव: स्व: उदयनाथ जी को आदेश। योगी उदयनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३—(पूर्व मध्यमा) ॐ भूर्भुव: स्व: सत्यनाथ जी को आदेश। योगी सत्यनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४—(दक्षिण मध्याम:) ॐ भूर्भुव: स्व: सन्तोषनाथजी को आदेश। योगी सन्तोषनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५—(दक्षिण मध्य व्याप्याम) ॐ भूर्भुव: स्व: अचल अचम्भेनाथ जी को आदेश। योगी अचल अचम्भेनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६—(पश्चिमा मध्यां) ॐ भूर्भुव: स्व: गजकंथड़नाथ जी को आदेश। योगी गजकंथड़नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७—(पश्चिमे व्यापाम) ॐ भूर्भुव: स्व: चौरंगीनाथ जी को आदेश। योगी चौरंगीनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८—(उत्तर मध्ये वाप्याम) ॐ भूर्भुव: स्व: दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी को आदेश। दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

९—(उत्तरे वाप्याम) ॐ भूर्भुव: स्व: गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। योगी गुरु गोरक्षनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

चौरासी सिद्ध आवाहन—

१—(पूर्वमध्य) ॐ भू: स्व: कपिलनाथ जी को आदेश। सिद्ध कपिलनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२—(अग्नेया श्रृङ्खलायाम) ॐ भू: सनकनाथ जी को आदेश। सिद्ध सनकनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३—(दक्षिणे) ॐ भू: लंकानाथ जी को आदेश। सिद्ध लंकानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४—(नैऋत्य) ॐ भू: सनातननाथ जी को आदेश। सिद्ध सनातननाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५—(पश्चिम) ॐ भू: विचारनाथ जी को आदेश। सिद्ध विचारनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६—(वायव्य खण्डेन्दौ) ॐ भू: चक्रनाथ जी को आदेश। सिद्ध चक्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७—(तदुत्तरे परिधौ) ॐ भू: नरमाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध नरमाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८—(ईशान्य मध्ये) ॐ भू: रतननाथ जी को आदेश। सिद्ध रतननाथ जी आवाहन स्थापयामि।

९—(पूर्वमध्य श्रृंखला) ॐ भू: श्रृंगेरीनाथ जी को आदेश। सिद्ध श्रृंगेरीनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१०—(अग्नियमध्ये) ॐ भू: सनन्दन नाथ जी को आदेश। सिद्ध सनन्दननाथ जी आवाहन स्थापयामि।

११—(दक्षिणमध्ये) ॐ भू: निवृत्तिनाथ जी को आदेश। सिद्ध निवृत्तिनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१२—(नैऋत्य श्रृंखलायाम) ॐ भू: सनत्कुमारनाथ जी को आदेश। सिद्ध सनत्कुमारनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१३—(पश्चिमामध्ये) ॐ भू: ज्वालेन्द्रनाथ जी को आदेश। सिद्ध ज्वालेन्द्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१४—(वायव्य खण्ड़ेन्दी) ॐ भू: सारस्वताईनाथ जी को आदेश। सिद्ध सारस्वतताईनाथजी आवाहन स्थापयामि।

१५—(उत्तरामध्ये) ॐ भू: ब्रह्मईनाथ जी को आदेश। सिद्ध ब्रह्मईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१६—(ईशान्य) ॐ भू: प्रभुदेवनाथ जी को आदेश। सिद्ध प्रभुदेवनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१७—(ततपूर्व) ३ॐ भू: कनकाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध कनकाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१८—(अग्नेयामध्येभद्रे) ३ॐ भू: धुन्धकार नाथजी को आदेश। सिद्ध धुन्धकारनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

१९—(दक्षिणामध्ये) ३ॐ भू: नारददेवनाथ जी को आदेश। सिद्ध नारददेव नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२०—(नैर्ऋत्य खण्ड़ेदौ मध्ये) ३ॐ भू: मन्जुनाथजी को आदेश। सिद्ध मन्जुनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२१—(पश्चिमा मध्ये पूर्व) ३ॐ भू: मनसाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध मनसाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२२—(वायव्य खण्ड़ेदौ) ३ॐ भू: विरनाथजी को आदेश। सिद्ध विरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२३—(उत्तरामध्ये श्रृंखला) ३ॐ भू: श्रृताईनाथ जी को आदेश। सिद्ध श्रृताई नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२४—(ईशान्य खण्ड़ेन्दौ) ३ॐ भू: नागार्जुननाथ जी को आदेश। सिद्ध नागार्जुन नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२५—(तत्पूर्वामध्ये) ३ॐ भू: भुसकाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध भुसकाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२६—(ईन्द्राग्नियमध्ये भद्रे) ३ॐ भू: भद्रनाथ जी को आदेश। सिद्ध भद्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२७—(दक्षिणमध्ये श्रृंखला) ३ॐ भू: गहीणीनाथ जी को आदेश। सिद्ध गहीणीनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२८—(नैर्ऋत्य खण्ड़ेदौ) ३ॐ भू: भूचरनाथ जी को आदेश। सिद्ध भूचरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२९—(पश्चिमा मध्ये) ३ॐ भू: जम्भनाथ जी को आदेश। सिद्ध जम्भनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३०—(वायव्य खण्ड़ेन्दौ मध्ये) ३ॐ भू: वक्रनाथ जी को आदेश। सिद्ध वक्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३१—(तदउत्तरे व्यायव्यदी) ॐ भूः चर्पटनाथजी को आदेश। सिद्ध चर्पटनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३२—(ईशान्यामध्ये) ॐ भूः बिलेशयनाथजी को आदेश। सिद्ध बिलेशयनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३३—(पूर्व मध्ये श्रृंखला) ॐ भूः कानिपानाथ जी को आदेश। सिद्ध कानिपानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३४—(अग्नेयाम) ॐ भूः बिरबंकनाथ जी को आदेश। सिद्ध बिरबंकनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३५—(दक्षिणा मध्ये) ॐ भूः ज्ञानेश्वरनाथ जी को आदेश। सिद्ध ज्ञानेश्वरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३६—(नैर्ऋत्य खण्ड़ेन्दौ) ॐ भूः तारानाथ जी को आदेश। सिद्ध तारानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३७—(पश्चिमा खण्ड़ेन्दौ) ॐ भूः सुरानन्दनाथ जी को आदेश। सिद्ध सुरानन्दनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३८—(वायव्य खण्ड़ेन्दौ) ॐ भूः सिद्धबुद्ध नाथजी को आदेश। सिद्ध बुद्धनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३९—(उत्तरामध्ये भद्रे) ॐ भूः भगाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध भगाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४०—(ईशान्य मध्ये भद्रे) ॐ भूः पिप्पलनाथ जी को आदेश। सिद्ध पिप्पलनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४१—(तत्पुर्व मध्ये) ॐ भूः चन्द्रनाथ जी को आदेश। सिद्ध चन्द्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४२—(ईन्द्राग्निया भद्रे) ॐ भूः भद्रनाथ जी को आदेश। सिद्ध भद्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४३—(दक्षिण मध्ये श्रृंखला) ॐ भूः एकनाथ जी को आदेश। सिद्ध एकनाथ नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४४—(ईन्द्राग्नियाम् मध्ये) ॐ भूः मानिकनाथ जी को आदेश। सिद्ध मानिकनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४५—(पश्चिम मध्ये भद्रे) ३ॐ भू: गेहल्लारावल नाथ जी को आदेश। सिद्ध गेहल्लारावल नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४६—(वायव्याम) ३ॐ भू: कायनाथ जी को आदेश। सिद्ध कायनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४७—(उत्तरे मध्ये व्याप्याम) ३ॐ भू: बाबा मस्तनाथ जी को आदेश। सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४८—(ब्रह्मईशान्याम्) ३ॐ भू: याज्ञवाल्क्य नाथ जी को आदेश। सिद्ध याज्ञवाल्क्यनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४९—(सोम मध्ये पूर्व) ३ॐ भू: गोरनाथ जी को आदेश। सिद्ध गोरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५०—(सोम मध्ये दक्षिणाम्) ३ॐ भू: टिण्टीणीनाथ जी को आदेश। सिद्ध टिण्टीणीनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५१—(सोम मध्ये नैऋत्य) ३ॐ भू: दयानाथ जी को आदेश। सिद्ध दयानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५२—(पश्चिमा मध्ये नैऋत्य) ३ॐ भू: हवाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध हवाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५३—(ब्रह्मामध्ये वायव्याम्) ३ॐ भू: दरियानाथ जी को आदेश। सिद्ध दरियानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५४—(उत्तरे खण्ड़ेन्दौ) ३ॐ भू: खेचरनाथ जी को आदेश। सिद्ध खेचरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५५—(ईशान्य उत्तराखण्ड़ेन्दौ) ३ॐ भू: घोडाचोलिपा नाथ जी को आदेश। सिद्ध घोडाचोलिपानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५६—(सोम मध्ये पूर्व) ३ॐ भू: सहजाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध सहजाई नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५७—(ब्रह्मग्नेयाम् मध्ये भद्रे) ३ॐ भू: सुकदेव नाथ जी को आदेश। सिद्ध सुकदेव नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५८—(तद, दक्षिणयाम्) ३ॐ भू: औघडनाथ जी को आदेश। सिद्ध औघडनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५९- (ईन्द्र नैऋत्य मध्ये) ॐ भू: देवनाथ जी को आदेश। सिद्ध देवनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६०- (पश्चिमा मध्ये) ॐ भू: प्रकाशनाथ जी को आदेश। सिद्ध प्रकाशनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६१- (वायव्या श्रृखलाम्) ॐ भू: कोरण्ट नाथ जी को आदेश। सिद्ध कोरण्टनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६२- (उत्तरेमध्ये भद्रे) ॐ भू: बालक नाथ जी को आदेश। सिद्ध बालक नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६३- (ईशान्यादी भद्रे) ॐ भू: बालगुन्दाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध बालगुन्दाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६४- (तत्पूर्व) ॐ भू: शाबरनाथ जी को आदेश। सिद्ध शाबरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६५- (अग्नेयाम मध्ये) ॐ भू: विरुपाक्षनाथ जी को आदेश। सिद्ध विरुपाक्षनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६६- (दक्षिण मध्ये भद्रे) ॐ भू: मल्लीकानाथ जी को आदेश। सिद्ध मल्लीकानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६७- (नैऋत्य मध्ये श्रृंखला) ॐ भू: गोपालनाथ जी को आदेश। सिद्ध गोपालनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६८- (पश्चिमवायव्याम) ॐ भू: लधाईनाथ जी को आदेश। सिद्ध लधाईनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६९- (वायव्य मध्ये भद्रे)) ॐ भू: अल्लमनाथ जी को आदेश। सिद्ध अल्लम नाथ जी आवाहन स्थापयामी।

७०- (उत्तरामध्ये वायव्यादी) ॐ भू: सिद्धपादनाथ जी को आदेश। सिद्ध सिद्धपादनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७१- (ईशान्याम्) ॐ भू: अडबंगनाथ जी को आदेश। सिद्ध अडबंगनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७२- (तत्पूर्व) ॐ भू: गौरवनाथ जी को आदेश। सिद्ध गौरवनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७३- (अग्नेय खण्ड़ेन्दौ) ॐ भू: धीरनाथ जी को आदेश। सिद्ध धीरनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७४- (नैऋत्य मध्ये) ॐ भू: सोहिरोबानाथ जी को आदेश। सिद्ध सोहिरोबानाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७५- (पश्चिम मध्ये) ॐ भू: प्रौढ़नाथ जी को आदेश। सिद्ध प्रौढ़नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७६- (तद वायव्या मध्ये उत्तरे) ॐ भू: गरीबनाथ जी को आदेश। सिद्ध गरीबनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७७- (तद्उत्तरे) ॐ भू: कालनाथ जी को आदेश। सिद्ध कालनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७८- (ईन्द्र ईशान्याम्) ॐ भू: धर्मनाथ जी को आदेश। सिद्ध धर्मनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७९- (सोम मध्ये अग्नेय) ॐ भू: मेरुनाथ जी को आदेश। सिद्ध मेरुनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८०- (नैऋत्य खण्ड़ेन्दौ) ॐ भू: सिद्धासननाथ जी को आदेश। सिद्ध सिद्धासनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८१- (वायव्य मध्ये भद्रे) ॐ भू: सूरतनाथ जी को आदेश। सिद्ध सूरतनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८२- (ईशान्य मध्ये) ॐ भू: मार्कण्ड्येयनाथ जी को आदेश। सिद्ध मार्कण्डेयनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८३- (सोम वायव्या मध्ये) ॐ भू: मीननाथ जी को आदेश। सिद्ध मीननाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८४- (उत्तरे मध्ये वायव्याम) ॐ भू: काकचण्डीनाथ जी को आदेश। सिद्ध काकचण्डी नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

प्रधान कलश स्थापना-पूजन

सर्वतो महा रुद्र नौनाथ चौरासी सिद्ध चक्र के अग्र भाग में प्रधान कलश स्थापना करें।

प्रथम धर्ती पर गंगा जल छिड़के :-

धर्ती पर जल छिड़कने का मन्त्र—सत नमो आदेश। ॐ गुरुजी। विष्णु जी धर्ती पर जल छिड़काया। कूण्डा बिठाया। सुनो बाला का ध्यान। जिन्हा ने पाया सतगुरा से बाला ज्ञान। जले बाला, थले बाला—रुखे बाला वृक्ष बाला बाला तपे बाला—गढ़ मण्डल में धर्मशाला। पाँच महेश्वर गुरु गोरक्षनाथ बाला। कलयुग मध्ये हनुमन्त बुलाया। बाये हाथ पुस्तक दाहिने हाथ माला। रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अत: गौ गोबर से धरत्री का लेपन करें।

लेपन मन्त्र—ॐ गुरुजी। प्रथम सत्य, सत्य पर धर्म—धर्म पर नीर, नीर पर क्षीर, क्षीर पर सुरा, सुरा पर राई जिस पर गुरु गोरक्षनाथ जी ने सात द्वीप नवखण्ड पृथ्वी ठहराई। धीरे कैलाश कूचा किना नाम गुसाई तेरा लिन्हा मिली सूरत तैंतीस करोड़ देवता ॐ सोहं गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अब गौ गोबर से चौका बनवाकर मन्त्र पढ़ें और चारों कोनों में चार सुपारी रखें।

चौका देवे का मन्त्र—ॐ गुरुजी। गाय गोबर—गंगा जल पाणी महेश्वर मिल ईश्वरी आनी। आसन बैठों घट पट राणी, बुद्धि विनायक बैठों आई चौका देवे ऋद्ध सिद्ध आनन्दी माई। श्रीनाथ गुरु जी को आदेश।

तदनन्तर चौका के चारों दिशा में भभूत की पूर्ण चौक रेखा बनावें तथा निम्न मन्त्र पढ़ें।

चौका पूरणे का मन्त्र—सत नमो आदेश। ॐ गुरु जी! जब न थी धर्ती तब काहे का पाट, जब न थी सकल गत तब काहे का ठाठ? जब न थी रुप न रेखा तब काहे की पादुका, जल न थे चाँद न थे सूरज तब काहे की साख? जब न था अलील तब काहे की पायल, जब न था अन्न तब काहे की कौली? कौन सा थावट, कौन सा बीज? कौन शब्द से बान्धी धीर, कौन कामिन कलश ले आई? कौन पुरुष ने जुमला जगाया, कौन शबद से थावर बनाये, कौन शबद से अंग लगायी? कहे गोरक्षयती सुनो सकल गति पाणी

गया कौन सी गती, काहे का गोबर काहे का पाणी, चौक पूर्णया कौन सी रानी। जब न थी धर्ती तब सूरत का था पाट? जब न थी सकल गत तब पांच तत का था ठाठ, जब न थी रुप रेखा तब थी स्वास की पादुका, जब न थे चांद न थे सूर्य तब थी धर्म की साख, जब न था अलील तब थी अभी की पायल। जब न था अन्न तब दूछा की कौली, बस्ता बस्तावर बाढ़चा बीज। अनहद शब्द से बान्धी धीर सुरत सुवासिन कलश ले आई, अलख पुरुष ने जुमला जगाया, गुरु शब्द से थावर बनावे, गुरु शब्द से अंग लगावे। कहे गोरक्षजती सुनो सकल गति पाणी गया परलोक गती? गाय का गोबर गंगा का पानी चौक पूरीया कमला पट राणी पूरिया चौक मिली बधाई। रक्षा करे आदि शक्ति महामाई। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

तदनंतर पात्र कलश स्थापित करें, पात्र कलश सुवर्ण, चांदी, तांबे का उपलब्ध ना हो तो मृतिका पात्र (घट) स्थापना करें, प्रथम पात्र आसन मन्त्र पढ़कर पात्र कलश को आसन देकर रखें।

पात्र आसन मन्त्रः- ॐ गुरुजी ! धर्ती हमारी पात्र बोलिये। आकाश हमारा थाल। सत्य शब्द अगम भिक्षा ओमकार का ढाल। कलश थापे जती गोरखनाथ। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः पात्र में गंगाजल या समुद्र जल या नदियों का संगम जल निम्न मन्त्र द्वारा भरें।

जल पूरणे का मन्त्रः- ॐ गुरुजी। अलष पुरुष ने आज्ञा दीनी। सात समुंदर निर। कलश पूरो फल मिलायो। आवो हनुमन्त बीर। पांच महेश्वर आज्ञा दीनी कलश पूरे श्री गुरु गोरक्षनाथ जी पीर। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः कलश के ऊपर पंच पत्र (पल्लव) और नारीकेल फल चढ़ावें, पंच पत्र (पल्लव) आम के या बड़ वृक्ष या खाने वाले पान के लेवें। निम्न पंच पल्लव मन्त्र पढ़कर कलश पर चढ़ावे।

पंच पल्लव :- सत नमो आदेश । ॐ गुरुजी। ॐ पंच पल्लव प्रमाण भूले चूके अक्षर बखशे गुरु मेहरबान अलख पुरुष का ॐकार नाद पंच

पल्लव कोट बान्धा चौसट योगनि खेले संगा बावन पीर खेले साथ तले धर्ती ऊपर आकाश पिण्ड प्राण सूरज निरत सतगुरा के पास। पांच महेश्वर आज्ञा दीन्ही पल्लव चढ़ाये हनुमन्त वीर। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

अतः श्री फल चढ़ावें।

श्री फल का मन्त्र :- ॐ गुरु जी पीर जी बोले एक ओंकार योगन मन में किया विचार अक्षद श्रीफल कर पर धरे नीचे से पर्वत ऊपर से चीन्हा कहे महादेव अनन्तकोटी सिद्धों ने दीन्हा श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

अतः अक्षदा चढ़ावें।

अक्षद बरसाने का मन्त्र :- ॐ गुरुजी बरसे करसे कलश के गौरा गणेश के हाथ अलख निरंजन माई का बाल। निपजे धरत्री बरसे आकाश पांच तत का भया प्रकाश। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

तत्पश्चात तिलक लगाये।

तिलक सिन्दूर मन्त्र :- ॐ गुरुजी सिन्दूर सिन्दूर महा सिन्दूर सिन्दूर कहा से आया, कौन लाया, कैलाश पर्वत से आया गौरी पुत्र गणेश लाया। कौन कारण लाया। माता कारण लाया। किस मस्तक चढ़े, शिव शक्ति के मस्तक चढ़े। तिलक चढ़े भया प्रकाश, तारा त्रिकुटा तोतला तीनों वसे कपाल। मस्तक तिलक सिन्दूर का साधु संत रहे निहाल। पढ़ मन्त्र सिन्दूर लगावे सो योगी अमरापुर जावे। बिना मन्त्र सिन्दूर लगावे ऐसा डुबे थाह न पावे। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः कलश देवता को भगवा वस्त्र चढ़ावे।

भगवा चढ़ाने का मन्त्र :- सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सों धुन्धुकारां शिवशक्ति ने मिल किया पसारा नख से चीर भग बनाया-रक्त रुप में भगवा आया। अलष पुरुष ने धारण किया तब पीछे सिद्धों को दिया। आवो सिद्धों धरो ध्यान भगवा मन्त्र भया प्रमाण इतना भगवा मन्त्र सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरुजी का आदेश।

अतः साधक ने कलश के ऊपर नाथ जनेऊ (नादी पवित्री ई०) सह चढ़ावे।

नाद जनेऊ चढ़ाने का मन्त्रः- सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी आदि में शून्य, शून्य में ओंकार आवो सिद्धों नाद बिन्द का करो विचार। नादे चन्द्रमा नादे सुर्य नाद रहा घट पिण्ड भरपूर। नाद कायाका पेखना । बिन्द काया की राह। नादे बिन्दे योगिया तीनों एक स्वभाव। बाजे नाद भई प्रतीत आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अतीत। नाद बाजे काल भागे ज्ञान टोपी गोरक्ष साजे, डंखनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्दाई बाड़े घाटे टल्ल जागे। सुन सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई । टिल्ला शिवपुरी का स्थान: चार युग में मान- मूल चक्र मूल स्थान, पढ़ मन्त्र योगी नाद बजावे, ३६ भोजन अमृत कर पावे । बिना पढ़े योगी नाद बजावे, तीन लोक में कही ठौर न पावे। जो जाने नाद बिन्द का भेव-आप ही कर्ता आप ही देव। संध्या शिवपुरी का बेला-अनन्त कोटी सिद्धों का युग युग मेला इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी को आदेश।

अत: साधक ने कलश के ऊपर मृतिका के कुण्डल (मुद्रा) अर्पण करें।

कुण्डल चढ़ावे का मन्त्र :- ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नाद सोहं मुद्रा कौन मुद्रा खेचरी बोलिये, कौन मुद्रा भोचरी बोलिये। कौन मुद्रा धरे ध्यान। कौन मुद्रा कथे ज्ञान ! ताम्बे की मुद्रा खेचरी बोलिये । स्फटिक की मुद्रा भोचरी बोलिये। गेण्डे की मुद्रा धरे ध्यान, मृतक की मुद्रा कथे ज्ञान। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के कान। नीचे धरती के ऊपर आकाश । रक्षा करे दादा मत्स्येन्द्र नाथ। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश।

अत: साधक ने कलश समीपे गौघृत दीपक लगावे और धूप लगावे।

कलश ज्योत लगाने का मन्त्र :- सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश। ॐ सोहं ज्योत जगाये जय ओंकारा। कलश मध्ये ज्योत भई प्रकाशा। रक्षा करें श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश।

इस प्रकार पूजन होने पर निम्न मन्त्र पढ़कर कलश की स्थापना करें अर्थात अक्षदा छोड़े।

कलश स्थापना का मन्त्र—ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि शक्ति ले आगे खड़ी। आदि कमल के कुम्भ पर धरी तले बैठे ब्रह्मा, कन्ठ बैठे रुद्र, मुख पर बैठे महाविष्णु शक्ति बैठी दो कर जोड़ देव मुण्डे ३३ करोड़ बहे गंगा बहे जमना बहे सरस्वती। कलश थाप्या निरन्जन जती अखा तरे तिसकी रक्षा श्री शम्भुजती गुरु गारेक्षनाथ जी करे। तार—तार माता तारिणी—सकल दुख निवारणी। पंच पाण्डव छटी तलाई धर कर कलश थाप्या आदशक्ति महामाई। थर्पे धर्ती थर्पे आकाश थरपे सुमेर मण्डल कैलाश। कलश थापे रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला। इतना कलश स्थापना मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्रीनाथ जी गुरुजी को आदेश।

अत: साधक कलश देवता को आदेश नमस्कार करें।

कलश देवता को नमन—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कलश देवता तुम्हें आदेश। हृदय तन लगाय। सद्गुरु पुरा मिलया जिन मार्ग दिया बताये। शिव पूजूँ शक्ति पूजूँ पुजूँ गुरुजी के पाव, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू कलश देवता के पांव। श्रीनाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: साधक योगेश्वर निम्न चक्र घट स्थापन का पाठ करें।

चक्र घट स्थापन पाठ

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदि घट बोलिये। अनादि घट बोलिये। अनहद पात्र बोलिये। चौसठ योगनी, बावन बिर ब्रह्मा महेश्वर दीठ। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर राख असंख्य युग थापले घट पात्र श्री शम्भूजती गुरु गोरखनाथ। घटे धर्ती—घटे आकाश घटे चंद्र, घटे सूर्य, घटे नदी भरे भरपूर। चक्र धर्ती चक्र आकाश, चक्र ले किया प्रकाश। जागी ज्योत भागी छोत चार दिशा भया उजियाला चक्र बैठ श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष बाला सतरा लाख अठ्ठाईस हजार सतयुग का प्रमाण बोलिये। बत्तीस हाथ का नर बोलिये। अठारह हाथ का खड़ग बोलिये, अनुमान लोहे का बोलिये। अम्बर धार छुरी जौ प्रमाण चीरा बोलिये। सुन कौन बोलिये।

माता मंगला देवी बोलिये । सोने का प्याला गज हस्ती का निश्चला बोलिये । अवतार कौन-कौन बोलिये , मच्छा, कच्छ, वराह नृसिंह उत्तर दिशा भया नारदा, शारदा देवी का ॐ कारा, नीला घोड़ा, नीला पलाण तिस पर गरुड़जती असवार, आवो आवो भाई ले आवो कामना ले आवो करो कमाई । ध्यान देश में मुक्ति पाई सोने का आसन सोने का सिंहासन, सोने की नादी, सेली सिगीं- भस्मी का निवाला की जीये । सकल स्वामी जी बरसों ओंकार चेते गत गंगा पूजे सकल संसार ॥१ ॥

बारह लाख छ्यानवे हजार त्रेता युग का प्रमाण बोलिये, अठारह हाथ का नर, पंद्रह हाथ खड़ग बोलिये । कौन-कौन अवतार बोलिये । वामन ,परशुराम , श्री राम बोलिये । दक्षिण दिशा का भया हुंकारा, तुलजा देवी का ओंकारा श्वेत घोड़ा, श्वेत पलाण -जिस पर भैरों जती असवार ! आओ भाई करो कमाई -ध्यान देश में मुक्ति पाई । रुपे का पात्र , रुपे का छत्र , रुपे का आसन ,रुपे का सिंहासन ,रुपे की नादी सेली सिंगी । गोमती गंगा का नीर पुरीजे, सकल स्वामी जी बर्सो ओंकार चेते गत गंगा, पूजे सकल संसार । ।२ ॥

आठ लाख चौसठ हजार द्वापर युग का प्रमाण बोलिये । नव हाथ का नर सात हाथ का खड़ग बोलिये । कौन कौन अवतार बोलिये । श्री कृष्ण ,भगवान बुद्ध अवतार बोलिये । पूर्व दिशा भया हुंकारा कामांक्षा देवी का ओंकारा लाल घोड़ा, लाल पलाण ,तिस पर हनुमान जती असवार । ताँबे का पात्र, ताँबे का छत्र, ताँबे का आसन ,ताँबे का सिंहासन, ताँबे का नादी ,सेली सिंगी यमुना का नीर पुरीजे । सकल स्वामी जी बरसो का ओंकार, चेते गत गंगा पूजे सकल संसार ॥३ ॥

ॐ चार लाख, बत्तीस हजार कल्युग का प्रमाण बोलिये । साडे तीन हात का नर डेढ़ हाथ का खड़ग बोलिये । कौन कौन अवतार बोलिये । निष्कलंक कल्कि बोलिये । पश्चिम दिशा भया हुंकारा, हिंगलाज देवी का ओंकार, काला घोड़ा काला पलाण-तिस पर चढ़ें अलख पुरुष निर्वाण ।आवो भाई करो कमाई ध्यान देश में मुक्ति पाई । माटी का पात्र, माटी का छत्र,माटी का आसन, माटी का सिंहासन, माटी की नादी सेली सिंगी । गंगा जल का नीर पुरीजे, सकल स्वामी जी बरसों ओंकार, चेते गत गंगा पूजे सकल संसार ॥४ ॥

एता चार जुग की घट स्थापना नाद मुद्रा सेली सिगी पात्र लाल पांच मोहरा पांच दक्षणा श्रीनाथ जी के चरण पदुका । जो नर सुन घट स्थापना पठन्ते । सो नर मोक्ष मुक्ति को लभन्ते ।

इतना चक्र घट स्थापना पाठ सम्पूर्ण भया । श्रीनाथ जी को आदेश ।

ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश । दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी को आदेश ।

अतः नवनाथ नाम स्वरुप का पाठ करें ।

नवनाथ नाम स्वरुप जाप

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ कार आदिनाथ ॐ कार स्वरुप बोलिये । उदयनाथ पार्वती धरती स्वरुप बोलिये । सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल स्वरुप बोलिये । सन्तोषनाथ विष्णु जी खण्ड-खाण्ड तेज स्वरुप बोलिये । अचल अचम्भेनाथ आकाश स्वरुप बोलिये । गजबेली गजकंथडनाथ गणेशजी गज हस्ती स्वरुप बोलिये । ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ अठारह भार वपस्पती स्वरुप बोलिये । माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी माया स्वरुप बोलिये । घटे पिण्डे नव निरन्तर-रक्षा करन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाल स्वरुप बोलिये । इता नवनाथ नाम जाप सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

तदनंतर चौरासी सिद्ध गायत्री पाठ करें ।

चौरासी सिद्ध गायत्री-पाठ

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ गंगा गोदा अनुपान शिला , सुमीर बैठे गुरु गोरख बाला । अनभय पंथ अनन्तशाखाः ऋद्धि-सिद्धि सिद्धांका मेला । ॐकार आदिनाथ तां अनुपम शिष्य; माया मछन्दर जालन्धर शिष्य । सनक सनातन सनन्द सिद्ध सनत्कुमार मार्कण्डेयजी सिद्ध । मिन सिद्ध सिद्ध विरुपाक्ष ! सिद्ध शृंगेरीपा चोली घोड़ा शिष्य । माया पार्वती उदयनाथ सिद्धः शिलनाथ टिण्डीनी योगी सिद्धः कानपा उत्पत्ति गजकर्ण-गजकंथड़नाथ । इनकी कथनी करनी वज्र काया भ्रवर

गुफा अमिरस प्याला रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला ॥१ ॥

ॐ मछन्दर पूता गोरक्ष सिद्ध, मन्जु-तारा शाबर सिद्ध। सिद्धासन सिद्धः कालनाथ सिद्ध, प्रभुदेव ता प्रकाशनाथ शिष्य। नारदा-शारदा ता परमानन्द शिष्य, गौरवनाथ जी का मेरु सिद्ध सन्तोषनाथ विष्णु जी गोपाल सिद्ध। अचल अचम्भेनाथ शेष सिद्धः सत्यनाथ ब्रह्माजी जलरुप सिद्ध। इनाकी योग जुगती सान्धे काया। काल लागे ना लिपै माया। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला ॥२ ॥

ॐ जती गोरख आप विराजे। अपना गुरु आपै चेले। कनकाई-भुसकाई-बाल गुन्दाई; बालकनाथ, सार-स्वताई। राजा भर्तृहरि गोपीचन्द सिद्ध भर्तृहरि बैराग कायनाथ सिद्ध मुनि कपिल धून्धली सिद्ध। बिरंबक सिद्ध लधाई सिद्धः भूचर खेचर हवाई सिद्ध। ब्रह्माई-नरमाई-मस्तनाथ सिद्ध श्रुताई-भगाई-मनसाई सिद्ध। सहजाई सिद्ध काकचंण्डी सिद्ध । लंका, रावण-राजा राम सिद्ध । गेहल्ला रावल गोरनाथ सिद्ध दया-दरिया सुखदेव सिद्ध : अल्लम-मल्लक अड़बंग सिद्ध। एकनाथ, औघड-वरदा सिद्ध ,रतन नाथ जी का कोरन्ट शिष्य। सिद्ध पूरणमल चौरंगी सिद्धः नागार्जुन नागा मानिक सिद्ध। गैनी-निवृति-ज्ञानदेव सिद्धः सिद्ध चर्पट,सोहिरोबा सिद्ध। च्रक्रनाथ ,वक्रनाथ-सूर्य सिद्धःभद्रनाथ-मद्रनाथ -चंन्द्र सिद्ध। नाथ निरंन्जन सिद्धपाद शिष्यः पीर सत्यनाथ याज्ञवाक शिष्य। सिद्ध बुद्ध- बिलेशाय सिद्ध, धीर-वीर-पिप्पलनाथ-सिद्ध। बाल-प्रौठ-जम्भ-सुरानन्द सिद्ध देव-धर्म-गरीबनाथ सिद्ध, इनकी ज्योत से ज्योत भया प्रकाशा चौरासी सिद्धां भया उजियाला गोरख कहे निरन्तर मेला-योगी जागों-योग जगाना, अपना माही आप ही प्रगटया गुरु शब्द अनहद बाजा रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला। इतना नवनाथ चौरासी सिद्ध नाम लेते जाप जयन्ते, जल में अग्नि प्रगटेः अग्नि में अम्बर बरसे, अम्बर में वायु उड़ें, बिना पंख योगी उड़ें यही योगी जल ऊपर तरे, यही योगी अग्नि मैं ना जले। जिसकी रक्षा शम्भुजती गुरुगोरख नाथ जी करे। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

तदनन्तर साधक ने "प्राण गायत्री" पढ़कर और कलश के ऊपर जल छिड़क कर प्राण प्रतिष्ठा करें।

प्राण गायत्री मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ अपरम्पार-अपरम्पार में बह्मपार-ब्रह्मपार में गिरी कैलाश। कैलाश पर गगण मण्डल छाया, ज्योत से त्रिकुटी भई सोंह से मार्ग पाया। कैलाश में महादेव पार्वती ने किया निवासा। प्राण गायत्री का भया प्रकाशा। ॐ गुरुजी कौन पुरुष ने बान्धी काया: कौन डोर से हंसा आया। कौन कमल से संसार रचाया: कौन कमल से जीव का वासा। कौन कमल से निरन्जन निराई, कौन कमल मे फिरी दुहाई। कहो सिद्धों असंख्य युग की बात नही तो धरो सब ठाठ बाट। ॐ अलष पुरुष ने बान्धी काया: बेगम - डोर से हंसा आया। नाभी कमल से संसार रचाया। हृदय कमल से जीव का वासा। कुन्ज कमल में निरंन्जन निराई:त्रिकुटी महल में फिरी दुराई। कौन के हम शिष्य कौन हमारा नाम। कौन हमारा इष्ट हैं। कौन हमारा गाँव ? शबद के हम शिष्य हैं। सोंह हमारा नाम प्राण हमारा इष्ट हैं। काया हमारा गाव। ॐ सों हसांय विद्महे प्राण प्राणाय धीमही तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात। इतना प्राण गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अन्त में यथालब्धोपचार पूजन करें।

इतना प्रधान कलश स्थापन-पूजन समाप्त।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

ॐ नमो शिवाय:।

***

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र निर्माण

विधि—प्रथम साधक प्रधान कलश के समीप इस यन्त्र का निर्माण करें। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की प्रतिमा सुवर्ण—चान्दी—ताम्र—अष्ट धातु—चन्दन इ० या तसबीर या चरण पादुका या निरमुख या ९ मुख वाला, एक मुख वाला रुद्राक्ष अन्यथा कुछ भी उपलब्ध नहीं तो एक छोटी सुपारी श्रीनाथ जी के नाम स्वरुप यन्त्र के बीचों—बीच केन्द्र बिंदु के ऊपर स्थापन करें। जहां "ॐ" लिखा है। उसके ऊपर त्रिकोनाकृति सद्गुरु यन्त्र अपने सत्गुरु जी के प्रति बनावें, इसके बाहरी भाग में एक चौकड़ा में स्वास्तिक ४ गुरु जी की स्थापना प्रति निर्माण करें। उसके बाहरी भाग में त्रिशक्ति प्रति एक त्रिकोन निर्माण करें। उसके ऊपर बाहरी भाग में ९ त्रिकोन का वृत्त ९ दुर्गा, १८ सिद्ध योगिनी के प्रति निर्माण करें। इसके बाहरी भाग में तथा दस दल का वृत्त दस महाविद्याओं के लिये बनावे। इसके बाहरी भाग में ९ पखंडी वाला वृत्त ९ नाथजी के प्रति निर्माण करें। इसके ऊपर बाहरी भाग पर ८४ पंखडी वाला और एक वृत्त ८४ सिद्धों के प्रति बनावे। इस वृत्त के ऊपर बाहरी भाग पर २४ पंखडी वाला वृत्त २४ सिद्धियों के लिये बनाये। इस वृत्त के बाहरी भाग पर शेष रुपी २८ भागों में सर्पाकृति कुण्डलिनी वृत्त निर्माण करें तथा सर्प मुख से २१ शून्य (ब्रह्माण्ड) ज्योति स्वरुप तक तथा सर्प के पूंछ से (मूलाधार) गणेश प्रति एक स्वास्तिक निर्माण करें और इसके बाहरी भाग में चारों कोण चौरस निर्माण करें और ४ द्वारा ४ दिशा में निर्माण करें तथा यन्त्र में दर्शित स्थान पर रंग भरें।

इस प्रकार यह यन्त्र सुवर्ण, चान्दी, ताम्र या भोज पत्र पर बनायें। भोज पत्र पर अष्टगंध अथवा केसर के श्याई से वटवृक्ष डाली या कन्हेर या अनार के कलम से या बिल्वपत्र डाली के कलम से बनावे, १००८ बार बनावे गंगा पूर्व मुख बहते जल में छोड़ें (अमावस्या, पूर्णिमा, सूर्य, चन्द्र ग्रहण, होली, दीपावली की अमावस्या, नवरात्री गुरु पुरुषामृत पूर्णिमा) इस समय से सिद्ध करें तब यह यन्त्र सर्व कार्य सिद्धि प्राप्ति बनता है।

अतः पूजा हेतु सफेद वस्त्र पाटला या चौकी के ऊपर बिछाकर उसके

ऊपर यन्त्र का निर्माण करें तथा मन्त्रों द्वारा आवाहन पूजन, हवन करें। साधक यम नियम पूर्वक और गुरु सानिध्य साधना परांगत इस यन्त्र को विधिवत पूजन करने से मुक्ति पद को प्राप्त हो जाता है। सभी संकट निवारण होने के लिये यन्त्र घर–मकान–मठ–मन्दिर में, गले में, जेब में रख सकते हैं। यह सब कार्य सिद्ध है। यह यन्त्र का चित्र (नक्शा) एवं कार्य विधि ग्रंथ के अंतिम पृष्ठ पर दिया है।

अत: साधक नाम सिद्ध पीठ (तीर्थ) पूजन करें तथा आदेश करें।

नाथ सिद्ध पीठ (तीर्थ) पूजा–पाठ

प्रथम साधक (पुजारी) धूनी कुण्ड से पात्र में भभूत लेकर भभूती मन्त्र से अभिमंत्रित करें। तदनन्तर गुरु मन्त्र द्वारा सर्व दिशा को भभूत को फूंक मार के आदेश करें।

अत: निम्न पीठ स्थानों के नाम लेकर यन्त्र ऊपर अष्टगंध मिश्रित अक्षदा छोड़ें।

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आदि सिद्धपीठ शिव–शक्ति धाम, कैलाश गिरि मान सरोवर को नमो आदेश। ॐ सिद्धपीठ क्षीर सागर डोंगी सौम्य श्रृंग स्थान दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी को आदेश।

अत: यन्त्र के पूर्व दिशा में निम्न स्थानों पीठों का नाम लेकर अक्षत छोड़ें।

ॐ सिद्ध पीठ गोरखपुर (तपस्थली) को नमो: आदेश ॐ ईरावती नदी क्षेत्र में श्रीनाथ पादुका तथा श्रीनाथ कर्ण छेदन स्थान को नमो आदेश। ॐ पाटलीपुत्र पीठ पर पिप्पल नाम पेड़ में श्री नाथासन को नमो आदेश। ॐ काशी क्षेत्र गोरख टिल्ला को नमो आदेश। मन्दाकिनी पुष्करिणी स्थान १२ पन्थी काल भैरव को नमो आदेश। ॐ वंग देश आदिनाथ योगावटी को नमो आदेश। ॐ विशालक स्थान मां बिमला देवी को नमो आदेश। ॐ महानाद स्थान काक रुपी शिव को नमो आदेश। ॐ उड़ीसा कुण्ड स्थान गुरु गोरक्षनाथ, सिद्धनाथ स्वरुप को नमो आदेश। ॐ काली स्थान गोरक्षवंशी के ग्राम में भस्म भूषन गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश। ॐ गोरक्ष

श्री नाथ सिद्ध यंत्र का कार्य,

१. श्री नाथ सिद्ध यन्त्र के प्रति पूर्ण विश्वास, श्रद्धा एवं भक्ति होना अनिवार्य है।

२. स्थान में स्थापित यन्त्र का पूजन पृष्ठ सं० १०३ के अनुसार करें या संक्षिप्त पंचोपचारे या शोडोषचारे पूजन करके यन्त्र सन्मुख अपने गुरु मन्त्र या "ॐ शिव गोरक्ष योगी" इस बीज मन्त्र का या अपने इष्ट देवी-देवताओं का या इच्छित कार्यानुसार लिए हुए मन्त्र का जप कम से कम १०८ बार या इच्छानुरूप ज्यादा समय करें। ऐसा नित्य नियम करने से यन्त्र महाचेतन होकर शीघ्र फल देगा।

३. इस यन्त्र में सभी देवी-देवता एवं नाथ सिद्ध अधिष्ठित हैं। इसलिये यह यन्त्र किसी भी देवी देवता, सिद्ध महात्माओं के पूजन हवन या उत्सव में स्थापना कर पूजन कर सकते हैं। उदाहरण-नाथ सिद्ध नवनाथ पाठ-पूजन, नवदुर्गा (दश महाविद्या) नवरात्री तथा गुरु गोरक्षनाथ पूजन (गोरक्ष जयन्ती) तथा अन्य समाधि पूजन, गणेश पूजन (उत्सव) होली-दशहरा-दीपावली (लक्ष्मी पूजन) सोमवती अमावस्या, पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, श्रावण मास, चार्तुमासादि सब व्रत विधि में तथा भैरव (भैरवाष्टमी), काली, तन्त्र पूजन, सिद्धि विधि में, रामायण पाठ, श्रीमद् भागवत पाठ, गीता-ज्ञानेश्वरी पाठ, शिव पुराण नाथ पुराणादि सभी पुराण पाठों में तथा किसी भी हवन विधि में स्थापन करने से यथा योग्य फल प्राप्त कर देगा।

४. इसमें अस्त्र, शस्त्र, क्षेत्रपाल, रक्षपाल, कोटवाल, दस महाविद्या, नाथ सिद्ध जोगन इत्यादि महाशक्तियों का अनुष्ठान होने से तन्त्र-मन्त्र साधना एवं सिद्धियां, शक्ति साधना को पूर्ण सुरक्षा एवं शुभ फल तथा पूर्ण सुयश होता है।

५. खास अनुष्ठान, तपस्या, सिद्धि प्राप्ति देवी देवता, सिद्ध महात्माओं के दर्शन अनुभूति इत्यादि के लिए भी यह यन्त्र सुयश देगा।

६. इस यन्त्र में सर्व सिद्धियां एवं कुण्डलिनी चक्रों के अधिष्ठित देवी-देवताओं का अनुष्ठान होने से साधक यन्त्र स्थापन सन्मुख योग साधना, हठयोग, चक्र जागृति, कुण्डलिनी योग, ध्यान धारना समाधि सिद्धि प्राप्ति, जप-भजन इत्यादि कर्म साधना में शीघ्र लाभ एवं अनुभूति देता है तथा साधक ज्योति दर्शन ज्योति स्वरूप ब्रह्माण्ड भ्रमण इत्यादि का भी अनुभव आता है।

७. साधना में या शुभ कार्यों में, काम, क्रोध, मत्सर सताते होंगे तो ६ मुट्ठी भस्मी से यन्त्र का अभिषेक करें और वह भस्मी सर्वांग लेपन करें या माथे पर बाहु वक्षस्थल, नाभि स्थान, हाथ-कलाई इत्यादि पर भस्म त्रिपुण्ड लगाकर कर्म करें शुभ कार्य सफल होगा आध्यात्मिक अनुभूति होगी तथा भूत प्रेतादि अनिष्ट विद्या सताती हो तो यही भस्मी जल में प्राशन करें और उपरोक्त शुभ दिन तथा उपरोक्त (पृष्ठ सं० १०३ के अनुसार) विधि कर ७ मिस्र मिठाई सवा किलो कच्चा या पक्का रोट का भोग लगावें उद, गुग्गल धूप दीप से पूजन एवं

विनियोग, अनुभव एवं चित्र

गुरु मन्त्र से जप करे बाहरी बाधा अनिष्ट संकट टल जायेगा। विशेषतः यन्त्र के मन्त्रों से हवन करें तो शीघ्र प्रभाव पड़ेगा

८. यह यन्त्र मठ मन्दिर आश्रमों दुर्गा-दरबार में तथा घर के पूजा स्थान में, दुकान, गाड़ी-वाहनों में, चलते-फिरते व्यवसाय में शुद्ध स्थान, शुद्ध स्वरूप में रखें अवश्य लाभ होगा।

९. कोर्ट-कचहरी कार्य, किसी से महत्वपूर्ण कार्य बातचीत, चर्चा हो, सम्मेलन, स्पर्धा, सत्संग, लेन-देन व्यवहार तथा सम्बन्धी संवाद तथा स्कूल-कालेज के विद्या अभ्यास में यह यंत्र अपने जेब में या बैग में रख सकते हैं। अवश्य कार्य फल-लाभ देगा।

१०. अगर कोई जटिल समस्या या प्रश्न हो जिसका कोई हल नहीं है तो रात्री सोने से पूर्व इस यन्त्र को वह समस्या का (हल) जबाब पूछकर एवं प्रार्थना कर अपने सिरहाने में रखकर सोयें रात्री में स्वप्न या दृष्टान्त में वह जरुर जबाव देगा। इसमें कम से कम ७ या ९ दिन (रात्री) का अवकाश होगा।

११. अगर कोई बीमार हो तो इस यन्त्र के अभिषेक का जल या पंचामृत उन्हें पीने को दो बीमारी ७ से ९ दिन में ठीक हो जायेगी।

१२. घर में कलह, अशान्ति हो तो यन्त्र मन्त्रों से (विशेषतः शनिवार को) अभिषेक कर शान्ति हवन करें तो शान्ति अवश्य होगी।

१३. समृद्धि के लिये घी या पायस (खीर) से अभिषेक, हवन करके सबको प्रसाद रूप में खाने में दो समृद्धि आयेगी।

१४. शुभ मंगल कार्यों में अत्तर या गुलाब जल का उपयोग करें।

१५. यन्त्र हमेशा सुरक्षित एवं पवित्र स्थान में रखें।

१६. मांस-मछली, मीट, शराब पूर्ण निषेध है तथा यन्त्र उपलक्ष में कोई भी अनुचित कार्य या अनुचित संकल्प ना करें। कूटनीति, कपट, संशय नहीं करे अन्यथा यन्त्र अनुचित कार्य करेगा।

सूचना - श्री नाथ सिद्ध यन्त्र ताम्र तथा ताम्र के ऊपर चाँदी लेपन किये हुए छोटे-बड़े आकार में बने बनाये और समयानुकूल मूहुर्त में विधि विधान से सिद्ध किये हुए प्राप्त कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान -

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार

विशेष - उपरोक्त विनियोग नाथ सिद्ध एवं भक्त अनुयायिओं के अनुभव उपरान्त इस द्वितीय संस्करण में विश्लेषण दे रहे हैं।

इति शुभम्

कन्दरा, योगी भवन को नमो आदेश। ३ॐ कामरु देश कामाख्या स्थान श्री नाथ पादुका को नमो आदेश। ३ॐ उत्कल देश पुरुषोत्तम बन को नमो आदेश। ३ॐ नागादेश ३ॐ कारेश्वर जी नमो आदेश।

अतः अग्नेय दिशा में

३ॐ सिद्ध पीठ जगन्नाथ पुरी लंगुली मठ को नमो ओदश। ३ॐ सिद्धपीठ महाकाल पाडा केयार बापा मठ को आदेश।

अतः दक्षिण दिशा में

३ॐ देवमल्लार देश कदली धाम सिद्ध पीठ के ३ १/२ लक्ष भुतो-आलियों को अधिपति तथा १२ योगी पादुका को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ इल्वल क्षेत्र बाल भैरव गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ षोडश मण्डाली स्थान गोरक्ष पादुका को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ गोरक्ष पहाड़, पितामह गिरी स्थान को नमो आदेश। ३ॐ (कर्णाटक) चुंचुनागिरी क्षेत्र, क्षेत्रपाल भैरव को नमो आदेश। ३ॐ कर्णाटक क्षेत्र मिदुंग पर्वत पर गोरख डिबी वारिपात्र को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ-बालाबाटी क्षेत्र बाले रुप गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ सिरीयाण क्षेत्र श्रीनाथ नाद तरु को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ सुनारी भैरव को और पीपल वृक्ष को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ गोदावरी क्षेत्र, अनुपान शिला को नमो ओदश। ३ॐ सिद्धपीठ शवरपाटक्र क्षेत्र तोरण माला स्थान शिव- विवाह को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ खान देश बहाचोपडा स्थान शितलनाथ जी को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ अचलापुर, धवल पर्वत पर महासिद्ध शक्तिपाद-श्रृंगेरीपाद को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ कुडदेश मानतट क्षेत्र नवनाथों के करपात्र कमण्डलु को नमो आदेश। ३ॐ सिद्धपीठ गोदावरी क्षेत्र, इषारा पहाड़ में गोरक्ष धूल कणों से बनाये सोने का पहाड़ को नमो आदेश।

अतः नैवृत्य दिशा में

३ॐ सिद्ध पीठ कदली काल मठ मायारुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथजी के राजपाठ को नमो आदेश तथा कदलि काल भैरवनाथजी को आदेश।

अब पश्चिम दिशा में

ॐ सिद्धपीठ गीरनार पर्वत गोरक्ष मढ़ी को नमो आदेश। ॐ सिद्ध पीठ तोरणमल गोरख टिल्ला को नमो आदेश। ॐ सिद्ध पीठ मरुदेश मारवाड़ जालन्धर नाथजी तिर्थ को नमो आदेश। सूर्यकुण्ड पर्वत पर कणेरी पाद, हरीताली पाद, हाली पाद महा सिद्धों को नमो आदेश। ॐ योगी मेलनाथ को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ कनकाचल पहाड़, जालपा नगरी, श्रीनाथ गुरुकुल को नमो आदेश। तपस्वी मान्धाता नाथ, महातपस्वी राजा मालदेवनाथ तथा रावलनाथ को नमो आदेश। ॐ सिद्धपीठ सौराष्ट्र देश रैवतक पर्वत पर गोरखचोटी, दत्त पर्वत और गोरक्ष कमण्डलु तीर्थ को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ प्रभास क्षेत्र, गोरक्षमढ़ी में (रुक्मिणी कंकण) को नमो आदेश। गोरक्षमढ़ी के मत्स्येन्द्रनाथ जी सिद्ध गुहानाथ स्वरुप गोरक्षनाथ, सिद्ध नागार्जुन नाथ जी चौसठ जोगन को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ द्वारकापुरी नवनाथ ८४ सिद्ध के अग्नि धूनीका को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ कच्छ देश, क्षेत्र धरणीधर महा तपस्वी सिद्ध धूर्मनाथ जी को नमो आदेश। ॐ सिद्धपीठ कन्थकोट ग्राम सिद्ध गजबेली कन्थडीनाथ जी को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ सिन्धुदेश सिद्ध तपस्वी वीरनाथ को नमो आदेश। ॐ सिद्धपीठ द्रुमच प्रदेश श्रीनाथ जी के श्रेष्ट गुहा को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ सिन्धु तट पर धवलगिरी पर माता हिंगलाज देवी को नमो आदेश। यहा के सिद्ध मत्परनाथ जी दत्तात्रय जी ८४ सिद्ध के धूपनी को नमो आदेश। अलील कुंण्ड को नमो आदेश।

अतः वायव्य दिशा में

ॐ सिद्धपीठ ज्वाला जी, कांगड़ा क्षेत्र गोरख डिब्बी ज्वालामाई को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ चुरु क्षेत्र साधूमूख, गोरख मढ़ी को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ चिचेणिक स्थान (अमृतसर) श्री आदिनाथ जी को नमो आदेश। सिद्ध उखाथानाथ जी गुहा, श्री सिद्ध अमृतक नाथक को नमो आदेश।

ॐ सिद्ध पीठ चक्षु कटाक्ष क्षेत्र एक योजन ऊँचा गोरक्ष पहाड़ पर लक्ष्मण नाथ के सिर पर रुद्राक्ष माला को नमो आदेश।

तदनन्तर उत्तर दिशा को

ॐ सिद्ध पावन पीठ, गंगा क्षेत्र हरिद्वार, गोरक्षनाथ मन्दिर भर्तृहरि गुफा को नमो आदेश। भेष बारह पंथ योगी महासभा को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ गान्धार खुराशन देश, सप्तकुण्ड गंगा क्षेत्र श्री नाथासन को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ कैकेय देश सिद्ध रतननाथ, कैलाश भैरव को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ ज़लालाबाद, हिन्दू—तुर्क स्थान को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ पर्शपुर, गोरखटीला नाथ निर्मित जल कूप को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ अटक क्षेत्र, उत्तर गोरख खप्पर को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ गन्धगट—आकाश भैरव को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ गोरक्ष पर्वत, अर्भक रुपी गोरक्षनाद से नारदा शारदा निवारण शक्तिओं को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ चक्षुकाटाक्ष क्षेत्र गोरक्ष सभा को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ राजा दलधर्म के ३ पद ६ ज्योति, श्रीनाथ चरण, नाभी कालरुप, मेहन अगुष्टे जो जल हवा में विलीप होती है तथा तेल सदृश जल कुण्ड को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ दांगा देश, चतुर्घट्ट देश में श्रीनाथ जी का अर्चित पात्र (अर्चित) रक्षक गोरक्ष (पूर्जित उत्तम) को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ गोरक्ष नगरी गोरक्ष स्वरुप शम्भू कंदरा को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ सिसोदीय राज्य—गोरक्ष राज्य लक्ष्मी को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ पाताल भुवनेश्वर की गोरक्ष गुप्त गुफा को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ किरण नगर, गोरक्षटिला, सिन्धु पंचनदी क्षेत्र में योगी कायानाथ समाधि और भर्तृहरि, बाल स्पर्श से बालक जीवित किया जहां १२ वर्ष सिद्ध समुदाय सहित तर्क वितर्क किया। गोरक्षटीला काष्ट से तोड़कर १४ भुवन को हाथ में लेकर घूम रहे तब गोरक्षनाथ मिलने पर वहीं पर्वत रखने की आज्ञा से इस पर्वत को उल्टा रख दिया उस पर ८४ सिद्धों की ८४ चोटी का निर्माण भया। विचारनाथ नाम से योगी भर्तृहरि स्थानापन्न हुये, उस स्थान को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ गौग्राम श्रीनाथ जी गुप्त रूप में ब्राह्मण घर गौवे चरायी इस क्षेत्र के सिद्ध गौरीया विभूति नाम को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ जखवा क्षेत्र (4 युग प्रसिद्ध हैं) जहां भ्रमर नाथजी को नमो आदेश।

ॐ सिद्ध पीठ बानगंगा क्षेत्र योगीबाट, १२ पंथ शासन को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ सारंग कोट क्षेत्र सिद्ध मेहरनाथ, मुद्रीका नाथ-30 हाथ चौर्गिद जल को कौपीन निचोड़कर निकला उस सारंग तीर्थ को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ अटक, मखड्डु स्थान पीर बुद्धिनाथ तथा नदीनाथ को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ मनःकरण ९ नाथ ८४ सिद्ध डिबी को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ कुरुक्षेत्र, सिद्ध दीनानाथ जी को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ तोषाम ग्राम पर्वतीय क्षेत्र, सिद्ध मृदगी पाद के जल कुण्डों को नमो आदेश।

अतः ईशान्य दिशा में

ॐ सिद्धपीठ नेपाल मृगस्थली पशुपति नाथ जी गुरु गोरक्षनाथ (शिव स्वरुप) ९६ करोड़ मेघ माला दबाये आसनारुढ़ गोरक्षनाथ, सिंहलद्वीप से दादा मत्स्येन्द्रनाथ सम्मुख भये। अतः आसन कुछ उठने पर बांये घुटना उठा तब एक मेघ माला निकली डरकर भागी, पुनीत आसन को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ नेपाल देश बारह नगर (१२ पत्तनी) में एक पत्तनी

नगर में मत्स्येन्द्र नाथ जी ने नागकन्या नागजा और मीननाथ का विवाह किया वह मंजूषा को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ कैलाश पर्वत मानस सरोवर को नमो आदेश। शिव शक्ति, सर्व देवी-देवता यज्ञवेदी को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ फरफिंग क्षेत्र गोरक्ष कन्दरा कामधेनु स्तन आकार निर्मल जल धारा को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ कान्तीपुर में नीलवती, शीलवती, पुण्यवती नदी संगम पर कैलाश गिरी ऊपर ३ चरण शिव-मत्स्येन्द्र और गोरक्ष कमल को इस त्रिवेणी चरन कमल को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ देवल गढ़ में गिरीजा देवी राज राजेश्वरी भागीरथी क्षेत्र, वीरपाद नाथ जी के ज्योति को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ नागनाथ जी को नमो आदेश।

अतः साधक अपने पंचगुरु स्थान को गुरु मन्त्र से गुरुजी के नाम से आदेश करें। **रिक्त स्थान में अपने गुरु स्थान तथा गुरुजी का नाम डाले।**

ॐ सिद्धपीठ........स्थान, चोटी गुरुजी श्री योगी.... नाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश।

ॐ सिद्धपीठ........स्थान उपदेशी गुरुजी श्री योगी........ नाथजी को हाथ जोड़कर आदेश।

ॐ सिद्धपीठ........ स्थान भभूती गुरुजी श्री योगी........ नाथजी को हाथ जोड़कर आदेश।

ॐ सिद्धपीठ........ स्थान चिरा गुरु जी श्री योगी........ नाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश।

ॐ सिद्धपीठ........ स्थान बाना (लंगोट) गुरु श्री योगी........ नाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश।

अतः साधक ने शक्ति पीठों को आदेश करें।

ॐ शक्ति पीठ कलकत्ता महाकाली देवी को आदेश। ॐ शक्ति पीठ द्वारिका क्षेत्र महालक्ष्मी देवी को आदेश। ॐ शक्ति पीठ पुष्कर तीर्थ महा सरस्वती देवी को आदेश।

* **पूर्वमध्ये**—ॐ शक्ति पीठ कामरु देश कामाख्या देवी को नमो आदेश। ॐ शक्ति पीठ बंगाल देश विशाल क्षेत्र बिमला देवी को नमो आदेश।

* **अग्नये मध्ये**—ॐ शक्ति पीठ, उड़ीसा प्रान्त भुवनेश्वरी देवी को नमो आदेश। ॐ शक्ति पीठ पाटेश्वरी देवी को नमो आदेश। ॐ शक्ति पीठ काशी, अन्नपूर्णा देवी को नमो आदेश। ॐ शक्ति पीठ लक्षद्वीप होमीयो देवी नमो आदेश।

* **दक्षिण दिशा**—ॐ शक्तिपीठ तुलजा पुर क्षेत्र तुलजा भवानी को नमो आदेश। ॐ शक्तिपीठ गोदावरी क्षेत्र सप्तसृग देवी को नमो आदेश। ॐ शक्ति पीठ कन्या कुमारी नमो आदेश। ॐ शक्ति पीठ सुनरी भैरव क्षेत्र रेनुका देवी को नमो आदेश।

ॐ शक्ति पीठ पाताल लोक महालीला नाग पद्मनी देवी को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ जालन्दर पीठ को नमो आदेश।

* **नैवृत्य दिशा में**—ॐ शक्तिपीठ कोल्हापुर क्षेत्र महालक्ष्मी देवी नमो आदेश। ॐ शक्ति पीठ कदली को (सिंघलद्वीप) महा मंगला पद्मिनी देवी को नमो आदेश।

* **पश्चिम दिशा में**—ॐ शक्तिपीठ प्रभास क्षेत्र रुक्मिणी देवी ६४ जोगिनी को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ सिन्धु क्षेत्र हिंगलाज माता को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ अम्बा जी क्षेत्र अम्बा जी देवी नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ पावागढ़ क्षेत्र काली देवी नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ अहमदाबाद भद्रकाली देवी नमो आदेश।

वायव्य दिशा में

ॐ शक्तिपीठ स्यालकोट तारा त्रिकुटा देवी को नमो आदेश। शक्तिपीठ शेषवाटी स्थान कलापस पहाड़ शाकुम्भरी देवी को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ सौ सोहारोप पीठ को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ जलंदर राणी मयनावती को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ चण्डीगढ़, चण्डी माता को नमो आदेश।

उत्तर दिशा में

ॐ शक्तिपीठ कांगड़ा क्षेत्र ज्वाला जी माता ज्वालाई को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ पाटन क्षेत्र देवी पाटन को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ नहान क्षेत्र दुर्गा काली को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ जम्मू क्षेत्र माता वैष्णो देवी को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ गंगोत्री माता गंगा देवी को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ पाटेश्वरी माता अन्नपूर्ण को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ सीसोदीय राज्य काली का भवन को नमो आदेश।

अब ईशान्य दिशा में

ॐ शक्तिपीठ मृगस्थली क्षेत्र वागीश्वरी देवी को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ ईशान्या क्षेत्र माता मनसा देवी को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ नेपाल देश नागकन्या नागजा को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ फरफिंग माता कामधेनु को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ देवलगढ़ क्षेत्र गिरिजा देवी को नमो आदेश।

ॐ शक्तिपीठ कैलाश, शिवा शक्ति स्वरुप ९ दुर्गा शैलपुत्री ब्रह्मचारिणी देवी, चन्द्रघण्टा देवी, कूष्माण्डा देवी, स्कन्द माता देवी, कात्यायन देवी, कालरात्रि देवी, महागौरी देवी, सिद्धिदात्री देवी को नमो आदेश। ॐ शक्तिपीठ गुरु गोरक्षनाथ तपस्थली दशमहाविद्या–महाकाली, तारा त्रिपुरा सुन्दरी, भुवनेश्वरी छिन्नमस्ता, भैरवी, धूमावती, बगलामुखी मातंगी कमला को नमो आदेश।

इति शक्ति पीठ समाप्त।

अतः नवनाथ चौरासी सिद्धपीठ

ॐ सिद्धपीठ मानस सरोवर ॐकार आदिनाथ जी नमो आदेश।

(ईशान्य में) ॐ सिद्धपीठ कैलाश पर्वत (डोल्मा माता) उदयनाथ पार्वती जी नमो आदेश।

(पश्चिम में) ॐ सिद्धपीठ पुष्कर तीर्थ सत्यनाथ ब्रह्माजी नमो आदेश।

(अग्नेय में) ॐ सिद्धपीठ द्वारिका क्षेत्र सन्तोषनाथ विष्णु जी

नमो आदेश।

(भूमिपर) ॐ सिद्धपीठ पाताल लोक अचल अचम्बेनाथ नमो आदेश।

(पश्चिम में) ॐ सिद्धपीठ कन्थड़कोट स्थान गजबेली गजकंथड नाथ जी को नमो आदेश।

(वायव्य में) ॐ सिद्धपीठ स्यालकोट स्थान सिद्ध चौरंगी नाथ जी को नमो आदेश।

(दक्षिण में) ॐ सिद्धपीठ कदली कोट सिंहलद्वीप क्षेत्र मायारुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी को नमो आदेश।

(पूर्व में) ॐ सिद्धपीठ, पीशोर स्थान, मृगस्थली नेपाल इ० अनन्त कोट स्थान गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश।

(पश्चिम में) ॐ सिद्धपीठ सौराष्ट्र रैवतक पर्वत महापीठ को नमो आदेश।

(दक्षिण में) ॐ सिद्धपीठ त्र्यंबक क्षेत्र गोदावरी तीर अनुपान शिला को नमो आदेश।

(पश्चिम में) ॐ सिद्धपीठ नर्मदा नदी कुंडदेश मानतट क्षेत्र ९ नाथ ८४ सिद्ध करपात्र को नमो आदेश।

(उत्तर में) ॐ सिद्धपीठ कुरुक्षेत्र, चन्द्रभागा नदी क्षेत्र, ८४ सिद्ध सभा को नमो आदेश।

(वायव्य में) ॐ सिद्धपीठ मनःकरण धाम ज्वालामुखी क्षेत्र में ९ नाथ ८४ सिद्ध डिब्बी को नमो आदेश।

इति नवनाथ चौरासी सिद्धपीठ समाप्त।

अतः प्राणपालो के तीर्थ को आदेश करें और अक्षदा छोड़े।

ॐ तीर्थ कलिंग देश **(पूर्व दिशा)** में सूर्य नारायन नमो आदेश।

ॐ तीर्थ जमुना क्षेत्र **(पश्चिम दिशा)** में सोम देवे (चन्द्र) को नमो आदेश।

ॐ तीर्थ क्षीरसागर क्षेत्र **(दक्षिण दिशा)** में कामधेनु को नमो आदेश।

ॐ तीर्थ पाताल क्षेत्र **(धरत्री पर)** शेष बासुकी को नमो आदेश।

ॐ तीर्थ कैलाश पर्वत **(उत्तर दिशा)** धौल बैल को नमो आदेश।

ॐ तीर्थ क्षीरसागर **(दक्षिण दिशा)** में अमृत कुम्भ को नमो आदेश।

ॐ तीर्थ स्याल कोट क्षेत्र **(वायव्य दिशा)** में १८ भार वनस्पति को नमो आदेश।

ॐ तीर्थ आकाश लोक **(आकाश दिशा)** ध्वनि-शब्द-नाद शंख ध्वनी नाद को नमो आदेश।

इति अष्ट प्राण पालो तीर्थ स्थापन समाप्त।

अतः अष्ट भैरव सिद्ध पीठ स्थान

ॐ सिद्धपीठ २१ ब्रह्माण्ड (आकाश दिशा) अलील भैरो को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ मान सरोवर (उत्तर दिशा) महादेव भैरो को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ कदली कोट (दक्षिण दिशा) मत्स्येन्द्र भैरो को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ स्यालकोट (वायव्य दिशा) चौरंगीनाथ भैरो को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ पुष्कर तीर्थ (पश्चिम दिशा) सतनाथ भैरो को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ द्वारिका क्षेत्र (अग्नेय दिशा) सन्तोषनाथ भैरो को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ पाताल लोक (भूमि पर) बासुकि भैरव को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ पिशोर स्थान (पूर्व दिशा) गुरु गोरक्षनाथ जी भैरव को नमो आदेश।

पूर्व में - ॐ सिद्धपीठ मन्दाकिनी पुष्करीनी, दण्डपानी भैरव को नमो आदेश।

अग्नेय में - ॐ सिद्धपीठ कालीनगर, गोरक्षवंशिका में काल भैरव को नमो आदेश।

दक्षिण में - ॐ सिद्धपीठ इल्वल क्षेत्र बाल भैरव को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ कदली क्षेत्र मण्डली स्थान काल भैरवनाथ को नमो आदेश।

ॐ सिद्धपीठ चुंचुना गिरी, क्षेत्रपाल भैरव को नमो आदेश।

नैवृत्य में - ॐ सिद्धपीठ सुनरी क्षेत्र सुनरी भैरव को नमो आदेश।

ॐ सिद्ध पीठ गोदावरी क्षेत्र इबारा पहाड़ भैरव को नमो आदेश।

पश्चिम में - ॐ सिद्धपीठ अलवर तिजारा के भैरव को नमो आदेश।

वायव्य में - ॐ सिद्धपीठ मन्दाकिनी, पुष्करीणी में काल भैरव और दण्डपाणी भैरो को नमो आदेश।

उत्तर में- सिद्धपीठ देवलगढ़ आकाश भैरव को नमो आदेश।

इति अष्ठ भैरव सिद्ध पीठ समाप्त।

अतः दश कोटवाल तीर्थ स्थापित करें।

पूर्व में - ॐ सिद्ध तीर्थ कलिंग देश भानू कोटवाल को आदेश।

नैवृत्य - ॐ सिद्ध तीर्थ मानस सरोवर गणेश कोटवाल को आदेश।

ईशान्य -ॐ सिद्ध तीर्थ अन्जनेरी पर्वत हनुमन्त कोटवाल को आदेश।

पाताल - ॐ सिद्ध तीर्थ सप्त पाताल लोक शेष कोटवाल को आदेश।

पश्चिम में - ॐ सिद्ध तीर्थ जमुना तिर क्षेत्र चन्द्र कोटवाल को आदेश।

वायव्य में - ॐ सिद्ध तीर्थ स्यालकोट, सिद्ध चौरंगीनाथ भैरव कोटवाल को आदेश।

उत्तर में - ॐ सिद्ध तीर्थ आकाश लोक गरुड़ कोटवाल को आदेश।

आकाश में ॐ सिद्ध तीर्थ आकाश लोक इन्द्र कोटवाल को आदेश।

दक्षिण में - ॐ सिद्ध तीर्थ सौराष्ट्र देश यम कोटवाल को आदेश।

अग्नेय में - ॐ सिद्ध तीर्थ अग्नि लोक अग्नि कोटवाल को आदेश।

इति दश कोटवाल सिद्ध तीर्थ सम्पूर्ण भया।

अतः सर्व दिशा सिद्धियों के शक्ति पीठ स्थापनः-

यहां साधक अपने सतगुरु का सुमिरण करे।

सतगुरु कृपा बिन नाथ परम्परा में सिद्धियां प्राप्त नहीं होती अर्थात् गुरु मन्त्र का स्मरण करें और प्रत्येक सिद्धि का नाम लेते हुये यन्त्र में स्थपित २४ पुष्प के बृत्त पर अक्षदा छोड़े।

* ॐ अनुमा सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ महिमा सिद्धिदात्री को

नमो आदेश। ॐ गरिमा सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ लघुमा सिद्धि दात्री को नमो आदेश। ॐ प्राप्ति सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ प्रकाशक सिद्धि दात्री को नमो आदेश। ॐ असत्या सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ आवस्था सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ अष्टभुतान सिद्धि दात्री को नमो आदेश। ॐ छुछुमक्ता सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ अनुरा सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ परकाया प्रवेश सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ सूरजवसी सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ जलवसी सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ दुरी श्रवण सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ दुरी दर्शन सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ कांस कामोद सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ अप्रहता सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ देवता सैल सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ रुपसेल देवता सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ हारेनही सिद्धि को नमो आदेश। ॐ त्रिकाल सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ अग्नि वसी सिद्धिदात्री को नमो आदेश। ॐ शबद वसी सिद्धिदात्री को नमो आदेश।

इस प्रकार सिद्धियों के शक्ति पीठ सत्गुरु कृपा से प्राप्त कर सकते हैं। चाहे सिद्धि की विधियाँ भी अपनायें तो भी गुरु कृपा बिन उन विधियों सिद्धि नहीं होती। इसलिये गुरुकृपा प्राप्ति अनिवार्य है। (अधिकतम विश्लेषण अग्रिम तीसरे खण्ड में किया है।)

अत: काया चक्र भेद जो कि अपनी समस्त काया में २८ चक्र होते हैं मुख्यतया षड चक्र होते हैं और बाकी सूक्ष्म रुप में चक्र विराजमान हैं। कुण्डलिनी जाग्रति इन चक्र भेदन करके होती है। अर्थात् कुण्डलिनी जाग्रत भी सतगुरु कृपा से होती है। अत: साधक गुरु या गुरु मन्त्र का स्मरण करें और मन्त्र जाप करते हुये त्रिकुटी में ध्यान लगावें तद्पश्चात प्रत्येक चक्र ऊपर ध्यान केन्द्रित करके तथा चक्र देवता को स्मरण करते हुये जपा अजपा सांस को अनुभव लीजिये। इस यन्त्र के सर्पाकृती वृत्त पर प्रत्येक चक्र देवताओं के ऊपर अक्षदा चढ़ावे।

अर्थात काया के चक्र स्थान ही एक सिद्धपीठ है और उस पीठ में प्रत्येक इष्ट देवता पीठाधीश रुप में विराजमान हैं।

ॐ गणेश देवता गुदा स्थान पीठ मुलाधार चक्र को नमो आदेश।

ॐ निलनाथ जी केन्द्र बिन्दु स्थान पीठ महापद्म चक्र को नमो आदेश।

ॐ सतनाथ ब्रह्म लिंग स्थान पीठ स्वाधिष्ठान चक्र को नमो आदेश।

ॐ गंगा जोगन, सुषुम्णा स्थान पीठ सुषुम्णा चक्र को नमो आदेश।

ॐ अग्नि देवता गर्भ स्थान पीठ गर्भ चक्र को नमो आदेश।

ॐ अग्नि देवता कटी स्थान कुण्डिलिनी चक्र को नमो आदेश।

ॐ सन्तोषनाथ विष्णु जी नाभी स्थान पीठ मनीपुर चक्र को नमो आदेश।

ॐ रुद्र देवता लिंग स्थान पीठ लिंग चक्र को नमो आदेश।

ॐ रुद्रनाथ महादेव जी हृदय स्थान पीठ, अनहद चक्र को नमो आदेश।

ॐ हंसनाथ जी जोगी कण्ठ स्थान पीठ विशुद्ध चक्र को नमो आदेश।

ॐ प्राणनाथ जोगी गल स्थान पीठ प्राण चक्र को नमो आदेश।

ॐ ब्रह्मा विष्णु महेश जी, त्रिग्रंथि स्थान पीठ अवल चक्र को नमो आदेश।

ॐ प्राण देवता जी चिबुक स्थान पीठ चिबुक चक्र को नमो आदेश।

ॐ प्रणव नाथ जी नासिका स्थान पीठ बलवान चक्र को नमो आदेश।

ॐ नाद देवता जी कर्णतले स्थान पीठ कर्ण मूल चक्र को नमो आदेश।

ॐ आदिनाथ (हंस) जोगी भ्रूमध्य स्थान पीठ आज्ञा चक्र को नमो आदेश।

ॐ आकाश देवता जी भ्रूमध्य ऊपर स्थान पीठ त्रिवेणी चक्र को नमो आदेश।

ॐ चन्द्र देवता, भाल स्थान पीठ चन्द्र चक्र को। नमो आदेश।

ॐ चन्द्र देवता योगी भाल ऊपर स्थान पीठ अमृत चक्र को नमो आदेश।

ॐ परब्रह्म देवता और भाल ऊपरी स्थान पीठ अकुल चक्र को नमो आदेश।

ॐ गुरु गोरक्षनाथ योगी मुर्धा स्थान पीठ ब्रम्हरन्ध्र भंवर गुफा को नमो आदेश।

ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी (उर्ध्वरन्ध्र) तालिमा स्थान पीठ तालुचक्र को नमो आदेश।

ॐ अलक्ष्य ज़ोगी भ्रमर गुफा स्थान पीठ अलक्ष (बल) चक्र को नमो आदेश।

ॐ अकल नाथजी जोगी भ्रमर गुफा उपरी स्थान पीठ पुण्यागार (अकंठपीठ) चक्र को नमो आदेश।

ॐ अनन्तनाथ जी जोगी शिखा मंण्डल स्थान पीठ कोलाहाट (परम शुन्य) चक्र को नमो आदेश।

ॐ महाविशाल निरालम्ब स्थान पीठ वज्र दण्ड चक्र को नमो आदेश।

ॐ असंख्य योगी, असंख्य शक्ति, निरालम्ब स्थान पीठ असंख्य चक्र को नमो आदेश। अन्त में

ॐ ब्रह्माण्ड, २१ शून्य स्थान पीठ २१ वे ब्रह्माण्ड को ज्योति स्वरुप को आदेश।

इति २८ चक्र पीठ स्थापन समाप्त।

अतः साधक ने यन्त्र के ऊपर प्रत्येक दिशाओं में अक्षदा छोड़े और नाथ सिद्ध शस्त्रों की शक्ति पीठों में स्थापना करें।

यंत्र के अग्नेय दिशा में - ॐ शक्तिपीठ धूनी को नमो आदेश। (जहां जहां सिद्धों ने धूनी चेतन की वहां वहां शक्तिपीठ बने)

यन्त्र के उत्तर दिशा में- ॐ शक्तिपीठ कुबड़ी आधारी को नमो आदेश। (सिद्धों ने सिद्ध कुबड़ी से जल निर्माण किये हैं वहा शक्तिपीठ बने)

यन्त्र दक्षिण दिशा में

ॐ शक्तिपीठ त्रिशूल को नमो आदेश। (सिद्धों ने सिद्ध त्रिशूल से दुष्ट संहार किया है वहां सिद्धपीठ बने हैं)

यन्त्र के नैवृत्य कोन में- ॐ शक्तिपीठ झोली को नमो आदेश। (सिद्धों के झोली में तीन लोक तारण शक्ति होती है)

यन्त्र के पश्चिम दिशा में- ॐ शक्ति पीठ चिमटा को नमो आदेश। (सिद्धों का चिमटा योगी को निर्भयता तथा शक्ति का पीठ है)।

यन्त्र के ईशान्य कोन में

ॐ शक्ति पीठ खप्पर को नमो आदेश।

(खप्पर सिद्धों को खप्पर सिद्धि तथा शक्ति देता है)

यन्त्र के पूर्व दिशा में

ॐ शक्ति पीठ (भभूत) विभूती को आदेश।

(विभूति सिद्धों कि मुख्याता शक्ति है जिसमें सब कार्य सिद्धि प्राप्त होती है)

यन्त्र के वायव्य कोण में

ॐ शक्तिपीठ भैरव चोला को नमो आदेश।

(यह भैरव सिद्धि सम्पूर्ण विनाशकारी शक्तियों से योगी का संरक्षण करती है)

इति शक्तिपीठ शस्त्र स्थापना सम्पूर्ण।

अत: साधक यन्त्र के चारों दिशा द्वार में श्रीनाथ अस्त्रों के शक्तिपीठ स्थापना करें। अक्षदा अर्पण करें।

यन्त्र के पूर्व द्वार में

ॐ शक्ति पीठ कालास्त्र को नमो आदेश।

यन्त्र के दक्षिण द्वार में

ॐ शक्ति पीठ अघोर अस्त्र को नमो आदेश।

यन्त्र के पश्चिम द्वार में

ॐ शक्ति पीठ वीर अस्त्र को नमो आदेश।

यन्त्र के उत्तर द्वार में

ॐ शक्ति पीठ फटकार अस्त्र को नमो आदेश।

(सिद्धों की पूर्ण सुरक्षा इन अस्त्र शक्तियों से होती है)

अत: यन्त्र के सभी दिशाओं को अक्षदा छोड़कर आदेश करें।

ॐ दिशा शक्ति पूर्वा: को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति अग्नेया को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति दक्षिणा: को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति नैवृत्या को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति पश्चिमा: को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति वायव्या: को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति उत्तरा: को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति इशान्या को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति आकाश को नमो आदेश।

ॐ दिशा शक्ति पाताल को नमो आदेश।

इतना नाथ सिद्धपीठ तीर्थ पूजन आदेश समाप्त।

श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश। गुरु गोरक्ष नाथ जी को आदेश।

यन्त्रस्थ नाथ देवता स्थापना पूजन

अत: साधक दाहिने हाथ में अष्ठगंध या चन्दन मिश्रित अक्षदा लेकर (या केवल भभूत लेकर) निम्न मन्त्र पढ़कर यन्त्र के मध्य बिन्दु ऊपर (मूर्ति पर) अर्पण करें।

गोरक्ष गायत्री—ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलख निरन्जन कौन स्वरूपी बोलिये। अलख निरन्जन ज्योति स्वरूपी बोलिये। ओंकारे शिवरूपी, संख्या ने साधरूपी, मध्याने हंस रूपी। हंस परमहंस दो अक्षर, गुरु तो गोरक्ष काया तो गायत्री, ॐ ब्रह्म, सोहं शक्ति, शून्य माता अविगत पिता, अभय पंथ, अचल पदवी, निरंजन, गोत्र, विहंगम जाति, असंख्य प्रवर अनन्त शाखा सूक्ष्मवेद, आत्मज्ञानी ब्रह्मज्ञानी—श्री ॐ गो गोरक्षनाथाय विद्महे—शून्य पुत्राय धीमहि, तन्नो—गोरक्ष निरंजन प्रचोदयात्। इतना गोरक्ष गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी आदेश। आदेश। आदेश।

अब साधक यन्त्र के त्रिकोणाकृति सद् गुरु यन्त्र के ऊपर कमल का फूल और अक्षदा चढ़ावे तथा सतगुरु जी ने दिया हुआ गुरु मन्त्र का उच्चारण कराके अपने मस्तक पर भभूत लगावे तथा अपना दाहिना हाथ माथे पर चोटी हो तो चोटी स्पर्श या चोटी के स्थान पर हाथ रखकर निम्न मन्त्र पढ़े।

चोटी मन्त्र—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं का भया उजियाला, आये सिद्धो जती गोरक्षनाथ जी बाला। कहोरे पुरुष कहां से आया, कहां को जाना है। ॐ गुरुजी ऊर्ध्व मुख से आया, गगन मुख को जाना है। हे पुरुष यहां क्यों आया? मैं तो आप अलष निर्वाण जी के चरणों में शीश देने को आया कैसे बुलाया, कैसे बिठाया? हित से बुलाया, प्रेम से बिठाया। कौन आसन कौन मूल कौन बैठे कमल के फूल? धरत्री

आसन, ब्रह्म मूल अलष निरंजन बैठे कमल के फूल। कौन मुख छुरी कौन मुख धार? कौन पुरुष है मुण्डन हार। अग्नि मुख छुरी पवन मुख धार, अलष पुरुष है मुण्डन हार। कौन वृक्ष कौन छाया किसके नीचे मुण्ड मुण्डाया? अटल वृक्ष—सन्तन की छाया, धर्म नीचे मुण्ड मुण्डाया। कौन गुरु ने मुण्डे केश—कौन गुरु ने दिया उपदेश। गुरु हमारे काटे देश—सतगुरु.........(चोटी गुरुजी के नाम लो) हमारे दिया उपदेश? काटी चोटी दिया निवास, चांद सूर्य भरे धर्म की साख। सत्य की छुरी, अमर लोक से आई—हुकम गुरु से चोटी लायी। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी आदिशक्ति महामाई। इतना चोटी जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

तदनन्तर स्वास्तिक चौक के पूर्व दिशा में अपने (कान) चिरा गुरुजी की स्थापना करे। श्री गुरु जी ने (चिरागुरु) दिये हुए मन्त्र से अक्षदा तथा चन्दन अर्पण करें तथा अपने कर्ण कुण्डलों को भभूत 'भस्म' लगावे तथा स्पर्श कराके निम्न मन्त्र पढ़ें।

कान चिरा का मन्त्र—सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सार की छूरी सत्य की धार, चीरो योगी अलष पुरुष अपरम्पार, पांचवे मुख मुद्रा करी राखो धरती धारण रुप बनाय। अलष पुरुष को दर्श बताय, सच्चा सद्गुरु शब्द सुनाय, बीज मन्त्र का ध्यान लगाय, आंच बारु धीरज धर्म बसाय, सतगुरु मेरे......(चिरा गुरुजी के नाम लो) भ्रम भगाय। दिय दरदो दीदार बताय सच्चा सुमरु साचो साच अन्तर हृदय में आग लगाय संग कला सगुण पाऊ गायत्री सावित्री पार्वति उपदेश ॐ नमः शिवाय रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। इतना चिरा मन्त्र सम्पूर्ण भया अनन्त कोटि सिद्धों में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी ने सुनाया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अतः स्वस्तिक चौक के दक्षिण दिशा में अपने उपदेशी गुरु जी की स्थापना करें। उपदेशी गुरुजी के दिये हुये मन्त्र का स्मरण करके अपना दाहिना हाथ हृदय पर रखकर गुरु उपदेश का स्मरण एवं चिन्तन करें तथा स्थान पर अष्ठगंध + अक्षदा चढ़ाकर निम्न मन्त्र पढ़ें।

उपदेश का मन्त्र :- सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ कार शिव शक्ति सकल पसारा, अक्षय योगी सबसे न्यारा गुरु देव ने गुरु मन्त्र दिया, सद्गुरु.......(उपदेशी गुरु के नाम लेवे) दिया उपदेश, जो गुरु लागे काना, सो सद्गुरु हमारे शिव समाना । गुरु हमारे हर पल संगा अरज करु गुरा के अंगा जोत पाट मंडाल रचाया सत्य से लाया शब्द से बिठाया । कान फूंक सर जीवण किया सो योगी भव पार कराया । इतना उपदेश मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

तदपश्चात साधक पश्चिम दिशा में अपने भभूत गुरुजी कि स्वस्तिका चौक में स्थापना करें तथा भभूती गुरुजी के दिये हुये मन्त्र से कपाल हृदय दोनों कर्ण, दोनों बाहु, हथेली, नाभी स्थान पर भस्मी का त्रिपुंड लगावे तथा निम्न मन्त्र पढ़कर अक्षदा + बभूत चढ़ावे ।

विभूति मन्त्र :- सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी विभूति माता विभूति पिता, विभूति तीन लोक तारिणी । विभूति माई जहां पाई वही पर लगाई, बैठ सिंहासन पूजा करी । आदि का योगी, युक्ति की विभूत- सत्य का नाति धर्म का पूत ? काल कण्टक को मार के भया अवधूत । विभूति किस आनी किस छानी । ईश्वर महादेव ने आनी, श्री माता गौरजा ने छानी अम्बर झरे धरती फले धरती का पान फूल गायत्री चरे । गायत्री, गोवरी करे सूर्य मुख सूखे अग्नि मुख जले ? सो विभूति श्री शम्भूजती नौ नाथ चौरासी सिद्धों को चढ़े । चढ़ाई खाक हुआ दिल साफ, अलख निरंजन आप ही आप उंल्टन्त भस्मी पलटन्त काया, सिद्धों का मार्ग साधक ने पाया । अलष पुरुष अविनाशी धरो प्रभू का ध्यान, भस्मन्ती-यशवन्ती राजा-प्रजा को वश करन्ती ? साध सन्त को रखन्ती, काल कण्टक को भखन्ती इतना विभूति मन्त्र सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश । आदेश । आदेश ।

ॐ सतगुरु ....(भभूत गुरुजी का नाम लेवे) नाथ जी को चरण कमल को आदेश ।

अब साधक ने स्वस्तिका चौक के उत्तर दिशा में अपने बाना (लंगोटी) गुरुजी की स्थापना करें तथा गुरु मन्त्र से ब्रह्मचर्य काम, क्रोध, मोह, मद, मत्सर

इ० निग्रह करने की संकल्प करें। स्थान पर अक्षदा + अष्टगंध निम्न मन्त्र पढ़कर चढ़ावे।

लंगोट मन्त्र :- सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी अजरका वज्र करु, वज्र का बन्द लगाऊं ? शील का लंगोट, सन्तोष का धागा। ऊन का आड़बन्द कमर में लागा। नागा पहिरे नागफणि हनुमन्त पहिरे लंगोट। गुरु महाराज का बाल गोपाल कोपिन पहिरे, नवनाथ चौरासी सिद्धों की ओट। अदल की कोपीन- वज्र का धागा, योगीश्वर कोपीन चढ़ावन लागा। शिव निर्माण पारा डिंगे अलष पुरुष की आन। पारा पारा महापारा, पारा राखे गुरु हमारा-पारा उतरे सहस्त्र धारा ? सन्त रहे काल से न्यारा। पारा नाक रस्ते उतरे नांसकेतु की दुहाई। कान रस्ते उतर कर्ण की दुहाई। मुख रस्ते उतरे ब्रह्मा की दुहाई ? गुदा रस्ते उतरे गणपति की दुहाई। लिंग रस्ते उतरे हनुमन्त जती की दुहाई उल्टा पारा काया को चढ़े, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई स्फुरे। इतना लंगोट जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश। आदेश। ॐ सत गुरु......(लंगोटी गुरुजी के नाम लेवे) नाथ जी के चरण कमल को आदेश।

अन्त में साधक सभी गुरु देवता को नादी पूजा करके आदेश करें तथा सामुपचारे पूजन करें। तदनन्तर साधक ने त्रिकोन के तीनों ओर निम्न त्रिशक्ति मन्त्र जाप पढ़कर, अक्षदा तथा सिंदूर या भभूत छोड़े।

महादुर्गा त्रिशक्ति मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अलख निरन्जन निराकार, कैलाश पर्वत बैठे ओंकार। कमलासन बैठे ब्रह्मा मुखचार, बैठे विष्णु नागासन मार। आओ सिद्धों धरो ध्यान तैंतीस करोड़ देवता मिल करो विचार। ओं ब्रह्मा विष्णु महादेव ने ध्यान लगाया, तेज पुन्ज मुखों का भया उजियाला, देव देवत्या किया प्रकाश, थर्रे धरत्री थर्रे आकाश थर्रे सृष्टि सारी। शिवपुरी में माया उतरी उत्पन्न भई दुर्गा महामाई। रुपवन्ति शीलवन्ती, महाशक्ति बाला सुन्दरी। ॐ देव देवत्या तेजशक्त से भग बनाया रुपबीज

फूल, महादुर्गा धर्म ले अवतार लिया । कौन तेज से मुख बनन्ते कोन तेज से बाल, शिव मुख तेज से मुख बनन्ते राम तेज से बाल । कौन तेज से दो स्तन बनन्ते कौन तेज से भुजा, इन्द्र तेज से दो स्तन बनन्ते, विष्णु तेज से भुजा । कौन तेज से बनन्ते नितम्ब कौन तेज से जंघा । पृथ्वी तेज से बनन्ते नितम्ब, वरुण तेज से जंघा । कौन तेज से चरण बनन्ते, कौन तेज से उगलिंया । ब्रह्म तेज से चरन बनन्ते, सूर्य तेज से उगलिंया । कौन तेज से बनन्ते हाथ उंगलियां, कौन तेज से नाक । वसुगण तेज से बनन्ते हाथ उगलियां, कुबेर तेज से नाक । कौन तेज से बनन्ते दंत, कौन तेज से त्रिनेत्र, प्रजापति तेज से बनन्ते दंत, अग्नि तेज से त्रिनेत्र । कौन तेज भृकुट बनन्ते, कौन तेज का मध्य प्रदेश । सन्ध्या तेज बनन्ते भृकुट, इन्द्र तेज का मध्य प्रदेश । कौन तेज बनन्ते काया, कौन तेज से कान, विश्वकर्मा तेज बनन्ते काया, पवन तेज से कान । देव देवत्या करन्ते दान, आदी शक्ति भये प्रमाण । ओ-देवशक्त्या उगम से उठी प्रकट भयी नाद बिंद की शक्ति, तैंतीस करोड़ देव सिद्धों भरलो साखी । ओं शुल दिया कौन शक्ति, कौन स्वरुपी, चक्र दिया । ओं शूल दिया शिवशक्ति, विष्णु स्वरुपी, चक्र दिया । शंख दिया कौन स्वरुपी कौन शक्ति धनुबान, शंख दिया वरुण स्वरुपी पवन शक्ति धनुबान । वज्र दिया कौन स्वरुपी, कौन शक्त की घन्टी, वज्र दिया राजा इन्द्र स्वरुपी, ऐरावत शक्ति की घण्टी । दण्ड प्रदान कौन शक्ति, कौन स्वरुप अक्षमाला, दण्ड प्रदान यमदेवा शक्ति, दक्ष प्रजा की अक्षमाला । कमण्डल दिया कौन स्वरुपी, कौन शक्ति का प्रकाश । कमण्डल दिया बह्मा स्वरुपी, सूर्य शक्ति का प्रकाश । ढाल, तलवार कौन स्वरुपी, कौन दिया शेर सवार । ढाल, तलवार काल स्वरुपी, पर्वत ने दिया शेर सवार । कौन श्रृंगार क्षीर सागर दिया कौन विश्वकर्मा का दान । काया वस्त्र, गले मोतीहार कानन कुण्डल हाथ कंकण, बाजूबन्द कण्ठ माल, क्षीरसागर ने श्रृंगार का दिया वरदान, कवच परशु शस्त्र का दिया विश्वकर्मा ने दान । कौन स्वरुपी नागमनी का हार, कौन दिया कमल का फूल । पृथ्वी स्वरुप का नागमनी हार, सागर ने दिया कमल का फूल । येता शस्त्र अस्त्र भया श्रृंगार, तब तेज शक्ति की माई तीन

रुप का लिया अवतार एक बनन्ते ॐ कार तेज। एक बनन्ते पिण्ड प्राण। एक बनन्ते निराकार, प्रकृति पुरुष ततसार। ततसार मध्ये ज्योत, ज्योत मध्ये परम ज्योत परम ज्योत मध्ये उत्पन्न भई काली माई काली काली महाकाली कृष्ण वर्ण खडाण्ग धारी रुद्र देवता को पोषणी ऋद्ध सिद्ध वरदायिनी भस्मन्ती माई जहां पाई तहां लगाई धरम की बेटी अचलनाथ की चेली मन माने तो संग रमाई नहीं तो शमशान अकेली। माता कालीमाई के चरण कमल को नमो नमस्ते।

ॐ ज्योत–ज्योत अमर ज्योत, अमर ज्योत में महाज्योत महाज्योत में भई उत्पन्न माता महा सरस्वती माई। श्वेत वर्णी दण्ड कमण्डल धारणी, कर पुस्तक धारणी हंस वाहिनी, बह्म देवता की पोषणी ऋद्ध वरदायनी योगी नाम मोक्ष मुक्ति फलदायनी महासरस्वति के चरण कमल को नमो नमस्ते। ॐ नांद नांद बैकुण्ठ नाद वैकुण्ठ नांद बिन्द, नांद बिन्द में परम ज्योत परम ज्योत में उत्पन्न भई महामाया महालक्ष्मी, शंख चक्र गदा पदम धारणी रक्त वर्ण गरुड वाहिनी विष्णु देवता की पोषणी सन्तोष नाथ जी की चेली ऋद्धि सिद्धी वरदायनी सिद्ध साधक मोक्ष मुक्त फल दायिनी। माता महालक्ष्मी के चरण कमल को नमो नमस्ते। इतना महादुर्गा त्रिशक्ति जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने त्रिम्बक क्षेत्र अनुपम शिला पर कथा पढ़कर सुनाया, श्री नाथजी गुरु जी को आदेश।

अत: साधक ने नवदुर्गाओं का तथा १८ नाथ सिद्ध जोगनियों का आवाहन तथा यन्त्रस्थ स्थापना करें, त्रिशाक्ति त्रिकोन के बाहरी नव, त्रिकोन वृत्र के ऊपर माता शैलपुत्री से लेकर माता सिद्धदात्री देवी तक नवदुर्गाओं के हर एक त्रिकोन के ऊपर कुंकुम हल्दी अक्षदा छोड़े और त्रिकोन के बाहरी भाग में १८ नाथ सिद्ध योगनी की पंचोपचारे पूजन करके शक्ति मन्त्र जाप का पठन करें।

शक्ति मन्त्र जाप (चक्री)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ मेरु मण्डाल पर्वत पर कैलाश गिरि कैलाश गिरि पर अलख पुरुष ने ज्योत शक्ति की थापना थापी। ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे, ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे, ९ करोड़ दुर्गा बैठी, अनन्त कोटि सिद्ध बैठे ६४ जोगण बैठी, तैंतीस करोड़ देवी देवता बैठे। ॐ ज्योति ज्योति महाज्योत, महाज्योत मध्ये प्रगटे ९ दुर्गा की ज्योत, १८ सिद्धजोगन शक्ति का बन्या कोट।

ॐ पहली ज्योत शैलपुत्री देवी की लीजो। हिमालय पुत्री शिवप्रिया की लीजो। निरंजन निराकार ज्योत रुपी बैठी सिद्धासन, शैलपुत्री देवी की पूजा कीजे। ओं सभ्या चक्र में सार मन्त्र श्रीं नाथ जी ने सुनाया, आचार विचार करों सिद्धों देखो सिद्धों देवी शैलपुत्री भखे सन्तोषी भखे बलवन्ती सर्व तो जीव रक्षन्ती, सर्व तो जीव भक्षन्ती तिसकी रक्षा जती गोरखनाथ करन्ती सन्तोषी खाये सन्तोषी पीये, सन्तोषी जरे, सन्तोषी अमर रहे, कहोजी देवीजी कहां से आना भया। मणि द्वीप से आना भया। मणि द्वीप से क्या क्या लाया। मणि द्वीप से एक ओंकार लाया, द्वि चन्द्र सूर लाया त्रिदेव, त्रिशक्ति लाया, तीन लोक लाया, त्रिपुण्ड भस्म लाया, योगी के त्रिलोचन लाया। चार वेद चार युग लाया, पांच तत् लाया, छ जती के खड दर्शन लाया, सप्तऋषि सप्त सागर लाया, सप्तस्वर्ग सप्तपुरी लाया अष्ठ भैरव, अष्ट कुली नाग लाया, अष्टांग जोग, अष्ट सिद्धि लाया, अष्ठ कुम्भपर्व आठो प्रहर लाया नवग्रह, नवदुर्गा लाया, नवनाथ, गर्भ के नवमास लाया, नौखण्ड पृथ्वी, नौ रत्न लाया, शक्ति के नवरात्री लाया, नौरास, नवविधा भक्ति लाया, नौ नाड़ी, स्वरों के नौ गुरु लाया। दस महा विद्या, दस अवतार लाया। दस दिशा दस कोटवाल लाया, दस विराट् का प्रतीक लाया, दस हवन यज्ञ लाया, दस प्रजापति लाया। ग्यारह रुद्र लाया, बारह राशी लाया। योगी के बारह पंथ लाया, शिव के बारह जोर्तिलिंग लाया। जप तप के बारह वर्ष लाया। चौदह भुवन लाया, चौदह रत्न लाया, चौदह मन्वन्तर लाया। पंद्रह तिथि लाया, सोलह श्रृंगार लाया। सोलह सहस्त्र नारी लाया, अठारह भार वनस्पति लाया, अट्ठारह पुराण लाया, इक्कीस शून्य ब्रह्माण्ड लाया, इक्कीस मुख रुद्राक्ष लाया चौबीस बीज गायत्री मन्त्र लाया,

सत्ताईस नक्षत्र लाया तीस रागिणी का राग लाया, तैंतीस करोड़ देवी देवता लाया, बावन बीर लाया, अनन्त कोटि सिद्धा लाया। भेदा न भेद अनन्त भेद लाया। ॐ देवी जी यह सार मन्त्र कौन भाषा लाया, कौन शाखा लाया। यह सार मन्त्र शिव के भाषा लाया शक्ति की शाखा लाया, यह सार मन्त्र अलख निरंजन ने भाखा। ॐ महादेवी बाल कुंवारी लो भैरो भैरवी तेल गुग्गुल खोबडा लंवगै इलायची। मिष्ठान भोग चढ़ाया। लो हनुमन्त सोने का कलश जले दीपक मोती या चौका पूरिया। अनन्त कोटि सिद्धों ने पान सुपारी तंदुल वस्त्र का मान दिया। ॐ माई ईश्वरी सुरत निरत चार जुग जुग देवी जी तेरा प्रतापा ॐ देवी महा दुर्गा दरबार तेरा दया दृष्टि देना। भगवती भवानी भुवनेश्वरी भवन में भर दो भक्ति तुम अम्बे अम्बालिके अम्बेश्वरी अमर हो अमृत बरसो मेहरबान, मंगला महा मंगला मंगल करो मण्डाल ॐ गंगा गौरी गौरजा गोद गोदी ले बालका माँ वांग विलासी वांगेश्वरी सती सरस्वती सिद्धि बुद्धि देना बालकाना। चण्डीका चामुण्डा शत्रु मार चण्ड मुण्डा, चराचर चढ़े सोलह कला संसार। तुम काल की कालीका काल भैरवी दुष्ट को भख बला भख काल कन्टक को मार। भूमा भद्र काली भय हरे निर्भय करो भवानी। भ्रम भखे भैरवी भूत–प्रेत भागे दशो दिशा। ज्वालाई जगदीश्वरी, उमा ईश्वरी जगदंबा पापी पाखण्डी जला, जला दे हमारी बला, एता भया प्रतापा सारी सृष्टि ब्रह्माण्डा। रक्षा करे जती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। अनन्त कोट सिद्धों में बैठकर आदेश सुनाया।

ॐ दूसरी ज्योत ब्रह्मचारिणी देवी की लीजो, साक्षात् परब्रह्म परमात्मा की जननी लीजो। निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन ब्रह्मचारिणी जी की पूजा कीजो। ॐ सभ्या चक्र में सारमन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया, आचार विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों देवी ब्रह्मचारिणी.......पूर्ववत।

ॐ तीसरी ज्योत चन्द्रघण्टा देवी की लीजो। शिव उदर चन्द्रमा की कीजो। निरन्जन निराकर ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन चन्द्रघण्टा की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथ जी ने सुनाया। आचार/विचार करो। सिद्धों देखो सिद्धों देवी चन्द्रघण्टा........पूर्ववत।

ॐ चौथी ज्योत कूष्माण्डा देवी की लीजो। कुष्माण्डा कामाक्षा सृष्टि

सारी तिसके उदर में भरीजे। निरंजन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन, कूष्माण्डा की पूजा कीजे। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्रीनाथ जी ने सुनाया आचार–विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों देवी कुष्माण्डा.....पूर्ववत्....।

ॐ पांचवी ज्योत स्कन्द माता देवी की लीजे। शिवपूजा जती कार्तिकेयनाथ की जननी कहियो। निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन, स्कन्द माता की पूजा कीजे। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों देवी स्कन्द माता......पूर्ववत्....।

ॐ छठी ज्योत कात्यायनी देवी की लीजो। जोगी कात्यायणनाथ तेज प्रभा भई उत्पन्ना कात्यायनी की कीजो। निरंजन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन शाम्भवी कात्यायणी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों देवी कात्यायनी.....पूर्ववत्.....।

ॐ सातवीं ज्योत कालरात्रि देवी की लीजो। शिवशक्ति तेज भई उत्पन्ना संहार करे सृष्टि सारी। रक्त बीज कालरुप कालरात्रि की कीजो। निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन काली कालरात्रि की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्रीनाथ जी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों देवी कालरात्रि....पूर्ववत्.....।

ॐ आठवीं ज्योत महागौरी देवी की लीजो। कहे महादेव महाकाली भई क्रुद्ध महागौरी, काया तपे योग से, वर पाया ब्रह्मा से, गौर रंग से महागौरी देवी कहियो। निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन महागौरी की पूजा किजो। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों देवी महागौरी....पूर्ववत्.....।

ॐ नववीं ज्योत सिद्धदात्री देवी की लीजो। अष्टसिद्धि से भरपूर भई तब पिछे नाथ सिद्धों को दीन्ही, नित्य नाथ निवासी कहालो। निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन सिद्धदात्री की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र श्रीनाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों देवी सिद्धदात्री....पूर्ववत्....।

(अत: १८ नाथ सिद्ध जोगण स्थापना करें)

ॐ दसवीं ज्योत ऋद्धि सिद्धि गणेशजी की लीजो, गजबेली गजकंथड नाथ जी कि चेली कहालो। निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन, ऋद्धि सिद्धि देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों, देवी ऋद्धि सिद्धि.....पूर्ववत.........।

ॐ ग्यारहवीं ज्योत महालक्ष्मी देवी जी की लीजो गरुड़ वाहनी, सन्तोषनाथ जी की चेली कहालो। द्वारिका क्षेत्र, निरंजन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन महालक्ष्मी देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र श्रीनाथ जी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों देखों सिद्धों देवी महालक्ष्मी जी........पूर्ववत......।

ॐ बारहवीं ज्योत गंगा गौरजा देवी जी की लीजो। विष्णु जी के चरण कमल से भई उत्पन्नी ले शीश जटा में शंकर भगीरथ गंगा कहालो। परब्रह्म स्थान निरंजन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन देवी गंगा गौरजा देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्या चक्र में सार मन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी गंगा गौरजा.....पूर्ववत.....।

ॐ तेरहवीं ज्योत सावित्री देवी जी की लीजो। हंसवाहिनी सतवन्ती सतनाथ ब्रह्माजी कि चेली कहालो। पुष्कर तीर्थ निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन देवी सावित्री की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र श्रीनाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों सावित्री देवी.....पूर्ववत........।

ॐ चौदहवीं ज्योत कामाक्षा देवी जी की लीजो। हाथ खप्पर गले मुण्डे माला ईश्वर महादेव जी की चेली कहालो, कामरु देश, निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन देवी कामाक्षा की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र श्रीनाथ जी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों कामाक्षा देवी.......पूर्ववत........।

ॐ पंद्रहवीं ज्योत होमीओ देवी जी की लीजो। विभूती की धरत्री, धुवे

का आकाश ऋकेशर उपाया होमीओ वज्र हस्ता कहालो। आकाश दिशा निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन देवी होमीओ की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार विचार करो सिद्धों देखो सिद्धों होमीयो गायत्री देवी ......पूर्ववत......।

ॐ सोलहवीं ज्योत महालीला नाग पद्मिनी देवी जी की लीजो। कूर्म वाहिनी अचल अचम्भे नाथ जी (वासुकि) की चेली कहालो। पाताल लोक, निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन महालीला नाग पद्मिनी देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार-विचार करो सिद्धों, देखा सिद्धों देवी महालीला नाग पद्मिनी देवी.....पूर्ववत .....।

ॐ सत्रहवीं ज्योत महामंगला पद्मिनी देवी जी की लीजो। मच्छ वाहिनी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी की चेली कहालो। कदली कोट (सिहल द्वीप) निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन महामंगला पद्मिनी देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथजी ने सुनायां आचार-विचार करों सिद्धों, देखो महामंगला देवी पद्मिनी देवी.....पूर्ववत.....।

ॐ अठारहवीं ज्योत मयनावती देवी की लीजो। मन पवन वाहिनी जालंदर नाथजी की चेली कहालो। बंगदेश क्षेत्र निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन मयनावती देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार-विचार करो सिद्धों, देखो जी सिद्धों देवी मयनावती...... पूर्ववत......।

ॐ उन्नीसवीं ज्योत उदयनाथ पार्वती (डोल्मा माता) देवी जी की लीजो। वृषभ वाहनी आदिनाथजी की चेली कहालो। मानस सरोवर निरंजन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन उदयनाथ पार्वती देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्रीनाथ जी को सुनाया। आचार-विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी उदयनाथ पार्वती......पूर्ववत......।

ॐ बीसवीं ज्योत महाकाली देवी की लीजो। ब्रह्मा की बेटी इन्द्र की साली शिव प्रिया कहालो। बंगाल देश निरंजन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन महाकाली देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सारमन्त्र

श्रीनाथ जी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी महाकाली.....पूर्ववत.....।

ॐ इक्कीसवीं ज्योत अन्नपूर्णा देवी जी की लीजो जो गणपत ऋद्धि सिद्धि पूजे शिव प्रिया कहालो। काशी क्षेत्र निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन अन्नपूर्णा देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार–मन्त्र श्रीनाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी अन्नपूर्णा.....पूर्ववत.....।

ॐ बाईसवीं ज्योत तुलजा भवानी देवी जी की लीजो। सिंह वाहनी आदभवानी शिव संगीणी कहालो। तुलजापुर क्षेत्र निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन तुलजा भवानी देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथ जी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों तुलजा भवानी.....पूर्ववत.....।

ॐ तेईसवीं ज्योत बिमला देवी जी की लीजो। मन पवन वाहिनी गुरु गोरक्षनाथ जी की चेली कहालो। पिशोर स्थान निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन सन्तोषी बिमला देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी बिमला.....पूर्ववत.....।

ॐ चौबीसवीं ज्योत हिंगलाज देवी जी की लीजो। सत्य की सतवन्ती शिवप्रिया कहालो। पश्चिम सिन्धु क्षेत्र निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन हिंगलाज देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी हिंगलाज.....पूर्ववत.....।

ॐ पच्चीसवीं ज्योत तारा त्रिकुटी देवी जी की लीजो। बल वाहिनी सिद्ध चौरंगी नाथजी की चेली कहालो। स्याल कोट क्षेत्र निरंजन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन तारा त्रिकुटा देवी की पूजा कीजो। ओं सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथ जी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी तारा त्रिकुटा.....पूर्ववत.....।

ॐ छबीसवीं ज्योत ज्वाला देवी जी की लीजो। वज्र हस्ताय सतवन्ती गुरु गोरक्षनाथ जी की चेली कहालो। कांगडा देश ज्वालाजी क्षेत्र निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन ज्वाला जी देवी जी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्रीनाथ जी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी ज्वालाजी.....पूर्ववत.....।

ॐ सत्ताईसवीं ज्योत महामनसा देवी जी की लीजो। मनसा धाती कूप वाहिनी ब्रह्मा विष्णु महेश की जननी, अलीलनाथ जी की चेली कहालो। इक्कीसवीं ब्रह्माण्ड निरन्जन निराकार ज्योति रुपी बैठी सिद्धासन महामनसा देवी की पूजा कीजो। ॐ सभ्याचक्र में सार मन्त्र श्री नाथजी ने सुनाया। आचार–विचार करो सिद्धों, देखो सिद्धों देवी महामनसा.....पूर्ववत.....।

इतना शक्ति मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरु जी को आदेश।

इस प्रकार शक्तियों का यन्त्रस्थ स्थापन पूजन करें।

अत: साधक नव त्रिकोण वृत्त के बाहरी वृत्त के ऊपर (१० पंखडी में) दशमहाविद्याओं की स्थापना करें। वृत्त के ऊपर अष्ठ गंध + अक्षदा छोड़ें।

दशमहाविद्या मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोह सिद्ध की काया, तीसरा नेत्र त्रिकुट ठहराया। गगण मण्डल में अनहद बाजा। वहा देखा शिवजी बैठा, गुरु हुकम से भीतरी बैठा, शून्य में ध्यान गोरख दीठा। यही ध्यान तपे महेशा, यही ध्यान ब्रह्माजी लाग्या। यही ध्यान विष्णु की माया! ॐ कैलाश गिरी से, आयी पार्वती देवी, जाकै सम्मुख बैठ गोरक्ष योगी, देवी ने जब किया आदेश। नहीं लिया आदेश, नहीं दिया उपदेश। सती मनमे क्रोध समाई, देखु गोरख अपने माही, नौ दरवाजे खुले कपाट, दशवे द्वारे अग्नि प्रजाले, जलने लगी तो पार पछताई। राखी राखी गोरख राखी, मैं हूं तेरी चेली, संसार सृष्टि की हूं मैं माई। कहो शिवशंकर स्वामीजी, गोरख योगी कौन है दीठा। यह तो योगी सबमें विरला, तिसका कौन विचार। हम नहीं जानत, अपनी करनी आप ही जानी। गोरख देखे सत्य की दृष्टि। दृष्टि देख कर मन भया उनमन, तब गोरख कली बिच कहाया। हम तो योगी गुरुमुख बोली, सिद्धों का मर्म न जाने कोई। कहो पार्वती देवीजी अपनी

शक्ति कौन—कौन समाई। तब सती ने शक्ति की खेल दिखायी, दस महाविद्या की प्रगटली ज्योति।

प्रथम ज्योति महाकाली प्रगटली।

(महाकाली)

ॐ निरन्जन निराकार अवगत पुरुष तत सार, तत सार मध्ये ज्योत ज्योत मध्ये परम ज्योत, परम ज्योत मध्ये उत्पन्न भई, माता शम्भु शिवानी काली, ओ काली काली महाकाली, कृष्ण वर्गी, शव वाहनी, रुद्र की पोषणी, हाथ खप्पर खडंग धारी, गले मुण्डमाल हंस मुखी। जिह्वा ज्वाला दन्त काली। मद्य मांस कारी श्मशान की रानी। मांस खाये रक्त—पी—पीवे। भस्मन्ति माई जहाँ पर पाई तहाँ लगाई। सत की नाती धर्म की बेटी इन्द्र की साली काल की काली जोग की जोगिन, नागों की नागिन मन माने तो संग रमाई नहीं तो श्मशान फिरे अकेली ४ वीरे अष्ट भैरो, घोर काली अघोर काली अजर बजर अमर काली भख जून निर्भय काली बला भख, दुष्ट को भख, काल भख पापी पाखण्डी को भख जती सती को रख, ओं काली तुम बाला ना वृद्धा, देव न दानव, नर ना नारी देवीजी तुम तो हो परब्रह्म काली।

क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिका हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा,

द्वितीय ज्योति तारा त्रिकुटा तोतला प्रगटी।

(तारा)

ॐ आदि योग अनादि माया जहाँ पर ब्रह्माण्ड उत्पन्न भया। ब्रह्माण्ड समाया आकाश मण्डल तारा त्रिकुटा तोतला माता तीनों बसै ब्रह्म कपालि, जहाँ पर ब्रह्मा विष्णु महेश उत्पत्ति, सूरज मुख तपे चंद्र मुख अमिरस पीवे, अग्नि मुख जले, आद कुंवारी हाथ खड्ग गल मुण्ड माल, मुर्दा मार ऊपर खड़ी देवी तारा। नीली काया पीली जटा, काली दन्त जिह्वा दबाया। घोर तारा अघोर तारा, दूध पूत का भण्डार भरा। पंच मुख करे हा हा ऽ:ऽ:कारा, डांकनी शाकिनी भूत पलिता सौ सौ कोस दूर भगाया। चण्डी तारा फिरे ब्रह्माण्डी तुम तो हों तीन लोक की जननी।

ॐ ह्रीं श्रीं फट्, ओं ऐं ह्रीं श्रीं हूँ फट्।

तृतीय ज्योति त्रिपुर सुन्दरी प्रगटी।

(षोडशी—त्रिपुर सुन्दरी)

ॐ निरन्जन निराकार अवधू मूल द्वार में बन्ध लगाई पवन पलटे गगन समाई, ज्योति मध्ये ज्योत ले स्थिर हो भई ॐ मध्या: उत्पन्न भई उग्र त्रिपुरा सुन्दरी शक्ति आवो शिवघर बैठो, मन उन्मन, बुध सिद्ध चित्त में भया नाद। तीनों एक त्रिपुर सुन्दरी भया प्रकाश। हाथ चाप शर धर एक हाथ अंकुश। त्रिनेत्रा अभय मुद्रा योग भोग की मोक्षदायिनी। इडा पिंगला सुषुम्ना देवी नागन जोगन त्रिपुर सुन्दरी। उग्र बाला, रुद्र बाला तीनों ब्रह्मपुरी में भया उजियाला। योगी के घर जोगन बाला, ब्रह्मा विष्णु शिव की माता।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ह्रीं श्रीं कं एईल
ह्रिं हंस कहल ह्रीं सकल ह्रीं सो:
ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं
चतुर्थ ज्योति भुवनेश्वरी प्रगटी।

(भुवनेश्वरी)

ॐ आदि ज्योत अनादि ज्योत, ज्योत मध्ये परम ज्योत—परम ज्योत मध्ये शिव गायत्री भई उत्पन्न, ॐ प्रात: समय उत्पन्न भई देवी भुवनेश्वरी। बाला सुन्दरी कर धर वर पाशांकुश अन्नपूर्णी दूधपूत बल दे बालका ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरे, बालकाना बल दे जोगी को अमर काया। १४ भुवन का राजपाट संभाला कटे रोग योगी का, दुष्ट को मुष्ट, काल कन्टक मार। योगी बनखण्ड वासा, सदा संग रहे भुवनेश्वरी माता।

ह्रीं
पंचम ज्योति छिन्नमस्ता प्रगटी।

(छिन्नमस्ता)

सत का धर्म सत की काया, ब्रह्म अग्नि में योग जमाया। काया तपाये जोगी (शिव गोरख) बैठा, नाभ कमल पर छिन्नमस्ता, चन्द्र सूर में उपजी सुषुम्नी देवी, त्रिकुटी महल में फिरे बाला सुन्दरी, तन का मुन्डा हाथ में लीन्हा, दाहिने हाथ में खप्पर धार्या। पी पी पीवे रक्त, बरसे त्रिकुट मस्तक पर अग्नि प्रजाली, श्वेत वर्णी मुक्त केशा कैची धारी। देवी उमा की शक्ति

छाया, प्रलयी खाये सृष्टि सारी। चण्डी, चण्डी फिरे ब्रह्माण्डी भख भख बाला भख दुष्ट को मुष्ठ जती, सती को रख, योगी घर जोगन बैठी, श्री शम्भुजती गोरखनाथ जी ने भाखी। छिन्नमस्ता जपो जाप, पाप कन्टन्ते आपो आप जो जोगी करे सुमिरण पाप पुण्य से न्यारा रहे। काल ना खाये।

श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्र वैरो चनीये हूँ हूँ फट् स्वाहः।

षष्टम् ज्योति भैरवी प्रगटी।

(भैरवी)

ॐ सती भैरवी भैरो काल यम जाने यम भूपाल तीन नेत्र तारा त्रिकुटी, गले में माला मुण्डन की। अभय मुद्रा पीये रुधिर नाशवन्ती! काला खप्पर हाथ खन्जर, कालापीर धर्म धूप खेवन्ते वासना गई सातवे पाताल, सातवे पाताल मध्ये परमतत्व परमतत्व में जोत, जोत में परम जोत, परम जोत में भई उत्पन्न काल भैरवी, त्रिपुर भैरवी, समपत प्रदा भैरवी, कौलेश भैरवी, सिद्धा भैरवी, विध्वंसिनि भैरवी, चैतन्य भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, षटकुटा भैरवी, नित्या भैरवी। जपा अजपा गोरक्ष जपन्ती यही मन्त्र मत्स्येन्द्रनाथ जी को सदा शिव ने कहायी। ऋद्ध फूरो सिद्ध फूरो सत श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अनन्त कोटि सिद्धा ले उतरेगी काल के पार, भैरवी भैरवी खड़ी जिन शीश पर, दूर हाटे काल जन्जाल भैरवी मन्त्र बैकुण्ठ वासा। अमर लोक में हुवा निवासा।

"ॐ हस्रो हस्कलरो हस्रोः"।

सप्तम ज्योति धूमावती प्रगटी।

(धूमावती)

ॐ पाताल निरन्जन निराकार, आकाश मण्डल धुन्धुकार, आकाश दिशा से कौन आई, कौन रथ कौन असवार, आकाश दिशा से धूमावन्ती आई, काक ध्वजा का रथ अस्वार थरै धरत्री थरै आकाश, विधवा रुप लम्बे हाथ, लम्बी नाक कुटिल नेत्र दुष्टा स्वभाव, डमरु बाजे भद्रकाली, क्लेश कलह कालरात्रि। डंका डंकनी काल किट किटा हास्य करी। जीव रक्षन्ते जीव भक्षन्ते जाया जीया आकाश तेरा होये। धूमावन्तीपुरी में वास, न होती

देवी न देव तहाँ न होती पूजा न पाती तहाँ न होती जात न जाती तब आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ आप भयी अतीत।

ॐ धूं: धूं: धूमावती फट् स्वाहः।

अष्ठम ज्योति बगलामुखी प्रगटी।

(बगलामुखी)

ॐ सौ सौ सुता समुन्दर टापू, टापू में थापा सिंहासन पीला। सिंहासन पीले ऊपर कौन बैसे सिंहासन पीला ऊपर बगलामुखी बैसे, बगलामुखी के कौन संगी कौन साथी। कच्ची बच्ची काक–कुतीया–स्वान चिड़िया, ॐ बगला बाला हाथ मुग्दर मार, शत्रु हृदय पर स्वार तिसकी जीव्हा खिच्चै बाला। बगलामुखी मरणी करणी उच्चाटन धरणी, अनन्त कोटि सिद्धों ने मानी ॐ बगलामुखी रमे ब्रह्माण्डी मण्डे चन्द्रसूर फिरे खण्डे खण्डे। बाला बगलामुखी नमो नमस्कार।

ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्रायैं विद्महे स्तम्भनबाणायै

धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्

नवमी ज्योति मातंगी प्रगटी।

(मातंगी)

ॐ गुरुजी शून्य शून्य महाशून्य, महाशून्य में ओंकार ॐकार में शिवम् शिवम् में शक्ति–शक्ति अपन्ते उहज आपो आपना, सुभय में धाम कमल में विश्राम, आसन बैठी, सिंहासन बैठी पूजा पूजो मातंगी बाला, शीश पर शशी अमिरस प्याला हाथ खड्ग नीली काया। बल्ला पर अस्वारी उग्र उन्मत मुद्राधारी, उद गुग्गुल पाण सुपारी, खीरे खाण्डे मद्य मांसे घृत कुण्डे सर्वांगधारी। बुन्द मात्रेन कडवा प्याला, मातंगी माता तृप्यन्ते तृप्यन्ते। ॐ मातंगी सुन्दरी, रुपवन्ती, कामदेवी, धनवन्ती, धनदाती, अन्नपूर्णी अन्नदाती, मातंगी जाप मन्त्र जपे काल का तुम काल को खाये। तिसकी रक्षा शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी करे।

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।

दसवीं ज्योति कमला प्रगटी।

(कमला)

ॐ अयोनी शंकर ॐकार रुप, कमला देवी सती पार्वती का स्वरुप। हाथ में सोने का कलश मुख से अभय मुद्रा। श्वेत वर्ण सेवा पूजा करे, नारद इन्द्रा। देवी देवत्या ने किया जय ओंकार। कमला देवी पूजो केशर पान सुपारी, चकमक चीनी फतरी तिल गुग्गल सहस्र कमलों का किया हवन। कहे गोरख, मन्त्र जपो जाप जपो ऋद्धि–सिद्धि की पहचान गंगा गौरजा पार्वती जान। जिसकी तीन लोक में भया मान। कमला देवी के चरण कमल को आदेश।

ॐ ह्रीं क्लीं कमला देवी फट् स्वाहा।

सुनो पार्वती हम मत्स्येन्द्र पूता, आदिनाथ नाती, हम शिव स्वरुप उलटी थापना थापी योगी का योग, दस विद्या शक्ति जानो, जिसका भेद शिव शंकर ही पायो। सिद्ध योग मरम जो जाने विरला तिसको प्रसन्न भयी महाकालिका। योगी योग नित्य करे प्रातः उसे वरद भुवनेश्वरी माता। सिद्धासन सिद्ध, भया श्मशानी तिसके संग बैठी बगलामुखी। जोगी खड दर्शन को कर जानी, खुल गया ताला ब्रह्माण्ड भैरवी। नाभी स्थाने उडीय्यान बांधी मनीपुर चक्र में बैठी, छिन्नमस्ता रानी। ॐकार ध्यान लाग्या त्रिकुटी, प्रगटी तारा बाला सुन्दरी। पाताल जोगन (कुण्डलिनी) गगन को चढ़ी, जहां पर बैठी त्रिपुर सुन्दरी। आलस मोड़े, निन्द्रा तोड़े तिसकी रक्षा देवी धूमावन्ती करें। हंसा जाये दसवें द्वारे देवी मातंगी का आवागमन खोजे। जो कमला देवी की धूनी चेताये तिसकी ऋद्धि–सिद्धि से भण्डार भरे। जो दशविद्या का सुमिरण करे। पाप पुण्य से न्यारा रहे। योग अभ्यास से भये सिद्धा आवागमन निवरते। मन्त्र पढ़े सो नर अमर लोक में जायें। इतना दस महाविद्या मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में, गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला, कौलागढ़ पर्वत पर बैठ श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथ कर सुनाया श्री नाथ गुरुजी को आदेश। आदेश।

ॐ शिव गोरक्ष योगी

अतः साधक ने दस पंखड़ी वृत्त के बाहरी ९ पंखड़ी वाले वृत्त के ऊपर नवनाथ सिद्धों की निम्न मन्त्र द्वारा स्थापना पूजन करें। पूजन में आवाहन,

संकल्प, आचमन जल विधि आसन षोडश उपचारे पूजन करे। अष्ठगंध पुष्पमाला- कपूर आरती धूप दीप गौघृत की आरती तथा रोट दूध या मूंगदाल बडे खीर इत्यादि पकवान मिष्ठान्न का भोग लगावे - आदेश करें।

नवनाथ स्वरुप जाप

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ कार आदिनाथ ॐ कार स्वरुप बोलिये। (पूर्व अग्नेय क्रम से प्रथम पंखड़ी पर बिल्पात्र छोड़े और स्थापना करें) उदयनाथ पार्वती धर्ती स्वरुप बोलिये। (द्वितीय पंखड़ी पर मृतिका छोड़कर उदयनाथ जी की स्थापना करें) सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल स्वरुप बोलिये। (तृतीय पंखड़ी पर आचमनी से जल छोड़ें) सन्तोष नाथ विष्णु जी खडग-खाण्ड तेज स्वरुप बोलिये। (चतुर्थ पंखड़ी पर तुलसी दल छोड़े) अचल-अचम्बेनाथ आकाश (शेष) स्वरुप बोलिये। (पंचम पंखड़ी के ऊपर सर्प की कन्चली या आचमनी से दूध छोडे) गजबेली गज कंथडनाथ गणेशजी गजहस्ती स्वरुप बोलिये। (षष्टम पंखड़ी पर दुर्वा छोड़े) ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ अठारह वनस्पति स्वरुप बोलिये। (सप्तम पंखड़ी पर भोज पत्र छोड़े) माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ माया स्वरुप बोलिये। (अष्टम पंखड़ी पर सिन्दूर अक्षद छोड़ें) घटे पिण्डे नव निरन्तरे रक्षा करन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाल स्वरुप बोलिये। (नवमे पंखड़ी पर गौ धृत का ज्योत दीपक रखे या भभूती छोड़े)

इतना नवनाथ नाम स्वरुप जाप सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

तदपश्चात साधक ने यन्त्र के चौरासी पंखंडी वाले वृत्त के ऊपर निम्न "चौरासी सिद्ध गायत्री पाठ" पढ़कर पूर्व अग्नेय क्रम से लाल पुष्प और गोदावरी नदी के तट की मृतीका छोड़ कर चौरासी सिद्ध की आवाहन स्थापन करे या भभूती छोड़कर स्थापना कर सकते हो।

चौरासी सिद्ध गायत्री - पाठ

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ गंगा गोदा अनुपान शिला, सुमीर बैठे गुरु गोरखबाला। अनभय पंथ अनन्त शाख, ऋद्धि-सिद्धि सिद्धों का मेला।

ॐकार आदिनाथ तां अनुपम शिष्य, माया मछन्दर जालन्धर शिष्य। सनक सनातन–सनन्दन सिद्ध सनत्कुमार–मार्कण्डेय सिद्ध। मिन सिद्ध विरुपाक्ष, सिद्ध श्रृंगेरीपा चोली घोड़ा शिष्य। माया पार्वती उदयनाथ सिद्ध शीलनाथ टिण्टीणी योगी सिद्ध। कानपा उत्पत्ति गजकर्ण–कंथडनाथ, इनकी कथनी करनी वज्र काया भ्रवर गुफा अमिरस प्याला। रक्षा करें शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ की बाला।। १।।

ॐ मछन्दर पूता गोरख सिद्ध, मन्जु तारा शाबर सिद्ध। सिद्धासन सिद्ध–कालनाथ सिद्ध प्रभुदेव ता प्रकाशनाथ शिष्य। नारदा शारदा ता परमानन्द शिष्य, गौरव नाथ जी का मेरु सिद्ध, सन्तोष नाथ विष्णु जी का गोपाल सिद्ध! अचल अचम्बे नाथ शेष सिद्ध सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल रुप सिद्ध। इनकी योग युगती सान्धे काया काल लागै ना लिपै माया। रक्षा करें श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।। २।।

ॐ जती गोरख आप विराजे, आपै गुरु आपै चेले। कनकाई भुसकाई बाल गुन्दाई, बालकनाथ सारस्वताई। राजा भर्तृहरि–गोपीचन्द सिद्ध, भर्तृहरि–बैराग कायनाथ सिद्ध मुनि कपिल धुन्धली सिद्ध। बिरबन्क सिद्ध लधाई सिद्ध भूचर खेचर हवाई सिद्ध। ब्रह्माई नरमाई–मस्तनाथ सिद्ध, श्रृताई–भगाई–मनसाई सिद्ध। सहजाई सिद्ध काकचण्डी सिद्ध, लंका रावण– राजा राम सिद्ध गेहल्लारावल गोरनाथ सिद्ध। दया–दरिया सुखदेव सिद्ध, अल्लम–मल्लक अडबंग सिद्ध। एकनाथ–औघड़–वरदा सिद्ध, रतननाथ जी का कोरन्ट शिष्य। सिद्ध पूरनमल चौरंगी सिद्ध, नागार्जुन नागा–मानिक सिद्ध। गैनी–निवृत्ति–ज्ञानदेव सिद्ध, सिद्ध चरपट सोहिरोबा सिद्ध। चक्रनाथ– वक्रनाथ–सूर्य सिद्ध, भद्रनाथ–मद्रनाथ–चन्द्र सिद्ध। नाथ निरन्जन–सिद्धपाद शिष्य, पीर सत्यनाथ–याज्ञवाक् शिष्य। सिद्धबुद्ध–बिलेशाय सिद्ध, धीर–वीर–पिप्पलनाथ सिद्ध। बाल–प्रौढ़–जम्भ–सुरानन्द सिद्ध, देव–धर्म–गरीबनाथ सिद्ध इनकी ज्योत से ज्योत भया प्रकाशा चौरासी सिद्धाका भया उजियाला, गोरख कहे निरन्तर मेला, योगी जागो योग जगाना, अपना माही आपही प्रगटया गुरु शबद अनहद बाजा, रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। इतना नवनाथ चौरासी सिद्ध नाम लेते–जाप जपन्ते–जल में अग्नी प्रगटे, अग्नी में अम्बर

बरसे-अम्बर में वायु उड़े- बिना पंख योगी उडे यही योगी जल के ऊपर तरे यही योगी अग्नि में ना जले। जिसकी रक्षा शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी करें। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः साधक चौबीस पंखड़ी के वृत्त के ऊपर निम्न सिद्धि जाप पढ़कर प्रत्येक दल के ऊपर लाल पुष्प (कमल फूल) छोड़ के, प्रत्येक सिद्धि का अभ्यास करें। अर्थात् ग्यारह या इक्कीस प्राणायाम करके चित्त निरोध करने के पश्चात् प्रत्येक सिद्धि प्राप्ति का संकल्प करें तथा चिन्तन द्वारा गुरु गोरक्षनाथ जी से प्रार्थना करें- हम आपके मार्ग अनुसार योग साधना अभ्यास करने में हमको सफलता पूर्वक यश देवे और सिद्धियाँ प्रदान करें।

सिद्धि मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गुरु जी धरत्री उपर कौन कौन सिद्धि बोलिये। कौन सिद्धि सिद्ध कौन रुप से लान्छे। सुन बा अवधू धरत्री के ऊपर चौबीस सिद्धियां बोलिये।

प्रथम अनुमा सिद्धि बोलिये। ताको लान्छे सिद्ध माया को सुनि सूझे। द्वितीय महिमा सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध को लघु और दीर्घ भई दिखाये। तृतीय गरिमा सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध को ब्रह्मरुप दिखावे। चतुर्थ लघुमा सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध असंख्य रुप को धारे। पंचम प्राप्ति सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध मनवाँछित इच्छा को पावे। सष्ठम प्रकाशक सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध को सरब को सूझे। सप्तम असत्या सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्धों ता उंपावौष पावे। अष्ठमें आवास्या सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध ब्रह्मादिक से ही आगे में जावे। नवम अष्ठभुतान सिद्धि (मनोजा सिद्धि) बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध सब सरब कामना कि जाण पावे। दशमें छुछुमक्ता सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध मानवान्छे वहां शरीर छा जावे। ऐकादश अनुरा सिद्धि बोलिये। तांको लान्छे सिद्ध सीत उसन तै रहित हो जाये। द्वादश परकाया प्रबेश सिद्धि बोलिये। तांके लान्छे सिद्ध मनवान्छे पर-काया प्रवेश करे। त्रयोदश सूरजवसि सिद्धि बोलिये। तांका लान्छे सिद्ध सूर्ज को वस में रहे। चौदहवीं

जल वसि सिद्धि बोलिये । तांको लान्छे सिद्ध सब जल वस में राखे । पन्द्रहवीं दूरी श्रवण सिद्धि बोलिये । ताको लान्छे सिद्ध योजन योजन दूरी की सुने । सोलहवीं दूरी दरसन सिद्धि बोलिये । ताको लान्छे सिद्ध योजन योजन दुरी का दिखे । सत्रहवीं कांस कांमोद सिद्धि बोलिये । तांको लान्छे सिद्ध मनोकामना सइच्छा सो करें । अठाहरवीं अप्रहता सिद्धि बोलिये । ताको लान्छे सिद्ध मन वान्छीत मन माने तहा जाये । उन्नीसवीं देवता सैल सिद्धि बोलिये । ताको लान्छे सिद्ध देव देवत्या सुन कला करि आवे । बीसवीं रुपसेल देवता सिद्धि बोलिये । तांको लान्छे सिद्ध सभी देव देवत्या के रुप धारे ।

इक्कीसवीं हारे नहीं सिद्धि बोलिये । तांको लान्छे सिद्ध कहु प्रकार से भी कभी नहीं हारे ।

बाईसवीं त्रिकाल सिद्धि बोलिये । ताको लान्छे सिद्ध तीन काल का भविष्य सूझे ।

तेईसवीं अग्नी वसी सिद्धियाँ बोलिये । ताको लान्छे सिद्ध समस्त अग्नी को वश में करें ।

चौबीसवीं सबद बसी सिद्धि बोलिये । लांको लान्छे सिद्ध, सिद्ध शब्द फुरे वाचा फुरो ।

सुनबा अवधू जती चौबीस सिद्धि ब्रह्मज्ञानी के आडी आवे । यती चौबीस सिद्धि, सिद्धि आई तो सतगुरु प्रसादे तै तो त्यागे । सो ई जोगे श्वर, सो ये ब्रह्मज्ञानी । बल अपार गुरु गोरक्षनाथ जी समझावे । यती चौबीस सिद्धियों को त्यागे सो योगी परम ज्योति को पावे । इतना सिद्धि जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

तदपश्चात साधक ने यंत्र में सर्प चक्र की पूजा प्रार्थना करें तथा निम्न "जपा-अजपा गायत्री" पढ़कर अपने शरीर की समस्त चक्र भेद, उनकी इष्ट देवता, स्थान इत्यादि का पूर्ण अभ्यास करें, यंत्र के सामने अपने सुख-सुविधा अनुसार (पद्मासन, सिद्धासन या सरल आसन) आसन लगाकर प्राणायाम (योग) द्वारा कुण्डलिनी जाग्रति अभ्यास करें । सर्प चक्राकृति में वर्णित तथा जपा गायत्री जाप में वर्णित सभी चक्र मूलाधार चक्र से लेकर तालूचक्र

तक तथा तालूचक्र से निरालम्ब चक्र तक अपने चित्त निरोध करके, एकाग्र ध्यान योग करें और क्रम से प्रत्येक चक्र के इष्ट देवता स्मरण करें तथा मन्त्र जाप द्वारा प्रत्येक चक्र का अनुभव, परब्रह्म तक पहुंचने का प्रयास करें। अपने सतगुरु कृपा और गुरु गोरक्षनाथ जी के आर्शीवाद से त्रिशक्ति माता जी के शक्ति से तथा नौनाथ चौरासी सिद्धों की अनुकम्पा से अपनी कुण्डलिनी जाग्रत हो रही है। ऐसा विधान (भाव) तथा संकल्प करके साधना कार्यान्वित करे और प्रार्थना करें कि हम (साम दाम दण्ड) तथा अष्ठांग योग यम नियम का नियमपूर्वक नित्य कर्म करेंगे अर्थात् योग साधना करेंगे। यहां पूजन में प्रत्येक चक्र ऊपर कमल का फूल छोड़ें या अक्षत छोड़ें।

जागे योगी नींद से बैठे आसन मार।
अजपा गायत्री जपले भीतर करें विचार।

अजपा–गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ घट पिण्ड तत् का योगी कौन कौन चक्र घट के भीतरी। कौन स्थान कौन स्वरुपी, कौन देव देवत्या भया वासी। कौन शक्ति, कौन रंगी चक्र ऊपरी चक्र भ्रमन्ति।

ॐ प्रथम मूलाधार चक्र बोलिये। गुदा स्थाने चार पंखड़ी का कमल तहां गणेश नाथ जी जोगी। सिद्धि बुद्धि षट सौ श्वास अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान श्री गणेश नाथ जी को आदेश।

द्वितीय महापद्म चक्र बोलिये। बिन्दु स्थान (गुदा लिंग के बीच) तहां निलनाथजी जोगी। कुण्डलिनी शक्ति। अनन्त श्वास। जपा अजपा जाप परब्रह्म का ध्यान श्री निलनाथजी को आदेश।

तृतीय स्वाधिष्ठान चक्र बोलिये। लिंगे स्थाने छै पखंड़ी का कमल तहां सत्यनाथ ब्रह्मा जी योगी सावित्री शक्ति षटसहस्त्र श्वास जपा अजपा गायत्री जाप परब्रह्म ध्यान श्री सत्यनाथ जी को आदेश।

चौथा सुषुम्ना चक्र बोलिये। सुषुम्ना स्थाने छै पखंड़ी का कमल बोलिये। तहां गंगा जोगन, सती शक्ति प्राण अपान श्वास जपा अजपा जाप परब्रह्म का ध्यान श्री गंगा देवी को आदेश।

पांचवाँ गर्भ चक्र बोलिये। गर्भ स्थाने सप्त पंखड़ी का कमल बोलिये तहाँ अग्नि देवता प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म का ध्यान श्री अग्नि देवता को आदेश।

छठा कुण्डलिनी चक्र बोलिये। कटी स्थाने अष्ठ पंखड़ी का कमल तहाँ अग्नि देवता योगी। प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म का ध्यान श्री अग्नि देवता को आदेश।

सप्तम मणिपुर चक्र बोलिये नाभि स्थाने दश पंखड़ी कमल तहाँ सन्तोषनाथ विष्णु जी योगी लक्ष्मी शक्ति षटसहस्त्र श्वास अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान, श्री सन्तोषनाथ जी को आदेश।

अष्ठम लिंग चक्र बोलिये। लिंग स्थाने, तहाँ रुद्र देवता प्राण अपाण का श्वास बोलिये। जपा अजपा गायत्री परब्रह्म का ध्यान। श्री रुद्रनाथ जी को आदेश।

नौंवा अनहद (मनस) चक्र बोलिये। हृदये स्थाने द्वादश पंखड़ी का कमल तहाँ रुद्रनाथ (महादेव) योगी। श्वेत (ज्योति स्वरूप) वर्ण, उमा शक्ति षट सहस्त्र श्वास अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान। चक्र भेद हिरण्यगर्भ ऋषि का ध्यान, जो योगी इस चक्र का करे ध्यान पश्यति वाक् सामवेद का ज्ञान। श्री रुद्रनाथ जी को आदेश।

दसवाँ विशुद्ध चक्र बोलिये। कण्ठ स्थाने षोडश पंखड़ी का कमल तहाँ हंसनाथ (जीव) जी योगी अविद्या शक्ति, धुम्र वर्णी एक सहस्त्र श्वास जपा अजपा गायत्री, परब्रह्म ध्यान, जलन्धर बन्ध से विराट ऋषि परावाक् का ज्ञान। श्री हंसनाथ जी को आदेश।

एकादश प्राणचक्र बोलिये। गल स्थान बत्तीस पंखुड़ी का कमल तहाँ प्राणनाथ जी योगी परमशक्ति, उद्योत वर्णी प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान। जो योगी प्राणचक्र ध्यान कण्ठकू भये योगी ज्ञान। श्री प्राणनाथ जी को आदेश।

द्वादश अवल चक्र बोलिये। त्रिग्रंथीस्थाने (ब्रह्मा, विष्णु, महेश मिलन स्थान) बत्तीस पंखड़ी का कमल तहाँ ब्रह्मा विष्णु महादेव त्रिदेव योगी

त्रिशक्ति अरुणो छोत प्रभा का वर्ण, प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान, जो नर लागे अवल चक्र ध्यान, कालचक्र योगीणी चक्र भये परम ज्ञान। श्री त्रिदेव योगी को आदेश।

त्रयोदश चिबुक चक्र बोलिये चिबुक स्थाने चौंतीस पंखड़ी का कमल तहाँ प्राण देवता योगी सरस्वति शक्ति प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म का ध्यान, जो नर चक्र ध्यान पावे सो नर सब बोली भाषा ज्ञान भये। श्री प्राणदेवता को आदेश।

चौदह बलवान चक्र बोलिये। नासिका स्थाने (इड़ा पिंगला सुषुम्ना मिलन) त्रि पंखड़ी का कमल तहाँ प्रणवनाथ जी योगी, सुषुम्ना शक्ति गहरा लाल श्वेत वर्णी, प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म का ध्यान, जो नर चक्र का ध्यान बनाये सो उसके महा अहंकार मिट जावे, अ—उ—म बीज ज्ञान को पावे। श्री प्रणवनाथ जी को आदेश।

पन्द्रह कर्णमूल चक्र बोलिये। कान तले स्थाने छत्तीस पंखड़ी का कमल जहाँ नाद देवता योगी श्रुति शक्ति, काला पीतवर्णी, प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म का ध्यान, जो नर पावे चक्र का ध्यान, सो नर भये छत्तीस मात्राओं का ज्ञान श्री नाद देवता को आदेश। आदेश।

सोलह आज्ञा चक्र बोलिये भ्रू स्थाने द्वि पंखड़ी का कमल तहाँ आदिनाथ (हंस) जी योगी, ज्ञान शक्ति (सुषुम्ना) माणिक्य प्रभावर्णी, एक सहस्त्र श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान, जो नर चक्र पर ध्यान लगावे, सो नर विणानावस्था ज्ञान को पावे। श्री आदिनाथ जी को आदेश।

सत्रह त्रिवेणी चक्र बोलिये। भ्रूमध्य के ऊपर स्थाने छब्बीस पंखड़ी का कमल तहाँ आकाश देवता योगी, प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान। श्री आकाश देवता को आदेश। आदेश।

अट्ठारह चन्द्र चक्र बोलिये। भाल स्थाने बत्तीस पंखड़ी का कमल तहाँ चन्द्र देवता योगी, अमृत अमद शक्ति खेल, लाल वर्णी प्राण अपान, श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान। जो नर करे चक्र का ध्यान सो नर पावे सोलह कला का सम्पूर्ण ज्ञान, योगी करे तो पीवे अमृतपान। श्री चन्द्र देवता को आदेश।

उन्नीस अमृत चक्र बोलिये। भाल के ऊपरी स्थाने चन्द्र देवता योगी, अमृत अमद शक्ति, श्वेत लालवर्णी, प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान। जो योगी अमृत चक्र चढ़े सो योगी निरन्तर अमृतपान पीवे। श्री चन्द्र देवता को आदेश।

बीसवां ब्रह्मद्वार चक्र बोलिये भाल के ऊपरी स्थाने एक सौ पंखड़ी का कमल तहाँ ब्रह्मनाथ योगी, इंद्र धनुष वर्णी, प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान, श्री ब्रह्मनाथ जी को आदेश।

इक्कीसवां अकुल (कुण्डलिनी) चक्र बोलिये! भाल के ऊपरी स्थाने छ: सौ पंखड़ी का कमल तहाँ वासुकी नाग देवता, दित सुर्ज प्रभा वर्णी, प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान। जो नर लावे अकुल चक्र प्राण सो नर जावे अमर धाम श्री वासुकी नाग देवता को आदेश।

बाईसवां ब्रह्मरन्ध्र गुफा बोलिये मुर्धास्थाने सहस्त्र पंखड़ी का कमल तहाँ गुरु गोरक्षनाथ जी योगी, अनुपम शक्ति, एक सहस्त्र श्वास जपा अजपा गायत्री जाप परब्रह्म ध्यान। श्री गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश।

तेईसवां तालुचक्र भंवर गुफा बोलिये! (उर्ध्वरन्ध्र) तालिका स्थाने चौंसठ पंखड़ी का कमल तहाँ श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी योगी, सिद्धान्त शक्ति, प्राण अपान श्वास जपा अजपा गायत्री परब्रह्म ध्यान। जो योगी तालु चक्र पावे ध्यान सो योगी जावे समाधि स्थान, तहाँ बंद हो प्राण अपान का काम। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

चौबीसवां अलक्ष (बल) चक्र बोलिये। भ्रमर गुफा स्थाने एक हजार पंखड़ी का कमल तहाँ अलक्षनाथ योगी, अद्भुत (दीप्ति) वर्णी, महामाया अकाली शक्ति, महाविष्णु का ध्यान जो सिद्ध यह चक्र पावे तहाँ बैकुण्ठ धाम को जावे श्री अलक्षनाथ जी को आदेश।

पच्चीसवां पुण्यागार (अंकठ पीठ) चक्र बोलिये। भ्रमर गुफा ऊपरी स्थाने एक हजार पंखड़ी का कमल तहाँ अकलनाथ जी योगी, अकलेश्वरी शक्ति अद्भुत (द्विप्ती) वर्णी, अकल जी का ध्यान श्री सिद्ध अकलनाथ जी को आदेश।

छब्बीसवां कोलहाट (परम शून्य) चक्र बोलिये। शिखा मण्डल स्थाने

अनन्त नाथ जी योगी, अनन्त शक्ति प्रकाश, जो सिद्ध चक्र यह पावे तहां बैकुण्ठ धाम तथा कैलाश धाम को जावे। श्री अनन्त नाथजी को आदेश।

सत्ताईसवां वज्रदण्ड चक्र बोलिये। निरालम्ब स्थाने। तहां महा-विशाल, तेज पुन्ज प्रभा समाये। जो सिद्ध वज्रदण्ड चक्र भेद ठावे। तहां महाविशाल को पावे। श्री महाविशाल को आदेश।

अट्ठाईसवां असंख्य चक्र बोलिये निरालम्ब स्थाने असंख्य पंखडी का कमल तहां असंख्य योगी, असंख्य शक्ति, असंख्य वर्णी, शुद्ध प्रकाशी, जो सिद्ध यह असंख्य चक्र समाये तहां असंख्य मातृका, असंख्य गुरु उच्च स्थान को पावे, श्री नाथ असंख्य को आदेश।

ओ सिद्ध साधक और भी चक्र भई समाये और बिस शून्य में समाये, शून्य से परमशून्य समाये। ता इक्कीसवे ब्रह्मांड के पार में जा समा जावे। अन्त सा योगी युग युग ज्योति परम ज्योति को समेत्ये इति घटपिण्ड चक्र योग स्नानधाम समाप्त

श्री शम्भुजती ज्योति स्वरुप गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश।

अत: साधक ने सर्प चक्र वृत्त के प्रत्येक चक्र उपर कमल पुष्प चढ़ाकर पंचोपचारे पूजन करें।

अष्ठ प्राण पाल स्थापन

तदनन्तर यन्त्र के पूर्व दिशा में निम्न मन्त्र द्वारा सूर्य भगवान कि स्थापना तथा पंचोपचारे पूजन करे और अष्टांग योग के प्रति निष्ठा और नित्यक्रम से अष्टांग योग साधना ये हमें यशस्वी करे और नियमित सूर्य नमस्कार साधना करने का संकल्प करें।

सूर्य-नारायण गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ कार निरन्जन निराकार सूर्य मन्त्र तत सार। गगन मण्डल का कौन राजा कौन सवार कौन धर्म कौन जाती। ॐ गुरुजी गगन मण्डल का सुरज राजा, सात अश्व रथ सवार सत् धर्म जाति का क्षत्रिय, ब्रह्म आत्मा रुद्र का अवतार तिन काल का

काल निर्माण, प्रथमें मित्र, नाम द्वितीये विष्णु नाम तृतीये वरुण नाम, चतुर्थे सूर्य नाम, पंचमे भानु नाम, सष्टमें तपन नाम, सप्तमें इन्द्र नाम, अष्ठमें खगे नाम, नवमें गभस्ति नाम, दशमे यमाय नाम, ऐकादश हिरण्यरेता नाम, द्वादशे दिवाकर नाम, ऐता द्वादश नाम, नमो नमः । ॐ गुरु जी गगन मण्डल में जय जय ओंकार, कोटी देवता अपने ग्रह सवार ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि । आओ सिद्धों राखो मन खोजो पवन, खोजो सुर आवागमन । त्रिकुटी भई कोटि प्रकाश । निर्मल ज्योत दसवें द्वार सिद्ध साधक भरलो साखी श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने भाखी ।

ॐ ओ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमही तन्नो सुर्या प्रचोदयात् मन्त्र पढ़ अग्नि को जलावे सो नर सूर्य लोक में जाये बिना मन्त्र अग्नि को जलावे सो नर नरक में जाये । इतना सूर्य मन्त्र गायत्री सम्पूर्ण भया । श्री नाथजी गुरुजी को आदेश । अनन्त कोट सिद्धों में , त्र्यम्बक क्षेत्र, अनुपान शिला पर बैठ श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथ कर सुनाया । श्री नाथ जी गुरू जी को आदेश । आदेश ।

ॐ ओं ह्रां ह्रिं ह्रों सः सुर्याय नमाः। या

ओं ह्रिं ह्रिं सुर्याय नमः ।

अतः पश्चिम दिशा में सोमदेव (चन्द्र) का आवाहन तथा स्थापन करें और पंचोपचारे पूजन करें ।

सोमदेव (चन्द्र) स्थापन मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । सोमदेव मन धरी बा शून्य । निर्मल काया पाप ना पुण्य ॥ शशी - हर बरसें अम्बर झरे । सोमदेव गुण येता करें ॥ सोमदेव जाती का माली । शुक्ल वर्णी गोत्र अत्री ॥ ओं जमुना तीर स्थापना स्थापलो । कन्हेर पुष्प शिव शंकर की पूजा करें ॥ सत फूरे सत वाचा फूरे श्रीनाथ जी के सिंहासन उपर पान-फूल की पूजा चढ़े । हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि से भण्डार भरे, ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह, १२ राशी, १५ तिथि, मंगल रवि शुक्र शनि । बुध गुरू राहु केतु सुख करे दुःख हरे, खालि वाचा कभी ना पड़े ॥

ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृततत्वाय धीमही तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्। ॐ सोम मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करें श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

तदपश्चात यन्त्र के अग्नेय दिशा में कामधेनु गौ का अक्षदा रखकर आवाहन तथा निम्न मन्त्र से पंचोपचारे पूजन करें।

गौ (कामधेनु) गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आदि अनादि पारब्रह्म, पारब्रह्म में गिरी कैलाश, गिरी कैलाश में शिव-पार्वती ने किया निवास गौमाता गायत्री का भया प्रकाश। कहो स्वामी कौन गायत्री कहा से आयी। किस नाम से किसने सजाई। कौन माया कौन महिमा सजाई। सुन पार्वती कहे महादेव गौमाता गायत्री निरन्जन निराकार ने लायी। क्षीर सागर मन्थन में पायी। गौ माँ कामधेनु नाम से सजाई। तैतीस करोड़ देवी देवता में समाई। अनन्त महिमा निरन्जन माया ने जमायी। पीर किशन गोपाल ने चराई योग वशिष्ट ने सेवा भई नवनाथ चौरासी सिद्धों ने पुजाई ऋद्धि सिद्धि श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने रक्षा कराई। ओ गौ माँ तू बड़ी वरदायिनी तां दुग्ध में शक्ति बड़ी सुर तेज भयो चन्द का नूर सत का दुग्ध क्षीर सागर का नीर। अमर हो काया वज्र हो शरीर। नित्य योगी धरे धीर ॐ क्षीर सागर नन्दिन्यै विद्महे कामधेनु धीमही तन्नो गौ प्रचोदयात्। जो नर मन्त्र पढ़ गौ सेवा करे सो गौ लोक में जाय जो ना करें खाया पिया व्यर्थ जाय। इतना गौ गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः यन्त्र के नैऋत्य कोन में अक्षदा रखकर शेष भगवान का आवाहन करें तथा धूप दीप दूध भोग पंचोपचारे पूजन करें। निम्न मन्त्र का पाठ करें।

शेष-मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी पाताल लोक का कौन राजा, कौन घोड़ा कौन अस्वार, ॐ पाताल लोक का शेष राजा नीला घोड़ा, वासुकि राजा अस्वार, शेष वासुकि नव कुली नागों का राजा, संग

नाग पद्मनी महालीला, ॐ पाताल निरंजन निराकार निराकार पर शेष शय्या जिस पर शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने दसवें द्वार का सिक्का चलाया। यही सिक्का सदाशिव ने चलाया। यही सिक्का विष्णु देव ने चलाया। यही सिक्का कालिदन्त ने चलाया यही सिक्का पीर क्रिशन ने चलाया। यही सिक्का राजा लक्ष्मन को भया शीश शेष हाथ खप्पर टले काल कन्टक को मार रक्षन्ते अनभय पिण्ड प्राण। योगी को आदेश। गुरु को नमस्कार सखेडे को अलख जागे। इतना मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। नाथजी गुरु जी को आदेश।

अतः यन्त्र के उत्तर दिशा में धौल बैल का प्रथम जल छोड़कर आवाहन करें तदनन्तर थोड़ी भस्मी तथा गंध अक्षद तथा राई के ५ दाने चढ़ाये पूजन करें और निम्न जाप से स्थापन पंचोपचारे करें।

धौल बैल मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ! ॐ निराकार शुन में आद अलील, आद अलील धरा आधार, आधार धरा में बैठा अलख पुरुष, सत् गुरु मन्त्र अलख निरन्जन, अलख निरन्जन की चरण पादुका, चरण पादुका पर जल जल पर थल, थल पर मच्छ, मच्छ पर कमल का फूल, कमल के फूल पर शेष, शेष पर बैठा धौल बैल, धौल बैल सर्वांगत बैठी आद जोगन, धौल बैल के सिंग ऊपर जोगन ने राई ठहरई। उस पर अलख पुरुष ने तिन लोक सृष्टि उपजाई। ओ धौल बैल ने वरण शिव-शिवानी। धौल बैल ने वरण माई धरत्री। धौल बैल ने वरण सृष्टि सारी। वज्र की काया मन पवन छाया, कहे निरंजन सुन बा जोगन धौल बैल रहे गणेश के संग बुद्धि दाता, शक्ति दाता, सदा रहे आप मुक्ता धौल बैल सिद्ध साधक का साथी, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने भाखी। इतना धौल बैल जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

सूचना = धौल बैल = शुद्ध पवित्र धर्म का प्रतीक मानते है।

अतः ईशान्य दिशा में निम्न मन्त्र से अमृत घट की स्थापना एवं पंचोपचारे पूजन करें तथा गुरु शब्द मन्त्र का ध्यान करके अक्षदा छोड़ें।

अमृत घट मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अगम—निगम समन्दर खेले। चौदह रतन गर्भ में उपजे। तैंतीस कोट देवता आपही बांटे। अमिरस घट तो गोरख साधे। गोरख कहे सुन बा पूता। गुरु शबद का ध्यान धरीबा। आसन बैसबा पवन धरीबा चन्द्र—सूर का नूर धरीबा। सागर मन्थन तों घट में होईबा। गगन चढ़ीयो पाताल गंगा। त्रिकुटी ज्योति भई प्रकाशा। अनहद नाद खेले लाग्या। झिलमिल चन्दा अमिरस झरीया। अमिरस घट का पिवे पिवे पिण्डा। अमिरस घट का घ्रट में समाया। घट में पिण्ड पिण्ड में ब्रह्माण्ड। पिण्ड प्राण सिद्ध का अमर होईबा। सत सत बोलीबा गोरख धन्धा। सत है पूता गुरु का बन्दा। श्री नाथ जी गुरु ज़ी को आदेश। आदेश।

अतः दक्षिण दिशा में निम्न मन्त्र से वनस्पति स्थापन पंचोपचारे पूजन करें।

धन्वन्तरी—वनस्पति का कल्पवृक्ष

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ शुन्य शुन्य महाशुन्य, महाशुन्य में परम हंस जी बोलिये। सुनो सिद्धों बूटी की अमृत बाणी! जहां विराजे अठारह भार बनस्पति। चन्द्र रुपी चन्द्र कूपी, बोले चौरंगी शबद कोडी पलटें काया जडी बूटी भयी अमृत, कटे रोग कटे भोग निरोगी हो शरीर। बनस्पति अमिरस पीजे कल्पवृक्ष की छाया लुडीजे। सिंध साधक ने जोग जड़ीया। निर्मल मनसा पलटे पारा। कहे चौरंगी सुन बा पूता जड़ी ने जड़ीया बूटी गुन ज्ञानी। लागी या त्रिकुटी ब्रह्म कपाटी। सिद्ध शरण में धन्वन्तरी माई। सिद्ध चौरंगी ज्ञान पारखी ऋद्ध सिद्धि से भरपूर योगी। गोरखनाथजी परम सन्तोषी। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अतः चक्र के वायव्य कोण में शंख की स्थापना पंचोपचारे पूजन करें।

शंख गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। शंख शंख संजोग भया। ज्ञान गोदड़ी, चंचल विलया। निर्भै जोगी बेपरवाई। आदका शबद सिंगारो भाई। तुम हम अलील पुरुष तीनों मिलवा भाई। मैं तो पूछो पिण्ड

की अवधू योगी राई । अर्बद नर्बद धुन्धुकार । शब्द स्वाल न एकोंकार ॥ मरगई गौरा रह गया रुण्ड, शिवले पहरा गले में मुण्ड, हाड चाम पिन्जर का नला षट दर्शन ले घाली गला ॥ अमृत कुपी ले आगे धरी । जल थल में माता गौरजा खडी । जलमें करे मीन की थाप, पांच शंख ले छटी गायत्री गौरा । ले निकसी अपने हाथ । पढ़ो शंख गायत्री सार गंगा नदी भव सागर तार, अम्बे देवी का जपो जाप पड़े पिण्ड का पर हर पाप ॥ उठो नारायन करो पसाऊ चार चौकडी जीवकौ दिजै ठाऊ । षट मास जोगी हठ निग्रह करै ऐकोत्रसै पुरुषाले अमरापुर तरै ॥ पढ़ो वेद गायत्री सार पिण्ड प्राण उरधगति तार । गायत्री सावित्री चौपगी चौवेदी सुने सिंगी रुपे खुरी चँवर पुछी ॥ ताम्बे वरणी जमघंटी नदी वैतरणी तार, राख राख माता शम्भु शिव गायत्री राख । अघोर पिण्ड पडन्ता राख । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर राख । सत बोले सतवादी नर गुरु वाचा तत सार । शंख गायत्री संभालो बहुड़ी न लै अवतार । ॐ गुरु जी गंगा जमना सरस्वती तिनौ अखण्ड कवार, शंख ढरै शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्षद्वार । इतना शंख गायत्री सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

इति अष्ठ प्राणपाल स्थापन पूजन समाप्त ।

अष्ठ भैरव क्षेत्रपाल स्थापन

तदपश्चात यन्त्र के चारों द्वार और चारों दिशा कोन में प्रत्येक भैरव जाप, अलग-अलग पढ़कर अष्ट भैरवो कि अष्ट दिशाओं में स्थापना एवं पूजन करें ।

प्रत्येक दिशा पर हनुमान सिन्दूर, अष्टगंध अक्षदा, लाल फूल तथा सरसों का दीपक और गुग्गल का धूप नैवद्य रुप में कच्चा रोट प्रसाद, काले रंग का कपड़ा इ० सामोपचारे पूजन करें ।

प्रथम ईशान्य दिशा कोन में अक्षदा रखकर आवाहन स्थापन करें तथा निम्न मन्त्र पढ़े ।

आदि अलील नाथ जी एवम् सुध बुध भैरव

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी प्रथमे आदि अलील नाथ जी सुध बुध भैरव बोलिये । इक्कीसवे ब्रह्माण्ड बैठकर थापना थापलो ब्रह्मा विष्णु महादेव के पिता कहलेव, ब्रह्मा विष्णु महादेव के हाथ से सेवा-पूजा

आरती धूप–ध्यान करवा लो। लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा–दाना पानी आहार पुरा लो। प्रतिपाल करा लो, जिसकी अर्धांगिनी महा मनसा देवी मन स्थूल दृष्टि वाहन (कूप वाहन) प्रथमे अलील नाथ जी सुध बुध भैरो हमारे घट पिण्ड का भय हरण, दोज़क तरणं नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म क्षेत्रपाल जी आदेश। आदेश।

अत: उत्तर दिशा में (द्वार में) बभूत तथा अक्षदा रखकर आवाहन स्थापना करें।

ईश्वर महादेव जी भैरव

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! दूसरे ईश्वर महादेव जी भैरव बोलिये। उत्तरा खण्ड मानस सरोवर बैठकर थापना थापलो। ३३ करोड़ देवी देवता के राजा से सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करालो लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा दाना पानी आहार पुरालो, जिनकी अर्धांगिनी गंगा गौरजा देवी पार्वती वृषभ वाहन। दूसरे ईश्वर महादेव भैरो हमारे घट पिण्ड का भय हरण, दोजख तरण नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म। क्षेत्रपाल जी आदेश। आदेश।

अब धूप दीप नैवेद्य पूजा करें।

अत: दक्षिण दिशा में निम्न मन्त्र पढ़कर हल्दी कुंकुम गंध अक्षदा अर्पण करें।

दादा मत्स्येन्द्र नाथ भैरव

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु जी। तीसरे मत्स्येन्द्र नाथ जी भैरव बोलिये राघो मच्छ के घर लिया अवतार क्षीर सागर बैठ करले विस्तार। कदली कोट (सिंहल द्वीप) पर बैठ कर थापना थापलो। बावन पीर चौंसठ योगन सवा लक्ष भूतावली के राजा कहालो, बावन वीर चौंसट योगिनी सवालक्ष भूतावली के हाथ से सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करालो। जिसकी अर्धांगनी महामंगला पद्मिनी देवी मच्छ वाहिनी तीसरे मत्स्येन्द्रनाथ जी भैरो। हमारे घट–पिण्ड का भय हरण–दोजख तरण नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म क्षेत्रपाल जी आदेश। आदेश।

अत: धूप दीप नैवद्य पूजा करें।

अत: वायव्य (कोण) दिशा में निम्न मन्त्र पढ़कर भोजपत्र, अक्षदा अष्ठगंध चन्दन चढ़ावें।

सिद्ध चौरंगीनाथ भैरव

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! चौथे सिद्ध चौरंगीनाथजी भैरव बोलिये। राजा शालिवाहण के धर्म पुत्र कहालो बिना दोष हाथ पैर कटाए कुए में गिरालो। बारह वर्ष दूध भात का घड़ा, भरपूर राख कुएं के बाहर निकाल लो अठारह भार वनस्पति के राजगुरु कहा लो, अठारह भार वनस्पति के हाथ से सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करा लो। लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा दाना पानी आहार, पुरालो प्रतिपाल करालो जिसकी अर्धांगनी तारा त्रिकुट माता तोतला देवी (विश्वकर्मा) बल वाहन। चौथे सिद्ध चौरंगीनाथ जी भैरव हमारे घट पिण्ड का भय हरण दोजख तरण नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म। क्षेत्रपाल जी को आदेश। आदेश।

अब धूप दीप नैवद्य (दूध, चावल) तथा पूजा करें।

अत: पश्चिम दिशा (द्वार) में निम्न मन्त्र पढ़कर अक्षदा छोड़ें।

सत्यनाथ ब्रह्मा जी भैरव

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! पांचवे श्री सत्यनाथ ब्रह्मा जी भैरव बोलिये। पुष्कर तीर्थ पर बैठकर थापना थापलो। चार वेद छै: शास्त्र अठारह पुराण नव व्याकरण–संध्या तर्पण, गंगा गीता गायत्री सूर्य मन्त्र बीज मन्त्र होम जाप सूतक पातक सोलह श्रृंगार स्वामी कहालो। अट्ठासी हजार ऋषियों के राजगुरु कहालो। अट्ठासी हजार ऋषियों के हाथ से सेवा आरती धूप ध्यान करा लो। लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा दाना पानी आहार पुरा लो जिनकी अर्धांगनी सावित्री देवी हंस वाहन। पांचवे सत्यनाथ ब्रह्माजी भैरव हमारे घट पिण्ड का भय हरण, दोजख तरण नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म क्षेत्रपाल जी आदेश। आदेश।

धूप दीप नैवद्य पूजा करें। पुन: अग्नेय दिशा (कोण) में निम्न मन्त्र अक्षदा तथा तुलसी दल अर्पण करें।

सन्तोषनाथ विष्णु जी भैरव

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। छठे श्री सन्तोषनाथ विष्णुजी भैरव बोलिये। द्वारका क्षेत्र बैठकर थापना थापलो, लो चक्र हाथ में लेकर दैत्य दानव को संहार लो छप्पन करोड़ यादवों के राजगुरु कहालो। छप्पन करोड़ यादवों के हाथ से सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करालो। लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा दाना पानी आहार पूरा लो। जिसकी अर्धांगनी महालक्ष्मी देवी गरुड़ वाहनी। छठे श्री सन्तोषनाथ विष्णुजी भैरव जी। हमारे घट पिण्ड का भय हरणं दोजख तरणं, नाद, बिन्द ज्योति कला का धर्म क्षेत्रपाल जी आदेश। आदेश।

धूप दीप नैवद्य पूजा करें।

अत: नैऋत्य दिशा (कोण) में निम्न मन्त्र पढ़कर हनुमान सिन्दूर मिश्रित अक्षदा तथा (सफेद खील) और दूध का भोग लगावें।

वासुकी नागजी भैरव

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! सांतवें श्री वासुकी नाग जी भैरव बोलिये। पाताल लोक में बैठकर थापना थापलो। नव कुली नागों के राजा कहा लो। नवकुली नागों के हाथ सेवा पूजा आरती धूप ध्यान करालो। लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा दाना पानी आहार पुरा लो। जिसकी अर्धांगनी महालीला नाग पद्मनी देवी–कूर्म वाहन (स्वरुप वाहन) सांतवें वासुकी नाग जी भैरवजी–हमारे घट पिण्ड का भय हरण, दोजख तरणं नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म। क्षेत्रपाल जी को आदेश। आदेश।

धूप दीप नैवद्य पूजा करें।

अत: साधक पूर्व दिशा (द्वार) में निम्न मन्त्र पढ़कर केवल भभूत अर्पण करें।

श्री गुरु गोरक्षनाथ भैरव

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! आठवें श्री गुरु गोरक्षनाथ जी भैरव बोलिये। पिशोर स्थान बैठकर थापना थापलो। सिंहल द्वीप में तबला बजा लो लक्ष चौरासी जीया जून को चोगा दाना आहार पानी

पूरा लो। जिसकी अर्धांगिनी दृढ़ संतोषी विमला देवी मन पवन वाहन। आठवे श्री गुरु गोरक्षनाथ जी भैरो हमारे घट पिण्ड का भय हरण, दोजक तरण, नाद बिन्द ज्योति कला का धर्म क्षेत्रपाल को आदेश। आदेश।

धूप दीप नैव्यद्य पूजा करें।

इतना अष्ठ भैरव स्थापन पूजन सम्पूर्ण भया।

अतः साधक ने यन्त्र के पूर्व से लेकर अग्नेय दिशा तक सभी दिशाओं में कोटवाल स्थापना तथा पूजन करें। निम्न कोतवाली मन्त्र, पृथक पढ़कर प्रत्येक दिशा में कोटवाल आवाहन प्रित्यर्थ अष्ठगंध मिश्रित अक्षद छोड़े या भभूत छोड़े।

कोटवाली - पाठ

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदि अनन्त कोट सिद्धों का मेला। बिच सिंहासन विराजे गोरखनाथ बाला। आसन-आसन कौन विराजे। नवनाथ चौरासी सिद्ध विराजे। चौसठ जोगन विराजे, नव कोट दुर्गा विराजे। तैतीस करोड़ देवत्या विराजे पीर, तदबीर, महन्त विराजे क्षेत्रपाल, कोटवाल विराजे। ॐ गुरु जी-मेला-दरबारी कौन कौन कोटवाल विराजे। औघड़ पीर विराजे औघड़ पीर आओ नाथ दरबार में आवो अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जय जय कार।

(पूर्व दिशा में)

भानू कोटवाल

ॐ गुरुजी पूर्व दिशा को कौन कोटवाल बोलिये। पूर्व दिशा का भानू कोटवाल बोलिये। भानू कोटवाल तुम भी आओ नाथ दरबार में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जय जयकार, कहो भानू कोटवाल काहे का पाट, काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार। ॐ गुरु जी पूर्व दिशा का भानू कोटवाल सोने का पाट सोने का ठाठ सोने का घोड़ा सोने का तोड़ा, सोने का आसन सोने का वासन सोने का कमण्डल, कड़ा झोली पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार॥

(नैऋत्य दिशा में)

गणेश कोटवाल

ॐ गुरुजी नैऋत्य दिशा में कौन कोटवाल बोलिये, नैऋत्य दिशा का गणेश कोटवाल बोलिये। गणेश कोटवाल तुम भी आवो नाथ दरबार में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार, तुम भी आये जय जय कार, गणेश कोटवाल कहो काहे का पाट काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा का तोड़ा, काहे का आसन काहे का वासन, काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार। ॐ गुरु जी नैऋत्य दिशा का गणेश कोटवाल चान्दी का पाट चान्दी का ठाठ चान्दी का घोड़ा, चान्दी का तोड़ा, चान्दी का आसन, चान्दी का वासन, चान्दी का कमण्डल, कड़ा झोली झण्डी पत्तर देवगुरु को नमस्कार।।

(ईशान्य दिशा में)

हनुमान कोटवाल

ॐ गुरुजी ईशान्य दिशा का कौन कोटवाल बोलिये ईशान्य दिशा का हनुमान कोटवाल बोलिये। हनुमान कोटवाल तुम भी आओ। नाथ दरबार में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जय जयकार। हनुमान कोटवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, कहो का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार। ॐ गुरु जी ईशान्य दिशा का हनुमान कोटवाल पवन का पाट, पवन का ठाठ, पवन का घोड़ा, पवन का तोड़ा, पवन का आसन पवन का वासन पवन का कमण्डल, कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।।

अब नैऋत्य दिशा में (भूमि पर पाताल लोक)

शेष कोटवाल

ॐ गुरुजी (नैऋत्य दिशा) पाताल लोक का कौन कोटवाल बोलिये। पाताल लोक का शेष कोटवाल बोलिये। शेष कोटवाल तुम भी आओ नाथ दरबार में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार शेष कोटवाल कहो काहे का पाट काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का

आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी देव गुरु को नमस्कार।

ॐ गुरुजी पाताल लोक का शेष कोटवाल, बक का पाठ, बक का ठाठ, बक का घोड़ा बक का तोड़ा बक का आसन, बक का वासन, बक का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।

(पश्चिम दिशा में)

चन्द्रमा कोटवाल

ॐ गुरुजी पश्चिम दिशा का कौन कोटवाल बोलिये। पश्चिम दिशा का चन्द्रमा कोटवाल बोलिये, चन्द्रमा कोटवाल, तुम भी आओ नाथ दरबार में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार। चन्द्रमा कोटवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।

ॐ गुरु जी पश्चिम दिशा का चन्द्रमा कोटवाल रुपे का पाट, रुपे का ठाठ, रुपे का घोड़ा, रुपे का तोड़ा, रुपे का आसन, रुपे का वासन, रुपे का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी, देव गुरु को नमस्कार।

(वायव्य दिशा में)

भैरो कोटवाल

ॐ गुरुजी (वायव्य दिशा) मृत्युलोक का कौन कोटवाल बोलिये। मृत्युलोक का भैरो कोटवाल बोलिये। भैरव कोटवाल तुम भी आओ नाथ दरबार में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार। भैरव कोटवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।

ॐ गुरु जी मृत्युलोक का भैरो कोटवाल मिट्टी का पाठ, मिट्टी का ठाठ, मिट्टी का घोड़ा मिट्टी का तोड़ा, मिट्टी का आसन, मिट्टी का वासन, मिट्टी का कमण्डल, कड़ा. झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।

(उत्तर दिशा में)

गरुड़ - कोटवाल

ॐ गुरुजी उत्तर दिशा का कौन कोटवाल बोलिये। उत्तर दिशा का गरुड़ कोटवाल बोलिये। गुरुड़ कोटवाल तुम भी आओ नाथ दरबार में आवो अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जय जय कार। गरुड़ कोटवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी देवगुरु को नमस्कार। ॐ उत्तर दिशा का गरुड़ कोटवाल लोहे का पाट, लोहे का ठाठ, लोहे का घोड़ा, लोहे का तोड़ा, लोहे का आसन, लोहे का वासन, लोहे का कमण्डल कड़ा झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी, देवगुरु को नमस्कार।।

[उत्तर (आकाश लोक) दिशा में]

इन्द्र कोटवाल

ॐ गुरु जी। आकाश लोक का कौन कोटवाल बोलिये। आकाश लोक का इन्द्र कोटवाल बोलिये। इन्द्र कोटवाल तुम भी आओ नाथ दरबार में आओ, अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै.जै. कार, इन्द्र कोटवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।

ॐ आकाश दिशा का इन्द्र कोटवाल वज्र का पाट वज्र ठाठ, वज्र का घोड़ा, वज्र का तोड़ा, वज्र का आसन, वज्र का वासन, वज्र का कमण्डल कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।।

(दक्षिण दिशा में)

यम कोटवाल

ॐ गुरुजी दक्षिण दिशा का कौन कोटवाल बोलिये, दक्षिण दिशा का यमदेव कोटवाल बोलिये यम कोटवाल तुम भी आवो नाथ दरबार में आवो, अंदर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जय जय कार। यम कोटवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे

का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार।

ॐ दक्षिण दिशा का यम कोटवाल पाश का पाट, पाश का ठाठ, पाश का घोडा, पाश का तोड़ा, पाश का आसन, पाश का वासन, पाश का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी, देवगुरु को नमस्कार।

(अग्नेय दिशा में)

अग्नि कोटवाल

ॐ गुरुजी अग्नेय दिशा का कौन कोटवाल बोलिये। अग्नेय दिशा का अग्निदेव कोटवाल बोलिये। अग्नि कोटवाल तुम भी आओ नाथ दरबार में आओ, अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार, अग्नि कोटवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।

ॐ अग्नेय दिशा का अग्निदेव कोटवाल काष्ठ का पाठ, काष्ठ का घोड़ा, काष्ठ का तोड़ा, काष्ठ का आसन, काष्ठ का वासन, काष्ठ का कमण्डल, कड़ा, झोली, झण्डी, पत्तर, फावड़ी, देवगुरु को नमस्कार।

इतना दश दिशा कोटवाल जाप सम्पूर्ण भया। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश।

शस्त्र स्थापन

तदपश्चात साधक ने यन्त्र के सभी दिशाओं में श्री नाथ सिद्धों के शस्त्र साहित्यों की स्थापना तथा पूजन करें।

यन्त्र के अग्नेय दिशा में धूना स्थापन करें। यन्त्र के पूर्व में धूना की थोड़ा सा अंगार या बभूत स्थापन करें तथा निम्न मन्त्र उच्चारण कराके पूजन करें या अक्षदा छोड़े।

प्रचण्ड धूनी जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु जी। प्रथमे सिमरु श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी। हाटनाथ जी, वाटनाथ जी दो चेले, दग दग धर्तरी प्रचण्ड धूनी-अग्नि का कोट पवन की खाई अलष पुरुष की सेज बिछाई,

बाला योगी पौढ न आये। ऊंचे चढ़कर नाद बजाये कानो में कुण्डल सिर पर जटा। हाथ फावडी कान्धे लता नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने मिलकर किया धूनी पानी का मता। सिद्ध ने फरमाई साधक ने आनी धूनी पाणी, सिद्धों की बानी-धूनी का पोट, अग्नि का कोट-धुंए का गोला-तीनों पुरुष एक समान- न जले धर्ती- न जले आकाश- धूनी का हुवा प्रकाश। जीया जन्तु कीड़ा मकौड़ा मोक्ष मुक्ति फल पाई। पांच कोस आगे से पांच कोस पीछे से पांच कोस दाहिनी भुजा पांच कोस बांई भुजा बीस कोस की ऋद्धि, सिद्धि ला धूनी माई। नहीं लावे तो श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई। कौन आसन जपू जाप कौन आसन धरु ध्यान - कौन आसन रहूं शून्य में कौन आसन कंथू ज्ञान। पूर्व आसन जपू जाप-उत्तर आसन धरु ध्यान- दक्षिण आसन रहूं शून्य मे पश्चिम आसन कथू ज्ञान। इतना प्रचण्ड धूनी जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

सामुपचारे पूजन करें।

अतः साधक ने यन्त्र के उत्तर दिशा में आधारी (कुबड़ी) स्थापित करें। निम्न मन्त्र पढ़कर अक्षदा छोड़े।

कुबड़ी (आधारी) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अलख निरन्जन ने अलख जताई। मनसा धाती ने दिन्ही कुबड़ी। तब पिछे अलख निरन्जन ने सिद्धों को दिन्ही। आओ सिद्धों धरलो ध्यान, अलष पुरुष का ज्ञान। आधारी लागे ठोडी आधार, पाताल गंगा चढ़ गई कैलाश। बगल कुबड़ी जोगी महेश, भंवर गुफा में लायी जोत। शिव जी कहे सुनबा मछन्दर, कुबड़ी सदा राखीयो पास, काल कण्टक ना आये पास। पढ़ मन्त्र कुबड़ी आधार सो जोगी शिवपुरी में जाय बिना मन्त्र आधारी लगाय सो जोगी नरक लोक जाये। इतना कुबड़ी (आधारी) मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अब सामुपचोर पूजन करें।

अतः यन्त्र के दक्षिण दिशा में त्रिशूल की स्थापना करें। त्रिशूल के तीन धारियों में ३ नींबू लगावे या निम्न मन्त्र पढ़कर अक्षदा छोड़े।

त्रिशूल का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ धर्ती सों आकाश, महाधरर्ती, महाआकाश त्रिशूल लाया सिद्ध निवास, ॐ पहली धार अनहद बानी दुजी धार अमृत बानी तीसरी धार अलख निर्वाण। सिद्ध साधक ने त्रिशूल धरीया। लोहा त्रिशूल जोगी निर्वाण। आसन पवित्र त्रिशूल पवित्र कहे मछन्दर सुन बा गोरक्ष त्रिशूल सदा राखियो पास काल कण्टक नहीं आवे पास त्रिशूल चाले भूत पिशाच निकट नहीं आवे। इतना त्रिशूल मन्त्र सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अब सामुपचारे पूजा करे।

तदपश्चाद नैऋत्य दिशा में निम्न मन्त्र पढ़कर अक्षदा चढ़ाकर झोली की स्थापना करे तथा झोली में भभूत पावडी रखे।

झोली मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी का आदशे। ॐ गुरुजी। कौन दिल कुन दुरवेश कौन पुरुष ने मुण्डे केश, कुन शक्ति ने झोली दिनी कौन पुरुष ने लिनी। ॐ गुरुजी दिल दरयाव मन्त्र दुरवेश। अलख पुरुष ने मुण्डे केश। आदशक्ति ने झोली दिनी, अलष पुरुष ने लिनी। झोली हमारी काम धेनु, संसार हमारी बाड़ी। गुरु प्रताप से भिक्षा मांगू अन्त काल सारी। सिद्ध झोली सिद्ध सबुरी। जारो बल का नगर में खबर कर, नागा वागा, निर्वाणी नाथ अवधू आया। जाग तो जंजीर जड़ा पग जड़ा तोड़ा गले माला पैर धागा, गुरु देवन के चरण कमल में चित्त लागा। इतना झोली मन्त्र सम्पूर्ण भया श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी अनन्त कोट सिद्धों में बैठकर सुनाये। इतना झोली मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

सामुपचारे पूजन करें।

अतः पश्चिम दिशा में निम्न मन्त्र पढ़कर तथा अक्षदा चढ़ावे और चिमटा की स्थापना करें।

चिमटा का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु जी कैलाश पर्वत से योगेश्वर आया। अलष पुरुष से चिमटा पाया। कौन शबद से चिमटा लाया

कौन से उतरे पार। चकमक चिमटा धूनी पाणी। सब राखिये साथ। गुरु शब्द सिद्धों की बानी। लोहे का चिमटा सतगुरु का ज्ञान—चिमटा राखे योगी निर्वाण चिमटा बाजे चिमटा गाजे, चिपिया मांही चिमटन की काया—चिमटे ने सारी सृष्टि को जगाया। इतना चिमटा जाप सम्पूर्ण भया नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

सामुपचारे पूजन करें।

अत: यन्त्र के ईशान्य दिशा में निम्न मन्त्र पढ़कर खप्पर की थापना करें तथा अक्षदा छोड़े।

खप्पर का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। खप्पर धर्ती, खप्पर आकाश। खप्पर में तीन लोक करे निवास। पहला खप्पर ॐ कार का—दूसरा खप्पर सिद्धों का तीसरा खप्पर धरत्री सारी, चौथा खप्पर माई की ज्योत प्रकाश। कौन खप्पर आटे घाटे—कौन खप्पर ब्रह्मा बाटे? कौन खप्पर खाय खीर कौन खप्पर उद्धारे शरीर। चान्दी खप्पर आटे घाटे, सोना खप्पर ब्रह्मा बाटे। जहरी खप्पर खाय खीर, मिट्टी खप्पर उद्धारे शरीर। खप्पर में खाय— मसान में लेटे—काल भैरो की पूजा कौन मेटे। राजा मेटे राजपाट से जाय, योगी मेटें योग ध्यान से जाय। काल भैरो कपले केश गुरु का बालका करता फिरे अलेष—अलेष काल पीला तोतला, तीनो रहे पाताल? मस्तक बिन्दी सिन्दूर की, हनुमान भैरो योधा करें रक्षपाल, नाथजी गुरुजी आदेश। आदेश।

सामुपचारे पूजन करें।

तदपश्चात यन्त्र के पूर्व दिशा में विभूती रखे। निम्न मन्त्र पढ़कर विभूती स्थापन करें या अक्षदा छोड़े।

विभूति—मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। विभूती मात विभूती पिता। विभूती तीन लोक तारीणी। विभूती माई जहां पाई वही पर लगाई, बैठे सिंहासन पूजा करी। आदि का योगी—युक्ति कि विभूत, सत्य का नाती धर्म का पूत? काल कण्टक को मार के भया अवधूत। विभूति किस

आनी किस छानी ? ईश्वर महादेव ने आनी, श्री माता गौरजा ने छानी । अम्बर झरे धरती फले धर्ती का पान फूल गावत्री चरे । गायत्री गोवरी करे - सूर्य मुख सूखे अग्नि मुख जले । सो विभूती श्री शम्भुजती नौनाथ चौरासी सिद्धों को चढ़े ? चढ़ाई खाक-हुआ दिल साफ, अलख निरंजन आप ही आप उल्टन्त भस्मी पल्टन्त काया, सिद्धों का मार्ग साधक ने पाया । अलष पुरुष अविनाशी धरो प्रभू का ध्यान, भस्मन्ती यशवन्ती - राजा प्रजा को वश करन्ती । साध सन्त को रखन्ती, काल कण्टक को भखन्ती इतना विभूति मन्त्र सम्पूर्ण भया श्री नाथजी गुरुजी को आदेश । आदेश ।

सामुपचारे पूजन करें ।

तदनन्तर यंत्र के वायव्य (कोन) दिशा में भैरव चोला की स्थापना करें । निम्न मन्त्र पढ़कर अक्षदा चढ़ावे या तिल्ली का तेल दीपक जलावे ।

भैरव चोला

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी तुम भैरव काली का पूता - सदा रहे मतवाला चढ़े तेल सिन्दूर गल फूलो की माला । जिस किसी पर संकट पड़े, जो सुमिरे तुम्हे उसकी रक्षा करें । तुम हो रक्षपाल- भरी कटोरी तेल की धन्य तुम्हारा प्रताप काल भैरव, अकाल भैरो, लाल भैरव, जल भैरो, थल भैरो बाल भैरव आकाश भैरव क्षेत्रपाल भैरो-सदा रहो कृपाल इतना भैरव चोला जाप सम्पूर्ण भया नाथजी गुरु जी आदेश ।

सामुपचारे पूजन करें ।

इतना शस्त्र स्थापन सम्पूर्ण भया ।

अस्त्र-स्थापन

अत: साधक ने यन्त्र के चार दिशा के द्वार पर चार अस्त्र की स्थापना करें, प्रथम पूर्व द्वार में निम्न मन्त्र द्वारा अस्त्र की स्थापना करे तथा श्मशान बभूत या अक्षदा छोड़े ।

कालास्त्र (गायत्री)

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ काल सोहम काल, काल काल महाकाल अजर काल बज्र काल, जून काल, भंवर काल, अमर काल, अनभय काल, निर्भय काल, जोत काल, सर जीवन काल, हम को

रख दुष्ट को भख, दुष्ट मर जाई, काल परम हंस का सुमिरन करे नाद बिन्द ताके घटे जरे तीन चुल्लू पानी जो पीवे सो योगेश्वर युग युग जीवे संसार झरे, संसार फिरे निर्भय योगी अनभय तरे बारह काल हमारे भाई हमको छोड़ और ले जाई जीवन मोक्ष काल की पाई जो जाने काल पुरुष का भेव आप ही कर्ता आप ही देव इतना काल अस्त्र परम हंस गायत्री जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

(यह मन्त्र पढ़कर श्मशान बभूत छोड़ें।)

अत: दक्षिण दिशा द्वार पर निम्न मन्त्र पढ़कर अघोर अस्त्र स्थापित करें।

अघोर गायत्री अस्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश।ॐ गुरुजी!

ओ जो प्रमाण भक्षन्ते, तिल मात्रा तिलक करन्ते आद धर्म पार ब्रह्म बाला श्री सुन्दरी बाला नमोस्तुते अघोर, अघोर महा अघोर, ब्रह्मा अघोर, विष्णु अघोर, शिव अघोर, शक्ति अघोर, पवन अघोर, पाणी अघोर, धरती अघोर, आकाश अघोर, चन्द्रमा अघोर, सूरज अघोर, पिण्ड प्राण हमारे बजर अघोर, आदन्त साधन्त अघोर, मंत्र स्थिरन्त, उठ हाथ की काया, आद का योगी अनाद की बभूत, सत का नाती धर्म का पूत, बिन्द होना आई नाद भूर नाद, न किसी का ध्यान, किसे का पूता पाणी सेत, न गुद गुद सेत, न हाड हाड सेत, न चाम चाम पड़े तां धरती माता लाजे पिण्ड पड़े, तो सतगुरु राखे ऐसे पद को पूजन्ते योगी आद अलील अनहद बरसे अमरी साधे अमर काया, बजरी साधे बजर काया, हाक मार हनुमन्त आया, लोहे का कोट घाव न आवे, रक्षा करे अचल बनखण्डी पीर, काला खिन्था काला टोप काला है ब्रह्माण्ड, धर्म धूप खेवन्ते, वासना गई इकीसवे ब्रह्माण्ड, धर्म गुसाई जी धोती पारवाली, सातवें पाताल, सातवे पाताल पर, परम तत, परम तत मध्ये जोत, जोत मध्ये परम जोत, परम जोत मध्ये उत्पन्न भई माता अघोर गायत्री, अजपा जपा जपन्ति पाचास लाख कोटि धरती मध्ये फिरन्ती, कुष्टी को कोढ़ तरन्ति, अचल चल चलन्ति, अभेद मण्डल भिदन्ति छिन्दति अछिन्त को पिवन्ति पीव पीव करन्ति, रुद्र देवता के वचने वचने आपे के काज कुवारी आपे के पशु भरता तीनों जाय तीन पुत्र ब्रह्मा, विष्णु, महेश अमर रहे सेना सुमेर पटन सुनो देवी पार्वती जी आप कहे आप कहावें, आप सुने, आप सुनावे, पदमावती पार्वती श्याम को सलाम गुरा को प्रणाम पंडित को प्रमोद करी मूर्ख के हिर्दे न भावी फुरो ऋद्ध

फुरो सिद्ध सत श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अनन्त कोट सिद्धा ले उतरेगी पार मुझ को भी ले उतरेगी पार श्रीनाथ जी की चरण कमल पाद का को नमस्ते नमाभ्याहम् इति अघोर गायत्री सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

तथा दक्षिण द्वार पर ग्राम वेस की मिट्टी रखकर मन्त्र पढ़े या अक्षदा छोड़े।

तद्पश्चात यन्त्र के पश्चिम दिशा द्वार पर निम्न मन्त्र पढ़कर विर-अस्त्र की स्थापना करें।

विर-अस्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी उलटा तरकस उलटा तीर। उलटा चले श्री हनुमन्त विर सवा शेर का तोशा खाय, अस्सी कोश की धवन लगाय, मेरे दुश्मन को पकड़ लाय ना पकड़ लाय तो शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आन, सत् फुरे सत वाचा फुरे घट पिण्ड की रक्षा गुरु गोरक्षनाथ जी करें। इतना विर मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

घोड़े के तबेले की मृतीका रखे या अक्षदा छोड़े तथा अक्षद, सिन्दूर से पूजन करें। अतः यन्त्र के उत्तर दिशा में निम्न मन्त्र पढ़कर गोरक्ष फटकार अस्त्र की स्थापना करें।

फटकार अस्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। गोरक्ष डिब्बी जहां खाई वही दब्बी। गोरक्ष डिब्बी गोरक्ष फटकार, पढ़कर मारु मंगलवार, काले तिल गोरी राई, चौराहे की मिट्टी मसान की छाई। जो न लगे तो गुरु गोरक्ष नाथ जी की दुहाई, गोबर खाय विष्टा खाय कपड़े फाड जंगल भाग जाय। फिर न देखे घरबार भर मता फिरे दशवा द्वारा फुर मन्त्र ईश्वर महादेव तेरी वाचा फुरे। घट पिण्ड की रक्षा श्री गुरु गोरक्षनाथ जी करे। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

उत्तर दिशा में बभूत रखकर स्थापन करे। चौराहे की मृतीका + काले तिल– राई + मसान की बभूती एक पात्र में रखे या अक्षदा छोड़े।

अतः यन्त्रस्थ नाथ देवता स्थापन के पश्चात यन्त्र को प्राण गायत्री मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करें और यथा उपचारे यन्त्र का पूजन करें। यन्त्र के ऊपर जल धारा (शंख से) अभिषेख करें या दाहिने हथेली स्पर्श करें और अक्षदा छोड़े।

प्राण-गायत्री मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अपरम्पार-अपरम्पार में ब्रह्मपार-ब्रह्मपार में गिरी कैलाश। कैलाश पर गगण मण्डल छाया, ज्योति से त्रिकुटी भई सोहं से मार्ग पाया। कैलाश में महादेव पार्वती ने किया निवासा; प्राण गायत्री का भया प्रकाशा।

ॐ गुरुजी, कौन पुरुषने बान्धी काया, कौन डोर से हंसा आया ? कौन कमल से संसार रचाया, कौन कमल से जीव का वासा ? कौन कमल से निरन्जन निराई; कौन कमल में फिरी दुहाई ? कहो सिद्ध असंख्य युग की बात नहीं तो धरो सब ठाट-बाट। ॐ गुरुजी अलख पुरुष ने बान्धी काया। बेगम डोर से हंसा आया। नाभी कमल से संसार रचाया। हृदय कमल में जीव का वासा। कुन्ज कमल में निरन्जन निराई। त्रिकुटी महल में फिरी दुहाई।

कौन के हम शिष्य हैं। कौन हमारा नाम ? कौन हमारा इष्ट है, कौन हमारा गांव ? शबद के हम शिष्य हैं। सोहं हमारा नाम। प्राण हमारा इष्ट है; काया हमारा गांव।

ॐ सों हंसाय विदमहे प्राण प्राणाय धीमही तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात। इतना प्राण गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अंतः श्री नाथ सिद्ध मन्त्र की षोडशोपचार पूजन करें।

षोडशोपचार-पूजन

(१) प्रथम आसन मन्त्र (पृष्ठ नं० १७५) से अक्षदा को पाटला या चौकी के ऊपर डाले या नया वस्त्र या कुश की चौकी रखे।

(२) आसन बैठने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १७५) से यन्त्र आसन के ऊपर रखे-स्थापित करें।

(३) पाद्य स्नान, जल गायत्री (पृष्ठ नं० १७५) से दक्षिण मुखी शंख द्वारा जल छोड़े और आचमन करें।

(४) अर्ध्य—अलील गायत्री (पृष्ठ नं० १७६) से त्रिवेणी संगम या समुद्र जल या गंगा जल शंख द्वारा करायें।

(५) मधु स्नान—मधुबीज मन्त्र से (पृष्ठ नं० १७७) शहद शंख द्वारा करायें।

(६) घृत स्नान—धृत मन्त्र (पृष्ठ नं० १७७) से शंख द्वारा करायें।

(७) दधि स्नान—दधि जाप (पृष्ठ नं० १७७) से शंख द्वारा करायें।

(८) मधु पर्क स्नान—मधुपर्क जाप (पृष्ठ नं० १७८) से शंख द्वारा घृत + शहद + दधि मिश्रण से स्नान करायें।

(९) पय: स्नान—गौ गायत्री मन्त्र (पृष्ठ नं० १७९) से शंख द्वारा गौ दूध से स्नान करायें।

(१०) पंचामृत स्नान—पंचामृत जाप (पृष्ठ नं० १८०) से शंख द्वारा घी + चीनी + मधु + दुध + दही यंत्र के ऊपर छोड़े।

(११) केशर स्नान—केशन मन्त्र (पृष्ठ नं० १८०) से दूध से केशर मिलाकर यन्त्र को लेपन करें।

(१२) उबटन स्नान—चन्दरस मन्त्र (पृष्ठ नं० १८१) से चन्दन घीस कर यन्त्र को लेपन करें।

(१३) शुद्धोदक स्नान—जल गायत्री (पृष्ठ नं० १८१) से शंख द्वारा जल यन्त्र के ऊपर छोड़े। अत: वस्त्र से यन्त्र पोछ लेकर आसन पर रखें।

(१४) भस्मी स्नान—भस्म गायत्री (पृष्ठ नं० १८२) से यन्त्र को भस्म लगावे।

(१५) जटा बन्धन (पृष्ठ नं० १८४) पढ़कर यन्त्र के नाथ सिद्धों के ऊपर अक्षदा या भभूती छोड़े।

(१६) भगवा धारण करने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १८५) पढ़कर यन्त्र के ऊपर भगवा नया वस्त्र अर्पण करें।

(१७) बाघाम्बर, मृगछाला का मन्त्र (पृष्ठ नं० १८५) पढ़कर यन्त्र के नीचे रखे।

(१८) आसन लगाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १८५) पढ़कर यन्त्र बाघाम्बर या मृगछाला या कुश या पाटला या चौकी या अक्षदा के ऊपर यन्त्र स्थापना करें।

(१९) आसन ग्रहण करने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १८६) पढ़कर यन्त्र को दाहिना हाथ स्पर्श करें।

(२०)(कुण्डल) दर्शन का मन्त्र (पृष्ठ नं० १८६) पढ़कर यन्त्र ऊपर कुण्डल जोड़ी अर्पण करें (कुण्डल सुवर्ण, चान्दी, ताँबा मृतीका, गेण्डा, हस्तीदिन्त स्पटिक इ०) अर्पण करें। मृतीका कुण्डल उत्तम है।

(२१) नादजनेऊ पहनने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १८७) पढ़कर यन्त्र के ऊपर उन का नाद जनेऊ अर्पण करें।

(२२) रुद्राक्ष मन्त्र (पृष्ठ नं० १९०) पढ़कर यन्त्र उपर १ मुख से २१ मुख रुद्राक्ष माला या १०८ रुद्राक्ष दाने की माला अर्पण करें।

(२३) तिलक मन्त्र (पृष्ठ नं० १९१) पढ़कर केशर मिश्रित चन्दन पीसकर या अष्टगंध का तिलक यन्त्र को लगावे।

(२४) बिल्व चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९३) पढ़कर यन्त्र के ऊपर बिल्वपत्र या १०८ बिल्वपत्र की माला छोड़े।

(२५) अक्षद चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९४) पढ़कर यन्त्र के ऊपर अक्षदा छोड़े।

(२६) पुष्प चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९५) पढ़कर यन्त्र के ऊपर पुष्प सुगंधित या पुष्प माला चढ़ावे।

(२७) अत्तर चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९६) पढ़कर यन्त्र के ऊपर अत्तर सुवासिक स्पर्श छोड़े।

(२८) धूप वासना का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९८) पढ़कर यन्त्र को धूप या गुग्गल धूप दिखावे।

(२९) ज्योत जगाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० १९९) पढ़कर यन्त्र को गौघृत दीपक दिखावे या आरती उतारें।

(३०) रोटगोदी देने का मन्त्र (पृष्ठ नं० २०३, २०४) पढ़कर तथा रोट (मुक्ता) काटने का मन्त्र (पृष्ठ) पढ़कर यन्त्र को भोग लगावे। विधि वर्णन दिया है।

(३१) ताम्बुल मन्त्र (पृष्ठ नं० २०४) पढ़कर पान सुपारी, लवंग, इलायची, केशर इ० ताम्बुल यन्त्र को अर्पण करें।

(३२) छत्र—चवर मन्त्र (पृष्ठ नं० २०५) पढ़कर यन्त्र के ऊपर छत्र (सोना, चान्दी, ताँबा, वस्त्र इ०) धारे तथा चँवर घुमावे।

(३३) झोली मन्त्र (पृष्ठ नं० २०५) पढ़कर यन्त्र के नैऋत्य दिशा में नाथों की झोली अर्पण करें।

(३४) खप्पर मन्त्र (पृष्ठ नं० २०६) पढ़कर यन्त्र ईशान्य दिशा में खप्पर (चान्दी, सोना, अष्ट धातु मृतिका, नारियल, लौकी इत्यादि) वर्णित खप्पर अर्पण करें।

(३५) चिमटा मन्त्र (पृष्ठ नं० २०७) पढ़कर यन्त्र के पश्चिम दिशा में चिमटा (लोहा, चान्दी, सोना, पीतल, ताँबा इत्यादि) धातु का अर्पण करें।

(३६) त्रिशूल मन्त्र (पृष्ठ नं० २०७) पढ़कर यन्त्र के दक्षिण दिशा में त्रिशूल, (लोहा, ताँबा, पीतल, सोना, चान्दी इत्यादि) धातु का अर्पण करें।

(३७) डमरु मन्त्र (पृष्ठ नं० २०८) पढ़कर यन्त्र के ऊपर डमरु छोड़े।

(३८) कमण्डल मन्त्र (पृष्ठ नं० २०८) पढ़कर यन्त्र को कमण्डल अर्पण करें। ताँबे का कमण्डल योग्य है।

(३९) शंख गायत्री (पृष्ठ नं० २०९) पढ़कर यन्त्र को दक्षिण मुखी शंख अर्पण करें।

(४०) भैरव दण्ड मन्त्र (पृष्ठ नं० २१०) पढ़कर यन्त्र को भैरव दण्ड अर्पण करें।

(४१) कड़ा (कण्गण) मन्त्र (पृष्ठ नं० २११) पढ़कर यन्त्र को कड़ा (सोने, चाँदी, ताँबा, लोहा, अष्ट धातु गेंडा या काला—लाल धागा) अर्पण करें।

(४२) नागफनी बजाने का मन्त्र (पृष्ठ नं० २१२) पढ़कर नागफनी यन्त्र को अर्पण करें।

(४३) तुम्बा मन्त्र (पृष्ठ नं० २१३) पढ़कर यन्त्र को तुम्बा अर्पण करें।

(४४) कुबड़ी (आधारी) मन्त्र (पृष्ठ नं० २१३) पढ़कर यन्त्र के उत्तर दिशा में अर्पण करें।

(४५) भैरव मतंगा (मेखला) मन्त्र (पृष्ठ नं० २१४) पढ़कर यन्त्र को भैरव मतंगा अर्पण करें।

(४६) चरण पादुका (खडावा) मन्त्र (पृष्ठ नं० २१५) पढ़कर यन्त्र के खडावा (लकड़ी या चन्दन) अर्पण करें।

(४७) कपूर मन्त्र (पृष्ठ नं० २१५) पढ़कर यन्त्र को कपूर जला के आरती करें।

(४८) नादपूजा तथा गुरु वन्दना (पृष्ठ नं० २१६) पढ़कर चक्र सन्मुख आदेश करें।

अत: साधक यन्त्र के सन्मुख हाथ जोड़कर निम्न प्रार्थना करें तथा चक्र स्तुति करें।

स्तुति—प्रार्थना जाप

ॐ गोदावरी त्र्यम्बक् क्षेत्र अवलागढ़ पर्वत अनुपान शिला। जहां पर अनन्त कोट नवनाथ सिद्धा का युग युग का मेला। आसन बैठे सिंहासन बैठे गुरु गोरखनाथ जी बाला।

ॐ कार शिव स्वरुप गोरख बोलिये। पांचो गुरांका हुकम लीजिये। भर पात्र पाटन पूजा राखीजै। कैलाश पर्वत से शिव जी आये, साथ नव करोड़ दुर्गा ले आये। उत्तराखण्ड से अनन्त कोट सिद्ध आये संग दस महाविद्या शक्ति को ले आये। ब्रह्मलोक से ब्रह्मा जी आये, आसन मार चारों वेद पठन्ते, बैकुण्ठ लोक से विष्णु जी आये सात समन्दर से लकड़ी ले आये। अठारह सिद्ध जोगन ने अग्नि प्रजाली, गौरी गणेश ऋद्धि सिद्धि से भण्डार भरीजे। दस दरवाजे कोटवाल खड़े हाथ छड़ी ले मन्त्र पठन्ते। शत्रु मार बला भखन्ते, राजा प्रजा के विघ्न हरन्ते। आठों प्रहर अष्ठ भैरो खड़े हाथ खन्जर खप्पर अस्त्र चलाये, काल—अघोर अस्त्र चलन्ते। वीर, फटकार अस्त्र फुरेन्ते। भैरो बल भखन्ते—बला भखन्ते पापी पाखण्डी को भखन्ते, कण्टक मार खप्पर में लीजिये। दैत्य मार दानव मारन्ते।

ॐ विधी विधान गोरखबाला धूनी चेताये। फिरे चौबीस सिद्धिया आगे पाछें। सती जती बाल ने सिद्ध आसन चताया। काया खड दर्शन अठाईस चक्र का भेद खुलाया। पाताल नागन चढ़े इक्कीस ब्रह्माण्डा। गगन मण्डल में सूरज चेते चन्द नूर में अमिरस बरसे। आवो सिद्धों अमृत पान का लियो स्वाद। जती गुरु गोरखनाथ अलख निर्वाण।

ॐ गुरुजी ज्ञान ध्यान का पाठ सुनावो। ऋद्ध सिद्ध से झोली भर दो। सुन बा अवधू गुरु मिल्यावे ईश्वर कु, पिण्ड के अन्दर ब्रह्माण्ड कु, जीव मिल्यावे ईश्वर शिव कु। मन उनमन माया त्यागी, सत्य की दृष्टि अपने ही माही। जो जाने योगी का योग भेद–आप ही कर्ता आप ही देव। गुरु प्रसादे माया त्यागै। योगी योग ब्रह्मज्ञानी। बल अपार आये गुरु गोरखनाथ समझावै। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

इति श्रीनाथ सिद्ध यन्त्र स्थापना पूजन सम्पूर्ण भया। श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

यन्त्र का नक्शा (चित्र) एवं कार्यविधि ग्रंथ के अन्तिम पृष्ठ पर देखें।

टिप्पणी–यह श्रीनाथ सिद्ध यन्त्र स्थापना पूजन विधि–विधान यदि–

१०० बार करने से शतयन्त्र सिद्धियाँ

१००० बार करने से सहस्त्र यन्त्र सिद्धियाँ

१०००० बार करने से दस सहस्त्र यन्त्र सिद्धियाँ

१००००० बार करने से लक्ष यन्त्र सिद्धियाँ प्राप्त होंगी।

❋❋❋

अखण्ड दीपज्योत जगाना पूजा तथा विधि

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी प्रत्यक्ष ज्योति स्वरुप हैं। अर्थात गुरु गोरक्षनाथ जी के पूजन प्रति साक्षी रूप से तथा दीपज्योति गुरु गोरक्षनाथ स्वरुप का प्रतीक मानकर दीप प्रज्वलित करें। प्रथम साधक दीप ज्योति के लिये बत्ती (रुई की) बनावे, बत्ती बनाते हुए निम्न मन्त्र पढ़ें।

बत्ती बनाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ धर्त्ती, सोहं आकाश; महा अंग धर्त्ती महाशून्य महाआकाश। उन्हां सिद्धा लिया निवास पांच महेश्वर घटी तलाई गुरुजी के वचन से बत्ती बनाई। श्री नाथजी गुरुजी आदेश। आदेश।

अत: एक पाटला के ऊपर गौ घृत का दीप रखें, दीप में बत्ती तथा (गौघृत) सार डाले हुये निम्न मन्त्र कहें।

ज्योत में सार (गौघृत तेल इ०) डालने का मन्त्र

सत नमो आदेश। ॐ गुरुजी सार सार महासार सार परसो ज्योत चेते भुजा पसार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अब ज्योत को प्रज्वलित करते हुये निम्न मन्त्र पढ़े।

अखण्डी संस्थाप्य महामाया ज्योत मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ असंख्य युग युगंत योग आद जोत युगात जोत आवे अविनाशी न हले न चले न डिंगे न डोले न भखे न चखे आप निरन्जन ने कही कहाई कहो सिद्धो ज्योत कहासे आई, गुरु के वचन धर्णा के शब्द से आई आओ सिद्धों भरलो साखी, सत् सत् श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने भाखी। उत्तर दिशा से धुन्दू कारा जोत जगाय किया जै कारा सोहं शब्द ले उतरो पारा, अन्नपूर्णा अन्नपूरे तत पूरे गणेश पांच महेश्वर आज्ञा करें तो जोत जगाय महेश, जोगी को आदेश। सन्यासी को नमो नारायण, जंगम को शिव शरण, ब्रह्मा को नमस्कार, सखेड़े को अलख जागे साध को सलाम गत गंगा को हरनाम।

इतना अखण्डी संस्थाप्य महामाया ज्योत मन्त्र सम्पूर्ण भया श्री नाथजी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः साधक ने अखण्डी दीप का सामुपचोर पूजन करें तथा निम्न मन्त्र पढ़कर प्रार्थना नमस्कार करें।

अखण्ड जोत के पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। जगमग ज्योत जहा विराजे, जीव में आन तहां विराजे। तर्वरखण्डी एक है, जिनका जहरा मता आकाश; अखण्डी जोत सिर छत्र है। विष्णु जी के पास। आवो सिद्धों अखण्डी एक है। ध्यावे सिद्ध करोडी सन्त। दर्शन किये सुख उपजे सुफल हमारी जात, पांच महेश्वर आज्ञा करें शीश नवाऊँ मात; ऊँचा मन्दिर लाल द्वारी उस पर बैठी आद क्वारी, अखण्ड जोत जी को आदेश। आदेश।

अन्त में अखण्डी ज्योत को नमस्कार करें और इस दीप ज्योत के साक्षभूत श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी का पूजन प्रारम्भ करें।

इतना अखंडी दीपज्योत जगाना समाप्त। श्री गुरु गोरक्षनाथजी को आदेश।

गुरु गोरक्षनाथ जी की प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा

अत: साधक ने गुरु गोरक्षनाथ जी की प्रतिमा के ऊपर निम्न गायत्री मन्त्र पढ़कर जलधारा (गंगा जल से) या गौघृत धारा दक्षिण मुख शंख द्वारा अभिषेक करे (मूर्ति के बजाय चरण पादुका भी ले सकते हैं)

प्राण गायत्री

ॐ सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ अपरम्पार, अपरम्पार में ब्रह्म पारा, ब्रह्म पारा मे गिरी कैलाश । कैलाश पर गगन मण्डल छाया । ज्योति से त्रिकुटि भई ॐ सोहं से मार्ग पाया । कैलाश गिरी पर महादेव पार्वती ने किया निवासा । प्राण गायत्री का भया प्रकाशा । ॐ गुरुजी । कौन पुरुष ने बान्धी काया कौन डोर से हंसा आया ? कौन कमल से संसार रचाया कौन कमल से जीव का वासा; कौन कमल में निरन्जन निराई; कौन कमल में फिरी दुहाई ? कहो सिद्धों असंख युग की बात, नहीं तो धरो: सब ठाठ-बाट । ॐ गुरु जी, अलख पुरुष ने बान्धी काया, बेगम डोर से हंसा आया ? नाभि कमल से संसार रचाया । हृदय कमल में जीव का वासा; कुन्ज कमल में निरन्जन निराई ? त्रिकुटि महल में फिरे दुहाई । कौन के हम शिष्य है । कौन हमारा नाम ? कौन हमारा इष्ट है कौन हमारा गांव ? शबद के हम शिष्य है । सोहं हमारा नाम । प्राण हमारा इष्ट है । काया हमारा गांव । ॐ सोहं हंसाय विद्महे प्राण प्राणाय धीमही तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात् ।

अत: प्रतिमा को वस्त्र से पोंछकर श्रीनाथ जी के चरणों पर या हृदय पर साधक अपना दाया हाथ रखकर या धातु (सोना, चांदी इ०) मूर्ति छोटी हो तो बायें हाथ की हथेली में रखकर दाहिने हाथ से मूर्त ढक लें । (पादुका) तथा निम्न मन्त्र पढ़े ।

प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ सों ॐ आँ, ह्रीं, क्रों, यं रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, स: जती गोरक्षनाथ य प्राण: इह ज्योति स्वरूप, जपा-अजपा हंसा: प्राण प्राणाहा: ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं, रं, लं, वं, शं षंसं हं, सः, जती गोरक्षनाथाय घट पिण्डमें, शिव-शक्ति की माया। जीव रूप में शिव गुरु गोरक्षनाथ कहाया।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः जती गोरक्षनाथाय दस इन्द्रियों की काया। पांच तत का किया पसारा। अमर योगी अमर काया। अक्षय योगी सबसे न्यारा। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

यह बीज मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करें। अतः निम्न मन्त्र पढ़कर प्रतिमा उपर अक्षदा छोड़ें।

काया गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। दूर दिगम्बर से पार ब्रह्म जी आये थे। सेली सिंगी नाद मुद्रा लाये थे। ज्ञान की गोदड़ी विभूति का बटुवा लाये थे। पांच तत्व का महल बनाय, अन्दर कूप बनाये थे। काया कोट दश दरवाजे लाये थे। तुरी बनाई-तुरी जगाई पानी में एक लाल लगाय, सुरति पवन डुलाये थे। चकमक झाड़ बसन्तर काढे, जगमग ज्योत जलाये थे। एक ज्योति सकल घट भीतर, सतगुरु ज्ञान बताये थे। ऊपर बैठ तमाशा देखे, अनहद नाद बजाये थे। योगी जिसका नाम, हिन्दू के गुरु, मुसलमान के पीर, बाबा आदम के फकीर। जो न माने तो काफर बेपीर। श्री नाथजी गुरु जी को आदेश। आदेश।

या

केवल "ॐ शिव गोरक्ष योगी" इस बीज मन्त्र का १०८ बार जाप कराकर मूर्ति के ऊपर जल तथा अक्षद छोड़कर प्राण प्रतिष्ठा करें।

बाद में षोडशोपचार, पंचोपचार या यथा लब्धोपचार से श्रीनाथ जी के पूजन करें।

इतना गुरु गोरक्षनाथ जी प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा समाप्त। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

***

षोडशोपचार–गुरु गोरक्षनाथ जी–पूजन

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी का ध्यानः- प्रथम साधक ने गँरह प्राणायाम कराके या इक्कीस प्राणायाम कराके एकाग्र चित्त से गुरु गोरक्षनाथ जी का ध्यान करें।

ध्यानं

सत नमो आदेश। गुरु गुंसाई को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ लाल तिलक तिन लोचन; निज तन सेहत भस्मन्ती। चांद-सूरज रत्नजडीतः अद्भूत कुण्डल काननमे। सेली श्रृंगी-अनहद नाद-रुद्र माल कण्ठन में। भाल चन्द्र लघु जटा विलसत; कटी सेहत मृगछाले। बाघाम्बर, खाकांम्बर आसन, ध्यान लगावे शून्य- नमें। युक्त की झोली मुक्त मेखला, धीरज धूनी चेतन में। डमरु धारी त्रिशूलधारी युग-युग बीते योगमे। नाथ निरन्जन जती गोरखनाथ ज्योत स्वरुप कहलावे। परम ज्योति आप विराजे गुरु शबदू झालरी बाजे। मत्स्येन्द्रनाथ जी के पूता आँ अवधूता शीश निमाऊ चरणों में।

श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश।

यह पढ़कर प्रतिमा के ऊपर एक बिल्वपत्र और लाल पुष्प चढ़ावे।

आवाहन

अतः निम्न मन्त्र पढ़कर श्री नाथजी की प्रतिमा के ऊपर अक्षदा छोड़े या चरण पर जल छींटे।

गुरु गोरक्ष गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलख निरन्जन कौन स्वरूपी बोलिये। अलख निरन्जन ज्योति स्वरुपी बोलिये। ओमकारे शिवरुपी, संख्या ने साधरुपी, मध्याने हंस रुपी, हंस परमहंस दो अक्षर, गुरु तो गोरक्ष, काया तो गायत्री ॐ ब्रह्म, सोहं शक्ति, शून्य माता, अविगत पिता, अभय पंथ, अचल पदवी, निरन्जन गोत्र, विहंगम जाति, असंख्य प्रवर, अनन्त शाखा, सूक्ष्मवेद, आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी-श्री ॐ गो गोरक्षनाथाय विद्महे-शून्य पुत्राय धीमही, तन्नो-गोरक्ष निरन्जनः प्रचोदयात्। इतना गोरक्ष गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: श्रीनाथ जी के प्रतिमा समीप, पाटले का आसन या कुशासन रखकर निम्न मन्त्र से आसन देवें।

कुशासन लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ सोहं का सकल पसारा? राख लेव धर्ती माता साथ हमारा। हम योगी युगत का आया। अक्षय योगी कुश का आसन लगाया। पिण्डे छेदकर पिण्ड बनाया, अजर अमर कर धर नाथ करत सेवा। श्री नाथजी गुरु जी आदेश। आदेश।

अत: आसन का मन्त्र उच्चारण कहते हुये श्री गुरु गोरक्षनाथ जी को आसन ग्रहण करना विनती करें।

आसन बैठने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि अनादि अनन्त का मेला। ब्रह्म समाधी किना मेला। सार की कुंजी वज्र का ताला अनन्त आसन बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथजी गुरुजी आदेश। आदेश।

पाद्य स्नान

साधक कमण्डल में गंगाजल लाये, एक शंख (दक्षिण मुख) में गंगा जल लेकर के प्रतिमा के चरण के ऊपर या शीश के ऊपर डाले और निम्न मन्त्र पढ़कर जलाभिषेक करें।

जल गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जल मन्जन जल देवता; गुरु मन्जन गुरु ज्ञान। हाथ मन्जन धर्तरी अलष पुरुष का ध्यान। पानी पानी महापानी, सोती काया अमर कर जानी, उड़े न हंस बिखरे न काया, शिव शक्ति से ध्यान लगाया। ॐ अलील आदि अलील, अलील पुरुष की माता क्वारी; पिता यती, नित्य योगी घरे धीर, निरोग हो काया वज्र हो शरीर। झड़े पारा पीवे योगी, उड़े काया। अलख निरन्जन तेरी माया। ॐ जल बिम्बाय, विद्महे, नील पुरुषाय धीमही, तन्नो अलील प्रचोदयात। इतना जल गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरु जी को आदेश।आदेश।

आचमन मन्त्र

अतः आचमनी से जल लेकर मूर्ति के ऊपर निम्न मन्त्र पढ़कर छोड़े।

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विदमहे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात्। इतना गुरु गोरक्षनाथाय पाद्य पूजन, आचमन पूजन सम्पूर्ण भया। श्रीनाथ जी गुरु जी आदेश। आदेश।

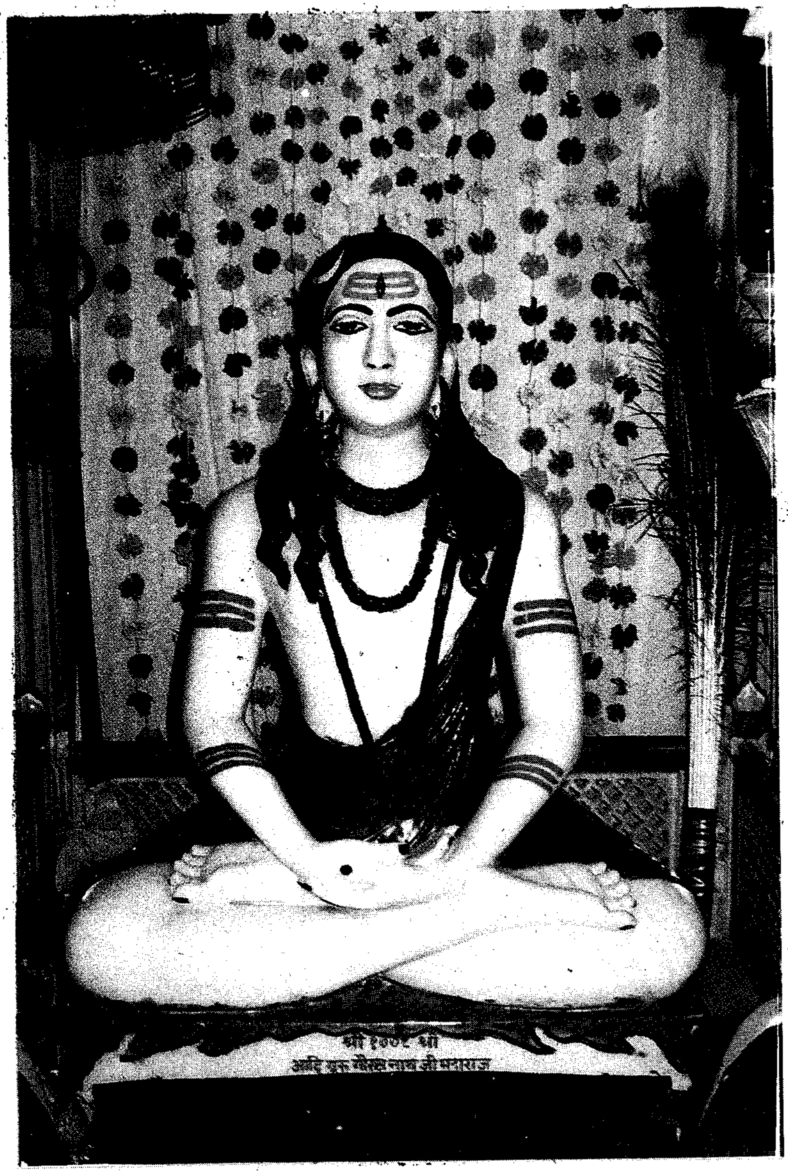
अर्घ्य

तदनंतर त्रिवेणी संगम का जल या समुन्दर जल या नारियल का जल या गंगा जल, शंख में लेकर के श्रीनाथ जी की प्रतिमा के ऊपर दोनों हाथ से जलाभिषेक स्नान निम्न मन्त्र द्वारा करें।

अलील जल गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। कहा थे पवन, कहा थे पानी? कहा थे नर, कहा थे नारी? कहा ब्रह्म, कहां विष्णु, कहा शक्ति परनाली, कहा चन्द्रमा थे। कहां सुर्यज थे। कहा नव लक्ष तारा? जब हुई वेद की बानी। ॐ गुरुजी असंख्य युग वरते अलील रहते उहज आपोआपना-सुभयधाम कमल में विश्राम। आसन से उपजी मनसा धाती। जिसने तीन रत्न पैदा किये ब्रह्म विष्णु महेश। अलख का मेला हुवा-रल मिल सिद्धि कियो अलील का जाप। माता क्वारी पिता यती, लोह में काया, वज्र में पानी-अनन्त कोटी सिद्धों के मनमानी! झड़े पारा पीवे योगी-पानी उल्टे पलटे काया। सिद्धो मार्ग साधक ने पाया। ॐ गुरु जी प्रथम अलील नाम, द्वितीये उदक नाम, तृतीय तुरे नाम, चतुर्थी जल नाम, पांचवे पाणी नाम, षष्ठे ब्रह्मनाम, सप्तमे अचल नाम अष्ठमे आब नाम, नवमे नीर नाम, दश में वीर्य नाम। एकादशे रुद्र नाम, द्वादशे जिन्दा पीर बोलिये। ॐ गुरु जी जल जागो, थल जागो, जल जागो, जलाबिम्ब की काया। अलील पुरुष जी तुम जागो शरण तुम्हारी आया। इतनी अलील गायत्री जो प्राणी सिमरन करें। सो प्राणी भव सागर तरे। इतना गुरु गोरक्षनाथ जी अर्थ पूजा कारण अलील गायत्री सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

श्री योगाचार्य शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ जी





श्री भैरवनाथाय नमः



श्री कालिका माता (कलकत्ता)

मधु स्नान

अत: शंख में मधु (शहद) लेकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए श्री नाथजी की प्रतिमा के ऊपर अभिषेक करें।

मधुबीज मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ आदका योगी बीज लगाय। जुगत की माया वृक्ष लगाय। सत का योगी फुल फुलाय। लख चौसष्ट जोगन शहद बनाय। ऋद्धि–सिद्धि से भण्डार, भर, पात्र बैठे गौरी गणेश, पात्र बैठे देव महेश! हे धरत्री आनन्दी तेरा नाऊ आसन दे पात्र दें। अट्ठारह भार वनस्पति का शहद दे। गुरु प्रसादे मधु का नीर। मधु स्नान करन्ते हनुमन्त वीर! इतना गुरु गोरक्षनाथ जी मधु स्नान सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

पुन: शंख में गंगाजल लेकर निम्न मन्त्र से जल दें।

ॐ गुरु जी अलख निरन्जन तेरी माया। जल बीम्बाय विद्महे निल पुरुषाय धीमहि तन्नो अलील प्रचोदयात्।

घृत स्नान

साधक शंख में गौघृत लेकर दोनों कर से श्रीनाथ जी की प्रतिमा के ऊपर निम्न मन्त्र से अभिषेक करें।

घृत मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजीको आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ श्री गोपाल गोपाल गोरक्षक ऋद्ध पर बैठे गोपाल किशन आप देवी यशोदा माई पूजो केशर और कपूर दोहरा कोट तेहरी खाई, मेवा माखन माखन मंथन में बन्या घृत; ऋद्धि–सिद्धि से भरे भण्डार, शिव शक्ति की माया गौ माँ तेरा घृत पांच महेश्वर आज्ञा करायी, सिद्धों ने अमृत की धार लगाई। इतना गुरु गोरक्षनाथ जी घृत स्नान सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

पुन: शंख में गंगा जल लेकर जल स्नान करायें।

ॐ गुरुजी अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विद्महे निल पुरुषाय धीमहि तन्नो अलील प्रचोदयात्।

दधि स्नान

अत: शंख द्वारा दधि प्रतिमा पर छोड़े तथा निम्न मन्त्र पढ़ें।

दधि जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! प्रथम सत्य, सत्य पर धर्म, धर्म पर गौधर्म, गौधर्म पर चँद सूर का नूर, नूर बरसे गौ का दूध, गौदूध से उपज्या दधि माखन। ॐ गोपाल किशन मन में राखो धीर, गाय का दही माखन पूर, क्षीर सागर का नीर। पांच महेश्वर ईश्वर आनी, आसन बैठे अन्नपूर्णा माई, ऋद्धि सिद्धि भरे गणेश गौरी, दधि चढ़ाये श्री भैरो पीर। इतना गुरु गोरक्षनाथ दधि स्नान सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी आदेश। आदेश।

पुन: शंख से गंगा जल चढ़ावे।

ॐ गुरुजी अलख निरन्जन तेरी माया जल बिम्बाय विद्महे निल पुरुषाय धीमहि तन्नो अलील प्रचोदयात।

मधुपर्क स्नान

तदपश्चात शंख में घृत + शहद + दधि का मिश्रण लेकर दोनों कर से निम्न जाप पढ़कर प्रतिमा के ऊपर अभिषेक करें।

मधुपर्क जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! पाताल पात्र गंगा निर मधुमिलप ल्याया निश्चल बीर। निश्चले बीर एक करी तदबीर; ब्रह्मा जी आप मन में राखे धीर, मधु ब्रह्माजी ल्यायजी, घृत ल्याये विष्णुजी, अन्नपूर्णा शिव जी लाये, सब सार श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथ पाये। पात्र भई भरपूर सिद्धों के मुख से बरसे नूर, पढ़ मन्त्र पात्र चढ़ावे, अग्नि को जगावे, पढ़ मन्त्र अलील को जगावे अमर हो योगी सदा युग चारे, जीव पूजे, जीव जपे तिसकी रक्षा शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी करें। इतना गुरु गोरक्षनाथ मधुपर्क स्नान सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

तदनन्तर शंख द्वारा जल छोड़ें।

ॐ गुरुजी अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमहि तन्नो अलील प्रचोदयात्।

पयः स्नान

अत: साधक ने गौ का कच्चा दूध शंख में लेकर दोनों कर से निम्न मन्त्र पढ़कर श्रीनाथ जी की प्रतिमा पर छोड़े ।

गौ (कामधेनु) गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ आदि अनादि पारब्रह्म, पारब्रह्म में गिरी कैलाश, गिरी कैलाश में शिव-पार्वती ने किया निवासा । गौ गायत्री का भया प्रकाशा । कहो स्वामी जी कौन गायत्री कहा से आयी । किस नाम से किसने सजाई । कौन माया, की महिमा जमायी । सुन पार्वती कहे महादेव । गौ माता गायत्री निरन्जन निराकारने लाई । क्षीर सागर मन्थन से पायी । गौ माँ कामधेनु नामसे सजायी । तैंतीस करोड़ देवी देवता ओमे समाई । अनन्त महिमा निरन्जन मायाने जमायी । पीर किशन गोपाला ने चराई । योग वशिष्ठ ने सेवा भई । नवनाथ चौरासी सिद्ध ने पुजाई । ऋद्ध सिद्ध श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने रक्षा करायी । ॐ गौ माँ तू बड़ी वरदायिनी ता दुग्ध में शक्ति बड़ी, सुर तेज भयो चन्द का नूर, सत का दूग्ध क्षीर सागर का नीर । अमर हो काया, वज्र हो शरीर नित्य जोगी धरे धीर । ॐ क्षीर सागर नन्दिन्यै विद्महे कामधेनु धीमही तन्नो प्रचोदयात । जो नर मन्त्र पढ़ गौ सेवा करे सो अमर लोक में जायो जो ना करे खाया पिया व्यर्थ जाये । इतना गौ गायत्री सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

अत: पुन: शंख द्वारा गंगाजल लेकर शुद्धोधक स्नान निम्न मन्त्र से करें ।

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । अलख निरन्जन तेरी माया । जल बिम्बाय विद्महे निल पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात ।

पंचामृत स्नान

अत: शंख में (घी + चीनी + मधु + दूध + दही) का मिश्रण लेकर श्रीनाथ जी की प्रतिमा के ऊपर निम्न जाप पढ़कर दोनों कर से अभिषेक करें ।

पंचामृत जाप

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ अलख निरन्जन धुन्धूकारा, स्वाल शब्द नहीं ओंकारा । मेरु मण्डान कैलाश पर्वत पर देव देवत्या ने किया भण्डारा ।

ॐ गंगा का नीर पात्र ल्याया निश्चल विर कामधेनु ब्रह्मा जी ल्याया मधुमती का गीर, दुग्ध माखन ल्याया गोपाल किसन पीर, भर खप्पर ले आई मीठी माई सदा सहाई, पांच तत भई महामाई अन्नपूर्णा महामाई ऋद्धि सिद्धि शिव जी ल्याये सार भैरव बीर । ॐ शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरुजी के पाव पांच महेश्वर आज्ञा दिनि तो पंचामृत चढ़ाऊ गुरु गोरक्षनाथनी के पाव । इतना गुरु गोरक्षनाथ पंचामृत स्नान सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी गुरु जी आदेश ।

पुनः शंख द्वारा गंगा जल चढ़ावें ।

ॐ गुरु जी । अलख निरन्जन तेरी माया, जल बिम्बाय विदमहे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात ।

केशर स्नान- अतः दूध में केशर मिलाकर शंख द्वारा प्रतिमा के ऊपर छोड़ें ।

केशर मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । माटी का कुंडा दूध गंगा नीर । केशर मन्थे हनुमन्त वीर ! ॐ केशर पवित्री कहा से आई कैलाश पर्वत से आई, गंगा गौरजा केशर भई कूण्डे कुतके निर्मल भई अमृत जान नाथ सिद्धों ने लाई । ॐ केशर माई के तीन पूत, दो घरबारी एक अवधूत । ॐ आई केशर मात की लीजे दो कर जोड पांच महेश्वर आज्ञा करे तो सिर कंटक का फोड, ॐ शिव घर आवो शक्त घर बैठो गुरु प्रसादे केशर चेतो, चढावे केशर करो उपाय रक्षा करें श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ । इतना श्री गुरु गोरक्षनाथ जी केशर स्नान सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

पुनः शंख से गंगा जल छोडे ।

ॐ गुरु जी अलख निरन्जन तेरी माया । जल बिम्बाय विदमहे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात ।

उबटन (चन्दन रस) स्नान

तदनन्तर साधक ने चन्दन पीसकर तथा सुवासिक द्रव्य मिलाकर श्री नाथ जी के सिर, मस्तक, भुजा दोनों हथेली वक्ष स्थली दोनों कानों पर इ० सर्वकाया लेपन करें।

चन्दरस मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ नीली पीली सिर जटा डब्बी शिव जी के हाथ; मढ़ी मसान फिरु गुरु हमारे साथ भुजा पर भैरव बसे, मस्तक पर महावीर देही में सोहे चन्दन रस, राजा मोहु प्रजा मोहु—मोहु तीन लोक या मोहा नहीं गया ऐसा है कौन सा लोक। इति गुरु गोरक्षनाथ चन्दरस स्नान सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अब शंख द्वारा गंगा जल छोड़े।

ॐ गुरु जी; अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात।

शुद्धोद्क स्नान

साधक ने शंख में जल (गंगा जल या समुद्र जल या गोदावरी जल या त्रिवेणी संगम जल) लेकर जल इ० गायत्री मन्त्र पढ़कर श्री नाथ जी के ऊपर जलाभिषेक करें।

जल गायत्रीः—सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। जल मन्जन जल देवता, गुरु मन्जन गुरु ज्ञान, हाथ मन्जन धर्तरी अलख पुरुष का ध्यान। पानी पानी महापानी सोती काया अमर कर जानी। उड़े न हंस बिखरे न काया। शिव—शक्ति ने ध्यान लगाया। ॐ अलील, आदि अलील, अलील पुरुष की माता क्वारी, पिता यती नित्य योगी धरे धीर, निरोग हो काया वज्र हो शरीर। झड़े पारा पीवे योगी, उड़े काया। अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात। इतना गुरु गोरक्षनाथ शुद्ध जल स्नान जल गायत्री सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः श्री नाथ जी के अभ्यंग स्नान के पश्चात नये भगवे वस्त्र (तौलिया) से सम्पूर्ण काया सूखी करें।

तदनन्तर श्री नाथ जी को लंगोट (सवा मीटर लाल या काले रंग का कपड़े का बनाके) चढ़ावे तथा साथ में अड़बन्द (उनका) चढ़ावे निम्न मन्त्र पढ़कर लंगोट। अड़बन्द चढ़ावे।

लंगोट मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। अजरका वज्र करु; वज्र का बन्द लगाऊँ? शील का लंगोट, सन्तोष का धागा। ऊन का आडबन्द कमर में लागा। नागा पहिरे नागफणि, हनुमन्त पहिरे लंगोट। गुरु महाराज का बाल गोपाल कोपिन पहिरे, नवनाथ चौरासी सिद्धों की ओट। अदल की कोपीन—वज्र का धागा, योगीश्वर कोपीन चढ़ावन लागा। शिव निर्माण पारा डिंगे अलष पुरुष की आन। पारा पारा महापारा, पारा राखे गुरु हमारा पारा उतरे सहस्रधारा? सन्त रहे काल से न्यारा। पारा नाक रस्ते उतरे नासकेतु की दुहाई? कान रस्ते उतरे कर्ण की दुहाई? मुख रस्ते उतरे ब्रह्मा की दुहाई? गुदा रस्ते उतरे गणपति जी की दुहाई? लिंग रस्ते उतरे हनुमन्त जती की दुहाई? उल्टा पारा काया को चढ़े, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई स्फुरे!

इतना गुरु गोरक्षनाथ लंगोट चढ़ावन सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

लंगोट चढ़ाने के पश्चात अड़बंद (ऊनका) लगावे।

भस्मी स्नान

अत: श्री नाथ जी के सर्व अंग भस्म लेपन विधि करे; भस्म की हर सम्प्रदाय में बहुत बड़ी महिमा तथा महत्व है। स्नान के उपरान्त योगेश्वर भस्म धारण करते हैं। गोवरी की भस्मी वस्त्र से छानके अत्यन्त बारीक बनाते हैं तथा गंगा जल में अनेक बार मिलाके विधि मन्त्र से सर्वांग को लेपन करते हैं (भस्मी—विधि द्वितीय खण्ड में दी है।) भस्मी को जटाओं में रमा के वह सुखाई जाती है।

श्रीनाथ भस्मी का त्रिपुण्ड मस्तक स्थान ग्रीवा स्थान कर्ण कुण्डल, वक्षस्थल, बाजु बन्द, दोनों हथेली इ० पर लगाया जाता है।

भस्मी लेपन को भस्मी स्नान कहा जाता है। भस्मी शान्तिवर्धक काया सुरक्षित तथा वरदायिनी होती है। मोक्ष दायिनी होती है। अत: श्रीनाथ जी

को निम्न मन्त्र पढ़कर, भभूती स्नान कराये। भस्मी जटा को ग्रीवा स्थान (कंठ) मस्तक दोना बाहु तथा हतेली कर्ण, वक्षस्थल इ० जगह भस्म रमीये।

भभूती–भस्म गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी भभूत माता भभूत पिता भभूत तरण तारणी। मानुषते देवता करे। भभूत कसट निवारणी। सो भस्मंती माई जहा पाई तहा रमाई। आदके योगी अनाद की भभूत। सत के नाती धरम के पूत॥ अमृत झरे धरती फुरे सो फल माता गायत्री चरे। गायत्री माता गोवरी करी सूरज मुख सुखी, अग्नि मुख जरी। अष्टटंक भभूत नव टंक पाणी; ईश्वर आणी पारवती छाणी सो भस्मती हस्तक ले मस्तक चढी। चढी भभूती दिल हुवा पाक अलख निरन्जन आप ही आप। इतना श्री गुरु गोरक्षनाथ जी भभूती स्नान सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अब भस्मी स्नान के पश्चात वह सुखने दीजिये जब तक भस्म गायत्री महात्म का पाठ करें।

यह भस्म गायत्री पाठ धूना के सामने किया जाता है तथा अलील पुराण, गर्भ गीता इत्यादि का भी पाठ करते हैं।

भस्म गायत्री महात्म पाठ

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ नमो गुरुं कौ। जुग जुग गोरष जोगी सत है, भस्म गायत्री माता तत है। गोरक्ष जोगी घट घट भावै, निंदक कंटक जमकै जावै॥ सो फिर नाथ सरणमें आवै; सतगुरु गोरष फेर जीवावै। सैंसर धारा अम्बर बरसे धर्ती उपजे गायत्री चरै॥ गायत्री माता गोवरी करै, सुरज मुख सुखै अग्नि मुख जरै। सो भस्मंती जोगी जतिकै, हस्तक ले मस्तक चढै॥ माई चढ़ावै गुरु वन्दना करै, दूध पूत भण्डारा भरै। पिता चढावै गुरु वन्दना करे, रण खेत में कीरती करै। आदके जोगी जुगादकी भभूत, सतके नाति धरम के पूत। भस्मती जस्मती भयहरन्ती, नाद मुद्रा जोति ज्वाला ले उतरंती॥ जल रेत भस्मी थल रेत भस्मी; तल रेत भस्मी सर्वांग रेत भस्मी। भस्मी भस्मी कर जानो, सिद्धों नवखण्ड प्रिथवी॥ तू भस्मन्ती तू जस्मती

कंटकों मार दानौ छेदन्ती। भस्मन्ती जस्मन्ती माय; राजा परजा लगै पाय।। चढी खाक दिल हुवा पाक; अलष निरन्जन आपो आप। साध सन्त सुनो चित लाय; चढे भस्म पाप खटा जाय।। अनन्त कोटि सिद्धों के भागे; गोरखनाथ जुग जुग जागे। जती गुरु गोरक्षनाथ अलख, बाल गोपाल जती सतीकु रख।। इतना भस्म गायत्री महात्म जाप सम्पूर्ण भया। दुल्ल धर्मराज गादी बैठे श्री नाथ ज़ी ने कहायी।

ॐ नमो शिवाय, ॐ नमः शिवायै श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की चरण पादुका को आदेश।

जटा बन्धन

जटा सूर्य मुख अर्थात् धूप में सूखाने के बाद योगेश्वर जटा को बांधते हैं। कोई भगवा साफा (फेंटा या पगड़ी) बांधते हैं। कोई उन का धागा बांधते हैं या रुद्राक्ष माला से लपेट लेते हैं तथा निम्न मन्त्र का पठन करते हैं।

अतः श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के जटा को स्पर्श कराके या चोटी को स्पर्श करके या शिश पर रुद्राक्ष (सुमिरणी) या शैली बान्धते हुये निम्न मन्त्र पढे।

जटा बन्धन मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ! नीली पीली शिश जटा; जटा रमाई पाताल गंगा। नाम शतानि शिवजटा, अनन्त जटा भुजा पसार।। नाम सहस्त्रेन विष्णु जी ब्रह्मा, भेव जटा का शिव शंकर पाया। अगन प्रजाले ब्रह्माजी बैठा, जटा अगन में होमे काया। तपी जटा तपी काया, ताका महादेव बन्दा पाया।। उरम धुरम शिर जटा ज्वाला, सिद्ध उनमन पलटे पारा। अनहद नाद बाजे हमारा; सिद्ध मार्ग श्री गोरखनाथ कहाया।।

शबद का सुच्चा; गुरां का बन्दा; गुरु प्रसादे जटा जमाया। काम, क्रोध त्यजलै माया; अक्षय योगी सबसे न्यारा। बिना मन्त्र पढ़ जटा जमाया; सो योगी नरक समाया। पढ़ मन्त्र जटा जमाया; सो योगी शिवपुरी का वासा।। इतना जटा जाप सम्पूर्ण भया।। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

जटा बन्धन के पश्चात योगी भगवा बाना धारण करते हैं। अतः श्रीनाथ जी को भगवा बाणा अर्पण करें। भगवा वस्त्र सवा मीटर जटा में लपेटे साफा

बाँधे तथा सवा दो मीटर कटी वस्त्र बांधे और सवा मीटर कंधे पर चढ़ावे। प्रत्येक वस्त्र चढ़ाते समय भगवा मन्त्र का पठन करें।

भगवा धारण करने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरौ को ॐ सोहं धुन्धुकारा शिव–शक्ति ने किया पसारा, नख से चीर भग बनाया–रक्त रुप में भगवा आया। अलष पुरुष ने धारण किया जब पीछे सिद्धों को दिया। आवो सिद्धों धरो ध्यान भगवा, मन्त्र भया प्रमाण इतना भगवा मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

विशेष रुप से मृग छाला। बाघाम्बर शेर की खाल हो तो श्री नाथ जी के कटी वस्त्र रुप में अर्पण करें तथा निम्न मन्त्र पढ़े–

योगीश्वर मृग की या बाघाम्बर खाल योग क्रिया के लिये आसन बना के बैठते हैं तथा निम्न मन्त्र का पठन करते हैं।

बाघाम्बर मृगछाला का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी अलष पुरुष बैठे आराधे? अपनी खाल खाल में मिलाय–जब मृगा की खाल पर, आसन लगाय श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर, खाकाम्बर, चीताम्बर और मृगछाला पर आसन लगाय? बिना मन्त्र पढ़ आसन पर बैठे ऐसा डुबे थाह न पावे। पढ़ मन्त्र आसन पर बैठे सो योगी अमरापुर को जावे। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश।

अत: श्री नाथ जी बैठने हेतु आसन लगावे, आसन मृगछाला। बाघाम्बर होवे तो ऊपर का (बाघाम्बर मृगछाला का मन्त्र) मन्त्र उच्चारण करे तथा कुशासन या सिंहासन, पाटला या कम्बलासन कुछ ना मिले तो भगवा वस्त्र का आसन बिछावे और निम्न मन्त्र पढ़कर अर्पण करें।

आसन लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। सत्य की धर्ती सत्य का आकाश? सत्य की माला, सत्य का जाप, सत्य का आसन–सत्य का पूत? आसन बैठे योगी अवधूत। आसन ब्रह्मा, आसन इन्द्र, आसन बैठे हरि गोविन्द? आसन बैठे जपीये जाप कोटि जनम के उतरन्ते पाप। आसन बैठे,

सिंहासन बैठ; बैठे गिरी की छाया। पांच तत ले आसन पर बैठे; सत गुरु ने सत्य का शबद सुनाया। बिना मन्त्र आसन लगाय, सो योगी नरक जाय, मन्त्र पढ़ आसन लगाय, सो योगी अमरापुर जाय। श्रीनाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

तदनन्तर निम्न मन्त्र पढ़कर श्रीनाथ जी को आसन ग्रहण करने हेतु विनती करें या श्री नाथ जी के दाहिने हाथ को स्पर्श करके बिनती करें।

आसन ग्रहण कराने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! आदि अनादि अनन्त का मेला, ब्रह्म समाधि कीना मेला। सार की कुंजी वज्र का ताला; अनन्त आसन बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: श्री नाथ जी के लिये दो मुद्रायें अर्पण करें। मुद्रा—कुण्डल सुवर्ण, चाँदी, स्फटीक, गेण्डा के तथा मृतिका इ० प्रकार के होते हैं। योगी नाथ सम्प्रदाय में जब गुरु जी अपने शिष्य के प्रति पूर्ण विश्वसनीय होते हैं। तब कर्ण छेदन कर्म किया जाता है। यह विधि ४० दिन का होता है। यह विधि गुप्तता से तथा एकान्त में किया जाता है। कर्ण छेदन तथा कुण्डल धारण के बाद वह नाथजी को योगी कहा जाता है तथा कर्ण छेदन करने वाले योगीश्वर को चिरागुरु जी कहा जाता है। और उनकी नाद पूजा की जाती है। योगी १२ महीने मृतिका के कुण्डल (योगदण्ड) कानों में पहनते हैं। बाद में अपने इच्छानुरूप सुवर्ण, चाँदी, गेण्डा, स्फटीक इ० प्रकार के कुण्डल धारण करते हैं और निम्न मन्त्रों से सिद्धि करते हैं। अत: श्री नाथजी को मन्त्र द्वारा यह कुण्डल अर्पण करें या श्री नाथजी के कर्ण को कुण्डल स्पर्श करें। यह कुण्डल, मुद्रा, दर्शन इ० नाम से परिचित हैं।

(कुण्डल) दर्शन का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ नाद सों मुद्रा, कौन मुद्रा खेचरी बोलिये? कौन मुद्रा भोचरी बोलिये, कौन मुद्रा धरे ध्यान कौन मुद्रा कथे ज्ञान? ताँबे की मुद्रा खेचरी बोलिये; स्फटिक की मुद्रा भोचरी बोलिये। गेण्डे की मुद्रा धरे ध्यान; मृत्तिका की मुद्रा कथे ज्ञान, श्री शम्भुजती

गुरु गोरक्षनाथ जी के कान नीचे धरत्री, ऊपर आकाश, रक्षा करे श्री दादा मत्स्येन्द्र नाथ। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: साधक श्री नाथ जी को नाद जनेऊ पहनकर निम्न मन्त्र से अर्पण करें—नाद जनेऊ ऊन का बुना हुआ होता है तथा एक रुद्राक्ष, स्फटिक और मूंगा, नादी और पवित्री एक धागे में पिरोके वह जनेऊ में डालते हैं। जब योगेश्वर अपने गुरु जी से दीक्षित होता है। तब गुरु महाराज अपने शिष्य को जनेऊ देते हैं तथा गुरु मन्त्र देकर चोटी कटवाते हैं। यह मन्त्र विशेषतया जनेऊ पहनकर बोलते हैं।

नाद जनेऊ पहनने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! आदि में शून्य, शून्य में ओंकार? आओ सिद्धो नाद बिन्द का करो विचार। नादे चन्द्रमा, नादे सूर्य, नाद रहा घट पिण्ड भरपूर, नाद काया का पेखना, बिन्द काया की राह। नाद बिन्दे योगिया तीनों एक स्वभाव? बाजे नाद भई प्रतीत, आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अतीत। नाद बाजे काल भागे, ज्ञान की टोपी गोरक्ष साजे। डंकनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्दाई, बाडे घाटे टल्ल जागे। सुन सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई। टिल्ला शिवपुरी का स्थान—चार युग में मान, मूल चक्र मूल स्थान? पढ़ मन्त्र योगी नाद बजावे छत्तीस भोजन अमृत कर पावे। बिना मन्त्र पढ़े योगी नाद बजावे तीन लोक में कही ठौर न पावे। जो जाने नाद बिन्द का भेव—आप ही कर्ता आप ही देव? सन्ध्या शिवपुरी का बेला—अनन्त कोटि सिद्धों का युग युग मेला इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

योगेश्वर यह नाद बजा के आदेश किया करते हैं। यह आदेश केवल सद्गुरु जी और गुरु गोरक्षनाथ जी के (देवता) मूर्ति, प्रतिमा, चेतन धूना के सामने नाद बजा के आदेश किया जाता है। यह आदेश प्रत्यक्ष शब्द ब्रह्म से संबंधित है। नाद बाजे। काल भागे कहा जाता है। वास्तव में योगीश्वर योग द्वारा नाद ब्रह्म में समाधिस्त होता है। जब समाधि में यह नाद सुनाई देता है तब योगेश्वर काल को जीत लेता है।

रुद्राक्ष–पूजन

श्री नाथ सिद्ध योगेश्वर रुद्राक्ष को बहुत महत्व का मानते हैं। श्री आदिनाथ भगवान शिव के नेत्र(रुद्र + अक्ष) से उत्पन्न हुवा रुद्राक्ष अध्यात्मिक तथा भौतिक क्षेत्र में विशेष माना जाता है। रुद्राक्ष १ से २१ मुख वाला (धारियों में) तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र इन चार जाति में विभाजित किया है तथा छोटे, बड़े रुद्राक्ष किसी भी उम्र, जाति, धर्म लिंग में पहनाये जाते हैं।

नाथ सिद्ध योगेश्वर रुद्राक्ष माला ये अपने जटाओ में, कण्ठ में, गले में, हस्तबाहु-हतेली ओमे सुमरीणि (२७ दाने की) बड़ी श्रद्धा से परिधान करते है और अपने तन्त्र-मन्त्र जपयोग साधना मे विशेष प्राधान्य देते है। रुद्राक्ष अनन्त फलदाई, मुक्ति वर्धक होता है। यह रुद्राक्ष किसी भी रुप में या किसी भी उद्देश्य पूर्ति के लिये, नाथ योगेश्वर इसका शोधन संस्कार कर लेते हैं और अपनी साधना ओमे प्रयोग करते है। इससे उसकी प्रभावशीलता असंदिग्धता और भी सुनिश्चित होती है। रुद्राक्ष या रुद्र मालाओं को गंगा जल, कच्चा दूध, दही, घी, सहद तथा पंचामृत से अभिषेक कराके चन्दन, बेल पुष्प-धूप दिप आरती-पूजा कराके और निम्न रुद्राक्ष मन्त्र से जाप तथा प्रार्थना करते है। तदनन्तर यह रुद्राक्ष धारण करते हैं। श्री नाथ योगेश्वर अपने नित्यकर्म, दैनिक पूजा तथा तन्त्र-मन्त्र साधनाओं में रुद्राक्ष विशेष प्रिय है। अन्य देवी-देवताओं के पूजन-साधना में ही रुद्राक्ष प्रधान मानते है। रुद्राक्ष वैज्ञानिक दृष्टि से आरोग्य वर्धक तथा धार्मिक दृष्टि में मोक्षदाई तथा शान्तिवर्धक होता है।

अतः साधक श्री नाथजी के प्रतिमा को यह रुद्राक्ष या रुद्रमाला अर्पण करें। निम्न क्रम से छोटी-बड़ी नाप लेकर माला बनवाकर तथा उनकी शोधन संस्कार करके निम्न दर्शित स्थान के ऊपर और स्थान उद्देश्य समझकर तथा रुद्राक्ष मन्त्र का पठन करते हुए श्री नाथ जी को अर्पण करे।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी शिवस्वरूप (रुद्रस्वरुप) है। साधना मे जीव-शिव को एक करते हुए इक्कीस ब्रह्माण्डों में रमते हैं। जहां सहस्त्र पंखड़ी चक्र का मूर्धा स्थान में अर्थात जटाओ में ११ मुख, २१ मुख रुद्र माला चढ़ाईये।

२ मुख, ४ मुख रुद्रमाला श्री नाथ जी के मस्तक स्थान चढ़ाईये । जहां-२ पंखड़ी चक्र कमल हैं तथा मस्तक पर चन्द्र धारण किये हुए भ्रूमध्य में सूर्य प्रकाश जैसा चारो वेद १८ पुराण का ज्ञान परब्रह्म ध्यान में रहते हैं । अतः निरमुखी तथा १ मुख रुद्रमाला श्री नाथ जी के कण्ठ-स्थान पहनाये । जहां विशुद्ध चक्र षोडश पंखड़ी कमल हंसनाथ होते हैं । श्री नाथ जी निराकार स्वरुप तथा हंसनाथ शिव (रुद्र) स्वरुप हैं ।

अतः ६ मुख और १९ मुख रुद्राक्ष माला श्री नाथ जी के गले में (कण्ठी) पहनाइये, जहां योगद्वारा षडचक्र कमलो को जाग्रत कराके भगवान अलष पूरुष का दर्शन किया है तथा ९ मुख और १२ मुख रुद्राक्ष माला गले में से हृदय स्थान तक पहनाइये । जहां द्वादश पंखड़ी चक्र कमल रुद्रनाथ होते हैं । ९ नाथ, १२ पंथ श्री नाथ परम्परा का हृदय है । जो भूतकाल से यह परम्परा आज तक चली आई है और भविष्य में भी चलेगी ।

अतः ३ मुख और १० मुख रुद्राक्ष माला श्री नाथजी के दाहिने भुजा में सुमिरणी रुप में चढ़ाइये । जहां ३ लोक रक्षपाल दश अवतारी भगवान विष्णु श्रीनाथ जी के भुजा में विराजमान है तथा ५ मुख, १५ मुख रुद्राक्ष माला (सुमिरणी) श्री नाथ जी के बाये भुजा में चढ़ावे ५ तत्व और १५ तिथि श्री नाथजी के बाये भुजा में विराजमान है ।

अतः ७ मुख और १३ मुख रुद्राक्षमाला (सुमीरिणी) में श्री नाथजी के दाहिने हथेली में पहनाये जहां सप्त वृशी, सप्त समुद्र और तैंतीस कोटी देवता श्री नाथ जी के हथेली में विराजमान है तथा १८ मुख, २० मुख रुद्राक्ष मालाये (सुमीरिणी) श्री नाथ जी के बायें हथेली में चढ़ाइये । जहां १८ भार वनस्पति के ज्ञानी चौरंगी नाथ तथा सन्तोषनाथ विष्णु जी श्री नाथ जी के बाये हथेली में शक्ति रुप में विराजमान है । अब ८ मुख १४ मुख रुद्राक्ष माला श्री नाथ जी के आसन पर छोड़े जो की श्री नाथ जी नेपाल मृगस्थली में अष्ठकुली नागो पर आसन लगा के अपने तपोबल से १४ भुवन में विहार कर रहे थे । अब अन्त में १६ मुख और १७ मुख रुद्राक्ष माला श्री नाथ जी के आसन के नीचे धरती पर छोड़े । जबकि सोलह श्रृंगार की मायादेवी सीता माता धरती पुत्री, शक्तिदाई, वरदाई पृथ्वी में विलीन हो गयी थी ।

अत: समय अनुसार अगर यह सभी मुख वाले रुद्राक्ष उपलब्ध नहीं हो तो पंचमुख ६ मुख रुद्राक्ष भी पूजा में उपयोग कर सकते हैं। यह रुद्राक्ष ज्ञान विद्या, बुद्धि तथा सम्पत्ति उपार्जित करते हैं और यह रुद्राक्ष सर्वत्र उपलब्ध है।

रुद्राक्ष का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। मुखे ब्रह्मा मध्ये विष्णु लिंग नाम महेश्वर सर्वदेव नमस्कारं रुद्राक्षाय नमो नम:। गगनमण्डल में धुन्धुकारा पाताल निरन्जन निराकार। निराकार में चर्ण पादुका, चर्ण पादुका में पिण्डी पिण्डी में वासुक, वासुक में कासुक-कासुक में कूर्म-कूर्म में मरी-मरी में नागफणी-अलष पुरुष ने बैल के सींग पर राई ठहराई। धीरज धर्म की धूनी जमाई- वहां पर रुद्राक्ष-सुमेर पर्वत पर जमाइये उसमे से फूटे ६ डाली एक गया पूर्व- एक गया दक्षिण-एक गया पश्चिम-एक गया उत्तर-एक गया आकाश एक गया पाताल- उसमें लाग्या एक मुखी रुद्राक्ष, श्री रुद्र पर चढ़ाइये। श्री ओंकार आदिनाथ जी को ! (कण्ठ में) दो मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये चन्द्र सूर्य को। (मस्तक) तीन मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये तीन लोको को ? (दाहिनी भुजा) चतुर्मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये चार वेदो को ? (मस्तकपर) पांच मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये पांच पाण्डवों को (बाई भुजा) ? छै: मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये षट दर्शन को ? (गलेण में) सात मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये (सप्तऋषि) सप्त समुद्रों को ! (दाहिनी हथेली) अष्ट मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये अष्ट कुली नागों को ! (आसन ऊपर) नव मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये नवनाथों को ! (हृदय स्थान) दश मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये। दश अवतारों को ! (दहिनी भुजा), ग्यारह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये ग्यारह रुद्र को (जटाओं में) द्वादश मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये (सूर्य) बारह पंथ को (हृदय स्थान) तेरह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये, तैंतीस कोटी देवताको (दाहिनी हथेली) चौदह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये, चौदा भुवन (चौदह रतन) को ! (आसन ऊपर) पन्द्रह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइये पन्द्रह तिथियो को ! (बायी भुजा), सोलह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये सोलह श्रृंगार को ! (आसन के नीचे धर्तरी ऊपर), सत्रह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये श्री सीता माता को ! (आसन के नीचे धरत्री उपर) अठारह मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये अठारह भार बनस्पतियों को (अठारह पुराण) को (बायी

हथेली में), उन्नीस मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये अलष पुरुष को !(गलेनमे) बीस मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये विष्णु भगवान को ! (बायी हथेली) इक्कीस मुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये इक्कीस ब्रह्माण्ड शिव को ! (जटाओं में) निरमुखी रुद्राक्ष चढ़ाईये निराकार को ! (कण्ठनमे) इतना रुद्राक्ष मन्त्र सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी के चरण कमल में आदेश । आदेश ।

तिलक

श्री नाथ योगेश्वर तृतीय नेत्र स्थान जहा कपाल कुहर होता है । वहा चन्दन मिश्रित केशर का तिलक लगाते हैं । साधना में दो (नेत्र) भौवे के बीच ध्यान मुद्रा तथा प्राणायाम साधना करते हैं । इसे तीसरा नेत्र कहा है । कुण्डलीणी शक्ति भ्रू स्थाने जहांआदिनाथ जी का निवास होता है । वहां आते ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड दर्शन होता है । यह अवस्था में उत्पन्न होने वाले अगन (दाह) को शीतल करने का कार्य चन्दन करता है । केशर तथा चन्दन सुगन्धित होता है । अर्थात् साधना विधि कर्म में सहायक तथा उत्साहित करता है । अतः श्री नाथ सिद्ध योगेश्वर (चंदन + केशर) के तिलक को विशेष महत्व देते हैं । तिलक बड़ी श्रद्धा से लगाते हैं और निम्न मन्त्र उपयोग करते है और भी तिलक मन्त्र तिलक ज्ञान केशर चेतन इ० मन्त्रों का भी उपयोग करते है तथा कण्ठस्थ करते हैं । अतः साधकने श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के मस्तक पर (दो आँखे भौवे के) बीचो बीच यह तिलक लगावे तथा निम्न मन्त्र का पाठ करें । केशर मिश्रित चंदन या अष्ठगंध इ० सुवासिक तिलक मस्तक पर लगावे ।

तिलक मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ तिलक तिलक महातिलक, महातिलक अवधू लाया । अवधू जोगी बनखण्ड का वासा योगी का जोग सदा उदासा । गले में नाद तन का बाना । दश दरवाजे खोज जोग को पाया । बरसो मेघ, सावन दरीया पीपल के पत्ते में विष्णु जी की काया । चन्दन तिलक विष्णु जी लाया संग प्रतिपालन, क्लीऽः, क्लीऽः माया । अग्नि मुख से ब्रह्म उत्पन्ना नाभी कमल से संसार रचाया रुद्र रुपणी ब्रह्माणी माया । संग तिलक सिन्दूर लाया । जागती ज्योत ॐकार नाथ काया तपाये ब्रह्माण्ड

रचाया। शक्ति उमा ने भस्म रमाया संग तिलक भभूत लाया। शिवजी आवो। शक्ति घर बैठे जोगेश्वरों का भया जुग-जुग का मेला। सिद्ध साधक ने आनी गुरु गोरक्षनाथ जी ने भाखी। देखो सिद्धों गोरख डिब्बी-तिलक डिब्बी जती हनुमन्त के हात। कर जोड़ तिलक चढ़यै भैरोनाथ। पहला तिलक गणेशनाथ जी को दीजो। सिद्धि-बुद्धि की ऋद्धि कीजो। दूसरा तिलक सत्यनाथ जी को दीजो। सावित्री शक्ति लो हाथ जोड़ नमस्कार कीजो। तीसरा तिलक सन्तोष नाथ जी को दीजो। शक्ति लक्ष्मी भण्डार भरीजो। चौथा तिलक रुद्रनाथ जी को दीजो। परा पश्यन्ति उमा शक्ति को पाओ। पंचम तिलक कंठ-हंसनाथ जी को दीजो। अविद्या परम वाक् शक्ति को पाओ। सष्टम तिलक भ्रूमध्य आदिनाथ जी को दीजो। जागे ज्योति ज्ञान शक्ति को लीजो। सप्तम तिलक जती गोरखनाथ जी को दीजो। भ्रवर गुफा में सहस्त्र धारा। अनुपम शक्ति समाधि साधो।

तिलक ज्ञान तिलक मान, चक्र काया दसवें द्वार। बला भखे काल भागे तिसकी रक्षा गुरु गोरक्षनाथ जी करें। फुरे धरत्री बरसे आकाश गगन मण्डल में पाताल गंगा। ज्ञान की कुंजी खुली ब्रह्माण्ड की ताली; तारा त्रिकुटा तोतला माई तीनो बसे कपाली। मस्तक तिलक ज्ञान की साधु संत रहे निहाल। इतना तिलक मन्त्र पढ़ तिलक लगावे पढ़न्ते-गुनन्ते मोक्ष मुक्त फल को लभन्ते। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

ॐ शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

अक्षत पूजा

अत: साधक श्री नाथ जी के मस्तक पर जहां तिलक लगाया है वहां तथा चरणों पर अक्षदा जो सर्वत: ऋद्धि सिद्ध प्रमाण माना जाता है। वहां अक्षदा चढ़ावे। साथ में निम्न मन्त्र उच्चारण करें।

अक्षत चढ़ाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ गुरुजी सतगुरु शबद ब्रह्मज्ञानी। पूजा करु भई कमाई। पांच महेश्वर आज्ञा करें तो अक्षत बरसे जोगन माई। अक्षत चढ़ाऊ शीश निवाऊ सतगुरु जी के पांव। गोरख बैठे आसन मार भरे धर्म की साख। जैसे देखा वैसा कहे। पाप पुण्य से

न्यारा रहे। शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरुजी के पांव। पांच महेश्वर आज्ञा करें तो लागू गुरु के पांव इतना अक्षत मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

बिल्व पूजा

अत: बिल्वपत्र जो कि शिव जी तथा नाथ सिद्धों को अति प्रिय है नाथ-पूजा में बिल्वपत्र को प्रथम स्थान है। इसमें दाह को शान्त तथा शीतल करने की क्षमता होती है। तपस्वी त्यागी तथा साधना रत योगेश्वर बिल्व फल का रस पान करते हैं। इससे रक्त शुद्धि तथा साधना में तपती हुई काया को शीतलता प्राप्त होती है। हलाहल जहर का दाह शान्त और ठंडक के लिए आदिनाथ शिव जी ने बिल्व का प्रयोग किया था।

अब साधक श्री नाथ जी को बिल्व पत्र चढ़ावे और निम्न मन्त्र का पठन करें।

बिल्वपत्र गंगा जल में धोकर, शुद्ध व स्वच्छ करें, बिल्व-त्रिदल, चार दल, पंच दल उचित है। खण्डित तथा अपूर्ण बिल्व दल पूजा में निशिद्ध है। चातुरमास में विशेषत: श्रावण मास में बिल्व फल का प्रयोग अति उत्तम है।

बिल्व चढ़ाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी ! ॐ धर्म तो पिता, कर्म तो सती, गोरक्ष तो जती, बीज तो वनस्पति। अंबर जो बरसन्ते धरत्री फुरन्ते सो उपज्जै वृक्ष बिल्व फलन्ते। ॐ सत जुग मध्ये कौन कौन बिल्वपूजा पूजन्ते। प्रथम पूजा सतगुरु की कीजे, गुरु शबद का सुमिरन कीजे। दूसरी पूजा उदयनाथ पार्वतीजी की कीजे, धरत्री पर आसन दृढ़ कीजे। तीसरी पूजा आदिनाथ जी की कीजे, ॐकार शून्य में ध्यान लीजे। चौथी पूजा सत्यनाथ ब्रह्माजी की कीजे, जल पिण्ड में कमल खिले। पंचम पूजा अचल अचम्भे नाथ की कीजे, शेष स्वरूप कुंडलीनी को धारे। सष्टम पूजा सन्तोष नाथ विष्णुजी की कीजे, तेज त्रिकुटी में प्रकाश प्रगटै। सप्तम पूजा सिद्ध चौरंगी नाथ जी की कीजे, वज्र हो काया अठारा भार

वनस्पति की कीजे। अष्ठम पूजा गजबेली गजकंथडनाथ जी की कीजे, ऋद्धि सिद्धि का भण्डार भरीजे। नवमी पूजा माया मच्छन्दर जी की कीजे। संसार स्वरूप माया को त्यजे। दशम पूजा गुरु गोरखनाथ जी की कीजे, ज्योति स्वरूप मुक्ता फल लीजे। चढ़े बिल्व पाया भेद बहु बडियारा, यही भेद अनन्त कोटि सिद्धों ने पाया। तृप्त हो शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। इतना बिल्व मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इस प्रकार मन्त्र उच्चारण करते हुए प्रथम बिल्व पत्र को गुरु मन्त्र से जल छिड़के द्वितीय श्रीनाथ जी के चरनों में तृतीय शीश पर चतुर्थे हृदय स्थान पर पंचमे शीश पर सष्टमे मस्तक स्थान पर सप्तमे दोनों बाहों पर तथा वक्षस्थल पर अष्टमे हतेली में नवमे गले में इस प्रकार बिल्व पत्र अर्पण करें या और ११ या १०८ बिल्व पत्र की माला चढ़ाना भी उत्तम पूजा है तथा १ या ५ (पंच फल) बिल्ब फल चढ़ाना भी उचित है।

पुष्प पूजा

नाथ योगेश्वर जब अपने योग साधना में ध्यान क्रिया करते हैं। तब प्राणायाम द्वारा तथा मुद्रायें क्रिया द्वारा अपने समस्त शरीर के जो विद्यमान षडचक्र हैं। उन्हीं को जाग्रत करते हैं। उत्तम प्राणायाम क्रिया करते हुए मन एकाग्र तथा स्थिर करके चित्त का निरोध करते हैं। साधारणतः २१ प्राणायाम (उत्तम) करने के पश्चात चित्त निरोध होता है। अतः इस चित्त तथा मन शरीर के समस्त चक्र क्रमशः आधार चक्र–स्वाधिष्ठान–मणिपूर– अनहद–विशुद्ध–आज्ञा तथा ब्रह्मरन्ध्र चक्र क्रम से एक एक चक्र पर मन–चित्त एकाग्र करके उन्हीं चक्र देवताओं के बीज गायत्री मन्त्र का चिन्तन करके एक एक चक्र जाग्रत करते हैं। अर्थात् कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत होकर प्रत्येक चक्र का भेदन करती हुई ब्रह्मरन्ध्र (भ्रवर गुफा) में प्रविष्ट होती है। यहां शिवशक्ति का मिलन होता है। अनन्त प्रकाश–सूर्य प्रकाश, ध्वनि, वार्तालाप तथा शून्य समाधि तक योगेश्वर आरुढ होता है। अर्थात इन प्रत्येक चक्र में कमल दल पुष्प होते हैं। जिन पर उन चक्र की इष्ट देवता–अपने शक्ति के साथ विराजमान होती है। इन कमल दल पुष्प को जाग्रत करना ही सिद्ध योगेश्वर की पुष्प

पूजा है। इस साधना को ही पुष्प पूजा से गुरु गोरक्षनाथ जी स्वीकारार्थ करते है। अर्थात गुरु गोरक्षनाथ जी की पुष्प पूजा योग ही है। यह पुष्प पूजा आंन्तरमुख योग कहा जाती है तथा अब साधक गुरु गोरक्षनाथ जी के मूर्ति पूजा में जो पुष्प अर्पन करेंगे वह एक श्रेष्ठ भक्ति योग है। इसे बर्हिमुख पूजा कहते हैं और गुरु गोरक्षनाथ जी के भक्त-साधक-शिष्यों को यह भक्ति योग परम आवश्यक है। भक्ति बिना योगे, साधना करना यन्त्र के समान है। इसलिये भक्ति योग और मन्त्र योग साधना में सहायक है।

अत: साधक ने गुरु गोरक्षनाथ जी को पुष्प माला तथा पुष्प चढावे। पुष्प मन्दार, गेन्दा पारिजात, चम्पा इ० सुवासिक से पूजा करें।

कमल पुष्प अर्पण करना भी नाथ जी को प्रिय है अर्थात साधक कमल पुष्प श्री नाथ जी के प्रथम चरणों पर-आसन पर- नाभिस्थाने - हृदयस्थाने-कंण्ठस्थाने-दोनों कंधे पर-कर्ण स्थानी-कपाल स्थान-मस्तक स्थाने तथा जटाओं के ऊपर भक्ति प्रिय तथा निम्न मन्त्र उच्चारण करते हुए चढ़ाये।

निम्न पुष्प मन्त्र अर्न्तमुख पूजा (योग साधनायें) में चिन्तन करते हुए साधना करे जों मुक्तिप्रद हैं।

पुष्प चढ़ाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ घट पिण्ड में प्राण, घट पिण्ड ब्रह्माण्ड। पुष्प माया अनन्त ब्रह्माण्ड। ओं मनसा माई बीज लगाय, अलीला पुरुष ने फुल फुलाय। उलटन्त अलील पलटन्त काया सिद्ध का मार्ग साधकने पाया। अमृत बरसे धरत्री झरे चन्द-सूरज मुर। पलटे नागन फुरे जोगन पवन डुलाय फुल। कहे महादेव सुन बाला; पुष्प बिन जोगाधुरा। पुष्प चढ़ाये जोगन बाला। पहला कमल दल चार पंखड़ी। पुष्प पुजो गणेश जोगी। आवो सिद्धों धरो ध्यान। आधार चक्र परब्रह्मज्ञान॥ सिद्ध बुद्धि गायत्री जाप। सिद्धों बैठो आसन मार।

दूसरा कमल दल छह पंखड़ी। पुष्प पूजो ब्रह्मनाथ जी जोगी। आवो सिद्धों धरो ध्यान। स्वाधिष्ठान चक्र परब्रह्म ज्ञान॥ सावित्री शक्ति गायत्री जाप। काया तपे आपे आप।

तीसरा कमल दल दश पंखड़ी। पुष्प पूजो सन्तोषनाथ जोगी।। आवो सिद्धों धरो ध्यान। मणिपूर चक्र परब्रह्म ज्ञान। लक्ष्मी शक्ति गायत्री जाप, जोगी का जोग नाभी स्थान। चौथा कमल दल बारह पंखड़ी। पुष्प पूजो रुद्रनाथ योगी आवो सिद्धों धरो ध्यान। अनहत चक्र परब्रह्म ज्ञान।। उमा शक्ति गायत्री जाप, ध्यान लगाये हृदय स्थान।। पांचवा कमल दल षोडश पंखड़ी। पुष्प पूजा हंसनाथ योगी।। आवो सिद्धों धरो ध्यान। विशुद्ध चक्र परब्रह्म ज्ञान।। अविद्या शक्ति गायत्री जाप। जोगी कंठ में चित्त लगाय।। छटा कमल दल द्वि पंखड़ी। पुष्प पूजा आदिनाथ योगी।। आवो सिद्धों धरो ध्यान। आज्ञा चक्र परब्रह्म ज्ञान।। ज्ञान शक्ति गायत्री जाप। त्रिकुटी भयी भ्रूमध्य प्रकाश।

सातवां कमल दल सहस्त्र पंखड़ी। पुष्प पूजा गुरु गोरखनाथ योगी।। आवो सिद्धों धरो ध्यान। ब्रह्मरन्ध्र, भ्रवर गुफा का धाम।। अनुपम शक्ति सतगुरु जाप। जोगी पावो ब्रह्मज्ञान।।

गोरख कहे सुन बा पूता जो जोगी जाने चक्र भेव। आप ही कर्ता आप ही देव।। मन्त्र पढ़ फूल चढ़ावे। साध संत रहे काल से न्यारे।। बिना मन्त्र फूल चढ़ाये। ध्यान ज्ञान से व्यर्थ जाय।। इतना पुष्प मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश।

तदनन्तर साधक ने गुरु गोरक्षनाथ जी को सुगन्धित अत्तर अर्पण करें। छोटे रुई के गोले में अत्तर लेकर निम्न मन्त्र पढ़कर अत्तर चढ़ावे।

अत्तर चढ़ाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अम्बर झरे पवन फुरे फुरे, गौरी गणेश। आसन बैठे गोरखनाथ अत्तर चेते महेश। अत्तर डिब्बी—डिब्बी उत्तरे ऋद्धि—सिद्धि डिब्बी पारबति के संग चले। सिद्ध साधक भरलो साद, वासना वासलो अमृत की। इतना अत्तर मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अतः अभ्यंग स्नान और यथा विधि पूजा के उपरान्त, सुर्चिभुत होते हुये श्री गुरु गोरक्षनाथ जी अपने योग मुद्रा में तथा ध्यान मुद्रा में विराजमान होते हैं।

योगमुद्रा काया पूजा

श्री नाथ योगेश्वर अपने योग साधना प्रणाली में कुण्डलिनी जाग्रती को विशेष प्राधान्य देते हैं। यह योग साधना का मुख्य आधार स्तम्भ हैं। मुख्यत: योगेश्वर अपने सतगुरु कृपा द्वारा तथा अष्टांग योग से अर्थात आसन–प्राणायाम–प्रत्याहार–धारणा–ध्यान–समाधि एवं मुद्राबन्ध इन साधना प्रक्रियाओं से अपनी काया के समस्त षट चक्र का भेदन (जाग्रति) करते हैं और कुण्डलिनी शक्ति को उर्ध्वमुख करते हैं।

जब कुण्डलिनी शक्ति आधार चक्र से निकलते हुए काया ग्रन्थियों में प्रवेश करती है प्रथम जब ब्रह्मग्रन्थि में प्रवेश करती हैं तो आनन्द–आत्म आनन्द की प्राप्ति होती है और जब विष्णु ग्रन्थि में प्रवेश करती हैं तब परमानन्द की प्राप्ति होती है और जब रुद्रग्रन्थि में प्रवेश करती हैं तब परम–कैवल्य आनन्द की प्राप्ति योगेश्वर को होती है।

यह आनन्द–परम कैवल्य आनन्द की अनुभूति अवर्णनीय है।

अत: यह ईश्वरी कुण्डलिनी जाग्रति के लिये नाथ सिद्ध योगेश्वर, गुरु सहवास या एकान्त वास जंगल–गुफ़ा (गंगा) नदी का किनारा–मन्दिर यहां जाकर योग मुद्राओं का विधिपूर्वक नित्य अभ्यास करते हैं। यह साधना गुप्त विधि से करते हैं। इस योग मुद्रा दश मुद्रा में विभाजित होती है। महामुद्रा, महाबन्ध, महावेध, खेचरी, उडयान, मूलबन्ध–जालन्धर बन्ध, विपरीतकरणी–वज्रोली और शक्ति चालन इन मुद्राओं के यथार्थ अभ्यास करने से अमरत्व तथा सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। यह गुरु गोरक्षनाथ जी का विधान है।

अत: गुरु गोरक्षनाथ जी इस योग मुद्राओं में पूर्णत: योगी थे। अब साधक पूर्ण सुचिर्भुत एकाग्र भाव से निम्न मुद्रा ध्यान का मन्त्र का पाठ करें।

मुद्रा ध्यान गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी–आद पुरुष को सागर म्याने, वहां जायके बैठा, वहां देखा शिव जी बैठा, श्री गुरु आज्ञा ले भीतर बैठा–भीतर बैठा लागे ध्यान आपद दूरी होय समान ये ही मुद्रा ब्रह्मज्ञान, श्री ब्रह्मा जी पढंते पुराण यही मुद्रा तपी महेशा–यही मुद्रा गौरी गणेशा–यही मुद्रा

नारद इन्द्रा—यही मुद्रा श्री रामचन्द्रा, यही मुद्रा खेलू खेल, यही मुद्रा मारु काल—परघट आंखो देखो उदास—मच्छेन्द्र कहे ईश्वर का दास, सद्गुरु का यही बोल मुख से—आगे बताना खोल। अजी गुरुजी तुमको कुछ पूछना चाहता हूं। सब माया त्याग कर जोग लिया। अबे पूता उपाधि काय को चाहे ताहे? अजी गुरु जी आपका किधर से आना हुआ? अबे बच्चा तीरथ यात्रा सिद्धों का मेला, अजी गुरुजी व छोडा भला, सुन गुरु पुता दोहा—मन मिले तो मेला कीजे, चित मिले तो चेला—नहीं तो सबसे भला अकेला। आवो सिद्धों—बैठो सिद्धो—गुरु मिलावे ईश्वर को—ये ही ज्ञान मिलावे—ये ही मन को मिलावे—ये ही मन का भेद बतावे—ये ही देह को मिलावे, अंगुल प्रमाण त्रिभुवन देखो—सुखमना मारग में बैठो ब्रह्म विचार, बैठा एवं बालक कहे, मच्छेन्दर वहां तेज उजाला है। कथनी—मथनी सब ही झूठी—आप ही आवे सत्य की दृष्टि—दृष्टि दृष्टि देखकर मन उनमन होय—कहे सतगुरु ये ही दृष्टि पाराशर ने कही ये ही मुद्रा सकल सिद्धों को दीनी, मच्छेन्द्र पूता, श्री गोरक्ष कहै, मुद्राबीन जगत में कुछ ना करे। जो मुद्रा का धरेगा ध्यान वह संसार सागर से उतरेगा पार। बिना मुद्रा के रहे नरनार पिण्ड पडे नरक में जाय। इतना मुद्रा जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोटि सिद्धों में बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा। सकल सिद्धों को आदेश। आदेश।

यह मुद्रा जाप पढ़ने के पश्चात साधन सम्पूर्ण भोग सामग्री धूप—दीप, रोट दूध फल इ० बटोर लेना।

धूप—दीप पूजन

अत: सुवासिक सुगंधित धूप या अगरबत्ती लगावे तथा गौ—घी का दीपक प्रज्वलित करें।

धूप वासना का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! वासना वासलो थापना थापलो जहां धूप वहां देव, जहां देव वहां पूजा। अलख निरन्जन और नहीं दूजा। तिल गूगुल घृत खोपरा मिष्ठान, पंचांग धूप सिद्धों ने बनाया। कूटकाट डिब्बी में कीना, उपर कीनी चीनी, चकमक पथरी जाल बाल लीनी,

उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, आसन कीना पहिला धूप सतगुरा को दीजे, हाथ जोड प्रणाम कर लीजे । दूसरा धूप शिवशक्ति को दीजे, ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरीजे । तीसरा धूप धरत्री आकाश को दीजे, चन्द्रमा सूर्य विमान चढाले । चौथ धूप अठारह भार वनस्पति को दीजे, रुख वृक्ष की छाया लुडीजे । पांचवा धूप पांच तत्वों को दीजे, मोक्ष मुक्ति फल लभीजे । पाया भेद बहुत वडियारा-काची काया बालव्कारी, शम्भूनाथन के नाथ, शब्दके साचे गुरु गोरक्षनाथ ! शून्य माता-अविगत पिता अलख गोत्र गौ का घृत गुगुल की वास, तृप्त हो श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ । इतना धूप वासना मन्त्र सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

योगेश्वर (पुजारी) पूजा में-पूजा वेदी (गगन मण्डल) समाधी स्थान, गुरु पादुका, (सूर्य चन्द्र तारा मण्डल) दिप जलाकर सजाते हैं । सब जगह गौ घृत के दीपक जलाते हैं । प्रथम धूनि में से धूपिया में अंगार भर के लाते समय धूप वासना का मन्त्र का पठन करते हैं और धूपीया से सभी देवता-गुरुजन-पीर जी महन्तो योगेश्वरों को धूपीया से धूप से सेकाया जाता है । धूपीया में घृत कपूर तथा सुगन्धित धूप (गुग्गल) डालकर पंखा लगाते हुए अंगार प्रज्वलित होता है । फिर बत्ती सुलगाकर सभी जगह के दीप (प्रज्जवलित) जगाते हैं ।

अत: साधक निम्न ज्योत जगाने का बीज मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक जगाये ।

ज्योत जगाने का बीज मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी । निरन्जन निराकार-बीज मन्त्र तत्तसार पीवो पीवो चराचर चरे-सो प्राणी बैकुण्ठ तरे-गगन मण्डल में जयजय जपे-नौ करोड़ देवता अपने ग्रह में तपे । त्रिकुटि में शब्द ढुंडो ढूंडो एक ओंकार नाथ जोत दसवें द्वार-निर्मल जोत भई प्रकाश । बीज मन्त्र किसे निरन्जन योगी के पास । अमर योगी अमर काया सोधे मन भरे पिण्ड-विनसे नहीं काया परमोघे काया ॐ सोहं सिद्धों काया बीज मन्त्र अखण्ड छाया । बीज मन्त्र जो नर पढ़े वह चौरासी फेरे में ना पड़े । बिना मन्त्र ज्योत जगावे

सो नर नरक में जाये। इतना जोत जगाने का बीज मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: दीपक को नमस्कार करे तथा धूप दीपक श्री नाथजी की प्रतिमा को दिखाकर आरती घुमावे।

अत: साधक योग गायत्री का पाठ करे यह योग गायत्री योगी लोक स्नान के पश्चात् सुर्चिभुत होके भगवा बाणा पहनते तथा भस्मी लेपन कराके अपने आसन में योग गायत्री पढ़ते हैं।

योग गायत्री

ॐ नमो आदेश। गुरु जी का आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ अनहद शब्दे उत्पन्न भए निरन्जन निराकार। निराकारले उत्पन्ना आकाश, आकासले उत्पन्ना वायु वायुले उत्पन्ना तेज। तेजले उत्पन्ना तोया, तोयाले उत्पन्ना मही।।१।।

महीरुप देवीका रंगा, जल रुप ब्रह्माका वरण। तेज रुप विसन की माया पवन रुप ईसरकी की काया।।२।।

आकाश रुप नादकी छाया, सो सो नाद अवगति उपाया। सुन निरन्जन भूचर देवता भूचरका लहै न भेव।।३।।

अकल अगोचर अनन्त तरवर, अनन्त साखा सूक्षम वेद। परम भेद भेदान भेद, आत्म ध्यान ब्रह्मज्ञान।।४।।

खेचरी मुद्रा, भूचरी सीधी उनमनी अवस्था, अगोचरी बुद्धि। चाचरी निधि अण भै करामती, अतीत देवता अवगति पूजा।।५।।

अनिल आश्रम अध्यात्म विद्या, गिगन आसन अमीरस प्याला। मनसा माई पंचभू चेला, मन रावल पवन भोगी। दसवें द्वारी बसै प्राणनाथ जोगी।।६।।

सहजै आवण संजमी रहणा, सुषमन नदी निह केवल जल पीवणा। त्रिवेणी स्नान त्रिकाल पूजा अजपा गायत्री अनुपम मन्त्र।।७।।

निरन्जन माला निराकार ज्वाला, कंवल गरजै तहां शब्द उजियाला। छसै सहंस इकीस करि मेला, नख सिष पवन बांधिले भेला।।८।।

नाद अनहद नि:ह शबद वाणी जीवतै सिव यौ होइबा प्राणी। देह विदेही अवचल थीरु रुद्र पलटी होइबा खीरु।।९।।

दिसटि बि दिसटि जोइबा नैणु, पवन निरन्जन बोलिबा वैणु । शब्द निह सबद होईबा थूल, आदि का अनादि जोइबा मूलं ॥१० ॥

नाद बिंद गठिबा गवणिं अकास, न पड़ैगा पिंड न होईगा नास । धरणि गगनि परि माघ न होई, जन्त्र चलै तहा काल न कोई ॥११ ॥

अखण्ड मढी तहा जोगिबा ध्यानु, जुगि जुगि तालि कथिबा ज्ञानु । मूल चक्र तहा पलटै ज्यन्दु, पलटै काया थिर होई कंधु ॥१२ ॥

मूलबन्ध वज्रक छोटा पकड़िया थीरु सति उडयाणी बाधिबा बीरु । जतन जगोटा आसनपूर धारा कमण्डल ले होईबा सूर ॥१३ ॥

कुंभपात्रे जहा पीवना नीरु, चेतनि विभूति अंग सरीरु । अजर कंथा नहीं वाद विवाद, अनहद किंगुरि बजाइबा नाद ॥१४ ॥

सन्तोष तिलक जहां पद निरवाणु ब्रह्मा टोपी केवल पहरबी प्राणु । मन वैराग्य मुद्रा जोईबा अरुप, वदत गोरखनाथ ए तत अनूप ॥१५ ॥

दया दण्ड तहा त्रिकुटी थानु सिमा लकुटी टेकिवा प्राणु । चंदसूर भाटी उजैइबा धारु झुरै गिगनि तहां होई मतिवालु ॥ १६ ॥

ते जोगी जुगता अविचल सार, छः छंद मुक्ता भये भ्रमपारं । दोई पंछी ब्रह्माण्ड बंधीबा पूरं , गुरु वचने अनाहद मानिबा सूर ॥१७ ॥

अनन्त सिधां तहां सारम सारु, निहचल थीरु तत्त निरालु । अजायिक भीष्या आइबा थानु ऐ गुरु मछिन्द्रनाथ जी शिष्या पहरिवा कानु ॥१८ ॥

अकलप डीबी झोली निरासु संजीवनी मात्रा बीरज नासु । एकंत रहिबा बांधिबा मूल, न होइगा आवा गवणका सूल ॥१९ ॥

वारै कला देवी सोलै कलादेव, सुषमणा नारी बांधिबा भेव । नवसै जोगन चलाईबा साथु, बुरज बहत्तरि जगाइबा नाथु ॥२० ॥

नवखण्ड पृथिवी मगिवा भीष्या, त्रिलोक मधे न होयगी अपीछया । चवदा ब्रह्माण्ड जोईबा दवारु, षट दरसन ऐ पंथ निहारु ॥२१ ॥

दार बहणी जू होइगा भेऊ, असंख्य दल पंखुड़ी गिगनि करिसेऊ । कंथत गोरष ऐ अविचल जापु, लीपै नही ताहि पुनि न पापु ॥२२ ॥

सुनी ध्यान सौलै कला संपूर्ण माला आपै आप जति गोरष बाला। इति श्री योग गायत्री सम्पूर्ण भया।

अत: साधक निम्न "जाग्रति जाप" पढ़कर भोग पूजा पाठ हेतु श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी को योग मुद्रा में से जाग्रति अवस्था में आने को प्रार्थना करें, विनती करें।

बिनती—जाग्रति जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ गगन मण्डल नाद—अनहद नाद बजायै। नवखण्ड धरत्री गोरख आसन सजायै। आसन बैठे ध्यान मुद्रा लगायै, थिर थरप्या ब्रह्माण्ड उजालै। गोरख शिव, ॐ शिव गोरष जी से, ज्योति ज्योतक मेल मिलायै। कोटि अनन्त साध संत उधारे शिव गोरख, शिव गोरख ज्योत जगावे। आप तरे जगत को तारे, ग्यान खड्गले काल संहारे। चरण शरण जो साधक आवे, दया दृष्टि गुरु गोरष कराये। जागो जोगी ध्यान मुद्रा जागो जोत पाठ का आदेश सुनाये। इतना गुरु गोरख ध्यान जाग्रति जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश। आदेश।

ॐ नमो शिवाय, गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ योगेश्वरों को आदेश।

भोग (नैवद्य)

श्री नाथ सिद्ध योगेश्वरों में भोग तथा चिप्पी (दान) का बड़ा महत्व है। योगेश्वरों का खास भण्डार घर होता है। भण्डारी वहां भोग तैयार करता है। भोग लगाने में रोट प्रसाद तथा गौ का कच्चा दूध सर्वत: मान्य भोग है, योगेश्वर रोट, दूध, खीर, हलवा, पंचमेवा इ० प्रिय भोजन है। भण्डार घर में तथा धूना पर दीप जलते हैं। अत: भण्डारी रोट बनाने को धूनी जगाता है। रोट धूनी में रखकर सेखता है। फिर नाभी पर पुष्प रखकर मुक्त कर लेता है। दूध और रोट लेकर भण्डारी को आने को आदेश देते हैं। भण्डारी या पुजारी रोट

+ दूध का भोग लगाते हैं तथा रोट नाभी काटकर तीन फाड़ करते हैं। स्वास्तिक आकार में काटते हैं। एक भाग नाथ जी को अर्पण करते हैं। दूसरा भाग गंगा जी को और तीसरा भाग बालिपात्र से का कुत्ते चिड़िया इ० को देते हैं। यहां हरेक कर्म के मन्त्र होते हैं जो योगेश्वर हमेशा उपयोग में लाते हैं तथा कंठस्थ करते हैं।

अत: इस प्रकार साधक भी श्री गुरु गोरक्षनाथ जी को कच्चा दूध और रोट का भोग लगावे।

अत: पुजारी भण्डारी को भोग लाने का आदेश देता है और निम्न मन्त्र पढ़ता है भण्डारी को हांक लगाना है। भण्डारी भोग पात्र में रोट तथा दूध और करद (चाकू) भगवे वस्त्र (लाल) से ढककर लाता है।

भण्डारी को आदेश मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। कुबेर भण्डारी बना भण्डार, ऋद्धि सिद्ध ले पहुंचाया दरबार। भरीया मेला नवनाथ चौरासी सिद्ध ऋद्धि सिद्ध ले आगे धरीया भोग। नाथ जी गुरुजी को आदेश।

पुजारी भोग पात्र लेता है और गुरु गोरक्षनाथ जी के सन्मुख भूमि के ऊपर रखते हुये निम्न मन्त्र का उच्चारण करता है।

रोट गोदी देने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। शून्य शून्य महाशून्य, महाशून्य में ओंमकारा, शिव शक्ति मिल किया पसारा नीचे धरती ऊपर आकाश झेल झेल धरती माता रोट का प्रकाश। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अर्थात साधक इस मन्त्र द्वारा रोट (धरत्री) गोदी लेवे और निम्न प्रकारे श्री नाथ जी को भोग लगावे।

पुजारी दूध और रोट का भोग लगाता है। आचमनी से ३ बार जल भोग पात्र ऊपर घुमा के ३ बार धरत्री पर जल छोड़े। आचमन करके, घण्टानाद से समर्पण करता है। (इस तरह साधक भी भोग लगावे) अन्त में पुजारी नाद (पूजा) आदेश करके प्रार्थना करता है। भोग ग्रहण करे। तदनन्तर करद से रोट

काटते हैं। रोट स्वास्तिक आकार में काटकर रोट के बीचोबीच एक चौकोन टुकड़ा तीन भाग में काटते है। (जिसे रोट की नाभी कहते हैं) एक भाग श्री नाथ जी को अर्पण करता है तदनंतर पुजारी निम्न मन्त्र से रोट का भोग लगा के मुक्त करता है।

रोट मुक्ताने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी आदि योग, अनादि माया। जहां पर श्री नाथ जी को रोट चढ़ाया। अन्न पाणी का पुतला सतगुरु जी का उपदेश। आसन दीना रोट को, थिर भरप्या ब्रह्माण्ड। करद झेल मुक्ता करु नाभी रही अखण्ड। नाभी स्थान में नाभी चढ़ाऊ, सिर स्थान में शीश। दादा मत्स्येन्द्रनाथजी के पादुका में शीश नवाऊ, श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अत: पुजारी रोट भोग समर्पण करता है। साधक फलों का आम कटहल —खर्जुर—नारियल—केला—अंगूर सेव इत्यादि का भोग लगा सकता है तथा पंच पदार्थ का भी भोग खीर—दाल बडा (पकोड़ी) कढ़ी चावल—हलवा तथा पंचमेवा (काजू—बादाम—पिस्ते इ०) इत्यादि खाद्य पदार्थ नाथ योगेश्वरों को प्रिय भोजन है। भोग की विस्तृत जानकारी द्वितीय खण्ड भण्डार कर्म में देखें।

अत: भोग समर्पण के पश्चात श्री नाथ जी के लिये मुख शुद्धि प्रित्यर्थ तांबूल (लवंग इलायची केशर) अर्पण करें तथा निम्न मन्त्र कहे और दक्षणा दान करें।

तांबूल मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! उत्तर दिशा से जोगन आयी दोनों करमे तांबूल ले आई। अलष पुरुष ता: तेरी दुहाई। नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

छत्र पूजा

कुम्भपर्व पर नाथ सिद्ध योगेश्वरों का मेला लगता है। मुख्य अधिकारी पीर महन्त नाथ योगेश्वर सभी मेले में उपस्थित होते हैं। अधिकारियों का आदर सत्कार होता है। मुख्य आसन देते हैं। वार्ता ज्ञान वार्तालाप होता है। स्थानधारी पीर महन्तों का अपने स्थान मेले में आसन छत्र चंवर इत्यादि अनेक आदरणीय कर्म होते हैं।

अतः श्री नाथ जी की शृंगार पूजन प्रारम्भ होती है। साधक ने निम्न मन्त्र से श्री नाथ जी की छत्र चढ़ाये तथा चवर घुमाये। छत्र सोना-चाँदी, ताँबे, रुप इत्यादि धातु का सुशोभित होता है।

छत्र-चवर-मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐसत्य-सत्य, सत्य पर धर्म धर्म पर नीर-नीर पर क्षीर-क्षीर पर अष्ट कुली नागों का आसन लगाय। आसन लगाय सिंहासन लगायै। ऊपर अम्बर, शिर छत्र विष्णु जी के हाथ, चांद-सूरज तारा मण्डल, देखो सिद्धों ब्रह्माण्ड का थाट।

ऊंचा आसन लाल मन्दिर उस पर बैठे जती गोरख। आद कुवारी ज्योत जगाये, चवर घुमाये महेश। त्र्यंबक क्षेत्र आनुपान, शिला, अनन्त कोट सिद्ध का लाग्या मेला। जहा पर बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी ने ज्ञान ध्यान का पाठ सुनाया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः झोली नाथ सिद्धों योगेश्वरों में प्रसिद्ध हैं। भूतकाल में भगवे वस्त्र की झोली थी। बाद में झोली सुई रंगीन धागों से बुनके तथा सुंदर आकार बनाते, अन्दर अनेक जेब बनी होती है। योगेश्वर अपने बगल में हमेशा झोली रखते हैं। झोली में भभूत, सुई धागा, बटुवा साधारण जड़ी-बूटी दवाई। देवताओं को फोटू मुद्रा इत्यादि जीवन आवश्यक चीजें होती हैं। योगेश्वर झोली मन्त्र द्वारा झोली सिद्ध करते हैं। अतः साधक ने श्री नाथ जी के बाये कन्धे पर निम्न मंत्र से झोली अर्पण करे।

झोली मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी का आदेश। ॐ गुरुजी। कौन दिल कुन दुरवेश कौन पुरुष ने मुण्डे केश, कुन शक्ति ने झोली दिनी कौन पुरुष ने लिनी। ॐ गुरुजी दिल दरयाव मन्त्र दुरवेश। अलख पुरुष ने मुण्डे केश। आदशक्ति ने झोली दिनी, अलष पुरुष ने लिनी। झोली हमारी काम धेनु, संसार हमारी बाड़ी। गुरु प्रताप से भिक्षा मांगू अन्त काल सारी। सिद्ध झोली सिद्ध सबुरी। जारो बल का नगर में खबर कर, नागा वागा, निर्वाणी नाथ अवधू आया। जाग तो जंजीर जड़ा पग जड़ा तोड़ा गल माला पैर धागा, गुरु देवन के चरण कमल में चित्त लागा श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी अनन्त कोट

सिद्धों में बैठकर सुनाये। इतना झोली मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अतः रमते योगेश्वर खप्पर हमेशा साथ रखते हैं। जो बारह साल खप्पर में भोजन—जल लेता है। वह खप्पर सिद्ध होता है। अतः उन्हें खप्पर धारी कहा जाता है। खप्पर—भोजन, जल पीना भिक्षाटन इत्यादि उपयोग में लाते हैं। सन्यासी बैरागी फकीर इ० सम्प्रदाय में ही खप्पर प्रधान है। भैरो खप्पर, काली खप्पर प्रचलित है। निम्न मन्त्र द्वारा खप्पर सिद्धि प्राप्त होती है। मुख्यतः खप्पर समुद्री किडाशिपा जैसा सक्त बनाते हैं तथा अन्य धातु, सोना, चाँदी, कांस्य, लोहा और मृतीका का होता है। कुछ साधु नारियल का भी बनाते हैं। बड़ा गीला नारियल काटकर, सुखाकर तथा घिसते बनाते हैं। अतः साधक निम्न मन्त्र पढ़कर श्री नाथजी को खप्पर अर्पण करें।

खप्पर का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! खप्पर धर्ती खप्पर आकाश! खप्पर में तीन लोक करे निवास। पहिला खप्पर ॐकार का। दूसरा खप्पर सिद्धों का, तीसरा खप्पर धर्ती सारी। चौथा खप्पर माई की ज्योति प्रकाश। कौन खप्पर आटे—घाटे कौन खप्पर ब्रह्मा बांटे? कौन खप्पर खाये खीर, कौन खप्पर उद्धारे शरीर। चाँदी खप्पर, आटे—घाटे, सोना खप्पर ब्रह्मा बाटे। जहरी खप्पर खाये खीर, मिट्टी खप्पर उद्धारे शरीर। खप्पर में खाय मसान में लेटे—काल भैरो की पूजा कौन मेटे? राजा मेटे राजपाट जाय, योगी मेटे योग ध्यान से जाय। प्रजा मेटे दूध पूत से जाय। काल भैरो कपाले केश, गुरु का बालका करता फिरे आलेष—आलेष। काला पीला—तोतला तीनो रहे पाताल! मस्तक बिन्दी सिन्दूर की, हनुमान भैरो योद्धा करे रक्षपाल नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अतः बहुतांशी योगेश्वर चिमटा साथ में रखते हैं। यह धातुओं से बनाते हैं। विशेषतया लोहे का चिमटा कार्य सिद्ध होता है। धूना कर्म में चिमटा विशेष उपयोगी है। चिमटे के ऊपर कड़े लगाते हैं। जब योगीश्वर चलता है तब चिमटा बजाते चलता है। नाथ परम्परा में तथा अन्य सम्प्रदाय में चिमटा एक

प्रधान साधन है। समय पर चिमटा स्वरक्षा हेतु शस्त्र का कार्य भी करता है। निम्न मन्त्र द्वारा चिमटा सिद्ध बनाते हैं।

अत: साधक चिमटा मन्त्र पढ़कर श्रीनाथ जी को चिमटा अर्पण करें।

चिमटा मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! कैलाश पर्वत से योगेश्वर आया। अलष पुरुष से चिमटा पाया। कौन शबद से चिमटा लाया कौन से उतरे पार। चकमक चिमटा धूनी पानी सब राखिये साथ। गुरु शब्द सिद्धों की बानी। लोहे का चिमटा सतगुरु का ज्ञान–चिमटा राखे योगी निर्वाण–चिमटा बाजे चिमटा गाजे, चिपिया माही चिमटन की काया–चिमटे ने सारी सृष्टि को जगाया इतना चिमटा जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: श्री नाथ योगेश्वर, त्रिशूल मुख्यतया धूना कर्म, महाकाली, महादुर्गा, भवानी माई इत्यादि सब शक्ति माँ और शिव–शक्ति पूजा विधियों में उपयोग में लाते हैं। त्रिशूल यह देवी देवताओं का तथा योगेश्वरों का मुख्य शस्त्र है। दुष्ट संहार तथा आप–सुरक्षा हेतु त्रिशूल सिद्ध है। यह सशक्त धातु से बनाते हैं। अघोरी योगेश्वर अघोर क्रिया में त्रिशूल को महत्व देते हैं। लोहा ताँबा इ० धातु में त्रिशूल बनाते हैं। अत: साधक यह त्रिशूल शस्त्र रुप में श्री नाथ जी को अर्पण करें तथा निम्न त्रिशूल मन्त्र का प्रयोजन करें।

त्रिशूल मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ धर्ती सों आकाश, महा धरत्री महा आकाश। त्रिशूल लाया सिद्ध निवास। ॐ पहली धार अनहद बानी, दूजी धार अमृत बाणी तीसरी धार अलख निर्वानी। सिद्ध साधक ने त्रिशूल धरिया। लोहा त्रिशूल जोगी निर्वाण। आसन पवित्र, त्रिशूल पवित्र कहे मछन्दर सुन बा गोरष त्रिशूल सदा राखियो पास, काल कन्टक नहीं आवे पास। त्रिशूल चाले भूत पिशाच निकट नहीं आवे। इतना त्रिशूल मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

इस प्रकार श्री नाथ योगेश्वर साधना काल में नाद मुख्य मानते हैं। त्रिकुटी भंवर गुफा में जब ध्यान लगाते हैं। तब नाद ब्रह्म का ज्ञान होता है। अनेक प्रकार

के नाद सुनाई देता हैं। अतः डमरू का नाद सुनना, शिव (साक्षात्कार) संकेत माना जाता है। धूना आरती तथा देवता पूजा आरती में पुजारी डमरु ध्वनि बजाते हैं। डमरु को साधु सम्प्रदाय में ही प्रधानता देते हैं। अतः साधक निम्न मन्त्र प्रेरित डमरु श्री नाथजी को अर्पण करें अर्थात् डमरु त्रिशूल में बांध देवे।

डमरु मन्त्र

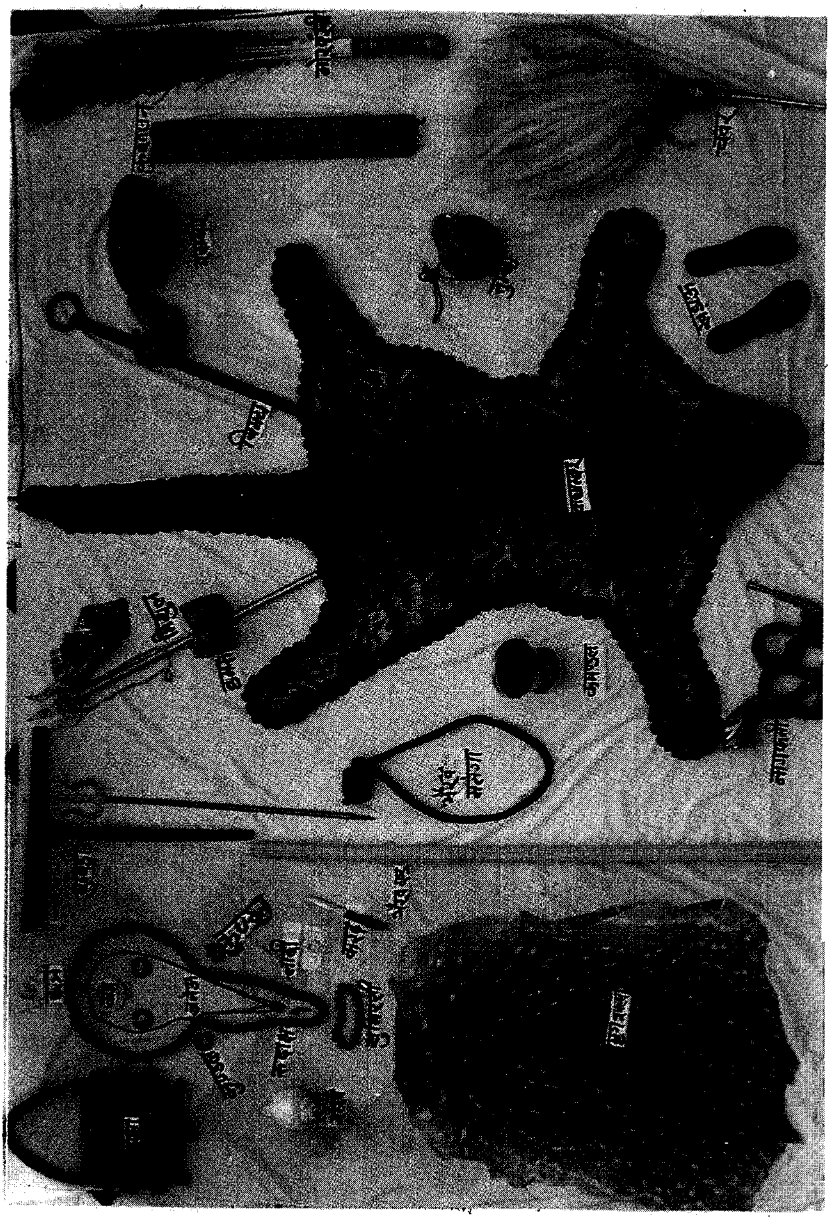
सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐकार शबद, पर कैलाश गीरी, कैलास गीरी पर गगन मण्डल, गगन मण्डल पर नाद अनहद बाजा अनहद नाद डमरु सजाया नाथ निरंजन ने ध्यान लगाया, त्रिकुटी महल में शबद सुनाया। ॐ हं सोहं से मार्ग पाया। कहोरे अवधू यह डमरु कैसे आया। ॐ गुरुजी यह डमरु आद्य पुरुष ने लाया पीछे साध सिद्धों ने पाया नाद ॐकार गुरु ज्ञान डमरु राखे योगी निर्वान डमक् डमरु ड़मक् नाद शिव तण्डव शबद साध मस्त कलंदर कलेश्वरनाथ, अवधू त्रिताल त्रिलोकीनाथ चौदह सूत्र शास्त्र ज्ञानी मन्त्र तन्त्र शाबर खाणी, धूनी पाणी सिद्धों की बाणी डमरु बाजे ॐकार बाणी डमरु गाजे डमरु बाजे डमरु तीन लोकक्‌ु तारे इतना डमरु मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश आदेश।

अतः कमण्डल साधु संत तथा योगेश्वरों का प्रमुख साधन है। योगेश्वर कमण्डल हमेशा साथ रखते हैं। जल पान, पूजा पाठ में जल चढ़ाने में इ० उपयोग में लाते हैं। बिना कमण्डल योगेश्वर अधूरा रहता है कमण्डल अनेक धातु के होते हैं। विशेषतः पीतल के कमण्डल प्रचलित हैं।

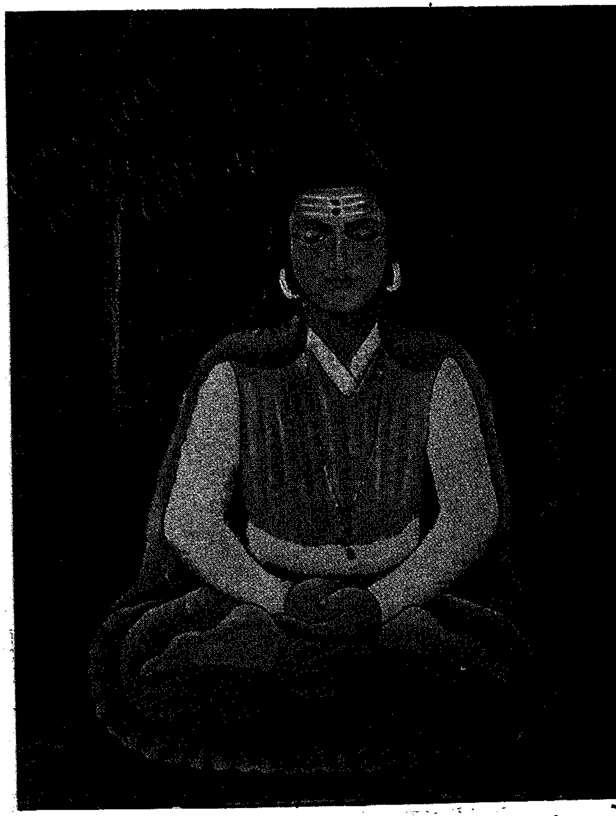
अतः साधक निम्न मन्त्र उच्चारण करके श्री गुरु गोरक्षनाथ जी को कमण्डल अर्पण करें तथा उसमें गंगाजल भरे।

कमण्डल मन्त्र

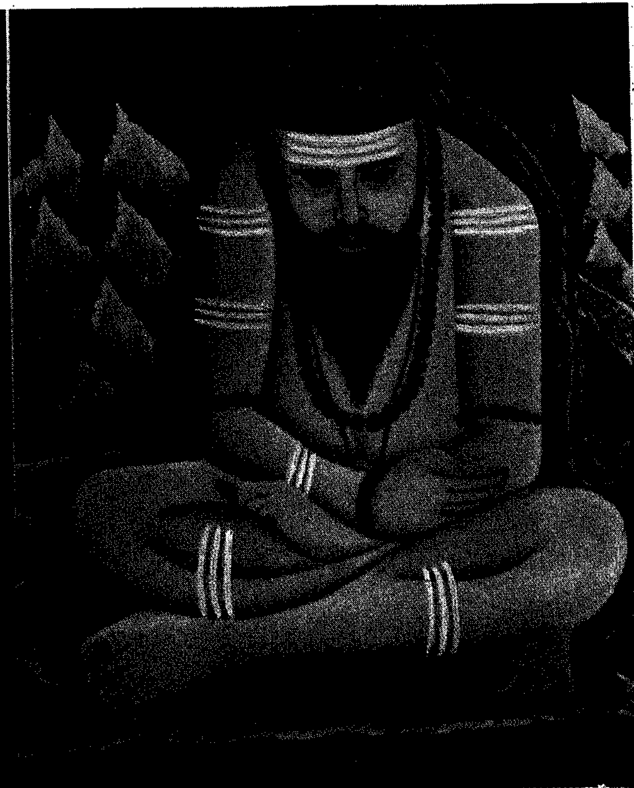
सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐकार, निरन्जन निराकार अवधू जोगी घट तत्सार! अलख, अलख अतीत, शिवशक्ति भयी घटीत, शक्ति न लैबा नौमास खीर, लैबा शम्भु घट घट नीर। पलटन्त काया उलटन्त नीर। पडे न पिण्ड पीवै नीर; कमण्डल जल घट हुआ निर्माण। अमीरस पियो पियो कमण्डल नीर। सिध साध मन हुआ थिर। घट घट में सब सृष्टि समाई; त्रिवेणी संगम चन्दा रवि। घट पिण्डे दीप ज्योति; जती गोरक्ष घट घट वासी। देवी देवत्या तीरथ यात्रा; साथ कमण्डल, अमीरस धारा। घट का कोई जाने भेव आप कर्ता आप ही देव।



श्री नाथ सिद्धों की सामग्री



पन्थ-सतनाथ
श्री सिद्ध रतननाथ जी



पन्थ-गंगनाथी
श्री सिद्ध सुन्दरनाथ जी

नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध योगेश्वर

इतना कमण्डल मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

शंख योगेश्वर परम पूज्य मानते हैं। यह शुभ कार्यारम्भ और तेज का प्रतीक मानते है। नाथ योगेश्वर योग माया कर्म में, काली पूजा भैरव पूजा और पडे पिण्ड तृप्ति के लिये शंख से जल तर्पण करते हैं। शंख ध्वनी की क्रिया मांगलिक कार्य पर्व उत्सव में अलग-अलग होता है। युद्ध भूमि पर शंख ध्वनि अलग होता है। पडे पिण्ड के समय शंख ध्वनि निराली होती हैं। योगेश्वर समय अनुसार शंख का उपयोग करते हैं। शंख ध्वनि अत्यंत शुभ तथा शास्त्रीय विधान से किटाणुनाशक है। मिरगी, मूर्च्छा कंठमाला कोढ इ० बीमारियों पर शंख ध्वनि से लाभ होता है। यह शंख वामवर्ती शंख और दक्षिणवर्ती शंख प्रकार में है।

वामवर्ती शंख ध्वनी पूजा शुभ हैं। भूत प्रेत इस शंख ध्वनि से दूर भागते हैं। योगीयों के प्रति शंख ध्वनी से फेफडे-श्वांस का व्यायाम होकर हृदय रोग नहीं होते। दक्षिणवर्ती शंख कम मात्रा में हैं। यह धन समृद्धिकारक हैं। शंख से जल जिसके ऊपर छिड़काये उसकी संकट पीडा हरती हैं। घर मन्दिर मकान स्थान में शंख रखने से धन समृद्धि होती हैं। अत: साधक निम्न शंख गायत्री मन्त्र से गुरु गोरक्षनाथ जी को शंख प्रदान करें।

शंख गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। शंख शंख संजोग भया ज्ञान गोदडी चंचल विलया। निर्भे जोगी बेपरवाई, आदका शब्द सिंगारो भाई॥ तुम हम अलिल पुरुष तीनों मिलवा भाई मैं तो पूछो पिण्ड की अवधू जोगी राई। अर्वद नर्वद धुन्धूकारा, शब्द न स्वाल न एकोंकारा॥ मरगई गौरा रह गया रुण्ड; शिवले पहरा गल में मुण्ड। हाड़ चाम पिन्जर का नला षट दर्शन ले घाली गला॥ अमृत कूपी ले आगे धरी; जल थल में माता गौरया खड़ी। जल में करी मीन की थाप, पाच शंख छटी गायत्री गौरा; ले निकसी अपने हाथ॥ पढ़ो शंख गायत्री सार, गंगा नदी भवसागर तार। अम्बे देवी का जपो जाप पडे पिण्ड का पर हर पाप॥ उठो नारायण करो पसाऊ चार चौकडी जीव को दीजें ठाऊ। षट्मास जोगी हठनिग्रह करै, एकोत्र सै पुरुषालै अमरापुर

तरै।। पढ़ो वेद गायत्री सार पिण्ड प्राण उर्ध्वगति तार। गायत्री सावित्री चौपगी चौवेदी सुने सिंगी रुपेखुरी चँवर पुछी।।

ताँबे वरणी जमघंटी नदी वैतरणी तार, राख राख माता शम्भुशिव गायत्री राख, अघोर पिण्ड पडन्ता राख। ब्रह्म विष्णु महेश्वर साख। सत बोले सतवादी नर, गुरु वाचा तत सार। शंख गायत्री सम्भालो बहुडी न लै औतार।। ॐ गुरु जी गंगा जमुना सरस्वती तीनों अखण्ड कवार। शंख ढरै शिव पूजिये प्राणि पावे मोक्ष द्वार। इतना शंख गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

बहुतांशी योगेश्वरों सब सुरक्षा के लिये सोटा (डंडा) रखते हैं। यह सोटा लकड़ी का होता है तथा ऊपर घुंघरु बांधते है। इसे काल भैरव मुसल कहते हैं। इसे भैरवी योगी सिद्ध करते हैं। ५ या ६ फुट डंडा तेल लगाके नित्य रम्मत (प्रवास में) अपने साथ रखते हैं।

कुछ नाथ साधक नुकीले काटे वाला साबर डंडा रखते हैं। यह सिद्धि प्रद होता है। भूत–प्रेत के लिये शाबर, निम्ब, आंवला वृक्ष का इ० के डंडे साथ रखते हैं। साग का डंडा सर्वता मान्य है।

अत: साधक श्री नाथ जी को निम्न मन्त्र से (डंडा) सोटा प्रदान करें।

भैरव दण्ड मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरौ। ॐ आद का धर्म अपार ब्रह्म जोगी भैरव नमो नमस्ते। दण्ड हात खप्पर काल भैरव, गले माल रुण्ड मुण्ड।। निर्भय जोगी जंगल फिरे श्मशान फिरे। फिरे सारे ब्रह्माण्ड।। अनहद नाद घुंगर बोल; गुरु शब्द गुरु ज्ञान। भरे संसार झरे संसार फिरे जोगी अनभय काल।।

दण्ड दण्ड महादण्ड प्रथम दण्ड काल भैरो हात; भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल। दूसरा दण्ड अकाल भैर हात; भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल। तीसरा दण्ड लाल भैरो हात; भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल। चौथा दण्ड जल भैरो हात, भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल। पांचवा दण्ड थल भैरो हात; भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल। सष्टमे दण्ड बाल भैरो हात, भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल। सातवां दण्ड आकाश भैरो हात, भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल।

आठवां दण्ड क्षेत्रपाल भैरो हाथ, भर खप्पर तेल सिन्दूर रक्षपाल। येता अष्ट भैरो सदा रहो कृपाल। दण्ड हमारा पिण्ड का प्राण, वज्र हो काया कर रक्षा काली का पूत। आवे दण्ड जावे दण्ड सो काल भागे बारा कोस। काल दण्ड शिर कंटक का फोड़, हम को रख, दुष्ट को भख एता भैरा दण्ड मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में बैठ त्र्यंबक क्षेत्र अनुपान शिला आवलागढ़ परबत पर श्री गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथ कर सुनाया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: नाथ योगेश्वर अपने दाहिना हात हथेली में या बाया पैर में कड़ा पहनते हैं। कड़ा सोने का, चांदी का, तांबे का, लोहे का, अष्ट धातु का या गण्डे का होता है। निम्न मन्त्र से योगेश्वर कड़े को सिद्ध करते हैं। इसे नाथ कंगण भी कहते हैं। अत: साधक श्री नाथजी को कड़ा प्रदान करें।

कड़ा (कंगन) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ सोंहम शबद गुरु सुरति चेला। जोगी का धर्म, जाप जपे शिव ओंकारा। तले धरत्री गगन की छाया। पांच तत्व में रमे अकेला। कहो रे बालका कौन पुरुष ने दीना। कड़ा ॐ गुरुजी, अलष पुरुष ने दीना कड़ा! अष्ट धातु का कड़ा बनाया। बिच भैरो आन समाया। ब्रह्मा राखे विष्णु तारे रक्षा करे काल की माता। दुष्ट मार काल दरवाजे पर हनुमन्त खड़ा। मन्त्र पढ कड़ा लिना सो नर भव सागर तरा, इतना कड़ा मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अब श्रीनाथ सिद्ध योगेश्वरों में नागफनी विशेष प्रसिद्ध है। नागफनी धातुओं से बनाते हैं। लोहा, ताँबे, पीतल की मुख्यता बनाते हैं तथा सुवर्ण (चाँदी का भी बनाते हैं) इसका आकार नाग जैसा बनाते हैं। शंख के समान यह शुभ कार्य में बजाते हैं। धूना तथा देवताओं के आरती में योगेश्वर बजाते हैं। नागफनि की ध्वनि बहुत दूर तक सुनाई देती है। भण्डारा में भोजन पंक्ति में प्रथम और आखिर वक्त में नागफनी नाथ योगेश्वर बजाते हैं। रम्मत जमात (फिरस्ती योगेश्वरों का सन्च हमेशा एक स्थान से दूसरे स्थान में यह योगेश्वर देश विदेश में घूमते हैं। सांप्रदायिक प्रचार प्रसार का कार्य देश विदेश में करते हैं सांप्रदायिक अधिकारी हेतु दो महंतों की नियुक्ति की

जाती है।) इस रम्मत जमात में नागफनी को तथा नागफनी बजाने वाले को विशेष मानते हैं। मान धारी नाथ योगेश्वरों में इनको भी मान दिया जाता है। अतः यह जमात योगेश्वर स्थानों पर आने की सूचनार्थ तथा प्रस्थान करने सूचनार्थ नागफनी बजाकर सूचित करते हैं। विशेषतः नागे साधू योगेश्वर नागफनी–धारी होते हैं। योगेश्वर नागफनी को विविध रंगों के वस्त्रों से लपेटकर सुन्दर सजाते हैं। साधु सन्त तथा देवी देवता भी नागफनी ध्वनि से सतर्क होते हैं। शारीरिक विधान से इसकी ध्वनि से हृदय, फेफडे, कर्ण यन्त्र, श्वास नलिका सुदृढ़ सशक्त होते हैं। नागफनी ध्वनिनाद से भूत प्रेत अती दूर भागते हैं। अतः साधक श्री नाथजी को नागफनी प्रदान करें।

नागफनी बजाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ सों ओंकारा कैलाश पर्वत पर शिवपुरी का मेला, अनन्त कोट सिद्ध का, जुग जुग मेला। चार धाम पांचवे मुक्काम गोरष मढ़ी में नागफनी बजाया। नागा की नागफनी, रुप की नागीन, नागफनी बजाये–पद्मनी राणी। ओं माई, कौन नागफनी ब्रह्मनाद! कौन नागफनी विषण नाद! कौन नागफनी ओंकार नाद! कौन नागफनी सतगुरु ज्ञान! ॐ गुरुजी, ताँबे की नागफनी ब्रह्मनाद! पीतल की नागफनी विषण नाद! लोहे की नागफनी ओंकार नाद! उनमनी नागफनी सतगुरु ज्ञान। गुरु का पूता, सतगुरु का ध्यान। नाद नागफनी शत्रु को मार! काल कंटक ना आये पास। इतना नागफनी मन्त्र सम्पूर्ण भया अनंत कोट सिद्धों में बैठकर त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला पर शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथ कर सुनाया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अतः इस प्रकार पुंगी यह भी योगेश्वरों का नादवाद्य है। यह पुंगी कुछ योगेश्वर हमेशा पास रखते हैं। बैरागी, सीताराम पंथी सन्यासी इ० सम्प्रदाय पुंगी उपयोग में लाते हैं। पुंगी मुख्यता तुम्बा की बनाते हैं तुम्बा सूखा हुआ घीया या लौकी जैसा फल होता है। यह बहुत शुद्ध तथा पवित्र मानते हैं। पुंगी के ध्वनि से देवी–देवता मोहित तथा प्रसन्न होते हैं अर्थात नाथ योगेश्वरों को पुंगी प्रिय है और वह मन्त्रों द्वारा सिद्ध की जाती है।

अर्थात साधक ने निम्न मन्त्र से (तुम्बा) पुंगी श्री नाथजी को अर्पण करें।

तूम्बे का (पूंगी) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी जागदी ज्योत की प्राप्ति- अनन्त कोट सिद्धों ने मिल थापना थापी। चार युगों के बीज मंगाये, धर्ती माता पर पधराय! उसमे लागा तूम्बा उस तूम्बे में से एक ही रखना भाई। ताम्बा तूम्बा दोनों सुच्चा राजा योगी दोनों ऊंचा ताम्बा डूबे तूम्बा तरे-इस विधि राजा योगी की सेवा करें। पात्र पवित्र तूम्बा पवित्र कहे महादेव सुनो पार्वती तूम्बा सदा राखियो पास इतना तुम्बा का मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथ जी, गुरु जी को आदेश। आदेश।

तुम्बे का एक तारी, तम्बोरा भी बजाके संत लोग भजन करते हैं।

अत: योगेश्वर अपने साधन कुबड़ी हमेशा पास रखते हैं। कुबड़ी को आधारी, आधार या आसा कहते हैं। जब योगी योग ध्यान में बैठते हैं। तब यह कुबड़ी का आधार लेते हैं। यह गोल लकड़ी का मजबूत डंडा होता है उपर अर्धचन्द्र आकृति का लकड़ी का पट्टा लगाते हैं यह कुबड़ी योगी बगल में लगाते हैं कभी दोनों बगलों में दो आधारी लगाते हैं। यांतो ठोडी में आधार के लिये कुबड़ी लगाते हैं। इसके आधार से योगी ज्यादा समय तक आसन (साधना) लगा सकता है।

विशेष प्रकार से हटयोगी यह कुबड़ी जमीन में जमाकर ऊपर सीधा लकड़ी फट्टा लगाकर उस पट्टे पर बैठकर आसन लगाते हैं। इसे बहुत अभ्यास करना पडता है। यह कुबड़ी योगी झाड़ फूंका में भी उपयोगमे लगाते हैं। कुबड़ी तथा इसी प्रकार में फावड़ी भी पास रखते हैं धूना में फावड़ी का उपयोग करते हैं। अत: साधक ने श्री नाथ जी को कुबड़ी अर्पण करें।

कुबड़ी (आधारी) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अलख निरन्जन ने अलख जतायी। मनसा धाती ने दिन्ही कुबड़ी। तब पीछे अलख निरन्जन ने सिद्धों को दीन्ही। आओ सिद्धों धरलो ध्यान, अलष पूरुष का ज्ञान। आधारी लागे ठोडी आधार, पाताल गंगा चढ गई कैलाश। बगल कुबड़ी जोगी महेश, भ्रवर गुफा में लायी ज्योत। शिव कहे सुनबा मछन्दर कुबड़ी

सदा राखीयो पास, काल कण्टक ना आये पास। पढ़ मन्त्र कुबड़ी आधार, सो जोगी शिवपुरी में जाय बिना मन्त्र आधारी लगाय सो जोगी नरक लोक जाय। इता कुबड़ी (आधारी) मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

श्री नाथ सिद्ध योगेश्वर ऊन से अड़बंध और धागे से मेखला (शैली) बनाते हैं। मेखला को घुंगरु बांधते हैं और शैली को गेंदसा गड्डु लगाते हैं। जब मेखला कमर में बांधते रमता योगी चलता है। तो घुंगरु ध्वनि निकलता है। ऊन का अंडबंद नागे योगी लंगोट के साथ बांधते हैं। अड़बंद तथा मेखला पवित्र तथा शुभ मानते हैं। इस मेखला को योगेश्वर भैरव मतंगा नाम से जानते हैं। भैरव मतंगा जो योगी कमर में पहनता है। वह वैरागी तथा त्यागी तपस्वी माना जाता है। यह योगी काम क्रोध मद मोह मत्सर से पूर्ण निवृत होता है। अर्थात नाथ परंपरा में भैरव मतंगा महत्वपूर्ण और प्रिय होता है।

अतः साधक ने श्री नाथ जी को (कमर में) भैरव मतंगा (मेखला) निम्न मन्त्र से अर्पण करें।

भैरव मतंगा (मेखला) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सत का मेखला, अडबंद ऊनका। सूत मेखला कमर में लाग्या॥ गोरष कहे सुनबा अवधू। भूखा ना रहे ना रहे नंगा। बांधबा अवधू भैरव मतंगा। सती धन का ना कर प्रबोधीबा॥ अलख पंथ में रमता अकेला। संग शैली ज्ञान का टोपा। त्याग वैराग तहा जोगी या मेखला। सिद्ध भैरो सिद्ध मतंगा काम क्रोध तजले बंदा। सन्तोष मेखला नागा लगावे आसन पद्मा। तीन लोक त्रिकुटी भया नाद बिंद का अनहद बाजा। धागा विन अंडबंद मेखला, भेव न जानबा सतगुरु बिना॥ इतना भैरव मतंगा मन्त्र अनंत कोट सिद्ध में बैठ त्र्यंबक क्षेत्र अनुपान शिला कोलागढ़ पर्वत पर पढ़ कथ कर श्रीनाथ जी ने सुनाया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः श्री नाथ जी को चरण पादुका (खड़ाऊं) अर्पण करें। खड़ाऊं मुख्यता सभी सम्प्रदाय में प्रसिद्ध है। नाथ योगेश्वर भी खड़ाऊं पहनते हैं। यह लकड़ी

से अलग अलग आकार में सजा के बनाते हैं। यह खड़ावा पहनाने से भूमि की उष्णता का असर शरीर में नहीं होता तथा अंगूठा वाली खड़ावा से ब्रह्मचार्य का रक्षण होता है तथा लकड़ी खड़ावा शुद्ध तथा पवित्र माना गया है। पूजा करने हेतु खड़ावा सुवर्ण, चाँदी, तांबा, पीतल इ० धातु से बनाते हैं।

अत: निम्न मन्त्र से साधक श्री नाथ जी को खड़ाऊं अर्पण करें।

चरण–पादुका मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ३ॐ गुरुजी वृक्ष तलाई वृक्ष सार वृक्ष बांधी खड़ाऊं पाव। सतगुरु चरण पखालिये, चरण पादुका को नमो नमः।। ३ॐ चरण पादुका अवधू लाये, पाप पुण्य से न्यारा रहे। सुन पूता कहे गोरष, पारा चढ़े पारा राखे पादुका हमेशा साथ रहे।। धरत्री जले बरसे अम्बर, सब दिशा, राख लेवा साथ हमारा। हम योगी युगत कि खड़ावा, कोई विरला भेद पादुका का पाया। कौन गुरु कौन चेला कौन गुरु परम उद्धार अलख गुरु, निरन्जन चेला, शिव गोरष गुरु परमउद्धार इतना पादुका मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

इस प्रकार वेश भूषण (श्रृंगार) अर्पण करने के पश्चात साधक ने श्री नाथ जी के समीप कपूर पात्र में निम्न मन्त्र से कपूर चेतन करें और कपूर आरती करें।

कपूर चेतन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ३ॐ गुरुजी। ३ॐ ओंकार अक्षय मण्डल निराकार, निराकार स्वरुप में ज्योति स्वरुप। शिवपुरी से आया अवधू सत का प्रकाश, चेतन भया कपूर। सत्य का पात्र, पात्र का सुपात्र, सुपात्र में लागा कपूर। गुरु शब्द सदगुरु बंचन, निर्मल ज्योत भयी भरपूर।। ३ॐ ज्योति ज्योत कर्पूर–ज्योति, आत्म ज्योति, निरन्जन ज्योति पुरुषाय विद्महे महाज्योति पुरुषाय धीमही तन्नो, निरन्जन प्रचोदयात। इतना कपूर चेतन मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: साधक के गुरु गोरक्षनाथ जी का स्तवन करें। (स्वरुप–स्तवण) अर्थात निम्न गुरु गोरक्षनाथ जी की पंच मात्रा का पाठ करें।

गुरु गोरक्षनाथ जी की पंच मात्रा

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी जी। कहो रे बालक किस मूण्डा किस मुण्डाया किसका भेजा नगरी आया। सतगुरु मुण्डा लेख मुण्डाया। गुरुं का भेजा नगरी आया। चेताऊ नगरी तारु गांव, अलख पुरुष का सिमरु नाम। गुरु अविनाशी खेल रचाया अगम निगम का पंथ बताया। ज्ञान की गोदड़ी क्षमा की टोपी, जत का आडबंद-शील लंगोटी। आकार खिन्था-निराश झोली, युक्ति का टोप-गुरु मुख की बोली। धर्म का चोला सत्य की सेली, मरी जात मेखले गले में सेली। ध्यान का बटुवा-निरत का सुईदान-ब्रह्म अचला पहिने सुजान। बहुरंगी मोरद्वल-निर्लेप दृष्टि निर्भीजन डोरा न कोई सृष्टि। जाप जपोटा, शिव सा दानी। सिंगी शब्द गुरुमुख को बानी। सन्तोष सूत-विवेक धागा, अनेक टिल्ली तहां जा लागा। शर्म की मुद्रा-शिव विभूता, हर वक्त मृगयानी ले पहिने गुरु पूता। सूरत की सूई-सतगुरु सेवे जो ले राखे निर्भय रहे, सेली कहे शील को राख-हर्ष शोक मन में नहीं भाख। चोरी यारी निद्रा परि हरे। काम क्रोध मल सूत्र न धरे। इतना गोरक्षनाथ जी की पंच मात्रा जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी को आदेश। आदेश।

अतः साधक ने आदेश-नमस्कार-प्रदक्षणा-नाद बजा के आदेश करें तथा गुरु वन्दना करें।

नादपूजा गुरु वन्दना

एकोंकार तेरा आधार, तीन लोक में जय-जयकार।
नाद बाजै काल भाजै, गोरक्ष टोपी ज्ञान छाजै॥
गलेनाद पुष्प की माला, रक्षा करे गुरु गोरख बाला॥

चारखानी, चारबानी चन्दा सूरज पवन पानी। एक देवा सर्व सेवा जोत पाटले परसो देवा। काने कुण्डल गले नाद करो सिद्धों नादोंकार। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश। बाले गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश। श्री गुरु महाराज जी को आदेश। आदेश।

अतः साधक श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की प्रार्थना करें।

प्रार्थना

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अलख निरन्जन नाथ तुम शिव गोरख अवतार। सद्गुरु जी किरपा करो, भव सागर से पार॥ घट घट के वास तुम मम हृदय करो निवास। नित नित सानन्द दो मोक्ष-मुक्त वरदान॥ दया-क्षमा करना तुम सकल मम अपराध। काया कोट दस द्वारका रक्षा करो कृपाल॥ ज्ञान शक्ति सेवा दान का योग युक्त आदेश। सिद्ध पुरुष योगेश्वरो दो मुझको उपदेश। हर समय सेवा करु सुबह शाम आदेश।

इतना श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की षोडशोपचारे पूजन सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के चरण कमल को नमो नमः आदेश। दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी के चरण पादुका को नमो नमस्कार आदेश।

***

रौरास (आवरण पूजा)

अतः अन्त में साधक ने नाथ सिद्ध यन्त्र के अनुसार सभी नाथ सिद्ध योगेश्वर, शक्तियाँ नौनाथ चौरासी सिद्ध इ० आवरण पूजा करके नमस्कार तथा आदेश करें, अर्थात निम्न रौरास पढ़कर पाठ करें। दाहिने हाथ में लाल पुष्प अक्षदा लेकर प्रत्येक आवरण पढ़ने पर दर्शित स्थान पर छोड़े और आवरण समाप्ति पर आचमनी से जल छोड़े।

प्रथम आवरण- यन्त्र के मध्य बिन्दू में पूजा तथा आदेश करें या गुरु गोरक्षनाथ प्रधान मूर्ति के ऊपर पुष्प अक्षदा छोड़े।

रौरास पाठः

प्रथम आवरण- सत नमो आदेश। गुरु जी को ओदश। ॐ गुरु जी। आटी घाटी ब्रह्म कपाटी, अलष पुरुष पौठे निज पाटी। लागी कूंची खुलिया ताला, पिण्ड ब्रह्माण्ड भया उजियाला। आवो चंदा बैठो पास, हमको कहो धर्म की बात। सूरज बाला करें विचार, धर्ती तपे अपरंपार। उत्तर दिशा में

धुंधूकार जोत जगाय किया जै कार बल बल जाऊं लागू पाऊ जोती भवन में शीष नमाऊ ॥ जोत जगे सिर थान में सूरज कोटी समान । जो सुख गहरा चाहिये तो धरो जोति का ध्यान ॥ जागी ज्योत भागी छोत, जहां जोत तहा उजियाला । तहां बैठे श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला । गुरु गोरक्षनाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश आदेश नमो नमा: ।

जल छोड़े ।

द्वितीय आवरण- बिन्दु के बाहरी त्रिकोना कृति सद्गुरु यन्त्र की पूजा तथा आदेश करें ।

सत नमो आदेश । ॐ गुरु जी ॐ गुरु जी (..................) (अपने चोटी गुरु जी के नाम) चरण कमल पादुका को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नम: ।

तृतीय आवरण- पुष्प के बाहरी स्वस्तिका चौरस में पूजा तथा आदेश करे ।

सत नमो आदेश । ॐ गुरु जी ॐ गुरु योगी (........................)

(अपने कान चिरा गुरु जी के नाम)

कर्ण छेदन, अलष पुरुष को दर्श बताया मन्त्र बीज का शबद सुनाया । गुरु जी को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमो नमा:॥

सत नमो आदेश । ॐ गुरु जी ॐ गुरु जी (......................)

(उपदेशी गुरु जी के नाम) कर्ण भवर में गुरु मुख बोले । उपदेश का शब्द पढ़ाये । श्री गुरु जी के चरण कमल को आदेश । आदेश नमो नमा: ।

सत नमो आदेश । ॐ गुरु जी ॐ गुरु..............

(भभूत गुरु जी के नाम) काया चढै भस्म, काया बनी अलख निरन्जन श्री नाथ जी गुरु जी के चरण कमल में हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमो नम: ॥

सत नमो आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ गुरु......................

(लंगोट गुरुजी के नाम) शील का लंगोट पारा राखे गुरु हमारा श्री नाथ जी गुरु जी के चरण कमल को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नम: ॥

चतुर्थ आवरण– चौरस के बाहरी त्रिकोन कृति में पूजा तथा आदेश करे।

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ३ॐ गुरुजी। ज्योत ज्योत महा ज्योत अटल ज्योत महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नामामि नमः।

पंचम आवरण– त्रिकोनाकृती के बाहरी नव कोन त्रिकोन की पूजा आदेश करें।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ३ॐ गुरुजी। ३ॐ सत्सरण सत्सरण जागती ज्योत तेरी ओट। राख राख माता शरण पड़े की लाज। तू माता तू पिता, तू सबका सरताज। हम आये शरण में धरया चरण में शीश। बालका जान कीजे दयै दृष्टि आशिश। जै जै गौरी गौरजा पार्वती आद शक्ति जागती ज्योत

३ॐ जोगमाया शैलपुत्री देवी जी को नमो आदेश।

३ॐ जोगमाया ब्रह्मचारिणी देवी जी को नमो आदेश।

३ॐ जोगमाया चन्द्रघण्टा देवी जी को नमो आदेश।

३ॐ जोगमाया कुष्माण्डा देवी जी को नमो आदेश।

३ॐ जोगमाया स्कन्दमाता देवी जी को नमो आदेश।

३ॐ जोगमाया कात्यायनी देवी जी को नमो आदेश।

३ॐ जोगमाया कालरात्री देवी जी को नमो आदेश।

३ॐ जोगमाया महागौरी देवी जी को नमो आदेश।

३ॐ जोगमाया सिद्धि दात्री देवी जी को नमो आदेश।

सष्टम आवरण– नव कोन त्रिकोन के उपर श्रीनाथ सिद्ध योगिनी का आवरण करें।

३ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमही तन्नो बुद्धि (ऋद्धि सिद्धि) प्रचोदयात।

३ॐ ऋद्धि सिद्धि देवी को नमो आदेश।

३ॐ महालक्ष्मी विद्महे विष्णु प्रियायै धीमही तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात। ३ॐ महालक्ष्मी देवी जी को नमो आदेश।

ॐ गंगाजल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात। ॐ योगिनी गंगा गौरजा देवी जी को नमो आदेश।

ॐ सावित्री देवी विद्महे ब्रह्मप्रिया धीमही तन्नो सती सावित्री प्रचोदयात। ॐ योगिनी सावित्री देवी जी को नमो आदेश।

ॐ कामाक्षा विद्महे त्रिपुर सुन्दरी धीमही तन्नो ईश्वरी महामाई प्रचोदयात। ॐ योगिनी कामाक्षा देवी जी नमो आदेश।

ॐ होमीयो देवी विद्महे वज्र हस्ताय धीमही तन्नो आदकुवारी अग्नि प्रचोदयात्। ॐ योगिनी होमीयो देवी जी नमो आदेश।

ॐ महालीला नाग पद्मनी देवी विद्महे पातालेश्वरी, धीमही तन्नो बासुकी प्रिया प्रचोदयात। ॐ योगीनी महालील नाग पद्मनी देवी जी नमो आदेश।

ॐ पद्मनी देवी विद्महे महामंगला धीमही तन्नो जोगमाया प्रचोदयात। ॐ योगिनी महामंगला पद्मनी देवी जी नमो आदेश।

ॐ मयनावती विद्महे जोगमाया धीमही तन्नो जालंदर प्रिया प्रचोदयात। ॐ योगिनी मयनावती देवी जी नमो आदेश।

ॐ सती पार्वती विद्महे शिवप्रिया धीमही तन्नो आदशक्ति प्रचोदयात। ॐ योगिनी उदयनाथ पार्वती जी देवी जी नमो आदेश।

ॐ महाकाली विद्महे ब्रह्मपुत्रीयै धीमही तन्नो रुद्र प्रियायै प्रचोदयात। ॐ योगिनी महाकाली देवी जी नमो आदेश।

ॐ अन्नपूर्णाय विद्महे महाअन्नपुर्णाय धीमही तन्नो अन्नपूर्णी प्रचोदयात। ॐ योगिनी अन्नपूर्णा देवीजी को नमो आदेश।

ॐ तुलजा भवानी विद्महे चण्डीकाय धीमही तन्नो जोग माया प्रचोदयात। ॐ योगिनी तुलजा भवानी देवी जी नमो आदेश।

ॐ बिमला देवी विद्महे सन्तोषी धीमही तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात। ॐ योगिनी बिमला देवी जी नमो आदेश।

ॐ हिंगलाज देवी विद्महे महामाई धीमही तन्नो शंकर प्रियै प्रचोदयात। ॐ योगिनी हिंगलाज देवी जी नमो आदेश।

ॐ तारा त्रिकुटा विद्महे त्रिदेव पुत्रीय धीमही विश्व कर्म—तोतला प्रचोदयात। ॐ योगिनी तारा त्रिकुटा देवी जी नमो आदेश।

ॐ ज्वालायै विद्महे वज्रहस्ताय धीमही तन्नो ज्वाला प्रचोदयात। ॐ योगिनी ज्वाला देवी जी नमो आदेश।

ॐ महा मनसा देवी विद्महे मनसा धाती धीमही तन्नो अलील प्रियै प्रचोदयात। ॐ योगिनी महा मनसा देवी जी नमो आदेश।

सप्तम आवरण— अतः नव कोन त्रिकोन वृत्त के बाहरी दस पंखड़ी वाले वृत के ऊपर दशमहाविद्या को लाल पुष्प अक्षदा चढ़ावे और आदेश नमस्कार करें।

ॐ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली विचै नमः

ॐ जोग शक्ति महाकाली देवी को नमो आदेश।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् स्वाहा ओं ऐं ह्रीं क्रीं हूँ नमः

ॐ जोग शक्ति तारा त्रिकुटा देवी को नमो आदेश।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ओं ह्रीं, श्रीं क एईल ह्रीं
हंस कहल ह्रीं, सकल ह्रीं सों ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः

ॐ जोग शक्ति षोडशी त्रिपुर सुन्दरी देवी को नमो आदेश।

ॐ ह्रीं नमः

ॐ जोग शक्ति भुवनेश्वरी देवी नमो आदेश।
श्रीं ह्रीं क्लीं ए वज्र वैरौचनीय हूँ हूँ फट् स्वाहा नम

ॐ जोग शक्ति छिन्नमस्ता देवी को नमो आदेश।

ॐ हस्त्रों हस्कलरों ह्रीं हस्त्रोः नमः।

ॐ जोग शक्ति भैरवी देवी को नमो आदेश।

ॐ धूंः धूंः धूमावती फट् स्वाहा नमः।

ॐ जोग शक्ति धूमावती देवी को नमो आदेश।

ॐ ह्लीं ब्रह्मस्त्रायैं विद्महे स्तम्भनबाणायै
धीमही तन्नो बगलां प्रचोदयात।

ॐ जोग शक्ति बगलामुखी देवी को नमो आदेश।

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातग्यै फट् स्वाहा। नमः ॐ जोग शक्ति मातंगी देवी को नमो आदेश। ॐ ह्रीं क्लीं कमला देवी फट् स्वाहा नम ॐजोग शक्ति कमला देवी को नमो आदेश।

इतना इस महाविद्या, सप्तम आवरण सम्पूर्ण भया।

अष्टम आवरण—दश पंखड़ी वृत्त के बाहरी नव पंखड़ी वाले पर नवनाथो के लाल पुष्प अक्षदा छोड़े और आवरण नमस्कार आदेश करें।

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। अयोनि शंकर पर दादा गुरु आदिनाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ महामाहेश्वरी आद कुमारी उदयनाथ पार्वती को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ सत्यनाथ ब्रह्म जी जल स्वरुप को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ सन्तोष नाथ विष्णु जी खण्ड खाण्डा तेज स्वरुप को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ अचल अचम्भेनाथ आकाश स्वरुप को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः

ॐ गजबेली गज—कंथड़नाथ गणेश जी गज स्वरूप को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगी नाथ अठारह भार वनस्पति स्वरूप को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ माया रुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ घटे पिण्डे नव निरन्तरे—रक्षा करन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाल स्वरुप के चरण कमल को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

नवम आवरण—नव पंखड़ी वृत्त के बाहरी चौरासी पंखड़ी वाले वृत्त की पूजा तथा आदेश करें।

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। सिद्ध सुमिर चले गोदावरी तीन भुवन हो सिद्ध भूले भटके पंथ कर ध्यावे, अष्ट सिद्धि नव निधि

को पावे । सर्व चौरासी सिद्धों इनकी थिर काया अरु वज्र काया पीवो सिद्धों उन्मुख प्याला सर्व के पति श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला ।

ॐ कपिल नाथ जी, ॐ सनक नाथ जी ॐ लंकनाथ जी ॐ सनातन नाथ जी ॐ विचारनाथ जी ॐ चक्र नाथ जी ॐ नरमाई नाथ जी ॐ रतननाथ जी ॐ श्रृंगेरी नाथ जी ॐ सनन्दन नाथ जी ॐ निवृत्ति नाथ जी ॐ सनत्कुमार नाथ जी ॐ ज्वालेन्द्र नाथ जी ॐ सारस्वाताई नाथ जी ॐ ब्रह्मईनाथ जी ॐ प्रभुदेव नाथ जी ॐ कनकाईनाथ जी ॐ धुन्धकार नाथ जी, ॐ नारददेव नाथ जी ॐ मन्जु नाथ जी ॐ मनसाईनाथ जी ॐ विरनाथ जी ॐ श्रृताई नाथ जी ॐ नागार्जुन नाथ जी ॐ भुसकाई नाथ जी ॐ मद्र नाथ जी ॐ गैणी नाथ जी ॐ भूचर नाथ जी ॐ जम्भ नाथ जी, ॐ वक्र नाथ जी ॐ चर्पट नाथ जी ॐ बिलेशयनाथ जी ॐ कानिपा नाथ जी ॐ विरबंक नाथ जी ॐ ज्ञानेश्वरनाथ जी ॐ तारानाथ जी ॐ सुरानन्द नाथ जी ॐ सिद्ध बुद्धनाथ जी ॐ भगाई नाथ जी ॐ पिप्पल नाथ जी ॐ चन्द्र नाथ जी ॐ भद्रनाथ जी ॐ एकनाथ नाथ जी ॐ मानिक नाथ जी ॐ गेहल्लारावल नाथ जी ॐ काय नाथ जी ॐ बाबा मस्तनाथ जी ॐ याज्ञवाल्क्यनाथ जी ॐ गोरनाथ जी, ॐ टिण्टीणीनाथजी, ॐ दयानाथ जी ॐ हवाईनाथ जी ॐ दरियानाथ जी ॐ खेचरनाथ जी ॐ घोडा चोलिपा नाथ जी ॐ सहजाई नाथ जी ॐ सुकदेव नाथ जी ॐ औघड नाथ जी ॐ देव नाथ जी ॐ प्रकाश नाथ जी ॐ कोरण्टनाथ जी ॐ बालक नाथ जी ॐ बालगुन्दाई नाथ जी ॐ शाबर नाथ जी ॐ विरुपाक्षनाथ जी ॐ मल्लिका नाथ जी ॐ गोपाल नाथ जी ॐ लधाई नाथ जी ॐ अल्लम नाथजी ॐ सिद्धपाद नाथ जी ॐ अडबंग नाथ जी ॐ गौरव नाथ जी ॐ धीरनाथ जी ॐ साहिरोबानाथ जी ॐ प्रौढनाथ जी ॐ गरीबनाथजी ॐ कालनाथ जी ॐ धर्मनाथ जी ॐ मेरुनाथ जी ॐ सिद्धासन नाथ जी ॐ सूरत नाथ जी ॐ मार्कण्डेयनाथ जी ॐ मीननाथजी ॐ काक चण्डी नाथ जी इतना चौरासी सिद्धों के चरण कमल को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः ।

दशम आवरण- चौरासी पंखड़ी वाले वृत्त के बाहरी चौबीस पंखड़ी वाले वृत्त में पूजा तथा आदेश करें ।

सत नमो आदेश । गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी धरत्री उपर चौबीस ऋद्धि सिद्धि बोलिये । सुन बा अवधू गोरख, यती सिद्धी ब्रह्मज्ञानी के आडी आवे । यती चौबीस सिद्धि आई तो गुरु प्रसादे तै तो त्यागे सोई जोगेश्वर सोये ब्रह्मज्ञानी बल अपार गुरु गोरक्षनाथ जी समझावै । यती चौबीस सिद्धियों को त्यागे सो योगी परम ज्योति को पावे । ॐ अनुमा, महिमा, गरिमा, लघुमा, प्राप्ति, प्रकाशक, असत्या, अवस्था, अष्ट भूताज, छुछुमक्ता, अनुरा, परकाया प्रवेश सूरजवासी, जलवसि, दूरी श्रवण, सिद्धि, दूरी दरसन, सिद्धि, कंस कामोद, अप्रहता, देवता सैल, रुपसेल देवता, हारे नही, त्रिकाल, अग्नि वसी, सबद वसी, इतना चौबीस सिद्धियाँ को चरण कमल में हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः ।

एकादश आवरण- अतः यन्त्र के सर्पाचक्र वाले वृत्त में पूजा तथा आदेश करे ।

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । चक्र भेदन जोति ज्वाला घट अन्दर लषाया । कहे गोरष पिण्ड ब्रह्माण्ड का भेद बताया । ऐसे तत्व ज्ञानी आत्मज्ञानी गुरु देवता को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः ।

ॐ श्री गणेशनाथ जी मूलाधार चक्र को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश नमामि नमः । ॐ नीलनाथ जी महापद्य चक्र को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः । ॐ सत्यनाथ ब्रह्मजी स्वाधिष्ठान चक्र को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः ।

ॐ जपा अजपा सुषुम्णा चक्र को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः ।

ॐ प्राण अपान गर्भचक्र को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः ।

ॐ अग्नि देवता, कुण्डिलीनी चक्र को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः ।

ॐ सन्तोषनाथ विष्णु जी मनीपूर चक्र को हाथ जोड़कर आदेश । आदेश । नमामि नमः ।

ॐ प्राणदेवता लिंग चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ रुद्रनाथ (महादेव) अनाहद चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ हंसनाथ (जीव) विशुद्ध चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ प्राणनाथ जी प्राण चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ ब्रह्म विष्णु महेश (त्रिदेव) अवल चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ प्राण देवता चिबुक चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ प्रणवनाथ जी, बलवान चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ नाद देवता कर्ण मूल चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ आदिनाथ (हंस) आज्ञा चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ आकाश देवता त्रिवेणी चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ चन्द्र देवता योगी, चन्द्र चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ चन्द्र देवता अमृत चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ ब्रह्मानाथ ब्रह्मद्वार चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ वासुकि अकुल चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ श्री गुरु गोरक्षनाथ जी ब्रह्मरन्ध्र भ्रवर चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी उर्ध्वरन्ध्र तालु चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ अलक्षनाथ जी अलक्षबल चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ अकलनाथ जी पुण्यागार (अकण्ठ पीठ) चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ अनन्त नाथ जी कोलहाट (परमशून्य) चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ महाविशाल जी वज्रदण्ड चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ असंख्य जी असंख्य चक्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

इतना अट्ठाईस चक्र, शून्य—परमशून्य इक्कीस ब्रह्माण्ड—ज्योति स्वरुप परम ज्योति स्वरुप को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

द्वादश आवरण—यन्त्र के अष्ट दिशा में अष्ट प्राण पाल को आदेश तथा पूजन करें।

पूर्व दिशा में सूर्य नारायण—

ॐ ओ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि।

तन्नो सूर्या प्रचोदयात्। ॐ सूर्यनारायन को नमो आदेश।

पश्चिम दिशा में—सोमदेव (चन्द्र):—

ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृत तत्वाय धीमहि तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्। ॐ चन्द्र सोमदेव जी को नमो आदेश।

अग्नेय दिशा में—कामधेनु

ॐ क्षीरसागर नन्दिन्यै विद्महे कामधेनु धीमहि तन्नो गौ प्रचोदयात् ॐ गौ कामधेनु को नमो आदेश।

नर्ऋत्य दिशा में- शेष

ॐ पाताल लोक अष्टकुल नागराज बासुकी को नमो आदेश।

उत्तर दिशा में- घौल बैल

ॐ पृथ्वी धारी घौल बैल को नमो आदेश।

ईशान्य दिशा में- अमृत

ॐ वज्र काया अमर हो जोगी अमृत घट को नमो आदेश।

दक्षिण दिशा में- धन्वन्तरी-कल्पवृक्ष

ॐ धन्वन्तरी अठाराभार वनस्पति कल्पवृक्ष स्वरुप को नमो आदेश।

वायव्य कोन दिशा में-शंख

ॐ शंख गायत्री को नमो आदेश।

त्रैदश आवरण- यन्त्र के अष्ठ दिशा में अर्थात चार द्वारों में और कोन दिशा में अष्ट भैरवों की पूजा तथा आदेश करें।

ॐ आदि अलील नाथ जी- सुध बुध भैरव को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ ईश्वर महादेव भैरव को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ दादा मत्स्येन्द्र नाथ भैरव को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ सिद्ध चौरंगीनाथ भैरव को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ सत्यनाथ ब्रह्माजी भैरव को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ सन्तोष नाथ विष्णु जी भैरव को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ वासुकि नाग जी भैरव को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी भैरव को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ क्षेत्रपाल रक्षपाल सिद्ध अष्ठ भैरव के चरण कमल को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

चतुर्दश आवरण- अतः यन्त्र के दस दिशाओं में दश कोटवाल को आदेश तथा पूजन करें।

ॐ पूर्व दिशा में भानू कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ नैर्ऋत्य कोन में गणेश कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ ईशान्य दिशा में हनुमान कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ पाताल लोक में शेष कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ पश्चिम दिशा में चन्द्रमा कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ वायव्य कोन में भैरव कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ उत्तर दिशा में गरुड़ कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ आकाश लोक मध्ये इन्द्र कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ दक्षिणी दिशा में यम कोटवाल को नमो आदेश।
ॐ अग्नेय दिशा में अग्नि कोटवाल को नमो आदेश।

पंचमदश आवरण—यन्त्र के सभी दिशाओं में शस्त्र को पूजा तथा आदेश करें।

सत नमो आदेश। ॐ गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ प्रचण्ड धूना, ॐ आधारी (कुबड़ी) शक्ति, ॐ त्रिशूल शक्ति, ॐ झोली शक्ति, ॐ चिमटा शक्ति, ॐ खप्पर शक्ति, ॐ विभूती माई, ॐ भैरव चोला के चरण पादुका को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। आदेश।

सोलह आवरण—यन्त्र के चारों दिशाओं में अस्त्रों की पूजा तथा आदेश करें।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ कालास्त्र ॐ अघोर अस्त्र ॐ विरअस्त्र ॐ फटकार अस्त्र को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

सत्ररह आवरण—यन्त्र के सभी दिशाओं में पूजा आदेश करें।

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी।

ॐ पूर्वा: ॐ पश्चिमा: ॐ दक्षिण: ॐ उत्तरा:

ॐ आग्नेया: ॐ नैवृत्या: ॐ वायव्या: ॐ ईशान्या: ॐ आकाश: ॐ पाताल: लोक को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

अठारह आवरण—यन्त्रस्थ पाठ करें पूजा तथा आदेश करें।

जागति ज्योत धर्म की राज सबकी ठंकाल भैरव राखे लाज। दुल्लु क्षेत्र वैश्वानरी ज्वाला देवी को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

गोरख डिब्बी ज्वाला है, आगे जोत अखण्डित रहे। कोटि कांगडे भुवनेश्वरी लाटावाली को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ सोहं एं क्लीं एता बीजरुपा, तारा त्रिपुरा तोतलाम्बा को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

उन्नीसवे आवरण—यंत्रस्थ पाठ करें तथा पूजा आदेश करें।

एकोंकार, द्विकुमार, तीन देव, चार वेद, पांच पांडव, छै जाति, सात सती, अष्ट भैरव, नौनाथ, दश औतार, ग्यारह रुद्र, बारह पंथ, जोगी जती, तेरह तेतीस कोटि देवी देवता को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

नवानबे कोटि राज योगीश्वरों को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

अनन्त कोटि सिद्ध साधकों को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

बीसवां आवरण—यंत्रस्थ पाठ—पूजा आदेश करें।

ॐ असंख्य कोटि सूरविरदाता—दानिया को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः। हाजना हजूर जाहरजिंद पीर ज़ोगी को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

धराधर गुप्त प्रगट जीति समाधि वाले सिद्धों को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ग्यानी, ध्यानी, थानी, मकानी, सन्त, महन्त नागानिर्वाणी, जती—सती, त्यागी तपस्वी महासिद्ध योगीश्वरों को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

निन्यावे कोटि राजे, अनंत कोटि नरबीर सतगुरु सुमरण कारणे राजपाट, सब तज भया फकीर ऐसे करनी कमाई वाले राज ऋषीश्वरों को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

इक्कीसवें आवरण—यन्त्र पीठ पर पाठ पूजा आदेश करें।

ॐ योग युगतिका अनुभव भाष्या, लख चौरासी, पड़ता राष्या। अप्रभान निधि अगम विचारे, आप तरै संग साथी तारे।। ऐसे परोपकारी सद्गुरु जी को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ नादमुद्रा जोति ज्वाला घट मे लखाया पिण्ड ब्रह्माण्ड का भेद बताया। ऐसे तत्वज्ञानी गुरु देवता को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमामि नमः।

ॐ शंभो कैलाशपति भोलेनाथ, बालजती गुरुदेव गोरक्षनाथ, रक्षता पाहि मां त्राहि माम। नाथ निरन्जन सब दुख भंजन, गोरक्ष योगी काया निरोगी आदेश। आदेश।

ॐ नमो शिवाय ॐ नमः शिवायै दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी की पादुका को नमामि नमो।

इतना इक्कीस आवरण सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी को आदेश। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। श्री के चरण पादुका को आदेश।

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की पूजा के पश्चात साधक योगेश्वर निम्न पाठ करें। गोरक्ष कुण्डली, ब्रह्मज्ञान, दया बोध, ज्ञान गोष्ठी इत्यादि पाठ करते हैं।

अतः साधक भी पाठ करें।

***

पाठ विधि

गुरु गोरक्षनाथ कुण्डली

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। प्रथमे बोलिये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी देव, विष्णुदेव, महेश्वर देव, ब्रह्मा देव, शक्तिदेव आकाशे पाताले शेष अनन्त कोटि सिद्धों पर करलो आदेश। आरती दर्शन नाम तुम्हारे-आप तरे जगत को तारे, ज्ञान खड़ग ले काल को संहारे-जब हांक पै-डंका बजावे, खेचरी भूचरी देव और दानव मारे। कार के मारे गोरक्ष जपे अनघाड काया, सोलह कला सम्पूर्ण माला-घट पिण्ड की रक्षा करें श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। अमरी धो धो पीवो खीर, अमर हो देही वज्र हो शरीर। ॐ गुरुजी मीन राय को करलो आदेश। गौरी शंकर को करलो आदेश। पश्चिम देश आई उमा देवी आगे बैठी मीन मत्स्येन्द्र गोरक्ष योगी।

जब देवी ने किया आदेश। नहीं लिया आदेश, नहीं दिया उपेदश। जब देवी क्रोध में आई खन्जर बांध हृदय को गई। नाथ निरन्जन सही कर लई। नवमे द्वारे ताडी लाई—दशवे द्वार ब्रह्म अग्नि पर जाली, जलने लगी तब खड़ी पछताई। राख राख हो श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी राख तुम्हारी हूंगी चेली जगत की हूँगी माई। माई कहे तां भोचर सा—तन का कपट हार श्रृंगार गहूँ। शिव शंकर स्वामीजी। तुम्हारा कौन सा विचार है। हम कुछ नहीं जाने देवी जी। अपना गढ़ा आप ही जानो—ईश्वर गौरा दोनों मिला करें। हाटी ईश्वर जी गये सातवे पाताल वाले गोरक्ष का अनन्त अपार—काया न माया—न छाया कली विच कहा है। हे देवी जी। हमको गुरु मुख दिया, तुमको ब्रह्मा मुख दिया, अनन्त कोटि सिद्धों में दण्ड—कमण्डल मीन—आप ही छू गुरुमूखी चीन्ह। घटो घटो गोरक्ष काचे कुवे भर न पानी। घटो गोरक्ष जागन्ता पाप के पहिरे सोवन्ता, धर्म के पहिरे जागन्ता, घटो घटो गोरक्ष भये उदास, पण्डित के हम गुरु मूर्ख के हम दास। घटो घटो गोरक्ष योग पुकारें, अमर धन कोई विरला ही जाने। इन देव अलील गुफा आये, सूर्य सरीखा तपी नहीं, चन्द्रमा सरीखा शीतल नाहीं। इन्द्र राजा बरसन्ते, धर्ती माता सुफल फलन्ते शिव दर्शनी योगी—नित्य उठ ध्यान धरन्ते। पदम शिला पर बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी। दुष्ट को, मुष्ट को—जादू को—टोना को मढ़ी को—मसान को—भूत को—प्रेत को बान्ध जल्दी बांध। रोम रोम में बान्ध, बाल बाल में बान्ध नव नाड़ी, बहत्तर कोठा को बान्ध भस्म कर डाल। नहीं बान्धे तो माता की दूध की धार हराम। गंगा माता की धार हराम। बरसे गगन की धार हराम। दसवे द्वार में सिद्ध विराम्। इतना गोरक्ष कुण्डली पाठ सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अतः साधक योगेश्वर ने निम्न ब्रह्मज्ञान का पाठ करें।

ब्रह्मज्ञान

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। एक अलील पकड़ी बहुरंगा, जिसकी कुएं से पड़ गयी गंगा। एक बून्द से सृष्टि उपाई, राई पर्वत बीच समाई। ब्रह्म सभा में बण्या शरीर—उपजी श्रद्धा छुप गया नीर।

उपजे (ब्रह्म) बंधे विचार , आप पूछे अपना राह, आपे भूल्या भरमिया आप जेवड़ी को कहते है सांप । सोता है तो उठकर जाग । रुई लपेटी रही न आग । भर्मत भर्मत जग भरमाया भया ब्रह्म जब वेद उपजाया । कही कृष्ण कही कंस कहाया कही राम कही रावण आया । माला तसबी टीका छाप-दूजा और जनावे आप । सेवक होके कीनी पूजा-अपना ब्रह्म बनावे दूजा, वेद उपाधि किया जग झेड़ा-ज्यों देखो सिद्धों भव सागर कागज का बेड़ा । भले बुरे दो कर्म बनाय, अपनी पैरी संगल पाय । काढया तार बनाया ख्याल-आप ही फस गया जाल । जब मुठ हुई ग्राह की-तब शिव लीला करणी साखी कर कर कर्म की गत हारी-भीजी कमली हो गई भारी । कर्म ही उपजे कर्म ही मरे-कर्म हि लक्ष चौरासी भरे । भले बुरे का नहीं विवेक-सागर कुन्जी लोहा मेख । धन का कुआ है अभिमान-पति वरकारी युग प्रमाण गौतम ऋषि कि पतिव्रता नारी- जिसकी जग में चली कहानी । अपनी गत में आपा भूल्या, कीना पाता हेत क्या गंगा गया गोदावरी हित, कर हेत काली कमली भईन स्वेत, क्या मथुरा सिमरु मन द्वारीका-मनका खोटा कभी न खरा क्या काशी पुष्कर भोया । जिन अन्दर घट का मैल न धोया । क्या त्रिवेणी सागर संगम नहाय, माटी खोद के देव बनाय । पूजा किनी मन चित्त जोड़-बहुत पशु को ले गये, चोर । क्या गंगा जल पिया मन चितलाय, वह तो अन्त मूत्र हो निकल जाय । कौड़ी तुम्बी नाहावन गई, नहान धोय मुड़ घर गई । मीठी भई न पलटिया रंग क्या हुआ जब नहाय गंग । मन की मैल न जल से जाई । अन्दर घट मे खोजत पाई । भूली भूली रे जग सारी-अलख लखन की गत है न्यारी । गुरु प्रसाद शिव जी पढ़े, भरम की पोथी श्री नाथ जी पढ़े । सच कहे तो मारिये-डोली जात समीत अपने-अपने स्वार्थ के सब कोई गावे गीत-क्या पण्डित कथे कहानी, क्या माखन मांगे पानी, पढ़ पढ़ कागज काले खोय, भोर भये जब चीसू रोय । क्या तुम देश दिशान्तर जाई, तुम खोजो घट के मांही । तेरे घट का भेद न पाया-जल डुबे मरे तिसाया क्या कानी कज्जल पाया, क्या पण्डित चौका दीने, तन मन सच्चा नहीं कीने । तन मन कर लागी काही-क्या भोंदू सेज बिछाई क्याँ । भेख लिया क्या बाणा-जिन पर दुःख नहीं जाना । तेरे हृदय राम न आया घिस-घिस चन्दन तिलक लगाया, जती कहाय जुगता, मन में

हुआ न मुकता। हम योगी हम घरबारी-हम सेवक हम मठधारी। क्या हुआ जब मुण्ड मुण्डाय-क्या हुआ सिर जटा रखाय। सुरत निरत का मेला-हाथ बैठा तेला जप तप सुमिरण नहीं किया-जाते का क्या पकड़ लिया। कहता है पुकार-पुकारा बिना सतगुरु तेरे घट में घोर अन्धेरा। क्या भगवा साफा पीला, क्या वस्त्र पहिरे नीला। क्या वैरागी क्या सन्यासी-जिन माया नहीं त्यागी क्या तुम भये उदासी, कुटी न यम की फाँसी। क्या तुम भये दूधधारी जिसका मन मनसा नही मारी- मन मनसा ठहरानी, जैसा पीया दूध पीया पीया पानी। एक गाढ़ा सा पत्थर जल में पड़िया जब काढया कुडा हो तरिया। एक बात अटक रही भारी, कोई कोई योगेश्वर को लगेरी प्यारी। हरी सेवक रंगा चंगा, उज्जवल काया, निर्मल अंगा। रोहड़ी सक्खर भक्खर, विच ख्वाजे का थान-घोड़ा चोली परसो, सिद्धों उपजे ब्रह्मज्ञान। दाना भूजा भाड़ का फिर उगन का नाही, मन की मिट गई वासना, ब्रह्मज्ञान के माही और ज्ञान सब जान लो ब्रह्मज्ञान सो ज्ञान जैसे गोला तोप का करना चले मैदान। पूर्ण ब्रह्म बसे घट मांही। न कही आवे न कही जाई। इतना ब्रह्मज्ञान पाठ सम्पूर्ण भया। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी के चरण कमल को नमो आदेश। आदेश।

तदनंतर साधक योगेश्वरों ने ज्ञान तिलक का पाठ करें।

ज्ञान तिलक

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ कार तिलक ज्ञान, सिद्धां कारण देह बनी परो बसन्ती माता बैठी सत पूर्णी देवी, विद्यादेवो भरपूर। सन्तोषी सतगुरु का चेला बैठे अटला वृक्ष की छाया, ऊँचे चढ़कर देख तमाशा, नाचे कूदे हर की माया। कहे गुणवन्ता सून बुधवन्ता कलयुग मध्ये कैसे रहिये। आंख न देखे कान न सुने-मुख से कुछ ना कहिये सतगुरु कहे हमारी गहरी बानी। जिसने प्रगट किया सकल पसारा, ले दीपक दरयाव में बैठे, चहुं दिश हुआ उजियाला। ॐ गुरु जी जल सोधू थल सोधू सोधू जलाबिम्ब की काया। नवमास गर्भवास में रहया, सतगुरु स्वामी जी ने क्या

उपदेश बताया। शबद की कुन्जी शब्द का ताला, शब्द शब्द से घट पिण्ड में हुआ उजियाला। जिस शब्द खोजन्ते पूजन्ते, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। जहां गोरक्ष तहां ज्ञान गरीबी, पाटी कन्था सार की डिब्बी आपा खोजो फिरो गरीबी। हठकर सिद्धों धुन्धुवाद नहीं करना संसार सागर कांटे की बाड़ी निरत सुरत पग धरना कांटे बिना न काटा निकले कुन्जी बिना न ताला सिद्ध बिन साधक निपजे, कैसे गुरुजी घट में होय उजियाला। अलष पुरुष मेरे हृदय में समाया, संसे भया न पूठा। जब लग सिद्धों तन मन नहीं खोजो, कथे पढ़े सब झूठा। सहज स्वभाव से तृष्णा मेटो, सिंगी नाद सब शिव मेला। विष रस छोड़ अमीरस पीवो गुरु बहुरंगी फिरे अकेला, दर्पन मांही दर्शन देखो, ज्ञान कथे न होई। निरत सूरत हो जाई। आपा मध्य आपे देखे, ज्ञान कथे न होई। चकमक ठुनका आगे लांगे, दूध भाव घी अमृत हो जाई। आपा खोजो मूल विचारो, गुरु सन्देशा देना। सूरज के संशय मत लागो कुंजी चान्दन हुआ। कहे गुरु जी सुन रे बालका-एक तन्त से इतना निपजे टाला टले न सोई। निश्चय होय तो आपे निपजे, नहीं तो सहजे नवेड़ा। जिन लूटी तिन खंबर न पाई, घीस घीस इन्द्री डण्डी। योग युक्ति की मर्म न जाने, सूरत बिगाड़ी रण्डी। बान्धो रे मना बहु गुनिया, धातु जग खाया। काल पुरुष की मर्म न जाने, छोड़ भगवती माया। ज्यो लकड़ी में घुण लागे ज्यो लोहा लागे काही बिना परिचय गुरु कैसे भेटे, काल ग्रासी आई। पुरुष तजे क्यो नारी, कुसिया क्या जीवे। कहे नाथ जी सुन रे बच्चा होनी भोग से धोखे की सवारी। अग्नि मुख से ब्रह्म उत्पन्न सुघाड मुण्डाया बानी। सुमेर पर्वत से ब्रह्म उत्पन्न, युक्ति जमाया बानी। युग माण्डे योगेश्वर हुए शिव शक्ति घर मेला। हाली बिना न खेत मे दाना, तालीम बाग समाया। बरसे मेघ कूके सावन-नदिया भर-भर आई। धन धान्य भरा जगारा क्षेत्र में, चौमासा बरसे। देखो सिद्धों ऐसा समय हमारा, आशा तृष्णा थिर कर बैठो, पद परसे सुख पाया। जैसे सर्वर का पात्र निपजे, तैसे निपजे मेरी जलबिम्ब की काया। पर्व देही परचाया घाटी कर्म हमारा योगी। गुरु हमारे गोरक्ष योगी मेटे परम दुःख रोगी। नवग्रह बान्ध-अग्नि मुख होऊ। धुन धुन लावो डोरी अलख निरन्जन दो अक्षर वाचू, अगम अगम कर लेना। हंसा बिल में बन्द न टपके सर्व बान्धी देना। कहे नाथ जी

सुन रे बच्चा । हमार गगन घरमे वासा । इन्द्र वर्षा आई प्राण पुरुष मेरे पिंजर बिल में दिन दिन कला सवाई । ऐसी रहती रहते साधु- वेद न कतेब-रमते-गमते को क्या उपदेश । मालूम होय समझ चलिये पग, पंछी धोखे जन्म गवाई । श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश । आदेश ।

आत्मज्ञान

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ आसन करु पदम आसन बान्धू, पिछला आसन पवनको साधू । मन मुछा वू लावे तालू । गगन शीश में होये उजालू ॥१ ॥ आसन बैठू माया बान्धू । पवन खेले चौसठ संधू । नऊ दरवाजे नवै तालू । दसवां मध्ये होय उजाला ॥२ ॥ ऐसा भुवनगम जोगी करे । धरत्री शोषे अम्बरे भरे । गगन में सुर पवन सुर-ताणि । धरत्री पर पानी अम्बर आनी ॥३ ॥ ता जोगी की जगति पिछानी । मन पवन ले उन्मन आनी । मन पवन ले उनमन राहै । तो तौ काया गरजै जती गौरष कहै ॥४ ॥ चढ़े महारस अमृत भरे । ऐसा आरंभ जोगी करे । शक्ति उलटे चढ़े ब्रह्माण्ड । नस नस पवन खेले नव खण्ड ॥५ ॥ चन्द्र उलटे राहू को ग्रासे । सूरज उलटे केतू को संग है । शशी द्वार में सूरज स्थिर राहे । तत्व भांण जोगेश्वर कहे ॥६ ॥ अर्धे जाते उर्धे गहै । द्वादश पवना उनमन राहे । अहिनीशी बाई धुनि में बाजे । पश्चिम द्वारे पवन गाजे ॥७ ॥ अब अन्दर ब्रह्म अग्नी प्रजाले । पंच चोर ले ज्ञान संभाले । जोगी अपने घरी दीवाला दीपे । ता जोगी की काया काल न छीपै ॥८ ॥ हले हले पवन काया गरजे । सूरा होई अभि अनंतरी झुंझे । ज्ञान खडंग ले झुझिबा द्वारा । अजीत जीति बा पंच गही सार ॥९ ॥ अष्ठ पर्वत असाध साधिबा । नव दरवाजा दृढ़ करि बांधिबा । दस दरवाजे कूंची सार । मैमन्त हस्ती बान्धिबा बार ॥१० ॥ भीतरी राजा झुझन हार । चहु दिसी जाता राष्या मार । राजा झूझै विषये मे धाई । मन पवन ले रहे समाई ॥११ ॥ मन पवन की विषमी संधि । चंद सूरज दो समी करे बंधे । नवसै नवासी सायर सोषे । जोगी सोषै सदा भरि पौषै ॥१२ ॥ बिन पुस्तक पढ़न पुरान सुरसती उच्चरे ब्रह्मज्ञानी । अझर सोषै वज्र करे । सब्र दोष काया ले हरे ॥१३ ॥ खेरै खोजै लावे

बंध । तौ अजरा-वर थिर होये कंध । सोखै पोखै जालै बालै । अहनिसि ब्रह्म अग्नि पर जाले ॥१४ ॥ अहनिसि अग्नि पाप कूखाई । संधै-संधै पवन लुकाई । मन है धीर थीर बहै पवन । शिवपुरी जीता राखै कवन ॥१५ ॥ ब्रह्मसागर सोखै बंध ज्यंद । क्षीर सागर शोखे अजरावर कंद । बजर कछोटा आसन करै । रोग व्याधि षुध्या सब हरै ॥१६ ॥ जड़ी-बूटी भूले मति कोई । पहली रांड वैद्य की होई । जड़ी-बूटी अमर करे । तो वैद्य धनन्तर काहे मरे ॥१७ ॥ सोने रुपे सीझे काज । तो कत राजा छोड़े राज । पसुवा होई जपे नहि जाप । सो पसुवा मोखि क्यू आप ॥१८ ॥ ऋद्धि सकेले रोलांणी धरै । गुरु न खोजे मुरिख मरे । रोलानी आगे बैसे फूली । गुरु की बाचा गया जे भूली ॥१९ ॥ अकल पुरिश के सकल नियाव । मीठा बोले झुटा भाव । सत बोले सोई सतवादी । झूठ बोले सो महापापी ॥२० ॥ देखत भौन्दू विषिया घाई । झूठा बोले मरि-मरि जाई । जैसा करे सो तैसा पाय । यकोतर से पुरिखा नरकिले जाय ॥२१ ॥ एक पुरुष बहु भांति नारी । सरब निरन्तर आत्मा सारी । सरब निरन्तर भरि पूरि रहिया । आत्म ज्ञान सम्पूर्ण कहिया ॥२२ ॥ जो आत्म ज्ञान पठन्ते करन्ते गुणन्ते कथन्ते । मुक्त फल पावन्ते । श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश । गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश । आदेश ।

ज्ञान-चालीसा

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । ॐ कार नाद से उत्पत्ति माया । आदिनाथ संग पार्वती माता । सुन पार्वती कहे महादेव । भेद नाद बिन्द का जाने विरला ॥१ ॥ ॐ आदिनाथ मूखै ज्ञान प्रगटाया । पर जोग निंद्रा भई माता गौरजा । शबद शबद पर हुंकाराया । ध्यान-ज्ञान से भेद को पाया ॥२ ॥ क्षीर सागर तट में हुंकार समाया । राघौ मत्स्य गर्भ बालक बैठा । गर्भ ज्ञान शिव ने कहाया, मत्स्येन्द्र नाम का जोगीन्द्र प्रगटा ॥३ ॥ सतगुरो ज्ञान को धारण किन्हा तब पिछे गुरु गोरष को दिन्हा । देखो सिद्धों यही ज्ञान अनन्त कोट सिद्धों को गुरु गोरष पढ़ कथकर सुनाया ॥४ ॥

आदिनाथ पारब्रह्म शिव शक्ति प्रथम आदि उतपती माया । ॐ कार रुप नाद बिन्द कहाया, बिन्द रुप की बोलिए काया ॥५ ॥ उदै भईला सूर अस्त

भईला चंदा, दुहू बीच कल्पना काल का फन्दा । उदै ग्रह अस्त एक करि वासा, तब जानबा जोगीन्द्र जीवन आसा । बारह कला रवि सोलह कला शसी । चारी कला गुरुदेव निरन्तर बसी ॥६ ॥ हीन पद सुराया लागा डंसा । तन का तेज ले उड़िया हंसा । हंस का तेज लैथिर रहै काया; काल का भेद कहो गुरु राया ॥७ ॥ द्वै पंख छेदी एक हैं रहना चंद सूर दोऊ सम करि गहना । ऊंच भै उपरै मध्य निरन्तरे ता तलि भाठि ज राई ॥८ ॥ सीजी अमिरस कंचन हुआ, यही विधि पिजरे बनवै सुआ, उपजत दीसंत निपजत नाही । आवरण नास्ति संसार माही ॥९ ॥ बूझिलै, सतगुरु बुद्धि भेद सिद्ध संकेत, परचा जानी लगावो हेत । उरम धूरम जोति ज्वाला, नौ कोटी खिड़की पूर ले ताला ॥१० ॥ ताला न टूट खिड़की न भाजै, पिण्ड पड़े तो सतगुरु लाजै । भरे सागर धुनि धूसर कूंची; तहां संकल विध है सोई सूची ॥११ ॥ इही विधि योगी अतीत होई । अमर पद ध्यावत बिरला कोई । सहज मरे अष्ट पग धरणा, ज्ञान खड़्ग ले काल संहरणा ॥१२ ॥ अमर कोट काया एक ब्रह्म मध्ये, जीत ले यमपुरी राखि ले कन्धे । आत्मा झूझजती गोरक्षनाथ किया । संसार विनाशा आपन जिया ॥१३ ॥ झूंझति सूरा बूंझति पूरा अमर पद ध्यावत गुरु ज्ञान बंका । दल को मारि जंजाल को जोतिले, निर्भय होई मिटीले मन की शंका ॥ अझूझि झूझि ले पैस दरिया । मूल बिन वृष अमीरस भरिया ॥१४ ॥ तन मन ले करि शिवपुर मेला, ज्ञान गुरु योगी संसार चेला । मन राई चंचल थान स्थिति नाही । बांधी लै पंचभूत आत्मा माही । अलष अकथ चछुबिन सूझिया । सिद्ध का मार्ग साधके बूझिया ॥१५ ॥ परख बिन गुरु करे युगति बिन बहि मरै, विचार उपरांति कछु ज्ञान नाही । भ्रमि भूले ते बहि चले पंडिता । उतरे पार ते फिरी समाहि ॥१६ ॥ सबद की परिखा नही सबद हुवा, ज्ञान का पारिखा जीवता मुवा, रहती करनी मुखे प्रकाश, नासिका जानाति पहुप की बास ॥१७ ॥ उलटी यन्त्र धरे शिखर-आसन करै, कोटि सर छूट घाव नाहीं । सिलहट मध्ये कावरु जीत लै, निर्मल धूनि गगना माही ॥१८ ॥ मन की भ्रामना तब छूटत होई योगीन्द्र, जब विचारंत निह सबद की बाणी । नैन कै दाता सार धरि पीसीबा, तब योग पद दुर्लभ सत्य करि जानी ॥१९ ॥ उलटी गंगा चलै धरानि उपर

मिले नीर में पैसी करि अग्नि जाले। घटहि मै पै सिखर कूप पानी भरे, तब पई परि पुरुषा आप उजाले। ज्ञान के प्रगटे श्री शम्भूनाथ पाया, अकल अकथ जति गोरक्षनाथ ध्याया ॥२० ॥ संसार में भ्रम्या सरब भ्रम सोई। निज पद पीवता बिनस्या न कोई। बजरंग कोटड़ी पर दल पूरा। पंच मुवा सब जग पहुंचा स सूरा ॥२१ ॥ मन सौ जूझणा खांडा न लागे, शून्य गढ़ रमि रहे तो दीप धूनी जागै। धरणी न सोखे अग्नि न खाई। बेली का रस ले भौरा न जाई ॥२२ ॥ कथनी कथी हो पंडित रहनी न पाई। आचार के बंधै मनसा गमाई। कथत श्री शम्भूनाथ सुनो नर लोई, भ्रम में भूल्या सो बहुरा न कोई ॥२३ ॥ भूल्या सो भूल्या बहुरि चेतना, संसार के लोहे आपा न रेतना। भेष तजि भ्रम तजि राखी सत्य सोई, तत विचारता देवता होई ॥२४ ॥ आपा सोधौ ब्रह्म निरोधी सहज पलटी जोती। काया के भीतर मणि माणिक निपजे, तहा धुनि-धुनि बरसे मोती ॥२५ ॥ अरध-उरध सम्पुष्टी करीजै। शंखनि नाल अमीरज पीजै। अखण्ड मण्डल तहा नाद मेरी लै, हरि आसन तहा भक्ति करीले ॥२६ ॥ अलेख मन्दिर तहा शिव शक्ति निवासा, सहज शुन्न भया प्रकाशा। तहा चन्द बिना चाँदन अग्नि बिन उजाला। ए तन भेद-अन्त वृद्ध बाला ॥२७ ॥ करतार तजि हू, आसक्त हू न जाई मन मृग राखिले बाड़ी न पाई। आकाश बाड़ी पाताल कुआ, भरी भरी सींचता जो सिद्ध हुआ ॥२८ ॥ अवधू अमर कोट काया आलेख दरवाजा। ज्ञानी गढ़ आसन प्राण भयो राजा ॥२९ ॥ अवधू फेरी ले तो तत सार बुद्धि सांच। नही तौ लोहा गढिले तो कंचन नहीं तो कांच ॥३० ॥ अवधू सिद्धा पाया साधक पाया ते उतरिया पार। कथंत जती गोरक्षनाथ चेते न जानत विचार ते जलि भये अंगार ॥३१ ॥ अवधू ऐसा नग्न हमारा तिहाँ जीव आवो ऊजूद्धारं। अरध उरध बजार मंडया है गोरष कहे विचारं ॥३२ ॥ हरि प्राण पाति साह, साह विचार काजी। पंच तत ते उजहदार, मन पवन होऊ हस्ती घोड़ा, गिनान्ते अखै भण्डार ॥३३ ॥ काया हमारी शहर बोलिये, मन बोलिये हजदार। चेतनि पहरै कोटवाल बोलिये, तो चोर न झंके द्वार ॥३४ ॥ तीन सो साठ चीरा गढ़ रचीले, सोलह खनिले खाई। नव दरवाजा प्रगट दीसै, दसवा लख्या न जाई ॥३५ ॥ अठारह भार, कोट कंठअजरा लाइलै, बहातर कोठड़ी निपाई। नव सत्र ऊपरे जंत्र फिरै,

तब काया गढ़ लिया न जायी ॥३६ ॥ अनहद घड़ी घड़ियाल बजाई लै, परम जोति दुइ दीपक लाई । काम, क्रोध दोइ गरदनि मारिलै, ऐसी अदली पाति साही बाबै आदम चलाई ॥३७ ॥ तहा सत्य बीबी सन्तोष साहिजादा सीमा भक्ति द्वै दाई । आदिनाथ नाती मत्स्येन्द्र पूता, काया नगरी गोरख बसाई ॥३८ ॥ ऐसा रे उपदेश दाखै श्री गोरख राया, जिनी जगचतुर बरन राह लाया । पढ़िले संसवेद, करिलै विधि जषेद । जानिले भेदान भेव पूरिले आसा उमेद । विषमी साधे मंसारी संझाया पंचौ बखत सारि । रहिबा दसवे द्वारी, सेईबा पद निराकार ॥३९ ॥ जप ले अजपा जाप । विचारे ले आपे आप छुटिला सब बियाप । लिपे नाही तहा पुण्य पाप । अहो निसि समो ध्यान, निरंतर रमे बा राम । कथे गोरषनाथजी ज्ञान; पाईला परम निर्धान ॥४० ॥

इतना ज्ञान चालीसा जाप सम्पूर्ण भाया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश । आदेश ।

गोरक्ष गणेश ज्ञान

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरुजी । स्वामी जी कहां से आये क्या तुम्हारा नाम । अवधू निरन्तर से आये योगी हमारा नाम । स्वामी जी कैसे कर जानिये, कैसे कर मानिये । अवधू रहत कर जानिये, शबद कर प्रमाणिये । स्वामी जी रहत किसको बोलिये, अवधू रहत बोलिये त्रिगुण रहित, शबद बोलिये सबसे विवर्जित । स्वामी जी सबसे विवर्जित बोलिये, सूक्ष्म, त्रिगुण बोलिये सत्त रज तम सत गुणी विष्णु, रजो गुणी ब्रह्मा , तमो गुणी महादेव । स्वामी जी सूक्ष्म किसको बोलिये । सत तम रज किसको बोलिये । अवधू सूक्ष्म बोलिये दृष्टि न देखे, मुष्ट न आवे । सतगुण बोलिये पवन रजो गुण बोलिये पानी । त्रिगुण बोलिये तामस रुपी । पांच तत्व पच्चीस प्रकृति ऐता नाम शरीर बोलिये । पांच तत्व कौन कौन बोलिये । पृथ्वी जल अग्नि-वायु आकाश । एकएक तत्व की पांच पांच प्रकृति बोलिये । प्रथम पृथ्वी की । अस्थि मांस त्वचा नाड़ी रोम यह पांच प्रकृति बोलिये । द्वितीये जल की । लार-मूत्र पसीना-वीर्य-लहू (रक्त) यह पांच प्रकृति बोलिये । तृतीय अग्नि की- क्षुधा-तृष्णा, निद्रा आलस, क्रोध यह पांच प्रकृति बोलिये । चतुर्थ

वायु की—धावन आकुन्चन—चलन—वलन—प्रसारण यह पाँच प्रकृति बोलिये। पांचवे आकाश की—माया मोह लज्जा राग द्वेष यह पांच प्रकृति बोलिये। पांच तत्वों का कौन—कौन रंग बोलिये। पृथ्वी का पीला, जल का श्वेत—अग्नि का लाल, वायु का धूम्र, आकाश का नीला (श्याम)। पांच तत्वों का स्वभाव कौन—कौन बोलिये। पृथ्वी का बैठा—जल का शीतल तेज का दाह—वायु का चंचल—आकाश का गुम (उभा) पांच तत्वों के कौन—कौन स्वाद बोलिये। पृथ्वी का मीठा—जल का खारा—अग्नि का तीखा (चिटका) वायु का खट्टा—आकाश का फीका। पांच तत्वों की भार्या कौन—कौन बोलिये। पृथ्वी की आशा धनवन्ती। जल की मनसा चोरटी। तेज की कल्पना चाण्डाली (कालहिनी)। वायु की चिन्ता डांकिनी। आकाश की संख्या शीलवन्ती। पांच तत्वों के कौन—कौन गुरु बोलिये। पृथ्वी का गुरु मन देवता वाचा स्वरुपी जल का गुरु चन्द्र देवता बुद्धी स्वरुप—अग्नि का गुरु सूर्य देवता तेज स्वरुपी वायु का गुरु विष्णु देवता आनादि स्वरुपी—आकाश का गुरु श्री गोरखनाथ जो अविगत स्वरुपी पांच तत्वों के कौन—कौन गुण बोलिये—पृथ्वी का मूल गुण जल का वृद्धि गुण, तेज का रुप गुण—वायु का प्रमल गुण, आकाश का मैथुन गुण। पांच तत्व के कौन घर कौन द्वार कौन आहार—कौन निहार—कौन व्यवहार। पृथ्वी का उदर घर, गुदा द्वार खाई सो आहार, अजरी बजरी निहार, लोभ लालच व्यवहार बोलिये। जल का ललाट घर, इन्द्री द्वार स्त्रिया अहार बिन्दू निहार मैथुन व्यवहार बोलिये। तेज का पित्ता घर—चक्षु द्वार—दृष्टि देखे सो आहार—अदृष्टि (हष) निहार व्यवहार बोलिये। वायु का नाभि घर नासिका द्वारा वासना आहार निर्वासना निहार मिथ्या व्यवहार बोलिये, आकाश का ब्रह्माण्ड घर, श्रवण द्वार—नाद आहार—जिह्वा शब्द निहार—दम्भ पाखण्ड व्यवहार बोलिये। ॐ गुरुजी। पांच तत्व कहां से उत्पन्न भये, कहां जा समायेंगे अवधू परम तत्व से उत्पन्न भये, अविगत जा समायेंगे। अविगत से उत्पन्न ॐकार। ॐकार से उत्पन्न महातत्व। महातत्व से आकाश तत्व। आकाश से वायु तत्व वायु तत्व से तेज तत्व। तेज तत्व से जल तत्व। जल तत्व से पृथ्वी तत्व। पृथ्वी तत्व को ग्रासते जल तत्व। जल तत्व ग्रासते तेज तत्व। तेज तत्व ग्रासते वायु तत्व। वायु तत्व को ग्रासते आकाश तत्व। आकाश तत्व

को ग्रासते महातत्व । महातत्व को ग्रासतै ॐकार । ॐकार को ग्रासते अविगत देवता । न आवते न जावते निरन्जन देवता पाणी का जामन जिन्दा अग्नि का पुट, पवन का खम्भ सुरति निरति सोध्या शून्य में समाया अविगत स्वरूपी इतनी गणेश ज्ञान जाप सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश । आदेश ।

* * *

गुरु गोरक्षनाथजी का बीज मन्त्र जाप विधि

जप करना- चिन्तन मनन करना, यह योग कि प्राथमिक अवस्था है । जप अत्यन्त सरल मार्ग है । भक्ति योग का । ज्यादा आडंबर करके जाप को जटिल किया तो जाप यशस्वी नहीं होता । जाप करना याने मन (चित्त) के अच्छे बुरे विचारों को मन से हटाकर, मन एवं चित्त का निरोध कराके एक एकाग्र अपने इष्ट से यहां (बीज मन्त्र) प्रति एक रूप एक रस होना है अर्थात जीव दिशा में से आत्म दशा में प्रवाहित होना । ध्यान प्रवाह में एक बार मन एकाग्र होने लगा कि आगे मन को नित्य-आदत होती है । आगे मन, जाप करना एक आवश्यक कर्म बनता हैं और साधक सहज भाव से, अत्यन्त सहजता से यह साधना करता है । बहुंताशी योगेश्वर इस सरल-सहज मार्ग को अपनाते हैं ।

जितना पूजा विधि में जाप नितांत आवश्यक है । उतना ही योग साधना में यह एक महत्व का अंग है । मंत्र योग, ध्यान योग, ज्ञान योग, कर्मयोग तंत्र योग इत्यादि सबकी योग (साधना) ही मुख्य जड़ है और योग साधना की मूल जड़ (बीज) गुरु गोरक्षनाथ जी (योग प्रवर्तक) हैं । इसलिये गुरु गोरक्षनाथ जी का बीज मन्त्र जाप योग नितान्त आवश्यक है जिससे साधक मोक्ष मुक्ति पद को प्राप्त करता है ।

जप योग साधना की अनन्त प्रकार, अनन्त नियम इतना है कि उसे गोरखधन्धा कहते हैं । हम यह संक्षिप्त और सरल-सहज जाप विधि पर प्रकाश डालते हैं । जो योगेश्वर करते हैं और करने का प्रयास करें ।

जाप विधि

साधक ने सुर्चिभुत होकर एकान्त जगह, यहां पूजा स्थल पर आसन बिछावे। बाघाम्बर चर्म (शेरखाल) या हिरन की खाल के आसन या कुशा का आसन या सरल कम्बल आसन बिछावे। शक्य तो पदमासन या सिद्धासन लगा के बैठे या तो सरल सहज आसन लगा के बैठे। कुछ योगेश्वर योगासन प्राणायाम करके बैठते हैं। जो (ध्यान योग) (मन्त्र जाप) में मन एकाग्रता को सहायक होता है। अत: साधक आसन ग्रहण करने के बाद योगेश्वर आसन का मन्त्र बोलें।

आसन लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। सत्य की धर्ती, सत्य का आकाश? सत्य की माला सत्य का जाप, सत्य का आसन सत्य का पूत! आसन बैठे योगी अवधूत। आसन ब्रह्मा आसन इन्द्र। आसन बैठे हरि गोविन्द! आसन बैठे जपीये जाप, कोटि जन्म के उतरन्ते पाप। आसन बैठे सिंहासन बैठे, बैठे गिरी की छाया। पांच तत्व से ले आसन बैठें सतगुरु सत्य का शबद सुनाया। बिना मन्त्र आसन लगाय सो योगी नरक को जाय। मन्त्र पढ़ आसन लगाय सो योगी अमरपुर जाय श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

तदनन्तर बाघाम्बर या मृगासन होगा, तो निम्न मन्त्र बोलें।

बाघाम्बर मृगछाला मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलष पुरुष बैठे आराधे। अपनी खाल खाल में मिलाय, जब मृगा की खाल पर आसन लगाय। श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर, खाकम्बर, चीताम्बर और मृगछाला पर आसन लगाय। बिना मन्त्र पढ़े आसन पर बैठे ऐसा डुबे थाह न पावे। पढ़ मन्त्र आसन पर बैठे सो योगी अमरपुर जावे। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: साधक गणेश गायत्री स्मरण करें।

गणेश गायत्री (संक्षिप्त)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ वक्र तुण्डाय विद्महे एकदन्ताय धीमहि तन्नो गणेशाय प्रचोदयात्। ॐ गं गं गणपति ये नमो आदेश। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

यहां समय अनुसार गणेश गायत्री बड़ी भी कह सकते हैं। तदनंतर गोरक्ष गायत्री कहें।

गोरक्ष गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलख निरन्जन कौन स्वरुपी बोलिये। अलख निरन्जन ज्योति स्वरुपी बोलिये। ओमकारे शिवरुपी, संख्या ने साधरुपी मध्याहे हंस रुपी हंस परमहंस दो अक्षर गुरु तो गोरक्ष काया तो गायत्री ॐ ब्रह्मा सोहं शक्ति—शून्य माता, अविगत पिता, अभय पंथ अचल पदवी, निरन्जन गोत्र, विहंगम जाति असंख्य प्रवर, अनन्त शाखा सूक्ष्म वेद आत्मज्ञानी ब्रह्मज्ञानी, श्री ॐ गों गोरक्षनाथाय विद्महे—शून्य पुत्राय धीमहि तन्नो—गोरक्ष निरन्जन प्रचोदयात् एता गोरक्ष गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

इसके बाद नवनाथ स्वरुप जाप कर सकते हैं। अत: साधक योगेश्वर ने कम से कम २१ प्राणायाम करें। कुछ योगेश्वर प्राणायाम के साथ—साथ यह उपरोक्त सारे मन्त्र भी स्मरण करते हैं। २१ प्राणायाम करने से मन चित्त का निरोध होता है (प्राणायाम का विस्तृत वर्णन द्वितीय खण्ड में पंच अग्नि पाठ तथा हवन भाग में किया है) तथा प्राणायाम से समस्त काया में शुद्ध हवा (प्राण) संचारित होती है। मन एकाग्र चित्त तद्रूप होता है।

अत: साधक योगेश्वर ने अपने सद्गुरु जी का स्मरण करें और सद्गुरु जी ने जो गुरुमन्त्र दिया हो उसका चिन्तन मनन एवं १०८ बार जाप करें। जाप करने हेतु रुद्राक्ष दाने वाली माला लेवें। उपलब्धि अनुसार चन्दन इत्यादि माला उपयोग में ला सकते हैं। कुछ योगेश्वर अपने हाथ उंगलियों के खाने से १०८ बार जाप मन्त्र कर लेते हैं।

यह सब विधि होने के पश्चात अब गुरु गोरक्षनाथ जी का शाब्दी बीज मन्त्र का जाप करें।

गुरु गोरक्षनाथ जी का शाबरी बीज मन्त्र

"ॐ शिव गोरक्ष योगी"

इस शाबरी बीज मन्त्र का जाप १०८ बार करें। यह जाप करते समय, प्राणायाम विधि करें और जैसे ही अपनी दोनों आंखें बन्द करके नासाग्र के नोक पर दृष्टि टिकाते हैं। यही दृष्टि धीरे-धीरे ऊपर खींचते हुए भ्रूमध्य में लाते हैं और भ्रूमध्य दो आंखें भौवे के मध्य में (बीचोंबीच) यह दृष्टि स्थिर करते हैं। जिसे शाम्भवी मुद्रा कहते हैं। योगेश्वर यह दृष्टि ब्रह्मरंध्र, ताल प्रदेश, शिखा प्रदेश पर चढ़ाकर स्थिर करते हैं।

विशेष—अत: इस शाबरी बीज मन्त्र का सवा कोटि बार अनुष्ठान एवं जाप करने से मन्त्र सिद्ध होता है तथा सप्तकोटि बार करने उपरान्त इष्ट की प्राप्ति होती है। इस अन्तराल में साधक को विशेष आध्यात्मिक अनुभूतियाँ आती हैं। आगे समाधियोग में प्रविष्ठ होता है तथा और प्रगति उपरान्त २१वें ब्रह्माण्ड, २१ शून्य—परम शून्य, अन्त में ज्योति स्वरुप, मोक्ष मुक्ति को प्राप्त होता है।

नियम

१. जप के लिये लिया हुआ मन्त्र सतगुरु मुख बोली (दीक्षा लेना) से लेना अनिवार्य है।

२. गुरु संस्कार बिना नाथ सिद्धों की कोई भी मन्त्र तथा मन्त्र क्रियायें सिद्ध नहीं हो सकती।

३. मन्त्र जाप पूर्ण शुद्ध रुप से तथा पूर्ण शब्दों में उच्चारण करना अनिवार्य है। अपूर्ण मन्त्र सिद्ध नहीं होते।

४. जप करने से पूर्व योगेश्वर ने यम, नियम, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह शौच, सन्तोष इष्ट ऊपर श्रद्धा तथा विश्वास होना अनिवार्य है।

५. मन्त्र जाप तीन प्रकार से करते हैं—

(१) वाचिक मन्त्र जाप—यह मन्त्र जाप निकट व्यक्ति सुनते हैं। मन्त्र ऊंची आवाज में बोलते हैं। यह वाचिक मन्त्र अभिचार कर्म में रुपान्तरित होता है।

(२) उपांशु—यह जाप केवल होठ हिलते हैं और व्यक्ति सुन नहीं सकता, यह उपांशु मन्त्र जाप शान्ति तथा पुष्टि कार्य के लिये करते हैं।

(३) मानस मन्त्र—यह मन्त्र जाप अंतरमुख होकर करते हैं। इसमें न आवाज

आती है । न होठ हिलते हैं । यह मानस मन्त्र मुक्ति तथा मोक्ष फल देता है ।

उपरोक्त मन्त्र मानस मन्त्र जाप विधि से करना उचित है ।

६- दिशा-पूर्व दिशा में मुख करके जाप करें तो वशीकरण फल देता है । दक्षिण दिशा में-अभिचारक फल देता है । पश्चिम दिशा में-धन प्राप्ति फल देता है तथा उत्तर दिशा में जाप करने से शान्ति फल देता है । मोक्ष मुक्ति के लिए उत्तर दिशा उत्तम है ।

उपरोक्त गुरु मन्त्र उत्तर दिशा में करना आवश्यक है ।

७- मन्त्र जाप, मन्दिर, गुफा, नदी का किनारा में या जल में खड़ा होके जल्दी फल देता है । सतगुरु सानिध्य में या गुरु सहवास में सर्व उत्तम और अतिशीघ्र फल देता है ।

८- जाप माला १०८ दाने की तथा रुद्राक्ष की होना आवश्यक है । रुद्राक्ष सभी कामनाओं को फलीभूत है ।

९- मन्त्र जाप उद्देश्य निःस्वार्थ रखने से मुक्तिप्रद होता है ।

१०- मन्त्र जाप फल प्राप्ति-दृष्टान्त वा प्रत्यक्ष अनुभूति का सर्वत्र प्रचार नहीं करें । या अन्य लोगों से सामने प्रगट नहीं करें । यह प्रगटन केवल सतगुरु सम्मुख कर सकते हैं या तो ईष्ट देवता को सम्मुख करें ।

११- मन्त्र जाप- शांति मुक्ति फल के लिये अंगूठा और बीच की अंगुली से माला फेरे । आकर्षण के लिये अंगूठा और अनामिका से करें ।

१२- मन्त्र जाप कर्म विधि- नित्य नियम से उसी जगह उसी समय उतना ही समय से करें तथा कुछ दिन पश्चात जप संख्या और जप कर्म करने का समय को बढ़ा सकते हैं । अनुभूति अनुसार जप योग विधि में उन्नति करें ।

१३- मन्त्र सिद्धि प्राप्ति के पश्चात १ या ९ नाथ जी को मुगदालवड़ा, खीर या खिचड़ पंचमेवा, पंचफल इत्यादि भोजन भोग-दान दक्षणा देना उत्तम है । इच्छा अनुसार वस्त्र दान धातु (सुवर्ण, चाँदी इ०) दान करें ।

इ० नियम से गुरु गोरक्षनाथ जी का बीज मन्त्र जाप करें ।

इतना गुरु गोरक्षनाथ बीज मन्त्र जाप विधि सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश । आदेश ।

गुरु गोरक्षनाथ जी का समाध निर्वाण

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। कहे गोरख सुन बा अवधू।

सतगुरु खोजी मन करो चंगो। इस विध रहना उत्तम संगा। सहजै संगम आवे हाथ। गोरख भाखे समाध निर्वाण। कंचन काया गुण रत्ना सतगुरु खोजो बाहु जतना। हस्ती मन बाध रखे पास गोरख भाखे समाध निर्वाण। बोलन चालन बाहु जंजाल वचने-वचने जोग रसाल, नेम धरम दो राखे पास गोरख भाखे समाध निर्वाण। नीर निरन्तर सिधों का वास इच्छा भोजन परम निवास, अच्दर मच्छर धुन्ध उपाध, गोरख भाखे समाध निर्वाण। पहले छोड़ो वाद विवाद पीछे छोड़ों जिह्वा स्वाद। अगम अगोचर खण्डे धार। गोरख भाखे समाध निर्माण। आलस मोड़ो निद्रा तोड़ो, गुरु वचन से इच्छा जोड़ो जिव्हा इन्द्री राखे पास, गोरख भाखे समाध निर्वान। अगम अगोचर कण्ठी बंध वाइ सखेलै चौसठ फंद। उनमुन जोगी दशवे द्वार, गोरख भाखे समाध निर्वाण। आलस निन्द्रा छींक जंभाई त्रिष्णा डायण जगत्र खाई आकल, बाकल बहु जंजाल गोरख भाखे समाध निर्वाण। जोग दमोदर भगवा धरो जोत नाथ का दरसन करो जत सत दोये राखे पास गोरख भाखे समाध निर्वाण। वेद शास्त्र का बहु विस्तार, परम जोत अन्त न पार। पढ़े लिखे नहीं आवै हाथ। गोरख भाखे समाध निर्वाण। पढ़े लिखै से अजम मर होय तो ब्रह्म क्यों प्रलये सोय। पढ़ना लिखना ब्रह्मकी आस, गोरख भाखे समाध निर्वाण। जड़ी बूटी सीचो मत कोय पहले रांड वैद की होय। जडी बूटी वैदों की आंस गोरख भाखे समाध निर्वाण। सोने रुपे का बहु विस्तार, परम पुरुष का अन्त न पार। सोना रुपा जगत की आस गोरख भाखे समाध निर्वाण। डरे डूंगरे चढ़ नहीं मरना, राज द्वारे पग नहीं धरना। छोड़ो राज रंक की आस, गोरख भाखे समाध निर्माण। कनक कामनी दोनों त्याग, अचल भिक्ष्या पंचघर मांग छोड़ रुप रंग की आस गोरख भाखे समाध निर्वाण। जोगी सरुपी एकोंकार, गुरु खोजो पावो निस्तार। गुरु वचन से रहना पास, गोरख भाखे समाध निर्वाण। गगन

मण्डल में गुरु का वास, जहां हंसला करें निवास। पंचतत्त ले रमना साथ गोरख भाखे समाध निर्वाण। अण्डाने जोगी मंडाने काया मरे न जोगी बहुड़ि न जाया। सत सत वाचे गुरु गोरखनाथ। गोरख भाखे समाध निर्वाण। इतना गोरक्ष समाध निर्वाण गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कथ पढ़ के सुनाया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

सत गुरु प्राप्त (शिष्य भक्तों की) कुछ मर्यादायें

१. नाथ सम्प्रदाय में जिस प्रकार सन्यास्थ (विरक्त) दिक्षा दी जाती है। उसी प्रकार ग्रहस्थों को भी (भक्ति प्रद या भक्त भाव से) मन्त्र दिक्षा सतगुरु दे सकते हैं। अत: वह मन्त्र दिक्षा दोनों पति–पत्नी के स्व इच्छा से (भक्ति भाव से) होना आवश्यक है। मन्त्र दिक्षा पति–पत्नी को एक साथ देनी चाहिये।

२. ग्रहस्थ शिष्यों को निरपेक्ष, निस्वार्थ भाव से गुरु सेवा (भक्ति) करनी चाहिये। बहुतांशी (भक्त) अपने सांसारिक अपेक्षाओं की पूर्ति के लिये सतगुरु बनाते हैं। इस कारण वह अपने कार्य अनुसार अनेक सतगुरु भी बनाते हैं। अत: सतगुरु केवल मात्र एक ही होना चाहिये। जो की सतगुरु आत्म–साक्षात्कारी–मुक्ति दाता होना चाहिये।

३. केवल संसार–भव सागर से पार होकर, मोक्ष मुक्ति के प्राप्ति हेतु सतगुरु धारण करना चाहिए और उनके योग्य मार्गदर्शन अनुसार कर्म, धर्म, आचरण, नियम इत्यादि आदेशों का पालन करना चाहिये।

४. सतगुरु जी (विशेषत: नाथ सिद्ध महात्मा सतगुरु) से, वाद विवाद, अपेक्षायें की पूर्ति (स्वार्थ), निंदा, कपट, सांसारिक व्यवहार इत्यादि नहीं करना चाहिये, अत: उन्हें किसी भी प्रकार का व्यक्तिगत भेद (रहस्य) नहीं पूछना चाहिये।

५. सतगुरु जी से सहज सरल भक्ति श्रद्धा विश्वास सेवा भाव से रहना उचित है। जिससे वह शिष्यों को मुक्ति मार्ग पर अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। अत: सतगुरु प्राप्ति भाग्यवान को ही होती है।

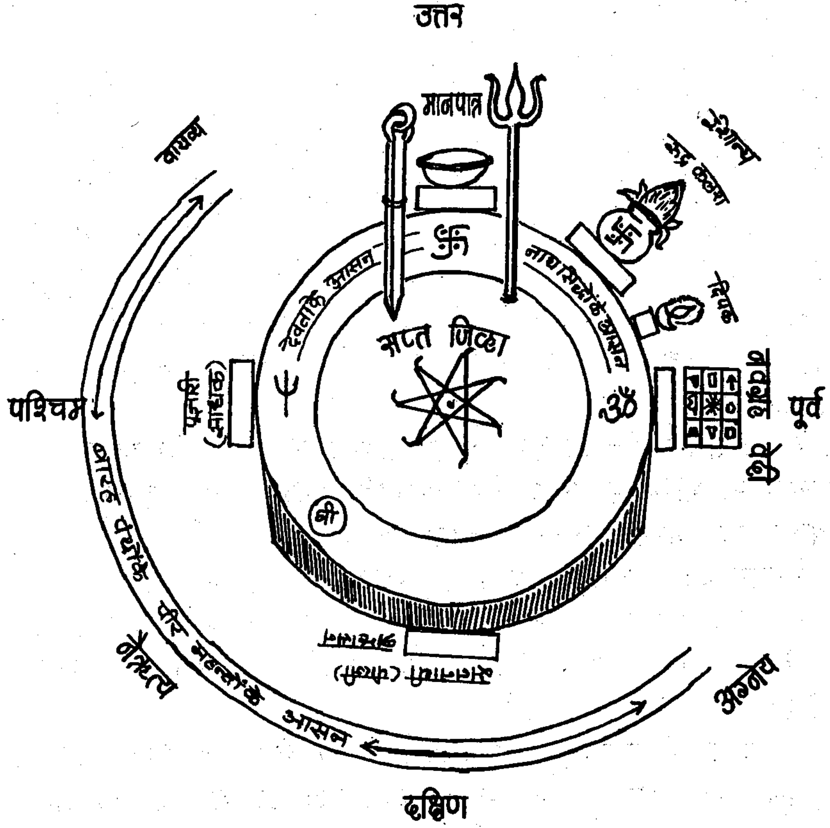
इतना **श्री नाथ रहस्य प्रथम खण्ड** सम्पूर्ण भया।

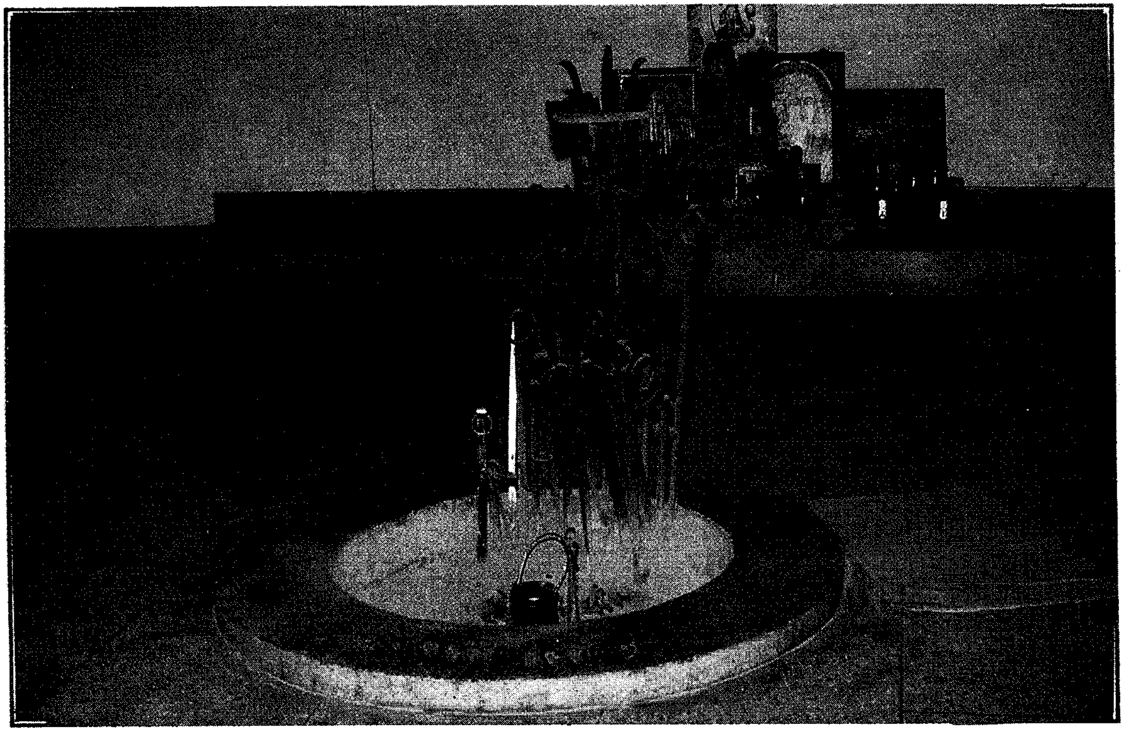
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

*****

श्री नाथ जी का धूना


उत्तर
मानपात्र
वायव्य
ईशान्य
रुद्र कलश
दीपक
सप्त जिव्हा
देवताओं के आसन
नाथ सिद्धों के आसन
पश्चिम
पूर्व
पुजारी (साधक)
नवग्रह
बारह पंथों के वीर महन्तों के आसन
नैऋत्य
आग्नेय
दक्षिण

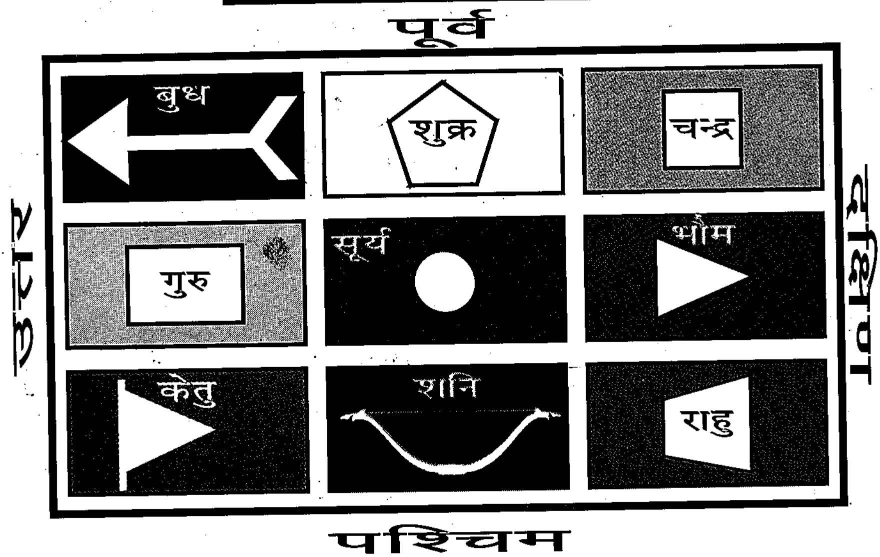


श्री नाथ सिद्धों का धूना

नवग्रह यंत्र



नवग्रह वेदी



श्री नाथ-रहस्य

(द्वितीय खण्ड)

श्रीनाथ सिद्ध-धूना (यज्ञ)

श्रीनाथ सिद्धों का धूना आदि अनादि काल से चलती आयी परम्परा है। ॐकार शिव आदिनाथ जी ने प्रथम धूनी चेतन किया। इस अग्नि तत्व-अग्नि देवता अर्थात धूनी का सर्व देवी देवता तथा सर्व साधु सन्त बहुत आदर करते हैं। विशेषतः नाथ सिद्ध योगेश्वर धूना को सर्वथा प्रधान मानते हैं। चेतन धूना नाथ सिद्धों का अभिन्न अंग है। यह साधक धूना को योग साधना में साधन रूप से उपयोग करते हैं। धूना सानिध्य में की गयी साधना, योग, तपस्या शीघ्र ही सिद्धप्रद होती है। "धूनी-पानी-सिद्धों की बानी"

नाथ योगी, ध्यान योगी, ज्ञान योगी, पीर-महन्त नागे पीर, सन्यासी बैरागी जती-सती स्थानी मकानी त्यागी, तपस्वी सिद्ध महासिद्ध इत्यादि योगेश्वर स्थान मकान में तथा रमत में और जंगलों में धूना को चेतन कराके अपनी साधना को युग-युग से सिद्ध करते आये हैं। अग्नि जंगलों में सुरक्षा हेतु भी उपयोग होता है। जंगली प्राणी अग्नि से दूर रहते हैं। वातावरण के जीव जन्तु दूर रहते हैं। अर्थात् साधु-सन्तों के लिये यह रक्षपाल तथा शस्त्र देवता ही प्रमाणित होती है।

सन्त महात्मा धूनी की भभूति काया में रमाते हैं जिसे भस्मी स्नान कहते हैं और भस्मी युक्त रहते हैं। पूर्व अख्यायिका है कि भगवान शंकर जी ने माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी के ऊपर भस्मी डालकर भस्मी स्नान कराया था। "उलटन्त बिभूत पलटन्त काया" यह भभूत काया को शुद्ध तथा तेजस्वी बनाती है। "चढ़ी बभूत घट हुआ निर्मल" अर्थात् भभूत मन की मलिनता को हटाकर मन को निर्मल तथा पवित्र करती है। इसलिये धूना भस्मी अतिषय पवित्र मानी जाती है। धूना तथा धूना की भभूत संकट, भूत, प्रेत तथा काम क्रोध, मद मत्सर, मोह इस सभी को भस्म करती है। ऐसा महात्माओं

का विश्वास है। काया भस्मी स्नान से शरीर का सुरक्षा कवच बनता है। बैज्ञानिक दृष्टि से जीव-जन्तु, कीड़े-मकोड़े तथा गर्मी के मौसम में इनका कोई भी प्रभाव नहीं होता । इस प्रकार धूनी-भभूति वरदायिनी है।

महात्माओं में शैव पंथी धूना या धूनी कहते हैं। नाथ सिद्धों में यह धूना नाम से प्रचलित है। वैष्णवी पंथ के महात्मा इसे यज्ञ या (होम) प्रकार से स्वीकारते हैं और यज्ञों में पूजन स्थापन-हवन इत्यादि कर्मकाण्ड करते हैं। यज्ञ हवन-पूजन बहुत ही पुण्यप्रद तथा मोक्षदायक और मुक्तिदायक होता है। यह यज्ञ नाथ सिद्धों में धूना (धूनी) शैवपंथ में रुद्रयज्ञ महारुद्र यज्ञ, शक्ति का चण्डी यज्ञ, महाचण्डी सतचण्डी, सहस्रचण्डी इ० तथा राजा महाराजाओं का अश्वमेघ यज्ञ (पुत्र) सन्तती प्राप्ति के लिये पुत्र-कामेष्टी यज्ञ इ० सत्कर्मी यज्ञ किये जाते हैं। यह सात्विक यज्ञ होते हैं। इसी प्रकार अघोर कर्म में अघोर यज्ञ भी किये जाते हैं।

यज्ञ अलग-अलग प्रकार से किये जाते हैं। वैदिक मन्त्र-तन्त्र विधि से तथा नाथ सिद्धों में शाबर मन्त्र विधि से यज्ञ (धूनी) का पूजा पाठ तथा हवन किया जाता है।

यहां हमने शाबर मन्त्र विधि से धूना का नित्यकर्म पर प्रकाश डाल कर यज्ञ विधिवत करने का प्रयास किया है।

अत: श्री नाथ सिद्धों का प्रात: धूनी का कर्म देखते हैं।

सिद्ध योगेश्वर तथा पुजारी प्रात: ३ बजे उठकर प्रात: नित्य विधि के (इससे पूर्व प्रात: विधि का वर्णन दिया है) उपरान्त सब धूना पर आते हैं। पुजारी जी सब साफ सफाई करके प्रथम देवता के यहां दीपक लगाते हैं। धूनी के महन्त जी तथा पीर जी के आसन तैयार करते हैं और योगेश्वर भी अपने-अपने आसन बना लेते हैं। पुजारी जी अपने देवता के पूजन में जुड़ जाते हैं। देवता की पूजा के पश्चात दबी हुई धूनी का पूजन यापन करने के पश्चात धूनी चेतन करते हैं और पूजा आरती कार्य में जुड़ जाते हैं। अन्य महात्मा योगेश्वर भण्डारी, कोठारी, पीर जी, महन्त जी, पंख, कोटवाल, क्षेत्रपाल अपना प्रात: विधि करके

आते हैं। धूनी पर तथा देवता को आदेश करके भस्मी स्नान में जुड़ जाते हैं। धूनी के महन्त पीरजी के लिये पुजारी जी ने डाले हुये आसनों पर बैठने की, आसन ग्रहण करने की निम्न मन्त्रों द्वारा विनती करते हैं। पीर जी भस्मी स्नान करके आसन ग्रहण करते हैं। जब सभी योगेश्वर भस्मी स्नान उपरोक्त देवता को तथा महन्त पीर जी को नादी आदेश करते हैं।

अत: निम्न मन्त्र द्वारा पुजारी जी धूनी महन्त पीर जी को बैठने की अनुकंपा करते हैं।

पीर आसन ग्रहण करने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। आसन मार सिंहासन बैठे-बैठे गुरु की छाया। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो शबद गुरांसे पाया। स्थिर कर आसन, स्थिर कर ध्यान, सत्य सत्य गुरु गोरखनाथ बैठे गादी प्रवान। गादी ब्रह्मा, गादी, इन्द्रा, गादी बैठे गुरु गोविन्द आवो बाल गोपाल (सिद्धों) तुम लागो पाव-तब तुम पूजो ब्रह्मज्ञान, ब्रह्म की कुंची महादेव का ताला नृसिंह वीर भैरो रखवाला। नाथ जी गुरु जी को आदेश।

महन्त, पीर जी आसन पर बैठते हैं और योगेश्वर, भण्डारी, कोठारी, क्षेत्रपाल, कोटवाल, पंख, सभी योगेश्वर धूना की भभूत अपने काया पर रमाते हैं। इसको भस्मी स्नान कहते हैं। कुछ योगेश्वर भगवा बाना पहनते हैं। भभूत केवल मस्तक पर, भुजाओं पर, हथेली, हृदय स्थान, कण्ठ स्थान, कर्ण स्थान पर भभूति त्रिपुंड लगाते हैं। अपनी काया में भस्मी रमाने के लिये योगेश्वर विशिष्ट प्रकार की भस्मी बनाते हैं। सूर्य की उष्णता में गाय का गोबर सुखाते हैं (जिसे कण्डे कहते हैं) उसे जलाकर राख बनाते हैं। फिर राख को अनेक बार पानी में घोलते हैं। फिर साफ वस्त्र से छानते हैं। इस छानी हुई राख को सुखाते हैं। फिर इसमें गौ का दूध मिलाकर अर्थात राख को दूध से गिला करते हैं। उसके (पिण्डी) गोला करते हैं और फिर से अग्नि में पकाते हैं और यही भभूत दैनन्दिन भस्मी स्नान में उपयोग में लाते हैं।

भस्मी स्नान की परम्परा आदि नाथ जी के काल से चली आई है। एक बार मायारुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी ने शिव दर्शन हेतु बारह साल घोर तपस्या

की । शिव जी प्रसन्न होकर कहने लगे कि बेटा वर मांग तब उन्होंने शिवजी के स्वरुप को ही मांगा । अतः शिव जी प्रसन्न होकर प्रथम मत्स्येन्द्र नाथ जी के ऊपर भस्मी डालकर भस्मी स्नान कराते हुये उपदेश दिया कि बेटा यह भस्मी मृतीका है । मिट्टी है । तुम भी आज से पृथ्वी बनके मान-अपमान सुख-दुख के परे होकर मृतीका के समान एक रस हो जाना और जिस तरह अग्नि में भस्मी बनती है । उसी तरह ज्ञान अग्नि से तुम सभी दुर्गुण (काम, क्रोध, मद मत्सर इ०) को भस्म कर देना । तदन्तर अपने सिर जटाओं से जहां से गंगा जल स्नान कराया और उपदेश दिया कि जल भाव में बादल समस्त संसार में सभी से समभाव से बरसते हैं । उसी तरह तुम भी समस्त प्राणियों में समान व्यवहार करना तथा ओर भी जल को तप्त करने पर भी जल अपना शीतल स्वभाव को नहीं छोड़ता उसी प्रकार तुम भी अपने शीतल स्वभाव में रहना । फिर नाद जनेऊ देकर उपदेश किया कि नाद अर्थात शब्द और हर शिष्य का जन्म शब्द से होता है । जैसे "शबद गुरु का सुरति चेला" और जनेऊ जिस प्रकार अन्य जनेऊ (यज्ञपवीत) से भिन्न है । ठीक उसी प्रकार संसार में तुम भिन्न रहना । फिर चन्द्र, सूरज प्रति कुण्डल (दर्शन) दिये और कहा मुद्रा-सचितानंद-ज्ञान प्रकाश (सूर्य) शीतलता (चन्द्र) इनका प्रतीक है । मुद्रा से तुम योगी पद को प्राप्त हो गये । मुद्रा धारण करने से देवताओं को तुम प्रिय हो गये तथा दैत्य दानव दर्शनों से इस मुद्राओं से डरते हैं इत्यादि और भी कमण्डल रूद्राक्ष त्रिशूल इ० पूर्ण स्वरुप प्रदान करके उपदेश दिया तथा इनका प्रचार करने का आदेश देकर अपने कैलाश पर प्रस्थान किया ।

अतः पुजारी, भण्डारी, कोठारी, कोटवाल इ० सभी योगेश्वर भस्मी स्नान अवश्य करते हैं । इसी भस्मी लेपन प्रसंग में योगी लोग मन्त्रों का प्रयोग करते हैं तथा पाठ-भेद, स्तुति इत्यादि कण्ठस्थ करते हैं ।

भभूति (स्नान) लेपन मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या १२१ पर देखें)

इस प्रकार सभी योगेश्वर इस मन्त्र द्वारा भस्मी स्नान करते हैं तथा कुछ योगेश्वर भस्मी स्नान के उपरान्त भगवा मन्त्र या गोरक्ष पंचमात्रा पढ़कर भगवा बाना पहनते हैं ।

भगवा बाना का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या १८५ पर देखें)

गोरक्ष-पंच मात्रा

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या २१६ पर देखें)

कुछ योगेश्वर गोरक्ष गायत्री भी पढ़ते हैं। अतः बाना पहनने के पश्चात, नाद जनेऊ, रुद्राक्ष माला, झोली, कमण्डल, चिमटा, फावड़ी इ० सभी वस्तु मन्त्र द्वारा स्वीकारते हैं और अपने-अपने आसन पर विराजमान होते हैं। अतः पुजारी धूना-हवन सामग्री जुटाते धूना वेदी के पास रखता है और योगेश्वर चार जुग की भस्म गायत्री तथा भस्म गायत्री का पाठ करते हैं।

भस्म गायत्री-माहात्म

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। जुग-जुग गोरख जोगी सत है। भस्म गायत्री माता तत है। गोरख जोगी घट-घट भावे, निन्दक कंटक जमके जावे॥ सो फिर नाथ शरण में आये, सतगुरु गोरख फिर जिवावे। सहस्त्रधारा अम्बर बरसे, धर्ती उपजै गायत्री चरै॥ गायत्री माता गोवरी करी, सूर्य मुख सुखे अग्नि मुख जरै। सो भस्मन्ती जोगी जति के हस्तक ले मस्तक चढ़े॥ माई चढ़ावे गुरु वन्दना करै, दूध पूत भण्डार भरै। पिता चढ़ावे गुरु वन्दना करै, रण खेत में कीर्ति करे॥ आदके जोगी जुगादकी भभूत, सतके नाति धर्म के पूत। भस्मन्ती जस्मन्ती भय हरन्ती, नादमुद्रा जोति ज्वाला ले उतरन्ती॥ जल रेत भस्मी, थल रेत भस्मी, तल रेत भस्मी, सर्वांग रेत भस्मी। भस्मी-भस्मी कर जाणो, सिद्धों नवखण्ड पृथ्वी॥ तू भस्मन्ती तू जस्मन्ती कंटक मार दानौ छेदन्ती। भस्मन्ती जस्मन्ती माय, राजा प्रजा लागे पाय॥ चढ़ी खाक दिल हुआ पाक, अलख निरन्जन आपो आप। साध, सन्त सुनो चित लाय, चढ़े भस्म पाप मिट जाय॥ अनन्त कोट सिद्धों के भागे, गोरखनाथ जुग-जुग जागे। जति गुरु गोरखनाथ अलख बाल गोपाल जति सती को रख॥

इतना भस्म गायत्री महात्म सम्पूर्ण भया।

श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश।

(चार जुग भस्म गायत्री, तृतीय खण्ड, "भभूति-सद्गुरु जी" में देखें)

इत्यादि मन्त्रों द्वारा भस्म लेपन करते हैं तथा अन्य योगीश्वर मन्त्रों से भगवा बाना भी धारण करते हैं। अतः योगेश्वरों अपने-अपने गुरु जी को तथा धूना को, धूना के महन्त जी को, पीरजी को तथा पुजारी जी, कोठारी जी, भण्डारी जी, पंख जी इ० सभी को अपने-अपने मर्यादा अनुसार नाद पूजा आदेश तथा शम्भु आदेश। आदेश नमस्कार करते हैं। बाद में सभी योगेश्वर अपने-अपने आसन ग्रहण करते हैं। धूना के महन्त जी तथा पीर जी अपने आसन में उन्मनी मुद्रा ध्यान में रत होते हैं। अतः कोठारी जी, भण्डारी जी, पंख, कोटवाल इ० सभी अपने-अपने कार्य में व्यस्त होते हैं।

अतः धूना के पुजारी अपने धूना स्थापन तथा पूजन में कार्यान्वित होते हैं। अर्थात साधक भी इस प्रकार कार्य करे।

धूना-स्थापन तथा पूजन

श्री नाथ सिद्ध योगेश्वर विशिष्ट तन्त्र तथा शाबर मन्त्रों द्वारा धूना की स्थापन-पूजन करते हैं। अतः पुजारी (साधक) प्रातः स्नान-नित्यकर्म विधि करके धूना स्थापन करने की भूमि निश्चित करके वह धरत्री गायत्री मन्त्र द्वारा भूमि पूजन करते हैं विशेष विश्लेषण "धरत्री गायत्री पूजन" प्रथम खण्ड पृ. सं. ४४ में दिया है। प्रथम धरत्री के ऊपर निम्न मन्त्र से जल छिड़ककर पंचोपचार पूजन करे।

धरत्री पर जल छिड़कने का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ९४ पर देखें)

धरत्री गायत्री मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ४५ पर देखें)

अतः धरत्री पूजन के उपरान्त धर्ती के ऊपर २१, ५१, १०१ ईटों का वृत्ताकार आकार में धूना कुण्ड बनावे वृत्ताकार कुण्ड को धूना कहते है जिसे योनी नहीं होती जो कि वर्तुलाकार कुण्ड को योनी बनाते है उसे धूना भी कहते है। अतः नाथ सिद्ध ब्रह्मचारी-अवधूत योगी यह वृत्ताकार धूना को ही प्राधान्य या मान्यता देते है। कोई योगेश्वर अग्नि कृत्य तो लोहे या ताँबे का (कुण्ड) पात्र अथवा मिट्टी पात्र (कुण्ड)में करते हैं। अतः धूना कुण्ड के अन्दर (बीच में) बाहर बारीक रेता या मिट्टी से या गौ के गोबर से लेपन करे। गौ

गोबर लेपन उचित है तथा आटा + अष्टगंध या हल्दी (पिसी हुई) से तप्त जिह्वा का तारा मण्डल बनावे। नाथ सिद्धों में वृत्ताकार वर्तुलाकार धूनी कुण्ड प्रचलित है तथा सिद्ध मान्यता है। वर्तुलाकार धूना का व्यास कम से कम १५ इंच मोटाई ४ से ६ इंच और ऊँचाई ४ से ६ इंच लेना आवश्यक है तथा इसे बड़े आकार के लिये ३,३ इंच से बढ़ा सकते हैं। इस प्रकार धूना कुण्ड बनाते हैं। कुछ योगेश्वर २१, ५१, १०१ ईटों को चतुष्कोन, त्रिकोन आकार में तथा उनको पौड़ी और योनी रुप में बनाते हैं।

अत: वृत्ताकार धूना कुण्ड के अन्दर के पृष्ठ भाग पर (बीच में) तथा बाहर बारीक रेता या मिट्टी से या गौ के गोबर से लेपन करे, जहां गौ गोबर लेपन उचित है। अत: निम्न मन्त्र से लेपन करें।

धूना (कुण्डा) लेपन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ३ॐ गुरुजी। गाय का गोबर—गंगा नीर पानी, पांच महेश्वर मिल ईश्वर आनी। बुद्धि विनायक बैठो आई। सप्त जिह्वा सप्त पाताल बासुकि पीर। अग्नि देवता सात सागर पलटे नीर। धुन्ध वासना दसवें द्वारी। वासना दसो दिशा आन समाई। धूनी पानी सिद्धों की बानी लेपन करे, ऋद्ध सिद्ध आनंदी माई। इतना धूना लेपन मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अत: आटा में अष्ट गंध मिलाकर धूना के मध्य में सप्त जिह्वा का तारा मण्डल का निर्माण करे तथा पूर्व में (३ॐ) पश्चिम में त्रिशूल उत्तर में एक स्वास्तिक निर्माण करे। धूना के पूर्व दिशा में नवग्रह स्थापन के लिये तथा दीपक स्थापन के लिए दो चौकी बनावे। ईशान्य दिशा में रुद्र कलश के लिये एक छोटी चौकी बनाये। उत्तर दिशा में मान पात्र के लिए चौकी बनावे। धूना के पश्चिम दिशा में पुजारी जी के लिये और दक्षिण दिशा में ब्रह्मासन के लिए दो चौकी बनावे। नैऋत्य दिशा में घी पात्र स्थापन करे तथा धूना वेदी बाहर भूमि पर हवन सामग्री, सांकल्य अक्षदा—जव—पंचमेवा अगर तगर जटामासी बेला कमल कट्टा लवंग, इलायची, तिल, खीर, समिधा सुगन्धित द्रव्य इत्यादि सामग्री रखे।

धूना के वायव्य दिशा से लेकर पश्चिम नैऋत्य दक्षिण अग्नेय तक सभी

बारह पंथ के पीर जी महन्तों के लिए कुशासन या (मृग, व्याघ्र) चर्मासन डाले। धूना के दक्षिण में ब्रह्मासन सम्मुख सतनाथी पीर जी के लिये आसन तथा पश्चिम में पुजारी (साधक) के लिए आसन डाले तथा इन सभी के पीछे अन्य कोठारी, भण्डारी, पंख, कारबारी औघड़ इत्यादि योगेश्वर तथा भक्तों के लिये आसन व्यवस्था करें।

अत: साधक धूना के उत्तर दिशा में कुण्डा के अंदर निम्न मन्त्रों से त्रिशूल की स्थापना करे तथ चिमटन की स्थापना करें।

त्रिशूल मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ १६० पर देखें)

त्रिशूल मन्त्र कहकर साधक (पुजारी जी) त्रिशूल को धूना के अन्दर खड़ा कर देवें।

चिमटन मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या १६० पर देखें)

चिमटन मन्त्र कहकर साधक (पुजारी जी) चिमटन धूना के अन्दर खड़ा कर देवें।

तत्पश्चात् पुजारी (साधक) ने देवी देवताओं की स्थापना तथा नाथ सिद्धों की स्थापना तथा नवग्रह, रुद्रकलश तथा अग्नि स्थापना इत्यादि के लिए सम्पूर्ण पूजा सामग्री को धूना के वायव्य दिशा में अपने नजदीक रखे। गौघृत बड़े पात्र में लेकर जब धूना प्रज्वलित होने के पश्चात धूना अग्नि पर गरम (पिघलकर) कराके रखे। पूजा विधि के लिए अक्षत–अष्टगंध, पंचामृत, पंचमेवा, पंचफल, लवंग, इलायची, लाल धागा, हल्दी, कुंकुम सौभाग्य गंध, पुष्प मालायें इत्यादि साहित्य लेकर रखें।

धूनी पूजन

पुजारी पूर्व वर्णित कर्म से धूनी कुण्ड बनाते हैं। अत: पुजारी काष्ठ द्वारा अग्नि को उत्पन्न करते हैं या कर्पूर से ही अग्नि उत्पन्न करते हैं। यह अग्नि योगेश्वर खप्पर में या कास्य की थाली (कसोरा) या मिट्टी पात्र में स्थापन करते हैं। अत: योगेश्वर पुजारी धूनी कुण्ड को परिक्रमा करके अपने आप तीन

प्रदक्षणा करके फिर सूर्य गायत्री मन्त्र से धूनी में अग्नि स्थापन करते हैं तथा विशेष रुप से मन्दार वृक्ष की समीधा से अग्नि प्रज्वलित करते हैं या आंख की समीधा भी उपयोग में ला सकते हैं।

सूर्य गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐकार, निरन्जन निराकार, सूर्य मन्त्र तत सार। गगन मण्डल का कौन राजा, कौन सवार, कौन धर्म, कौन जाति। ॐ गुरु जी गगन मण्डल का सूरज राजा, सात अश्व रथ सवार, सत का धर्म, जाति का क्षत्रिय, ब्रह्म आत्मा रुद्र का अवतार, तीन काल का काल निर्माण। प्रथमे मित्र नाम, द्वितीये विष्णु नाम, तृतीय वरुण नाम, चतुर्थे सूर्य नाम, पंचमे भानु नाम, षष्टमे तपन नाम, सप्तमे इन्द्र नाम, अष्ठमे खगे नाम, नवम गभस्ति नाम, दशमे यमाय नाम, एकादश हिरन्यरेता नाम, द्वादश दिवाकर नाम, एता द्वादश नाम नमो नमः। ॐ गुरु जी नभ मण्डल में जय-जय ओंकार। कोटी देवता अपने ग्रह सवार। ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि, १५ तिथि। आओ सिद्धों राखो मन खोजो पवन, खोजो सुर, आवागमन त्रिकुटी भयी कोटि प्रकाश। निर्मल ज्योत दसवें द्वार सिद्ध साधक भर लो साखी। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने भाखी। ॐ सप्त तुरंगाय विद्महे सहस्र किरणाय धीमही तन्नो रवि प्रचोदयात। मन्त्र पढ़कर अग्नि को जलाये, सो नर सूर्य लोक में जाये। बिना मन्त्र अग्नि को जलाये सो नर नरक में जाये। इतना सूर्य मन्त्र गायत्री सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला पर बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ़-कथकर सुनाया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

ॐ ओं ह्रां ह्रीं ह्रों सः सूर्याय नमः।

ओ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।

ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी के चरण कमल को आदेश।

अतः अपना आसन ग्रहण करके ध्यान मुद्रा में गुरु गोरक्षनाथ जी का स्मरण करे तथा गोरक्ष गायत्री का पठन करके धूनी के पूर्व में इन्द्र की, दक्षिण में यम की ओर इशान्य में हनुमान की, पश्चिम में वरुण चन्द्रमा की, उत्तर में

कुबेर की तथा गरुड़ की, अग्निय कोन में अग्नि देवता की, नैऋत्य में श्री गणेश जी की तथा वायव्य कोन में वायु की भैरव की इस प्रकार सबका स्मरण करके पंचोपचारे पूजन करे तथा प्रत्येक दिशा में उन्हें आवाहित करके, मान देकर एक-एक पान सुपारी लवंग, इलायची मिष्ठान फल इ० का बीड़ा रखे या कुशा का आसन लगावे।

गोरक्ष गायत्री

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ११९ पर देखें)

अतः साधक तथा पुजारी ने निम्न मन्त्र से धूनी की यथासांग षोडोपचारे पूजन करे।

धूनी पूजन गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ गुरुजी स्वर्गलोक से शक्ति आई, नाभ कमल के फूल पर आयी। दो शक्ति भई खण्ड बनाई। बहुत देर बाद ईश्वर महादेव आये। कहे महादेव सुन मेरे भाई कहा गये। शक्ति कहे मैंने भस्म बनाई। ईश्वर महादेव कहने पर शक्ति ने दोनों को उपजाई। फेर ईश्वर महादेव त्रिगुणी अगम लोक को गये। धूनी जमाई। किया पूजा। भभूत से सारे संसार को रचाया। इति धूनी पूजा गायत्री सम्पूर्ण भया। अनंत कोट सिद्धों में त्र्यंबक क्षेत्र अनुपान शिला कोलागढ़ पर्वत पर बैठकर पढ़ कथकर सुनाया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

तदनंतर शिव गायत्री का पाठ करे और नवग्रह स्थापन पूजन करे।

नवग्रह स्थापन

तत्पश्चात साधक योगेश्वर ने धूनी के पूर्व दिशा में चौकोर हाथ भर बने ग्रह वेदी पर छोटा सा वस्त्र बिछाकर उस पर अष्ठगंध से नवग्रह मण्डल का निर्माण करे तथा उन नव खानों में क्रमशः खानों पर सुपारी अक्षदा-गंध या अष्ठगंध रखते हुए प्रत्येक ग्रह अनुसार आवाहन-स्थापन-पूजन करे जिस दिन पूजा कर्म करते हो उसी दिन ग्रह से शुरुआत करे।

नवग्रह आवाहन पूजन

चक्र-गायत्री

आवाहन के लिये निम्न मन्त्रों के अन्त में अगर स्वयं करे तो करष्यिामि कहे, दूसरों से करवाना हो तो "करिषेसे" और समूह से करे तो करिष्याम ही कहना चाहिये।

(प्रथम ग्रहमण्डल के पंचम (पांचवे) खाने के ऊपर अक्षदा सुपारी-गंध से सूर्य देवता का आवाहन-स्थापना-पूजन करे।)

(१) सूर्यदेवता-सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! सुन बा योग मूल कहे बारी बार। सत्गुरु शब्द का सहज विचार।। ॐ आदित्य खोजो आवागमन। घट में राखो दृढ़ करो मन।। पवन जो खोजो दसवें द्वार। तब गुण पावे आदित्य देवा।। आदित्य ग्रह जाति का क्षत्रिय। रक्त रंजित कश्यप पंथी।। कलींग देश स्थापना स्थापलो। लो पूजा करो सूर्य-नारायण की।। सत् फुरे सत् वाचा फुरे। श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे, भण्डार भरे ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम-मंगल शुक्र शनि।। बुध-गुरु राहु केतु सुख करे, दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ सूर्य मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ नमो नमः। भों सूर्याय: आवाहनं करिष्यामि।

(अत: सोमदेव-आवाहन स्थापना तृतीय (तीसरे) खाने में करें।)

(२) सोमदेव- ॐ गुरुजी सोमदेव मन धरी बा शून्य। निर्मल काया पाप ना पुण्य।। शशी-हर बरसे अम्बर झरे। सोमदेव गुण येता करे।। सोमदेव जाति का माली। शुक्ल वर्णी गोत्र अत्री। ॐ जमुना तीर स्थापना थापलो। लो कन्हेर पुष्प शिव शंकर की पूजा करो।। सत् फुरे सत् वाचा फुरे श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे, भण्डार भरे, ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। मंगल रवि शुक्र शनि। बुध गुरु राहु केतु सुख करे दुःख हरे, खाली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ सोम मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भु जी गुरु गोरक्षनाथ। नमो नमः। भों चन्द्रमसि आवाहनं करिष्यामि।

(अत: मंगलदेव-आवाहन-स्थापना सष्टम (छटे) खाने में करें।)

(३) मंगलदेव-ॐ गुरुजी, मंगल विषय माया छोड़े। जन्म-मरण संशय हरे।।

चन्द्र-सूर्य दो सम करे। जन्म-मरण का वाचे काल। ऐसा गुण पावो मंगल ग्रह। मंगल ग्रह जाति का सोनी। रक्त रंजित गोत्र भारद्वाज।। अवन्तिका क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा करो नव दुर्गा भवानी की।। सत् फुरे सत् वाचा फुरे श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे, भण्डार भरे, ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि। बुध-गुरु राहु केतु।। सुख करे दुःख हरे। खाली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ मंगल मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। नमो नमः। भों भौमायः आवाहन करिष्यामि।

(अतः बुधदेव-आवाहन-स्थापना प्रथम (पहले) खाने में करें।)

(४) बुधदेव-ॐ गुरुजी बुध ग्रह सतगुरु जी दिनि बुद्धि। विवरो काया पावो सिद्धि।। शिव धीरज धरे। शक्ति उनमन नीर चढ़ै।। ऐता गुण बुधग्रह करे। बुध ग्रह जाति का बनिया।। हरित हर गोत्र अत्रेय। मगध देश स्थापना थापलो।। लो पूजा गणेश जी की करे। सत् फुरे सत् वाचा फुरे। श्री नाथ जी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे, भण्डार भरै। ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह, १२ राशि १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि। मंगल गुरु राहु-केतु सुख करे दुःख हरे।। खाली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ बुध-मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। नमो नमः। भों बुधायः आवाहन करिष्यामि।

(अतः बृहस्पति-आवाहन-स्थापना (चौथे) खाने में करें।)

(५) बृहस्पति (गुरुदेवा)-ॐ गुरुजी, बृहस्पति विषयी मन ना धरो। पांचों इन्द्रिय निग्रह करो।। त्रिकुटी भई पवना द्वार। ऐसा गुण बृहस्पति देव।। बृहस्पति जाति का ब्राह्मण पीत पीला अंगिरस गोत्र।। सिन्धु देश स्थापना थापलो। लो पूजा श्री लक्ष्मी नारायण की करो।। सत् फुरे सत् वाचा फुरे।। श्री नाथ जी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि-सिद्धि धरे-भण्डार भरे, ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि।। मंगल बुध-राहु केतु सुख करे दुःख हरे। खली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ गुरु मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। नमो नमः। भों बृहस्पतायः आवाहन करिष्यामि।

(अतः शुक्रदेवता–आवाहन–स्थापना–द्वितीय (दूसरे) खाने में करें।

(६) शुक्र देवता–ॐ गुरुजी शुक्रदेव शोधे सकल शरीर। कहा बरसे अमृत कहा बरसे नीर।। नवनाड़ी बहात्तर कोठा पवन चढ़ै। एता गुण शुक्र देव करे। शुक्र जाति का सय्यद। शुक्ल वर्ण गोत्र भार्गव भोजकट देश स्थापना थापलो। लो पूजो हजरत पीर मुहमद कि करो। सत् फुरे सत् वाचा फुरे श्री नाथ जी के सिंहासन के ऊपर पान–फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे।। भण्डार भरे ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि सोम रवि मंगल शनि। बुध गुरु राहु केतु सुख करै दुःख हरे।। खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ शुक्र मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। नमो नमः। भों शुक्राय: आवाहन करिष्यामि।

(अतः शनिदेव–आवाहन–स्थापना अष्टम (आठवें) खाने में करें।)

(७) शनिदेव–ॐ गुरुजी शनिदेव पांच तत देह का आसन स्थिर। साढ़े सात बारा सोलह गिन–गिन धरे धीर।। शशि हर के घर आवे भाण। तो दिन–दिन शनिदेव गंगा स्नान। शनिदेव जाति का तेली। कृष्ण कालीक कश्यप गोत्री।। सौराष्ट्र क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा हनुमन्त वीर की करो।। सत् फुरे सत् वाचा फुरे। श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान–फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे। भण्डार भरे ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि।। सोम मंगल शुक्र रवि। बुध गुरु राहु केतु सुख करे दुःख हरे।। खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ शनि मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। नमो नमः। भों शनैश्चराय: आवाहन करिष्यामि।

(अतः राहु–आवाहन–स्थापना नवम (नवमें) खाने में करें।)

(८) राहु ग्रह–ॐ गुरुजी, राहु साध अरध शरीर। वीर्य का बल बनाये वीर।। धुंये की काया निर्मल नीर। येता गुण का राहु वीर।। राहु जाति का शूद्र। कृष्ण वर्ण पैठीनस गोत्र।। राठीनापुर क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा करो काल भैरो की। सत् फुरे सत् वाचा फुरे। श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे। भण्डार भरे। ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशी, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि। मंगल केतु बुध–गुरु सुख करै, दुःख हरै खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ राहु मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ।। नमो नमः। भों राहवे आवाहन करिष्यामि।

(अतः केतु-आवाहन स्थापना सप्तम (सातवें) खाने में करें।)

(९) केतु ग्रह- ॐ गुरुजी केतु ग्रह कृष्ण काया। खोजो मन विषय माया।। रवि चन्दा संग साधे। काल केन्द्र याते पावे।। केतु जाति का असुर जेमिनी गोत्र काला नुर। अन्तरवेद क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा करो रौद्र घोर की।। सत् फुरे सत् वाचा फुरे। श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे।। भण्डार भरे ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि।। मंगल बुध गुरु राहु सुख करै दु:ख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ केतु-मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। नमो नमः। भों केतवे आवाहन करिष्यामि।

इतना नवग्रह चक्र गायत्री दादा मत्स्येन्द्र कहे कहावे गोरक्ष सुनाये श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। गुरु गोरक्षनाथ जी को नमो आदेश।

अतः पुजारी (साधक) धूना के वायव्य दिशा में और ईशान्य दिशा में धूना वेदी पर अनुक्रमे देवी देवता स्थापना के लिये तथा नाथ सिद्धों के स्थापना के लिए कुशाओं के छोटे-छोटे आसन रखे और (प्रत्येक आसन पर) अक्षदा छोड़कर देवता तथा नाथ सिद्धों का आवाहन करे।

देवता तथा नाथ सिद्धों का आवाहन

धूना के वायव्य दिशा में अष्ठगंध अक्षदा छोड़कर आवाहन-पूजन करे।

(१) सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी।

ॐ सों आदि अनन्त, निरन्जन निराकार अलष पुरुष को आदेश। अलष पुरुष आवाहन स्थापयामि।

(२) ॐ माता क्वारी पिता यती, जल बिम्ब की काया। सुभय धाम कमल में विश्राम, असंख्य युगे अलील पुरुष को आदेश। अलील पुरुष आवाहन स्थापयामि।

(३) ॐ नीली पीली सिर जटा, डमरु त्रिशूल गले भुजंगा। अंग भभूत नाद मुद्रा, नील कंठ वृषभ वाहना। ऋद्धि सिद्धि रुद्र देवता, ॐ सों पुरूषोत्तमाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो ईश्वर प्रचोदयात्, ईश्वर महादेव जी को आदेश। ईश्वर महादेव आवाहन स्थापयामि।

(४) ॐ शंख चक्र गदा पदम्, श्याम सुन्दर गरुड़ वाहन। ऋद्धि सिद्धि मोक्षदायक, चर्तुभुज विष्णु देवता को आदेश। विष्णु देवता आवाहन स्थापयामि।

(५) ॐ दण्ड कमण्डल पुस्तक धारण, श्वेत वर्ण हंस वाहन ऋद्धि सिद्धि वरदायक, चर्तुमुख ब्रह्म देवता को आदेश। ब्रह्म देवता आवाहन स्थापयामि।

(६) ॐ देवी शंकर रमणी, गौरी शक्ति, गणेश जननी माता पार्वती आद शक्ति को आदेश। पार्वती आवाहन स्थापयामि।

(७) ॐ सत का धर्म, महा बाहु, महा वीर्य, काल रुपी यम देवता को आदेश। यम देवता आवाहन स्थापयामि।

(८) ॐ काल सों काल–काल–काल महाकाल हम को रख दुष्ट को भख अनभय काल निर्भय काल को आदेश। ॐ काल देवता को आवाहन स्थापयामि।

(९) ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्र तुण्डाय धीमही तन्नो बुद्धि (ऋद्धि सिद्धि) प्रचोदयात। ॐ गणेश देवता को आदेश। श्री गणपतेय आवाहन स्थापयामि।

(१०) ॐ गौरी गौरजा विद्महे अम्बिकाय धीमही तन्नो रुद्र प्रिया: प्रचोदयात। ॐ गौरी गौरजा देवी को आदेश। माता गौरी आवाहन स्थापयामि।

(११) ॐ महालक्ष्मी विद्महे विष्णु प्रियायै धीमही तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात। ॐ महालक्ष्मी देवी को आदेश। माता लक्ष्मी आवाहन स्थापयामि।

(१२) ॐ महासरस्वती विद्महे वान्गदेवीय धीमही तन्नो देवी प्रचोदयात। ॐ महा सरस्वती देवी को आदेश। माता महा सरस्वती आवाहन स्थापयामि।

(१३) ॐ महाकाली विद्महे ब्रह्म पुत्रीये धीमही तन्नो रुद्र प्रियायै प्रचोदयात। ॐ महाकाली देवी को आदेश। माता महाकाली आवाहन स्थापयामि।

(१४) ॐ गंगाजल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात । ॐ गंगा गौरजा देवी को आदेश । माता गंगा गौरजा आवाहन स्थापयामि ।

(१५) ॐ सावित्री देवी विद्महे ब्रह्म प्रियै धीमही तन्नो सती सावित्री प्रचोदयात । ॐ सावित्री देवी को आदेश । माता सावित्री आवाहन स्थापयामि ।

(१६) ॐ कामाक्षा विद्महे त्रिपुर सुन्दरी धीमही तन्नो ईश्वरी महामाई प्रचोदयात । ॐ कामाक्षा देवी को आदेश । माता कामाक्षा आवाहन स्थापयामि ।

(१७) ॐ होमीयो देवी विद्महे वज्र हस्ताय धीमही तन्नो आदकुवारी अग्नि प्रचोदयात । ॐ होमीयो देवी को आदेश । माता होमीयो आवाहन स्थापयामि ।

(१८) ॐ महालीला नाग पद्मनी देवी विद्महे पातालेश्वरी धीमही तन्नो बासुक प्रिया प्रचोदयात । ॐ महालीला नाग पद्मनी देवी को आदेश । माता महालीला नाग-पद्मनी देवी आवाहन स्थापयामि ।

(१९) ॐ पद्मिनी देवी विद्महे महामंगला धीमही तन्नो जोग माया प्रचोदयात । ॐ महामंगला पद्मिनी देवी को आदेश । माता महामंगला पद्मिनी आवाहन स्थापयामि ।

(२०) ॐ मयनावन्ती विद्महे जोगमाया धीमही तन्नो जालंदर प्रियै प्रचोदयात । ॐ मयनावन्ती देवी को आदेश । माता मयनावन्ती आवाहन स्थापयामि ।

(२१) ॐ सती पार्वती विद्महे शिवप्रियायै धीमही तन्नो आदशक्ति प्रचोदयात । ॐ सती पार्वती देवी को आदेश । माता पार्वती आवाहन स्थापयामि ।

(२२) ॐ अन्नपूर्णाय विद्महे महाअन्नपूर्णाय धीमही तन्नो अन्नपूर्णी प्रचोदयात । ॐ महा अन्नपूर्णा देवी को आदेश । माता महाअन्नपूर्णा आवाहन स्थापयामि ।

(२३) ॐ तुलजा देवी भवानी विद्महे चण्डीकाय धीमही तन्नो जोगमाया प्रचोदयात। ॐ तुलजा भवानी देवी को आदेश। माता तुलजा भवानी आवाहन स्थापयामि।

(२४) ॐ बिमला देवी विद्महे सन्तोषी धीमही तन्नो ज्योति स्वरुप प्रचोदयात। ॐ बिमला देवी को आदेश। माता बिमला आवाहन स्थापयामि।

(२५) ॐ हिंगलाज देवी विद्महे महामाई धीमही तन्नो शंकर प्रियै प्रचोदयात। ॐ हिंगलाज देवी को आदेश। माता हिंगलाज आवाहन स्थापयामि।

(२६) ॐ तारा त्रिकुटा विद्महे त्रिदेवी पुत्रीयै धीमही तन्नो विश्वकर्मा-तोतला प्रचोदयात। ॐ तारा त्रिकुटा देवी को आदेश। माता तारा त्रिकुटा आवाहन स्थापयामि।

(२७) ॐ ज्वालायै विद्महे वज्र हस्ताय धीमही तन्नो ज्वाला प्रचोदयात। ॐ ज्वाला देवी को आदेश। माता ज्वालाई आवाहन स्थापयामि।

(२८) ॐ महामनसा देवी विद्महे मनसा धाती, धीमही तन्नो अलील प्रियै प्रचोदयात। ॐ महामनसा देवी को आदेश। माता महामनसा आवाहन स्थापयामि।

इतना श्री नाथ सिद्ध जोगन आवाहन सम्पूर्ण भया।

अत: नवदुर्गा तथा दश महाविद्याओं का आवाहन-स्थापन-पूजन करे।

नवदुर्गा आवाहन

(१) ॐ शैलपुत्री पार्वती शिव शक्ति स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ शैलपुत्री देवी आवाहन स्थापयामि।

(२) ॐ ब्रह्मचारिणी परमात्म शक्ति पारब्रह्म स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ ब्रह्मचारिणी देवी आवाहन स्थापयामि।

(३) ॐ चन्द्रघण्टा उमाशक्ति चन्द्र स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ चन्द्रघण्टा देवी आवाहन स्थापयामि।

(४) ॐ कुष्माण्डा माया शक्ति सृष्टि स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ कुष्माण्डा देवी आवाहन स्थापयामि।

(५) ॐ स्कन्दमाता चण्डी शक्ति जननी स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ स्कन्दमाता देवी आवाहन स्थापयामि।

(६) ॐ कात्यायनी कात्यायन शक्ति तेज स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ कात्यायनी देवी आवाहन स्थापयामि।

(७) ॐ कालरात्रि संहार शक्ति काल स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ कालरात्रि देवी आवाहन स्थापयामि।

(८) ॐ महागौरी ब्रह्मशक्ति अग्नि स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ महागौरी देवी आवाहन स्थापयामि।

(९) ॐ सिद्धदात्री अष्टसिद्धि शक्ति गणेश स्वरुप को नमो आदेश।
ॐ सिद्धदात्री देवी आवाहन स्थापयामि।

इतना नवदुर्गा आवाहन सम्पूर्ण भया।

दश महाविद्या आवाहन

(१) क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके। हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा: नमो आदेश। ॐ महाविद्या, महाकाली देवी आवाहन स्थापयामि।

(२) ॐ ओं हिं स्त्रीं फट् नम: आदेश।
ॐ महाविद्या तारा त्रिकुटा देवी आवाहन स्थापयामि।

(३) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं: ओं ह्रीं, श्रीं क ए ई ल हिं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं सौ: ऐं क्लीं हीं श्रीं। नम: आदेश।
ॐ महाविद्या त्रिपुर सुन्दरी षोडशी आवाहन स्थापयामि।

(४) ॐ हिं भुवनेश्वरी नम: आदेश।
ॐ महाविद्या भुवनेश्वरी देवी आवाहन स्थापयामि।

(५) ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।
ॐ महाविद्या छिन्नमस्ता देवी आवाहन स्थापयामि।

(६) ॐ हस्त्रों हस्कलरों हस्त्रों नम: आदेश।
ॐ महाविद्या भैरवी देवी आवाहन स्थापयामि।

(७) ॐ धूं धूं धूमावती स्वाहा नम: आदेश।
ॐ महाविद्या धूमावाती देवी आवाहन स्थापयामि।

(८) ॐ ह्ली ब्रह्मस्त्राये विद्महे स्तम्भ न बाणाये धीमही तन्नो बगला प्रचोदयात। बगला मुखी को नमः आदेश।

ॐ महाविद्या बगलामुखी देवी आवाहन स्थापयामि।

(९) ओं ह्रीं क्लीं हूं मातग्यै फट् स्वाहाः नमः आदेश।

ॐ महाविद्या मातंगी देवी आवाहन स्थापयामि।

(१०) ॐ ह्रिं क्लीं कमला देवी नमः आदेश।

ॐ महाविद्या कमला देवी आवाहन स्थापयामि।

इति दश महाविद्या आवाहन सम्पूर्ण भया।

अतः धरत्री माता का अष्टगंध तथा अक्षदा धूनी वेदी पर रखकर आवाहन स्थापन करें।

(११) ॐ पृथ्वी दैव्ये विद्महे सहस्त्र मूर्त्यै धीमही तन्नो पृथ्वी प्रचोदयात।

ॐ धरत्री देवी को आदेश। धरत्री माता आवाहन स्थापयामि।

अतः धूनी को वेदी के ऊपर ईशान्य दिशा की ओर अष्ठगंध तथा अक्षदा छोड़कर निम्न मन्त्रों द्वारा आवाहन तथा पूजन करें।

(१२) ॐ ह्रीं श्रीं गों–गोरक्षनाथाय विद्महे, शून्य पुत्राय धीमही। तन्नो गोरक्ष निरन्जन प्रचोदयात। नमः आदेश। गोरक्षनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

पंच सत्गुरु

(१) ॐ गुरु जी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत् गुरु सत् है। कृपा सिन्धू ज्ञान, ॐ सोंह शुद्ध है काया गुरु मन्त्र गुरु (श्री.....) बताया (यहां अपने चोटी के सत् गुरु का नाम पढ़े)

ॐ सत् गुरु योगी (श्री.....) (अपने चोटी गुरु का नाम) नमो आदेश।

ॐ योगी (श्री.....) (चोटी गुरु जी का नाम) आवाहन स्थापयामि।

(२) ॐ गुरुजी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत्गुरु सत् है। कृपा सिंधू ज्ञान ॐ सोंह शुद्ध है काया गुरु मन्त्र (श्री.....) (चिरा गुरु का नाम) ने बताया ॐ चिरा गुरु (श्री.....) (चिरा गुरु का नाम) नमो आदेश।

ॐ (श्री....) (चीरा गुरु जी का नाम) आवाहन स्थापयामि।

(३) ॐ गुरुजी सत् का धर्म, सत् का कर्म। सत्गुरु सत् है। कृपा सिन्धू ज्ञान। ॐ सों शुद्ध है काया, गुरु मन्त्र (श्री.....) (उपदेशी गुरु जी का नाम) ने बताया। ॐ उपदेशी गुरु (श्री.....) (उपदेशी गुरुजी का नाम) नमो आदेश।

ॐ (श्री.....) (उपदेशी गुरु जी) आवाहन स्थापयामि।

(४) ॐ गुरु जी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत्गुरु सत् है कृपा सिंधू ज्ञान। ॐ सोंह शुद्ध है काया, गुरु मन्त्र गुरु (श्री.....) (भभूत गुरु जी का नाम) ने बताया। ॐ गुरु (श्री.....) (भभूत गुरु जी का नाम) नमो आदेश। ॐ गुरु (श्री....) (भभूत गुरु जी का नाम) आवाहन स्थापयामि।

(५) ॐ गुरु जी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत्गरु सत् है; कृपा सिन्धू ज्ञान। ॐ सोंह शुद्ध है काया, गुरु मंत्र गुरु (श्री....) (लंगोटी गुरु का नाम) ने बताया। ॐ गुरु (श्री.....) (लंगोटी गुरु का नाम) नमो आदेश। ॐ गुरु (श्री.....) (लंगोट गुरु) आवाहन स्थापयामि।

नवनाथ

(१) ॐ ओंकार आदिनाथ ॐकार स्वरुप को नमो आदेश। आदिनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

(२) ॐ उदयनाथ पार्वती धरत्री स्वरुप को नमो आदेश। उदयनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

(३) ॐ सत्यनाथ ब्रह्माजी जल स्वरुप को नमो आदेश। सत्यनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

(४) ॐ सन्तोषनाथ विष्णु जी खण्ड खाण्ड तेज स्वरुप को नमो आदेश। सन्तोषनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

(५) ॐ अचल अचम्बेनाथ आकाश स्वरुप को नमो आदेश। अचल अचम्बेनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

(६) ॐ गजबेली गजकंथड़नाथ गणेश जी गज हस्ती स्वरुपी को नमो आदेश। गज कंथड़नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

(७) ॐ ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ अठारह भार वनस्पति स्वरुप को नमो आदेश। चौरंगीनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

(८) ॐ माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी माया स्वरुप को नमो आदेश। मत्स्येन्द्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

(९) ॐ घटे पिण्डे नव निरन्तरे सम्पूर्ण रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाल स्वरुप को नमो आदेश। गुरु गोरक्षनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

चौरासी सिद्ध आवाहन

ॐ गुरु जी सिद्ध सुमिर चले गोदावरी तीर भुवन हो सिद्ध, भूले भटके पंथ कर ध्यावे, अष्ट सिद्धि नव निधि को पावे, इनकी थिरकाया अरु वज्र काया पीवो सिद्धों उनमुन प्याला सर्व के पति श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

(१) ॐ सिद्धों कपिलनाथ जी नमो आदेश। (२) ॐ सिद्ध सनकनाथ जी नमो आदेश। (३) ॐ सिद्ध लंकनाथ जी नमो आदेश। (४) ॐ सिद्ध सनातन नाथ जी नमो आदेश। (५) ॐ सिद्ध विचारनाथ जी नमो आदेश। (६) ॐ सिद्ध चक्रनाथ जी नमो आदेश। (७) ॐ सिद्ध नरमाईनाथ जी नमो आदेश। (८) ॐ सिद्ध रतननाथ जी नमो आदेश। (९) ॐ सिद्ध श्रृंगेरी नाथ जी नमो आदेश। (१०) ॐ सिद्ध सनन्दन नाथ जी नमो आदेश। (११) ॐ सिद्ध निवृत्ति नाथ जी नमो आदेश। (१२) ॐ सिद्ध सनत्कुमार नाथ जी नमो आदेश। (१३) ॐ सिद्ध ज्वालेन्द्र नाथ जी नमो आदेश। (१४) ॐ सिद्ध सारस्वताई नाथ जी नमो आदेश। (१५) ॐ सिद्ध ब्रह्माई नाथ जी नमो आदेश। (१६) ॐ सिद्ध प्रभुदेवनाथ जी नमो आदेश। (१७) ॐ सिद्ध कनकाई नाथ जी नमो आदेश। (१८) ॐ सिद्ध धुन्धूकार नाथ जी नमो आदेश। (१९) ॐ सिद्ध नारददेव नाथ जी नमो आदेश। (२०) ॐ सिद्ध मन्जुनाथ जी नमो आदेश। (२१) ॐ सिद्ध मनसाईनाथ जी नमो आदेश। (२२) ॐ सिद्ध विरनाथ जी नमो आदेश। (२३) ॐ सिद्ध श्रृताईनाथ जी नमो आदेश। (२४) ॐ सिद्ध नागार्जुन नाथ जी नमो आदेश। (२५) ॐ सिद्ध भुसकाई नाथ जी नमो आदेश। (२६) ॐ सिद्ध मद्रनाथ जी नमो आदेश। (२७) ॐ सिद्ध गहीणी नाथ जी नमो आदेश। (२८) ॐ सिद्ध भूचर नाथ जी नमो आदेश। (२९) ॐ सिद्ध जम्भ नाथ जी नमो आदेश। (३०) ॐ सिद्ध वक्रनाथ जी नमो आदेश। (३१) ॐ सिद्ध चर्पटनाथ जी

नमो आदेश। (३२) ॐ सिद्ध बिलेशायनाथ जी नमो आदेश। (३३) ॐ सिद्ध कानिपा नाथ जी नमो आदेश। (३४) ॐ सिद्ध विरबंकनाथ जी नमो आदेश। (३५) ॐ सिद्ध ज्ञानेश्वर नाथ जी नमो आदेश। (३६) ॐ सिद्ध तारा नाथ जी नमो आदेश। (३७) ॐ सिद्ध सुरानन्द नाथ जी नमो आदेश। (३८) ॐ सिद्ध सिद्धबुद्ध नाथ जी नमो आदेश। (३९) ॐ सिद्ध भगाई नाथ जी नमो आदेश। (४०) ॐ सिद्ध पीप्पलनाथ जी नमो आदेश। (४१) ॐ सिद्ध चन्द्रनाथ जी नमो आदेश। (४२) ॐ सिद्ध भद्रनाथ जी नमो आदेश। (४३) ॐ सिद्ध एकनाथ जी नमो आदेश। (४४) ॐ सिद्ध मानिकनाथ जी नमो आदेश। (४५) ॐ सिद्ध गेहल्लारावल नाथ जी नमो आदेश। (४६) ॐ सिद्ध कायनाथ जी नमो आदेश। (४७) ॐ सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी को नमो आदेश। (४८) ॐ सिद्ध याज्ञवाल्क्यनाथ जी नमो आदेश। (४९) ॐ सिद्ध गोरनाथ जी नमो आदेश। (५०) ॐ सिद्ध टिण्टीणी नाथ जी नमो आदेश। (५१) ॐ सिद्ध दयानाथ जी नमो आदेश। (५२) ॐ सिद्ध हवाईनाथ जी नमो आदेश। (५३) ॐ सिद्ध दरियानाथ जी नमो आदेश। (५४) ॐ सिद्ध खेचर नाथ जी नमो आदेश। (५५) ॐ सिद्ध घोडाचोलिपा नाथ जी नमो आदेश। (५६) ॐ सिद्ध सहजाईनाथ जी नमो आदेश। (५७) ॐ सिद्ध सुकदेव नाथ जी नमो आदेश। (५८) ॐ सिद्ध औघड़नाथ जी नमो आदेश। (५९) ॐ सिद्ध देवनाथ जी नमो आदेश। (६०) ॐ सिद्ध प्रकाशनाथ जी नमो आदेश। (६१) ॐ सिद्ध कोरण्टनाथ जी नमो आदेश। (६२) ॐ सिद्ध बालकनाथ जी नमो आदेश। (६३) ॐ सिद्ध बालगुन्दाईनाथ जी नमो आदेश। (६४) ॐ सिद्ध साबरनाथ जी नमो आदेश। (६५) ॐ सिद्ध विरुपाक्षनाथ जी नमो आदेश। (६६) ॐ सिद्ध मल्लीकानाथ जी नमो आदेश। (६७) ॐ सिद्ध गोपाल नाथ जी नमो आदेश। (६८) ॐ सिद्ध लधाईनाथ जी नमो आदेश। (६९) ॐ सिद्ध अल्लमनाथ जी नमो आदेश। (७०) ॐ सिद्ध सिद्धपाद नाथ जी नमो आदेश। (७१) ॐ सिद्ध अडबंगनाथ जी नमो आदेश। (७२) ॐ सिद्ध गौरवनाथ जी नमो आदेश। (७३) ॐ सिद्ध धीरनाथ जी नमो आदेश। (७४) ॐ सिद्ध सोहिरोबा

नाथ जी नमो आदेश।(७५) ३ॐ सिद्ध प्रौढनाथ जी नमो आदेश। (७६) ३ॐ सिद्ध गरीबनाथ जी नमो आदेश।(७७) ३ॐ सिद्ध कालनाथ जी नमो आदेश। (७८) ३ॐ सिद्ध धर्मनाथ जी नमो आदेश। (७९) ३ॐ सिद्ध मेरुनाथ जी नमो आदेश।(८०) ३ॐ सिद्ध सिद्धासननाथ जी नमो आदेश। (८१) ३ॐ सिद्ध सूरत नाथ जी नमो आदेश। (८२) ३ॐ सिद्ध मार्कण्डेय नाथ जी नमो आदेश।(८३) ३ॐ सिद्ध मीननाथ जी नमो आदेश।(८४) ३ॐ सिद्ध काकचण्डी नाथ जी नमो आदेश।

इतना चौरासी सिद्धों को नमो आदेश।

३ॐ चौरासी सिद्धों आवाहन स्थापयामि।

(ऋद्धि-सिद्धि) सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन तथा स्थापना

(१) ३ॐ अनुमा सिद्धदात्री, देवी शक्ति को नमो आदेश।
अनुमा सिद्धदात्री, देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(२) ३ॐ महिमा सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
महिमा सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(३) ३ॐ गरिमा सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
गरिमा सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(४) ३ॐ लघुमा सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
लघुमा सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(५) ३ॐ प्राप्ति सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
प्राप्ति सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(६) ३ॐ प्रकाशक सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
प्रकाशक सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(७) ३ॐ असत्या सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
असत्या सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(८) ३ॐ अष्टभुतान, मनोजा सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
अष्टभुतान, मनोजा सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(९) ॐ छुछूमक्ता सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
छुछूमक्ता सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१०) ॐ अनुरा सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
अनुरा सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(११) ॐ परकाया प्रवेश सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
परकाया प्रवेश सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१२) ॐ सूरजवसी सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
सूरजवसी सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१३) ॐ जलवसी सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
जलवसी सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१४) ॐ दुरि श्रवण सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
दुरि श्रवण सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१५) ॐ दुरि दर्शन सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
दुरि दर्शन सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१६) ॐ कान्सकामोद सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
कान्सकामोद सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१७) ॐ अप्रहता सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
अप्रहता सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१८) ॐ देवता सैल सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
देवता सैल सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१९) ॐ रुपसेल देवता सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
रुपसेल देवता सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(२०) ॐ हारेनही सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
हारेनही सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(२१) ॐ त्रिकाल सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
त्रिकाल सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(२२) ॐ अग्नि वसी सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
अग्नि वसी सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(२३) ॐ सबद वसी सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
सबद वसी सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(२४) ॐ परम ज्योति सिद्धदात्री देवी शक्ति को नमो आदेश।
परम ज्योति सिद्धदात्री देवी शक्ति आवाहन स्थापयामि।

इतना ऋद्धि सिद्धि आवाहन स्थापन सम्पूर्ण भया।

क्षेत्रपाल—अष्ट भैरव आवाहन

ॐ हूँ ख्रों जं रं लं बं क्रों ऐं हिं महाकाल भैरव सर्व विघ्ननाशाय हिं फट् स्वाहा।

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ काल भैरो काले केश, कन्नी मुद्रा, भगवा भेष, राजा—प्रजा करते आदेश। ॐ भैरो तू काली का पूता सदा रहे मतवाला चढ़े तेल सिन्दूर गल पुष्प माला, जिस किसी पर संकट पड़े जो सुमिरे तुम्हें उसकी रक्षा करे, तुमं हो रक्षपाल भरी कटोरी तेल की धन्य तुम्हारा प्रताप, काल भैरो, अकाल भैरो, लाल भैरो, जल भैरो, थल भैरो, बाल भैरो, आकाश भैरो, पाताल भैरव क्षेत्रपाल भैरो सदा रहे कृपाल।

(१) ॐ अष्ठ भैरव क्षेत्रपाल के चरण कमल में आदेश।

(२) ॐ नमो आदि अलील नाथ जी, सुध बुध भैरव आवाहन स्थापयामि।

(३) ॐ नमो ईश्वर महादेव जी भैरव आवाहन स्थापयामि।

(४) ॐ नमो दादा मत्स्येन्द्रनाथ भैरव आवाहन स्थापयामि।

(५) ॐ नमो सिद्ध चौरंगी नाथ भैरव आवाहन स्थापयामि।

(६) ॐ नमो सत्यनाथ ब्रह्माजी भैरव आवाहन स्थापयामि।

(७) ॐ नमो सन्तोषनाथ विष्णु जी नाथ भैरव आवाहन स्थापयामि।

(८) ॐ नमो बासुकि नाग जी भैरव आवाहन स्थापयामि।

(९) ॐ नमो गोरक्षनाथ भैरव आवाहन स्थापयामि।

इतना अष्ट भैरव आवाहन सम्पूर्ण भया।

अष्ठ प्राण पाल का आवाहन

पूर्व दिशा में—सूर्य—नारायण आवाहन

(१) ॐ ओ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमही तन्नो सूर्य प्रचोदयात।
ॐ सूर्य नारायण आवाहन स्थापयामि।

अग्नेय दिशा में— गौ कामधेनु माता आवाहन।

(२) ॐ क्षीर सागर नन्दिन्ये विद्महे कामधेनु धीमही तन्नो गौ प्रचोदयात।

ॐ गौ कामधेनु आवाहन स्थापयामि।

दक्षिण दिशा में— धन्वन्तरी वनस्पति का कल्प वृक्ष आवाहन।

(३) ॐ सिद्ध शरण में धन्वन्तर माई। सिद्ध चौरंगी ज्ञान पारखी।

ऋद्ध सिद्धि से भरपूर योगी। गोरखनाथ परम सन्तोषी।

ॐ धन्वन्तरी कल्पवृक्ष वनस्पति आवाहन स्थापयामि।

नैवृत्य दिशा में— शेष भगवान आवाहन।

(४) ॐ शेष भगवान को नमो आदेश।

शेष भगवान आवाहन स्थापयामि।

पश्चिम दिशा में— सोमदेव (चन्द्र) आवाहन।

(५) ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृतत्वाय धीमही तन्नो चन्द्र प्रचोदयात।

ॐ सोमदेव (चन्द्र) आवाहन स्थापयामि।

वायव्य दिशा में— शंख नाद शक्ति आवाहन।

(६) ॐ सत बोले सतवादी, गुरु वाचा तत सार। शंख गायत्री संभालो बहुडी न लै अवतार ! ॐ गंगा जमना सरस्वती तीनों अखण्ड कवार शंख ठैरे शिव पूजीये प्राणी पावे मोक्ष द्वार।

ॐ शंख नाद शक्ति आवाहन स्थापयामि।

उत्तर दिशा में— धौल बैल शक्ति आवाहन।

(७) ॐ धौल बैल शक्ति को नमो आदेश।

ॐ धौल बैल शक्ति आवाहन स्थापयामि।

ईशान्य दिशा में— अमृत घट आवाहन

(८) ॐ अमृत घट संजीवन शक्ति को नमो आदेश।

ॐ अमृत घट संजीवन शक्ति आवाहन स्थापयामि।

इतना अष्ट प्राण पाल आवाहन सम्पूर्ण भया।

श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

सभी दिशाओं से कोटवाल आवाहन

(१) ॐ भानू कोटवाल को नमो आदेश। भानू कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (२) ॐ गणेश कोटवाल को नमो आदेश। गणेश कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (३) ॐ हनुमान कोटवाल को नमो आदेश। हनुमान कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (४) ॐ शेष कोटवाल को नमो आदेश। शेष कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (५) ॐ चन्द्रमा कोटवाल को नमो आदेश। चन्द्रमा कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (६) ॐ भैरव कोटवाल को नमो आदेश। भैरव कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (७) ॐ गरुड़ कोटवाल को नमो आदेश। गरुड़ कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (८) ॐ इन्द्र कोटवाल को नमो आदेश। इन्द्र कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (९) ॐ यम कोटवाल को नमो आदेश। यम कोटवाल आवाहन स्थापयामि। (१०) ॐ अग्निदेव को नमो आदेश। अग्निदेव कोटवाल आवाहन स्थापयामि।

इतना कोटवाल आवाहन सम्पूर्ण भया।

श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः नाथ शक्ति आवाहन करे।

ॐ धूनी पानी सिद्धों की बानी। भभूत माई ले झोली झण्डी॥ फावड़ी चिमटन आधार कुबड़ी। शाबर मन्त्र मतंगा भैरवी॥ त्रिशूल खप्पर हाथ में डण्डी। संग खड़ी कालका माई॥ काल कन्टक मार भगाई। सत् सत् शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई॥

श्री नाथ शक्ति आवाहन स्थापयामि।

नाथ-अस्त्र आवाहन करे।

ॐ गोरख कहे गोरख फटकार, हनुमन्त का विरास्त्र। काली चलाये काल अस्त्र, भैरो भया अघोर अस्त्र। सत् है गुरु शबद, मन्त्र शाबर सिद्ध का अस्त्र ॐ दुष्ट को भख, पापी पाखण्डी को भख हम शिष्य शबद के गुरु गोरखनाथ हमको रख।

श्री नाथ शक्ति आवाहन स्थापयामि।

(१) ॐ एकोंकार, ॐ द्विकुमार (चन्द्र-सूरज)
ॐ तीन देव, ॐ चारो वेद, ॐ पांच पाण्डव
ॐ छह जति, ॐ सात सती, ॐ आठ भैरव,
ॐ नवनाथ, ॐ दश औतार, ॐ ग्यारह रुद्र
ॐ बारह पंथ ॐ जोगी सती, ॐ तेरह तैंतीस कोट देवी देवता को नमो आदेश।

ॐ एकोंकार, ॐ द्विकुमार (चन्द्र सूरज), ॐ त्रिदेव, ॐ चारों वेद, ॐ पांच पाण्डव, ॐ छह जति, ॐ सात सती, ॐ ग्यारह रुद्र, ॐ बारह पंथ, ॐ योगी सती, ॐ तेरह तैंतीस कोटी देवी देवता आवाहन स्थापयामि।

(२) ॐ नयानवे कोटि राजयोगेश्वर को नमो आदेश। निवानबे कोटि राजयोगेश्वर आवाहन स्थापयामि।

(३) ॐ अनंत कोट सिद्ध साधक को नमो आदेश। अनन्त कोट सिद्ध साधक आवाहन स्थापयामि।

(४) ॐ असंख कोटि शूरवीर दाता दानीया को नमो आदेश। असंख कोटि शूरवीर दाता दानीया आवाहन स्थापयामि।

(५) ॐ हाजना हजूर जाहर जिन्दापीर योगी को नमो आदेश। हाजना हजूर जाहर जिन्दापीर योगी आवाहन स्थापयामि।

(६) ॐ धराधर गुप्त प्रगट जीती जागति समाधि वाले सिद्धों को नमो आदेश। धराधर गुप्त प्रगट जीती जागति समाधि वाले सिद्धों आवाहन स्थापयामि।

(७) ॐ ज्ञानी ध्यानी, ॐ थानी मकानी, ॐ सन्त महन्त, ॐ नागा निर्वाणी ॐ जती सती, ॐ त्यागी तपस्वी, ॐ महासिद्ध योगेश्वरों को नमो आदेश।

ॐ ज्ञानी, ध्यानी, ॐ थानी मकानी, ॐ सन्त महन्त, ॐ नागा निर्वाणी ॐ जती सती, ॐ त्यागी तपस्वी, ॐ महासिद्ध योगेश्वरों आवाहन स्थापयामि।

(८) ॐ जै जै जगदम्बे अम्बिके जोगी जोत नमो आदेश।
ॐ जोगमाया को नमो आदेश।
ॐ ज्वाला माता को नमो आदेश।
ॐ जगदम्बे, अम्बिका जोगी ज्योत, आवाहन स्थापयामि।

ॐ जोगमाया आवाहन स्थापयामि ।

ॐ ज्वाला माता आवाहन स्थापयामि ।

इतना देवता, नाथ सिद्ध आवाहन स्थापन सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

अत: साधक ने प्राण गायत्री मन्त्र द्वारा सूर्यादि ग्रह वेदी तथा देवी देवता और नाथ सिद्ध योगेश्वरों की प्राण प्रतिष्ठा करे । प्राण गायत्री मन्त्र से ग्रह वेदी तथा देवता स्थापन आसनों पर जल छोड़े तथा सामुपचारे पूजन करे ।

प्राण गायत्री मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ४० पर देखें)

अत: आवाहित नाथ सिद्ध देवता की पंचोपचारे पूजन करे ।

(पंचोपचारे पूजन- धूप-दीप-नैवद्य-गंध पुष्प)

या षोड्शोपचार पूजन करे ।

षोडशोपचार-पूजन

(१) प्रथम आसन मन्त्र (पृष्ठ संख्या १८५) से पढ़कर वस्त्र या अक्षदा या पाटला वेदी पर रखें ।

(२) कुशा आसन का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १७५) से पढ़कर कुशासन वेदी पर रखें ।

(३) आसन ग्रहण करने का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १८६) से पढ़कर सभी देवी देवता को विनती करें ।

(४) पाद्य स्नान, जल गायत्री (पृष्ठ संख्या १७५) से पढ़कर शंख द्वारा जल छोड़े और आचमन करें ।

(५) अर्घ्य- अलील गायत्री (पृष्ठ संख्या १७६) से पढ़कर, त्रिवेणी संगम या समुद्र जल या गंगा जल शंख द्वारा अर्घ्य करें ।

(६) मधु स्नान- मधुबीज मन्त्र (पृष्ठ संख्या १७७) से पढ़कर शंख द्वारा शहद छोड़े तथा शुद्ध जल छोड़े ।

(७) घृत स्नान- घृतमन्त्र (पृष्ठ संख्या १७७) से पढ़कर शंख द्वारा घृत छोड़े तथा शुद्ध जल छोड़े ।

(८) दधि स्नान- दधि जाप (पृष्ठ संख्या १७८) से पढ़कर शंख द्वारा दधि छोड़े तदन्तर शुद्ध जल छोड़े ।

(९) मधुपर्क **स्नान**- मधुपर्क जाप (पृष्ठ संख्या १७८) से पढ़कर शंख द्वारा घृत + शहद + दधि मिश्रण छोड़े तदन्तर शुद्ध जल छोड़े ।

(१०) पय: स्नान- गौ गायत्री मन्त्र (पृष्ठ संख्या १७९) से पढ़कर शंख द्वारा गौ दूध छोड़े तदन्तर शुद्ध जल छोड़े ।

(११) पंचामृत स्नान- पंचामृत जाप (पृष्ठ संख्या १८०) से पढ़कर शंख द्वारा घी + चीनी + मधु + दूध + दही मिश्रण छोड़े तदन्तर शुद्ध जल छोड़े ।

(१२) केशर स्नान- केशर मन्त्र (पृष्ठ संख्या १८०) से पढ़कर शंख द्वारा दूध + केशर छोड़े तदन्तर शुद्ध जल छोड़े ।

(१३) उबटन स्नान- चन्दरस मन्त्र (पृष्ठ संख्या १८१) चन्दन घीसकर छींटे करे तदन्तर शुद्ध जल छोड़े ।

(१४) शुद्धोदक स्नान, फिर जल गायत्री (पृष्ठ संख्या १८१) से पढ़कर शंख द्वारा जल छोड़े ।

(१५) भस्म स्नान भस्म गायत्री (पृष्ठ संख्या १८२) से पढ़कर नाथ सिद्धों पर भस्म छोड़े ।

(१६) जटा बन्धन- जटा बन्धन जाप (पृष्ठ संख्या १८४) से पढ़कर वेदी पर भस्म या अक्षदा छोड़े ।

(१७) वस्त्र भगवा मन्त्र (पृष्ठ संख्या १८५) से पढ़कर वेदी पर भगवा वस्त्र छोड़े ।

(१८) (कुण्डल) दर्शन मन्त्र (पृष्ठ संख्या १८६) से पढ़कर वेदी पर नाथ सिद्ध तथा योगिनी को कुण्डल जोड़ी चढ़ाये ।

(१९) नाद जनेऊ पहनने का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १८७) से पढ़कर वेदी पर ऊन का नाद जनेऊ नाथ सिद्ध तथा योगिनी को चढ़ाये ।

(२०) रुद्राक्ष मन्त्र (पृष्ठ संख्या १९०) से पढ़कर वेदी पर १ मुख से २१ मुख के रुद्राक्ष दाने या १०८ की माला अर्पण करे ।

(२१) तिलक मन्त्र (पृष्ठ संख्या १९१) से पढ़कर केशर चन्दन या अष्ट गंध वेदी पर छिड़काये।

(२२) बिल्व चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १९३) से पढ़कर वेदी के ऊपर बिल्व पत्र या बिल्व माला चढ़ाये।

(२३) अक्षद चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १९४) से पढ़कर वेदी के ऊपर अक्षद चढ़ाये।

(२४) पुष्प चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १९५) से पढ़कर वेदी के ऊपर पुष्प या पुष्प माला चढ़ाये।

(२५) अत्तर चढ़ाने का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १९६) से पढ़कर वेदी के ऊपर अत्तर स्पर्श करे।

(२६) धूप वासना का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १९८) से पढ़कर वेदी को धूप या गुग्गल से सेके या आरती उतारें।

(२७) ज्योत जगाने का मन्त्र (पृष्ठ संख्या १९९) से पढ़कर वेदी के ऊपर गौघृत दीपक से आरती उतारें।

(२८) रोट गोदी देने का मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०३) से पढ़कर तथा रोट काटने का (मुक्ता) मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०४) से पढ़कर वेदी को भोग लगावे या अन्य पदार्थ का भी भोग लगावे।

(२९) ताम्बुल मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०४) से पढ़कर पान सुपारी लवंग इलायची इत्यादि ताम्बुल वेदी के ऊपर छोड़े।

(३०) छत्रचँवर मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०५) से पढ़कर यज्ञ वेदी के ऊपर छत्र धरे तथा चँवर घुमावे।

(३१) झोली मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०५) से पढ़कर झोली अर्पण करे।

(३२) खप्पर मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०६) से पढ़कर चिमटा मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०७) से त्रिशूल मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०७) से पढ़कर डमरु मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०८) से पढ़कर कमण्डल मन्त्र (पृष्ठ संख्या २०८) से पढ़कर वेदी के ऊपर अर्पण करे।

(३३) शंख गायत्री (पृष्ठ संख्या २०९) से पढ़कर दक्षिण मुखी शंख अर्पण करे।

(३४) भैरव दण्ड मन्त्र (पृष्ठ संख्या २१०) से पढ़कर तथा कड़ा (कंगन) मन्त्र (पृष्ठ संख्या २११) से पढ़कर तथा नागफनी मन्त्र (पृष्ठ संख्या २१२) से पढ़कर तथा तुम्बा मन्त्र (पृष्ठ संख्या २१३) से पढ़कर कुबड़ी (आधारी) मन्त्र (पृष्ठ संख्या २१३) से पढ़कर तथा भैरव मतंगा (मेखला) मन्त्र (पृष्ठ संख्या २१४) से पढ़कर वेदी के ऊपर नाथ सिद्धों को तथा नाथ योगिनीयों को अनुक्रम से, दण्ड, कड़ा नागफनी, तुम्बा, कुबड़ी, भैरव-मतंगा अर्पण करे ।

(३५) चरण पादुका (खड़ावा) मन्त्र (पृष्ठ संख्या २१५) से पढ़कर वेदी के नीचे भूमि पर खड़ावा अर्पण करे ।

(३६) कर्पूर मन्त्र (पृष्ठ संख्या २१५) से पढ़कर वेदी को कर्पूर जलाकर आरती करे ।

(३७) नाद पूजा तथा वंदना (पृष्ठ संख्या २१६) से पढ़कर वेदी सन्मुख आदेश करे ।

(३८) वेदी सन्मुख हाथ जोड़कर (पृष्ठ संख्या २१६) से स्तुति प्रार्थना जाप करे ।

इतना पंचोपचारे तथा षोडशोपचारे पूजन सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

मानपात्रासन (खप्पर)

अतः पुजारी (साधक) ने धूना के उत्तर दिशा में मानपात्रासन (खप्पर) के लिये छोटी चौकी का निर्माण करे । चौकी के ऊपर सवा मीटर भगवा (लाल) नया वस्त्र या तीन कुश या अक्षदा रखे और उसके ऊपर मानपात्र रुप में खप्पर रखे, यहां मानपात्र सोने का, चांदी, ताँबा, मृतीका पंच धातु इत्यादि भी रख सकते हैं । परन्तु खप्पर नाथ सिद्धों की मान्यता तथा उचित है ।

अतः साधक खप्पर में (चावल) तथा अक्षदा से भरकर रखे तथा उसमें दक्षणा रुपये पैसे अथवा महादक्षणा रुप में सोना, चांदी तांबे, अष्ठ धातु इत्यादि भी रख सकते हैं । पत्तल से खप्पर पात्र ढक देवे । तदन्तर निम्न मन्त्र पढ़कर दोनों हाथों से खप्पर पात्र स्थापन करे ।

खप्पर पात्र का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या १६१ पर देखें)

यह मानपात्र तथा महादक्षणा बारह पंथों के पीरजीओं का (आमंत्रित किये गये) मान-दान होता है। पूजन-हवन विधि होने के पश्चात बारह पंथों के पीरजी महंतों को वह बांटना पड़ता है। यहां बारह मान पात्र भी रख सकते हैं। जहां सतनाथी पीर जी को सुवर्ण, अक्षदा तथा वस्त्र (भगवे) का दान होता है तथा पीर जी को चांदी अक्षदा तथा (भगवे) का दान होता है। अगर किसी कारण वश बारह पंथ के पीर जी नहीं आये तो वह मान पात्र दान-अपने सद्‌गुरु जी को अर्पण करे। अगर सद्‌गुरु जी भी नहीं हो तो धूना हवन उद्देश्य से गुरु गोरक्षनाथ मंदिर में गुरु गोरक्षनाथ जी को वह दान अर्पण करे।

दीप ज्योति आसन

मानपात्र खप्पर विधि के पश्चात साधक (पुजारी) ने ज्योत माई की स्थापना, धूना के पूर्व-ईशान्य दिशा के मध्य में करे। जहां बनी हुई चौकी के ऊपर अक्षदा तथा पांच कुशा रखे और दीपक, ताँबे का या मृतीका का (लोहा निषिद्ध है) स्थापन करे [गौघृत (सार) बत्ती मन्त्र गोरक्ष षोडोपचार पूजन प्रथम खण्ड में दिये है) निम्न मन्त्र द्वारा महामाया ज्योत चेतन करे।]

महामाया ज्योत मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या १७१ पर देखें)

दीप चेतन के पश्चात दीप नमस्कार करें। (दीपक यह धूना कर्म विधि के प्रति एक साक्षभूत शक्ति होती है।)

अतः पुजारी (साधक) ने रुद्र कलश स्थापना करे।

***

रुद्र कलश स्थापना

प्रथम साधक योगेश्वर धूना के ईशान्य कोन में धरत्री पर निम्न मन्त्र से जल छिड़के और छोटी चौकी रखकर रुद्र कलश निम्न मन्त्र विधि से स्थापना करे।

धर्ती पर जल छिड़कने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेशं ॐ गुरुजी। श्री विष्णु जी ने धरत्री पर जल छिड़काया ब्रह्माजी कूण्डा बिठाया। सुनो गोरख बाला का ध्यान। जिन्हा ने पाया सतगुरु से बाला ज्ञान, जले बाला, थले बाला, रुखे बाला वृक्ष बाला तपे बाला गढ़—मण्डल में धर्मशाला। पांच महेश्वर गुरु गोरक्षनाथ बाला। कलयुग मध्ये हनुमंत बुलाया। बायें हाथ पुस्तक दाहिने हाथ माला। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: निम्न मन्त्र से गौ गोबर से लेपन करें। फर्श हो तो गंगा जल छिड़के।

लेपन मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ९४ पर देखें)

अत: गौ गोबर का चौका भरे।

चौका देने का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ९४ पर देखें)

यह चौका कोई सप्त धान्य से भरता (पूरता) है। तो कोई मृतिका, तो कोई केवल गंगाजल से यह चौका पूरते हैं। यहां धूना के प्रति मृतिका की चौका भरे।

अत: मृतिका—गोशाला—चौराह—नदि का संगम—राजद्वार—दीमक (गुफा) तथा भूमि—मंदिर सात जगह की मृतिका मिला के चौका पूर्ण करें।

चौका पूरणे का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। जब ना धर्ती थी, तब काहे का पाट, जब न थी, सकल गत तब काहे का ठाठ? जब न थी रुप ना रेखा, तब काहे की पादुका? जब न थे चांद न थे सूरज—तब काहे की साख?

जब न था अलील—तब काहे की पायल? जब न था अन्न, तब काहे की कौली? कौन सा थावट, कौन सा बीज, कौन शबद से बांधी धीर, कौन—कामिनी कलश ले आई? कौन पुरुष ने जुमला जगाया, कौन शब्द से थांवर बनाये, कौन शबद से अंग लगाये?

कहे गोरक्ष जती सुनो सकल गती, पाणी गया कौन से गती—काहे का गोबर काहे का पानी, चौक पूरिया कौन सी रानी?

जब न थी धर्ती—तब सूर्य का था पाट। जब न थी सकल गती—तब पांच तत का था ठाठ। जब न थी रुप ना रेखा—तब थी सांस की पादुका। जब न थे चांद न थे सूर्य—तब थी धर्म की साख। जब न था अलील—तब थी अभी की पायल। जब न था अन्न तब दुछा की कौली, बस्ता—बस्तावर बाढ़चा बीज—अनहद शबद से बांधी धीर। सुरत सुवासिन कलश ले आई, अलख पुरुष ने जुमला जगाया, गुरु शब्द से थावर बनाये—गुरु शब्द से अंग लगावे। कहे गोरक्ष जती सुनो सकल गती—पाणी गया परलोक गती—गाय का गोबर पाणी चौक पूरिया कमला पटरानी, पूरिया चौक मोली बधाई—रक्षा करे आदि शक्ति महामाई। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: साधक पात्र (कलश) स्थापित करे, कलश के ऊपर अष्टगंध + अक्षदा या गंध अक्षदा से ॐ तथा स्वास्तिक बनावे तथा कलश—सुवर्ण—ताँबे—चाँदी इत्यादि धातु का हो या तो मृतिका का घट उस चौकी के बीचोंबीच स्थापना करे और निम्न मन्त्र पढ़े।

पात्र आसन मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ९५ पर देखे)

अत: कलश में गंगाजल या गोदावरी नदि का जल या संगम तथा समुद्र का जल निम्न मन्त्र से भर देवें।

जल पूरणे का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ९५ पर देखें)

अत: कलश के ऊपर पंच पल्लव (आम के, वटवृक्ष के, पीपल के या खाने के पान) चढ़ावे पांचों पन्नों पर गंध अक्षदा लगावे तथा निम्न मन्त्र पढ़कर पंच पल्लव कलश के ऊपर रखें।

पंचपल्लव चढ़ाने का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या २० पर देखें)

अत: श्री फल (पानी वाला गीला) नारियल फल निम्न मन्त्र से चढ़ावे ।

श्री फल चढ़ाने का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या २० पर देखें)

अत: निम्न मन्त्र से कलश स्थापना करे तथा कलश के स्पर्श करे ।

कलश स्थापने का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या २० पर देखें)

अत: निम्न शिव गायत्री मन्त्र से शिवरुद्र रुप कलश पर बिल्वपत्र या रुद्राक्ष (एकमुख) चढ़ावे या ग्यारह रुद्राक्ष की (१०८ दानों की) मालायें रुद्रमाला शिव गायत्री का जाप करके उन मालाओं को कलश पर चढ़ाये या ११ रुद्राक्ष दाने चढ़ावे ।

शिव (रुद्र) गायत्री

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । अलख निरंजन निराकर अविगत पुरुष तत्वसार, तत्वसार मध्ये जोत-ज्योत मध्ये परम ज्योति-परम ज्योति मध्ये उत्पन्न भई शिव रुद्र गायत्री, विशूनी विश्वमूर्ति पाताले ग्रहणी, चतुर्थे वेदी मुखे, दहिनी नासिका गंगा जमना सरस्वती त्रिकुटी देवता देखे चन्द्रमा, आद ललाट नक्षत्र पुष्पमाला अठारह भार वनस्पति, सेली सिंगी मीन मेखला धारी हृदय तैंतीस करोड़ देवता कुक्षौ सप्त सागरा रोमावलिते चार खाणी चार बाणी चंद सूर्य पवन पाणी-धर्ती आकाश पंचतत्व पिण्ड प्राण ले किया प्रकाश ? शून्य निरालम्ब दिया निवास जती निरालम्ब जी के चरण कमल को नमस्कार नमाहम । लक्ष चौरासी जिया जून यह मन्त्र, घोर मन्त्र, क्षीर मन्त्र, बीज मन्त्र अभय जाप जपन्ते, अगम जाप जपन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला । शिव गोरक्ष नमो नम: । प्रात: काल ले उत्पन्न माता शम्भु शिव गायत्री जटाजूट मुकुट त्रिशूल धारिणी नादमुद्रा विभूति धारिणी रक्त वर्ण वृषभ वाहिनी रुद्र देवता पोषणी ऋद्धि सिद्धि वरदायिनी सो योगी मोक्षमुक्त फल दायकम् शिवोम रुद्रा नमो नम: ।

मध्यकाल उत्पन्न भई माता शम्भु शिव गायत्री दण्ड कमण्डल पुस्तक कर धारिणी श्वेत वर्णी हंस वाहिनी ब्रह्म देवता को पोषणी ऋद्धि सिद्धि वरदायिनी। सो योगी नाम मोक्ष मुक्त फलदायकम् शिवोम् रुद्रा नमो नमः।

संध्या काल उत्पन्न भई माता शम्भु शिव गायत्री। शंख-चक्र-पदम-धारिणी, श्याम वर्णी, गरुड़ वाहिनी विष्णु देवता को पोषणी ऋद्धि सिद्धि वरदायिनी सो योगी नाम मोक्ष मुक्त फल दायकम् शिवोम रुद्रा नमो नमः। इतना शिव रुद्र गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः कलश के ऊपर भगवा वस्त्र चढ़ाये।

भगवे का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या १८५ पर देखें)

अतः साधक ने गंध-अक्षदा-तिलक लगावे तथा निम्न मन्त्र पढ़े।

गन्ध-अक्षदा-मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ माटी का कुण्डा गंगा नीर, चन्दन (गंध) बनाये हनुमंत वीर। ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरे, गंध अक्षदा लाये गौरी-गणेश। चढ़े गंध चढ़े अक्षदा ज्योत जगाय महेश। देव देवत्या लागे ध्यान, ब्रह्मा जी कथे ब्रह्म ज्ञान। इतना गंध अक्षदा मंत्र सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः साधक ने प्राण गायत्री मन्त्र पढ़कर कलश के ऊपर गंगा जल छोड़कर प्राण प्रतिष्ठा करे।

प्राण गायत्री मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या ४० पर देखें)

अतः साधक ने कलश की सामुपचारे, पंचोपचारे या षोडशोपचारे पूजन, नमन करे।

कलश देवता को नमन

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या २१ पर देखें)

इति रुद्र कलश स्थापन पूजन समाप्त।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश।

तदपश्चात साधक योगेश्वर ने धूनी के दक्षिण भाग में वेदी पर सत्यनाथ ब्रह्मा जी के लिये छोटी चौकी (कुशा का) आसन बनावे और निम्न मन्त्र से ब्रह्मा जी को आवाहन तथा आसन ग्रहण करने के लिये बिनती करे।

ब्रह्मासन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सत्यनाथ ब्रह्माजी पुष्कर तीर्थ पर बैठकर स्थापना थाप लो। पाताल भुवनेश्वर पर बैठकर पूजा पाठ हवन करा लो। ४ वेद, १४ शास्त्र, ७ वार, २७ नक्षत्र, १८ पुराण, ९ व्याकरण, १२ राशि, १६ कला संध्या तर्पण गंगा गीता गायत्री सूर्य, गायत्री मन्त्र २४ गायत्री मन्त्र होम जाप, सूतक पातके १६ श्रृंगार एता षटकर्म के स्वामी कहालो। ८८ हजार ऋषियों के राजगुरु कहालो। धूनी-पानी ज्योत पाट ले पूजा पाती ब्रह्मा-कमल तले बिछाय, आसन मार अलख निर्वाण ब्रह्मासन बैठे ब्रह्मनाथ मुख बरसे ब्रह्मज्ञान। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

यह कहकर चौकी पर अक्षत छोड़े तथा यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में एक कुशासन या (मृग व्याघ्र) चर्मासन बिछावे और सतनाथ पंथ के पीर जी (दर्शनी योगेश्वर) आमंत्रित करे तथा आसन पर पूजा-हवन के लिये बिठावे और जल से भरा कमण्डल समीप रखे।

अत: यज्ञकुण्ड को तीन प्रदक्षणा करे और नाथों के बाकी ११ पंथ के लिये अग्नि के अग्नेय दक्षिण नैऋत्य पश्चिम-वायव्य दिशाओं में वेदी पर छोटी छोटी चौकी (कुशाओं के) आसन लगावे और निम्न मन्त्र पाठ से आमंत्रित स्थापन करे।

बारह पंथ आवाहन पाठ

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ बारह पंथ योगी अवधू अवधूता, योग युगति योगी जिन्दा जोगीन्दा सत्यनाथ ब्रह्मा जी शिव का योगी, भुवनेश्वर में थापना थापी। राम के पंथ का परशुराम के योगी।

नेपाला नोहर में थापना थापी। पागल पंथ चौरंगीनाथ रमते राम गंगा नीर, अस्थल बोहर में थापना थापी। पाव पंथ जालंधर जोगी, गढ़ जालोर

में थापना थापी। धर्मनाथ पंथ धर्म राजा का, सिर स्थान गोरखपुर में थापना थापी। टाई या पीठ स्थान में पंथ मन्नाथी शक वंश महाराज, गोरख शिष्य भये मतीमानी। सिद्ध कपिल का पंथ कपलानी शिरमथ्या टेक भये गोरख वंशी। हर–हर गंगे भगीरथ जोगी गंगासागर पीठ है गंगनाथी। गोरख टिल्ला गोरखजोगी, नटेश्वरी लक्ष्मण के योगी। थापना पीठ स्थान। विमला के आई पंथी योगी आदि माईनाथ सिद्धों की शक्ति, बंगदेश थापना थापी। भर्तृहरी बैराग पंथ के जोगी, राताडुंडा में थापना थापी मूल स्थान। बाप्पा रावल की रावलपंथ प्रणाली, उनकी बारदरबारी थापना थापी। गोरक्ष दत्ता दीक्षा सेती। औघड़ पंथ सही–सही कर जानी। बारहाट्ठारह के जोगी हटयोगी। शिव गोरख, शिव गोरख मिल थापना थापी। खडदर्शन ज्योत में ज्योत मिलाई। सत–सत भाषी गुरु गोरख कहाई। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

यह पाठ पढ़कर धूना वेदी पर अक्षद–अष्टगंध से पूजन करे। अतः इसी दिशा में पुजारी (साधक) और ब्रह्मासन के पीछे सभी पंथ (सतनाथ छोड़के) ११ पंथों के पीर जी महंतों के आसन (मृग, व्याघ्र) या कुशासन या भगवे वस्त्र के ११ आसन बिछाकर, आमंत्रित किये हुये सभी मानधारी को क्रमशः (१) सतनाथ (२) रामके (३) पागल (४) पाव (५) धर्मनाथी (६) मन्नाथी (७) कपलानी (८) गंगनाथी (९) नटेश्वरी (१०) आई (११) भर्तृहरि बैराग पंथी (१२) रावल पूजा हवन हेतु आसन ग्रहण करने की बिनती करे तथा औघड़, भक्त सेवकों के लिये सामूहिक आसन पीछे डाल देना। अतः सभी पंथ योगेश्वरों के सन्मुख क्रमशः समीधा हवन सामग्री, घी गौघृत, अक्षदा, खीर, दूध दही, तिल, बेलपत्री, कमल कट्टा इत्यादि हवनीय सामग्री रखे।

हवन नियम

हवन की दिशा	हवन की फल प्राप्ति
(१) उत्तर दिशा में हवन	शान्ति प्राप्ति
पश्चिम " "	धन समृद्धि प्राप्ति
दक्षिण " "	अभिचारक कर्म
पूर्व " "	वशीकरण कर्म

(२) अत: हवन सामग्री से प्राप्त फल

(१) शान्ति—प्राप्ति के लिये—गौघृत—दूध—तिल और गुलर पीपल की लकड़ी—अमरवेल—खीर

(२) पुष्टिकर्म—घी (गौघृत)—बेलपत्र—चमेली के फूल

(३) धन प्राप्ति और समृद्धि—कमल कट्टा, दही, घृतयुक्त अन्न

(४) समृद्धि प्राप्ति के लिये—गौघृत, बिल्वपत्र और तिल

(५) आकर्षण शक्ति के लिये—चिरौंजी, बिल्वपत्र

(६) सन्तती प्राप्ति के लिये—खीर

(७) वशीकरण के लिये—राई और लवंग

(८) मोहनी के लिये—धतूरे के बीज

(९) उच्चाटन के लिये—कौए के पंख

(१०) मारण के लिये—रुधिर तथा बिष (जहर)

(३) अत: हवन करने की विशिष्ट प्रकार की तीन प्रकार की मुद्रा होती है। बिना मुद्रा हवन करना निषिद्ध है (१) शुकरी (२) हंसी मुद्रा (३) मृगी मुद्रा।

(१) शुकरी मुद्रा—इस मुद्रा में दोनों हाथों को सिकोड़कर आहुति (हवन) डाली जाती है।

(२) हंसी मुद्रा—इस मुद्रा में कनिष्टिका को छोड़कर दोनों हाथ से आहुति (हवन) डाली जाती है।

(३) मृगी मुद्रा—इस मुद्रा में दोनों हाथ के कनिष्ठा तथा तर्जनियों को छोड़कर आहुति डाली जाती है।

(४) धूनी में हवन (आहुति) केवल दिन में (सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त) तक करे रात्री में हवन करना निषिद्ध है। रात्रि में जप—ध्यान कर सकते हैं।

(५) आहुति साधू संत स्त्री पुरुष सभी कर सकते हैं।

(६) सिद्धों के धूनी में बलि (प्राणी मात्र) देना निषिद्ध है। बलि फल स्वरुप लौकी (नारियल गीला) सुपारी अक्षदा इत्यादि रुप में दे सकते हैं।

(७) धूनी कुण्ड की सम्पूर्ण सुरक्षा अनिवार्य है।

(८) धूनी कुण्ड हवन, सुर्चिभूत, भक्ति श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक शान्ति से होना चाहिये।

(९) आमन्त्रित सभी मानधारी पीर जी, इ० भक्त मण्डलों को मान—मान्यता दान, भोजन भण्डारा इ० यथा योग्य सत् कर्म करें।

(१) होमादी में अग्नि वास जानना—जिस दिन धूनी हवन करना हो उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर उसमें १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) बचे अथवा ३ बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी में होगा इस दिन अग्नि हवन करना कल्याणकारक है।

(२) यदि शेष २ बचे तो अग्नि का वास पाताल में होता है। इस दिन हवन करने से नुकसान होता है।

(३) यदि ४ से भाग देने से ९ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होता है। इस दिन हवन करने से आयु का नाश होता है।

(४) वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रति प्रदा से करें। तदन्तर ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिये।

(५) ग्रहों के मुख में आहुति (हवन) देना सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम संख्या आये तो हवन (आहुति) सूर्य के मुख में जाने। ३ से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या मिले तो बुध ग्रह मुख में हवन जाने। इसी प्रकार निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों की (हवन) आहुतियां जाने।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

(५) या धरती गायत्री मंत्र पृ० सं० ४५ के द्वारा पूजनकर यज्ञ के लिये जगह मांगकर प्रार्थना करें।

(६) नवग्रह की हवनीय सामग्री—

दही—क्षीर—घृत इ० युक्त हवनीय सामग्री

(साकल्य) सूर्य आदि मंत्र के साथ सम्बद्ध ग्रहों के मन्त्र के अन्त में आठ—आठ आहुतियाँ (हवन) देवें। साकल्य हवनीय सामग्री तिल, जौ, चावल, शक्कर के मिश्रण भी चाहिये।

ग्रहानुसार काष्ट (समिधा)

सूर्य-आक (अर्क), चन्द्रमा-पलाश, मंगल-खदिर, बुध-अपामार्ग, गुरु-पिप्पल, शुक्र-अवदुम्बर (गुलर), शनि के लिये शमी, राहु के लिये दुर्वा तथा केतु के लिये-कुशा द्वारा हवन करना शुभ फल-कल्याणकारी है। अगर किसी कारणवश यह ग्रहानुरुप समिधा ना मिले तो केवल पलाश काष्ट (समिधा से) हवन का काम चला लेवे।

(७) जंत्री (पंचाग) किसी जानकार व्यक्ति से मुहुर्त वा दिन तथा हवन ग्रह ठहराकर धूनी पूजा हवन करे।

(८) अगर यह जंत्री-मुहुर्त-ग्रह मुख हवन किसी कारणवश नहीं प्राप्त हुआ तो अपने गुरु जी के प्रति पूजन में एक कलश स्थापना करे और पूजा-पाठ हवनीय सम्पूर्ण कार्य उन्हीं के मार्गदर्शन से हो रहा है। यह उन्हें प्रार्थना करे-आदेश करे तथा प्रत्यक्ष गुरु जी हाजिर होवे तो उन्हें पूछ कर करे।

(९) या पूजन-हवन जिस दिन से करे उस दिन के ग्रह को प्रथम हवन करे।

अत: साधक ने उत्तरामुख खड़े होकर हाथ में घी मिश्रित समीधा (तीन) लेकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी का स्मरण करके निम्न मन्त्र द्वारा एक एक करके तीनों समिधा को अग्नि में छोड़े।

प्रथम समिधा- ॐ ह्रीं श्रीं गों हुँ फट् स्वाहा कहकर अग्नि में छोड़े।

दूसरी समिधा- ॐ ह्रिं श्रीं गों गोरक्ष हुँ फट् स्वाहा यह कहकर अग्नि में छोड़े।

तीसरी समिधा- ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निरंजनात्मने हुँ फट् स्वाहा। यह कहकर अग्नि में छोड़े।

अब दाहिने हाथ में जल लेकर ॐ जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही धियो ना तन्नो अलील प्रचोदयात। यह कहकर जल अग्नि के ईशान्य दिशा में छोड़े। अत: पीर जी (सतनाथ पंथ) द्वारा अग्नि के निम्न दिशा देवताओं को घी की आहुति करे।

प्रथम अग्नि के उत्तर भाग में—

(१) ॐ प्रजापतिनाथ जी नमो आदेश।

ॐ प्रजापतिनाथ जी नमो स्वाहा

अग्नि के दक्षिण भाग में—

(२) ॐ इन्द्रदेवता नमो आदेश।

ॐ इन्द्रदेवता नमो स्वाहा

अत: अग्नि के प्रज्वलित अग्नि में

(३) ॐ ज्योति ज्वालाम्बा माई अग्निय नमो आदेश।

ॐ ज्योति ज्वालाम्बा माई अग्निय नमो स्वाहा।

(४) ॐ सोमनाथाय नमो आदेश।

ॐ सोमनाथ जी नमो स्वाहा।

तदपश्चात साधक योगेश्वर ने दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र जाप से संकल्प करके जल भूमि पर छोड़ देवे।

संकल्प मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ प्रथम निरंजन निराकार, गोरख स्वरुप जय ॐकार। वेद पठन्ते करे ब्रह्माजी, धूप-दीप ले गौरजा माई। विष्णु जी लाये समिधा लकड़ी, कुबेर जी लाये ऋद्धि सिद्धि। सब साध सन्तों बोल बुलाई, ठोर-ठोर आसन बिठाई। गद्दी बैठे बारह पंथ के बारह पीर, अलख जाप निर्भय जोगी। नौ नाथ सिद्ध चौरासी, बीच में ज्वाला आन समाई। अलख पुरुष ने धूनी चेताई। भये प्रकाशा प्रचण्ड धूनी। गुग्गल घृत धूनी पानी, अनपूर्णा रोट का भोग लगाई। आओ सिद्धों चेतो सिद्धों, पलटी भभूत धूनी चताई। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी तेरी दुहाई।

इतना संकल्प जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: साधक योगेश्वर ने निम्न "प्रचण्ड धूनी जाप" पढ़कर धूनी अग्नि के पूर्व दिशा में ५ समिधा लकड़ी, घी मिश्रित छोड़े तथा पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशाओं में क्रमश: ५ समिधा घी मिश्रित लकड़ी छोड़े। "प्रचण्ड धूनी जाप" पढ़ने के बाद २१ समीधा घी मिश्रित लकड़ी अग्नि के मध्य में हवन करे।

प्रचण्ड धूनी जाप

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ संख्या १५८ पर देखें)

अत: साधक योगेश्वर तथा सभी पीर महन्त जी निम्न प्रकार हवन करें।

सूचना– प्रत्येक मन्त्र के प्रति एक बार हवन (स्वाहा) करना आवश्यक है। मुख्यत: हवन घी और हवन सामग्री द्वारा करें। पर्याय हवन संख्या तथा हवन सामग्री साधक के इच्छानुरुप हवन (बढ़ाकर) कर सकते हैं।

*****

हवन

प्रथम हवन गौघृत–कमल कट्ट या दही या खीर या दूध से करें। मुद्रा–हंसी, दिशा–उत्तर, संख्या ९ बार या १०८ बार।

(१) ॐ भूर्भुव: स्वाहा वक्रतुण्डाय विद्महे एक दंताय धीमहि तन्नो गणेश जी प्रचोदयात श्री गणेश जी नमो स्वाहा।

(२) ॐ भूर्भुव: स्वाहा गौरी गौरजा विद्महे अम्बिकाय धीमहि तन्नो रुद्रप्रिय: प्रचोदयात।

श्री गौरी गौरजा नम: स्वाहा।

अब हवन–गौघृत या दूध से करे। दिशा–उत्तर, मुद्रा–हंसी, संख्या ९ या १०८ बार।

(३) ॐ सों आदि अनन्त निरंजन निराकर अलख पुरुष नमो स्वाहा।

(४) ॐ माता क्वारी पिता यती, जल बिम्ब की काया। सुभय धाम कमल में विश्राम असंख्य युगे अलील पुरुष नम: स्वाहा।

(५) ॐ नीली पीली सिर जटा, डमरू त्रिशूल गल भुजंगा। अंग भभूत नाद मुद्रा, नीलकंठ वृषभ वाहना। ऋद्धि सिद्धि, रुद्र देवता ॐ सों पुरुषोत्तम विद्महे महादेवाय धीमहि ईश्वर प्रचोदयात। ॐकार आदिनाथ जी नम: स्वाहा।

(६) ॐ नारायण विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णु जी प्रचोदयात। शंख चक्र गदा–पद्म, श्याम सुन्दर गरुड़ वाहन। ऋद्धि सिद्धि मोक्षदायक चर्तुभुज विष्णु देवता नम: स्वाहा।

(७) ॐ चर्तुमुखाय विद्महे हंसरुढाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात। दण्ड कमण्डल पुस्तक धारण श्वेत वर्ण ऋद्धि सिद्धि वरदायक, ब्रह्मदेवता नमः स्वाहा।

(८) ॐ सूरज विद्महे महा कालाय धीमहि तन्नो यमः प्रचोदयात। सत का धर्म महाबाहु महा वीर्य कालरुपी यम देवता को नमः स्वाहा।

(९) ॐ काल सों काल—काल महाकाल हम को रख दुष्ट को भख, अनभय काल निर्भय कालाय नमः स्वाहा।

शक्ति हवन

हवन सामग्री— गौघृत या खीर या दूध या तिल या गुलर पीपल की लकड़ी, अमर बेल इत्यादि।

हवन दिशा— उत्तर या पश्चिम, मुद्रा—शुकरी

हवन संख्या— ३ या ११ या १०८ बार

(१०) ॐ देवी शिवा—शिवानी गौरा शक्ति गणेश जननी आद्य शक्ति, उदयनाथ पार्वती जी नमः स्वाहा।

(११) ॐ महालक्ष्मै विद्महे महाश्रियै च धीमहि तन्नो श्री प्रचोदयात। ॐ महालक्ष्मी नमः स्वाहा।

(१२) ॐ महा सरस्वती विद्महे ब्रह्मपुत्रे धीमहि तन्नो वान्गदेवी महासरस्वती नमः स्वाहा।

(१३) ॐ कालीकाये विद्महे श्मशान वासिन्नै धीमहि तन्नो घोरा प्रचोदयात। ॐ महाकालीय नमः स्वाहा।

अतः नाथ सिद्ध योगिनी हवन

हवन सामग्री—गौ—घृत या खीर या दूध या तिल तथा गुलर पीपल की लकड़ी या अमर बेल या गेन्दा फूल के पत्ते।

दिशा—पूर्व या उत्तर संख्या— ५ बार या १०८ बार, मुद्रा—हंसी

(१४) ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो बुद्धि (ऋद्धि सिद्धि) प्रचोदयात। ॐ गजबेली गजकंथड़नाथ जी नमः स्वाहा।

(३७) ३ॐ कात्यायनी विद्महे तेज स्वरुपाय धीमहि तन्नो कात्यायन शक्ति प्रचोदयात। ३ॐ कात्यायनी देवी नमः स्वाहा।

(३८) ३ॐ कालरात्रि विद्महे काल स्वरुपाय धीमहि तन्नो संहार शक्ति प्रचोदयात। ३ॐ कालरात्रि देवी नमः स्वाहा।

(३९) ३ॐ महागौरी विद्महे अग्नि स्वरुपाय धीमहि तन्नो ब्रह्म शक्ति प्रचोदयात। ३ॐ महागौरी देवी नमः स्वाहा।

(४०) ३ॐ सिद्धिदात्री विद्महे गणेश स्वरुपाय धीमहि तन्नो अष्ठ सिद्धि शक्ति प्रचोदयात। ३ॐ सिद्धिदात्री देवी नमः स्वाहा।

इति नव दुर्गा हवन सम्पूर्ण भया।

दस महाविद्या हवन

दस महाविद्या के लिये शुकरी मुद्रा से हवन करे।

१. महाकाली

हवन सामग्री– गौघृत तथा सुगन्धित पुष्प

दिशा–दक्षिण, संख्या –११ बार या १०८ बार

(४१) मन्त्र– क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूं ह्रीं ह्री दक्षिणे कालिके हूँ हूं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।

२. तारा (त्रिकुटा)

हवन सामग्री–पलाश पुष्प या लाल कमल, दूध घी मिश्रण या गौघृत

दिशा–उत्तर, मुद्रा–शुकरी

संख्या–११ बार या १०८ बार या २० हजार–पलाश पुष्प–११ बार या ४० हजार–लाल पुष्प कमल + दूध + घी

(४२) मन्त्र– ३ॐ ह्रिं स्त्रीं फट् स्वाहा

३. त्रिपुरा सुन्दरी (षोडशी)

हवन समाग्री– गौ घी–खीर

दिशा–उत्तर, मुद्रा–शुकरी, संख्या–११ बार या १०८ बार या २० हजार बार

(४३) मन्त्र– श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ओं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रिं हंस कहल ह्रिं सकल ह्रीं सों ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा।

४. भुवनेश्वरी

हवन सामग्री—गौघृत या चन्दन और सुवसिक पुष्प

दिशा—उत्तर, मुद्रा—शुकरी संख्या ११ या १०८ बार

(४४) मन्त्र—ह्रीं स्वाहा।

५. छिन्नमस्ता

हवन सामग्री— गौघृत या तैलोक्त लवंग या गीलाय टुकड़े

दिशा— दक्षिण, मुद्रा— शुकरी, संख्या—११ बार १०८ बार

(४५) मन्त्र— श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा।

६. भैरवी

हवन सामग्री— गौघृत या ढाक के फूल

दिशा— दक्षिण, मुद्रा— शुकरी संख्या— ११ बार या १०८ बार या १ हजार या १२ हजार आहुतियाँ।

(४६) मन्त्र—हस्त्रौं हस्तकलरों हस्त्रौं नमः स्वाहा।

७. धूमावती

हवन सामग्री— गौघृत शाकल्य या धतूरा पुष्प

दिशा— दक्षिण, मुद्रा— मृगी संख्या— ११ या १०८ बार

(४७) मन्त्र— धूं धूं धूमावती फट् स्वाहा।

८. बगला मुखी

हवन सामग्री— गौघृत या तण्डुली या राई, लवंग

दिशा— पूर्व, मुद्रा— मृगी

(४८) मन्त्र— ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्रायै विद्महे स्तम्भनवाणायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात। नमः स्वाहा।

९. मातंगी

हवन सामग्री— गौघृत या ढाक की समीधा या मधु पुष्प से अक्त—भोग प्राप्ति को—मल्लीका पुष्प राज्य प्राप्ति को— बिल्वपत्र, जलवसी को—ब्रह्म वृक्ष के पुष्प, रोगनाशक के लिये—गिलाय टुकड़े, शत्रुनाश को— निम्ब सैलोक्त लवंग, आकर्षण—तण्डुली और सर्व कामना प्राप्ति को— कदली फल

दिशा उत्तर में— गौघृत ढाक समिधा संख्या ११ बार ६०,००० बार
पश्चिम— मल्लीका पुष्प बिल्वपत्र— संख्या ११ बार ६०,००० बार
दक्षिण— गिलाय टुकड़े निम्ब, तैलोक्त लवंग संख्या ११ बार या ६०,००० बार

मुद्रा— शुकरी

(४९) मन्त्र— ओं ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।

१०. कमला

हवन सामग्री—गौघृत या मधु + शर्करा मिश्रण और कमल पुष्प, तिल
दिशा— उत्तर, मुद्रा—शुकरी संख्या— ११ बार १२ सहस्त्र

(५०) मन्त्र— ॐ ह्रिं क्ली कमला देवी फट् स्वाहा या ''श्री'' स्वाहा

इतना दस महाविद्या हवन सम्पूर्ण भया।

धर्ती माता हवन

अत: साधक (पुजारी) योगेश्वर और पीर जी महंत जी धरत्री माता का हवन करे।

हवन सामग्री— गौघृत या दूध या तिल या पायस (खीर) तथा समिधा—शमी—पलाश, आम—बड़—गुलर—पीपल, अमरबेल मदार, खैर, अपामार्ग, दुर्वा कमल फूल—राई।

दिशा—उत्तर, मुद्रा—शुकरी

हवन संख्या—९ या ११ बार या १०८ बार

धरत्री गायत्री द्वादश नाम

(५१) सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। जो समान धर्ती—तिल समान काया फाटक खोल माता तेरे में योगीश्वर आया। हिन्दू को जलाया, मुसलमान को दबाया तीसरा सिक्का श्री नाथ जी ने चलाया नम: स्वाहा।

(५२) सातवे पाताल एक निरंजन निराकार ज्योति स्वरुप उनकी चरण कमल पादुका पूजीये। जो चरण कमल पर जल—जल पर थल—थल पर मच्छ—मच्छ पर कच्छ—कच्छ पर कमल का फूल, कमल के फूल के ऊपर शेष नाग,

शेष नाग के ऊपर घौल बैल—घौल बैल के सींग के ऊपर राई का दाना, राई के दाने पर श्री नाथ जी ने नव खण्ड पृथ्वी ठहराई। नमः स्वाहा।

(५३) प्रथमे नाम धर्ती नमः स्वाहा।

(५४) द्वितीये नाम विश्वम्भरा नमः स्वाहा।

(५५) तृतीय नाम मेद—मेदिनी नमः स्वाहा।

(५६) चतुर्थ नाम मनसा नमः स्वाहा।

(५७) पांचवे नाम कृतिका नमः स्वाहा।

(५८) छठे नाम ब्रह्मचण्डी नमः स्वाहा।

(५९) सातवे नाम कन्याकुमारी नमः स्वाहा।

(६०) अष्टमे वज्रबाला भव योगिनी नमः स्वाहा।

(६१) नवमे नौ करोड़ दुर्गा नमः स्वाहा।

(६२) दशमे सिंह भवानी नमः स्वाहा।

(६३) ग्यारहवे चन्द्रघण्टा (मृतिका) नमः स्वाहा।

(६४) द्वादशे वरदायिनी नमः स्वाहा।

(६५) आदि सत्य, नाद सत्य, मुद्रा सत्य, सत्य धर्ती माई, धर्ती ध्यान सदा से लायी अरणी—अरणी सूरज—चन्द्र को धाई नमः स्वाहा।

(६६) धर्ती माता तू बड़ी तुमसे बड़ा न कोय जो धर्ती पर पग धरे तो कन्चन काया होय आदि की धर्ती अन्त की काया अमर हो धर्ती वज्र हो काया नमः स्वाहा।

(६७) धर्ती माता के पिण्ड प्राण सदा बालक स्वरुपी हो रहे काटया न काटये, जाल्या न जले डुबाया न डूबे ब्रह्म तेज हो रहे नमः स्वाहा।

(६८) धर्ती द्वादश पढ़न्ते सुनन्ते मोक्ष मुक्ति फल पावन्ते गर्भ योनि न आवन्ते, श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश। नमः स्वाहा।

नवग्रह हवन

सूर्य देवता का हवन— गौघृत—शाकल्य या मदार या आक लकड़ी
दिशा—पूर्व, मुद्रा—हंसी, संख्या—९ या १०८ बार

(६९) सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। सुन बा योग मुल कहे बारी बार। सतगुरु शब्द का सहज विचार ।। ॐ आदित्य खोजो

आवागमन घट में राखो दृढ़ करो मन।। पवन जो खोजो दसवें द्वार। तब गुण पावे आदित्य देवा।। आदित्य ग्रह जाति का क्षत्रिय। रक्त रंजीत कश्यप पंथ।। कलींग देश स्थापना थाप लो। लो पूजा करो सूर्य नारायण की।। सत फुरै सत वाचा फुरै श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै, भण्डार भरे ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम-मंगल शुक्र शनि।। बुध-गुरु राहु-केतु सुख करै, दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़ै।। ॐ सूर्य मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथ। ॐ सूर्याय नमो नमः स्वाहा।

सोमदेव हवन

हवन सामग्री- गौघृत तथा पलाश की लकड़ी

दिशा- पूर्व, मुद्रा-मृगी या हंसी, संख्या-९ बार या १०८ बार

(७०) ॐ गुरु जी, सोमदेव मन धरी बा शून्य। निर्मल काया पाप ना पुण्य।। शशी-हर बरसे अम्बर झरे। सोमदेव गुण येता करें। सोमदेव जाति का माली। शुक्ली वर्णी गोत्र अत्री।। ओं जमुना तीर स्थापना थाप लो। लो कन्हरे पुष्प शिव शंकर की पूजा करो।। सत फुरै सत वाचा फुरै श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै। भण्डार भरै। ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह १२ राशि, १५ तिथि। मंगल रवि शुक्र शनि। बुध गुरु राहु केतु सुख करै दुःख हरै खाली वाचा कभी ना पड़ै। ॐ सोम मन्त्र गायत्री जाप रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ ॐ चन्द्रमासे नमो नमः स्वाहा।

मंगलदेव हवन

हवन सामग्री- गौघृत तथा खैर की लकड़ी

दिशा- पूर्व, मुद्रा-मृगी या हंसी, संख्या-९ या १०८ बार

(७१) ॐ गुरु जी मंगल विषय माया छोड़े। जन्म-मरण संशय हरै।। चंद-सूर्य दो सम करै। जन्म मरण का काल। एता गुण पावो मंगल ग्रह।। मंगल ग्रह जाति का सोनी। रक्त रंजित गोत्र भरद्वाजी।। अवन्तिका क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा करो नवदुर्गा भवानी की।। सत फुरै सत वाचा फुरै श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर

ऋद्धि सिद्धि धरै, भण्डार भरै। ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि। बुध गुरु राहु केतु सुख करै दुःख हरै। खाली वाचा कभी न पड़ै। ॐ मंगल मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ।। ॐ भौमाय नमो नमः स्वाहा।

बुधग्रह हवन

हवन सामग्री–गौघृत तथा अपामार्ग की लकड़ी

दिशा–पूर्व, मुद्रा–मृगी या हंसी, संख्या–९ बार या १०८ बार

(७२) ॐ गुरु जी बुध ग्रह सत् गुरु जी दिनी बुद्धि। विवरो काया पावो सिद्धि।। शिव धीरज धरे। शक्ति उनमनी नीर चढ़े।। एता गुण बुध ग्रह करै। बुध ग्रह जाति का बनिया।। हरित हर गोत्र अत्रेय। मगधदेश स्थापना थापलो।। लो पूजा गणेश जी की करै। सत् फुरै सत् वाचा फुरै। श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै, भण्डार भरै। ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि मंगल गुरु राहु केतु सुख करै दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़ै। ॐ बुध मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ । ॐ बुधाय नमो नमः स्वाहा।

(गुरु) बृहस्पति हवन

हवन सामग्री–गौघृत तथा पीपल की लकड़ी

दिशा–पूर्व, मुद्रा–मृगी या हंसी, संख्या–९ बार या १०८ बार

(७३) ॐ गुरु जी, बृहस्पति विषयी मन जो धरो। पांचो इन्द्रिय निग्रह करो।। त्रिकुटी भई पवना द्वार। ऐता गुण बृहस्पति देव।। बृहस्पति जाति का ब्राह्मण। पित पीला अंगिरस गोत्र।। सिन्धु देश स्थापना थापलो। लो पूजा श्री लक्ष्मी नारायण की करो।। सत् फुरै सत् वाचा फुरै श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै। भण्डार भरै। ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि। मंगल बुध राहु केतु सुख करै दुःख हरै।। खाली वाचा कभी ना पड़ै। ॐ गुरु मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। ॐ गुरुवे नमो नमः स्वाहा।

शुक्रदेवता हवन

हवन सामग्री–गौघृत तथा गुलर की लकड़ी

दिशा–पूर्व, मुद्रा–मृगी या हंसी, संख्या–९ बार या १०८ बार

(७४) ॐ गुरुजी शुक्रदेव शोधे सकल शरीर। कहा बरसे अमृत कहा बरसे नीर।। नव नाडी बहात्तर कोटा पवन चढ़ै। एता गुण शुक्रदेव करै।। शुक्र जाति का सय्यद। शुक्ल वर्ण गोत्र भार्गव।। भोजकट देश स्थापना थापलो। लो पूजो हजरत पीर मुहम्मद कि करो।। सत् फुरै सत् वाचा फुरै श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै। भण्डार भरै। ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि मंगल शनि बुध गुरु राहु केतु। सुख करै दु:ख हरै।। खाली वाचा कभी ना पड़ै। ॐ शुक्र मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। ॐ शुक्राय नमो नमः स्वाहा।

शनिदेव हवन

हवन सामग्री– गौघृत तथा शमी की लकड़ी

दिशा– पूर्व, मुद्रा–मृगी या हंसी, संख्या– ९ या १०८ बार।

(७५) ॐ गुरु जी शनिदेव पांच तत देह का आसन स्थिर। साढ़े सात, बारा सोलह गिन गिन धरे धीर।। शशि हर के घर आवे भान। तौ दिन दिन शनिदेव गंगा स्नान।। शनिदेव जाति का तेली। कृष्ण कालीक कश्यप गोत्री।। सौराष्ट्र क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा हनुमान वीर की करो।। सत् फुरै सत् वाचा फुरै श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै, भण्डार भरै। ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम मंगल शुक्र रवि।। बुध गुरु राहु केतु। सुख करै दु:ख हरै।। खाली वाचा कभी ना पड़ै।। ॐ शनि मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। ॐ शनैश्चराय नमो नमः स्वाहा।

राहु ग्रह हवन

हवन सामग्री–गौघृत तथा पलाश की लकड़ी

दिशा–पूर्व, मुद्रा–मृगी या हंसी, संख्या–९ बार या १०८ बार।

(७६) ॐ गुरुजी राहु साधे अरध शरीर। वीर्य का बल बनाये वीर।। धुंये की काया निर्मल नीर। येता गुण का राहु वीर।। राहु जाति का शूद्र। कृष्ण

काला पैठीनस गौत्र।। राठीनापुर क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा काल भैरो की करो।। सत् फुरै सत् वाचा फुरै। श्री नाथजी के सिंहासन ऊपर पान फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै। भण्डार भरै, ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि। मंगल केतु बुध गुरु सुख करै दु:ख हरै।। खाली वाचा कभी न पड़ै। ॐ राहु मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करै श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। ॐ राहवे नमो नमः स्वाहा।

केतु ग्रह हवन

हवन सामग्री- गौघृत तथा पलाश की लकड़ी

दिशा- पूर्व, मुद्रा-मृगी या हंसी, संख्या-९ बार या १०८ बार

(७७) ॐ गुरु जी केतु ग्रह कृष्ण काया। खोजो मन विषय माया।। रवि चन्द्रा संग साधे। काल केतु याते पावे।। केतु जाति का असरु जेमिनी गोत्र काला नुर।। अन्तरवेद क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा रोद्र घोर की करो।। सत फुरै सत वाचा फुरै श्री नाथ जी के सिंहासन ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरै, भण्डार भरै।। ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, १२ राशि, १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि। मंगल बुध राहु गुरु सुख करै दु:ख हरै।। खाली वाचा कभी ना पड़ै। ॐ केतु-मन्त्र गायत्री जाप।। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। ॐ केतवे नमो नमः स्वाहा।

अतः साधक योगेश्वर तथा पंथ के पीर जी महन्त जी और आदि महात्मा अपने-अपने गुरु (पंच गुरु) महाराज के हवन करे प्रथम गुरु गोरक्षनाथ जी का हवन करे।

हवन सामग्री- गौघृत तथा कमल के फूल या वटवृक्ष की लकड़ी या पीपल की लकड़ी तथा बिल्वपत्र।

दिशा-उत्तर, मुद्रा-मृगी या शुकरी

संख्या-११ बार या २१ बार या १०८ बार

पंच-गुरु जी हवन

(७८) ॐ ह्रीं श्रीं गों- गोरक्षनाथाय विद्महे शून्य पुत्राय धीमहि तन्नो गोरक्ष निरंजनः प्रचोदयात।

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निरंजनात्मने हूं फट् स्वाहा।

(चोटी गुरु) हवन

(७९) ॐ गुरुजी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत्गुरु सत् है। कृपा सिन्धु ज्ञान, ॐ सों सत्गुरु योगी (श्री....) नाथ जी (अपने चोटी गुरु जी का नाम) नमस्कार नमः स्वाहा।

(चिरागुरु जी) हवन

(८०) ॐ गुरुजी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत्गुरु सत् है। कृपा सिन्धु ज्ञान, ॐ सों सत्गुरु योगी (श्री....) नाथ जी (अपने चिरा गुरु जी का नाम) नमस्कार नमः स्वाहा।

(उपदेशी गुरु जी) हवन

(८१) ॐ गुरुजी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत्गुरु सत् है। कृपा सिन्धु ज्ञान, ॐ सों सत्गुरु योगी (श्री.....) नाथ जी (अपने उपदेशी गुरु का नाम) नमस्कार नमः स्वाहा।

(भभूति गुरु जी) हवन

(८२) ॐ गुरुजी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत्गुरु सत् है। कृपा सिन्धु ज्ञान, ॐ सों सत्गुरु योगी (श्री.....) नाथ जी (अपने भभूति गुरु जी का नाम) नमस्कार नमः स्वाहा।

(लंगोटी या बाना गुरु जी) हवन

(८३) ॐ गुरुजी सत् का धर्म, सत् का कर्म, सत्गुरु सत् है। कृपा सिन्धु ज्ञान, ॐ सों सत्गुरु जी योगी (श्री....) नाथ जी (अपने लंगोटी या बाना गुरु जी का नाम) नमस्कार नमः स्वाहा।

तद्पश्चात साधक योगेश्वर पंथ पीर जी महंत जी और सब महात्माओं ने नवनाथ सिद्धों का हवन करें।

हवन—गौघृत तथा बिल्वपत्र या बड़ तथा पीपल की लकड़ी

दिशा—उत्तर, मुद्रा—शुकरी, संख्या—९ बार या १०८ बार

नवनाथ सिद्ध हवन

(८४) ॐ ओंकार आदिनाथ ॐकार स्वरुप को नमो आदेश। ॐकार आदिनाथ जी नमः स्वाहा।

(८५) ॐ उदयनाथ पार्वती धरत्री स्वरुप को नमो आदेश। उदयनाथ पार्वती जी नमः स्वाहा।

(८६) ॐ सत्यनाथ ब्रह्माजी जल स्वरुप को नमो आदेश। सत्यनाथ ब्रह्माजी नमः स्वाहा।

(८७) ॐ सन्तोषनाथ विष्णु जी खण्ड खाण्ड तेज स्वरुप को नमो आदेश। सन्तोषनाथ विष्णु जी नमः स्वाहा।

(८८) ॐ अचल अचम्बेनाथ आकाश स्वरुप को नमो आदेश। अचल अचम्बेनाथ जी नमः स्वाहा।

(८९) ॐ गजबेली गजकन्थड़नाथ गणेश जी गजहस्ती स्वरुपी को नमो आदेश। गजबेली गजकन्थड़नाथ गणेश जी नमः स्वाहा।

(९०) ॐ ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ अठारह भार वनस्पति स्वरुप को नमो आदेश। ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ जी नमः स्वाहा।

(९१) ॐ माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी माया स्वरुप को नमो आदेश। माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी नमः स्वाहा।

(९२) ॐ घटे पिण्डे नव निरंतर रक्षा करन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाल स्वरुप को नमो आदेश।

बाल स्वरुप श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी नमः स्वाहा।

अतः साधक योगेश्वर तथा १२ पंथों के पीर जी महंत जी ने चौरासी सिद्धों का हवन करे।

हवन सामग्री—गौघृत तथा बिल्व पत्र, बड़, पीपल की लकड़ी

दिशा—उत्तर, मुद्रा—शुकरी, संख्या—११, २१ या १०८ बार

चौरासी—सिद्ध—हवन

(९३) ॐ गुरु जी सिद्ध सुमिर चले गोदावरी तीन भुवन हो सिद्ध, भूले भटके पंथ कर ध्यावे अष्ठ सिद्धि नव निधि को पावे इनकी थिरकाया अरु वज्र काया पीवो सिद्धों उन्मुन प्याला सर्व के पति श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी नमः स्वाहा।

(९४) ॐ सिद्ध कपिल नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सनकनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध लंकनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सनातन नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध विचारनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध चक्रनाथ जी

नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध नरमाईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध रतन नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध श्रृंगेरी नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सनन्दन नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध निवृत्ति नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सनत्कुमार नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध ज्वालेन्द्रनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सारस्वताईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध ब्रह्माईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध प्रभुदेवनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध कनकाईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध धुन्धुकारनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध नारददेव नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध मन्जुनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध मनसाई नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध विरनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध श्रृताईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध नागार्जुननाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध भुसकाईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध मद्रनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध गहिणीनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध भूचरनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध जम्भनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध वक्रनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध चर्पटनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध बिलेशायनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध कानिपानाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध बिरबन्कनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध ज्ञानेश्वरनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध तारानाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सुरानन्दनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध बुद्धनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध भगाईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध पीपल नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध चन्द्रनाथजी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध भद्रनाथजी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध एकनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध मानिकनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध गेहल्ला रावलनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध कायनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध बाबा मस्तनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध याज्ञवल्क्यनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध गोरनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध टिण्टीणीनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध दयानाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध हवाईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध दरियानाथजी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध खेचरनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध घोडा चोलिपानाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सहजाईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सुकदेवनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध औघडनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध देवनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध प्रकाशनाथ जी नमः स्वाहा।

ॐ सिद्ध कोरण्टनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध बालकनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध बालगुन्दाई नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध शाबरनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध विरुपाक्षनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध मल्लीकनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध गोपालनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध लधाईनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध अल्लमनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध पादनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध अडबंगनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध गौरवनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध धीरनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध साहिरोबा नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध प्रौढनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध गरीबनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध कालनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध धर्मनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध मेरुनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सिद्धासन नाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध सूरतनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध मार्कण्डेयनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध मीननाथ जी नमः स्वाहा। ॐ सिद्ध काकचण्डी नाथ जी नमः स्वाहा।

ऋद्धि सिद्धि हवन

अतः ऋद्धि सिद्धिओं को हवन करे।

हवन समाग्री– गौघृत तथा गुलाब के पुष्प (गुलाब की पंखड़ी) या गेंदे के फूल या

उत्तम हवन– गौघृत तथा कमल के पुष्प या कमल कट्टा

दिशा– उत्तर, मुद्रा–हंसी संख्या– ११, २१ या १०८ बार।

(९५) ॐ अनुमा सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।
(९६) ॐ महिमा सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।
(९७) ॐ गरिमा सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।
(९८) ॐ लघुमा सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।
(९९) ॐ प्राप्ति सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।
(१००) ॐ प्रकाशक सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।
(१०१) ॐ असत्या सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।
(१०२) ॐ अष्ठभुजान मनोजा सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।
(१०३) ॐ छुछूमक्ता सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(१०४) ॐ अनुरा सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(१०५) ॐ परकाया प्रवेश सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(१०६) ॐ सूरजवसी सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(१०७) ॐ जलवसी सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(१०८) ॐ दुरी श्रवण सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(१०९) ॐ दुरी दर्शन सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(११०) ॐ कान्सकामोद सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(१११) ॐ अप्रहता सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(११२) ॐ देवता सैल सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(११३) ॐ रुपसेल देवता सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(११४) ॐ हारेनहीं सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(११५) ॐ त्रिकाल सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(११६) ॐ अग्निवसी सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(११७) ॐ शबद वसी सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

(११८) ॐ परम ज्योति सिद्धदात्री देवी शक्ति नमः स्वाहा।

अतः क्षेत्रपाल भैरव तथा अष्ठ भैरव नाम का हवन करे।

भैरव हवन

हवन सामग्री— गौघृत—तिल का तेल तथा खीर घृत युक्त अन्न (मीठा) या बिल्वपत्र चमेली के फूल या लाल पुष्प।

दिशा— उत्तर, मुद्रा— मृगी, संख्या ११, २१, १०८ बार

(११९) ॐ हूं ख्रों जं रं लं वं क्रों ऐं हिं महाकाल भैरव सर्व विध्ननाशाय हिं फट् स्वाहा।

(१२०) ॐ भैरवनाथ जी नमः स्वाहा। ॐ भूत विडारण नमः स्वाहा। ॐ रुण्डमाल भैरो नमः स्वाहा। ॐ क्षेत्रपाल भैरो नमः स्वाहा। ॐ वावरा बिवराल भैरो नमः स्वाहा। महाबली भैरो नमः स्वाहा। ॐ अनंत कोट सिद्धों के आज्ञावान भैरो नमः स्वाहा। ॐ बनारसजी भैरो नमः स्वाहा। ॐ कमलनाथ जी भैरो नमः स्वाहा। ॐ बृजनाथ जी भैरो नमः स्वाहा। ॐ कालसेन भैरो नमः स्वाहा। ॐ बटुक भैरो नमो स्वाहा।

अष्ट भैरव–

(१२१) ॐ आदि अलील नाथ जी सुध बुध भैरो नमः स्वाहा।

(१२२) ॐ ईश्वर महादेव जी भैरो नमः स्वाहा।

(१२३) ॐ दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी भैरो नमः स्वाहा।

(१२४) ॐ सिद्ध चौरंगीनाथ जी भैरो नमः स्वाहा।

(१२५) ॐ सत्यनाथ ब्रह्मा जी भैरो नमः स्वाहा।

(१२६) ॐ सन्तोषनाथ विष्णु जी भैरो नमः स्वाहा।

(१२७) ॐ बासुकि नाग भैरो नमः स्वाहा।

(१२८) ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी भैरो नमः स्वाहा।

प्राण पाल हवन

अतः अष्ठ प्राण पालों का हवन करे।

सूर्य नारायण हवन

हवन सामग्री–गौघृत, शाकल आक या मदार की लकड़ी

दिशा–पूर्व, मुद्रा– हंसी, संख्या– ९ या १०८ बार

(१२९) ॐ ओ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नो सूर्या प्रचोदयात।
ॐ सूर्य नारायण नमः स्वाहा।

गौ कामधेनु हवन

हवन सामग्री– गौघृत, चंदन लकड़ी, शहद (मधु) दग्धी, दूध इ०

दिशा– अग्नेय, मुद्रा– हंसी, संख्या ११, २१ या १०८ बार

(१३०) ॐ क्षीर सागर नन्दिये विद्महे कामधेनु धीमहि तन्नो गौ प्रचोदयात।
ॐ गौमाता कामधेनु नमः स्वाहा।

धन्वन्तरी वनस्पति, कल्पवृक्ष हवन

हवन सामग्री– गौघृत, ९ ग्रह लकड़ी, पुष्प मुख्यता वटवृक्ष लकड़ी।

दिशा– दक्षिण, मुद्रा–हंसी, संख्या–१८ बार या १०८ बार

(१३१) ॐ सिद्ध शरण में धन्वन्तरी माई। सिद्ध चौरंगी ज्ञानपारखी। ऋद्ध सिद्ध से भरपूर जोगी । गोरखनाथ जी परम संतोषी। ॐ धन्वन्तरी वनस्पति कल्पवृक्षो नमः स्वाहा।

शेष भगवान हवन

हवन सामग्री— गौघृत, गौ दूग्ध

दिशा—नैवृत्य, मुद्रा—शुकरी, संख्या ८ या १०८ बार

(१३२) **ॐ शेष भगवान नमो आदेश।**

ॐ शेष भगवान नमः स्वाहा।

सोमदेव (चन्द्र) हवन

हवन सामग्री— गौघृत पलाश लकड़ी

दिशा—पश्चिम, मुद्रा—हंसी, संख्या ९ या १०८ बार

(१३३) **ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृततत्वाय धीमहि तन्नो चंद्र प्रचोदयात। ॐ सोमदेव नमः स्वाहा।**

हवनीय सामग्री— गौघृत

दिशा—वायव्य, मुद्रा—शुकरी, संख्या ८ या १०८ बार

शंखनाद हवन

(१३४) ॐ सत बोले सतवादी, सद्गुरु वाचा ततसार। शंख गायत्री संभालो बहुडी न लै अवतार। ॐ गंगा जमना सरस्वती तीनों अखण्ड कवार शंख ठैरे शिव पूजीये प्राणी पावे मोक्ष द्वारे। ॐ शंख नादाय नमः स्वाहा।

घौल बैल शक्ति हवन

हवनीय सामग्री— बिल्वपत्र

दिशा—उत्तर, मुद्रा—शुकरी, संख्या ११ या १०८ बार

(१३५) **ॐ घौल बैल शक्ति नमो आदेश।**

ॐ घौल बैल शक्ति नमः स्वाहा।

अमृत घट हवन

हवनीय सामग्री– गौघृत

दिशा– ईशान्य, मुद्रा–शुकरी, संख्या–११ या १०८ बार।

(१३६) **ॐ अमृत घट संजीवन शक्ति को नमो आदेश।**

ॐ अमृत घट संजीवन शक्ति नमः स्वाहा।

इतना अष्ठ प्राण पाल हवन समाप्त।

दश कोटवाल हवन

तदउपरान्त दश–कोटवाल का हवन करें।

भानू कोटवाल हवन

हवनीय सामग्री–गौघृत आक, मदार, लकड़ी या सूर्यफूल

दिशा– पूर्व, मुद्रा–शुकरी, संख्या– ११, २१, १०८ बार।

(१३७) **ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नो सूर्य प्रचोदयात।**

ॐ भानू कोटवाल नमः स्वाहा।

गणेश कोटवाल हवन

हवनीय सामग्री–गौघृत, दुर्वा, कन्हेर पुष्प

दिशा–नैवृत्य, मुद्रा–शुकरी, संख्या– २१, १०८ बार।

(१३८) **ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो बुद्धि प्रचोदयात।**

ॐ गणेश कोटवाल नमः स्वाहा।

हनुमान कोटवाल हवन

हवनीय सामग्री–गौघृत, शमी की लकड़ी, सिन्दूर + अक्षदा

दिशा–ईशान्य, मुद्रा–शुकरी, संख्या– ११ या १०८ बार।

(१३९) **ॐ अन्जनी सुताय विद्महे वायु पुत्राय धीमहि तन्नो मरुन्त प्रचोदयात।**

ॐ हनुमान कोटवाल नमः स्वाहा।

शेष कोटवाल हवन

हवन सामग्री–गौघृत, दूध

दिशा–पाताल, भूमि के ऊपर, मुद्रा–शुकरी, संख्या– ८ या १०८ बार

(१४०) **ॐ शेष भगवान नमो आदेश।**

ॐ शेष कोटवाल नमः स्वाहा।

चन्द्रमा कोटवाल हवन

हवन सामग्री—गौघृत, पलाश की लकड़ी

दिशा—पश्चिम, मुद्रा—शुकरी, संख्या— ९ या १०८ बार

(१४१) ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृततत्वाय धीमहि तन्नो चन्द्र प्रचोदयात।

ॐ चन्द्रमा कोटवाल नमः स्वाहा।

भैरव कोटवाल हवन

हवनीय सामग्री—गौघृत

दिशा—वायव्य, मुद्रा—शुकरी, संख्या— ८ या १०८ बार

(१४२) ॐ हूँ ख्रों जं रं लं बं क्रों ऐं ह्रीं महाकाल भैरव सर्व विघ्न नाशय ह्रीं फट् स्वाहा।

(१४३) ॐ भैरव कोटवाल नमः स्वाहा।

गरुड़ कोटवाल हवन

हवनीय सामग्री— गौघृत, तुलसी दल या अक्षदा।

दिशा—उत्तर, मुद्रा—शुकरी, संख्या— ११ या १०८ बार।

(१४४) ॐ गरुड़ विद्महे परम विष्णु प्रिया धीमहि तन्नो गरुड़ाय प्रचोदयात।

ॐ गरुड़ कोटवाल नमः स्वाहा।

इन्द्र कोटवाल हवन

हवन सामग्री—गौघृत, खीर

दिशा—आकाश, मुद्रा—शुकरी, संख्या ११ या १०८ बार

(१४५) ॐ सहस्त्रनेत्राय विद्महे वज्र हस्ताय धीमहि तन्नो इन्द्र प्रचोदयात।

ॐ इन्द्र कोटवाल नमः स्वाहा।

यम कोटवाल हवन

हवन सामग्री—गौघृत, शाकल

दिशा—दक्षिण, मुद्रा—शुकरी, संख्या— ११ व १०८ बार

(१४६) ॐ सूर्य विद्महे महाकालाय धीमहि तन्नो यम प्रचोदयात।

ॐ यम कोटवाल नमः स्वाहा।

अग्नि कोटवाल हवन

हवनीय सामग्री—गौघृत, हवन सामग्री

दिशा—अग्नेय, मुद्रा—शुकरी, संख्या ११ या १०८ बार।

(१४७) **ॐ महा ज्वालाय विद्महे, वज्र हस्ताय धीमहि तन्नो अग्नि प्रचोदयात। ॐ अग्नि कोटवाल नमः स्वाहा।**

इतना दश कोटवाल हवन समाप्त।

नाथ शक्ति अस्त्र—शस्त्र हवन

अतः साधक (पुजारी) योगेश्वर तथा पीर जी महन्त जी नाथ शक्तियाँ अस्त्र—शस्त्र को निम्न प्रकार आहुति दे।

हवनीय सामग्री—गौघृत तथा सिंदूर या लाल (रक्त रंजित) चन्दन और अक्षदा।

दिशा—पूर्व या दक्षिण, मुद्रा—शुकरी

संख्या—११ बार या २१ बार या १०८ बार

(१४८) **ॐ धूनी पानी सिद्धों की बानी। भभूत माई ले झोली झण्डी।। फावड़ी चिमटन आधार कुबड़ी। शाबर मन्त्र मतंगा भैरवी।। त्रिशूल खप्पर हाथ में डण्डी। संग खडी काल का माई।। काल कंटक को मार भगाई सत् सत् शम्भुजती गुरु गोरखनाथ जी तेरी दुहाई।। श्री नाथ शक्ति नमो नमः स्वाहा।**

(१४९) **ॐ गोरख कहे गोरख फटकार। हनुमन्त का विरास्त्र।। काली चलाये काल अस्त्र। भैरो भया अघोरास्त्र।। सत है गुरु शबद मन्त्र शाबर सिद्धों का अस्त्र। दुष्ट को भख पापी—पाखण्डी को भख हम शिष्य शबद के गुरु गोरखनाथ हमको रख। श्री नाथास्त्र नमो नमः स्वाहा।**

अब निम्न हवन करे।

हवन सामग्री—गौघृत, दिशा—उत्तर, मुद्रा— मृगी

संख्या—९ या ११ या २१ या १०८ बार

(१५०) **ॐ एक ओंकार द्वि कुमार तीन देव चार वेद, पंच पाण्डव, छह जति सप्त सती, अष्ठ भैरव नवनाथ, दश औतार, ग्यारह रुद्र, बारह पंथ जोगी सती, तेरह तैंतीस कोटी देवी देवता को नमो नमः स्वाहा।**

(१५१) ३ॐ ९९ कोटी राज योगेश्वरों नमः स्वाहा।

(१५२) अनंत कोट सिद्ध नमः स्वाहा।

(१५३) असंख्य कोटी शुरविर दानदाताओं नमः स्वाहा।

(१५४) ३ॐ हाजना हजूर जाहर जिन्दा पीर जोगीयों को नमो नमः स्वाहा।

(१५५) ३ॐ धराधर गुप्त प्रगट जिती समाधि वाले सिद्धों नमः स्वाहा।

(१५६) ३ॐ ज्ञानी, ध्यानी, थानी मकानी, संत महंत, नागा निर्वाणी, जति सती, त्यागी तपस्वी ३ॐ महासिद्ध योगेश्वरों महात्मा नमो नमः स्वाहा। ३ॐ जै जै जगदम्बे अम्बे की जागी जोत नमः स्वाहा।

(१५७) ३ॐ जोगमाया नमो नमः स्वाहा। ३ॐ ज्वाला माता नमो नमः स्वाहा।

(१५८) ३ॐ पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर, अग्नेय वायव्य ईशान्य नैऋत्य आकाश पाताल नमः स्वाहा।

इतना नाथ रहस्य आवाहित देवता तथा नाथ सिद्ध हवन सम्पूर्ण भया।

३ॐ शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी नमो आदेश। नमो आदेश।

****

अन्य हवन

अतः निम्न (१) होमिया गायत्री (२) बीजमन्त्र हवन (३) गोरक्ष सहस्रनाम हवन तथा (४) पंच अग्नि हवन। यह हवन क्रियायें पृथक–पृथक समय पर पृथक–पृथक दिनों में (अलग सा) कर सकते हैं या उपरोक्त आवाहित देवता तथा नाथ सिद्ध हवन के साथ भी कर सकते हैं।

होमिया गायत्री

अतः साधक होमिया गायत्री मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करते हुये हवनीय सामग्री से हवन करे।

हवन सामग्री– गौघृत, दिशा–उत्तर

मुद्रा–हंसी, संख्या– ११ बार या २१ बार या १०८ बार या १००००१ बार।

★ **सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ३ॐ गुरुजी। होमिया देवी पूछे है। परम गुरु जी। कैसी धरती कैसे आकाश। कहे महादेव जी। विभूति**

की धरती धुंए का आकाश। अपने तन से ऋकेसर उपाया, ऋकेशर गऊल्या-गौघृत दिखाया लौंग सुपारी तिल दहेड़ा-सार खोपड़ा और मिष्ठान बादाम छुहारा नागरपान। होमिया गायत्री का किये पाठ लै बसन्तर होम जे हाथ। होम गगन मण्डल में नव लक्ष तारा-होम किया गुरु जी सब जग सारा। श्री नाथ जी गुरु जी आदेश। आदेश। ॐ नमो होमिया गौरी नमो नम: स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हो मियाय विच्चे नम: स्वाहा। (हवन के पश्चात सुपारी, तिल, खोबरा, कत्था केशर इ० सुवासिक पान बीड़ा का हवन करे।)

बीज मन्त्र हवन विधि

हमारे नाथ सिद्ध योगेश्वर श्री गुरु गोरक्षनाथ के, बीज मन्त्र या गायत्री मन्त्र या अपने अपने सत् गुरु मन्त्र तथा अन्य हवन जैसे गोरक्ष सहस्त्र नाम, ९ नाथ, ८४ सिद्धों का हवन, होमियो गायत्री, पश्चांग्नि हवन इत्यादि नाथ सम्प्रदाय परम्परानुसार निम्न प्रकार हवन-विधान करते हैं।

१. बीज मन्त्र = ॐ शिव गोरक्ष योगी या ॐ शिव गोरक्षाय नम: या
ॐ शिव गोरक्षनाथाय नम: या गुरु मन्त्र

हवन = हवन सामग्री, साकल्य, गौघृत केवल बिल्वपत्र, हविष्यान्न (रोट, पायस, फल इ०)

मुद्रा = मृगी या हंसी, दिशा = उत्तर या पूर्व

संख्या :- १०८ अष्टशत् गोरक्षमंत्राहूति
१००८ अष्ट सहस्त्र गोरक्षमंत्राहूति
१०००८ अष्ट दश सहस्त्र गोरक्षमंत्राहूति
१००००८ अष्ट लक्ष गोरक्षमंत्राहूति
१००००००८ अष्ट कोटि गोरक्षमंत्राहूति

इस प्रकार अपेक्षित मन्त्र के शब्द संख्यानुसार उतना ही कोटि मंत्राहूति हवन करते है! अत: मन्त्र जाप १/१० हवन, हवन के १/१० तर्पण, तर्पण के १/१० मार्जण, मार्जण के १/१० दानदक्षिणा ऐसे पूर्ण विधि विधान करने पर पूर्णत्व-कार्य सिद्धि-या सिद्ध विधान हो जाता है। इस प्रकार नाथ सिद्ध योगेश्वर मंत्रानुष्ठान का विस्तृत विधान करने पर उसे सिद्ध पदवी दी जाती है अत: नाथ कुल से जुड़े हुए, शिष्य-भक्त- सेवक-साधक ग्रहस्थादि जो नाथ सम्प्रदाय से दिक्षित हो वह सब बड़े ही श्रद्धा से यह विधान कर सकते है।

श्री गोरक्ष सहस्त्रनाम हवन

(१) ३ॐ गो सेवी नमो स्वाहा। (२) ३ॐ इन्द्रियों के सेवाधारी नमो स्वाहा। (३) ३ॐ गौरक्षा नमो स्वाहा। (४) ३ॐ ब्रह्म अर्विभूत होने वाले नमो स्वाहा। (५) ३ॐ योगियों के इन्द्र नमो स्वाहा (६) ३ॐ सब सिद्धिदायक नमो स्वाहा। (७) ३ॐ संसार रक्षक नमो स्वाहा। (८) ३ॐ योगीयों के नाथ नमो स्वाहा। (९) ३ॐ युग के ईश्वर नमो स्वाहा। (१०) ३ॐ यति नमो स्वाहा। (११) ३ॐ धार्मिक नमो स्वाहा। (१२) ३ॐ धैर्यशाली नमो स्वाहा। (१३) ३ॐ लंकाके नाथ नमो स्वाहा। (१४) ३ॐ दिगम्बर योगी नमो स्वाहा। (१५) ३ॐ सर्वदा योग विचरण नमो स्वाहा। (१६) ३ॐ योग शास्त्र जानने वाले नमो स्वाहा। (१७) ३ॐ यति प्रिय नमो स्वाहा। (१८) ३ॐ योग के समूह नमो स्वाहा। (१९) ३ॐ योगियों के राजा नमो स्वाहा। (२०) ३ॐ योग जानने योग्य नमो स्वाहा। (२१) ३ॐ योगियों के सम्राट नमो स्वाहा। (२२) ३ॐ सर्वश्रेष्ठ योग विद्वान नमो स्वाहा। (२३) ३ॐ योग मार्ग युक्त नमो स्वाहा। (२४) ३ॐ योग मार्ग चलने वाले नमो स्वाहा। (२५) ३ॐ ब्रह्मचारी नमो स्वाहा। (२६) ३ॐ कठिन तपस्वी नमो स्वाहा। (२७) ३ॐ शंकर स्वरुप रहने वाले नमो स्वाहा। (२८) ३ॐ शंकर ध्यान सर्वदा तत्पर रहने वाले नमो स्वाहा। (२९) ३ॐ योग आनन्द रहने वाले नमो स्वाहा। (३०) ३ॐ योगधारी नमो स्वाहा। (३१) ३ॐ योगमाया सेवक रहने वाले नमो स्वाहा। (३२) ३ॐ योग संयुक्त नमो स्वाहा। (३३) ३ॐ मनवृत्ति रोकने वाले नमो स्वाहा। (३४) ३ॐ योग शास्त्र ज्ञानी नमो स्वाहा। (३५) ३ॐ योग प्रभाव से गुप्त हाल जानने वाले नमो स्वाहा। (३६) ३ॐ योगविद्या रचयिता नमो स्वाहा। (३७) ३ॐ युक्ताहारी नमो स्वाहा। (३८) ३ॐ सर्प को परास्त करने वाले नमो स्वाहा। (३९) ३ॐ सर्परुप धारी नमो स्वाहा। (४०) ३ॐ सर्पमालाधारी नमो स्वाहा। (४१) ३ॐ कैलाश पर्वत स्वामी नमो स्वाहा। (४२) ३ॐ सर्वदा नागधारी नमो स्वाहा। (४३) ३ॐ नागस्वरुपी नमो स्वाहा। (४४) ३ॐ नानावर्णा विभूषित नमो स्वाहा। (४५) ३ॐ नाना वेषधारी नमो स्वाहा। (४६) ३ॐ मनुष्य आकारधारी नमो स्वाहा। (४७) ३ॐ नाना रुपधारी निर्गुण नमो स्वाहा। (४८) ३ॐ आदिनाथ नमो स्वाहा। (४९) ३ॐ सोमनाथ नमो स्वाहा। (५०) ३ॐ सिद्धिनाथ नमो स्वाहा।

(५१) ॐ महेश्वर नमो स्वाहा (५२) ॐ नाथों के नाथ नमो स्वाहा (५३) ॐ महानाथ नमो स्वाहा (५४) ॐ सबके नाथ नमो स्वाहा (५५) ॐ मनुष्य के ईश्वर नमो स्वाहा (५६) ॐ क्षेत्र स्वामी नमो स्वाहा (५७) ॐ अजपा मन्त्र के स्वामी नमो स्वाहा (५८) ॐ बालक रक्षा नमो स्वाहा (५९) ॐ वाणियों के स्वामी नमो स्वाहा (६०) ॐ गंगा धारण नमो स्वाहा (६१) ॐ कमण्डलूधारी नमो स्वाहा (६२) ॐ भस्म भूषित शरीर वाले नमो स्वाहा (६३) ॐ मृगचर्मधारी नमो स्वाहा (६४) ॐ योगियों से ध्यान करने वाले नमो स्वाहा (६५) ॐ मृगनयनी नमो स्वाहा (६६) ॐ मृगवेष से तप करने वाले नमो स्वाहा (६७) ॐ मेघ समान गंभीर शब्द वाले नमो स्वाहा (६८) ॐ मेघवर्ण नमो स्वाहा (६९) ॐ महाबलवान नमो स्वाहा (७०) ॐ मनस्वी नमो स्वाहा (७१) ॐ दिशा-ईश्वर नमो स्वाहा (७२) ॐ दयालु नमो स्वाहा (७३) ॐ दिव्य आभूषण धारी नमो स्वाहा (७४) ॐ दिगम्बर नमो स्वाहा (७५) ॐ विद्वान या योगबल से सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान वाले नमो स्वाहा (७६) ॐ स्वर्ग विहारी नमो स्वाहा (७७) ॐ देवता श्रेष्ठ नमो स्वाहा। (७८) ॐ इन्द्रिय दमन वाले नमो स्वाहा (७९) ॐ जलनाथ नमो स्वाहा। (८०) ॐ जगत के नाथ नमो स्वाहा (८१) ॐ जनो के स्वामी नमो स्वाहा (८२) ॐ लोकों नाथ नमो स्वाहा (८३) ॐ भूतनाथ नमो स्वाहा (८४) ॐ विपत्ति नाशक नमो स्वाहा (८५) ॐ पृथ्वी के नाथ नमो स्वाहा (८६) ॐ १४ भुवन ईश्वर नमो स्वाहा (८७) ॐ विद्वानों के स्वामी नमो स्वाहा (८८) ॐ गोपियों के प्रेम पात्र नमो स्वाहा (८९) ॐ इन्द्रिय पालन नमो स्वाहा (९०) ॐ गोप शत्रुनाशक गुप्त नमो स्वाहा (९१) ॐ जगत गुरु नमो स्वाहा। (९२) ॐ सरस्वती के स्वामी नमो स्वाहा (९३) ॐ प्राणायाम में तत्पर नमो स्वाहा (९४) ॐ यज्ञनाथ नमो स्वाहा (९५) ॐ यज्ञपुरुष नमो स्वाहा (९६) ॐ सर्वदा आनन्द-मग्न नमो स्वाहा (९७) ॐ महायति नमो स्वाहा (९८) ॐ आत्मवशी नमो स्वाहा (९९) ॐ अत्यन्त पराक्रमी नमो स्वाहा (१००) ॐ कान्तिवान नमो स्वाहा (१०१) ॐ धैर्यवान नमो स्वाहा (१०२) ॐ मन को वश में रखने वाले नमो स्वाहा (१०३) ॐ सिद्धों के नाथ नमो स्वाहा (१०४) ॐ वृद्धों के नाथ नमो स्वाहा (१०५) ॐ अत्यन्त वृद्ध के

मार्ग प्रिय नम स्वाहा (१०६) ॐ आकाश विहारन नमो स्वाहा (१०७) ॐ आकाश विहार करने वाले के स्वामी नमो स्वाहा (१०८) ॐ विद्यानन्द नमो स्वाहा (१०९) ॐ गणों के अध्यक्ष नमो स्वाहा (११०) ॐ विद्यादाता नमो स्वाहा (१११) ॐ मन्त्र नाथ नमो स्वाहा (११२) ॐ ध्यान के नाथ नमो स्वाहा (११३) ॐ धनदाता नमो स्वाहा (११४) ॐ सबके आराध्य पूर्णनाथ नमो स्वाहा (११५) ॐ तेज के स्वामी नमो स्वाहा (११६) ॐ कान्ति और तेज को चाहने वाले नमो स्वाहा (११७) ॐ सृष्टि कर्ता नमो स्वाहा (११८) ॐ सृष्टि के पालक नमो स्वाहा (११९) ॐ जगत के प्रलय करने वाले नमो स्वाहा (१२०) ॐ भैरवनाथ नमो स्वाहा (१२१) ॐ भैरवाकार नमो स्वाहा (१२२) ॐ भय का हरण करने वाले नमो स्वाहा (१२३) ॐ संसार का दुःख दूर करने वाले नमो स्वाहा (१२४) ॐ सृष्टि के नाथ नमो स्वाहा (१२५) ॐ स्थिति के नाथ नमो स्वाहा (१२६) ॐ विश्व के आराध्य नमो स्वाहा (१२७) ॐ महाबुद्धिवान नमो स्वाहा (१२८) ॐ दिव्य शब्द करने वाले नमो स्वाहा (१२९) ॐ दिशाओं के नाथ नमो स्वाहा (१३०) ॐ दिव्य भोग युक्त नमो स्वाहा (१३१) ॐ आकाशादिरुप नमो स्वाहा (१३२) ॐ वासुदेव (कृष्ण रुप) नमो स्वाहा (१३३) ॐ असंख्य शरीरधारी नमो स्वाहा (१३४) ॐ सनातन (जन्म-मृत्यु रहित) नमो स्वाहा (१३५) ॐ पूर्णनाथ नमो स्वाहा (१३६) ॐ तेज के नाथ नमो स्वाहा (१३७) ॐ सूर्य स्वरुप नमो स्वाहा (१३८) ॐ हृदय में रहने वाले नमो स्वाहा (१३९) ॐ अंगदेश के नाथ नमो स्वाहा (१४०) ॐ प्रधान नट रुप नमो स्वाहा (१४१) ॐ मंगल स्वरुप को नमो स्वाहा (१४२) ॐ मंगल कर्ता नमो स्वाहा (१४३) ॐ शून्य माता के भक्त नमो स्वाहा (१४४) ॐ धीर के नाथ नमो स्वाहा (१४५) ॐ शरीर के रक्षा करने वाले नमो स्वाहा (१४६) ॐ सर्व प्राणियों के हृदय में रहने वाले नमो स्वाहा (१४७) ॐ विष्णुरुप नमो स्वाहा (१४८) ॐ अमर नमो स्वाहा (१४९) ॐ नित्य रहने वाले नमो स्वाहा (१५०) ॐ दिव्य रुप नमो स्वाहा (१५१) ॐ परोपकारी नमो स्वाहा (१५२) ॐ व्रत में पारायण नमो स्वाहा (१५३) ॐ आत्मदर्शी नमो स्वाहा (१५४) ॐ सुन्दर रुप नमो स्वाहा

(१५५) ॐ इन्द्र के स्वामी नमो स्वाहा (१५६) ॐ ब्रह्म तत्व के अन्वेषण करने वाले नमो स्वाहा (१५७) ॐ प्रशंसनीय धनदाता नमो स्वाहा (१५८) ॐ शंकर स्वरुप नमो स्वाहा (१५९) ॐ रक्षक अमर नमो स्वाहा (१६०) ॐ माया पति नमो स्वाहा (१६१) ॐ तपस्वी रुप नमो स्वाहा (१६२) ॐ विष्णु नमो स्वाहा (१६३) ॐ एक हो ब्रह्म रुप नमो स्वाहा (१६४) ॐ महेश्वर नमो स्वाहा (१६५) ॐ एक मूर्ति नमो स्वाहा (१६६) ॐ आद योगी नमो स्वाहा (१६७) ॐ त्रिलोचन नमो स्वाहा (१६८) ॐ शिव स्वरुप नमो स्वाहा (१६९) ॐ गायत्री स्वरुप नमो स्वाहा (१७०) ॐ कृष्ण स्वरुप नमो स्वाहा (१७१) ॐ चर्तुदश भुवनो के स्वामी नमो स्वाहा (१७२) ॐ असुर नाशवान नमो स्वाहा (१७३) ॐ नादकारी नमो स्वाहा (१७४) ॐ विष्णु इन्द्र रुप नमो स्वाहा (१७५) ॐ लाभ स्वरुप नमो स्वाहा (१७६) ॐ भय हरता नमो स्वाहा (१७७) ॐ प्रलयकारी नमो स्वाहा (१७८) ॐ दीप्तिमान नमो स्वाहा (१७९) ॐ कृष्णवर्ण (काला वर्ण) नमो स्वाहा (१८०) ॐ छोटे हाथ वाले नमो स्वाहा (१८१) ॐ प्रकाश के खगेश्वर नमो स्वाहा (१७२) ॐ गौरानाथ नमो स्वाहा (१८३) ॐ वाणी के पति नमो स्वाहा (१८४) ॐ पूज्य गर्ग के पूज्य नमो स्वाहा (१८५) ॐ गणेश्वर नमो स्वाहा (१८६) ॐ गानपति नमो स्वाहा (१८७) ॐ गंगासेवी नमो स्वाहा (१८८) ॐ गुरुप्रिय नमो स्वाहा (१८९) ॐ सूर्य चन्द्रशेखर नमो स्वाहा (१९०) ॐ चन्द्र स्वरुप नमो स्वाहा (१९१) ॐ च च शब्द करने वाले नमो स्वाहा (१९२) ॐ अज्ञान नाशवान करने वाले नमो स्वाहा (१९३) ॐ सर्वव्यापी नमो स्वाहा (१९४) ॐ दण्ड देने वाले नमो स्वाहा (१९५) ॐ चोरनाथ नमो स्वाहा (१९६) ॐ देवनाथ नमो स्वाहा (१९७) ॐ शिवाकृति नमो स्वाहा (१९८) ॐ चम्पा नगर के स्वामी नमो स्वाहा (१९९) ॐ चन्द्रपति विष्णु वृद्धिनाथ नमो स्वाहा (२००) ॐ ब्रह्मरुप नमो स्वाहा (२०१) ॐ अग्नि स्वरुप नमो स्वाहा (२०२) ॐ आदिनाथ नमो स्वाहा (२०३) ॐ नित्य सुन्दर स्वरुप नमो स्वाहा (२०४) ॐ महाकवि नमो स्वाहा (२०५) ॐ कवितापती नमो स्वाहा (२०६) ॐ ऋद्धि नमो स्वाहा (२०७) ॐ सर्वयोग कर्म बतलाने वाले नमो स्वाहा (२०८) ॐ सर्वव्यापी ईश्वर नमो स्वाहा (२०९) ॐ स्थावर

जंगम विराट रुप नमो स्वाहा (२१०) ॐ सुन्दर श्रृंगधारी नमो स्वाहा (२११) ॐ प्रकाशमान नमो स्वाहा (२१२) ॐ चित्रनाथ नमो स्वाहा (२१३) ॐ चिरकाल तक तपस्या करने वाले नमो स्वाहा (२१४) ॐ बुद्धिदाता नमो स्वाहा (२१५) ॐ पाप नाशक नमो स्वाहा (२१६) ॐ सब गुणों के भण्डार नमो स्वाहा (२१७) ॐ विजय देने वाले नमो स्वाहा (२१८) ॐ जय के आधार नमो स्वाहा (२१९) ॐ जय देने वाले नमो स्वाहा (२२०) ॐ सदा विजय शील नमो स्वाहा (२२१) ॐ जपाधीश नमो स्वाहा (२२२) ॐ जप के आधार नमो स्वाहा (२२३) ॐ जपदान कर्ता नमो स्वाहा (२२४) ॐ अजपा मन्त्र जपने वाले नमो स्वाहा (२२५) ॐ पंचजन्य के स्वामी नमो स्वाहा (२२६) ॐ गम्भीरवक्ता नमो स्वाहा (२२७) ॐ शंख स्वरुप नमो स्वाहा (२२८) ॐ जनेश्वर नमो स्वाहा (२२९) ॐ आत्मज्ञानी नमो स्वाहा (२३०) ॐ ब्रह्मस्वरुप नमो स्वाहा (२३१) ॐ जीवन मुक्त नमो स्वाहा (२३२) ॐ अजन्मा नमो स्वाहा (२३३) ॐ अविनाशी नमो स्वाहा (२३४) ॐ माया जीव आच्छादन करने वाले नमो स्वाहा (२३५) ॐ जीवरुप नमो स्वाहा (२३६) ॐ संसार प्रपंच कारी नमो स्वाहा (२३७) ॐ सुन्दर रुप वाले नमो स्वाहा (२३८) ॐ शून्य के आधार नमो स्वाहा (२३९) ॐ योगिराज नमो स्वाहा (२४०) ॐ ओंकार स्वरुप नमो स्वाहा (२४१) ॐ ईन्द्रनाथ नमो स्वाहा (२४२) ॐ इन्द्ररुप नमो स्वाहा (२४३) ॐ शुभ नमो स्वाहा (२४४) ॐ जयरुप नमो स्वाहा (२४५) ॐ अत्यन्त जपकर्ता वायुरुप नमो स्वाहा (२४६) ॐ मृत्यु को जीतने वाले नमो स्वाहा (२४७) ॐ मननशील नमो स्वाहा (२४८) ॐ ध्वनि रुपगोरक्ष नमो स्वाहा (२४९) ॐ शब्दकर्ता नमो स्वाहा (२५०) ॐ पृथ्वी के ईश्वर नमो स्वाहा (२५१) ॐ प्रलय के रुद्ररुप नमो स्वाहा (२५२) ॐ विजयरुप के स्वामी नमो स्वाहा (२५३) ॐ आकाश के नाथ नमो स्वाहा (२५४) ॐ शून्यमय नमो स्वाहा (२५५) ॐ शून्यवेष नमो स्वाहा (२५६) ॐ सदायोग समाधि लगाने वाले नमो स्वाहा (२५७) ॐ निर्गुण स्वरुप नमो स्वाहा (२५८) ॐ तीन काल में रहने वाले नमो स्वाहा (२५९) ॐ ढक्कावाद्य प्रिय नमो स्वाहा (२६०) ॐ डमरू बजाने वाले नमो स्वाहा (२६१) ॐ सर्व कामना

पूर्णकारी नमो स्वाहा (२६२) ॐ अभय स्वरुप नमो स्वाहा (२६३) ॐ भोग स्वरुप नमो स्वाहा (२६४) ॐ सकल जग के उत्पत्ति स्थान नमो स्वाहा (२६५) ॐ पापियों को भयंकर लगने वाले नमो स्वाहा (२६६) ॐ अधर्मी को दण्ड देने वाले नमो स्वाहा (२६७) ॐ यम स्वरुप दण्ड देने वाले नमो स्वाहा (२६८) ॐ दण्डरुप नमो स्वाहा (२६९) ॐ पापियों का उद्धार करने वाले नमो स्वाहा (२७०) ॐ गुणों के आश्रय नमो स्वाहा (२७१) ॐ दण्डदाता नमो स्वाहा (२७२) ॐ दुष्ट को दण्ड देने वाले नमो स्वाहा (२७३) ॐ दमन करने योग्य नमो स्वाहा (२७४) ॐ मेघ स्वरुप नमो स्वाहा (२७५) ॐ इन्द्रियों का दमन करने वाले नमो स्वाहा (२७६) ॐ पापियों को दण्ड देने वाले नमो स्वाहा (२७७) ॐ निर्दय रुप नमो स्वाहा (२७८) ॐ नन्द के स्वामी नमो स्वाहा (२७९) ॐ श्रीकृष्ण स्वरुप नमो स्वाहा (२८०) ॐ विद्वानों के नाथ नमो स्वाहा (२८१) ॐ रोग रहित नन्दीभक्त नमो स्वाहा (२८२) ॐ नमस्कार प्रिय नमो स्वाहा (२८३) ॐ लोकप्रिय, नरस्वरुप नमो स्वाहा (२८४) ॐ नीति स्वरुप नमो स्वाहा (२८५) ॐ रक्षा करने वाले नमो स्वाहा (२८६) ॐ स्तुति के योग्य नमो स्वाहा (२८७) ॐ विजयशाली नमो स्वाहा (२८८) ॐ भक्तों से वश किये जाने वाले नमो स्वाहा (२८९) ॐ जीवों के मोक्ष स्थान गोरक्ष नमो स्वाहा (२९०) ॐ हिमालय में विराजमान नमो स्वाहा (२९१) ॐ शब्द करने वाले नमो स्वाहा (२९२) ॐ रैवतक (गीरनार) पर्वत पर रहने वाले नमो स्वाहा (२९३) ॐ काम क्रोध जीतने वाले नमो स्वाहा (२९४) ॐ जय स्वरुप नमो स्वाहा (२९५) ॐ दान देने वाले नमो स्वाहा (२९६) ॐ दान में सिद्ध नमो स्वाहा (२९७) ॐ अज्ञान विनाशकारी नमो स्वाहा (२९८) ॐ ज्ञान देने वाले नमो स्वाहा (२९९) ॐ दयाकारी नमो स्वाहा (३००) ॐ दीन प्रेमी नमो स्वाहा (३०१) ॐ दूरदर्शी नमो स्वाहा (३०२) ॐ उदार नमो स्वाहा (३०३) ॐ स्वर्गीय सौन्दर्ययुक्त नमो स्वाहा (३०४) ॐ स्वर्गीय आसन विराजमान नमो स्वाहा (३०५) ॐ तेजरुप नमो स्वाहा (३०६) ॐ दयावाले नमो स्वाहा (३०७) ॐ सर्वप्रिय नमो स्वाहा (३०८) ॐ अन्तरीक इन्द्रिय रक्षाकारी नमो स्वाहा (३०९) ॐ सर्वदा समीप रहने वाले नमो स्वाहा (३१०) ॐ दूर तक देखने योग्य नमो स्वाहा (३११) ॐ दिन के

समान प्रकाशमान नमो स्वाहा (३१२) ॐ दिव्य मालाधारी नमो स्वाहा (३१३) ॐ दिव्य भोग भोगी नमो स्वाहा (३१४) ॐ दिव्य वस्त्रधारी नमो स्वाहा (३१५) ॐ सूर्य स्वरुप नमो स्वाहा (३१६) ॐ ब्रह्मस्वरुप नमो स्वाहा (३१७) ॐ धन देने वाले नमो स्वाहा (३१८) ॐ धर्म देने वाले नमो स्वाहा (३१९) ॐ धन से रहित नमो स्वाहा (३२०) ॐ धनी नमो स्वाहा (३२१) ॐ धर्म स्थापना करने वाले नमो स्वाहा (३२२) ॐ धैर्यवान नमो स्वाहा (३२३) ॐ पृथ्वी के स्वामी नमो स्वाहा (३२४) ॐ बुद्धिमान नमो स्वाहा (३२५) ॐ लक्ष्मी स्वामी नमो स्वाहा (३२६) ॐ पर्वतधारी नमो स्वाहा (३२७) ॐ अंधकार नाशकारी नमो स्वाहा (३२८) ॐ अधर्म उद्धारी नमो स्वाहा (३२९) ॐ धर्म श्रद्धा राखी नमो स्वाहा (३३०) ॐ धर्माचरण नमो स्वाहा (३३१) ॐ श्रेष्ट काम नमो स्वाहा (३३२)ॐ क्रोधादि नाशवान नमो स्वाहा (३३३) ॐ सिद्धान्तकारी नमो स्वाहा (३३४) ॐ शुद्ध बुद्धि वाले नमो स्वाहा (३३५) ॐ पवित्र नमो स्वाहा (३३६) ॐ पवित्र करने वाले नमो स्वाहा (३३७) ॐ प्रयत्नशील नमो स्वाहा (३३८) ॐ अन्धकार नाशकारी नमो स्वाहा (३३९) ॐ सदा प्रसन्न नमो स्वाहा (३४०) ॐ हर्षवान नमो स्वाहा (३४१) ॐ लोगों को हर्ष प्रदान करने वाले नमो स्वाहा (३४२) ॐ पाण्डुदेश का राजा नमो स्वाहा (३४३) ॐ पीले रंग वाले नमो स्वाहा (३४४) ॐ सर्पासन धारी नमो स्वाहा (३४५) ॐ प्रसन्न मुखवाले नमो स्वाहा (३४६) ॐ सर्व दुःखहारी नमो स्वाहा (३४७) ॐ परम पवित्र नमो स्वाहा (३४८) ॐ सर्वश्रेष्ठ नमो स्वाहा (३४९) ॐ शेष रूप नमो स्वाहा (३५०) ॐ कृष्ण रुप नमो स्वाहा (३५१) ॐ नागों के राजा नमो स्वाहा (३५२) ॐ धर्मार्थ काम मोक्ष के अध्यक्ष नमो स्वाहा (३५३) ॐ तप और धर्म फलदाता नमो स्वाहा (३५४) ॐ चतुर्वर्ण फल और पुण्य कर्म के फल स्वरुप नमो स्वाहा (३५५) ॐ निज ज्योति स्वरुप नमो स्वाहा (३५६) ॐ बम शब्द प्रिय नमो स्वाहा (३५७) ॐ कलश स्वरुप नमो स्वाहा (३५८) ॐ बलि ध्वंसी नमो स्वाहा (३५९) ॐ जल अधिष्ट्रातृ देवता पवित्र नमो स्वाहा (३६०) ॐ वरदाता नमो स्वाहा (३६१) ॐ पांच वर्ष आयु सदा रहने वाले नमो स्वाहा (३६२) ॐ बाल प्रिय, बल स्वरुप नमो स्वाहा (३६३) ॐ वराह रुपधारी नमो स्वाहा

(३६४) ३ॐ पश्चिम दिशा के स्वामी नमो स्वाहा (३६५) ३ॐ पण्डित प्रिय नमो स्वाहा (३६६) ३ॐ बलवान नमो स्वाहा (३६७) ३ॐ पार्वती की पूजा करने वाले नमो स्वाहा (३६८) ३ॐ पृथ्वी विहारी नमो स्वाहा (३६९) ३ॐ सौम्यमूर्ति नमो स्वाहा (३७०) ३ॐ प्रलय रुप नमो स्वाहा (३७१) ३ॐ शिष्टों प्रिय नमो स्वाहा (३७२) ३ॐ बालको को आनन्द देने वाले नमो स्वाहा (३७३) ३ॐ शिवसेवक नमो स्वाहा (३७४) ३ॐ संसार प्रेमी नमो स्वाहा (३७५) ३ॐ संसार स्वामी नमो स्वाहा (३७६) ३ॐ सब उत्पत्ति स्थान नमो स्वाहा (३७७) ३ॐ भव्य, त्रिविध ताप दूर करने वाले नमो स्वाहा (३७८) ३ॐ महादेव प्यारे नमो स्वाहा (३७९) ३ॐ सम्माननीय नमो स्वाहा (३८०) ३ॐ योगियों से मनन वाले नमो स्वाहा (३८१) ३ॐ गम्भीर हृदय वाले नमो स्वाहा (३८२) ३ॐ महायोगी नमो स्वाहा (३८३) ३ॐ महाधीर नमो स्वाहा (३८४) ३ॐ महासिद्ध नमो स्वाहा (३८५) ३ॐ शून्य आश्रय नमो स्वाहा (३८६) ३ॐ मन से जाने वाले नमो स्वाहा (३८७) ३ॐ मनस्वी नमो स्वाहा (३८८) ३ॐ अत्यन्त प्रसन्न नमो स्वाहा (३८९) ३ॐ उत्सव स्वरुप नमो स्वाहा (३९०) ३ॐ मार्ग प्रेमी नमो स्वाहा (३९१) ३ॐ सन्मार्ग सेवनधारी नमो स्वाहा (३९२) ३ॐ महात्मा नमो स्वाहा (३९३) ३ॐ प्रसन्न स्वरुप और मलिनता पाप आदि से रहित नमो स्वाहा (३९४) ३ॐ मध्य के नाथ नमो स्वाहा (३९५) ३ॐ महापरिणाम वाले नमो स्वाहा (३९६) ३ॐ शून्य स्वरूप नमो स्वाहा (३९७) ३ॐ चन्द्र स्वरुप नमो स्वाहा (३९८) ३ॐ यज्ञों में पूजित नमो स्वाहा (३९९) ३ॐ यज्ञ स्वरुप नमो स्वाहा (४००) ३ॐ यज्ञ करने वाले नमो स्वाहा (४०१) ३ॐ मोहरुप नमो स्वाहा (४०२) ३ॐ मोह नाशवान और महात्माओं के प्यारे नमो स्वाहा (४०३) ३ॐ त्यागी यज्ञकर्ता नमो स्वाहा (४०४) ३ॐ यमस्वरुप नमो स्वाहा (४०५) ३ॐ योग स्वरुप नमो स्वाहा (४०६) ३ॐ यम के प्रिय नमो स्वाहा (४०७) ३ॐ यशधारी नमो स्वाहा (४०८) ३ॐ प्रशस्त यश वाले नमो स्वाहा (४०९) ३ॐ यशदाता यश प्रेमी नमो स्वाहा (४१०) ३ॐ नमस्कार प्रिय नमो स्वाहा (४११) ३ॐ नाथ नमो स्वाहा (४१२) ३ॐ मनुष्य के नाथ नमो स्वाहा (४१३) ३ॐ नीरोग रहने वाले नमो स्वाहा (४१४) ३ॐ हमेशा योग में रहने वाले नमो स्वाहा (४१५) ३ॐ अविनाशी नमो स्वाहा (४१६) ३ॐ नन्दी के नाथ नमो स्वाहा (४१७) ३ॐ नारों में श्रेष्ठ

नमो स्वाहा (४१८) ॐ लोगों के आनन्ददाता नमो स्वाहा (४१९) ॐ रामचन्द्र स्वामी नमो स्वाहा (४२०) ॐ लक्ष्मी के स्वामी नमो स्वाहा (४२१) ॐ परब्रह्म बीज का जाप करने वाले नमो स्वाहा (४२२) ॐ रामरमी नमो स्वाहा (४२३) ॐ परब्रह्म उपासना संलग्न नमो स्वाहा (४२४) ॐ कमल नेत्रवाले नमो स्वाहा (४२५) ॐ सुन्दर स्वरुप नमो स्वाहा (४२६) ॐ रागशास्त्रज्ञाता नमो स्वाहा (४२७) ॐ काम समान सुन्दर नमो स्वाहा (४२८) ॐ राजधर्म प्रेमी नमो स्वाहा (४२९) ॐ राजनीति तत्व ज्ञाता नमो स्वाहा (४३०) ॐ लोक रन्जक नमो स्वाहा (४३१) ॐ रणमूर्ति नमो स्वाहा (४३२) ॐ राज्य भोगदाता नमो स्वाहा (४३३) ॐ सब कुछ करने में समर्थ नमो स्वाहा (४३४) ॐ लक्ष्मी प्रिय नमो स्वाहा (४३५) ॐ लक्ष्मी सौभाग्य बढाने वाले नमो स्वाहा (४३६) ॐ लाल चन्दन लगाने वाले नमो स्वाहा (४३७) ॐ लाल त्रिपुण्ड लगाने वाले नमो स्वाहा (४३८) ॐ लाल गन्ध लेपनधारी नमो स्वाहा (४३९) ॐ भाषण कर्ता, रक्षक नमो स्वाहा (४४०) ॐ लाल वस्त्रधारी नमो स्वाहा (४४१) ॐ प्रेमी भक्त फलदाता नमो स्वाहा (४४२) ॐ इन्द्रिय अतीत नमो स्वाहा (४४३) ॐ विश्व उत्पत्तिदाता नमो स्वाहा (४४४) ॐ अज्ञेय आत्मा अर्थात आत्मा को माप नहीं ऐसे नमो स्वाहा (४४५) ॐ पुनः शरीर निवासी नमो स्वाहा (४४६) ॐ सत्य धर्म वाले नमो स्वाहा (४४७) ॐ महान व्यापक रुपधारी नमो स्वाहा (४४८) ॐ अनन्त रुपधारी नमो स्वाहा (४४९) ॐ पृथ्वीधारी नमो स्वाहा (४५०) ॐ अदृश्य रुपवाले नमो स्वाहा (४५१) ॐ अव्यक्त रुप वाले नमो स्वाहा (४५२) ॐ सहस्त्रोबाहो नमो स्वाहा (४५३) ॐ अपनी महिमा स्थित नमो स्वाहा (४५४) ॐ अतुलनीय नमो स्वाहा (४५५) ॐ वरदायक नमो स्वाहा (४५६) ॐ गौ देने वाले नमो स्वाहा (४५७) ॐ संसारभय-जन्म मृत्यु भय तारक नमो स्वाहा (४५८) ॐ सर्वोत्तम विभूतिवान नमो स्वाहा (४५९) ॐ पवित्र दर्शन वाले नमो स्वाहा (४६०) ॐ सुवर्ण अण्डे से उत्पन्न होने वाले नमो स्वाहा (४६१) ॐ ॐकार रुप नमो स्वाहा (४६२) ॐ उन्नति, मोक्षदाता नमो स्वाहा (४६३) ॐ श्रुति स्मृति उत्पन्न कर्ता नमो स्वाहा (४६४) ॐ भक्त प्रेमी नमो स्वाहा (४६५) ॐ महावीर नमो स्वाहा (४६६) ॐ सिंह पराक्रमी,

स्वतन्त्र नमो स्वाहा (४६७) ॐ यज्ञमें बहुत दक्षणा देने वाले (४६८) ॐ शिव शिष्य नमो स्वाहा (४६९) ॐ प्रशंसनीय नमो स्वाहा (४७०) ॐ राग रहित नमो स्वाहा (४७१) ॐ द्वेष रहित नमो स्वाहा (४७२) ॐ सिद्धों से स्तुति किये जाने वाले नमो स्वाहा (४७३) ॐ प्रसिद्ध चरित्रवान नमो स्वाहा (४७४) ॐ गुणपात्र नमो स्वाहा (४७५) ॐ गुणों की खान नमो स्वाहा (४७६) ॐ देखे गये नमो स्वाहा (४७७) ॐ सुने गये नमो स्वाहा (४७८) ॐ वर्तमान नमो स्वाहा (४७९) ॐ भूत नमो स्वाहा (४८०) ॐ समान बुद्धि (ज्ञान) वाले नमो स्वाहा (४८१) ॐ समान तेज नमो स्वाहा (४८२) ॐ प्रलयकाल के वायु रुप नमो स्वाहा (४८३) ॐ महाभूति स्वरुप नमो स्वाहा (४८४) ॐ प्राणी हृदय विराजमान नमो स्वाहा (४८५) ॐ नक्षत्र स्वामी नमो स्वाहा (४८६) ॐ अमृत के स्वामी (अमर) निश्चल नमो स्वाहा (४८७) ॐ प्रलय काल में भयानक रुपधारी नमो स्वाहा (४८८) ॐ सबके दृष्टि स्वरुप नमो स्वाहा (४८९) ॐ सब देखने वाले नमो स्वाहा (४९०) ॐ विद्याओं के पति नमो स्वाहा (४९१) ॐ माता गर्भ से न उत्पन्न होने वाले नमो स्वाहा (४९२) ॐ मंगलमय शरीर के अंगों से युक्त नमो स्वाहा (४९३) ॐ भक्त को लक्ष्मीवान कर्ता नमो स्वाहा (४९४) ॐ सर्वदा आनन्दमय नमो स्वाहा (४९५) ॐ श्रेष्ट यशवान नमो स्वाहा (४९६) ॐ अविनाशी नमो स्वाहा (४९७) ॐ निश्चल नमो स्वाहा (४९८) ॐ शोकरहित नमो स्वाहा (४९९) ॐ भक्त की चिन्ता दुरकर्ता नमो स्वाहा (५००) ॐ सौम्य स्वरुप नमो स्वाहा (५०१) ॐ इच्छा पालनहारी नमो स्वाहा (५०२) ॐ कलाओं से पूर्ण नमो स्वाहा (५०३) ॐ निष्कलंक आत्मा नमो स्वाहा (५०४) ॐ लोक शिक्षा के लिये यज्ञ करने वाले नमो स्वाहा (५०५) ॐ स्वरुप ब्रह्म को स्वयं जानने वाले नमो स्वाहा (५०६) ॐ ब्राह्मणों के प्रेमी नमो स्वाहा (५०७) ॐ सब कामना और शक्ति से पूर्ण नमो स्वाहा (५०८) ॐ आत्म स्तुति योग्य नमो स्वाहा (५०९) ॐ स्तुतिरुप नमो स्वाहा (५१०) ॐ सबके स्तुति योग्य नमो स्वाहा (५११) ॐ मन समान वेग वाले नमो स्वाहा (५१२) ॐ ब्राह्मण हितैषी नमो स्वाहा (५१३) ॐ स्वयं वेद स्मरणीय नमो स्वाहा (५१४) ॐ सत्य आदि लक्षणयुक्त ब्रह्मस्वरुप नमो स्वाहा (५१५) ॐ नित्य ऐश्वरकर्ता नमो स्वाहा (५१६) ॐ

तत्वज्ञानियों के प्रधान स्थान नमो स्वाहा (५१७) ॐ प्रकृति और पुरुष स्वरुप नमो स्वाहा (५१८) ॐ प्रकृति के लिये कर्मफल भोक्ता नमो स्वाहा (५१९) ॐ सुखदाता नमो स्वाहा (५२०) ॐ त्रिविध ताप से तपने वाले को शान्ति देने वाले नमो स्वाहा (५२१) ॐ सभी प्राणियों के लिये समान नमो स्वाहा (५२२) ॐ शुद्धावस्था में केवल सत्वरुप नमो स्वाहा (५२३) ॐ कर्तृत्वा अवस्था में रजोरुप नमो स्वाहा (५२४) ॐ संहार में काल तमस्वरुप नमो स्वाहा (५२५) ॐ सोम (वनस्पति) स्वरुप सोम पान करने वाले नमो स्वाहा (५२६) ॐ मनोहर दर्शन नमो स्वाहा (५२७) ॐ त्रिगुणमया नमो स्वाहा (५२८) ॐ तीनों वेदों के स्वरुप नमो स्वाहा (५२९) ॐ तीन लोक रक्षक नमो स्वाहा (५३०) ॐ बढी हुई शक्ति वाले नमो स्वाहा (५३१) ॐ मन से सुन्दर नमो स्वाहा (५३२) ॐ कर्म से सुन्दर नमो स्वाहा (५३३) ॐ शरीर से सुन्दर नमो स्वाहा (५३४) ॐ बुद्धि से सुन्दर नमो स्वाहा (५३५) ॐ वेदों से पवित्र मुखवाले नमो स्वाहा (५३६) ॐ दुःख से अर्थात योग, तप, समाधि से प्राप्त करने योग्य नमो स्वाहा (५३७) ॐ दुःखों का नाश करने वाले नमो स्वाहा (५३८) ॐ शोक और क्रोध रहित नमो स्वाहा (५३९) ॐ गम्भीर आत्मावाले नमो स्वाहा (५४०) ॐ प्राणमय नमो स्वाहा (५४१) ॐ देवताओं को विविध आज्ञा प्रदान करने वाले नमो स्वाहा (५४२) ॐ सम्पूर्ण कर्मों का फल देने वाले नमो स्वाहा (५४३) ॐ मुकुटधारी नमो स्वाहा (५४४) ॐ कुण्डलधारी नमो स्वाहा (५४५) ॐ सुवर्ण भूषणधारी नमो स्वाहा (५४६) ॐ कडाधारी नमो स्वाहा (५४७) ॐ दिन स्वरुप नमो स्वाहा (५४८) ॐ संवत्सर स्वरुप नमो स्वाहा (५४९) ॐ समय स्वरुप नमो स्वाहा (५५०) ॐ ज्ञान करने वाले नमो स्वाहा (५५१) ॐ व्यापक नमो स्वाहा (५५२) ॐ कवि नमो स्वाहा (५५३) ॐ भूलोक स्वरुप नमो स्वाहा (५५४) ॐ स्वर्गलोक स्वरुप नमो स्वाहा (५५५) ॐ संसार के प्राणियों का विश्राम स्वरुप नमो स्वाहा (५५६) ॐ अविवेकी को श्रम देने वाले नमो स्वाहा (५५७) ॐ प्रलयकार नमो स्वाहा (५५८) ॐ क्षमा स्वरुप नमो स्वाहा (५५९) ॐ अति सूक्ष्म नमो स्वाहा (५६०) ॐ अति स्थूल नमो स्वाहा (५६१) ॐ सर्वत्र विराजमान नमो स्वाहा (५६२) ॐ सब में विभक्त नमो स्वाहा (५६३) ॐ सबको जानने वाले सर्वमय

नमो स्वाहा (५६४) ॐ देवताओं के ईश्वर नमो स्वाहा (५६५) ॐ देवताओं में प्रधान नमो स्वाहा (५६६) ॐ समान रुप में व्याप्त नमो स्वाहा (५६७) ॐ सबके लिये समान नमो स्वाहा (५६८) ॐ सत्यमय नमो स्वाहा (५६९) ॐ सुन्दर पर्व वाले नमो स्वाहा (५७०) ॐ परम पवित्र नमो स्वाहा (५७१) ॐ कभी नष्ट न होने वाले नमो स्वाहा (५७२) ॐ सबसे पहले (अनादि) नमो स्वाहा (५७३) ॐ कल्याण करने वाले नमो स्वाहा (५७४) ॐ शान्त शरण देने वाले नमो स्वाहा (५७५) ॐ शरणागति की पीड़ा दूर करने वाले नमो स्वाहा (५७६) ॐ शुभ लक्षण युक्त अंग वाले नमो स्वाहा (५७७) ॐ शुभ अंगों वाले नमो स्वाहा (५७८) ॐ शुभ दर्शन वाले नमो स्वाहा (५७९) ॐ अग्निरुप नमो स्वाहा (५८०) ॐ वायुरुप नमो स्वाहा (५८१) ॐ सबको पवित्र करने वाले नमो स्वाहा (५८२) ॐ महाकाल स्वरुप नमो स्वाहा (५८३) ॐ मद (अभिमान) को दूर करने वाले नमो स्वाहा (५८४) ॐ लिंगाकार नमो स्वाहा (५८५) ॐ चिन्हरहित (अव्यक्त) नमो स्वाहा (५८६) ॐ व्यक्ताव्यक्त दोनों (उभय रूप) नमो स्वाहा (५८७) ॐ मुण्डमालाधारी नमो स्वाहा (५८८) ॐ कपालधारी नमो स्वाहा (५८९) ॐ विष्णु के प्यारे नमो स्वाहा (५९०) ॐ मृत्यु के स्वामी नमो स्वाहा (५९१) ॐ समय के प्रवर्तक नमो स्वाहा (५९२) ॐ दुष्टों का सर्वथा अभाव करने वाले नमो स्वाहा (५९३) ॐ नृत्य करने वाले नमो स्वाहा (५९४) ॐ नटों में श्रेष्ट नमो स्वाहा (५९५) ॐ नृत्य शास्त्र विद्वान नमो स्वाहा (५९६) ॐ अत्यन्त राग वाले नमो स्वाहा (५९७) ॐ राग से रहित नमो स्वाहा (५९८) ॐ वैराग्य को जानने वाले नमो स्वाहा (५९९) ॐ वसन्त का स्वरुप नमो स्वाहा (६००) ॐ वसन्त स्वामी नमो स्वाहा (६०१) ॐ जीवों के स्वामी नमो स्वाहा (६०२) ॐ वसन्त उद्भव कर्ता नमो स्वाहा (६०३) ॐ जीव रुपधारणकर्ता नमो स्वाहा (६०४) ॐ स्वयं जीव नमो स्वाहा (६०५) ॐ जीवदाता नमो स्वाहा (६०६) ॐ प्राणियों का बन्धन हरण करने वाले नमो स्वाहा (६०७) ॐ जीवों के जीवन नमो स्वाहा (६०८) ॐ प्राणियों के आधार नमो स्वाहा (६०९) ॐ वज्र स्वरुप नमो स्वाहा (६१०) ॐ वज्रहात धारणकर्ता नमो स्वाहा (६११) ॐ सुपर्ण नमो स्वाहा (६१२) ॐ अच्छे पराक्रम वाले नमो स्वाहा (६१३) ॐ रुद्राक्ष मालाधारी नमो

स्वाहा (६१४) ॐ सर्प भूषन प्रसन्न नमो स्वाहा (६१५) ॐ छाती से रुद्राक्ष धारी नमो स्वाहा (६१६) ॐ सिर में रुद्राक्षधारी नमो स्वाहा (६१७) ॐ रुद्राक्ष भक्षण कर्ता नमो स्वाहा (६१८) ॐ वासुकि में शोभित कण्ठ नमो स्वाहा (६१९) ॐ सर्प का कड़ाधारी नमो स्वाहा (६२०) ॐ वासुकि शोभित कर्ण वाले नमो स्वाहा (६२१) ॐ सर्प भूषणधारी नमो स्वाहा (६२२) ॐ भयानक रुप वाले नमो स्वाहा (६२३) ॐ मोहन रुपी नमो स्वाहा (६२४) ॐ सम्पूर्ण भोग युक्त नमो स्वाहा (६२५) ॐ भयानक पराक्रम वाले नमो स्वाहा (६२६) ॐ सबसे अधिक पवित्र नमो स्वाहा (६२७) ॐ किसी से भी न मारे जाने वाले नमो स्वाहा (६२८) ॐ सकल शक्ति वाले नमो स्वाहा (६२९) ॐ द्वन्द रहित (अद्वैत) नमो स्वाहा (६३०) ॐ सफल पराक्रम वाले नमो स्वाहा (६३१) ॐ योगियों के कल्पना किये जाने वाले नमो स्वाहा (६३२) ॐ कल्पना से भी अतीत नमो स्वाहा (६३३) ॐ वेष रहित (दिगम्बर) नमो स्वाहा (६३४) ॐ विकल्प रुप नमो स्वाहा (६३५) ॐ प्रलय नाश कर्ता नमो स्वाहा (६३६) ॐ प्रलय देवता नमो स्वाहा (६३७) ॐ प्रलय कर्ता नमो स्वाहा (६३८) ॐ प्रलयकाल स्वरुप नमो स्वाहा (६३९) ॐ कल्प रक्षा कर्ता नमो स्वाहा (६४०) ॐ सुलभ दुर्लभ नमो स्वाहा (६४१) ॐ तप और समाधि से प्राप्तकर्ता नमो स्वाहा (६४२) ॐ भक्तों के लिये अलभ्यकारी सफल कर्ता नमो स्वाहा (६४३) ॐ लाभ स्वरुप नमो स्वाहा (६४४) ॐ लाभदाता नमो स्वाहा (६४५) ॐ मुमुक्षों को मिलने वाले नमो स्वाहा (६४६) ॐ लोक मित्र नमो स्वाहा (६४७) ॐ वेदमय काया नमो स्वाहा (६४८) ॐ पृथ्वी में शयनकर्ता नमो स्वाहा (६४९) ॐ अन्नमय कोष नमो स्वाहा (६५०) ॐ पृथ्वी उत्पन्न कर्ता नमो स्वाहा (६५१) ॐ अभिलाषा किये जाने वाले नमो स्वाहा (६५२) ॐ पृथ्वी रुपधारी नमो स्वाहा (६५३) ॐ विज्ञानमय कोष नमो स्वाहा (६५४) ॐ आनन्दमय कोष नमो स्वाहा (६५५) ॐ प्राणमय कोष नमो स्वाहा (६५६) ॐ अन्नरुपी ब्रह्मदाता नमो स्वाहा (६५७) ॐ दयारुपी नमो स्वाहा (६५८) ॐ अमृत पूर्ण आंखे धारी नमो स्वाहा (६५९) ॐ भोजन न कर्ता नमो स्वाहा (६६०) ॐ पुत्र-कलत्र-रहित नमो स्वाहा (६६१) ॐ पदार्थ व्यापी नमो स्वाहा (६६२) ॐ आशा करने योग्य नमो स्वाहा (६६३) ॐ मायाधारी नमो

स्वाहा (६६४) ॐ मूकता नाशकर्ता नमो स्वाहा (६६५) ॐ सर्व हित चिन्तक नमो स्वाहा (६६६) ॐ सब हित कर्ता नमो स्वाहा (६६७) ॐ सब युग उत्पन्न कर्ता नमो स्वाहा (६६८) ॐ सदा सर्वदा पदार्थ प्रयोजन नमो स्वाहा (६६९) ॐ कपूर गौर वर्णधारी नमो स्वाहा (६७०) ॐ शस्त्रु नाशक नमो स्वाहा (६७१) ॐ जटाजुट शोभित नमो स्वाहा (६७२) ॐ प्रपंचरहित नमो स्वाहा (६७३) ॐ आधार रहित नमो स्वाहा (६७४) ॐ सत्व के स्वामी नमो स्वाहा (६७५) ॐ बल जानने वाले नमो स्वाहा (६७६) ॐ क्रोधनाशक नमो स्वाहा (६७७) ॐ समस्त जगत के आधार नमो स्वाहा (६७८) ॐ समस्त आनन्द कारक नमो स्वाहा (६७९) ॐ मुनियों से प्रणाम किये जाने वाले नमो स्वाहा (६८०) ॐ मुनियों के कमल निवासी नमो स्वाहा (६८१) ॐ मुनियों का समुहहि जीवन है जिसका नमो स्वाहा (६८२) ॐ ऊंचा शबद कर्ता नमो स्वाहा (६८३) ॐ शबद स्वरुप नमो स्वाहा (६८४) ॐ सेनाओं के स्वामी नमो स्वाहा (६८५) ॐ पापमोचन नमो स्वाहा (६८६) ॐ औषधियों में स्थित नमो स्वाहा (६८७) ॐ सुन्दर मुस्कान नमो स्वाहा (६८८) ॐ वनों के स्वामी नमो स्वाहा (६८९) ॐ चारों ओर विचरण कर्ता नमो स्वाहा (६९०) ॐ मन्त्रमय नमो स्वाहा (६९१) ॐ मन्त्र ज्ञान श्रेष्ठ नमो स्वाहा (६९२) ॐ कालाग्नि उत्पन्न तथा नाशकर्ता नमो स्वाहा (६९३) ॐ पृष्ठ नमो स्वाहा (६९४) ॐ चन्द्र, सूर्य, अग्नि नेत्रधारी नमो स्वाहा (६९५) ॐ क्षोभ न कर्ता नमो स्वाहा (६९६) ॐ क्षोभ से रहित नमो स्वाहा (६९७) ॐ भस्मी शरीरधारी नमो स्वाहा (६९८) ॐ वाघ्र चर्मधारी नमो स्वाहा (६९९) ॐ साम-गान-कर्ता नमो स्वाहा (७००) ॐ साम-गान वालों के प्रिय नमो स्वाहा (७०१) ॐ कैलाश शिखर निवासी नमो स्वाहा (७०२) ॐ स्वर्ण केशधारी नमो स्वाहा (७०३) ॐ सुवर्ण दृष्टिधारी नमो स्वाहा (७०४) ॐ स्वतन्त्र नमो स्वाहा (७०५) ॐ सर्व शास्त्रमय नमो स्वाहा (७०६) ॐ प्रणत जनो की पीड़ा हरने वाले नमो स्वाहा (७०७) ॐ नजदीक रहने वाले नमो स्वाहा (७०८) ॐ अत्यन्त दूर रहने वाले नमो स्वाहा (७०९) ॐ महा उत्सव वाले नमो स्वाहा (७१०) ॐ महान उदय वाले नमो स्वाहा (७११) ॐ ब्रह्मचारी नमो स्वाहा (७१२) ॐ सदाचारी नमो स्वाहा (७१३) ॐ पुराण पुरुष नमो स्वाहा (७१४) ॐ दमन न होने वाले नमो

स्वाहा (७१५) ॐ पीली आँखों वाले नमो स्वाहा (७१६) ॐ सब धर्म फलदाता नमो स्वाहा (७१७) ॐ अविद्या रहित नमो स्वाहा (७१८) ॐ विद्याओं के आश्रय नमो स्वाहा (७१९) ॐ क्षेत्रपाल नमो स्वाहा (७२०) ॐ गज के मारने वाले नमो स्वाहा (७२१) ॐ दया के सागर नमो स्वाहा (७२२) ॐ शत्रु नाशकारी नमो स्वाहा (७२३) ॐ शत्रु को ताप दाता नमो स्वाहा (७२४) ॐ कूर्म रुपधारी नमो स्वाहा (७२५) ॐ कल्की अवतारी नमो स्वाहा (७२६) ॐ ऋषभा—अवतारी नमो स्वाहा (७२७) ॐ मन्त्र मार्ग प्रधान नमो स्वाहा (७२८) ॐ मन्त्र मार्ग प्रवर्तक नमो स्वाहा (७२९) ॐ जती स्वरुप नमो स्वाहा (७३०) ॐ अलख निरंजन स्वरुप नमो स्वाहा (७३१) ॐ उत्पत्ति स्थान नमो स्वाहा (७३२) ॐ शून्य नमो स्वाहा (७३३) ॐ शून्य लीन नमो स्वाहा (७३४) ॐ निराकार शून्य देवता नमो स्वाहा (७३५) ॐ प्रकाश पुन्ज नमो स्वाहा (७३६) ॐ स्वामी से रहित नमो स्वाहा (७३७) ॐ गौओं के राजा नमो स्वाहा (७३८) ॐ गौओं के झुण्ड में घिरे हुये नमो स्वाहा (७३९) ॐ गौओं में प्रकाशवान नमो स्वाहा (७४०) ॐ नन्दी, सूर्य प्रिय नमो स्वाहा (७४१) ॐ वृषभ स्वरुप नमो स्वाहा (७४२) ॐ गौदानदाता नमो स्वाहा (७४३) ॐ गौरक्षा कर्ता नमो स्वाहा (७४४) ॐ चेतन स्वरुप नमो स्वाहा (७४५) ॐ चेतन के अध्यक्ष नमो स्वाहा (७४६) ॐ महाकाश नमो स्वाहा (७४७) ॐ उपद्रवों रहित नमो स्वाहा (७४८) ॐ जड़ रुप नमो स्वाहा (७४९) ॐ जड़ में रहना नमो स्वाहा (७५०) ॐ जड़ता नाशकारी नमो स्वाहा (७५१) ॐ जड़ों का ताप दूरकर्ता नमो स्वाहा (७५२) ॐ राम प्यारे नमो स्वाहा (७५३) ॐ लक्ष्मण से पूजिता नमो स्वाहा (७५४) ॐ विदस्त नदी को आनन्द दाता नमो स्वाहा (७५५) ॐ काशीवासी प्रिय नमो स्वाहा (७५६) ॐ नाटय कर्ता नमो स्वाहा (७५७) ॐ लोक रन्जन नमो स्वाहा (७५८) ॐ वैराग्य कर्ता विरक्ता नमो स्वाहा (७५९) ॐ पूजनीय नमो स्वाहा (७६०) ॐ वैराग्य धन सम्पन्न नमो स्वाहा (७६१) ॐ सबका भरना कर्ता नमो स्वाहा (७६२) ॐ भक्त के कल्पवृक्ष नमो स्वाहा (७६३) ॐ ग्रहणशील नमो स्वाहा (७६४) ॐ वृषभदेवा नमो स्वाहा (७६५) ॐ गौतम ऋषि मालाधारी नमो स्वाहा (७६६) ॐ बुद्धिमान नमो स्वाहा (७६७) ॐ बुद्धिवालों के गुरु नीरुप नमो स्वाहा (७६८) ॐ ममता

रहित नमो स्वाहा (७६९) ॐ शान्तिशील नमो स्वाहा (७७०) ॐ दोषरहित नमो स्वाहा (७७१) ॐ आग्रह रहित नमो स्वाहा (७७२) ॐ दम्भ रहित नमो स्वाहा (७७३) ॐ रसो रहित नमो स्वाहा (७७४) ॐ नील रुप नमो स्वाहा (७७५) ॐ नेता नमो स्वाहा (७७६) ॐ नेताओं में श्रेष्ट नमो स्वाहा (७७७) ॐ मुक्ति के नेता नमो स्वाहा (७७८) ॐ नित्य स्थिति वाले नमो स्वाहा (७७९) ॐ निर्णयकर्ता नमो स्वाहा (७८०) ॐ कल्याणयुक्त भाव वाले नमो स्वाहा (७८१) ॐ भावस्वरुप नमो स्वाहा (७८२) ॐ संसार आत्मा नमो स्वाहा (७८३) ॐ संसार स्वरुप नमो स्वाहा (७८४) ॐ भव बन्धन विनाशी नमो स्वाहा (७८५) ॐ कल्याणदाता नमो स्वाहा (७८६) ॐ भय रक्षा कर्ता नमो स्वाहा (७८७) ॐ ऐश्वर्यवान नमो स्वाहा (७८८) ॐ शिव स्वरुप उत्पत्ति शील नमो स्वाहा (७८९) ॐ प्रेमी नमो स्वाहा (७९०) ॐ सबके प्रिय नमो स्वाहा (७९१) ॐ प्रेमकर्ता प्रेम स्वरुप नमो स्वाहा (७९२) ॐ नीतिरुप नमो स्वाहा (७९३) ॐ नीति वाले नीति उत्पत्तिकर्ता नमो स्वाहा (७९४) ॐ महातेज नमो स्वाहा (७९५) ॐ परब्रह्म नमो स्वाहा (७९६) ॐ परमपद नमो स्वाहा (७९७) ॐ परब्रह्म लीन नमो स्वाहा (७९८)ॐ सबसे पुरातन नमो स्वाहा (७९९) ॐ पुष्कर रुप नमो स्वाहा (८००) ॐ पुष्कर अध्यक्ष नमो स्वाहा (८०१) ॐ पुष्कर रहीवासी नमो स्वाहा (८०२) ॐ अद्वैतात्मा नमो स्वाहा (८०३) ॐ अशगनिय नमो स्वाहा (८०४) ॐ राजा-माननीय नमो स्वाहा (८०५) ॐ जगत के पोषक नमो स्वाहा (८०६) ॐ पुंण्यात्माओं प्रेमी नमो स्वाहा (८०७) ॐ पुण्यात्माओं आश्रित नमो स्वाहा (८०८) ॐ विष्णुप्रियो नमो स्वाहा (८०९) ॐ वायुदाता नमो स्वाहा (८१०) ॐ पवनहारी नमो स्वाहा (८११) ॐ वायु सेवनधारी नमो स्वाहा (८१२) ॐ मात्सर्य रहित नमो स्वाहा (८१३) ॐ बिल्व-पत्रधारी नमो स्वाहा (८१४) ॐ बिल्व मालाधारी नमो स्वाहा (८१५) ॐ शून्य आश्रित नमो स्वाहा (८१६) ॐ बिल्ववृक्ष नीचे तपकर्ता नमो स्वाहा (८१७) ॐ बिल्ववृक्ष स्वामी नमो स्वाहा (८१८) ॐ बिल्वभक्त नमो स्वाहा (८१९) ॐ इन्द्रिय निग्रहकर्ता नमो स्वाहा (८२०) ॐ शिवमन्त्र धारी नमो स्वाहा (८२१) ॐ शिव योगधारी नमो स्वाहा (८२२) ॐ शिव प्रिय नमो स्वाहा (८२३) ॐ संसार-संहार कर्ता नमो स्वाहा (८२४) ॐ

स्कन्द (कार्तिकेय) प्रेमी नमो स्वाहा (८२५) ॐ आकर्षण करने अयोग्य नमो स्वाहा (८२६) ॐ सरलयोगी नमो स्वाहा (८२७) ॐ क्षमा नमो स्वाहा (८२८) ॐ शक्तिवान नमो स्वाहा (८२९) ॐ अक्षमा रहित नमो स्वाहा (८३०) ॐ ज्ञान ज्ञानी नमो स्वाहा (८३१) ॐ ज्ञानदाता नमो स्वाहा (८३२) ॐ ज्ञानवन्त नमो स्वाहा (८३३) ॐ ज्ञान अगम्य नमो स्वाहा (८३४) ॐ क्षमा स्वामी नमो स्वाहा (८३५) ॐ पृथ्वी विचरणकर्ता नमो स्वाहा (८३६) ॐ क्षमा आचारी नमो स्वाहा (८३७) ॐ तत्व ज्ञानी नमो स्वाहा (८३८) ॐ तन्त्रज्ञानी नमो स्वाहा (८३९) ॐ तन्त्र शास्त्रकर्ता नमो स्वाहा (८४०) ॐ तन्त्र सिद्ध कर्ता नमो स्वाहा (८४१) ॐ तन्त्र सिद्धि के तत्वज्ञाता नमो स्वाहा (८४२) ॐ तन्त्रमय नमो स्वाहा (८४३) ॐ बालतन्त्र ज्ञाता नमो स्वाहा (८४४) ॐ यन्त्र मंत्र फलदाता नमो स्वाहा (८४५) ॐ मन्त्र ज्ञानी नमो स्वाहा (८४६) ॐ मन्त्र शास्त्र कर्ता नमो स्वाहा (८४७) ॐ मन्त्र सिद्धि कर्ता नमो स्वाहा (८४८) ॐ मन्त्र सिद्धि तत्वज्ञाता नमो स्वाहा (८४९) ॐ मन्त्र सिद्धि तत्व ज्ञाता नमो स्वाहा (८५०) ॐ मन्त्रमय नमो स्वाहा (८५१) ॐ सर्वमन्त्र ज्ञाता नमो स्वाहा (८५२) ॐ मन्त्र फलदाता नमो स्वाहा (८५३) ॐ गोरक्ष रुप नमो स्वाहा (८५४) ॐ गोरक्ष के स्वामी नमो स्वाहा (८५५) ॐ गायों से सिद्ध नमो स्वाहा (८५६) ॐ गोमती के प्यारे नमो स्वाहा (८५७) ॐ गोरक्षकर्ता नमो स्वाहा (८५८) ॐ गौ वाले नमो स्वाहा (८५९) ॐ गौओं के राजा नमो स्वाहा (८६०) ॐ गोपों के स्वामी नमो स्वाहा (८६१) ॐ अज्ञान विनाशी नमो स्वाहा (८६२) ॐ सब कामनाओं परिपूर्ण नमो स्वाहा (८६३) ॐ सब इष्टदेवा नमो स्वाहा (८६४) ॐ सब इष्टदाता नमो स्वाहा (८६५) ॐ सर्वमय नमो स्वाहा (८६६) ॐ इन्द्रिय शमनीय नमो स्वाहा (८६७) ॐ शुद्ध ज्योति स्वरुप नमो स्वाहा (८६८) ॐ स्वतन्त्र नमो स्वाहा (८६९) ॐ अविरोधी नमो स्वाहा (८७०) ॐ सदा जाग्रत नमो स्वाहा (८७१) ॐ सिद्धों से सेवित नमो स्वाहा (८७२) ॐ धर्म स्वरुप नमो स्वाहा (८७३) ॐ धर्म शास्त्र कर्ता नमो स्वाहा (८७४) ॐ सर्व धर्म शास्त्र कर्ताओं में श्रेष्ठ नमो स्वाहा (८७५) ॐ धर्म जानने वाले नमो स्वाहा (८७६) ॐ धर्मधारी नमो स्वाहा (८७७) ॐ धर्म के सेतु नमो स्वाहा (८७८) ॐ धर्म के

राजा नमो स्वाहा (८७९) ॐ धर्म मार्ग चालक नमो स्वाहा (८८०) ॐ धर्म प्रवर्तक नमो स्वाहा (८८१) ॐ धर्म प्रधान नमो स्वाहा (८८२) ॐ धर्म आचार्य नमो स्वाहा (८८३) ॐ धर्माचरण कर्ता नमो स्वाहा (८८४) ॐ धर्मयुक्त नमो स्वाहा (८८५) ॐ धर्मज्ञानी नमो स्वाहा (८८६) ॐ धर्मज्ञानियों में सर्वप्रथम नमो स्वाहा (८८७) ॐ धर्मात्मा नमो स्वाहा (८८८) ॐ कपिला अवतारी नमो स्वाहा (८८९) ॐ धर्म मर्म ज्ञाता नमो स्वाहा (८९०) ॐ धर्मशास्त्र में पारगमी नमो स्वाहा (८९१) ॐ संसार कर्ता नमो स्वाहा (८९२) ॐ लोग धारणीय नमो स्वाहा (८९३) ॐ संसार पालन पोषण कर्ता नमो स्वाहा (८९४) ॐ असुर-राक्षस संहारकर्ता नमो स्वाहा (८९५) ॐ सब कुछ जानने वाले नमो स्वाहा (८९६) ॐ संसार की आपत्तियों को काटने वाले नमो स्वाहा (८९७) ॐ पापों को दूर कर्ता नमो स्वहा (८९८) ॐ पुण्यकर्ता नमो स्वाहा (८९९) ॐ गुणवाले नमो स्वाहा (९००) ॐ गुण से युक्त नमो स्वाहा (९०१) ॐ गुणों के योग्य नमो स्वाहा (९०२) ॐ गिने जाने वाले नमो स्वाहा (९०३) ॐ गुणों के प्रेमी नमो स्वाहा (९०४) ॐ गुणों के ज्ञानी नमो स्वाहा (९०५) ॐ पूजनीय गुण वाले नमो स्वाहा (९०६) ॐ गुण-तंत्र मार्ग के प्रधान-प्रवर्तक को नमो स्वाहा (९०७) ॐ गुणों के मंत्र नमो स्वाहा (९०८) ॐ गुणों से लोगों के मन को आनन्दित करने वाले नमो स्वाहा (९०९) ॐ गुणों के आधार नमो स्वाहा (९१०) ॐ गुणों के स्वामी नमो स्वाहा (९११) ॐ गुणियों से प्रशंसित नमो स्वाहा (९१२) ॐ गुणियों के प्यारे नमो स्वाहा (९१३) ॐ गुणों के उत्पत्ति स्थान नमो स्वाहा (९१४) ॐ गुण सर्वश्रेष्ठ नमो स्वाहा (९१५) ॐ गुणों को देने वाले नमो स्वाहा (९१६) ॐ गुणों से शोभित नमो स्वाहा (९१७) ॐ गर्ग मुनि के प्यारे नमो स्वाहा (९१८) ॐ गर्ग के इष्टदेव नमो स्वाहा (९१९) ॐ गर्ग से प्रणाम किये गये नमो स्वाहा (९२०) ॐ गर्ग को आनन्द दाता नमो स्वाहा (९२१) ॐ गर्ग प्रशंसित नमो स्वाहा (९२२) ॐ गर्ग को वरदान दाता नमो स्वाहा (९२३) ॐ वेद से जानने योग्य नमो स्वाहा (९२४) ॐ वेद विद्या वाले नमो स्वाहा (९२५) ॐ वेदों से वंदनीय नमो स्वाहा (९२६) ॐ वेद जानने वाले आचार्य नमो स्वाहा (९२७) ॐ वेदान्त से जानने योग्य नमो स्वाहा (९२८) ॐ वेदान्त के प्रणेता

नमो स्वाहा (९२९) ॐ वेदान्त के भी पार जाने वाले नमो स्वाहा (९३०) ॐ सुवर्ण वीर्यवान नमो स्वाहा (९३१) ॐ हवन किये गये को खाने वाले नमो स्वाहा (९३२) ॐ श्वेत वर्ण वाले नमो स्वाहा (९३३) ॐ हिमालय पर्वत के स्वरुप नमो स्वाहा (९३४) ॐ हयग्रीव का अवतारी नमो स्वाहा (९३५) ॐ सोने की माला पहनने वाले नमो स्वाहा (९३६) ॐ घोडों के स्वामी नमो स्वाहा (९३७) ॐ उच्च श्रवा नमो स्वाहा (९३८) ॐ सुवर्ण शरीरधारी नमो स्वाहा (९३९) ॐ शक्ति वाले नमो स्वाहा (९४०) ॐ शक्तिदाता नमो स्वाहा (९४१) ॐ शक्ति के नाथ नमो स्वाहा (९४२) ॐ अत्यन्त शक्ति सम्पन्न नमो स्वाहा (९४३) ॐ समर्थ वाले नमो स्वाहा (९४४) ॐ माया से रहित शुद्ध नमो स्वाहा (९४५) ॐ शक्ति से सिद्ध किये जाने वाले नमो स्वाहा (९४६) ॐ शक्ति हरन कर्ता नमो स्वाहा (९४७) ॐ शक्ति के कारण नमो स्वाहा (९४८) ॐ सभी गुण युक्त नमो स्वाहा (९४९) ॐ सर्व प्रकार ऐश्वर्यदाता नमो स्वाहा (९५०) ॐ त्रिपुण्ड चंदनधारी नमो स्वाहा (९५१) ॐ वैराग्यवान नमो स्वाहा (९५२) ॐ सन्यास रूपी नमो स्वाहा (९५३) ॐ हस्ती चर्मधारी नमो स्वाहा (९५४) ॐ शिव स्वरुप नमो स्वाहा (९५५) ॐ गजासुर नाशकर्ता नमो स्वाहा (९५६) ॐ भूत वेताल से शोभित नमो स्वाहा (९५७) ॐ श्मशान रहिवासी नमो स्वाहा (९५८) ॐ जंगल में विचरण वाले नमो स्वाहा (९५९) ॐ खप्परधारी नमो स्वाहा (९६०) ॐ कर्मों के साक्षी नमो स्वाहा (९६१) ॐ कर्म कर्ता नमो स्वाहा (९६२) ॐ कर्म और अकर्म का फलदाता नमो स्वाहा (९६३) ॐ कर्म सामर्थ्यवान नमो स्वाहा (९६४) ॐ शुभ कर्मदाता नमो स्वाहा (९६५) ॐ शुभ कर्मकर्ता नमो स्वाहा (९६६) ॐ कर्म बन्धन से दूर करने वाले नमो स्वाहा (९६७) ॐ शुभ कर्म करने वाले गुरु नमो स्वाहा (९६८) ॐ गौओं के कष्ट दूर करने वाले नमो स्वाहा (९६९) ॐ गौओं के सन्ताप दूर कर्ता नमो स्वाहा (९७०) ॐ गौओं की वृद्धिकर्ता नमो स्वाहा (९७१) गौओं को दानदाता नमो स्वाहा (९७२) ॐ गौओं के सौभाग्य बढ़ाने वाले नमो स्वाहा (९७३) ॐ गौ गायत्री उत्पत्ति कर्ता नमो स्वाहा (९७४) ॐ गौ कामधेनु प्रिय नमो स्वाहा (९७५) ॐ ज्ञान चक्षुधारी नमो स्वाहा (९७६) ॐ चक्षु दानी नमो स्वाहा (९७७) ॐ गुप्त से गुप्त गोरक्ष नमो स्वाहा

(९७८) ॐ अत्यन्त प्रगट नमो स्वाहा (९७९) ॐ ज्योति स्वरुप नमो स्वाहा (९८०) ॐ सत स्वरुप नमो स्वाहा (९८१) ॐ शून्य ध्यानी नमो स्वाहा (९८२) ॐ मत्स्येन्द्र प्रिया नमो स्वाहा (९८३) ॐ अत्यन्त प्रिय शिष्य नमो स्वाहा (९८४) ॐ महायोग सिद्ध नमो स्वाहा (९८५) ॐ पंच तत्व वशीभूत कर्ता नमो स्वाहा (९८६) ॐ तीन लोक प्रिय नमो स्वाहा (९८७) ॐ मृत्युंजय स्वरुप नमो स्वाहा (९८८) ॐ केवल योग द्वारा प्राप्ति को प्राप्त करने वाले नमो स्वाहा (९८९) ॐ भैरव शक्ति रुप नमो स्वाहा (९९०) ॐ शाबर मन्त्र प्रचिता नमो स्वाहा (९९१) ॐ तन्त्र मन्त्र महासिद्ध नमो स्वाहा (९९२) ॐ योग्य मार्गदशक नमो स्वाहा (९९३) ॐ सर्व सर्वत: गुरु सतगुरु स्वरुप नमो स्वाहा (९९४) ॐ गुढात्मा नमो स्वाहा (९९५) ॐ गुहयातीत गुहय ज्ञानी नमो स्वाहा (९९६) ॐ अपूर्व पुरुष नमो स्वाहा (९९७) ॐ नाथ पंथ के आर्भिभावी निर्माण नमो स्वाहा (९९८) ॐ सभी जिसके वृणि हो नमो स्वाहा (९९९) ॐ असंख्य मार्ग द्वार से आत्म दर्शन आत्मज्ञान प्रगट कर्ता नमो स्वाहा। (१०००) ॐ शिव गोरक्ष योगी नमो स्वाहा।

हवन क्रिया के पश्चात साधक योगेश्वर ने अग्नि देवता को बेलपत्री पुष्प, अष्टगंध अक्षदा इ० समोपचारे या पंचोपचार या षोडशोपचार या यथा लब्धोपचार से पूजन करे तथा निम्न पंच अग्नि पाठ पढ़कर हवन करे।

पंच अग्नि-पाठ तथा हवन

हवन– गौघृत, साकल्य, पंचामृत, खीर इ० हवनीय सामग्री

दिशा- अग्नेय, मुद्रा- शुकरी संख्या- ५ बार या १०८ बार

(१) सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ मूल अग्नि को नमो आदेश।

ॐ मूल अग्नि का रेचक नाम। सोखले रक्त पीत और आव। पेट पूठ दो सम रहे। तो मूल अग्नि जती गोरख कहे॥ ॐ मूल अग्नि नमो स्वाहा।

(२) ॐ भुयंगम अग्नि को नमो आदेश।

भुयंगम अग्नि का भुयंगम नाम। तजि बा भिक्षा भोजन ग्राम। मूल की मूस अमृत स्थिर। उसे कहो हे सिद्धों पवन का शरीर॥ ॐ भुयंगम अग्नि नमो स्वाहा।

(३) ॐ ब्रह्म अग्नि को नमो आदेश। ब्रह्म अग्नि ब्रह्म नली धरी लेऊ जान। उलटंत पवना रवि—शशी गगन समान। ब्रह्म अग्नि मध्ये सीझिबा कपूरं तिस को देख मन जाये बा दूर। शिव धरे, शक्ति अहेनिस रहे। ब्रह्म अग्नि जती गोरख कहे।। ॐ ब्रह्म अग्नि नमो स्वाहा।

(४) ॐ काल अग्नि को नमो आदेश। काल अग्नि तिन भवन प्रवानी। उलटंत पवना मोखंत पानी। खाया पिया खाख होय रहे। काल अग्नि जती गोरख कहे।। ॐ काल अग्नि नमो स्वाहा।

(५) ॐ रुद्र अग्नि को नमो आदेश। रुद्र अग्नि का त्राटिका नाम। सुख ले होठ कंठ पेट पीठ नव ठाम। उलटंत केस पलटंत चाम। उसे कहे सिद्धों त्राटिका नाम।। ॐ रुद्र अग्नि नमो स्वाहा।

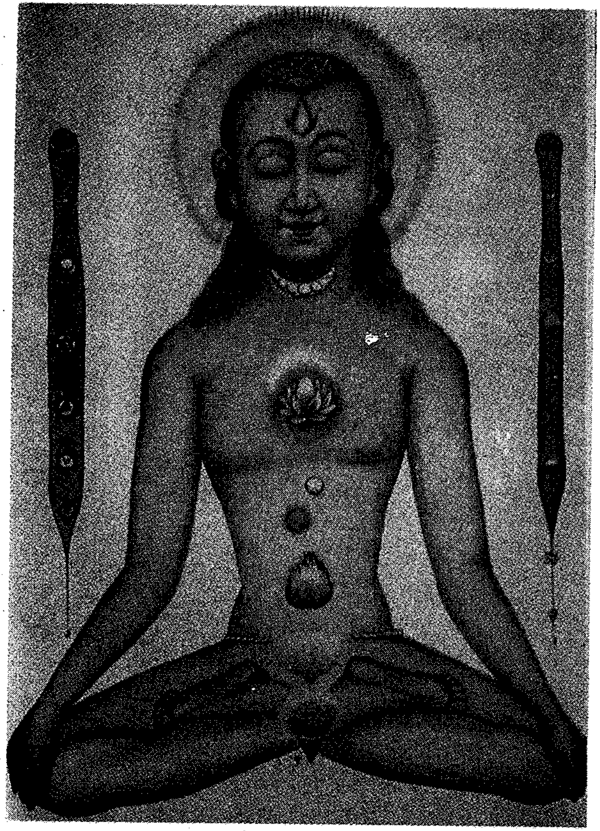
रुद्र रेवती संजमे खिवन्ती। योग जुगती करि साधत योगी। पंच अग्नि भरपूर रहे। सिद्धों संकेत श्री गोरख कहे।। ॐ पंच अग्नि नमो स्वाहा। पूरिको पीवत वायु कुंभक को काया शोधन। रेचकों तजत विकार त्राटिको अवागमन बिबरजंत।। सिद्धों का मार्ग कोई साधु जाने। पंच अग्नि गुरु गोरख बखाने। पांचो अग्नि सम्पूर्ण भया। अनंत सिद्धों त्र्यंबक क्षेत्र अनुपान शिला बैठकर पढ़ कथ कर सुनाया।

इति गुरु गोरक्षनाथ नमो स्वाहा।

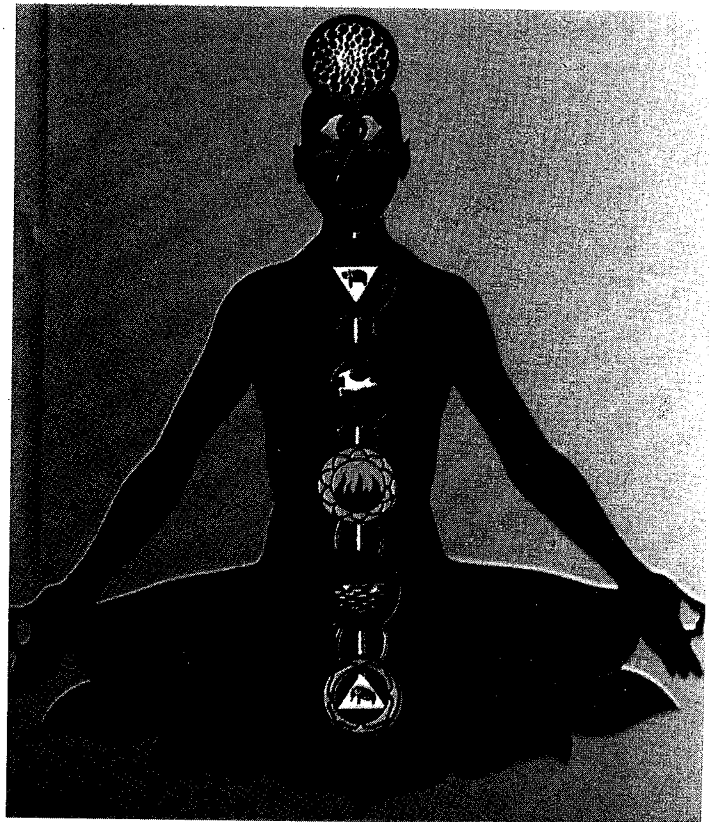
इतना हवन—क्रियायें सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

योग सिद्धियाँ

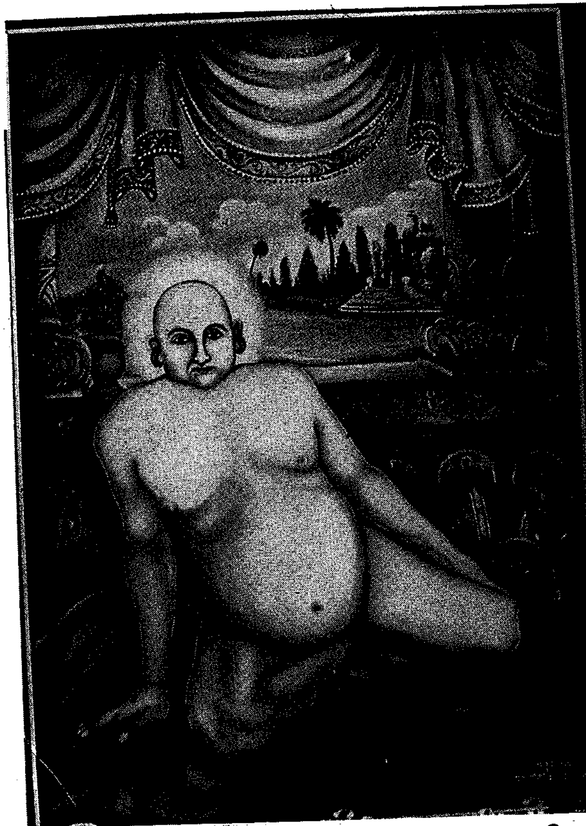
श्री नाथ योगेश्वर जब अपनी साधना में योग क्रियायें करते हैं। अर्थात अपने समस्त काया को तपाते हैं। तब यह पंच अग्नि शरीर के अन्दर चेतन होते हैं। गुरु गोरक्ष नाथ जी कहते हैं कि जब योगेश्वर प्राणायाम योग साधना के लिये, एकान्त जगह कुशासन या मृगासन बाघाम्बर आसन या कम्बल डालकर आसन के ऊपर पदमासन, गोरक्षासन या सिद्धासन लगा के बैठते हैं। तब प्राणायाम क्रिया शान्तचित्त और एकाग्रता से करते हैं। प्रथम सतगुरु स्मरण करके आंखे बंद करके दोनों दृष्टि भ्रूमध्य पर केन्द्रित करते हैं। काया के अंदर गुदा + लिंग के मध्य से लेकर रीढ की हड्डी से होते हुए मस्तक मध्य



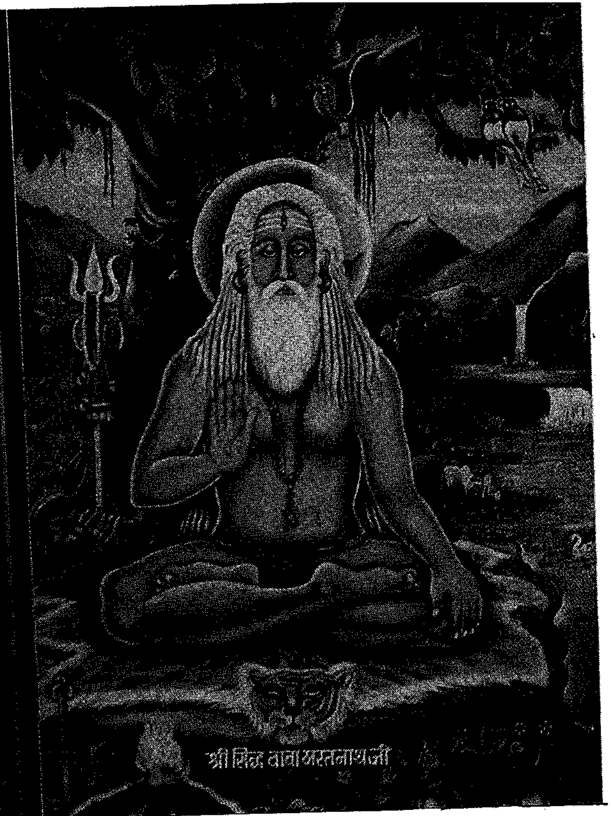
महा योग चक्र दर्शन



खडदर्शन कुण्डलिनी योग दर्शन



सिद्धयोगी अवधूत अमृतनाथ जी पंथ–मन्नाथी पंथ



सिद्धयोगी बाबा मस्तनाथ जी पंथ–आई पंथ

नाथ सम्प्रदाय के कुछ सिद्ध योगेश्वर

तक इडा पिंगला दो नाड़ी के बीच सुषुम्ना नाड़ी होती है इसके जड़ में कुण्डलिनी सर्प के भांति लपेटी होके सुप्त अवस्था में होती है। प्राणायाम द्वारा वह जाग्रति करते हैं। अब प्राणायाम विधि से अर्थात प्रथम नासिका के दक्षिण छिद्र को दायें हाथ के अंगूठे से बंद करके नाक के बायें छिद्र से वायु (प्राणवायु) धीरे–धीरे शरीर के भीतर भरे वायु समस्त शरीर में प्रवेश होने के पश्चात उसी हाथ के तर्जनी से बायें नासिका छिद्र बंद करके दायें नाक के छिद्र से वह वायु धीरे–धीरे बाहर छोड़े फिर पलटकर नासिका के बायें छिद्र को दबाते हुए दायें छिद्र से वायु (प्राणवायु) शरीर के अंदर भरे फिर बायां नासिका छिद्र बंद करके वायु बाहर छोड़े नासिका छिद्र को चन्द्र–सूर्य नासिका भी कहते हैं। इस प्रकार एक प्राणायाम पूर्ण होता है। जब वायु शरीर के अंदर धीरे, मंद गति से लेते हैं उसे पूरक कहते हैं जब वायु शरीर के भीतर प्रविष्ट होकर अंदर घट के भांति स्थिर करते हैं उसे कुंभक कहते हैं। अतः वायु शरीर के बाहर धीरे–धीरे छोड़ते या निकालते हैं उसे रेचक कहते हैं। इस योग क्रिया से प्राण–अपान को मिथः मिलाना या अकस्मात प्राण गति विच्छेद करना इसे संघटकरण प्राणायाम कहते हैं। इस समय योगी साधारणता ॐ मन्त्र की मात्रा लगा के मन्त्र उच्चारण करके प्राणायाम करते हैं। इसमें अपने गुरु मन्त्र का भी प्रयोग करते हैं या ॐ शिव गोरक्ष योगी इस शाबर बीज मन्त्र का भी उपयोग करते हैं। प्राणायाम मात्रा धीरे–धीरे बढ़ाते जाते हैं। मात्रा इस प्रकार है कि–

प्राणायाम	पूरक	कुम्भक	रेचक
कनिष्ठ प्राणायाम	१२	४८	२४
मध्यम प्राणायाम	२४	९६	४८
उत्तम प्राणायाम	३६	१४४	७२

इस प्रकार प्राणायाम करने से प्रथम शरीर को पसीना आता है। तब कनिष्ठ प्राणायाम अवस्था है। जब शरीर का कम्पन होने लगता है तब मध्यम प्राणायाम अवस्था होती है और जब शरीर आसन से ऊपर उठने लगता है। तब उत्तम प्राणायाम अवस्था होती है और नेती धोती इत्यादि षटकर्म करने के पश्चात इस प्राणायाम का अभ्यास करने से उत्तम प्राणायाम से या योग

समाधि तक जल्द तथा सहायक होता है और साधना में परिपक्वता आती है। अब साधक अनायास अखण्डात्मक स्वरुप स्थित होता है और उसे उन्मनी अवस्था का अनुभव होता है और सहज भाव समाधि पर साधक आरुढ़ होता है और आगे अभ्यास बढ़ाने से साधक शून्य या जड़ समाधि में सिद्ध होता है। अत: इन अवस्थाओं में योगेश्वर अलौकिक शब्द सुनता है। संभाषण करता है और आखिर उसे नाद सुनाई देता है। वह नाद ढोल बजाने के, कभी बादलों की गरजने की कभी तार छेड़ने की तो कभी बांसुरी की अन्तिम अवस्था में वह घंटा नाद सुनता है और भी आगे ऐसे २१ शून्य पार करके ज्योति स्वरूप को प्राप्त होता है। उसे जती की उपाधि मिलती है। इन अवस्थाओं में ही इतिहास पूर्व महात्माओं ने, योगियों ने, धर्मग्रन्थ वेद सुने, पुराणों की रचना हुई, जीवन के अनेक रहस्य खुले बिल्कुल यह अवस्था गुरु गोरक्षनाथ जी ने प्राप्त की थी।

अत: इन सभी अवस्था के पूर्व अवस्था में जब योगी वायु का (प्राणवायु) का रेचक करता है तब मूल अग्नि प्रगट होती है। शरीर की रक्त पीत्त, आव, सभी बीमारियां भस्म होती है। जब योगी भिक्षा भोजन त्याग कर अर्थात अन्न पानी त्यागकर योग में वह अमृत रसपान करता है। तब भुयंगम अग्नि प्रगटता है। जब साधना में प्राणायाम करने से कुण्डलिनी जाग्रत होती है। तब सूर्य नाड़ी और चन्द्रनाड़ी में प्राण वायु (उन्मनी) उर्ध्व रेता होता है। ब्रह्म-रन्द्र में शिव और शक्ति (कुण्डलिनी) मिलन होता है तब ब्रह्म अग्नि प्रगट होता है। इसी अवस्था में इन पिंगला और सुषुम्ना के प्रवाह तीसरे भवन अर्थात सहस्त्रगार दसवें द्वार में आते हैं तब अन्न पानी भस्म करने वाला काल अग्नि प्रगटत है। जब योगीयों के दोनों आंखों के त्रिपुटी में प्रकाश निर्माण होता है जिसे योगी तीसरी आँख खुलने का प्रमाण देते हैं जब योगी के होठ, कंठ सूख जाते हैं और बाल तथा त्वचा में परिवर्तन आता है। उसे काया कल्प भी कहते हैं इस अवस्था में पांचवा अग्नि, रुद्र अग्नि निर्माण होता है। इस प्रकार साधक इन पंच अग्नि द्वारा अपनी अन्तिम अवस्था को पा लेता

है। योगी खुद एक अग्नि कुण्ड है। यज्ञ है, धूनी है। जिसने साधना की क्रियाओं का हवन बार–बार अभ्यास द्वारा (अनेक आहुतियां) देकर योगी की अवस्था को प्राप्त कर सकता है। अन्तिम ज्योति स्वरुप मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करता है।

पंच धूनी सिद्धि क्रिया

कुछ योगेश्वर मन्त्र सिद्धि के लिये पांच धूनी चेतन करते हैं। योगेश्वर मध्य में अपना आसन लगाते हैं सवा हाथ दूरी पर चार कोन में चार धूनी चेताते हैं और पांचवी मुख्य धूनी उत्तर दिशा में या अपने शीश के ऊपर चेतन करके पूजा हवन करके या मन्त्र अक्षदा संख्यानुसार, उतना ही कोटि संख्या जप करता है। ॐ शिव गोरक्ष योगी इस मन्त्र की ७ अक्षर संख्या है तो ७ कोटि मन्त्र जाप करते हैं। इससे मन्त्र सिद्ध होकर अग्नि वशी सिद्धि प्राप्त करता है।

१०८ धूनी या बत्तीस धूनी भण्डारा

इसी प्रकार १०८ धूनी या बत्तीस धूनी भण्डारा होता है। इस स्थान पर १०८ धूनी या ३२ धूनी चेतन करते हैं। बत्तीस धूनी के ३२ या १०८ धूनी के १०८ महन्त पीरों का मान होता है। पूजा–हवन–जाप–साधना की समाप्ति भण्डारा तथा विदाई (चिप्पी दान) देकर करते हैं। मानधारियों को डबल विदाई देते हैं। वस्त्र, कम्बल इ० योग्यता अनुसार तथा भेष के मर्यादा अनुसार और अपने–अपने पात्रता अनुसार बड़े से बड़े स्वरुप में भण्डारे करते हैं। यह प्रथा बहुत पुरानी थी। अब बहुत कम प्रमाण में ऐसे भण्डारे होते हैं। इसी प्रकार धूनी के अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्ति करते हैं।

जलतत्व से मन्त्र सिद्धि

योगेश्वर बहते हुये जल धाराओं में, घुटने तक या कटिबंध तक या नाभी तक या गले तक जल में खड़े होकर तथा जल में आसन लगा के रोज सुबह आठ घण्टे या चार घण्टे तक शाम को ४ घण्टे या ६ घण्टे मन्त्र जाप करके सिद्धियाँ प्राप्ति करते हैं। मन्त्र अनुसार ४१ दिन की साधना करते हैं। कोई विरला १२ साल पूर्ण तपस्या करते हैं। इससे जलवसी सिद्धि को प्राप्त होते हैं। यह साधना महाराष्ट्र में राजा शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास स्वामी ने

टांकली ग्राम में पंचवटी नासिक गोदावरी के जल में १२ साल की। वे बड़े सिद्ध योगेश्वर थे। कोई योगेश्वर केवल जल प्राशन करके मन्त्र जाप करते हैं और सिद्धि प्राप्त करते हैं। आजकल केवल जल में पैर रखकर जाप करते हैं। जल तत्व सहवास में मन्त्र सिद्धि जल्द प्राप्त होती है।

पवनहारी सिद्धि

यह सिद्धियाँ योगेश्वर उत्तम प्राणायाम द्वारा प्राप्त करते हैं। योगेश्वर ऊंची पहाड़ियों में या पर्वतीय क्षेत्र में जहां शुद्ध हवा प्राप्त हो ऐसी एकांत जगह चुनकर वहाँ (प्रथम वर्णित) प्राणायाम क्रिया द्वारा पवन को शरीर में भरता है। योग्य प्राणायाम विधि युक्त अभ्यास करते हुए आसन का समय बढ़ाकर आसन सिद्ध करते हैं तथा मन्त्र अर्थात (गुरुमन्त्र) या इष्ट मन्त्र की मात्रा बढ़ाते हैं। अपने शरीर के योग्य पात्रता अनुरुप प्रथम २ समय का भोजन लेते हैं। कुछ दिन पश्चात १ समय के भोजन की शरीर को आदत लगाते हैं। फिर कुछ दिन पश्चात २ समय फल, दूध तदन्तर १ समय फल/दूध लेते हैं। फिर केवल २ या बाद में १ समय केवल दूध लेते हैं। उसके पश्चात केवल जल लेते हैं। अन्त में शरीर को इन आदतों से कम मात्रा करते हुए अन्त में केवल प्राणायाम द्वारा पवन का आहार लेते हैं तथा काकी, खेचरी जैसी मुद्रओं का अभ्यास करके आहार पूर्ण नियंत्रित करके पवन आहार लेते हैं ओर इस प्रकार पवन हारी क्रिया से अनेक सिद्धियों को प्राप्त होते हैं यह क्रिया सबसे श्रेष्ठ व उत्तम मानते हैं। इससे पांच तत्व के ऊपर विजय प्राप्त कर पंचतत्व वशीभूत करते हैं। इस साधना का समय काफी लंबा तथा ज्यादा दिन लगते हैं क्योंकि शरीर की आदतों को कम करना और मन के संस्कार को मिटाना बहुत कठिन है जिसको ज्यादा दिन लगते हैं। अंत में योगेश्वर शून्य समाधि, जड़त्व ध्यान तथा समाधिस्थ अवस्था प्राप्त कर अमृत पान करते हैं। योगी दीर्घायुशी होते हैं। जलवशी जल पर चलना, पवन वशी हवा में उड़ना, अपने स्वरुप को अति सूक्ष्म तथा अति विशाल बनाना, ब्रह्माण्ड विचरना, सिद्ध महात्माओं से प्रत्यक्ष दर्शन एवं वार्तालाभ इत्यादि सिद्धि या साधना प्रगति क्रमानुसार मिलती है। अति उत्कृष्ट साधना योगेश्वर को इक्कीस शून्य लांघकर ज्योति स्वरुप को प्राप्ति करवाती है। इस प्रकार की साधना केवल

आदिनाथ तथा गुरु गोरक्षनाथ जी ने प्राप्त की है। सुना है कि तिब्बतीय वनों में तथा नेपाल, नागालैण्ड प्रदेशों में पवन हारी महात्मा वास्तव्य करते हैं और वहां केवल अति उत्कृष्ट योगेश्वर ही जा पाते हैं।

तेज तत्व (सूर्य-चन्द्र) सिद्धियाँ

कुछ योगेश्वर सूर्य गायत्री बीज मन्त्र (पृष्ठ संख्या २५७) का सूर्याभिमुख बैठकर जाप करते हैं। सूर्य स्नान में काया तपाते हैं। यह हटयोग क्रियायें ४१ दिन व्रत लेकर करते हैं। कुछ नित्य नियम से १२ मास करते हैं। मन्त्र सिद्ध करते हैं। यह साधक केवल लंगोटी लगाते हैं। सूर्य की तरफ सूर्य बिम्ब (सूर्य गोला) पर नेत्र दृष्टि (त्राटक) एकाग्र करके सूर्य उदय तथा सूर्यास्त के समय करते हैं। भोजन- जल इ० केवल सूर्य दर्शन में ही ग्रहण करते हैं। इन्हें सूर्यमुखी कहते हैं। इसी प्रकार चन्द्र मुखी भी होते हैं। सूर्य त्राटक से नेत्र बिन्दू का जल सूख जाता है। इससे नुकसान भी होता है। इससे काया वज्र के समान होती है। सूर्यवशी सिद्धि को प्राप्त होते हैं। यह साधना कुन्ती पुत्र कर्ण ने की थी। यह तामसी साधना होती है। इसी प्रकार चन्द्र वसी सिद्धि भी प्राप्त करते हैं जिसे शीतलता प्राप्त होती है।

पृथ्वी तत्व सिद्धियाँ

योगेश्वर प्रथम प्राणायाम द्वारा कुम्भक क्रिया से मंद श्वास क्रिया का अभ्यास करते हैं और जमीन के नीचे गड्डा करके आसन लगाते हैं। विस्तृत वर्णन धरत्री द्वादश गायत्री प्रकरण प्रथम खण्ड में किया है।

इसी प्रकार अनेक प्रकार की असंख्य विधि मार्ग सिद्धियाँ प्राप्ति के लिये विद्यमान है। परन्तु यहां कुछ बर्हिमुख तथा प्रदर्शनी साधना का प्रभाव क्षणिक तथा अंर्तमुख साधना अर्थात मोक्ष मुक्ति के प्रति बाधक कही जाती हैं। योगेश्वर इन सिद्धियों तथा प्रतिष्ठा इ० में उलझकर मोक्षमुक्ति मार्ग से विमुख होते हैं।

अत: धूनी हवन होने के पश्चात पुजारी जी अपने पूजा भोग लगाना धूनी पूर्णाहूति तथा आरती की तैयारी में लग जाते हैं। अन्य धूनी के महन्त अपने उन्मनी अवस्था में ध्यान में लग जाते हैं। कुछ योगेश्वर धूनी पर अपनी

प्राणायाम ध्यान में रम जाते हैं। कुछ योगेश्वर नाम जाप तथा मन्त्र जाप में रमते हैं। कुछ पाठ करते हैं कुछ योगेश्वर अपने काया मन्दिर अखण्ड पूजा में लग जाते हैं। मंत्रोच्चारण तथा स्रोत पाठ करते हैं। सूक्ष्म वेद, गर्भ गायत्री, त्रिकाल गायत्री इ० पाठ करते हैं तथा गुरु गोरक्षनाथ जी की शबदी का पाठ करते हैं।

वेद शबदी

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। बसती न शुन्य शुन्य न बसती अगम अगोचर ऐसा। गगन मण्डल मही बालक बोले ताका नाव धरोगे कैसा ॥१ ॥

अदेखी देखबा, देखी विचाराबा आदि सिटी राखिबा चीया। पाताल की गंगा ब्रह्माण्ड चढ़ाईबा जहां विमल-विमल जल पीया ॥२ ॥

इहां ही आछै इहां ही अलोप। इहां ही रचिलै तीनी त्रिलोक। आछे सगै रहे जूवा। ता कारण अनन्त सिद्धा जोगेश्वर हूवा ॥३ ॥

वेद कतेब न खाणी बाणी। सब ढकी तलि आणी। गगनी शिखर मही शबद प्रकाशा। तह बूझै अलख बिनाणी ॥४ ॥

अलख विनाणी दोइ दीपक रचिलै तीन भवन इक जोती। तास विचारत त्रिभुवन सूझै चूणिलै माणिक मोती ॥५ ॥

वेदे न शास्त्रे कतेबे न कुराणे पुस्तके न बाचे जाई। ते पद जां नां बिरला जोगी और दुनी सब धन्धै लाई ॥६ ॥

हसिबा खेलिबा रहिबा रंग। काम क्रोध न करीबा संग। हसिबा खेलिबा गाईबा गीत। दृढ़ करि राखि अपना चीत ॥७ ॥

हसिबा खेलिबा धरिबा ध्यान। अहनिसी कथिबा ब्रह्म ज्ञान। हसे-खेले न करे मन भंग। ते निहचल सदा नाथ के संग ॥८ ॥

महंमद-महंमद न करि काजी, महंमद का विषम विचारं। महंमद हाथी करद जे होती लोहै घड़ी न सारं ॥९ ॥

शबदे मारी शबदँ जिलाई ऐसा महंमद पीरं। ताके भरमि न भूलौ काजी सो बल नहीं शरीरं ॥१० ॥

नाथ कहंता सब जग नाथ्या गोरख कहता गोई । कलमा का गुरु महंमद होता पहले मूवा सोई ॥११ ॥

सारमसार गहन गंभीर गगन उछलिया नादं । मानिक माया फेरि लुंकाया झूठा बाद-विवादं ॥१२ ॥

कोई वादी कोई विवादी, जोगी कौं वाद ना करनां । अड़सठ तीर्थ समंदि समावे यूँ जोगी कौं गुरुमुखी जरनां ॥१३ ॥

उत्पत्ति हिन्दू जरणां जोगी, अकली पीर मुसलमांनी । ते राह चीन्हों हो काजी मुल्लां ब्रह्मा विष्णु महादेव मानीं ॥१४ ॥

माना शबद चुकाया द्वंद । निहचे राजा भर्तृहरि परचे गोपीचंद । निहचै नरवै भये निरदन्द परचै जोगी परमानंद ॥१५ ॥

अहनिसि मन ले उनमन रहे, गम की छाड़ि अगम की कहे । छाड़ै आसा रहै निरास, कहे ब्रह्मा हूँ ताका दास ॥१६ ॥

अरधै जाता उर धै धरे, काम दग्ध जे जोगी करै । तजे अल्यंगन काटै माया, ताका विष्णु पखाले पाया ॥१७ ॥

अजपा जपे शुनि मन धरे, पांचो इन्द्रिय निग्रह करें । ब्रह्म अग्नि में होमे काया, तारु महादेव बंदे पाया ॥१८ ॥

धन जोवन की करे न आस, चित्त न राखे कामिनी के पास । नाद बिन्द जाके घटि जरे, ताकि सेवा पार्वती करे ॥१९ ॥

बालै जोबनी जे नर जती, काल दुकाला ते नर सती । फुरते भोजन अलप अहारी, नाथ कहे सो काया हमारी ॥२० ॥

शबद हि ताला शबद हि कुँजी । शबद हि शबद जगाया । शबद हि शबद सूं परचा हुआ शबद ही शबद समाया ॥२१ ॥

पंथ बिन चलिबा, अग्नि बिन जलिबा, अनिल तृषा जहटिया । संसवेद श्री गोरख कहिया बुझिल्या पंडित पढ़िया ॥२२ ॥

गगन मण्डल में ऊंधा कुवा । तहा अमृत का बासा । सतगुरु होइ सु भरी भरी पीवै निगुरा जाई पियासा ॥२३ ॥

गगने न गोपंत तेजे न सोखन्त पावने न पेलन्त बाई । मही भरे न भाजत उदके न डूबन्त कहौ तो को पति आई ॥२४ ॥

बास सहेती सब जग वास्या, स्वाद सेहिता मिठा । साच कहू तो सतगुरु माने रुप सहेता दिठा ॥२५ ॥

मरो रे जोगी मरो मरण है मिठा । तिस मरनी मरो जिस मरनि गोरख मरी दीढा ॥२६ ॥

हबकि न बोलिबा ठबकि न चालिबा धीरे धरिबा पाव । गरब न करिबा सहजै रहिबा, भणत गोरख राव ॥२७ ॥

भऱ्या ते थीर झल झलंति आधा । सिद्धे सिद्ध मिले रे अवधू कहे बोल्या अरु लाधा ॥२८ ॥

नाथ कहे तुम सुनहुरे अवधू दृढ़ करि राखहु चीया । काम क्रोध अहंकार निवारौ तो सर्व दिशान्तर किया ॥२९ ॥

स्वामी बनखंडी जाऊ तो षुध्या व्यापै नग्री जाऊं त माया । भरि भरि खाऊ त बिंद बियापै क्यों सीझति जल बिन्द की काया ॥३० ॥

धाये न खायबा भूखे न मरिबा रहिनिसी लेबा ब्रह्म अग्नि का भेवं । हट्ट न करिबा पडया न रहिबा यु बोल्या गोरख देव ॥३१ ॥

थोड़ा बोले थोड़ा खाई तिस घटि पवना रहि समाये । गगन मण्डल में अनहद बाजै प्यण्ड पड़े तो सतगुरु लाजै ॥३२ ॥

अवधू अहार तोड़ो निद्रा मोड़ो कबहु ना होइणा रोगी । छटे छः मासे काया पलटी बा जूँ को विरला विजोगी ॥३३ ॥

देव कला ते संजम रहिबा, भूत कला अहारं । मन पवना ले उन्मनी धरिबा ते जोगी तत सार ॥३४ ॥

अवधू निन्द्रा कै घर काल, जंजाल अहार के घर चोरं । मैथुन के घर जुवा गराजै अरध-उरध लै जोर ॥३५ ॥

अति आहार इन्द्री बल करे, नासे ज्ञान, मैथुन चित धरे । व्यापे निन्द्रा क्षपे काल, ताके हृदय सदा जंजाल ॥३६ ॥

घटी-घटी गोरख बाहि क्यारी । जो निपजे सो होई हमारी । घटी-घटी गोरख कहे कहानी, कांचे भाण्डे रहे न पाणी ॥३७ ॥

घटी-घटी गोरख फिरे निरुता, को घट जागे को घट सूता । घटी-घटी गोरख घटी-घटी मीन । आपा परचे गुरुमुख चीन्ह ॥३८ ॥

पावड़िया पग फिसलै अवधू लोहे छीजंत काया । नागा मूनी दूधाधारी एता जोग न पाया ॥३९ ॥

दूधाधारी पर घरि चित । नागा लकड़ी चाहे नित । मौनी करे मन्त्र की आस बिन गुरु गुदड़ी नहीं विश्वास ॥४० ॥

दक्षिणी जोगी रंगाचंगा, पूर्वी का जोगी वादी । पश्चिमी जोगी बाला भोला, सिद्ध जोगी उत्तराधी ॥४१ ॥

अवधू पूरब दिशी व्याधि का रोग, पश्चिम दिशी मिर्तु का सोंग । दक्षिण दिशी माया का भोग, उत्तर दिशी सिद्ध का जोग ॥४२ ॥

धूतारा ते धूते आप, भिक्षा भोजन नहीं सन्ताप । अहुठ पटन में भिक्षा करे । ते अवधू शिवपुरी संचारे ॥४३ ॥

घरबारी सो घर की जाने । बाहरी जाता भीतरी आणे । सरब्र निरन्तर काटे माया, सो घरबारी कहिरा निरन्जन काया ॥४४ ॥

गिरही सो जो गिरहैं काया । अभि अन्तरी त्यागे माया । सहज शील का धरे शरीर, सो गिरही गंगा का नीर ॥४५ ॥

अमरा निर्मल पाप ना पुण्य, सत रज बिबरजित सुनि । सोहें हंसा सुमिरीये शबद । तिही परमार्थ अनन्त सिद्ध ॥४६ ॥

पाखण्डी सो काया पखाले, उलटी पवन अग्नि प्रजाले । ब्यंद न देई सुप्न जाण, सो पाखण्डी कहिए तत्त समानं ॥४७ ॥

मनवां जोगी काया मढ़ी, पंच तत्व ले कंथा गढ़ी । खिमा खड़सन ज्ञान आधारी, सुमति फावड़ी डंड विचारी ॥४८ ॥

चालत चांदवा खिसी खिसी पड़े, बैठा ब्रह्म अग्नि पर जलै । आड़े आसणि गोटिका बंध, जावत प्रथिमी तावत कंध ॥४९ ॥

यही मन शक्ति यही मन शिव, यही मन पांच तत्व का जीव । यही मन ले उन्मन रहे, तो तिनों लोक की वार्ता कहे अवधू नव घाटी रोकी लै वाट । बाई बणिजे चौसठ हाट । काया पलटे अविचल विध । छाया विवरजित निपजे सिद्ध ॥५० ॥

अवधू दंम को गहिबा उन्मनी रहिबा, न्यू बाजबा अनहद तूरा । गगन मण्डल में तेज चमके चंद नहीं तहां सूर ॥५१ ॥

सांस उत्सांस बाई का भखिबा, रोकी लेहु नव द्वार । छठे छमासी काया पलटिबा, तब उन्मनी जोग अपार ॥५२ ॥

अवधू सहस्त्र नाड़ी पवन चलैगा, कोटी झमके नाद । बहतरि चंदा बाई सोख्या किरणी प्रगटे जब आदं ॥५३ ॥

अमावस के धरी झिलि मिलि चंदा, पूर्निम के घर सूर्य । नादके घट ब्यंद गरज्जै बाजत अनहद तूरं ॥५४ ॥

उलटत नाद पलटत ब्यंद, बाई के घरि चीन्हसि ज्यंद । मुनि मण्डल तहाँ नीझर झरिया चंद सूर्य ले उन्मन धरीया ॥५५ ॥

अवधू प्रथम नाड़ी नाद, झमकै तेज अंग नाड़ी पवन । सीतंग नाड़ी ब्यंद का बासा, कोई जोगी जानत गबनं ॥५६ ॥

उठंत पवना रवी तपंगा, बैठत पवना चंद । दुहु निरन्तरि जोगी बिलबै बिंद बसे तहा ज्यंद ॥५७ ॥

केता आवे केता खाई, केता मांगे केता जाई । केत रुख विरख तलि रहै गोरख अनभै कासी कहे ॥५८ ॥

पठि देखि पंडिता रहि देखी सार, अपनी करनी उतरीबा पार । वदत गोरखनाथ कहि धू साखी घटि-घटि दीपक (बलै) खणि पसून (पेखे) आखी ॥५९ ॥

सुसबदे हीरा वेधिले अवधू जिभ्या करि टकसाल । औगुण मध्ये गुन करिले तो चेला सकल संसार ॥६० ॥

अभरा था ते सूभर भरीया नीझर झरता रहिया । खाण्डे थै खुरसाण दुहेला यूँ सतगुरु मार्ग कहिया ॥६१ ॥

प्यान्डे होई तो पद की आशा बनी निपजे चौतार । दूध होई तो घृत को आशा करनी करतब सार ॥६२ ॥

मन में रहिणा भेदन कहिणा बोलना अमृत बाणी । आगिला अगनी होइबा अवधू तो आपन होईबा पाणी ॥६३ ॥

उन्मनी रहिबा भेद न कहिबा, पीयबा नीझर पाणी । लंका छाड़ि परलें का जाईबा तब गुरुमुख लेबा वाणी ॥६४ ॥

नग्री सोभत बहु जल मूल बिरखा सभा सोभल पंडित पुरखा। राजा शोभत दल प्राणी, यू सिद्धा शोभत सुधि-बुधि वाणी ॥६५ ॥

विरला जाणति भेदानि भेद बिरला जाणति दोइ पख छेद। बिरला जानती अकथ कहानी। बिरला जानती सुधि-बुधि की बानी ॥६६ ॥

उत्तराखण्ड जाइबा सुंनिफल खाईबा ब्रह्म अग्नि पहरिबा चीरं। नीझर झरणै अमृत पीया यू मन हुआ थिर ॥६७ ॥

हिन्दू ध्यावे, देहुरा, मुसलमान मस्सीद। जोगी ध्यावे परम पद जहां देहुरा ना मस्सीद ॥६८ ॥

हिन्दू आखे अलख को तहां राम अछै न खुदाई ॥६९ ॥

पिण्डे होई तो मरे न काई, ब्रह्माण्ड देखी सब लोई। पिण्ड ब्रह्माण्ड निरंतर बास, भणत गोरख मत्स्येन्द्र दास ॥७० ॥

बैठा अवधू लोहे की खूंटी। चलता अवधू पवन की मूंठी सोवता अवधू जीवता मूवा बोलता अवधू प्यंजरै सूवा ॥७१ ॥

कहे गोरख सुनहरे अवधू जगमें ऐसा रहना। आखे देखिबा काने सुनिबा मुख से कछू नहीं कहना ॥७२ ॥

नाथ कहे तुम आपा राखौ, हठ करि वाद न करना। यही जग है कांटे की बाड़ी देखि देखि पग धरना ॥७३ ॥

गोरख कहे सुनरे अवधू शिशुपाल थै डरिये। ले मुदिगर की सिर में मेले तो बीनही खूटी मरिये ॥७४ ॥

दृष्टि अग्र दृष्टि लुकाइबा सुरति लुकाइबा कान। नासिका अग्र पवन लुकाईबा तब रहि गया पद निर्वाण ॥७५ ॥

अवधू मनसा हमारी गोंद बोलिये। सुरति बोलिये चौगानं। अनहद ले खेलिबा लागा तब गगन भया मैदान ॥७६ ॥

पंच तत्व सिद्धा मुंडाया तब मेटीले निरंजन निराकार। मनमस्त हस्ती मिलाई अवधू तब लूट ले अखै भण्डार ॥७७ ॥

अरध उरध बिचि घरी उठाई, मधि सुनि में बैठा जाई। मतवाला की संगती आई। कथंत गोरखनाथ परमगति पाई ॥७८ ॥

डंडी सो जे आप डंडे, आवत जाती मनसा खण्डे। पंचो इन्द्री का मरदै मान सो डण्डी कहिये तत्त समान ॥७९ ॥

पाया लो भल पाया लो शबद, थान सहेती थिती। रुप संहेला दीसण लागा, सब सर्व भई प्रचिती ॥८० ॥

अरधत कवल उरधत मध्ये प्राण पुरिस का बासा। द्वादश हंसा उलटी चलैगा तबही ज्योति प्रकाशा ॥८१ ॥

आसन बैसबा पवन निरोधिवा थान मान सब धन्धा। वदन्त गोरखनाथ आत्मा विचारत ज्यू जल दीसे चंदा ॥८२ ॥

गोरख बोले सुन रे अवधू पंचो पसर निबारी। अपनी आत्मा आप विचारी, तब सोवो पान पसारी ॥८३ ॥

आहार निन्द्रा वैरी काल, कैसे कर रखिबा गुरु का भण्डार। आहार तोड़ो निन्द्रा मोड़ो शिव शक्ति ले करी जोड़ो ॥८४ ॥

तब जानि बा अनहद बंध, ना पड़े त्रिभुवन ना पड़ै कंध। रक्त की रेत अंग थे न छूटै जोगी कहता हीरा न फूटै ॥८५ ॥

शबद एक पूछिबा कहौ गुरु दयाल, विरिधी थे क्यूं करि होइबा बाल। फूल्या फूल कली क्यू होई, पूछै कहे तो गोरख सोई ॥८६ ॥

सुनी हो देवल तजौ जंजाल, अमिय पीवत तब होईबा बाल। ब्रह्म अग्नि सींचन मूल, फूल्या फूल कली फिरि फूलं ॥८७ ॥

उलटया पवना गगन समाई, तब बाल रुप परतखि(प्रत्यक्ष)होई। उदै ग्रही अस्त हेम ग्रही पवन मेला बांधिले हस्तिय निज साल मेला ॥८८ ॥

बारा कला सोखे, सोला कला पोखे, चारी कला साधैं अनन्त कला जीवे। ऊरम धूरम जोती ज्वाला सिद्धि साधत चारि कला पीवै ॥८९ ॥

असाध साधंत गगन गाजंत, उन्मनी लागंत ताली। उलटंत पवनं पलटंत बाणी, अपीव, पीवत जे ब्रह्म ज्ञानी ॥९० ॥

अलख लेखत, अदेख देखत, अरस परस ते दरस जाणी। सुनि गरजत बाजत नाद, अलेख लेखत ते निज प्रवांणी ॥९१ ॥

निहचल घर बैसिबा पवन निरोधिबा कदे न होईबा रोगी। बरस दिन में तीनि बार काया पलटिबा, नाग बंग बनासपती जोगी ॥९२ ॥

षोडस नाड़ी चन्द्र प्रकाशा, द्वादश नाड़ी भानं । सहस्त्र नाड़ी प्राणी का मेला जहां असंख्य कला शिव स्थान ॥९३ ॥

अवधू ईडा मार्ग चन्द्र भनीजे । पिंगुला मार्ग भान । सुष्मना मार्ग वाणी बोलिये त्रिय मूल स्थान ॥९४ ॥

अवधू काया हमारी नालि बोलिये दारु बोलिये पवन । अग्नि पलीता अनहद गर्जे ब्यंद गोला उड़ी गगन ॥९५ ॥

काजी मुल्ला कुराण लगाया, ब्रह्म लगाया वेद । कापड़ी सन्यासी तीर्थ भ्रमाया न पाया निर्वान पद का भेद ॥९६ ॥

देवल यात्रा सुनि जात्रा तीर्थ यात्रा पाणी । अतीत यात्रा सुफल यात्रा बोले अमृत बाणी ॥९७ ॥

अधरा धरे विचारिया घर या ही मै सोई । धर अधर परचा हूबा तब उत नाही कोई ॥९८ ॥

ऊभा मारु बैठा मारु मारु जागत सूता । तीन लोक भव जाल पसारा कहा जाईगो पूता ॥९९ ॥

उभा खण्डो बैठा खण्डो जागत सूता । तिहूलोक ते रहू निरन्तरी तो गोरख अवधूत ॥१०० ॥

निन्द्रा कहे मै अलीया बलिया ब्रह्मा विष्णु महादेव छलिया । निन्द्रा कहे हूँखरी विभूति जागे गोरख हू पड़ी सूती ॥१०१ ॥

जोगी सो जे मन जोगेवै विलाइत राज भोगवै । कनक कामिनी त्यागे दोई सो जोगेश्वर निरभै होई ॥१०२ ॥

सन्यासी सोई करै सर्वनाश, गगन मण्डल महिमाहै आस । अनहद सूमन उनमन रहे, सो सन्यासी अगम की कहे ॥१०३ ॥

लाल बोलती अम्हे पारि उतरिया मूढ रहे उर वार । थिती बिहूणा झूठा जोगी ना तस वार न पार ॥१०४ ॥

उलटीया पवन षटचक्र बेधिया तातै लौह सोखिया पानी । चन्द सूर्य दोउ, निज धरी राख्या ऐसा अलख बिनाणी ॥१०५ ॥

नाद हमारे बावै कवन, नाद बजाया तूटै पवन । अनहद शबद बजता रहे, सिद्ध संकेत श्री गोरख कहे ॥१०६ ॥

सुणि गुणवंत्ता सुणि बुद्धि वन्ता अनन्त सिद्धों की बाणी । शीश नवावत सतगुरु मिलिया । जागत रैणो विहाणी ॥१०७ ॥

भिक्षा हमारी कामधेनु बोलिये संसार हमारी बाड़ी । गुरु प्रसाद भिक्षा खाईबा अति काली न होइगी भारी ॥१०८ ॥

बड़े-बड़े कूले मोटे मोटे पेट नही रे पूता गुरु सों भेंट । खड़-खड़ काया निर्मल नेत भई रे पूता गुरु सों भेंट ॥१०९ ॥

निरति न सुरति जोग न भोग, जुरा मरण नहीं तहा रोग । गोरख बोले एकंकार नहि तहँ बाचा ओंकार ॥११० ॥

उदै न अस्त राति न दिन सरबे सचराचर भाव न भिन । सोई निरन्जन डाल न मूल सब व्यापीक सुषम् अस्थूल ॥१११ ॥

ब्रह्माण्ड फूटिबा नगर सब लूटीबा, कोई न जाणवा भेव । वदत्त गोरक्षनाथ पिण्ड दर जब घेरिबा तब पकडिया पंचदेवं ॥११२ ॥

अहंकार तूटिबा निराकार छूटिबा सोखिला गंगा जमना का पानी । चंद सूर्य दोऊ सनमुखि राखिला कहो हो अवधूत तहा की सहिनाणी ॥११३ ॥

चेता रे चेतिबा आपानरेतिबा पंच की मेटिबा आसा । वदन्त गोरख सतिते सूरिवां, उनमन मन मै वासा ॥११४ ॥

सिद्ध के संकेत बुझिले सुरा, गगन अस्थानि बाईले तूरा । मींमा के मार्ग रोपीले भानं, उलटया फूल कली मैं आणं ॥११५ ॥

वास वसन्त तहां प्रगटया खेल, द्वादश अंगुल गगन घरीमेल । वन्दत गोरख पूता होईबा चिराई, न पंडत काया न जंम धरी जाई ॥११६ ॥

अन्न का मास अनिल का हाड तत का बंद भखिबा बाई । वदंत गोरख पूता होईबा चिराई न पड़ै घट न जंम घरी जाई ॥११७ ॥

ॐ लोहा पीर । ताँबा तकबीर । रुपा मुहंम्मद सोना खुदाई । दुहु बीचि दुनिया गोता खाई । हम तो निरालंभ बैठे देखत रहे, ऐसा एक सुखन बाबा रतन हाजी कहै ॥११८ ॥

कहनि सुहेली रहनि दुहेली कहनी रहती बिन थोथी । पढ़या गुण्या सूबा बिलाई खाया पंडित के हाथ ही रह गयी पोथी ॥११९ ॥

कहनी सुहेली रहनी दुहेली, बिन खाया गुड मीठा। खाई हींग कपूर बखाणे,गोरख कहे सब झूठ ॥१२० ॥

मूर्ख सभा न बैसिबा अवधू पंडित सो न करिबा वाद। राजा संग्रामे झूंझ न करबा, हेलै न खोइबा नाद ॥१२१ ॥

हृदय का भाव हाथ में जानिये यही कलि आई खोटी। वदन्त गोरख सुणोरे अवधू करवै होई सु निकसै टोटी ॥१२२ ॥

जल कै संजमी अटल आकाश अन्न कै संजमि ज्योति प्रकाश। पवना संजमि लागे बंध बिंद कै संजमि थिर हुवे कंथ ॥१२३ ॥

सबद बिंदो रे अवधू सबद बिंदौ रे अवधू सबद बिदौ थानमान सब धन्धा। आत्मा मध्ये परमात्मा दीसे ज्यो जल मध्ये चंदा ॥१२४ ॥

आसन दृढ़ आहार दृढ़ जे निद्रा दृढ़ होई। गोरख कहे सुनो रे पूता मरे न बूढ़ा होई ॥१२५ ॥

कोई न्यन्दे कोई ब्यन्दे कोई करे हमारी आशा। गोरख कहे सुनो रे अवधू यहू पंथ खरा उदासा ॥१२६ ॥

इक लख सीगणि नव लख बानं, बंध्या मीन गगन अस्थानं। बंध्या मीन गगन के साथ सती सती भाखत श्री गोरख नाथ ॥१२७ ॥

तूटी डोरी रस कस बहे। उनमनि लागा अस्थिर रहै। उनमनि लागा होई आनन्द तूटी डोरी बिनसै कंद ॥१२८ ॥

सबद बिन्दौ अवधू सबद बिन्दौ सबदे सीझंत काया। निनाणवैं कोटी राजा मस्तक मुण्डायते प्रजा का अन्त न पाया ॥१२९ ॥

खरतर पवना रहे निरंतरे, महा रस सीझे काया अभि अन्तरि। गोरख कहे अम्ही चंचल ग्रहिया। शिव-शक्ति ले निज धरी रहिया ॥१३० ॥

पेट की अग्नि बिबरजित दृष्टि की अग्नि खाया। ज्ञान गुरु का आगे ही होता पणि विरले अवधू खाया ॥१३१ ॥

अगम अगोचर रहे निहंकाम। भंवर गुफा नाही विश्राम। जुगति न जाने जागे राति। मन काहु के न आवे हाति ॥१३२ ॥

नव नाड़ी बहात्तर कोठा, ए अष्टांग सब झूटा। कून्ची ताली सुष्मन करे उलटी जिभ्या ले तालू धरे ॥१३३ ॥

पण्डित ज्ञान मरौ क्या झूझि। और लेहू परम पद बूझि। आसन पवन उपद्रह करे। निसि दिन आरम्भ पचि पचि मरे ॥१३४ ॥

उनमन जोगी दसवें द्वार नाद बिंदू ले धू धू कार। दसवें द्वारे देइ कपाट, गोरख खोजे और बाट ॥१३५ ॥

आरम्भ जोगी कथीला एकसार। खिन खिन जोगी शरीर विचार। तल बल ब्यंद धरीबा एक तोल, तब जाणिबा जोगी आरंभ का बोल ॥१३६ ॥

घट ही रहीबा मन न जाई दूर। अहनिस पीवै जोगी बारुणी सूर। स्वाद विस्वाद बाई काल छीन। जानिबा जोगी घट काल छीन ॥१३७ ॥

परचय जोगी उनमन खेला। अहनिसि ईच्छा करे देवता स्यू मेला। खिन खिन जोगी नाना रुप। तब जानिबा जोगी परचय स्वरुप ॥१३८ ॥

निसपती जोगी जानिबा कैसा। अग्नि पाणी लोहा माने जैसा। राजा प्रजा समि करी देख। तब जानिबा जोगी निसपति का भेख ॥१३९ ॥

अवधू खारे खींरे खटे झरे मीठे उपजे रोग। गोरख कहे सुन रे अवधू अन्न पानी जोग ॥१४० ॥

बजरी करता अमरी राखै, अमरोली करता बाई। भोग करता जे बिन्द राखै ते गोरख का गुरु भाई ॥१४१ ॥

भग मुखि बिन्दू अग्नि मुखि पारा। जो राखे सो गुरु हमारा ॥१४२ ॥

जिभ्या स्वाद तत तन खोजे हेला करे गुरु वाचा। अग्नि बिहूणा बंध न लागै ढलकि जाई रस काचा ॥१४३ ॥

अवधू ईश्वर हमारे चेला भणीजे मछिन्द्र बोलिये नाती। निगुरी पिरथी परले जाती ताथै हम उल्टी थापना थापी ॥१४४ ॥

भरी-भरी खाई ढरि-ढरि जाई। जोग नही पूता बड़ी बलाई। संयम होई बाई संग्रहो। इस विधि अकल पुरुष को गहौ ॥१४५ ॥

खाये भी मरिये अनखाई मरीये। गोरख कहे पूता संयमी ही तरीये। मधि निरंतर कीजै बास। निहचल मनुवा स्थिर होई सांस ॥१४६ ॥

पवन हि जोग पवन ही भोग। पवन ही हरे छत्तीसौ रोग। या पवन कोई जाने भेव। सो आपै करता आपे देव ॥१४७॥

बिन्दू ही जोग बिन्दू ही भोग। बिन्दू ही हरे चौसठ रोग। या बिन्द का कोई जाने भेव। सो आपै कर्ता आपै देव ॥१४८॥

सांच का शबद सोना का रेख। निगुरा को चाणक सगुरा को उपदेश। गुरु का मुण्डाया गुण में रहे। निगुरा भ्रमै ओ गुण कहे ॥१४९॥

अवधू बूझना तो भूलना नहीं अनबूझ मग हारै। सूने जंगल भटकत फिरही मारी लिही वट मारे ॥१५०॥

गुरु की वाचा खोजे नही, अहंकारी अहंकार करे। खोजी जीवे खोजी गुरु को अहंकारी का पिंण्ड परे ॥१५१॥

इन्द्रिय का लड़खड़ा जिभ्या का फूहड़ा। गोरख कहे ले पर्तखि चूहड़ा। काछ का जती मुख का सती सो सतपुरुष उत्तमो कथी ॥१५२॥

अवधू मन चंगा तो कढौती ही गंगा। बांध्या मेल्हा तो जगत्र चेला। वदंत गोरख सति स्वरुप। तत विचारे ते रेख न रुप ॥१५३॥

सीखी सीखी विसाह्या बुरा। सुपिनै मैं धन पाया पड़ा। परखी परखी लै आगै धरा। नाथ कहे पूता खोटा न खरा ॥१५४॥

आओ देवी बैसो। द्वादश अंगुल पैसो। पैसत पैसत होई सुख। तब जनम मरन का जाई दुःख ॥१५५॥

स्वामी काची बाई काचा जिन्द। काची काया काची बिन्दू क्यंकरि पाकै क्यू करि सींझे। काची अग्नि नीर न खीजे ॥१५६॥

तब देवी पाकी बाई पाका जिन्द। पाकी काया पाका बिन्दू। ब्रह्म अग्नि अखण्डित बलै। पाका अग्नि नीर प्रज्वलै ॥१५७॥

सोवत आड़ा ऊभा ठाढ़ा। अग्नि बिन्दू न बाई। निश्चल आसन पवन ध्यान। अग्नि बिन्दू न जाई ॥१५८॥

उगवंत सूर पत्र पूर काल कंटक जाई दूर। नाथ का भण्डार भरपूर रिजक रोजी सदा हजूर ॥१५९॥

थान मान गुरु ज्ञान। बेधां बोध सिद्धा परग्रामं। चेतनी बाला भ्रम न बहै। नाथ की कृपा अखण्डित रहे ॥१६० ॥

अधिक तत ते गुरु बोलिये हीन तत्त ते चेला। मन माने तो सागि रमो नही तो रमो अकेला ॥१६१ ॥

चलंत पंथा टूटंत कंथा उडंत खेहा विचलंत देहा। छूटंत ताली हरि सूनेहा ॥१६२ ॥

पंथि चले चलि पवना तूटे नाद बिंद अरु बाई। घट ही भीतरि अठ सठि तीर्थ कहा भ्रमे रे भाई ॥१६३ ॥

जोगी होई पर निंद्या झखे। मद मांस अरु भांगि जो भखे। इको तरसै पुरुषा नरकहि जाई। सती सती भाषतं श्री गोरखराई ॥१६४ ॥

अवधू मांस भखंत दया धरम का नाश। मद पीवत तहां प्राण निराश भांगि भखंत ज्ञानं ध्यानं खोवंत। जम दरबारी ते प्राणी रोवंत ॥१६५ ॥

चलिबा पंथा के सीबा कंथा। धरिबा ध्यान करिबा ज्ञान। एकाएकी सिद्ध के संग। वदन्त गोरखनाथ पूता न होयसि मन भंग ॥१६६ ॥

पढ़ि देखि पण्डिता ब्रह्मज्ञान। मूवा मुक्ति बैकुठा थानं। गाड़्या-जाल्या चौरासी में जाई। सती सती भाषत गोरख राई ॥१६७ ॥

आकाश तत सदाशिव जाण। तिस अभि अन्तरि पद निर्वाण। पिण्डे पहचाने गुरुमुख जोई। बाहुड़ि आवा गमन ना होई ॥१६८ ॥

ऊरम धूरम ज्वाला ज्योति। सुरजि कला न छापैं छोति। कंचन कवल किरनि परसाई। जल मल दुर्गंध सब सुखाई ॥१६९ ॥

घटि-घटि शून्या ज्ञान न होई। बनि-बनि चन्दन रुख न कोई। रन्त रिधि कवन की होई। ये तत बूझे विरला कोई ॥१७० ॥

नीर्झर झरने अमीरस पीवना षटदल भेध्या जाई। चन्द बिहूणा चान्दीना तहा देख्या श्री गोरख राई ॥१७१ ॥

कै मन रहे आसा पास। कै मन रहे परम उदास। कै मन रहे गुरु के ओले। कै मन रहे कामनी के खोले ॥१७२ ॥

दाबि न मारिबा खाली न राखिबा। जानिबा अग्नि का भेवं। बूढ़ी ही थै गुरबानी होइगी सती सती भाषत गोरक्ष देव ॥१७३ ॥

बाहरी न भीतरि नेड़ा न दूर। खोजत रहे ब्रह्म अरु सूर। सेत फटक मनि हीरे बीधा। इहि परमार्थ श्री गोरख सीधा ॥१७४ ॥

आवति पंच तत को मोहे जाती छैल जगावे। गोरख पूछे बाबा मछिन्द्र या न्यन्द्रा कहा थे आवे ॥१७५ ॥

गगन मण्डल में सुनि द्वार, बिजली चमके घोर अंधार। ता महि न्यंद्रा आवै जाई। पंच तत मै रहे समाह ॥१७६ ॥

ऊभा बैठा सूता लिजै। कबहू चित भंग न कीजे। अनहद शबद गगन में गाजै। पिण्ड पड़े नो सतगुरु लाजै ॥१७७ ॥

एकलो वीर दूसरो धीर। तीसरो खटपट चौथे उपाध। दस पंच तहा बाद विवाद ॥१७८ ॥

एकाएकी सिध नाऊं दोई रमति से साधवा। चारि पंच कुटुम्ब नाऊ दस बीस लस्करा ॥१७९ ॥

मन मुखी जाता गुरुमुखी लेहु। लोही मास अग्नि मुखी देहु। माता पिता की मेटो धात। ऐसा होइ बुलावे नाथ ॥१८० ॥

नाद नाद सब कोइ कहे। नाद ही ले को विरला रहे। नाद बिन्द की फिकी शिला जिही साध्याते सिद्ध मिला ॥१८१ ॥

दरवेस सोई जो दर की जाने। पंचे पवन अपूठां आनौ। सदा सुचेत रहै दिन राती। सो दरवेश अलह की जाति ॥१८२ ॥

बसंत पूरा रमती सूरा। एक रसि राखति काया। अंतरि एक रसि देखिबा। विचरन्ति गोरखराया ॥१८३ ॥

नाद बिन्द बजाइले दोऊ, पूरिले अनहद बाजा। एकंतिका वासा सोधिले भरथरी कहे गोरख मच्छेद्रका दासा ॥१८४ ॥

सूर माहि चंद चंद माहिं सूर। चंपपि तीनि तेहुड़ा बाजल तूर। भणन्त गोरखनाथ एक पद पूरा। भाजंत भौंदू साधति सूरा ॥१८५ ॥

छत्र पवन निरन्तर रहे छीजै काया पंजरा रहे। मन पवन चंचल निजि गहिया बोले, नाथ निरंतरी रहिया ॥१८६ ॥

इकटी बिकुटी त्रिकुटी संधि । पश्चिम द्वारे पवना बान्धी । खूटे तेल न बूझे दिया बोले नाथ निरन्तर हूवा ॥१८७ ॥

ज्यू-ज्यू भुयंगम आवे जाई सुरही घरि नही गरड़ रहाई । तब लग सिद्ध दुर्लभ जोग, तोयं अहार बिन व्यापे रोग ॥१८८ ॥

ज्ञान सरीखा गुरु न मिलिया चित्त सरीखा चेला । मन सरीखा मेलू न मिलिया तीथे गोरख फिरे अकेला ॥१८९ ॥

सांग का पुरा ज्ञान का ऊरा । पेट का तूटा डिंभ का सूरा । वदन्त गोरखनाथ न पाया जोग । करि पाखण्ड रिझाया लोग ॥१९० ॥

अग्नि ही जोग अग्नि ही भोग । अग्नि ही हारे चौसढि रोग । जो इहि अग्नि का जाने भेव । सो आप ही कर्ता आप ही देव ॥१९१ ॥

जीवता जोगी अमिरस पीवता । अहनिस अखंडित धारं । दृष्टि मध्ये अदृष्टि विचारीबा । ऐसा अगम अपार ॥१९२ ॥

जीवता बिछायबा मूंवा वोढ़िबा कबहु न होयबा रोगी । बरसवै दिन काया पलटिबा यू कोई कोई बिरला जोगी ॥१८३ ॥

सूरजे खायबा चन्द्र सोयबा उभै न पीबा पाणी । जीवता कै तलि मूंवा बिछायबा यू बोल्या गोरखबानी ॥१९४ ॥

जहां गोरख तहा ज्ञान गरीबी । दुंद वाद नहीं कोई । निसप्रेही निरदावै खेले गोरख कहीये सोई ॥१९५ ॥

गगन मण्डल में गाय बियाई का गद दही जमाया । छांछी छाणि पंडिता पीवी सिद्धा माखन खाया ॥१९६ ॥

गूदड़ी जुग च्यारी तै आई । गूदड़ी सिद्ध साधका चलाई । गूदड़ी मैं अतीत का वासा । भनंत गोरख मत्स्येन्द्र दासा ॥१९७ ॥

असाद कंद्रप विरला साधंत कोई । सुर नर गन गंध्रप ब्याप्या बालि सुग्रीव भाई । ब्रह्म देवता कंद्रप व्याप्या । इंद्र सहस्र भग पाई ॥१९८ ॥

अठासी सहस्र ऋषीसर कंद्रप व्याप्या असाधि विष्णु की माया । येन कंद्रप ईश्वर महादेव नाटारमं नचाया ॥१९९ ॥

विष्णु दश अवतार थाप्या असाधि कंद्रप जती गोरखनाथ साध्या । जनि नीर्झर झंरता राख्या ॥२०० ॥

असति छै हो पंडिता नासति नाही, अनभै होय प्रचिती निरंतर माही। ज्ञान खोजी अमे विज्ञान पाया, सति-सति भाषत सिद्ध सतिनाथ राया ॥२०१ ॥

माता हमारी मनसा बोलिये। पिता बोलिये निरंजन निराकार। गुरु हमारे अतीत बोलिये जिनी किया पिण्ड का उद्धार ॥२०२ ॥

आपा भाजिबा सतगुरु खोजीबा जोगपंथ न करिबा हेला। फिरि फिरि मनीषा जनम न पायबा करि ले सिद्ध पुरुष से मेला ॥२०३ ॥

थंभ बिहूणी गगन रचीले तेल बहूँणी बाती। गुरु गोरख के वचन पति आया तब द्यौंस मही तहा राती ॥२०४ ॥

पंडित ज्ञानी खडतर बोले। सती का शबद उछेदे। काया के बलि करडा बोले। भीतरी तत्स न भैदे ॥२०५ ॥

महमा धरी महमा को मेटे सती का शबद विचारी। नान्हा होई जिनी सतगुरु खोज्या तिन सिर को पोट उतारी ॥२०६ ॥

एक कामध्येनि (कामधेनू) बारि सिद्धि के गगन शिखर ले बांधी। लागि जीव ऊपरी बारि सिद्धि की लयो निरंजन से सांधी ॥२०७ ॥

आफू खाय भांगि भसकावे। ता में अकलि कहा ते आवे। चढ़ता पित्त उतरता बाई ताते गोरख भांगि न खाई ॥२०८ ॥

मन्दर छोड़ै कुटी बंधावे। त्यागे माया और मंगावे। सुन्दरि छोड़ै नकटी बासे। ताते गोरख अलगे न्हासै (चलना) ॥२०९ ॥

त्रिया न साति बैद न रोगी रसायणी अर जाची खाय। बूढ़ा न जोगी सूरा न पीठि पाछे घाव यतना न माने श्री गोरख राय ॥२१० ॥

हंड ब्रह्माण्ड चहोड़ीया मानू बेश्या अना कोई कोई कोरड रह गया यू भाखै नाथ रतन ॥२११ ॥

निन्द्रा सुपने बिन्द को हरे। पंथ चलता आत्मा मरे। बैठा खटपट उभा उपाधि। गोरख कहे पूता सहज समाधि ॥२१२ ॥

सूके कंठ भूखे अरु भूख संतापे। देह विसर अर निन्द्रा व्यापे। बुद्धि बिन बके विकल होय जाय। ताते गोरख भांगि न खाय ॥२१३ ॥

रुठता रुठा गोला रोगी । भोला भछिक भूखा भोगी गोरख कहे सरबटा जोगी । यतना मैं नहीं निपजे जोगी ॥२१४ ॥

अवधू अहार कू तोड़िबा पवन को मोड़िबा ज्यो कबहु न होयबा रोगी । छठे छमासि काया पलटंत नाग बंग वनस्पति जोगी ॥२१५ ॥

सूरा का पंथ हार या का बिसराम सुरता लेहु विचारी अपरचे पिण्ड भिक्षा खात है । अंति काली होयगी भारी ॥२१६ ॥

उलटी शक्ति चढ़ै ब्रह्माण्ड नखसख पवना खेले सरबंग । उलटि चन्द्रे राह को ग्रहे । सिद्ध संकेत जती गोरख कहे ॥२१७ ॥

धरे अधर विचारीया धरी याही में सोय । धरे अधर परचा हूवा तब दुतीया नाही कोय ॥२१८ ॥

जिभ्या इन्द्रि एके नाल । जो राखे सो बचे काल । पण्डित ज्ञानी न करसि गरब । जिभ्या जीती जीन जीत्या सरब ॥२१९ ॥

गोरख कहे हमारा खडतर पंथ । जिभ्या इन्द्री दीजे बन्ध । जोग जुगति मैं रहे समाय । ता योगी को काल न खाय ॥२२० ॥

बरख (वृक्ष) एक देखिले हो पंडिता तत एक चीन्हिबा सबदे, सुरति समाई । गोरखनाथ बोले भ्रम न भूलिबा रे भाई ॥२२१ ॥

अबूझि बूझिले हो पंडिता अकथ कथिले कहानी । शीश नवावन्त सतगुरु मिलीया जागत रैण बिंहाणी ॥२२२ ॥

विद्या पढ़ि र कहावे ज्ञानी । बिनां अविद्या कहे अज्ञानी । परम तत का होय न मर्मी । गोरख कहे ते महा अधर्मी ॥२२३ ॥

पंथ चले चलि पवना तूटैं तन छीजे तत जाई । काया ते कछू अगम बतावैं ताकी मूंडू भाई ॥२२४ ॥

महमंद महमंद न करि काजी महमंद का बौहोत विचारं । महमंद साथि पैगंबर सिद्धा ये लख अस्सी हजार ॥२२५-२२६ ॥

जीव शीव संगे वासा । बधि न खाइबा रुध्र मासा । हंस घात न करिबा गोतं । कथंत गोरख निहारि पोतं ॥२२७ ॥

जीव क्या हतिये रे प्यंड धारी । मारिले पंच भू भ्रगला । चरे थारी बुद्धि बाडी । जोग का मूल है दयादान । कथंत गोरख मुक्तीले मानवा मारिले रै मन द्रोही । जाके बप वरण मास नहीं लोही ॥२२८ ॥

जिनि मन ग्रासे देव दान । सो मन मारीले गहि गुरु ज्ञान बाण ॥२२९ ॥

जोगी सो जो राखे जोग । जिभ्या इन्द्री न करे भोग । अंजन छोड़ी निरंजन रहे । ताकू गोरख जोगी कहे ॥२३० ॥

सुंनि ज माई सुंनि ज बाप । सुंनि निरंजन आपे आप । सुंनि के परचे भया स्थिर । निहचल जोगी गहर गंभीर ॥२३१ ॥

तजौ कुलती मेटौ भंग । अह निसि राखौ ओजुद बंधि । सरब संजोग आवे हाथि । गुरु राखे निरबान समाधि ॥२३२ ॥

अकुच कुचीया विगसिया पोहा । सिद्धि परीजली उठी लागिया धुवा ॥ कहे गोरख धुवा प्राण । ऐसे पिण्ड का परचा जाणो प्राण ॥२३३ ॥

अवधू यो मन जात है । याही ते सब जाणि । मन मकड़ी का ताग ज्यू उलटी अपूठौं आणि ॥२३४ ॥

जे आसा तो आपदा जे संसा तो सोंग । गुरु मुखि बिना न भाजसी ये दून्यो बड़ रोग ॥२३५ ॥

इस ओजुदा मे मारि लै गोता । कछु मगज भीतरी ख्याल रे । पंच कटार है भीतरि, निमस करि बेहाल रे ॥२३६ ॥

बिन्दू-बिन्दू सब कोई कहे । महा बिन्दू कोइ विरला लहे । इह बिन्दू भरोसे लावे बंध । अस्थिरी हो तो न देखो कंध ॥२३७ ॥

उलटे मूल डाल नही रहे । फाड़ी कछौटा रात्यौ बहे । न वोह छीजे ना वोह गले । बिंदू नहीं सो भगमुख ढले ॥२३८ ॥

बीणि बैसदंर जोति बलत है । गुरु प्रसादे दीठी । स्वामी सीला अलुनी कहिये जिनि चीन्हा तिन दीठी ॥२३९ ॥

ऊजल मीन सदा रहे जल में सुकर सदा मलीना । आत्म ज्ञान दया बिनी कछु नाही कहा भयो तन खीना ॥२४० ॥

धोतरा न पीओ अवधू भांगि न खाओ रे भाई । गोरख कहे सुनो रे अवधू या काया होयगी पराई ॥२४१ ॥

साई सहेली सुत भरतार सरब सिसटि कौ एकौ द्वार। पैसता पुरसि निकसता पूता ता करणि गोरख अवधूता ॥२४२ ॥

राख्या रहे गमाया जाय सती सती भाखत श्री गोरखराय। येके कही दूसरे मानी गोरख कहे तो बड़ो ज्ञानी ॥२४३ ॥

चींता अचीत ही उपज्ये चींता सब युग खीन्न। जोगी चिन्ता बिसरे तो होई अचिन्ता ही लीन ॥२४४ ॥

गिरही (ग्रहस्थी) को ज्ञान आमली को ध्यान। बूचा को कान वेश्या को मान। बैरागी अर माया स्यू हाथ या पांचा को एको साथ ॥२४५ ॥

गिरही (गृहस्थी) होय करि कथे ज्ञान, आमली होय करि धरे ध्यान। बैरागी होय करे आशा नाथ कहे तिन्यो खासा पासा (बंधन) ॥२४६ ॥

रांड मुवा जती धाये भोजन सती धन त्यागी। नाथ कहे ये तिन्यो अभागी ॥२४७ ॥

पढ़ि पढ़ि पढ़ि केता मुवा, कथि कथि कथि कहा कीन्ह। बढ़ि बढ़ि बढ़ि बहु घट गया पारब्रह्म नहीं चीन्ह ॥२४८ ॥

सति सति बोले गोरख राणा। तीनो जने का संग निवारौं नकटा बूचा काणा ॥२४९ ॥

कदैन सोभे सुन्दरी सनकादिक के साथि। जब तब कलंक लगाइसी काली हांडी हाथि ॥२५० ॥

पासि बैठी सोभे नहीं साथि रमाई भुंडि। गोरख कहे असतरी कहा सलह कह मुण्डि ॥२५१ ॥

जरण जोगी जुगि-जुगि जीवे झरणा मरि मरि जाय। खोजे तन मिले अविनाशी अगह अमर पद पाय ॥२५२ ॥

जप तप जोगी संजम सार। बाले केद्रप कोया छार। येहा जोगी जग में जोय। दूजा पेट भरे सब कोय ॥२५३ ॥

जोगेश्वर की इहै परछाया। शबद विचारया खेले। जितना लाईक बासणा होये। ते तो तामे मेल्हे ॥२५४ ॥

चापि भरे तो वासण फूटे बारे रहे तो छीजे। बसत धणेरी बासण वोछी कहो गुरु क्या किजे ॥२५५ ॥

अवधू सहजे लैंना सहने दैना सहजे प्रीती लाई । सहजै-सहजै चलेगा रे अवधू तो बासण करेगा समाई ॥२५६ ॥

तूंबी में त्रिलोक समाया-त्रिवेणी रवि चन्दा । बूझो रे ब्रह्मज्ञानी अनहद नाद अभंगा ॥२५७ ॥

सत्य शिलं दोय स्नानं त्रितीये गुरु बायक (वचन) । चतुर्थे शिक्षा अस्नान पंचमे दया स्नान ये पंच अस्नान निर्मला निति प्रति करत गोरख बाला ॥२५८ ॥

स्त्रिया जित ते पुरुषा गता मिलि भानंत ले पुरुषा गता (नष्ट) । विश्वासघात की पुरुषा गता कायरो तत ते पुरुषा गता ॥२५९ ॥

अभख भखंते पुरुषा गता (नष्ट) । शबद हीण ते पुरुष गता (नष्ट) उदिक राखंत ते पुरुषा गता ॥ परस्त्रिया राचंत ते पुरुषा गता ॥ सती सती भाषण गोरख बाला इतना त्यागी रहो निराला ॥२६० ॥

पंडित भंडित अर कलवारी (शराब दुकान)। पलटी सभा विकलता नारी । अपढ़ विपर जोगी घरबारी । नाथ कहे रे पूता इनका संग निबारी ॥२६१ ॥

राति गई अध राति गई बालक एक पुकारे । है कोई नगर में सूरा बालक का दुख निवारे ॥२६२ ॥

दिसटि पड़े ते सारी कीमति-कीमति सबद उचारं । नाथ कहे अगोचर वाणी ताका वार न पारं ॥२६३ ॥

सबद हमारा खरतर खांडा । रहनी हमारी साची । लेखे लिखी न कागद माड़ी सो पत्री हम बाची ॥२६४ ॥

मन बांधूगा पवन स्यू पवन बांधूगा मन स्यू । तब बोलेगा कोवत स्यू । मन तेरा की माई मूंडू पवना दउं र बहाई । मन पवन का गम नहीं तहां रहे ल्यो लाई ॥२६५ ॥

कोन देश स्यू आये योगी, कहा तुम्हारा भाव । कोन तुम्हारी बहन भानजी कहां धरोगे पाव ॥२६६ ॥

पश्चिम देश स्यू आये योगी । उत्तर हमारे भाव । धरती हमारी बहन भानजी । पापी के सिरी पाव ॥२६७ ॥

शक्ति अहेडै मिस रिद्ध कोस, बल स्यू बागो । गोरख कहे चालतील मारु, कान गुरु तौ लागो ॥२६८ ॥

नाथ कहे मेरा दून्यो पंथ पूरा । जत नहीं तो सत का नीसूरा । जत सत किरीया रहनी हमारी और बली बाकलि देवी तुम्हारी ॥२६९ ॥

कथनी कथे सो सिख बोलिये । वेद पढ़े सो नाती । रहनी रहे सो गुरु हमारा । हम रहता का साथी ॥२७० ॥

रहता हमारे गुरु बोलिये । हम रहता का चेला । मन माने तो संगि फिरे । नहि तर फिरे अकेला ॥२७१ ॥

दर्शन माई दर्शन बाप । दर्शन माही आपे आप । या दर्शन का कोई जाने भेव । सो आपे करता आपै देव ॥२७२ ॥

जिनि जान्या तिनि खरा पहेचान्या । वा अटल स्यू लोलाई । गोरख कहे हमे काना सुणता, सो आँख्या देखा रे भाई ॥२७३ ॥

बैठा बारे चलत अठारे सूता तूटै तीस । कई थन करता चौसटि तूटै क्यो भजिबो जगदीश ॥२७४ ॥

नासिका अग्रे भ्रूमण्डले अहनिस रहिबा स्थिर । माता गर्भी जन्म न आयबा बहुरी न पीयबा खीर ॥२७५ ॥

इति वेद शबदी सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश ।

अन्य योगेश्वर अपनी काया पूजा में, त्रिकाल गायत्री का चिन्तन करते हैं और इस मन्त्र को सिद्ध भी करते हैं ।

त्रिकाल गायत्री मन्त्र विधि

सुनिश्चित स्थान पर गौ गोबर से भूमि लेपन कराकर चौकी के ऊपर चौका लगावे, चार कोन में अनुक्रमे ॐ, श्री, स्वास्तिक तथा अष्ठगंध से बनावे । मध्य में ७ धान्य के राशी के ऊपर एक कलश स्थापित करें । प्रथम खण्ड पृष्ठ सं० ९३ से स्थापन पूजन करे ।

अतः प्रथम, गुरुमन्त्र जाप, तद्पश्चात गोरक्ष गायत्री या गोरक्ष बीज मन्त्र जाप करे । तदन्तर सूर्य गायत्री मन्त्र जाप होने के बाद त्रिकाल गायत्री जाप

निम्न विधि से करे। योगियों ने त्रिकाल गायत्री जाप प्रातः सूर्योदय से लेकर ३ घंटे तक आसन ध्यान, कंठ स्थान में ध्यान एकाग्र करके जाप करे, जहां हंसनाथ जी विराजमान हैं। तदन्तर मध्यान्ह में सूर्य माथे पर आने पर अर्थात १२ बजे से लेकर ३ घंटे ध्यान नाभी स्थान में केन्द्रित कर जाप करे जहां मणिपुर चक्र सन्तोषनाथ विष्णु जी विराजमान हैं तथा संध्या में सूर्योस्त होने पूर्व ३ घण्टे ब्रह्मरन्ध्र शीश स्थान में ध्यान केन्द्रित करे जहां गुरु गोरक्षनाथ जी विराजमान हैं। यह क्रिया मन्त्र जाप योग ४१ दिन करे मन्त्र सिद्ध होगा।

अतः कलश के ऊपर रुद्राक्ष विधि-

प्रातः १ से २१ मुखी रुद्राक्ष दाने चढ़ते क्रम से, त्रिकाल गायत्री जाप कराके चढ़ावे।

प्रथम १ मुखी फिर २ मुखी ३-४....... अन्त में २१ मुखी रुद्राक्ष चढ़ावे।

मध्यान्ह में— केवल गणेश रुद्राक्ष या निमुर्खी रुद्राक्ष जाप करते हुये चढ़ावे।

सन्ध्या में— रुद्राक्ष उतरते क्रम से चढ़ावे प्रथम २१ मुखी फिर २० मुखी अन्त में १ मुखी,रुद्राक्ष उपलब्ध नहीं मिले तो अक्षदा का उपयोग करे।

फलप्राप्ति— शुक्ल पक्ष में करें तो-पुण्य तथा मुक्तिप्रद फल प्राप्त होता है। कृष्ण पक्ष में करे तो- ऋद्धि सिद्धि भरपूर फल प्राप्त होये।

श्रावण मास में करे तो— त्रिकालदर्शी ज्ञान प्राप्ति होगा।

प्रातः— ऋद्धि सिद्धि, मध्यान्ह— मुक्ति, सन्ध्या— शिव स्वरुप

सूचना— यह मन्त्र नरनारी साधू सन्त तथा योगी सब कर सकते हैं। मन्त्र कण्ठस्थ करे और यह विधि केवल सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक ही करे। यह त्रिकाल मन्त्र सिद्धि काल (समय) स्वरुप होने के कारण मन्त्र सिद्धि समय अनुसार होगी। जाप संख्या अनुसार नहीं।

त्रिकाल गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सोंह अमर योगी अमर काया। अमर लोक से उतरी माया। ब्रह्मा विष्णु महेश रचाया। हाड चाम की मढ़ी पवन की काया। न गले चाम सड़े नही हाड स्थिर रहे

काया, त्रिकाल गायत्री, सरजीवन मन्त्र महादेव जी ने माई पार्वती जी के कान में सुनाया। सिद्धों अमर कीनी काया। मरे न गौरा आवे न जावे। कहा से उत्पन्नी गौरा देवी, कहा से उत्पन्नी सुरे। कंठ से उत्पन्नी गौरा देवी, शीश से उत्पन्नी सुरे। रुपवन्ती एक जन्म शीलवन्ती तीन जन्म, गर्भवन्ती सात जन्म मूले असल कहन्ती। मुलवन्ती देवी माई-पात्र-कृष्ण पक्षी ऋद्धि-सिद्धि के भण्डारे भरपूर काल कण्टक दूर करन्ती, योगी की कुल से इकोत्तर सो पुरुष ले, अमरापुर तरन्ती। पिण्ड प्राण की रक्षा करन्ती। राख-राख माता त्रिकाल गायत्री राख-अघोर पढ़न्ते राख-ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर राख- तेरा दिया शिव-पुरी में वासा। इस प्राणी को अन्तकाल में कभी न भक्षय काल। चार मुख द्वारा सुमिरण करे चार प्रहर वेद न जरे। अम्बर मुख झरे, धरती मुख फले। पान फूल गऊ मुख चरे मूल द्वारे गोवरी करे-भग द्वारे गंगा, यमुना का नीर झरे। ईश्वर महादेव भर लाय कर्म कमण्डल विष्णु जी भर लाय जल झारी। माई पार्वती चौका लगावे। श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथ जी धनचक्र पुरे, ब्रह्माजी चार वेद का पाठ करे। पाप कटन्ते लक्ष चौरासी का फेरा टलन्ते। विष्णु जी त्रिकाल गायत्री का जाप जपन्ते हनुमन्त वीर चौकी पूरे, गणेश देवता ऋद्धि सिद्धि का भण्डार भरे। प्रातः काल जपे ऋद्धि सिद्धि भरपूर पाय, मध्यान्ह जपे मुक्ति पाय, संध्या जपे शिवपुरी पाय, इतना त्रिकाल जाप सम्पूर्ण भया श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश।

कुछ योगेश्वर सरभङ्ग गायत्री का जाप करते हैं। चेतन धूनी के सहवास में, यह मन्त्र सिद्धि करते हैं। कुछ महात्मा श्मशान क्रिया में भी इस मन्त्र को सिद्ध करते हैं। श्मशान नदी किनारे होना चाहिये। तब श्मशान में धूनी चेतन करके गायत्री सिद्धि करते हैं। खप्परधारी अलख जताते-जताते भी इस मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

गायत्री मन्त्र सिद्धि

यह मन्त्र श्मशान में ४१ दिन में सिद्ध करते हैं। नित्य रात्रि साधक सरसों के तेल की ज्योत लगाकर सन्मुख सुरक्षा कवच आसन पर बैठकर मन्त्र जाप करते हैं। साधना के ३ से ५ दिन में पहला तूफान आयेगा, इसमें दीपक ज्योत

नहीं बुझी तो साधना आगे चालू रखें। फिर ७वें या ९वें दिन तूफान आता है। दीपक नहीं बुझा तो साधना चालू रखें फिर २०, २१ दिन पर तूफान आयेगा फिर भी दीपक नहीं बुझा तो मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। चालू साधना में अगर दीपक बुझ गया तो ७ मिठाई व शराब का भोग रखकर स्व-स्थान पर लौटे। सिद्ध गुरु जी के मार्गदर्शन में यह साधना करना आवश्यक है। अन्यथा भारी नुकसान होगा।

सरभङ्ग गायत्री जाप

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। मैं सरंगी सबका संगी, सबको भेद बताऊंगा। मैं अनघड़ का चेला, रहु अकेला, नहीं मैं शीश नवाऊंगा। पात्र कर पवित्र कर लू, भ्रान्त कदे नहीं लाऊंगा। ऊंचा नीचा राजा पकडू एक प्याला पिलाऊंगा जोर करे जग जावन, पांव सबको पकड़ नवाऊंगा, तले को अमर ऊपर को पृथ्वी उल्टी राह चलाऊंगा। वज्र मन्त्र का गोला वाऊ परबत मार उड़ा दूंगा। कहो तो पवन बसकर राखू कही तो मेह बरसाऊंगा, मारु मेख वज्र की टक्कर, आखर आगे चले नहीं पालर, कोट कपाट बांधू घाटा, लगड़ी बूची का मूण्डू माथा, जोगी बड़ा जुगत के माही, सहस्त्र ध्यान धरे जोगेश्वर-नख कर दू न्यारा न्यारा भजू अपूरा भेला, मन्त्र पदवी का गर्व करे तो जला दू पूला सिद्धाई का बाना पूछू गाड़ दू दहमांही लेरी लेरी बावना भैरु सैल शिकारी रात हाड बीज भाली तुम्हारी दासी आके मुंह काला कर दू राजा कर दू भैसा। डाकनी शाकिनी भूत पलीतनी ताप ते जारी तोडू अटक दो नाड़ी हजरत मांगे भाड़ा, गोरक्ष बोले उलटी बाणी। ब्रह्माण्ड को ताला, कुंआ ऊपर चादर तानी, आसन मारु गहरा गहरा जा श्मशान डेरा धौल जगा बुलवाओ। ढ़ेर गोरक्षनाथ गुरो का चेला मढ़ी मसाना फिरे अकेला, कामरु देश चली चण्डी, हाथ में लिया तेल की हण्डी। चण्डी-चण्डी फिरे ब्रह्माण्डी, सरभङ्ग गायत्री जाप सम्पूर्ण सही। अनन्त कोटी सिद्धों में कैलाश पर्वत पर बैठ गुरु गोरक्षनाथ ने कही श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

कुछ योगेश्वर अपने काया मन्दिर की पूजन में लग जाते हैं। अष्ठांग योग करके ध्यान आसन लगाते हुए औघड़ पंचमात्रा का जाप करते हैं।

औघड़ पंचमात्रा

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। अवधू-अवधू बनखण्ड में वासा-पिण्ड प्राण योगी रह न उदासा गले में तागा गले लगाया-पांच तत्व का परिचय पाया। सुरत की सेली ऊन का टोप-बिना धागे गोदड़ी पूरा तोल। मन मतंगा धीरज धरेही अलख पंथ में खेले बिरला कोई, मन की धोती सत्त की कोपीन मन का अंगोछा जिभ्यान पोथी इति मन्त्र लय बाला, तन्त्र मतवाला-टुकड़ा-मांगो अविनाशी का औघड़ मतवाला। तन की चीनी मन की मेल-गरम धूनी गुरु शिक्षा मेल। धूनी में कौन कौन रंग, लाल रंग, जरद रंग, स्याह रंग, सफेद रंग, दिल दरिया बैठकर अवधू फूल माला बनाई, नीर कलक चापक चौरी मोर के दस्ता शब्द ले गुरु का चन्चल मार मृग हराया। कढ मृगांग तले बिछाया। तले की कूंची को आकाश चढ़ाय ऐचरी खेचरी भूचरी चाचरी उन्मुनी पांचो नर सिद्ध काया धन्य धन्य विस्तार तुम्हारा यश का चेला गुरु हमारा। दण्ड कमण्डल उड़ानी। औघड़ पंचमात्रा जाप सम्पूर्ण हुआ। कौलागढ़ पर्वत अनुपान शिला त्र्यम्बक क्षेत्र में अनन्त कोटि सिद्ध में बैठकर श्रीनाथ जी ने कथ मथ कर सुनाई श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: योगेश्वर ज्ञान योग समाधि रत होते हुए गर्भ गायत्री का पाठ करते हैं।

गर्भ गायत्री (बड़ी)

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ खोजो पवन, खोजो आवागमन का चन्द-सूर, खोजो आदि-अनादि महाशुन, खोजो महाशुन में अपरम्पार,खोजो अपरम्पार में ब्रह्मपार, खोजो ब्रह्मपार में ॐकार, ॐकार में मेरु मण्डाल पर्वत कैलाश। सत है सती थरै धरती थरै आकाश, चन्द-सूरज का अग्नि प्रकाश कहत ॐकार गर्भ गायत्री का करो परवाण, सत है सती गौरा उवाच, कहो हरे हरेश्वर महादेव, कौन युग में लिया अवतार, कौन

युग में थाप्या संसार, कौन युग में गर्भ का वास, कौन युग में योगी योग में रमा ? सुनबा सती पार्वती अर्बद युग में लिया अवतार, नर्बद युग में थाप्या संसार, असंख्य युग में गर्भ का वास, युग युग योगी योग रम्या । सत है सती गौरजा ऊवाच-कहो हर हरेश्वर महादेव जी एक पात्र का आधार होता तहा कैसे उत्पन्न भया जल, कैसे थल, कैसे मेघ मण्डाल गिरी पर्वत कैलाश, कैसे पवन, कैसे पानी, कैसे धरती, कैसे आकाश, कैसे चन्द सूर, कैसे दिन रात ? सुनबा सती पार्वती सत से ध्याऊ जल और थल, सत्य से ध्याऊ मेघ मण्डाल गिरी पर्वत कैलाश, सत्य से ध्याऊ पवन और पानी, सत्य से ध्याऊ धरती आकाश, सत्य से ध्याऊ चन्द-सूर , सत्य से ध्याऊ दिन और रात, सत्य ही ध्याऊ सत्य का प्रकाश, सत्य से ध्याऊ प्राणी, सत्य की ध्याऊ धर्म की करे रक्षा । एक निरंजन ले उत्पन्न भई ९ खण्ड गायत्री की मुक्ति, २१ ब्रह्माण्ड का थीया, क्षण एक धरती लिया आधार, अलख पुरुष भये करतार कहो क्यो करते किस की खेती किस का बिन्दु, वह जात कुलीन भयी, नवन्द सत है माता धरती, धर्म तो पिता शून्य काया से उत्पन्न भया ।

सत है सती गौरजा ऊवाच, कहो हर हरेश्वर महादेव जी कै धाम शिव कैं बोलिये, कै धाम शक्ति के बोलिये । कहे हर हरेश्वर महादेव सुनबा सती पार्वती जी आप धाम, नाप धाम, सर्व धाम यह तीन धाम शिव के बोलिये । नीर धाम, खीर धाम, रक्त धाम, फूल धाम यह ४ धाम शक्ति के बोलिये । सत है सती गौरजा कहे-कहो हर हरेश्वर महादेव जी कौन मासे निचल नीर, कौन मासे पलटे खीर, कौन मासे रक्त का गोला, कौन मासे बान्धे विघ्ने, कौन मासे थान थणिंतर , कौन मासे जोग सम्पूर्ण कौन मासे घात की काया, कौन मासे नौनाड़ी बहत्तर कोठा चौरासी सन्यास सवा हाथ का हाड, कौन मासे नरपति नर ने लिया अवतार । कहे हर हरेश्वर महादेव सुनबा सती पार्वती । पहले मासे निश्चल नीर, दूसरे मासे पलटे खीर, तीसरे मासे रक्त का गोला, चौथे मासे बांधे विघ्ने, पंचम मासे थान थणिन्तर, छटे मासे पलटि ज्योत, सप्तमे मासे जोग सम्पूर्ण,

अष्टम मासे सर्वघात की काया, नौवे मासे नौ नाड़ी बहात्तर कोठा चौरासी सन्यास सवा हाथ का हाड, दसवें मासे नरपति नर ने लिया अवतार। कथे महेश्वर गौरजा जान गर्भ तत करो परवान। सत है सती गौरजा बोले कहो हर हरेश्वर महादेव जी मुखे वाक बाणी बागेश्वरी मन पवन दासिनी उड़न्त कौली झन्ड़त कौली अदृष्ठ कौली न माता गर्भ गायत्री इत्थे उत्थे बजर की काया शुलफा बीज बीजन्ते, कितने हाथ का हाड़, कितने हाथ रक्त का घड़ा, कितने हाथ की खोपड़ी, कितने अंगुल का पित्ता, कितने अंगुल भ्रुकुटी, कितने आँख, कान, हाथ, कितने अंगुल ललाट का पाट, कितने अंगुल नासिका, कितने अंगुल मुख की फाड़ी, कितने जाड़ दन्त, कितने अंगुल की आंत, कितने अंगुल का कलेजा, कितने अंगुल का फेफड़ा, कितने अंगुल का तिल्लि, कितने अंगुल की नाभी कमल, कितनी पसली, कितने अंगुल जीभ का पाट, कितने अंगुल बिन्दु का भण्डार, कितने अंगुल अमरी का भण्डार, कितने अंगुल बजरी का भण्डार, कितनी हड्डी, अंगुल, अंगूठा, कितने नख, पग, कितने अंगुल का भग? कहे हर हरेश्वर महादेव, सुन बा सती पार्वती जी। २१ हाथ का हाड जान, सवा सेर रक्त का घड़ा, साढ़े तीन गाठ की खोपड़ी ५ अंगुल का पित्ता, ४ अंगुल का ललाट पाट, डेढ़ अंगुल भृकुटी, २ आंख, २ कान, २ हाथ, सवा तीन अंगुल नासिका, ४ अंगुल मुख की फाड़ी, ३२ जाड़ दांत, १३ हाथ की आंत, १२ अंगुल का कलेजा, १५ अंगुल का फेफड़ा, ९ अंगुल की तिल्ली, २२ अंगुल की नाभी कमल, १४ पसली, ४ अंगुल का जीभ पाट, ७ अंगुल का बिन्दु भण्डार, १६ अंगुल का अमरी भण्डार, १८ अंगुल का बजरी का भण्डार, ३६० हड्डी, १६ अंगुली, ४ अगुष्ठ, २० नख दो पग, साढ़े तीन करोड़ शरीर के रोम, ८ अंगुल की इन्द्री, १२ अंगुल का भग। कथे महेश्वर गौरजा जान गर्भ तत करो परवान। सत है सती गौरजा उवाच, कहो हर हरेश्वर महादेव ईश्वर जोगी भूले न चूके सूर्ज जाकै संग रमै। स्वामि जी, इस काया में कितनु कोष, कितने शरीर, कितने गुन, कितने तत्त्व, कितनी प्रकृति, कितने चक्रदल, कितनी मुद्रा, कितनी धातु नर और नारी? कहे हर हरेश्वर महादेव

सुनबा सती पार्वती इस काया में पंच कोष बोलियें अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय, आनन्दमय इस काया में ३ शरीर बोलिये–स्थूल, सूक्ष्म, कारण इस काया के ३ गुण बोलिये सत, रज, तम, इस काया के पंचतत्व बोलिये। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, इस काया की पचीस प्रकृति बोलिये। अस्थि–मास–त्वचा–नाडी–रोम–लार–मूत्र–पसीना–वीर्य–रक्त–क्षुधा–प्यास–निद्रा–आलस–क्रोध–धावन–आकुंचन, चलन वलन–प्रसारण–माया–मोह–लज्जा राग द्वेष। इस काया के षड दर्शन चक्र और दल बोलियें। शून्य चक्र सहस्त्र दल, आधार चक्र–द्विदल–विशुद्धचक्र षोडशदल–अनाहत चक्र द्वादश दल–मणिपूर चक्र दशं दल–स्वाधिष्ठान चक्र षटदल, आधार चक्र चतुर्दल। इस काया में दस मुद्रा बोलिये। खेचरी, भोचरी, सिधी, उनमनी अवस्था, अगोचर बुद्धि, चाचरी निधि, अनभय करामती। अतित देवता–अवगति पूजा इस नर काया तीन धातु बोलिये। आब (अस्थि) नाव (नाड़ी) अनहद (वीर्य) इस नारी काया के चार धातु बोलिये। नीर (रोम), क्षीर (त्वचा), रक्त, पवन (मास)। कथे महेश्वर गौरजा जान गर्भ तत करो परवान। सत है सती गौरजा उवाच कहो हर हरेश्वर महादेव जी इस काया में कौन ज्ञान इन्द्रिया, कौन कर्म इन्द्रिया, कौन अन्तःकरण, कौन विषय, कौन वायु, कैसे द्विप, कैसे नवखण्ड, कैसे पर्वत, कैसे नदियाँ, कैसे क्लेश, कैसे विकार, कैसे स्थान, कौन विकार की नारीयाँ, कैसे नियम बोलिये? कहे हर हरेश्वर महादेव सुन बा सती पार्वती जी इस काया में श्रोत्र–त्वचा–नेत्र जिव्हा–नासिका यह पंच ज्ञान इन्द्रियां बोलिये। इस काया में–वाचा–पाद हाथ उपस्थ गुदा यह पंच कर्म इन्द्रियां बोलिये। इस काया में मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, अन्तःकरण यह पंच अन्तःकरण बोलिये। इस काया के शबद, स्पर्श, रुप, रस, गंध यह पांच विषय बोलिये। इस काया में–प्राण अपाण–व्यान–समान– उदान नाग, कूर्म, कुकर, देवदत्त, धनन्जय यह दस वायु बोलिये। इस काया के मुख में जम्बूद्वीप, कान में पुष्कर द्वीप, तेज में शाल्म द्वीप, नाक में कुशाद्वीप, गुदा में कुरंजद्वीप उपस्थेन्द्रिय में श्वेत द्वीप, उदर में शंकर द्वीप यह सप्तद्वीप बोलिये।

इस काया के गुदा द्वार में भारत खण्ड, लिंग छिद्र में कश्मीर खण्ड, मुख में कर्पूर खण्ड, दाहिने नाक रन्ध्र में श्री खण्ड, बायें नाक रन्ध्र में शंख खण्ड,

बायें नेत्र में, एक पाद, खण्ड दायें नेत्र में गान्धार खण्ड, बायें कान में कैवर्त खण्ड, दायें कान में महा मेरु खण्ड यह नवखण्ड बोलिये । इस काया में दो कान दो आँख दो नासिका छिद्र मुख लिंगेन्द्रिय गुदा बोलिये ।

इस काया में काम का विकार उपस्थेन्द्रिय स्थान-भालमे क्रोध विकार का वास, त्रिकुटि स्थान-नेत्र में, लोभ विकार का वास, चित्त स्थान-हृदय में मोह विकार का वास, मन स्थान-बुद्धि में अहंकार विकार का वास स्थान-अन्तःकरण यह पंच विकार बोलिये । इस काया में काम विकार, आशा, क्रोध विकार , जड़ता, लोभ विकार, तृष्णा, मोह विकार, ममता, अहंकार विकार भ्रमता- यह पंच कारो की स्त्रियां हैं । यह काया में अविद्या-अस्मिता-राग-द्वेष, अभिनिवेश यह पांच क्लेश बोलिये । इस काया में मेरुदण्ड में सुमेरु पर्वत-मस्तक में कैलाश पर्वत-पीठ में हिमालय पर्वत-बायें कन्धे में मलय पर्वत-दायें कन्धे में मन्दराचल पर्वत-दायें कान में विन्ध्याचल पर्वत-बायें कान में भैनाक पर्वत-ललाटों में श्री शैल पर्वत-सभी उंगलियों में अन्यन्य उप पर्वत बोलिये । इस काया में इड़ा नाड़ी में गंगा, पिंगला नाड़ी में जमुना, सुषुम्ना नाड़ी में सरस्वती और नाड़ीयों में चन्दभागा पीपासा-शतरुद्रा नर्मदा नदियाँ बोलिये । इस काया के ईश्वर चिन्तन-स्नानादि अतिथि सेवा, सत्संग-सन्ध्या वन्दन पांच नियम बोलिये । कथे महेश्वर गौरांजान गर्भ तत करो परवान सत है सती गौरजा उवाच कहो हर हरेश्वर महादेव जी पहले पुण्य के पहले पाप, पहले गर्भ के पहले सांस, पहले फोग के पहले फाग, पहले माई के पहले बाप, पहले गुरु के पहले चेला, पहले रात के पहले दिन, पहले चन्द के पहले सूर्य, पहले मूल के पहले डाल, पहले धरती के पहले आकाश, पहले पवन के पहले पानी, पहले नाद के पहले बिन्द, पहले सुन्न के पहले ओंकार यह हंस किस विधि उतरेगा पार । कहे हर हरेश्वर महादेव जी सुन बा सती पार्वती जी पहिले पुण्य पीछे पाप, पहिले गर्भ पीछे सांस, पहले फोग पीछे फाग, पहले माई पीछे बाप, पहले गुरु पीछे चेला, पहले रात पीछे दिन, पहिले चन्द पीछे सूरज, पहले मूल पीछे डाल, पहले धरती पीछे आकाश, पहले पवन पीछे पानी, पहिले नाद

पीछे बिन्द, पहले सुन्न पीछे ओंकार यह हंस काया इस विधि उतरेगा पार कथे महेश्वर गौरजा जान गर्भ तत करो परवान। सत है सती गौरजा उवाच हर हरेश्वर महादेव जी काया अन्दर अष्ठ सिद्धि कौन—कौन बोलिये। सप्त ऋषि कौन—कौन बोलिये? चार खानी सृष्टि भेद कौन—कौन बोलिये। चार बानी के स्थान कौन—कौन बोलिये? कहे हर हरेश्वर महादेव सुनबा सती पार्वती जी काया अन्दर अणिमा—महिमा—गरिमा—लधिमा—प्राप्ति—प्राकाम्य—ईशित्व—वशित्व यह अष्ट सिद्धाया बोलिये। काया अन्तर कश्यप अत्रि—वशिष्ठ विश्वामित्र—भारद्वाज—जमदग्नि गौतम यह सप्तऋषि बोलिये। अण्डज पक्षी—सर्पादिक—जरायुज—नर पशु दी—उद्विज वृक्षादि—स्वेदज—जूं—यह चार खानी भेद बोलिये। खेचर—आकाश में देवतादी, भूचर—पृथ्वी पर नर नारी पशु सर्पादि, निशाचर—रात्रि में भूत—प्रेत पिछाच्यादी, जलाचर मछली कछुआ ग्राह आदि। यह चार भेद बोलिये। काया में परा स्थान मूलाधार पश्यन्ति स्थान हृदय, मध्यमा स्थान कण्ठ बैखरी स्थान मुख यह चार बाणी बोलिये कथे महेश्वर गौरजा जान गर्भ तत करो परवान। सत है सती गौरजा उवाच कहो हर हरेश्वर महादेव जी इस काया अन्दर कौन—कौन चार पात्र बोलिये। कौन—कौन चार वेद बोलिये। कौन—कौन चार कुरान बोलिये। कौन—कौन सप्त समुन्दर बोलिये? कहे हर हरेश्वर महादेव जी सुनबा सती पार्वती जी इस काया अन्दर सिद्ध स सिद्ध अतीत सुपात्र यह चार पात्र बोलिये इस काया अन्दर ऋग्वेद—यजुर्वेद—सामवेद—अथर्ववेद यह चार वेद बोलिये। इस काया अन्दर अमूर—जमूर—अकुरान फकुरान यह चार कुरान बोलिये। इस काया अन्दर मूत्र में क्षार, लार में क्षीर, कफ में दधि, मेदमज्जा में घृत, चर्बी में मधु, रक्त में इक्षु वीर्य में अमृत एते सप्त समुन्दर बोलिये कथे महेश्वर गौरजा जान यह गर्भ ज्ञान सदा राखियो पास।

घटे ब्रह्माण्ड मंडे सूर्य फिरे खण्डे—खण्डे हृदय चार खानी चार बानी चंद सूर्य पवन पानी जहां—जहां साध सन्त तेरा होवे शिवपुरी में वास इता गर्भ गायत्री सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटि सिद्धों में, गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र कोलागढ़ पर्वत अनुपान शिला पर बैठ कर गुरु गोरक्ष नाथ जी ने पढ़ कथ कर सुनाया। श्री नाथ जी। गुरुजी को आदेश।

गर्भ गायत्री (छोटी)

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ कौन जुग योगी, कौन जुग जागन्ति, कौन जुग योगी माता गर्भ वास कौन जुग योगी लिया अवतार कौन जुग सिद्धों ने थापी थापना। निराजुग जोगी लिया अवतार असंख्य युग सिद्धों स्थापी थापना। कैसे जल कैसे थल कैसे मेरु मण्डाल कैलाश कैसे पवन पानी। सत्य का पवन पानी सत्य का मेरु मण्डाल कैलाश पर्वत, सत्य का चान्द सूर्य सत्य का दिन और रात चीनी की धरती आरम किया अलख किया अलख तो इकत्तर भया, करनी चाहिये खेती किसका कहा से बिन्द २१ सो २१ वें ब्रह्माण्ड का थीया। अमीया देवी पार्वती बोली स्वामी जी कै धाम शिवजी के बोलिये कै धाम शक्ति के बोलिये। सुनो देवी पार्वती ३ धाम शिवजी के बोलिये- आब धाम, जाप धाम- सर्वधाम। ४ धाम शक्ति के बोलिये नीर धाम-खिरधाम रक्त धाम फूल धाम। देवी पार्वती बोली स्वामी जी कौन मास में निर्मल नीर, कौन मांस में पलटे खीर, कौन मास रक्त का मेला कौन मास भभूत का गोला, कौन मांस उगन्ते केश कौन मास प्रगटी ज्योति, कौन मास लिया अवतार, कौन मास मोक्ष का द्वार ऐ हंस किस विधि उतरे पार सुनो देवी पार्वती पहले मासमें निर्मल नीर, दूजे मास में पलटे खीर तीजे मास रक्त का मेला चौथे मास भभूत का गोला, पांचवे मांस की काया, छटे मास अचम्भा आया, सातवें मास ऊगन्ते केश, आठवें मास प्रगटी जोत, नवमे मास लिया अवतार, दसवें मास मोक्ष का द्वार ऐ हंसा इस विधि उतरे पार। देवी पार्वती बोले, स्वामी जी पहले मूल की पहले डाल, पहले धरती की पहले आकाश, पहले चन्द की पहले सूर्य, पहले रात के पहले दिन, पहले सिद्ध के पहले साधक, पहले गुरु की पहले चेला, पहले माई के पहले बाप, पहले हाड की पहले मास, पहले पुन्य की पहले पाप, पहले फूल की पहले बास शिव शंकर जी बोले, सुनो देवी पार्वती पहले मूल पीछे डाल, पहले धरती पीछे आकाश, पहले चन्द पीछे सूर्य, पहले रात पीछे दिन, पहले सिद्ध पीछे साधक, पहले गुरु पीछे चेला, पहले माई पीछे बाप, पहले हाड पीछे मास, पहले पुन्य पीछे पाप, पहले फूल पीछे वास ऐ हंस इस

विधि उतरे पार जौहाडु तिल हाड नरसिंह हड्डू सवा हाथ धड रक्त का मेला साढ़े तीन करोड़ रोमावली सात समुद्र सात जहाज भारी छान छुपाटी गिरी गजमेहर पांच ज्ञानेन्द्रि पांच करमेन्द्रिय पच्चीस प्रकृति नवनाड़ी बहात्तर कोठी एक मुख बत्तीस जाड़ दांत बोलिये अढ़ाई अंगुल तिल्ली चार अंगुल फेफड़ा तीन अंगुल नासिका चार अंगुल का लाट पाट सवा हाथ का निकट पाट एक हिरा दो ज्योति दो शर्वण लीना साथी इतना गर्भ गायत्री सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

गर्भ गायत्री विधि

योगियों के लिये- योगी तथा साधक ने यह गर्भ गायत्री पाठ शिव मन्दिर में पाच फल शिवलिंग के ऊपर चढ़ाकर ९ मास तक करे। गर्भ ज्ञान होकर गर्भ योणी जन्म से मुक्ति होती है। १२ साल करे तो शिवपुरी में जाता है।

गृहस्थी- इस मन्त्र का पाठ ४१ दिन करे, शिवलिंग सन्मुख आसन लगा के बैठे, मिट्टी के घड़े में एक रंग की गाय का विशेषता: (काली कपिला गौ का) दूध और २१ शिवलिंगों के फल शिवलिंग के ऊपर चढ़ावे वह दूध तथा शिवलिंग फल (ताँबे के) पात्र में इकट्ठा करे और गर्भ गायत्री का पाठ (बड़ी या छोटी) करे पाठ पश्चात शिव आरती करे। दूध, फल पाठ करने वाले व्यक्ति ने आप अकेले ने खावे। यह विधि २१ दिन या ४१ दिन करे। प्रकृति ने नारी को गर्भ (पिण्डप्राण) का वरदान दिया है। इस मन्त्र को नारी भी उपरोक्त विधि से करे व दूध, फल का प्रसाद प्राशान करे। गृहस्थी तथा नारी इस २१ दिन विधि में विषय भोग, व्यसन तथा तामसी पदार्थ न खाये तथा नारी ने अशुद्धि के ३-४ दिन में केवल ॐ नमो शिवाय का चिन्तन करे ४-५ वें दिन फिर विधि कर सकते हैं।

फल- २१ दिन पाठ पूजा प्रसाद भक्षण के पश्चात अपनी इच्छानुरुप सन्तती प्राप्त होती है।

नारी गर्भ अवस्था में केवल गर्भ गायत्री का पाठ करे और अपने गर्भ को पाठ सुना रहे हैं। इस विधान से गर्भ में चित्त एकाग्र करे। ९ मास करे उत्तम, सर्वगुण सम्पन्न सन्तती को प्राप्त होगी।

निस्वार्थ भाव से करने वाले को गर्भ जन्म से मुक्ति प्राप्त होगी।

प्रातः धूप आरती पूजा

इस प्रकार (प्रथम खण्ड) श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी पूजन तथा देवी देवता कलश पूजन और नाथ सिद्ध देवता स्थापन पूजन तथा धूना पूजन-हवन और यन्त्र, मन्त्र, जाप पाठ पूजा और योग साधना के पश्चात श्री नाथ जी के पुजारी अर्थात मन्दिर में और धूनी के पुजारी धूना पर अपने-अपने स्थान पर गुरु गोरक्षनाथ जी की आरती-धूप आरती (पंच दीप या नव दीप गौघृत की) दीप आरती करते हैं। धूनी पर केवल धूपीया मन्त्र आरती करते हैं।

अतः प्रथम गुरु गोरक्षनाथ जी के पुजारी (मन्दिर में) प्रातः शंखनाद बजाकर द्वार खोलते हैं तथा मूर्ति स्थापित कक्ष का पड़दा खोलते हैं। योगी लोग तथा महन्त जी पीर जी, मानधारी योगी जन यथाक्रम चक्रावली में खड़े होते हैं। द्वार पर पंख जी कोटवाल छड़ी या चँवर लेकर खड़े होते हैं। अतः पुजारी जी धूपीया धूप पंच आरती घण्टी चरणामृत इ० आरती साहित्य के साथ आरती की तैयारी करते हैं। प्रथम धूप चेतन करके मूर्ति व मूर्ति कक्ष सेकते हैं और यह धूप गुग्गल, गौघृत खोबरा, चीनी इ० सुवासिक द्रव्यों से बनाते हैं और धूपीया में डालकर धूप मन्त्र द्वारा धूप चेतन करते हैं।

धूप वासना का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। वासना वासलो थापना थापलो। जहां धूप तहां देव जहां देव तहां पूजा। अलख निरन्जन और नहीं दूजा। तिल या गुग्गल घृत खोबरा मिष्ठान पंचांग धूप सिद्धों ने बनाया। कूट काट डिब्बी में कीना, ऊपर कीनी चीनी, चकमक पथरी जाल बाल लीनी उत्तर दक्षिण, पूरब पश्चिम आसन कीना, पहिला धूप सतगुरु को दीजे, हाथ जोड़ प्रणाम कर लीजे। दूसरा धूप शिव शक्ति को दीजे। ऋद्धि सिद्धि से भण्डार भरीजे। तीसरा धूप धरती आकाश को दीजे। चन्द्रमा-सूरज पर विमान चढ़ाले। चौथा धूप अठारह भार वनस्पति को दीजे, रुख वृक्ष की छाया लुडीजे। पांचवा धूप पांच तत्व को दीजे मोक्ष मुक्ति फल लभीजे। पाया भेद बहुत वडीयारा-कांची काया बालाक्कारी शम्भुनाथ जी के नाथ, शबद के सांचे गुरु गोरखनाथ, शून्य माता-अविगत पिता अलख गोत्र गौ का

घृत गुग्गल की वास तृप्त हो श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। इतना धूप वासना मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

इसी प्रकार धूनी कक्ष में धूनी के पुजारी जी भी सभी योगेश्वर महन्त पीर जी चक्रावली में खड़े होने के बाद धूपीया में ऊपर वर्णित सुवासिक धूप को निम्न मन्त्र से चेतन करके आरती करते हैं।

धूनी पर धूप चेताने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! पानी का बून्द पवन का थंभ, जहां उपजा कल्पवृक्ष का कन्ध। कल्पवृक्ष वृक्ष की छाया, जिसमें गुग्गल धूप उपाया। जहां हुआ धूप का प्रकाश जब तिल घृत ले किया वास। धूनी धूपिया अग्नि चढ़ाया। सिद्धा का मार्ग विरले पाया। ऊर्ध्वमुख चढ़े अग्निमुख जले होम धूप दीप वासना होयले। इक्कीस ब्रह्माण्ड तैंतीस करोड़ देवी देवता कू होम धूप वास। सप्तमे पाताल नवकुली नाग वासूक कू होम धूप वास। श्री नाथ जी के चरण कमल पादुका कू होम धूपवास। अलिल अनाद धर्मराजा धर्मगुरु देव कू होम धूप वास। धरती आकाश पवन पाणी कू होम धूपवास। चन्द सूरज कू होम धूप वास। तारा ग्रह नक्षत्र कू होम धूप वास। नवनाथ चौरासी सिद्ध कू होम धूप वास। थान मकान मठ मुकाम कू होम धूम वास। अग्निमुख धूप पवन मुख वास। वासना वास लो, थापना थापलो। जहां धूप तहां देव जहां देव तहां पूजा अलख निरन्जन और नहीं दूजा। इतना मन्त्र पढ़ धूप ध्यान करे सो योगी अमरापुर तरें। बिना मन्त्र धूप ध्यान करे खाया जरे न वाचा फुरे! इतना धूप चेतन मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में बैठकर श्री नाथजी गुरुजी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

अतः मन्दिर तथा धूनी के पुजारी मन्त्र द्वारा धूप चेतन करने के पश्चात धूप से गुरु गोरक्षानाथ जी की निम्न प्रातः आरती मन्दिर में तथा धूनी पर करते हैं।

प्रातः मंगल आरती

आरती जग के रक्षक की सदा शिव बाले गोरक्ष की—२
श्रवण में कुण्डल है आला, ध्यान में बैठे हैं बाला।
बिछाकर बाघाम्बर छाला, सदाशिव रुप, धरा है अनूप
करोड़ों भूप, शरण में आये रक्षक की, सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।१।।

सुनहरी जटा शीश साजे, भाल पर अर्ध चन्द्र विराजे।
रुप लख जती पति ही लाजे, गेरुवा शाल, त्रिपुंड है भाल,
गले में माल सुशोभित है रुद्राक्ष की सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बोले गोरक्ष की।।२।।
अखंडित भस्म अंग सोहे, मधुर ध्वनी डमरु की होये।
देख छबि सुर नर मुनी मोहे, गले बिच नाद खड़ाऊं
पाद देवही आज करत जय की जय योग के शिक्षक की।
सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की ।।३।।
पार्वती पार नहीं पायो, राम और कृष्ण सुयश गायो।
सकल सिद्धों के मन भायो योगी अवधूत आयो
निजपूत पंचमहाभूत करत जय के जय काल के
भक्षक की—सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।।४।।
लिये है योग युक्ति झोली, लुटा रहे योगामृत खोली।
शरण सब सिद्ध सन्त टोली, सिद्ध सिरताज भेष की लाज,
राखियो आज, अरज है पारस भिक्षुक की, अरज है,
पारस भिक्षुक की—सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की।।५।।

प्रात: मंगल आरती—२

ॐ शिव योगी जय जय शिव गोरक्ष योगी। वेद पुराण बखानत, ब्रह्मादिक सुरमानत अटल भवन भोगी। ॐ शिव गोरक्ष योगी।।१।।

बालजती ब्रह्मज्ञानी, योगी युक्ति पुरे गुरु योग युक्ति करे। सोंह शबद निरन्तर, (अनहद नाद निरन्तर) बाज रहे तुरे। ॐ शिव गोरक्ष योगी।।२।।

रत्न जड़ित मणि मणिक, कुण्डल कानन में गुरु कुण्डल कानन में। जटा मुकुट सिर सोहत भाल चन्द्र जटा विलसत सोहत भस्मन्त तन में। ॐ शिव गोरक्ष योगी ।।३।।

आदि पुरुष अविनाशी निर्गुण गुणराशि गुरु निर्गुण गुणराशि, सुमिरण से अघ छूटे सुमिरण से पाप छूटे टूटे पाप फाँसी । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥४ ॥

ध्यान कियो दशरथ सुत रघुकुल वंशमणि, गुरु रघुकुल वंशमणि, सीता शोक निवारक सीता मुक्त कराई मरयो लंक धनी । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥५ ॥

नन्दनन्दन जग वन्दन गिरधर वनमाली,गुरु गिरधर वनमाली, निश वासर गुण गावत, बंशी मधुर बजावत संग रुक्मणी बाली । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥६ ॥

धारा नगर मैनावन्ती तुम्हरो ध्यान धरे, गुरु तुम्हरो ध्यान धरे, अमर किये गोपीचन्द अमर किये पूर्णमल संकट दूर करे । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥७ ॥

चन्द्रावल लखरावल निजकर घात मरी, गुरु निजकर घात मरी, योग अमर फल देकर-देकर क्षण में अमर करी । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥८ ॥

भूप अमित शरणागत जनकादीक ज्ञानी, गुरु जनका दिक ज्ञानी, मान दिलीप युधिष्ठर, युधिष्ठर हरिशचन्द्र से दानी । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥९ ॥

वीर धीर संग ऋद्धि सिद्धि गणपति चँवर करे, गुरु गणपति चँवर करे, जगदम्बा जगजननी जगदम्बा जगजननी ध्यान धरे । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥१० ॥

दया करी चौरंग पर, कठिन विपत्ति टारी, गुरु कठिन विपत्ति टारी, दीन दयाल दयानिधि-दयानिधि सेवक सुखकारी । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥११ ॥

इतनी श्री नाथ जी की मंगला आरती निशदिन जो गावे गुरु प्रातः समय गावे, भगत विचार परम पद सो निश्चय पावे । ॐ शिव गोरक्ष योगी ॥१२ ॥

मुख्यतः मन्दिर (मठ) तथा धूनी पर प्रातः केवल धूप-आरती होती है । कुछ योगेश्वर ज्योति आरती भी करते हैं ।

आरती के पश्चात मन्दिर या धूनी के पुजारी धूप का अपना-अपना मन्त्र बोलते हैं और धूप से वास धूप से चक्रावली में सबको सेकते हैं । अतः पंख जी मन्त्रों का उच्चारण ऊंचे स्वरों में करते हैं । प्रथम धूप का फिर आदेश गायत्री और रौरास अनन्तर नाद मन्त्र से नाद वन्दना करते हैं । अगर पंख जी

नहीं हो तो समय अनुसार पुजारी जी प्रार्थना एवं धूप आदेश गायत्री तथा रौरस, नाद मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। अर्थात यह मन्त्र प्रार्थना सर्वथा मन्दिर तथा धूनी में करते हैं। अन्य भक्तजन भी बाद में दर्शन करते हैं। अतः पंख जी मन्त्र उच्चारण ऊंची आवाज में करते हैं तथा सभी योगेश्वर चक्रावली में खड़े सुनते हैं।

धूप का मन्त्र

धूप मन्त्र का उल्लेख पूर्व भाग में किया है। धूनी का मन्त्र तथा मन्दिर पूजा में धूप मन्त्र विभक्त, विभक्त स्थान पर बोले जाते हैं।

आदेश गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। आदेश नाम एक उठन्ते अनभय देवा, सातद्वीप नवखण्ड में करु आदेश नाम की सेवा। आदेश नाम अनघड़ की काया, रुणु कार में झुणुकार आन समाया। पुष्प प्रेम असंख्या युग मेवा आदि युगादि करु तुम्हारी सेवा वज्र करो देह अमर करो काया, आदेश नाम सिद्धों ने पाया। आदेश नाम पाषाण तराया ब्रह्मा विष्णु महेश्वर योगी, आवागमन कभी न भोगी। अदल दलीचे बैठकर श्री नाथ निरन्जन निराकार जी से करो आदेश नाम का विचार। आदेश नाम अनघड़ भाखी, लक्ष चौरासी जीया जून पड़न्ते राखी। ॐ सोंह विद्‌महे पुरुषोत्तम महादेवाय धीमही तन्नो आदेश प्रचोदयात् श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

यह आदेश गायत्री मुख्यतया महाकुम्भ पर्व में ध्वज पूजा के पश्चात चक्रावली से साथ बोली जाती है।

(रहरास)

असंख्य युग की रौरास

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। सत्त की पारखा सिद्ध का योग। उचारन्ते विचारन्ते नहीं व्यापन्ते रोग। धुन्धु योगी क्षेत्र मेला, काया नगरी हृदय स्थान। पांच तत्व का स्थान पांच तत्व में रुप न रेखा, बोलन हारा आपे आपे अलेखा। नहीं देही, नहीं देवरा, नहीं पूजा, नहीं पाती, नहीं उपजे, नहीं विनशे, नहीं शून्य, नहीं मूल, नहीं डाल, नहीं वृक्ष, नहीं छाया।

जिसका ध्यान सदाशिव ने लगाया। सुर नर मुनि जन गौरा पार्वती देवी आय लो खाय लो, छुपा लो जा बैठी शिवां के संग। ॐ गुरु जी असंख्य युग मध्ये कौन पीर, कौन तदबीर बोलिये। सतयुग मध्ये कौन पीर, कौन तदबीर बोलिये। द्वापर युग मध्ये कौन पीर, कौन तदबीर बोलिये। कलयुग मध्ये कौन पीर, कौन तदबीर बोलिये।

ॐ गुरु जी असंख्य युग मध्ये अलीलनाथ जी पीर अनहद तदबीर बोलिये। सतयुग मध्ये श्री ईश्वर आदिनाथ जी, पीर, पागल तदबीर बोलिये। त्रेतायुग मध्ये सिद्ध चौरंगीनाथ जी पीर, बखत (भगत) तदबीर बोलिये। द्वापर युग मध्ये दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी पीर, गुरु गोरक्षनाथ जी तदबीर बोलिये। कलयुग मध्ये गुरु गोरक्षनाथ जी पीर, औघड़ तदबीर बोलिये। रोट लंगोट लिगोपा सोने की मुद्रा-रुपे का नाद छीट की झोली, पाट का मेखला, चन्द्र से योगी गुप्त रहेंगे, बाण हथियार चलायेंगे, गुरु को नहीं मानेंगे शबद को नहीं झेलेंगे दमड़ी चमड़ी का लोभ लालच करेंगे, गुरा का नाम ले दोजक भरेंगे। कहता हूं सुनता हूं देता हूं हेला, गुरु की करनी गुरु जायेगा, चेला की करनी चेला। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र कोलागढ़ पर्वत अनुपान शिला पर राजा रामचन्द्र जी की पीरी उठी श्री सत्यनाथ ब्रह्मा को बैठी। खड़े सिद्ध बैठे पाषाण। सत्य-सत्य भाखन्ते आये श्री गोरखनाथ जी के निर्वाण। कौन गोरक्ष कपाला गोरक्ष आकाश भैरो पिशावर स्थान गोरख खटडी चार थान पांचवा मकान टिल्ला शिवपुरी का स्थान। असंख्य युग की रौरास पीरा महन्ता के पास। संध्या शिवपुरी का बेला अनन्त कोटी सिद्धों का युग-युग मेला। सिद्धों गुरु पीरो करो नाद ओंकार। ओंकार तेरा आधार तीन लोक में जय जयकार नाद बाजे काल भागे-गोरक्ष टोपी ज्ञान साजे गले नाद पुष्पन की माला रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला, चार खानी चार बानी चन्द्र, सूर्य, पवन, पानी, एक देवा सर्व सेवा जोत पाट ले परसो देवा, कानन कुण्डल गले नाद करो सिद्धों नादकार।

यह रौरास मुख्यता, त्र्यम्बक क्षेत्र, उज्जैन क्षेत्र, हरिद्वार क्षेत्र पर कुम्भ पर्व में पात्र देवता के पूजा स्थान में आरती चक्रावली में पंख ऊंची आवाज में उच्चारण करते हैं।

अतः प्रार्थना सद्हृदय से करना ही सभी क्रियाओं तथा साधनाओं से अति श्रेष्ठ है। प्रार्थना सभी साधना का तथा भक्ति का सार है। यह सद्भाव प्रार्थना शीघ्र ही फल प्राप्ति कर देती है और प्रार्थना तो हर प्राणी कर सकता है और हर किसी को प्रार्थना करने का अधिकार है।

पारम्परिक प्रार्थना

ॐ शिव गोरक्ष योगी

गंगे हर नर्मदे हर जटाशंकरी हर ॐ नमो पार्वती पतये हर बोलिये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की जय। माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी महाराज की जय।

नवनाथ चौरासी सिद्धों की जय, भेष भगवान की जय, अटल क्षेत्र की जय, रमतेश्वर महाराज की जय। कदली काल भैरवनाथ जी की जय पात्र देवता की जय, ज्वाला महामाई की जय, सनातन धर्म की जय, अपने—अपने गुरु महाराज की जय, गौ ब्राह्मण की जय, बोल सांचे दरबार की जय, हर हर महादेव की जय।

कर्पूर गौरम करुणावतारम् संसारसारम् भुजगेन्द्र हारम् सदा वसन्तम् हृदयार विन्दे, भवभवानी सेहितम् नमामी, मन्दारमाला कलिनाल कायै, कपाल माला कीत कन्थराय, नमः शिवाय च नमः शिवाय, गोरक्ष बालम् गुरु शिष्य पालम, शेषा हिमालयम् शशीखण्ड भालम् कालस्य कालम् जितजन्म् जालम् वन्दे जटालम् जगदब्जनालम्।

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा, गुरु साक्षात्त्परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवै नमः ध्यान मूलं गुरोमुर्ति, पूजा मूलं गुरु पदम् मन्त्र मूलं गुरुवाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा, मन्त्र सत्यं पूजा सत्यं सत्य देवं निरन्जनम् गुरुः वाक्यं सदा सत्यम् सत्यम एकम् परम्पदम्।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणम त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम् देव देवाः आकाशाय ताडका लिंगम, पाताले बटुकेश्वरम मर्त्ये लोके महाकालम सर्व लिंगं नमोस्तुते।

शैली श्रृंगी शिरं जटा झोली भगवा भेष। कानन कुण्डल भस्म लसै, शिव गोरक्ष आदेश।

एक ॐकार तेरा आधार। तीन लोक में जय जयकार। नाद बाजे काल भागे। ज्ञान की टोपी, गोरक्ष साजे। गले नाद पुष्पन की माला। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।। चार खानी चार बानी चन्द्र सूर्य पवन पानी एको देवा सर्वत्र सेवा। ज्योत पाटले परसो देवा। कानन कुण्डल गले नाद। करो सिद्ध नादकार सिद्ध गुरुवरो को आदेश। आदेश।

इस प्रकार यह प्रार्थना सर्वत्र स्थान मठ मन्दिर तथा धूनी पर करते हैं।

अत: इसी प्रकार साधक ही आरती पूजा मन्त्र उच्चारण तथा पाठ प्रार्थना करें।

प्रार्थना के पश्चात पीर जी महन्त जी पुजारी जी भण्डारी कोठारी तथा अन्य योगेश्वर नाद मन्त्र से नाद पूजा करते हैं।

नाद पूजा मन्त्र (छोटा)

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी शून्य शून्य महाशून्य शून्य में ॐकार आवो सिद्धों नाद बिंदका करो विचार। नादे चंद्रमा नादे सूर्य नाद रहया घट पिण्ड में भरपूर। नाद काया का पेखना बिन्द काया की राह, नादे बिन्दे जोगेश्वर तीनों एक स्वभाव। ज्ञानी योगी नाद बजावे छत्तीस भोजन अमृत कर पावै बिना मन्त्र योगी नाद बजावे ऐसा डूबे थाह ना पावे। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

नाद पूजा के पश्चात सभी योगी जन एक दूसरे से हाथ मिलाकर आदेश करते हैं तथा मानधारियों को शंभु आदेश करते हैं। फिर सभी योगेश्वर गोल पंक्ति में पदमासन में बैठकर सब मिलकर एक स्वर में श्री नाथ जी का बाला अष्टक, गोरक्ष चालीसा, चौरासी सिद्ध चालीसा इ० पाठ करते हैं तथा पुजारी सबको चरणामृत आरती और प्रसाद देता है।

अत: साधक भी इसी प्रकार अनुकरण करके निम्न पाठ करे।

गुरु गोरक्षनाथ जी बालाष्टक

ॐ गुरु जी प्रथम सुमिरण गुरु जी का कर लो हृदय में ज्ञान प्रकाशकम् श्री आदि योग युगादि ब्रह्म सेविते शिव माधवम् श्री बाल गोरक्ष के चरण प्राणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के चरण प्रणाम्यहम् । जै हो जती गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् । श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम् ॥१ ॥

ॐ गुरु जी बाल जती गुरु ब्रह्मज्ञानी घट ही में ज्योति प्रकाशकम् । उदित भानु बसन्त कमला श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् ॥२ ॥

ॐ गुरु जी रहित निशदिन अगम अगोचर सिद्ध ज्ञान प्रकाशिकम् श्री जपत सुरनर देव मुनिजन श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् ॥३ ॥

ॐ आकाश धूना पाताल मण्डल पवन संगम सोहरा श्री अमर अयोनी जी का सुमिरण कर लो, श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् ॥४ ॥

ॐ गुरु जी आदि अन्त अनादि निर्भय रहत निशदिन उन्मुना श्री लक्ष चौरासी जीव योनियों से नाम रख दो श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् ॥५ ॥

ॐ गुरु जी जल तो अम्बर थल तो सागर सोहत कंठ में मेखला श्री कानों में कुण्डल विभूति अभारण श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् ॥६ ॥

ॐ गुरु जी एक ज्योति गुरु सकले व्यापी, कोटि कुंजर पराकरम् श्री मदनमोहन जी का मान रखलो श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् ॥७ ॥

ॐ गुरु जी आबू का मंडल द्वारका क्षेत्र गोरक्ष मढ़ी स्थान है, श्री माधो प्रांची में श्री नाथ जी ने रुक्मिणी जी को कंगन बान्ध्यो श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम ॥८ ॥

ॐ गुरुजी इतना श्री नाथ जी का बालाष्टक पढ़त निशदिन कैलाश वासा सदाफल, श्री देवकृष्ण श्री नाथ जी की शरण आयो श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् (पूर्ववत्)

गोरक्षनाथाष्टक

गोरक्ष नाथ सुनाथ निर्भय निर्विकार निरंजनम् अजर अमर अडोल निश्चल श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्याहम् जय श्री नाथ जी के चरण प्रणाम्यहम्, श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत ॥१ ॥

ब्रह्मा शेष महेश नारद अष्ट भैरव सिद्ध यति ध्यावते दोऊ पाद पंकज ध्यावते सिद्ध गणपति श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।२।।

अष्ट सिद्धि नव निधि वन्दित ध्यावते रघुवर सिया व्यास शुक प्रह्लाद सेवत सेविते हनुमत प्रिया, श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।३।।

शून्य मन्दिर करत आसन योग ध्यान सदा रटन (रत) आत्म लाभ सन्तोष पूर्ण श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।४।।

मान नहीं अभिमान जाके कनक माटी एक समान राग द्वैष अतीत मनसा श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।५।।

अंग विभूति विराजत सुन्दर लाल तिलक त्रिलोचनम् चन्द्र सूर्य अग्नि कहिये कर्ण कुण्डल अदभूतम् श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।६।।

ज्ञान ध्यान अचिन्त्य मूर्ति आत्म ज्योति सदाशिव त्रिगुण रुप अतीत तुर्या श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।७।।

श्री कृष्णचन्द्र सु ध्यान कीन्हो कंस दुष्टादिक हनम् षोडश नार सहस्त्र सुत पाइये अष्टचक्र ऊपर शोभितम् श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।८।।

अक्षमाल विराजत सुन्दर चर्म चन्दन मृग धर त्राटक मुद्रा ज्ञान पूर्ण कंथते सनकादिक श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।९।।

गोरक्ष अष्टक पढ़त निशदिन कैलाश वासा सदाशिव सर्वतीर्थ लभ्यते पुण्य सर्व पाप विनाशनम् श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।१०।।

गोरक्षनाथाष्टक

गोरक्षनाथ योगेन्द्र जगपति अगम निगम यश गावते, शंकर शेष विरंचि शारद नारद वीणा बजावते श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के चरण प्रणाम्यहम् जय हो जती गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम पूर्ववत्।।१।।

बाल रुप यतीन्द्र जटाधर ध्यावते षटमुख जती श्री रामचन्द्र वशिष्ठ हनुमंत ध्रुव प्रह्लाद रती पती, श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।२।।

सेली नाद सुकण्ठ साजत अनहद शबद प्रकाशितम् अजर अमर अडोल आसन सुर नर मुनि मन रन्जनम् श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत्।।३।।

अंग भस्मी असंग निर्मल उन्मुन ध्यान सदा रटेन चन्द्र भानु समान लोचन कर्ण कुण्डल शोभितम् श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत ॥४ ॥

अष्ट सिद्धि नवनाथ भैरव वीर चौसठ योगिनी इन्द्र वरुण कुबेर सेवित मदन मोहन रुक्मिणी श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत ॥५ ॥

उत्तर देश विचित्र गिरवर सर सरिता अगणित बहे। साधक सिद्ध सुजान तज मद मान निर्गुण ब्रह्म लहे, श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत ॥६ ॥

सुर पुर नगर सुशंख रावल जाके सुत सुमिरन कियो यम फांस त्रास निवार भव दुःख सुन्दर तन स्थिर दियो श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत ॥७ ॥

परशु धर तप कठिन कीन्हो सागर तट मठ बान्धियो धुन्धकार निवारण हित मंजूनाथ जी प्रगट भयो श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत ॥८ ॥

श्री पतिनाथ सुनाथ अष्टके पढ़त विघ्न नशावही वर्णत पीर चौरगी सोई नर मनवांछित फल पावही श्री गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् पूर्ववत ॥९ ॥

ॐ गोरक्ष गोपालं-घड़ी-घड़ी के रक्षपाल-वृद्ध न बाल जीते यमकाल प्रातःकाल मंगला श्रृंगार आरती धूप ध्यान की सिद्ध गुरुवरो। आदेश। आदेश।

तदपश्चात योगेश्वर ज्ञान गोदड़ी का पाठ करते हैं। एक पाठ करे तथा अन्य योगी जन सुनते हैं। अतः साधक भी ज्ञान गोदड़ी का पाठ करें।

गुरु गोरक्षनाथ जी की ज्ञान गोदड़ी

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। नाथ कहे दोऊ कर जोरी, यह संशय मेटो प्रभु मोरी। काया गोदड़ी का विस्तारा, तां से हो जीवन निस्तारा। आदि पुरुष इच्छा अपजाई। इच्छा सखत निरंजन मांही। इच्छा ब्रह्मा विष्णु महेशा, इच्छा शारद गौरी गणेशा। इच्छा से उपजा संसारा पांच तत्व गुण तीन पसारा। अलष पुरुष जब किया विचारा, लक्ष चौरासी धागा डारा। पांच तत्व की गोदड़ी बीनी, तीन गुणों से ठाड़ी कीनी। तां मैं जीव ब्रह्म है माया, सतगुरु ऐसा खेल बनाया। सीवन पांच पच्चीस सो लागे काम क्रोध मद मोह त्यागे। अब काया गोदड़ी का विस्तारा, देखो संतो अगम

अपारा । चन्द्र सूर्य दोउ चंदोआ लागे, गुरु प्रताप से सोवत जागे । शबद की सुई सुरति का डोरा, ज्ञान का टोपा निरंजन ओढ़ा । इस गोदड़ी की कर होशियारी, दाग न लागे देख विचारी । सुमति के साबुन सतगुरु धोई, कुमति के मैल को डारे खोई । जिन गुदड़ी का किया विचारा, उनको भेंटे सिरजन हारा । धीरज धूनी ध्यान धर आसन, जतकि कोपीन सत्य सिंहासन । युक्ति कमण्डल कर गहे लीना, प्रेम फावड़ी सतगुरु चीना । सेली शील विवेक की माला, दया की टोपी तन धर्मशाला । मेहर मतंगा मति व साखी, मृगछाला मन ही की राखी । निष्ठा धोती पवन जनेऊ, अजपा जपा सो जाने भेऊ । रहे निरन्तर सदगुरु दाया, साधो की संगत से कुछ पाया । लय की लकुटी हृदय की झोली, क्षमा खड़ाऊं पहिर बहोरी । मुक्ति मेखला सुकृत सुमरनी, प्रेम प्याला पीले मौनी । दास कूबरी कलह निबारी, ममता कुत्ती को ललकारी । यतने जंजीर बान्ध जो राखे, अगम अगोचर खिड़की लाखे । वीतराग वैराग्य निधाना, तत्व तिलक दीनों निर्वाना । गुरु गम चकमक मन सम तूला, ब्रह्म अग्नि प्रगट भई मूला । संशय शोक सकल भ्रम जारे, पांच पच्चीसों प्रगट मारे । दिल के दर्पन दुविधा धोई, सो योगेश्वर पक्का होई । सुन्न महल की फेरी देई, अमृत रस की भिक्षा लेई । सुख दुख मेला जग का भावे, त्रिवेणी के घाट नहावे । तन मन खोज भया जब ज्ञाना, तब लख पावे पद निर्वाना । अष्ट कमल दल चक्र सूझे, योगी आप-आप मैं बूझे । इडा पिंगला के घर जाई, सुषुम्ना नीर रहा ठहराई ॐ सोह तत्व विचारा, बंक नाल में किया संभारा । मनसा मार्ग गगन चढ़ जाई, मानस सरोवर बैठ नहाई । छूट गई कलमष मिले अलेखा, इन नैनो से अलख को देखा । अहंकार अभिमान विदारा, घट में चौका किया उजियारा । श्रद्धा चंवर प्रीति की धूपा, निष्ठा नाम गुरु का रुपा । अनहद नाद नाम की पूजा, ब्रह्म वैराग्य नहीं दूजा । चित्त की चन्दन तुलसी फूला, हित का सम्पुट करले मूला । गोदड़ी पहरी आप अलेखा, जिसने चलाया प्रगट भेषा । जो गोदड़ी को पढ़े प्रभाता, जन्म-जन्म का पातक जाता । जो गोदड़ी पढ़े मध्याना, सो नर पावे पद निर्वाना । सन्ध्या सुमिरण जो नर करे, जरा मरण भव सागर तरे । जो गोदड़ी की निन्दा करें षट दर्शन से वह नर टरे । कहे मत्स्येन्द्र सुनो गोरक्षनाथ, ज्ञान गोदड़ी करे प्रकाश ।

इति गुरु गोरक्षनाथ जी की ज्ञान गोदड़ी सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतिरिक्त अन्य योगीश्वर गोरक्ष चाँलीसा, नवनाथ चौरासी सिद्ध चालीसा आदि स्तोत्रों का पाठ भी करते हैं। अतः साधक गोरक्ष चालीसा का पाठ करें।

गोरक्ष चालीसा

दोहा- गणपति गिरीजा पुत्र को सिमरु बारम्बार।
हाथ जोड़ विनती करुं शारद नाम आधार।

चौपाई-जय जय जय गोरक्ष अविनाशी, कृपा करो गुरुदेव प्रकाशी।
जय जय जय गोरक्ष गुणज्ञानी, इच्छा रुप योगी वरदानी॥

अलख निरन्जन तुम्हरो नामा, सदा रहो भक्तन हित कामा। नाम तुम्हारा जो कोई गावे, जन्म जन्म के दुःख नशावे। जो कोई गोरक्ष नाम सुनावे, भूत पिशाच निकट नहीं आवे। ज्ञान तुम्हारा योग से पावे, रुप तुम्हारा लख्या ना जावे। निराकार तुम हो निर्वाणी, महिमा तुम्हारी वेद बखानी। घट-घट के तुम अन्तर्यामी, सिद्ध चौरासी करे प्रणामी। भस्म अंग गले नाद विराजे, जटा शीश अति सुन्दर साजे। तुम बिन देव और नही दूजा, देव मुनि जन करते पूजा। चिदानन्द सन्तन हितकारी, मंगल करे अमंगल हारी। पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी, गोरक्षनाथ सकल प्रकाशी। गोरक्ष-गोरक्ष जो कोई ध्यावे, ब्रह्मरुप के दर्शन पावे। शंकर रुप धर डमरु बाजे, कानन कुण्डल सुन्दर साजे। नित्यानन्द है नाम तुम्हारा, असुर मार भक्तन रखवारा। अति विशाल है रुप तुम्हारा, सुर नर मुनिजन पावे न पारा। दीन बन्धु दीनन हितकारी, हरो पाप हम शरण तुम्हारी। योग युक्ति में हो प्रकाशा, सदा करो सन्तन तन वासा। प्रातःकाल ले नाम तुम्हारा, सिद्धि बढ़े अरु योग प्रचारा। हठ-हठ-हठ गोरक्ष हठीले, मार-मार वैरी के कीले। चल-चल-चल गोरक्ष विकराला, दुश्मन मार करो बेहाला। जय-जय-जय गोरक्ष अविनाशी, अपने जन की हरो चौरासी। अचल अगम है गोरक्ष योगी, सिद्धि देवो हरो रस भोगी। काटो मार्ग यम की तुम आई, तुम बिन मेरा कौन सहाई। अजर अमर है तुम्हारी देहा, तुम अविनाशी

सनकादिक सब जोर हि नेहा। कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा। योगी लखे तुम्हारी माया, पार ब्रह्म से ध्यान लगाया। ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे, अष्ट सिद्धि नव विधि घर पावे। शिव गोरक्ष है नाम तुम्हारा, पापी दुष्ट अधम को तारा।

अगम अगोचर निर्भय नाथा, सदा रहो सन्तन के साथा। शंकर रुप अवतार तुम्हारा, गोपीचन्द भर्तृहरि को तारा। सुन लिजो गुरु अरज हमारी, कृपा सिन्धु योगी ब्रह्मचारी। पूर्ण आस दास की कीजे, सेवक जान ज्ञान को दीजे। पतित पावन अधम अधारा, तिनके हेतु तुम लेत अवतारा। अलख निरंजन नाम तुम्हारा, अगम पंथ जिन योग प्रचारा। जय-जय-जय गोरक्ष भगवाना, सदा करो भक्तन कल्याना। जय-जय-जय गोरक्ष अविनाशी, सेवा करे सिद्ध चौरासी। जो पढ़ही गोरक्ष चालीसा, होय सिद्ध साक्षी जगदीशा। बारह पाठ पढ़े नित्य जोई, मनोकामना पूर्ण होई और श्रद्धा से रोट चढ़ावे, हाथ जोड़कर ध्यान लगावे।

दोहा- सुने सुनावे प्रेमवश पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना, पूरे गोरक्षनाथ॥

अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार। कानन कुण्डल सिर जटा, अंग विभूति अपार। सिद्ध पुरुष योगेश्वरों, दो मुझको उपदेश। हर समय सेवा करुं, सुबह शाम आदेश।

इति गोरक्ष चालीसा सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: चौरासी सिद्ध चालीसा का पाठ करे।

चौरासी सिद्ध चालीसा

दोहा- श्री गुरु गणनायक सिमर, शारदा का आधार।
कहूँ सुयश श्री नाथ का, निज मति के अनुसार॥
श्री गुरु गोरक्षनाथ के चरणों में आदेश।
जिन के जोग प्रताप को, जाने सकल नरेश॥

॥ चौपाई ॥

जय श्रीनाथ निरन्जन स्वामी, घट घट के तुम अन्तर्यामी । दीन दयालु दया के सागर, सप्तद्वीप नवखण्ड उजागर । आदि पुरुष अद्वैत निरन्जन, निर्विकल्प निर्भय दुःख भंजन । अजर अमर अविचल अविनाशी, ऋद्धि सिद्धि चरणों की दासी । बाल यती ज्ञानी सुखकारी, श्री गुरुनाथ परम हितकारी । रुप अनेक जगत में धारे, भगत जनों के संकट टारे । सुमिरण चौरगी जब कीन्हा, हुये प्रसन्न अमर पद दीन्हा । सिद्धों के सिरताज मनावो, नवनाथों के नाथ कहावो । जिसका नाम लिये भव जाल, आवागमन मिटे तत्काल । आदिनाथ मत्स्येन्द्र पीर, धोरमनाथ धुन्धली वीर । कपिल मुनि चर्पट कुण्डेरी, नीमनाथ पारस चगेरी । परशुराम जमदग्नि नन्दन, रावण मार राम रघुनन्दन । कन्सादिक असुरन दलहारी, वासुदेव अर्जुन धनुर्धारी । अंचलेश्वर लक्ष्मण बल बीर, बलदाई हलधर यदुवीर । सारंगनाथ पीर सरसाई, तुंगनाथ बद्री बलदाई । भूतनाथ धारीपा गोरा, बटुकनाथ भैरो बल जोरा । वामदेव गौतम गंगाई , गंगनाथ धोरी समझाई । रतननाथ रण जीतन हारा, यवन जीत काबुल कन्धारा । नागनाथ नाहर रमताई, बनखण्डी सागर नन्दाई । बंकनाथ कंथड़ सिद्ध रावल, कानीपा निरीपा चन्द्रावल । गोपीचन्द भर्तृहरि भूप, साधे योग लखे निज रुप । खेचर भूचर बाल गुन्दाई , धर्मनाथ कपली कनकाई । सिद्धनाथ सोमेश्वर चण्डी, भुसकाई सुन्दर बहुदण्डी । अजयपाल शुकदेव व्यास, नासकेतु नारद सुख रास । सनत्कुमार भरत नहीं निद्रा, सनकादिक शारद सुर इन्द्रा । भंवरनाथ आदि सिद्ध बाला च्यावननाथ माणिक मतवाला । सिद्ध गरीब चंचल चन्दराई, नीमनाथ आगर अमराई । त्रिपुरारी त्र्यम्बक दुःख भन्जन, मंजुनाथ सेवक मन रंजन । भावनाथ भरम भयहारी, उदयनाथ मंगल सुखकारी । सिद्ध जालन्धर मूंगी पावे, जाकी गति मति लखि न जावे । औघड़ देव कुबेर भण्डारी, सहजाई सिद्धनाथ केदारी । कोटि अनन्त योगेश्वर राजा, छोड़े भोग योग के काजा । योग युक्ति करके भरपूर, मोह माया से हो गये दूर । योग युक्ति कर कुन्ती माई, पैदा किये पांचों बलदाई । धर्म अवतार युधिष्ठिर देवा, अर्जुन भीम नकुल सहदेवा । योग युक्ति पार्थ हिय धारा,

दुर्योधन दल सहित संहारा। योग युक्ति पन्चाली जानी, दुःशासन से यह प्रण ठानी। पावू रक्त न जब लग तेरा, खुला रहे यह शीश मेरा। योग युक्ति सीता उद्धारी, दशकन्धर से गिरा उच्चारी। पापी तेरा वंश मिटाऊं, स्वर्ण लंका विध्वंस कराऊं। श्री रामचन्द्र को यश दिलाऊं, तो मैं सीता सती कहाऊं। योग युक्ति अनसूया कीनो, त्रिभुवननाथ साथ रस भीनो। देवदत्त अवधूत निरन्जन, प्रगट भये आप जगवन्दन। योग युक्ति मैनावती कीन्ही, उत्तम गति पुत्र को दीनी। योग युक्ति की बंछल मातू, गूंगा जाने जगत विख्यातू।

योग युक्ति मीरा ने पाई, गढ़ चित्तौड़ में फिरी दुहाई। योग युक्ति अहिल्या जानी, तीन लोक में चली कहानी। सावित्री सरस्वती भवानी, पार्वती शंकर मनमानी। सिंह भवानी मनसा माई, भद्रकाली सहजा बाई। कामरु देश कामाक्षा योगन, दक्षिण में तुलजा रस भोगन। उत्तर देश शारदा रानी, पूर्व में पाटन जग मानी। पश्चिम में हिंगलाज विराजे, भैरवनाद शंख ध्वनि बाजे। नव कोटि दुर्गा महारानी, रुप अनेक वेद नहीं जानी। काल रुप धर दैत्य संहारे, रक्त बीज रण खेत पछारे। मैं योगन जग उत्पत्ति करती, पालन करती संहार करती। जती सती की रक्षा करनी, मार दुष्ट दल खप्पर भरनी। मैं श्री नाथ निरन्जन की दासी, जिनको ध्यावे सिद्ध चौरासी। योग युक्ति से रचे ब्रह्माण्डा, योग युक्ति थरपे नवखण्डा। योग युक्ति तप तपे महेश, योग युक्ति धर धरे है शेष। योग युक्ति विष्णु तन धारे, योग युक्ति असुरन दल मारे। योग युक्ति गजानन जाने, आदि देव त्रिलोकी माने। योग युक्ति करके बलवान, योग युक्ति करके बुद्धिमान। योग युक्ति कर पावे राज, योग युक्ति कर सुधरे काज। योग युक्ति योगेश्वर जाने, जनकादिक सनकादिक माने। योग युक्ति मुक्ति का द्वार, योग युक्ति बिन नहीं निस्तारा। योग युक्ति जाके मन भावे ताकी महिमा कही न जावे। जो नर पढ़े सिद्ध चालीसा, आदर करे देव तैंतीसा। साधक पाठ पढ़े नित्य जोई, मनोकामना पूर्ण होई। धूप दीप नैवेद्य मिठाई, रोट लंगोट भोग लगाई।

दोहा- रतन अमोलक जगत में योग युक्ति है मीत। नर से नारायन बने

अटल योगी की रीत। योग विहंगम पंथ को, आदिनाथ शिव कीन्ह। शिष्य प्रशिष्य परम्परा, सब मानव को दीन्ह। प्रातः काल स्नान कर, सिद्ध चालीसा ज्ञान। पढ़े सुने नर पावही, उत्तम पद निर्वान।

इति चौरासी सिद्ध चालीसा सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

गुरु गोरक्षनाथ भगवान की जय। सिद्ध चौरासी सिद्धों की जय।

कुछ योगेश्वर निम्न लक्ष्मण कुण्डली तथा चर्पट शब्दी का पाठ अध्य यन करते हैं।

लक्ष्मण-कुण्डली

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। सत्यहीन पृथ्वी-गगन हीन पानी, वेद हीन ब्रह्मा ज्ञान हीन योगी। देखो सिद्धों कलू काल की निशानी अग्नि रुप समो नारी-घृत रुप समो नरः। कथो जती लक्ष्मण, कलयुग पाप करा घना, करडा षट दर्शन को दुःख दिया घना माता जाकी लष्ट पष्टमी पीता वर्ण शंकरा। तासु पुत्र भया युगी धुन्धु पाधि तस्करा या मसखारा। माता जाकी शीलवन्ती पिता सत्य भाखन्ते, तासु पुत्र भये योगी एकोत्तर सौ पुरुषा ले तरन्ते। योग आरम्भ को साधन्ते, पाप छोड़ पुण्य लभन्ते। कहो तो नाथ जी दीन पलटू, कहो तो खेंचू माया। काहे को लक्ष्मण दीन पलटे, काहे को खैंचो माया। आपे आप धुन्ध मचेगा हुक्म गुरुं का आया। दर्शनी तो कर्शनी होंगे, राजा होंगे हाली। पहिरा आयेगा शाह का, धरती मांगेगी भोग, कितनों को खड़ग खावसी कितनों को खासी रोग। पैसे-पैसे घोड़ा होगा-अधेले अधेले नारी जती सती कोई विरला होगा, और हो जायेंगे सब घर बारी संसारी देवल देख देवल घसेगा मस्जिद देख मुनारा। जम्बूद्वीप में हलाहल घोर मचेगा, कोई नहीं सिद्धों वरजण हारा। तपस्वी तो हाट मांगेंगे, शूद्र तो एकादशी रखेंगे, ब्राह्मण तो वाट मारेंगे-गुरु चेले का होगा वाद विवाद। पुत्र तो न माने माई बाप, सात वर्ष की कन्या सांधेगी घर बार। इन्द्र तो अल्प बरसेगा-नदी नालों का जल सूख जायेगा। गंगा यमुना सातवें पाताल बहेगी। तब देखों सिद्धों आया कलूकाल का वर्तमान, देहली तखत

को झाड़ फटकार के बिछायेगी चौसठ योगिनी बैठकर गायेगी मंगल गीत। श्वेत घोड़ा श्वेत पलान, जिस पर बैठेंगे अलख पुरुष निर्वाण। पहिले बैठै ब्राह्मण पीछे बैठे वणिज पुत्र जगत व्यवहार। योगी कूड़ा कपटिया जाग्या दिन रात। हम तो सिद्धों तत्व निर्वाणी अधर तत्व लौ लाई, नित्य उठ अपनी काया को खोजे, आवागमन मिट जाई। सत्य की सिद्धों सेली बान्ध लो शबद गुरु का बाण। रण में जुझे सो सुरमा जाण। असंग जो योगी रहे मलंगा खड़्ग कामनी खेले संगा। हस हस रखो सिद्धों गढ़ काया का राज दृढ़ कर राखो अपने पास। वज्र की लंगोटी बान्धो कस, पान्च भूत आत्मा कर लो वस, लक्ष्मण जी कहे रामचन्द्र जी सुनो। कलयुग मध्ये यह वृत्तान्त पूर्ण होंगे। लक्ष्मण कुण्डली जाप सम्पूर्ण भया टिल्ला शिवपुरी के स्थान में बैठकर सिद्ध बालगुन्दाई नाथ जी ने पाठ कर सुनाई। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: कुछ योगेश्वर नित्य निम्न पाठ करते हैं।

चर्पटनाथ जी की शबदी

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। किसका बेटा किसकी बहू आप स्वार्थ मलीया सहू। जेता पूता तेती झाल-चर्पट कहे आल जंजाल ॥१॥ काया तरुवर माकड़ी चित्त-झाले पात भ्वे नित्त-नित्त। कल्पे झल्पे दह दिशि जाई ता कारण कोई सिद्धि न पाई ॥२॥ ढील कछौटी मन भागा फिरे- घर घर नैन पसारा करे। खाया जरे न वाचा फुरे तां कारण भौंदु झुर झुर मरे ॥३॥ राती कंथा रहे पटरोल-पगापावड़ी, मुखा तम्बोल-खाजे पीजे करे जो भोग-चर्पट कहे योगी जोवे योग ॥४॥ चाकर कुकर की गुहराधी बाली भोली तरुणी साथी दिन करे भिक्षा रात करे भोग-चर्पट कहे बिगोवे योग ॥५॥ गन्ध विगन्धा मूत्राखाड़। पशुआ पड़-पड़ तोड़े हाड बय न सक्या अमूल बारी-चर्पट काहे ते माथा मारी ॥६॥ जल की भीत पवन का थम्भा-देवल देख भया अचम्भा। बाहिर भीतर गन्ध विगन्धा-काहे भूलो चर्पट अन्धा ॥७॥ आँख की टकटकी नाक की डंडी अहार की कोथली, नरक की कूँडी-मन का वासा तहां मास का लूचा। सृष्टि का द्वार तहां केस का कूचा।

गन्ध विगन्धा तहा यार विजारी । चर्पट चाल्या मात जुहारी ॥८ ॥ चाम की कोथली चाम का सुवा-तासु की प्रीत कर जगत सब मुवा । देव गन्धर्व मुनि मानव जेता-उबरिया कोई इक गुरुमुख चेता ॥९ ॥ चर्पट कहे सुनो रे अवधू कामिनी संग न कीजे, जयद वदनो नाड़ी सोखे दिन-दिन काया छीजे ॥१० ॥ यत्न करन्ता जाय संग जाव भग देखी जिन्हा घाल्योघाव-कोटी वर्ष लो बधे तुम्हारी सत्य-सत्य भाखन्त श्री चर्पट राव ॥११ ॥ साध कहावते भोगते भग-तां का काला मुंह नीला पग-कूटे चमड़ी धरे ध्यान-ता पशुवा में कहा ज्ञान ॥१२ ॥ फोकट फाकट कथे ज्ञान-कूटे-चमड़ी धरे ध्यान सिद्ध पुरुष कैसे करे उपाध चर्पट कहे कलयुग का वाद ॥१३ ॥ नृप निशक तां ते चेता-मन मान विवर्जित 'इन्द्री जीता श्वेत कट मन ज्ञान रत्ता-चर्पट कहे यह सिद्ध मत्ता ॥१४ ॥ मुंजली कंथा बगडी वास-कामिनी अग्नि लावे पास-दृढ़कर राखो पांचो इन्द्री चर्पट बोले ते योगीन्द्र ॥१५ ॥ अवधू मूल द्वारे दीजे बन्धु, बाई खेले चौसठ सन्ध ज्वरा पलटे खण्डे रोग-चर्पट बोले धन धन योग ।१६ ॥ बंधी सी बंधी विषम कर बंध-ऊपर रवि नीचे कर चन्द-रैन दिवस रस चर्पट पिया-खूंटे तेल न बूझे दिया ॥१७ ॥ एक श्वेत पटा नील पटा-एक टसर कटी काला बजटा-पंथ छोड़ मन कूवट वटा-चर्पट बोले यह पेट नटा ॥१८ ॥ टीका टमुकली बोले मधुरी बाणी-बोले चर्पट सुनो नागा अर्जुन एका एकी सहनाणी ॥१९ ॥ नाथ कहावे सके न नाथ-चेले पांच चेलरी सात-मांगे भिक्षा भर-भर खाई-नाथ कहावे मर मर जाई ॥२० ॥ दृढ़कर मनुआ थिर कर चित्त काया पवन पखाले नित्त-अपरा भरो ज्यो थिर होय कन्द-न उड़े हंसा न पड़े जिन्द ॥२१ ॥ कथनी बदगी बलिकर जाव-बन्ध सके तो बान्धोबाव । चर्पट कहे मन की डोर भुगत गदहा ले गया चोर ॥२२ ॥ एक पत्थर ऊपर पांव-दूजे पत्थर ऊपर भाव चर्पट कहे दुनिया का भेव-यह क्यो पत्थर यह क्यो देव ॥२३ ॥ पूज पूज भाटा सर्व जग घाटा निज तत्व रह गया निरारं । ज्योति स्वरुपी संग की आंछे तांका करो विचार ॥२४ ॥ मन नहीं मूण्डे मूण्डे केस-केसा मूण्डे क्या उपदेश मूण्डे नहीं मन मर्द का मान-बोले चर्पट तत्वज्ञान ॥२५ ॥ नाडे डोडे खण्डे धर्म-ऊंचा मन्दिर कूड़ा कर्म-चर्पट कहे सुनो रे लोक रत्न पदार्थ गमाया फोक ॥२६ ॥ चर्पट वीर चक्र सम कटया चित्त

चमाऊ करना-ऐसी करनी करो रे अवधू जो बहुर न होवे मरना ॥२७ ॥ मन चंचल-पवन चंचल-चंचल वाई की धारा-इस घट मध्ये तीनों चंचल-क्यों कर रखिये भरता बिन्द का द्वारा ॥२८ ॥ ताँबा तुम्बा यह दो सुच्चा-राजा ही से योगी ऊंचा ताम्बा डूबे तुम्बा तरे-जीवे योगी राजा मरे ॥२९ ॥ कानो मुद्रा गले रुद्राक्ष-फिर फिर मांगे निपणी साख-चर्पट कहे सुनो रे लोई-यह पाखण्ड है पर योग न होई ॥३० ॥ झोली फावडी पत्र पाया-पाया पंथ का भेव रीता जाऊं भरया आऊं-कहा करे गुरुदेव ॥३१ ॥ बैठो राजा बैठो प्रजा बैठो जंगल की हरनी-हम क्यों बैठै रावल बाबल सगरी नगरी फिरनी ॥३२ ॥ आई न छोड़े लेन भी जाई यह कहे गोरख पूता, विचार कर खाइये टूका ॥३३ ॥ टूका खाया मकर मचाया जैसा शहर का कुत्ता-योग युक्ति की मर्म न जानी कान फड़ाय विगुत्ता ॥३४ ॥ मद्य मांस में लावे चित्त ज्ञान विवर्जित गावे गीत आलस निद्रा भोग विलास-चर्पट बोले कन्द निवास ॥३५ ॥ दया धर्म चित्त न वसे अतीत देख के दामिनी हसे-कथे ज्ञान और फोकट रहन चर्पट कहे यह कलू के चिन्ह ॥३६ ॥ जिसका काम तिस ही को साजे और करे सो ढींगा बाजे-चर्पट कहे अचम्भा देखा-कनक कामिनी खाया, भेषा ॥३७ ॥ फोकट आय-फोकट जाये-फोकट देश दुनियां समझाय-फोकट बैठा करे विचार-चर्पट कहे यह सब उपाध ॥३८ ॥ पग चमाऊ माथे टोप-गले माला मन में कोप माया देख पसारा करे-चर्पट कहे न खोटी भरे ॥३९ ॥ ऐ रावल तू खरा स्याना तो हंसकर बान्धो टाटी। बारह अंगुल पैसी गई है सोलह अंगुल फाटी ॥४० ॥ अवधू मूल द्वारे बन्ध लगाई-पवन पलटै गगन समाई-नाद बिन्द ले स्थिर होई-अदृष्टि पुरुष दृष्टि तब जोई ॥४१ ॥ असंख वर्ष गिरी कन्दर वास-यह विधि लेवा योग अभ्यास-पल्टे काया खण्डे रोग-बोले चर्पट घन घन योग ॥४२ ॥ मारो भूख और सोधो नीन्द-स्वप्ने जाता राखो बिन्द-जरा पल्टे खंण्डे रोग-चर्पट कहे घन घन यह योग ॥४३ ॥ वज्र कछोटी चाबे पान-तीर्थ जाय उगाहे दान-करे वैदगी जावे रोगी चर्पट कहे विभूता योगी ॥४४ ॥ जटा विडम्बन अंगेधार-मोह कंथा बहु विस्तार विचित्र कंथा अचला चंगा-बटुवा सीवे बहूविधि रंगा ॥४५ ॥ मान अभिमान लादे फिरे गुरु खोजे मूर्ख भरे-दण्ड कमण्डल भगवा भेष-पत्थर पूजा यह उपदेश ॥४६ ॥

जीव हत्या और पूजा करो तन्त्र मन्त्र ले मन में धरे—तीर्थ जाय करे स्नान बोले चर्पट खण्डित ज्ञान।।४७।। नहावे धोवे पखाले अंगा भीतर मैला बाहिर चंगा—होम जाप अज्ञारी करे पार ब्रह्म की सुधि न धरे।।४८।। दिन दिन हत्या करे अपार—सूतक पातक झेले भार ब्रह्म रुप क्या संसार—चर्पट कहे यह धूर्त विचार।।४९।। पहरी मुंदरी कंकन हाथी—नकटी बुच्ची जोगन साथी उठत बैठत का झंकार—रात दिवस मन विषय विकार।।५०।। भर्तृहरि चर्पट गोपीचन्द, बिन्दो आत्म परमानन्द छोड़ो खीर बहु भोग—राखो आत्म साधो योग।।५१।।

इतना चर्पट शबदी सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

ब्रह्म दर्शन (योगिक विधि)

सिद्ध योगेश्वर जब अपनी योग साधना में मग्न होता है। समाधि आनन्द तथा अमृतपान करता है। कभी सद्इच्छा से वह सम्पूर्ण ब्रह्म दर्शन करना चाहता है।

यह योग साधना की अति उच्च अवस्था है। जहां योगी प्रातः ब्रह्म मुहूर्त पर आसन बैठ सिद्ध होता है। अर्थात इस विधि को एकान्त की नितान्त आवश्यकता है। प्रथम आसन मन्त्र (प्रथम खण्ड पृ० सं० १८५ पर देखें) बोलकर आसन ग्रहण करें।

अतः गणेश गायत्री (प्रथम खण्ड पृ० सं० १४ पर देखें) का पाठ करता है।

तदपश्चात सदगुरु मन्त्र का १०८ बार जाप करें। अतः योगिक विधि से २१ प्राणायाम करें (द्वितीय खण्ड योग सिद्धियाँ में देखें) जब चित्त के शान्त और एकाग्र होकर निम्न ब्रह्म गायत्री का पाठ करें।

ब्रह्म गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। एक ओंकार तेरा आधार तीन लोक में जय जयकार। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी करे विचार।

ॐ गुरु जी पारब्रह्म ज्योति स्वरुप परम अद्वयत योगाचार्य भगवान श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के चरणों में ध्यान धराके जु सच्चिदानन्द परमात्मा

अपने माया गुणों का आश्रय लिया अनन्त रुपो का किया पसारा। भगवान रजोगुण भये प्रधान, ब्रह्माजी कहालो, सृष्टि रचना भई प्रमान। भगवान सत्वगुण भये प्रधान विष्णु नारायण कहालो, जगत का सारे भये पालनहार। भगवान तमोगुण भये प्रधान, रुद्रनाथ जी कहालो, जगत का सारे करते हैं संहार। भगवान भगवती का भया अवतार, रुप धारण किया महान, दुर्गा, अम्बिका, चण्डिका, कात्यायनी, गौरी, काली, हिंगेश्वरी, शिवा भवानी, रुद्राणी, घृजाणी, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, त्रिपुर सुन्दरी तारा नाम शक्ति पुकारा। जहां भगवान वृष्टि बरसाये तहां इन्द्रदेव कहालो। जहां भगवान लोको को धार्या तहां शेष नाग अनन्त कहालो। जहां भगवान जगत के कालचक्र का करे प्रकाशा, तहां सूर्य नारायण कहालो। जहां भगवान धर्म-अधर्म का किया न्याय तहां कहालो देव धर्मराज। प्राणियों को दण्ड देने से भगवान को कहालो यमराज। ॐ ४ खानी ४ बानी चन्द सूरज पवन पानी ९ नाथ ८४ सिद्ध, भेष १२ पंथ, १२ राशि, ७ वार, २७ नक्षत्र, ९ ग्रह, ९ खण्ड, ९ करण, ९ व्याकरण, ४ वेद, ४ उपवेद, १८ पुराण, १८ उप पुराण, खट दर्शन, २८ योग, १० मन, ५ ज्ञान इन्द्रीय, ५ कर्म इन्द्रिय, ५ प्राण, मन बुद्धि चित्त अहंकार शब्द स्पर्श रुप रस गंध पंचम मात्रा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुर्या, तुर्यातित, विश्व तेजस्य, प्राम्य, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय, पंचकोश, शोडषकला, शोडषतिथि, अष्ट बसुओं को लेकर भगवान विराट हिरन्यगर्भ धारण करालो। वही विश्वनाथ, वही तुंगनाथ वही केदारनाथ कहालो। वही बद्रीनाथ वही त्रिलोकीनाथ वही मुक्तिनाथ कहालो। वही अमरनाथ वही भैरोनाथ वही गोरक्षनाथ कहालो। वही ज्वालेन्द्रनाथ वही मत्स्येन्द्रनाथ वही आदिनाथ कहालो वही सतनाथ वही सन्तोषनाथ वही उदयनाथ कहालो। वही गजेबली गज कंथड़नाथ, वही चौरंगीनाथ वही ८४ सिद्ध, अनन्त कोट कहालो। वही राम वही कृष्ण वही गोविन्द वही माधव कहालो। वही शिव वही शक्ति वही अर्धनारी नटेश्वर कहालो। वही नारी वही नर वही नारायण कहालो। वही प्रकृति वही पुरुष वही जीव कहालो। वही ज्ञानवान, वही वेगवान वही शक्तिवान कहालो। वही देवी वही देवता वही अनन्ता कहालो। वही साकार वही निराकार वही अनन्ताकार कहालो।

इतना ब्रह्म गायत्री मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला कोलागढ़ पर्वत पर बैठकर अनन्त कोट सिद्धों को श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथ कर सुनाया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

इस प्रकार यह ब्रह्म गायत्री को कंठस्थ करना आवश्यक है। अत: योगी अपना सम्पूर्ण चित्त मन एवं ध्यान अपने मूर्धा स्थान में अर्थात ब्रह्मरन्ध्र, भ्रवर गुफा में एकाग्र करके उपरोक्त ब्रह्म गायत्री का स्मरण एवं चिन्तन अर्थात ब्रह्म गायत्री मन्त्र का मनन करे। जहां सहस्त्र पंखड़ी कमलों में प्रत्यक्ष गुरु गोरक्षनाथ जी विराजमान होते हैं। इस प्रकार इस गायत्री मंत्र का प्रतिदिन २१ बार चिन्तन मनन या जाप करे।

साधना काल में योगी के सभी इन्द्रियों का विस्मरण होता है। इस अवस्था में समस्त काया का विस्मरण होता है। योगी केवल प्राण अपान स्वासोच्छावास को ही महसूस करता है। उच्चतम प्राणायाम वाले योगी कुम्भक द्वारा (प्राणायाम) स्वासोच्छोवास अत्यन्त (धीमा) कम मात्रा में होता है। इस अवस्था में योगी अपनी कुम्भक (प्राण रोकना) अभ्यास को सिद्ध करता है और प्राण और मन स्थिर होकर आत्मा में विलीन होते हैं तथा उपरोक्त ब्रह्म गायत्री का जाप (मनन) धीरे-धीरे लय हो जाता है। जब कुछ योगेश्वर कुम्भक द्वारा अपान वायु का नाभि स्थान में मिलाके अग्नि उत्पन्न होता है। अत: अग्नि का वेग बढ़कर तप्त अवस्था में कुण्डलीनी जाग्रत होकर सुषुम्मा नाड़ी में प्राण जाता है और यह प्राण सुषुम्मा द्वारा ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश करता है। अर्थात मन का लय होता है (प्राण मन का स्वामी है) अर्थात निर्विकार मन तथा उपरोक्त गायत्री मन्त्र का भी लय होता है और उन्मन अवस्था में योगी ब्रह्म साक्षात्कार को प्राप्त करता है।

कुछ योगेश्वर नादानुसंधान क्रिया से प्राण और मन का लय करते हैं। इस नाद-साधना काल में वह उपरोक्त ब्रह्म गायत्री का जाप करता है। जब नादानुसंधान को प्राप्त होता है। तब मन्त्र का भी लय होकर योगी ब्रह्म साक्षात्कार को प्राप्त होता है। जिसे ब्रह्म नाद भी कहते हैं।

इसी प्रकार शिव गायत्री तथा शिव रुद्र गायत्री मन्त्र का भी प्रयोग करके ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान समाधि लगाकर शिव शक्ति की अनुभूति लेकर कैवल्यानंद को प्राप्त होते हैं। शिव गायत्री तथा शिव रुद्र गायत्री प्रथम खण्ड में पृ० सं० ५, ४४६ पर दिया है। इस प्रकार अपने योग साधना द्वारा मन और प्राण को ब्रह्मरन्ध्र में लय करके योगी समाधिस्थ होकर २४ गायत्रियों का जाप कर (मन्त्र योग) उसी मन्त्र के इष्ट देवता द्वारा सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं।

नाथ सिद्ध योगेश्वर देश विदेश, जंगल, पहाड़, नदी, नाले, नगर खेड़े, लोक वस्ती, स्थान मकान, मढ़ी श्मशान गुफा—मन्दिर इतरत्र भ्रमण करते रहते हैं। कभी अकेले भ्रमण करते हैं तो कभी साधुओं के झुण्ड में घूमते हैं। जब अकेले रमते हैं जहां कहीं मन लगा वही साधना करते है और अनुभूति लेते हैं! रम्मत काल में वह निम्न रम्मत गायत्री का जाप तथा मनन करते हैं और निर्भय होकर घूमते हैं। अर्थात निम्न रम्मत गायत्री का रम्मत में हमेशा जाप कर सिद्ध करे इससे भूत—प्रेत का भय नहीं होता। निर्भय होकर रहते हैं। यह मन्त्र ही एकान्त धूना चेतन करके सिद्ध करते हैं।

रम्मत गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी का आदेश। ३ॐ गुरुजी! ३ॐ उढंत भर्तृहरि पग धरे, धरती लेना झेल, तू माई का बालका मन चाहे जहां खेल, योगी के रम्मत में लेके सद्गुरु जी की आन दाई भुजा भैरव बैठे बाई भुजा हनुमान, ऋद्धि सिद्धि श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। इतना रम्मत गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने सुनाया। श्री नाथजी गुरु जी को आदेश। आदेश।

संसार माया से विरक्त योगेश्वर जिन्हें अवधू कहा करते हैं। रम्मत में (भ्रमण) यह अवधू साधना तथा स्थान महात्म्य अनुसार मन्त्रों की सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं। उदाहरण—देवी शक्ति के ५२ शक्ति पीठ, नाथ सिद्धों की तपस्थली तथा गुफायें, त्रिवेणी संगम, गंगा जमना तथा नर्मदा इत्यादि नदी किनारे। रुख रुक्ष की छाया में जहां वटवृक्ष, पीपल और नीम इन तीन वृक्ष जहां एकत्र प्राकृतिक उत्पन्न होते हैं वह स्थान पर, ऐसे स्थानों में रमता अवधू अपनी साधना दृढ़ करके तथा मन्त्रों का जाप करके सिद्धता प्राप्त

करते हैं। कहते है, रमता जोगी बहते गंगा का पानी रम्मत में वह गांव के बाहर ही रहते हैं या नाथजी के डेरे में मुकाम करते हैं। कोई अवधू सूखी भिक्षा (आटा इ०) लेकर खुद हाथ से भोजन बनाकर भोजन करते हैं। तीन दिन के पश्चात आगे चलता रम्मत करता है क्योंकि स्थान में अधिक दिन रहने से वह वहां का रहवासि बन जाता है। खड़े होके खाना, मुख से मौनी रहना, पीछे नहीं देखना, खप्पर में खाना इत्यादि नियम द्वारा नित्य १२ साल रहकर सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं।

इन अवस्थाओं में रमता योगेश्वर, अवधू नित्य नियमों से तथा हटयोग से निम्न मन्त्र सिद्धि को प्राप्त करता है। १२ वर्ष रम्मत करना, १२ वर्ष जटा बढ़ाना, १२ वर्ष मौनी रहना, १२ वर्ष खडेश्वरी रहना, १२ वर्ष नग्न रहना (अवधूत) १२ वर्ष आकाश वृत्ती में रहना इत्यादि अनेक व्रत वैकल्य नियम द्वारा भी सिद्धियां प्राप्त होती है। परन्तु इस सब में योग साधना ही मुख्य स्रोत होता है। बाकी सब हट नियम साधना सहायक होते हैं। अतः निम्न अवधूत गायत्री भी सिद्धों की २४ गायत्री में से एक है। जिसे योगी चेतन धूनी में सिद्ध करते हैं।

अवधूत गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी! अवधू—अवधू भाई भाई, अवधू खोजो घटके माही। एक अवधू का सकल पसारा एक अवधू सभी से न्यारा। उस अवधू की संगत करना जिस संगति से पार उतरना। उत्तराखण्ड से जोगन (कुण्डलीनी जाग्रत) आयीं ऊंचे चढ़ के ब्रह्म जगाया (सहस्त्रगारमे) नाद बजायी ऐसा योगी कभी नहीं आया सैली सिंगी बटुआ लाया। बटवे में काली नागन (कुण्डलिनी) काली नागन किसकी चेली, गगन मण्डल में फिरी अकेली (ब्रह्मरन्ध्र में) काली नागन को मारके तले बिछालो (मूलाधार में) मेरे भाई, तब न होगी आवाज आई, हम बिगड़े सो बिगड़े भाई, तुम बिगड़े सो राम दुहाई। हमारे गुरु तो बहुरंगी सबके संगी, सबका भेद बतायेंगे अनघड़ चेले फिरे अकेले जती सती (गोरक्षनाथ हनुमान लक्ष्मण जी स्वामी कार्तिक, शुकदेव, गरुड़देव यह ६ जती हैं) को शीश नवायेंगे। इस विधि दुनिया को योगी कहलायेंगे। पात्र फोट पवित्र कर दूं हुकम का मुंह

काला राजा कर दूं भसम, मढ़ी मसानी दला डुंगरा रुख वृक्ष की छाया सुनरे हंसा कहा से आया। तीन लोक से आया। सब कुल की लज्जा मिटा, सब घर भिक्षा करने जा, कोढ़ी कपटी के हाथ की भिक्षा मत लेना। कोढ़ी कपटी कैसे जीत कैसे हारे, हिन्दु तुर्क एक ही जान चलती पवन रोक दूं धरती, आसमान उलट दूं पुलट दूं रोड़ीया खोड़ीया टुण्डीया (काली माई के भगत सेवक) हाथी नौबत कर दूं। उलटी खाक रस्ता सुरसुरी मुरसरी योगेश्वर बढ़े योग के ध्यान, कौन चेला लोभी कौन लालची आडलो कपड़ा दूध का दूध पानी का पानी। सिद्ध का मार्ग साधक कर जानी इतना अवधूत गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला कोलागढ़ पर्वत पर बैठकर अनन्त कोट सिद्धों को श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथ सुनाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

विधि—अवधूत पूर्ण नग्न काया में रहते हुये १२ साल एकान्त जंगल गुफाओं में रहते हैं। अन्न पाणी स्व-हातो से बनाके या प्राकृतिक पत्ते, फलाहार करते है। उपरोक्त अवधूत गायत्री तथा २४ गायत्री, विविध या इष्ट देवताओं के मंत्र विशेषत: काली, तारादि १० महाविद्या, कालभैरव भैरवी इत्यादि, जाप अनुष्ठान सव्वा लाख या सव्वा कोटी, संख्या से सिद्ध करते हैं। ६ जती के बीज मंत्र, अवधू दत्तात्रय रुद्र इत्यादि सिद्धियां करते हैं। इस अवधू अवस्था में कोई भी साधना, तपस्या, अनुष्ठान या ध्येय प्राप्ती शीघ्र होती है।

लाभ—काया वज्र समान होती है। काम, क्रोधादि विकारों पर विजय प्राप्त करते हैं। धीरज धैर्य सामर्थ, निर्भयता इ० गुण अविष्कार होता है। देवी देवता भी वश होती है (नंगे को खुदा डरता है) अष्ट सिद्धियां सेवा करती है। जती सती सिद्धों के दर्शण होते हैं। अवधू अगर इन सभी का त्याग करे तो सत्य, परम परा महाज्ञान और अन्त में मोक्ष मुक्ति को प्राप्त होता है।

आवश्यकता—सदगुरु प्राप्ति एवं गुरु आज्ञा तथा मार्गदर्शन आवश्यक है। अवधूत साधना शुद्ध सात्विक एवं निस्वार्थ करने से अपने आप सम्पूर्ण कल्याण को प्राप्त होता है।

अत: साधक—रम्मत काल में, भ्रमन्ति में निम्न मुहर्तराज के अनुसार सुयोग देखकर भ्रमण करते है।

कुछ योगेश्वर निम्न मुहर्त्तराज कोष्ठक द्वारा अपने रम्मत (भ्रमण) काल पर सुयोग देखकर रमते राम होते हैं।

卐 रम्मत हेतु 卐 (मुहर्त्तराज) — श्री गोरक्षनाथ जी के वचनतत्व — 卐 यात्रा भ्रमण सुयोग 卐

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मं.	☼फलश्रुति☼	प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सुख,विवाद का अभाव,यात्रा योग सुखद,सुविधा गति	अर्थसिद्धि	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय, विवाद, मानसिक दुःख, वृथागमन कुयोग	महाभय	क्लेश	सुख	कुशल	शून्य	नाश	दरिद्र	चिन्ता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कार्यसिद्धि, अर्थलाभ, विजय, मेल मिलाप सम्पर्क	अर्थलाभ	राजपद	सुख	विनाश	द्रव्य	दुःख	इष्टप्राप्ति	धनप्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	श्रम साधना, परंतु प्रतिफल नेष्ट नहीं, मध्यमकार्य योग	क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	अहित	धन	सुख
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तुलाभ, संकट की निवृत्ति, मेल–मिलाप, कार्य–सिद्धि	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	चिन्ता, विवाद, मानसिक पतन, वियोग, सफलता न्यून	संकट	क्लेश	मित्र	अर्थप्राप्ति	भय	लाभ	मृत्यु	धनलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	कार्य–लाभ, मेलमिलाप सम्पर्क, कार्यसाधना सिद्धियोग	विलंब	अर्थप्राप्ति	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कुयोग, कार्य हानि, विवाद, व्यवहार-मिलाप की न्यूनता	०	०	०	०	०	सुख	०	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थ लाभ, कार्य योग सफलता, यात्रा प्रवास सुखद	अर्थ	बहुभय	मित्र	सुख	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	यात्राप्रवास योगद परंतु श्रमसाधना विशेष कार्य विलंब	शीघ्रलाभ	सम्पूर्ण	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मानसिक कष्ट, विवाद, भय,परंतु परिणाम नेष्ट नहीं	मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लाभ	धननाश	०	मित्र
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सुख-सुविधा, मेल-मिलाप, सार्थक गति, कार्य सुयोग	मरण	अर्थ	सुख	कुशल	०	सुख	मृत्यु	कष्ट

यात्रा प्रवास हेतु **गोकुलनाथ गोरक्षनाथ जी** के मतानुसार गमन प्रयाण के लिये मुहूर्त्त साधना पुरातन समय से लोकप्रिय व्यवहार योग्य है। बायें तरफ के पहले द्वादश १२ कोष्ट में द्वादश मास नाम दिये हैं तत्पश्चात फलश्रुति लिखी है और उसके बाद चार कोष्ट में चार प्रहर की फलश्रुति अलग–अलग लिखी है और आगे के ४ कोष्टों में दिशा और उनकी फलश्रुति दी है। कोष्टों में बताये अंकों का तृतीया और तेरस, चतुर्थी और चौदस, पंचमी और पूर्णिमा इनका फल एक है बदी चौदस तथा अमावस का निषेध। इन मुहूर्त्त पर गमन करने वालों को चन्द्र–भद्रा–भरणी–दिशाशूल–योगिनी काल घात वार आदि का दोष नहीं। **गोरखनाथ जी** के प्रश्न पर **मत्स्येन्द्रनाथ** ने इस मुहूर्त्त को **"मुहूर्त्तराज"** कहा। **उदाहरणार्थ–** फाल्गुन सुदी तथा बदी के मुहूर्त्त पर गमन करने वालों का कार्यसिद्ध होवे। पहले प्रहर में जाने से अर्थ–लाभ। दूसरे प्रहर में राज्यसुख, तीसरे में शोक, चौथे में सुख एवं दिशाओं के भी फल जानें। श्रीवल्लभ समप्रदाय के वैष्णव इस मुहूर्त्तवेला को श्री गोकुलनाथ के वचनामृत भी कहते हैं।

भण्डार कर्म

श्री नाथ सिद्ध योगेश्वरों का भण्डार कर्म एक मुख्य कर्म है। योगेश्वरों को भोजन बनाने हेतु भण्डार गृह अलग सा स्थापित करते हैं। यहां नाथ भण्डारी होते हैं। मुख्यतः भण्डार कर्म, भर्तृहरि बैराग पंथ के योगेश्वर करते हैं तथा बड़े कुम्भ पर्व पर तथा सम्पूर्ण साम्प्रदायिक भण्डारा में बारह पंथ के बारह भण्डारी होते हैं और सबके मुख्य श्री भण्डारी जी होते हैं। जो भर्तृहरि बैराग पंथ के योगेश्वर होते हैं। स्थान, मठ मन्दिर बड़े–बड़े आश्रमों में भण्डार गृह अलग से बनाये जाते हैं तथा सार्वजनिक जगह मुख्य कार्यक्रम अनुसार भण्डार बनाते हैं। अर्थात भण्डार स्थापन करते हैं। अतः निम्न कुबेर भण्डार गायत्री से भण्डार स्थापन या भण्डार डिब्बी स्थापन करते हैं। प्रथम धरती गायत्री पढ़कर भूमि पूजन करते हैं।

धरती गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। आद अलील अनाद उपाया, सत की धर्ती जुहार लो काया। पहले जल–जल पर कमल–कमल पर मच्छ–मच्छ पर कोरम–कोरम पर बासुकि–बासुकि पर घौल बैल घौल बैल पर सिंग–सिंग पर राई–राई पर श्री नाथ जी ने नवखण्ड पृथ्वी ठहराई। प्रथम धरित्री, द्वितीये विश्वंभरा, तृतीय मेदमेदिनी, चतुर्थे चतुर्भुजी, पंचमे कृतिका षष्टमे ब्रह्मचण्डी, सप्तमे शिव कुमारी, अष्टमे बाला वज्रजोगिनी, नवमे नवदुर्गा, दशमे सिंह भवानी, एकादशी मृतिका, नाम द्वादश वरदायिनी। माता धर्ती पिता आकाश। पिण्ड प्राण का तोपर वास। तोपर टेकू दोनों पाई आगमदे मै लागू पाई। धर्ती माता तू बड़ी तुमसे बड़ा न कोय। जो पग टेकू तोपर मोपर कृपा सुहोय।। धर्ती द्वादश नाम पढ़े गुणे मन में धरे जोगी का सब काम सिद्ध होय वाचा फुरे।। इतना धरती द्वादश नाम जाप सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरु जी को आदेश।

पूजन के पश्चात धरती पर गंगाजल छिड़के।

धरती पर जल छिड़कने का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृ० सं० ९४ पर देखें)

इस मन्त्र द्वारा जल छिड़कने के पश्चात चूल्हा बनावे, भण्डार साहित्य के लिए चौका बनाना इ० व्यवस्था करके उन्हें गोबर से लेपन करें।

लेपन मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृ० सं० ९४ पर देखें)

इस प्रकार भण्डारी भण्डार गृह की व्यवस्था तथा शुद्धता करता है। फिर भण्डार गृह में कोने में चौकी रखकर वहां कलश रखकर भण्डार की स्थापना मन्त्र द्वारा करते हैं।

प्रथम भण्डारी का आसन छोटी गद्दी या भगवा लाल कपड़ा डालकर बनाते हैं। निम्न मन्त्र उच्चारते हैं।

भण्डारी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदका योगी जुगत की माया, सत योगी वज्र की काया। काल नाग से फूले न फले, हे धरत्री अनन्दी तेरा नाऊ ऋद्धि सिद्धि पुगाऊ। आसन दे बैसन दे ऋद्धि दे सिद्धि दे थाऊ दे, सिद्ध हमको ऋद्धि दे भरे भण्डार, तन्नो धरती प्रचोदयात। इतना भण्डारी मन्त्र पूर्ण भया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: निम्न मन्त्र से भण्डारी आसन ग्रहण करता है।

भण्डारी आसन बैठने का मन्त्र

सत नमो आदेश। ॐ गुरु जी भण्डार भण्डारी बैठा भण्डार पर अन्नपूर्णा का भया प्रकाश। ब्रह्मा आयलो, विष्णु आयलो, महेश आयलो, श्री गणेश आयलो देवी पार्वती हुई साख। अन्नपूर्णा का भया नूर जब आसन बैठे गुरु गोरक्षनाथ भरपूर। यही आसन कुबेर भण्डार को दीन्हा। ऋद्धि सिद्धि से घेर लीना। येता मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अत: भण्डारी आसन बैठकर चौकी आसन पर (भगवा कपड़ा) कलश स्थापना करते हैं तथा कलश पूजन (इसके पूर्व विवरण किया है) करते हैं और निम्न मन्त्रों द्वारा भण्डार की स्थापना पूजा होती है।

कुबेर भण्डार गायत्री

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ सोंह आकाश डिब्बी पाताल काठी, धरती का चूल्हा करू आकाश का ठीया नवनाथ चौरासी सिद्धों ने बैठकर भण्डार किया । चढ़े डिब्बी उतरे ऋद्धि सिद्धि काली पीली शिर जटा माई पार्वती का उपदेश । शिव मुख आवे-शक्ति मुख जावे । शक्ति मुख आवे शिवमुख जावे । हाथ खड़ग तूत की माला, जाप जपे श्री सुरियाँ बाला । ऋद्धि पूरे हर-घृत पूरे गणेश । अलील पूरे ब्रह्मा, माया पूरे महाकाली, हीरा पूरे हिंगलाज नवखण्ड में जोत जगाई । ऋद्धि लावो भण्डारी भाई, ऋद्धि खूंटे सदाशिव का जड़ाव टूटे । ऋद्धि खूटे माता सीता सतवन्ती का सत्य छूटे । ऋद्धि खूटे माता पार्वती का कंगन टूटे । ऋद्धि खूटे मान-धान का मान टूटे । चन्द्र सूर्य दो देव साखी । इतना कुबेर भण्डार गायत्री जाप सम्पूर्ण भया नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

अत: निम्न मन्त्र द्वारा श्री गणेश तथा अन्नपूर्णा की स्थापना करते हैं और भण्डारी जी धूप दीप से पूजन करते हैं । प्रथम भण्डार में जोत मन्त्र द्वारा चेताते हैं ।

भण्डार जोत मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ ऋद्धि फुरो सिद्धों फुरो-फुरो आनन्दी माई भण्डार में भण्डारी बैठा, सती गौरी बैठी, अन्नपूर्णा बैठी, बैठा ब्रह्मा, बैठा विष्णु, बैठी आनन्दीमाई । भया प्रकाश गणपत जोत जगाई । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

अत: गणेश के प्रति सुपारी रखे या प्रतिमा रखे तथा अन्नपूर्णा के प्रति जायफल रखे या प्रतिमा रखकर स्थापना करे ।

श्री गणेश स्थापना पूजन मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ कण्ठ बसे सरस्वती हृदय देव महेश । भूल्या अक्षर ज्ञान का जोत कला प्रकाश सिद्ध गौरी नन्द गणेश बुध को विनायक सिमिरीये बल को सिमरीये हनुमन्त ऋद्ध सिद्ध को श्री ईश्वर महादेव जी सिमरीये श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई तुम्हारे कन्त उमादेवी गौर्जा पार्वती भस्मती देवी हिरख मन अगर कुंकु केशर कस्तूरी,

मिला कूपिया तिसते भया एक टीका अमर संचो जी जीव संचिया शक्त स्वरुपी हाथ धरियो श्री गणपतनाथ पूता जी तुम बैठो स्थान मैं जावा नहावन आवना जावन किसी को न दीजिये अंकस मार पर संग लीजिये बन खण्ड मध्य से आये श्री ईश्वर महादेव छूटी ललकार ईश्वर देख बालक क्रोप भरिया ज्यो घृत बसन्तर धरिया शिवजी आनी मन में रीस फिरयो चक्र ले गयो शीश तीन भवन में भई हलूल श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी आ कहने लगी स्वामी जी पुत्र मारिया तिसका कौन विचार देवी जी मैं नही जानो तुमरा पूत मैं जानो कोई दैत्य न दूत गजहस्ती का शीश लियाऊं काट आन अलख निरन्जन के पास बैठाऊ शंकर जी ल्याये हस्ती का शीश श्री गंगा गोर्जा पार्वती माई जी करी असीस जब गणपत उठते खेल करते महिमा उवरंते गणपत बैठे थान मकान उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम ल्याये श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी के आगे स्वामी जी तुमको सिमरे सोची मोची तेली तम्बोली ठठिहारा गनिहारा लुहारा क्षेत्र सिमरे क्षेत्रपाल अजुनी शम्भु सिमरे महाकाल लांबी सूंड बालक भेस प्रथम सिमरो आद गणेश पांच कोस ऋद्ध उत्तर से ल्याऊं, पांच कोस ऋद्ध दक्षिण से ल्याऊं, पांच कोस ऋद्ध पूर्व से ल्याऊं, पांच कोस ऋद्ध पश्चिम से ल्याऊं, दस कोस ऋद्ध अज गायब से ल्याऊं, इतनी ऋद्ध सिद्ध दिये बिना ना जाऊं, श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी तुम्हारी माया प्रथमे एकदन्त, द्वितीये मेघवर्ण, तृतीय गजकरण, चतुर्थे लंबोदर, पंचमे विघ्नहरण, षष्टमे धूम्ररुप, सप्तमे विनायक, अष्टमे भालचन्द्र, नवम शिल सन्तोष, दशमे हस्तमुख, एकादशे द्वारपाल, द्वादशे वरदायक एते गणपत गणेश नाम द्वादश। ॐ गणपति गुरु माथे मरु-खीर खण्ड पात्र भरु, तीन पैर नगर को जाऊं, सब रुप को पाव लागु। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आवु मोती जोडु माधवा तिल जोडु किवाड़, गंगा जमना सारस्वत त्रिवेणी घाट ॐ सोंह बौहड़िया सतगुरु स्वामी आप। कहे महादेव सुन पार्वती इन शबद से जो का लगावे आवागमन तुरन्त मिटावे ॐ ब्रह्माजी तुमको दिया चार वेद छह शास्त्र तीन लोक चौदह भुवन झेलो-झेलो ब्रह्माजी सकल पृथ्वी की भार। हमारा नाम बोलिये। आदि से गजकंथड, गजबेली गणेशनाथ जी तीन लोक में किया प्रकाशा, अनहद शबद गौरा किया उजियारा। ॐ का शून्य आधार मन्जन कीना गौरजा दीनी मैल

उतार थान को मान-गुरु जी को प्रणाम, आवो सिद्धों कर लो विचार सतगुरु शब्दों से उतरो पार इतना गणेश स्थापन मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

अत: अन्नपूर्णा माता की स्थापना करे । गणेश जी के बायीं ओर अन्नपूर्णा माता की प्रतिमा या पान सुपारी का बीड़ा रखे कुछ योगेश्वर कलश भी रखते हैं । अत: भण्डारी निम्न मन्त्र से अन्न पूर्णामाता की स्थापना करते हैं ।

अन्नपूर्णा स्थापन मन्त्र

सत नमो आदेश । ॐ गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ महाशून्य ओंकार, ओंकार में त्रिकुटी, त्रिकुटी का भया प्रकाश । निर्गुण अलील संग मनसा धाती, बरसे गगन तृप्त हो धरती । पवन पानी चन्द्र सूर्य भरे साखी । ऋद्ध बैठे विध्न टले श्री गणेश देवता तेरी दुहाई । दश दरवाजे अनन्त कोट, मुण्डमाल काल कन्टक को मार, महाकाली महामाई तेरी दुहाई । दानदाती कमला पति सन्तोषी माई, महालक्ष्मी तेरी दुहाई । जिव्या ने स्वाद मन्त्र उच्चार हात पुस्तक महा सरस्वती तेरी दुहाई ।

ॐ अगम लोग से शिव जोगी आये । शक्ति लोगमे अलख जतावे । हाथ में खप्पर मांगे भिष्या, तीन लोग में न होईबा अभिष्या । शिव भिष्या का किया विचार । तीनों शक्ति मिल किया प्रकाश । थरै, पिण्ड थरप्ये ब्रह्माण्ड, तीन ज्योत की बनी ज्योत, अन्नपूर्णा माता भयी अखण्ड । नेमीष अरण्य से लकडी लाई ब्रह्मा विष्णु जी ने प्रजाली अग्नि । तपो धरती तपोवन धुंये का आकाश, गौरी गौरजा ने रसोई थापी । सिद्ध कुबेर ने तपा जल तपाया थल, गणपत-गणपत ऋद्ध सिद्ध से भण्डार भर । पुकारे हाकारे, कहे महादेव, अलख निरन्जन माई भिष्या देव । अन्नपूर्णा माई बहु अभिमानी, भर भरे खप्पर पर रिता रहे ना भरे खप्पर, कहत सुन्दरी लौ नाथ जी मैं तो हारी, भिष्या, आपकी माया न्यारी । नमो आदेश, नाथ जी को शरण चरण में आयी । भोला भण्डारी जय ओंकार, भर गया खप्पर अनन्त भण्डार । सत की बानी सिद्धों ने मानी, भई प्रसन्न अनपूर्णा माई । ॐ अन्नपूर्णाय विद्महे अन्नपूर्णाय धीमही तन्नो अन्नपूर्णी प्रचोदयात ।

इतना अन्नपूर्णा मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः भंडारी तथा साधक योगेश्वर प्राण गायत्री से प्राण प्रतिष्ठा करे। प्रथम जल गायत्री का उच्चारण करके गंगा जल की प्रतिमाओं के (गणेश—गौरी—अन्नपूर्णा माँ) धार लगावे, कलश के ऊपर जल के छींटे लगावे।

जल गायत्री

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृ० सं० ९ पर देखें)

अतः प्राण गायत्री पढ़कर प्रतिमा के ऊपर अक्षदा छोड़े।

प्राण गायत्री

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृ० सं० ४० पर देखें)

प्राण गायत्री से प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात दीपक ज्योत तथा कलश, श्री गणेश और अन्नपूर्णा माता की सामोपचारे निम्न मन्त्रों से पूजन करें।

प्रथम ज्योति का पूजन करके निम्न मन्त्र से नमस्कार करें।

भण्डार जोत के पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ उत्तर दिशा से आये कुबेर भण्डारी, सर्वगत की ऋद्ध सिद्ध सारी। सत की ज्योत सत का धर्म अन्न पुरे अन्नपूर्णा माई। शिव पुजूं शक्ति पुजूं—पुजूं गुरु जी के पांव, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू भण्डार ज्योति के पांव। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः कलश पूजन करें कलश पूजन पूर्व लिखित विधि से करें और निम्न मन्त्र से नमस्कार करें।

भण्डार कलश स्थापन को नमस्कार

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ कलश देवता तुम्हे आदेश। हृदय तन्त लगाय। सत गुरु पूरा मिल्या, जिन मार्ग दिया बताया शिव पुजूं शक्ति पुजूं—पुजूं गुरु जी के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू कलश देवता के पांव। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः श्री गणेश गौरी की समोपचारे पूजन करें इसके पूर्व गणेश पूजन वर्णित कृति से करें। अतः गणेश गायत्री बोलकर पूजन करें।

गणेश गायत्री

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृ० सं० १४ पर देखें)

अतः निम्न मन्त्र से अन्नपूर्णा माता जी का पूजन करे।

अन्नपूर्णा भण्डार मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ गणपत-गणपत राजकुमार ऋद्ध पर बैठ गणपत आप देवी पूजो केसर कपूर दोहरा कोट तेहरी खाई कंटक मार खप्पर में लीजे ऋद्धि टूटे नहीं विघ्न व्यापे नहीं, हाजर-हाजर गणपत की दुहाई गणपत पूजे अमृते सदा फल दीजे धर्म की डिब्बी पाताल का ठीया नौनाथ चौरासी सिद्धा मिल भण्डार किया। भूरी पाली काली डिब्बी शिवजी के पास मड़ी मसानी मैं फिरा गुरु हमारे साथ धरत की डिब्बी ब्रह्म कपाली ब्रह्मा विष्णु मिल अग्नि जाली नीचे-नीचे आग ऊपर पानी तपे रसोई आद भवानी घ्रतती गणपत पूरे तत पूरे गणेश ऋद्ध सिद्ध तो भी ईश्वर पूरे तब प्रसाद महेश अन्नपूर्णाय विद्महे महा अन्नपूर्णाय धीमही तन्नो अन्नपूर्णी प्रचोदयात। इतना अन्नपूर्णा भण्डार मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को चरण कमल में आदेश। आदेश।

इस प्रकार धूप अगरबत्ती जला के भण्डार में धूपीया से पूजन करते हैं। तदनंतर भण्डारी सम्पूर्ण भण्डार में धूपीया में धूप घुमाते हैं। तत्पश्चात भण्डार रसोई बनाने का कार्य शुरु होता है। दाल रोटी, चावल, खीर, हलवा, खीचड़ी, दाल के बड़े (पकोड़े) इ० पकवान तथा गुलाब जाम, दही बड़े, जलेबी, इमरती, घेवर इत्यादि मिष्ठान भी बनाते हैं। भण्डार में सब नाथ भण्डारी ही काम करते हैं।

भोग विधि

अतः भण्डारी तथा धूनी के पुजारी धूनी पर रोट का प्रसाद बनाकर भोग लगाते हैं तथा गौ का कच्चा दूध का भोग प्रदान करते हैं।

धूनी जगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। उबरे जन्मे उबरे जाय, बांध जमाल नाथ जी आय। तले धरती ऊपर आकाश धूनी पानी का

किया प्रकाश ॥ धूप दीप ले अग्नि चढ़ाया, आसन बांध रोट पधराया गोघृत श्रीफल गुग्गल वास झेलो धरती रोट का प्रकाश ॥ रोट भया सम्पूर्ण पका, लाल वस्त्र ऊपर ढाक, आदि जोग अनादि माया तब श्री नाथ जी को रोट चढ़ाया। इति धूनी जगा के रोट बनाने का मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

इस मन्त्र द्वारा प्रथम धूनी वेदी पर दाहिना हाथ की (देवों की उंगली अनामिका) का स्पर्श करे। मन्त्र के पश्चात धरती के ऊपर तीन बार आचमनी से जल छोड़े फिर भण्डारी को हाकारा (बुलावा) पंख द्वारा करे।

भण्डारी को आदेश मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ कुबेर भण्डारी बना भण्डार ऋद्ध सिद्ध ले पहुंचाया दरबार। भरीया मेला नवनाथ चौरासी सिद्ध ऋद्धि सिद्धि ले आगे धरीया भोग। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

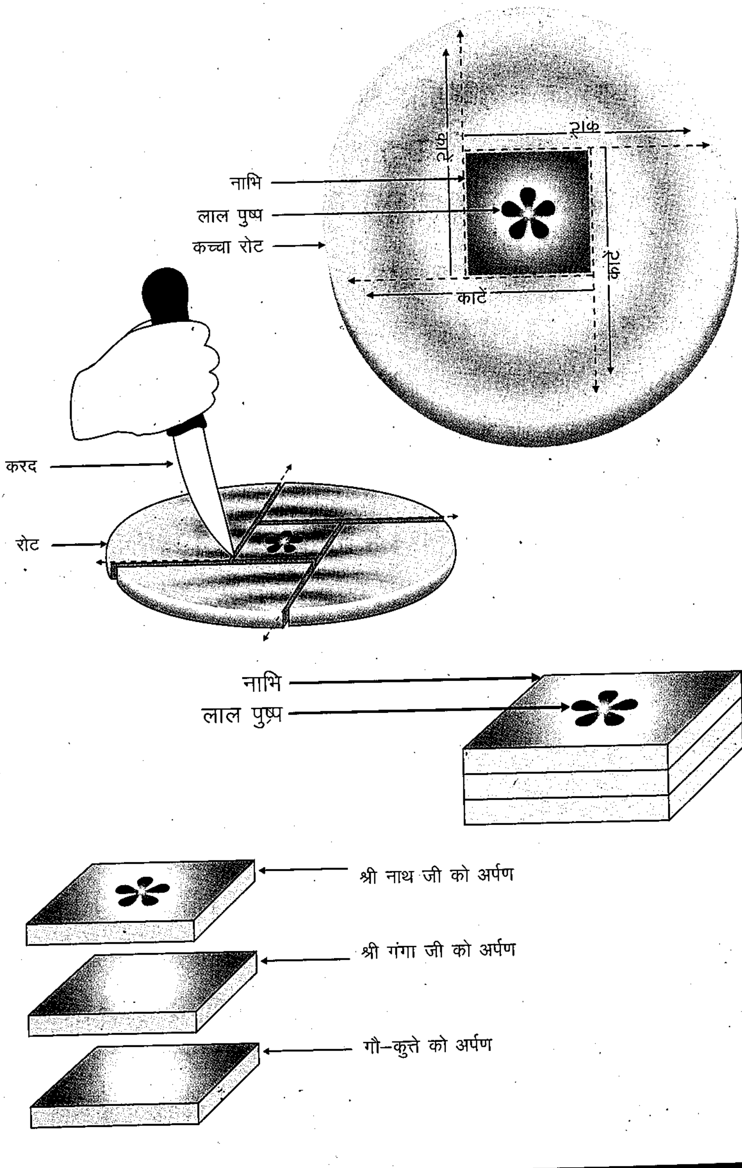
इस मन्त्र से भण्डारी को पुकारते है। भण्डारी कच्चा रोट (आटे में मीठा बूरा या गुड़) डालकर टिक्कड़ बनाते हैं। यह टिक्कड़ (मोटी रोटी) यह रोट के ऊपर पृष्ठ भाग मध्य में बीचों बीच भण्डारी अपने नादी से छोटा सा छेद करते है जिसे कच्चा रोट की नाभी कहते है। तत्पश्चात यह कच्चा रोट धूनी जगा के अग्नि में जगह (फावड़ी से) बनाके वहां रोट को पात्र से निकालकर धूनी में रख देते है। कुछ समय पश्चात रोट पक जाता है। जब रोट धूनी में रखते हैं तब निम्न मन्त्र पढ़े।

रोट धूनी में रखना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। अन्न पानी का पुतला। सतगुरु का उपदेश। रोट को धरु श्री नाथ धूनी में वैश्वानरी को आदेश। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

भण्डारी रोट पकने तक यह मन्त्र का जाप करता है। रोट को पात्र में निकाल लेते हैं ऊपर से लाल या भगवे वस्त्र से ढ़क देते हैं। फिर भण्डारी को मन्दिर में या देवता गुरु गोरक्षनाथ जी के प्रतिमा पूजा स्थल पर फिर (बुलावा)

श्री नाथ जी को
रोट काटकर भोग लगाने की विधि



पुकारा पंख जी ऊंची आवाज में देने हैं। अर्थात भण्डारी को आदेश दिया जाता है कि देवता के सम्मुख पात्र भोग तथा दूध करद ले आये तथा एक नारियल (कच्चा) ले आये।

रोट का देवता को भोग

भण्डारी जी पात्र में पका हुआ रोट तथा दूध और करद (छोटी छुरी) लाल वस्त्र से ढककर ले आते हैं और पुजारी जी को देते हैं। पुजारी जी या खुद श्री भण्डारी जी देवता को भोग लगाते हैं प्रथम रोट के नाभी पर लाल फूल रखते हैं। अत: पुजारी देवता सम्मुख भूमि पर जल का स्वास्तिक या चक्र (वर्तुल) बनाके भोग पात्र उस पर रखता है। (मूर्ति) देवता कक्ष का परदा डालते हैं। फिर आचमनी से तीन बार (१) सत नमो आदेश (२) गुरु जी को आदेश (३) ॐ गुरु जी कहकर जल भोगपात्र के ऊपर घुमाते हैं। फिर इसी शब्द द्वारा आचमनी से तीन बार धरती पर दाहिने ओर जल छोड़ते हैं। फिर "ॐ गुरुमुख बोली अलील मुख शुद्धि'' कहकर आचमनी से मुख में जल प्राशन (आचमन) करे फिर जल आचमनी ॐ गुरु भन्जन गुरु ज्ञान हाथ मन्जन अलील पुरुष का ध्यान। कहकर हाथ धोवे फिर गले के जनेऊ के नादी को दाहिने हाथ से पकड़ कर बायें हाथ से घण्टी बजावे और दाहिने हाथ से भोग को स्वाहा, स्वाहा, स्वाहा करे। फिर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे।

रोट को गोदी देने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। शून्य—शून्य महा शून्य महाशून्य में ओंकारा शिव शक्ति मिल किया पसारा नीचे धरती ऊपर आकाश झेल झेल धरती माता रोट का प्रकाश। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

फिर नादी बजा के (नाद पूजा) आदेश करे। अत: दूध को पात्र से हटाकर देवता सम्मुख रखे और रोट को करद से (छोटी छुरी) इस प्रकार से काटे कि सम्पूर्ण रोट को स्वास्तिक आकार में काटे रोट के बीच में एक चौकड़ा (जिसे रोट की नाभी कहते हैं) निर्माण होये। अब इस नाभी को सीधा (खड़े) पकड़कर

तीन भाग में काटे उसमें लाल पुष्प (ऊपर) का भाग श्री नाथ जी को अर्पण करे बीच वाला भाग गंगा जी को चढ़ाये और नीचे का तीसरा भाग काले कुत्ते को या गौ को दे। (रोट काटने की विधि चित्र में दी हुयी है) इस रोट काटने के समय में निम्न मन्त्र बोले मन्त्र और रोट काटने की क्रिया एक साथ पूर्ण होये। कुछ योगेश्वर बड़ा रोट को केवल बिचो–बीच गोल आकार में नाभी ही (बीना स्वस्तिक) काटते हैं। जिसमें लौंग इलायची लगाते हैं।

रोट मुक्ता मन्त्र

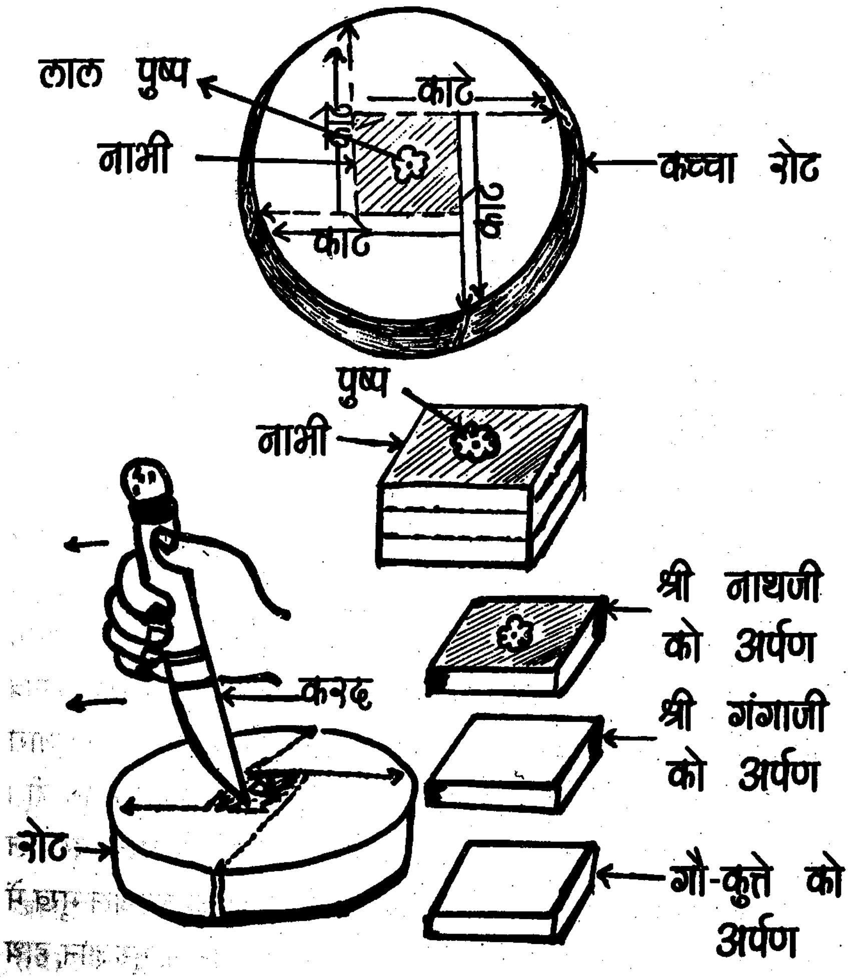
सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। आदि योग अनादि माया जहां पर श्री नाथ जी को रोट चढ़ाया। अन्न पानी का पूतला सदगुरु उपदेश, करद काटकर रोट मुक्ता करु नाभी रहे अखण्ड नाभी स्थान में नाभी चढ़ाऊं शीश स्थान में शीश। रक्षा करे गुरु गोरखनाथ जी थिर थरप्या ब्रह्माण्ड। श्री नाथ जी तुमको नाभ चढ़ाऊं सर्व सिद्ध गुरो को शीश नमाऊं। श्री दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी के चरण कमल को आदेश। इतना रोट मुक्ता मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इसके उपरान्त फिर नाद बजा के नाद पूजा करे और भोग पात्र फिर भण्डारी के स्वाधीन करे, रोट भण्डार में सब योगेश्वर बांट के प्रसाद रुप में खाते हैं।

मुख्यत: रोट काटकर भोग भैरवनाथ जी को लगाते हैं और शनिवार के दिन नारियल भी फोड़ते हैं। कुछ योगेश्वर प्रति दिन नारियल फोड़ते हैं। कच्चा रोट भैरवनाथ जी को प्रिय है। यह भोग सूर्योदय से पूर्व ही लगाया जाता है।

अत: सब पंथ के भण्डारी जी तथा श्री भण्डारी जी कोठारी जी भण्डार में अपने–अपने कार्य में लग जाते हैं। कोठारी जी कोठार से चावल, दाल दूध, घृत इ० पदार्थ तथा रसोई बनाने के साहित्य श्री भण्डारी जी को देते हैं। बाकी पंथ भण्डारी रसोई बनाते (पकाते) हैं वे जब चूल्हा में अग्नि प्रज्वलित करते हैं। तब श्री भण्डारी भण्डार में जल छिड़क कर भण्डार को चेताते हैं। निम्न मन्त्र उच्चारण ऊंची आवाज देकर करते हैं। श्री भण्डारी नहीं होये तो पंख जी हांक लगाके मन्त्र बोलते हैं।

श्री नाथजी को रोट काटकर भोग लगाने की विधि



भण्डार चेतने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी अनपूरे अन्नपूर्णा तत पूरे गणेश। आद भवानी भण्डार तपाये। अग्नि प्रजाले महेश। ॐ गुरु जी आकाश डिब्बी पाताल का ठीया। नौ नाथ चौरासी सिद्ध अनन्त कोट मिल आरम्भ किया। आकाश डिब्बी उपजे भावे। राजा प्रजा लागे पाव। यह डिब्बी मस्तक बसे नीचे बरै अंगार। ब्रह्मा विष्णु महेश जी तीनों करे संभार। माई ज्वाला ईका बरसे नूर ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर। इसका अन्त न पाइये। भर्या ठर्या भरपूर। इतना भण्डार चेताने का मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

तदपश्चात भण्डारी रसोई तैयार करते हैं। ११, १२ बजे भोग की सम्पूर्ण तैयारी करते हैं। एक पात्र में (थाली मे) सम्पूर्ण खाद्य मिष्ठान पदार्थ तथा फल इ० एकत्रित रखकर वह (थाली) पात्र गादी पर रखते हैं या लाल वस्त्र पर पात्र रखते हैं। निम्न मन्त्र उच्चारते हैं।

पात्र गादी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। सार-सार महासार अनन्त गादी बैठे अन्नपूर्णा माता। भण्डारी करे ज्योत पूजा अलख निरन्जन और नहीं दूजा। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इधर मन्दिर में पुजारी जी सब पूजा आरती के पश्चात भोग के लिये पंख जी द्वारा भण्डारी भोग लाने हांक लगाते हैं। अत: भण्डारी भोग पात्र लेकर आते हैं। पुजारी पूर्ववत श्री नाथ जी के कक्ष का पड़दा बंद करते हैं। भोग पात्र इसे महाभोग भी कहते है। जो मिष्ठान युक्त होता है। यह महाभोग पात्र प्रतिमा सम्मुख जल से स्व स्तिक आसन बनाकर उस पर रखते हैं। पुजारी आचमनी से तीन बार सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। कहकर भोग पात्र पर घुमाते हैं तथा तीन बार इन्हीं शबद से धरती पर जल छोड़ते हैं। फिर ॐ गुरु मुख बोली अलील मुख शुद्धि कहकर जल मुख में लेकर मुख शुद्धि करते हैं। फिर जल आचमनी से, गुरु मन्जन, गुरु ज्ञान, हाथ मन्जन अलील पुरुष का ध्यान कहकर हाथ धोकर शुद्धि करते हैं। फिर गले

नाद जनेऊ की नादी को दाहिने हाथ से पकड़कर बायें हाथ से घण्टी बजाकर दाहिने हाथ के पंजा मुद्रा से महाभोग को स्वाहा स्वाहा स्वाहा करते हैं। अतः हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

भोग लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ अलील स्वाहा। अन्नपूर्णा स्वाहा। जिव्या ज्वाला सरस्वती, लगे भोग कटे रोग, अन्नभूतो दानी, अन्न भूतो पानी जिसका चुन उसी का पून, जोगी अवधूत का पाप और ना पुण्य कहे महादेव सुन पार्वती, सिद्ध साधक का जोग अन्नपानी बिना रहे ना कोय। अन्नपूर्णी माय सिद्ध साधक की माय। अन्न का दाता सदा सुखी, वस्त्र दाता कमलापती, धातु का दानी भवपती सुखी दे सन्तोषी खाय उसकी वासना तीन लोक में जाय। अन्नपूर्णी भिष्या सदा सहायी। अन्नपूर्णी भिष्या सदाशिव ने लीन्ही, यही भिष्या अवधूदत्त ने लीन्ही। यही भिष्या गुरुगोरक्षनाथ जी ने लीन्ही। यही भिष्या अनन्त कोट सिद्धों ने लीन्ही। ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी अपना भोग लीजिये कारज हमारा पूरा कीजिये। अन्नपूर्णी माते ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरे। कोटान कोट सिद्ध साधक त्र्यपन्ते त्र्यपन्ते। मन्त्र पढ़ भोग लगावे सो अखण्ड भोजन अमृत कर पावे बिना मन्त्र भोग लगावे सो नर खाया पिया व्यर्थ जाये। इतना मन्त्र भोग सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। ॐ नमो शिवाय।

तदन्तर पुजारी और भण्डारी (अर्थात साधक ने भी) नाद पूजा (नाद बजाके) आदेश करें। भण्डारी भोग पात्र लेकर भण्डार में आते हैं और भोग पात्र के सब पदार्थ रसोई के पात्रों में प्रसाद रुप में मिला देते हैं।

तदन्तर भण्डार में भोजन बैठने के आसन डाले जाते है। पत्तल, थालीया, जलपात्र इ० लगाते हैं सब तैयारी करके, भण्डारी भण्डार देवता (गणेश गौरी तथा अन्नपूर्णा) कलश समीप दीप प्रज्वलित करते हैं और भण्डार उतारने का मन्त्र बोलते हैं।

भण्डार उतारने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। आकाश की डिब्बी पाताल ठिया। अनन्त कोट सिद्धों मिल भण्डार किया। चढ़े डिब्बी उतरे सिद्धि उत्पत्ति ज़ोगनी रान्धे सिद्धि।। काली कपलानी सिर जटा डिब्बी शिवजी के संग। मढ़ी मसान हांक फिरे सत गुरु का रंग। धर्ती डिब्बी ब्रह्मा कपाली, ब्रह्मा विष्णु अग्नि प्रजाली। सात समुंदर लकड़ी आनी। रसोई तपे सो आदभवानी।। शक्ति रुप रान्धे सदाशिव स्वयं अन्नपूर्णा सब सिद्धों को स्वाहा इतना भण्डार उतरने का मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अब भण्डारी जी भण्डार सिद्ध होने पर क्षेत्रपाल भैरव के बलिपात्र बनाते हैं। पूजा होती है। उस भोग पात्र का (बलि पात्र का) अन्न काक, काले कुत्ते,गौ माता, पंछियों को दिया जाता है।

बलिपात्र का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जो को आदेश। ॐ गुरु जी। पहली पूजा आदकी, दूसरी पूजा अनाद की, तीसरी पूजा धरती की, चौथी पूजा अलील की, पांचवी पूजा आकाश की, छठी पूजा गोरक्ष खटडी, आकाश भैरव पिशोर स्थान बलि—पात्र मुक्ता कराया कंजली के स्थान बल भख बला भख जती सती को रख, पापी पाखण्डी को भख त्वम प्रसन्न कोटान कोट भैरव, भूपाल पशु पंछी श्रेत्र—पाल, तृप्यन्ते तृप्यताम। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

तदपश्चात भण्डार का डंका (घंटी) बजाते या नागफनी बजाते है। सब योगेश्वरों को हांक दी जाती है तथा सब महात्मा पंक्ति में बैठते हैं। बारह पंथ के भण्डारी भोजन परोसते हैं। बैठे—बैठे योगेश्वर श्लोक बोलते हैं।

कुछ श्लोक पाठ

ॐ नर नारायण उगत सूर्य पात्र भया सिद्ध पूर, काल कंटन सब भागे दूर। श्री नाथ जी का भण्डारा, ऋद्ध सिद्ध भरपूर। जती सती सेवन अन्न सूर, अन्नपूर्णा खाये जीवे जरै, सत की वाचा सत फुरे। चिन्ता अचिन्ता सिद्ध साधक की करें। जिसका अन्न उसी का पुण्य जोगी अवधूतों को पाप रहे ना।

पुण्य। अन्न पानी का दाता सदा रहे सुखी सिद्धों की बाणी जैसे सदा रहे निर्मल पानी। पिया अलील या पानी उत्तम जान जैसा दिया वैसी बात जति सती की कमाई। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। इत्यादि श्लोक बोलते हैं।

हर हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ शंभो काशी विश्वनाथ गंगा, हर हर महादेव गंगे......

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी हे नाथ नारायण वासुदेवा।

इ० श्लोक बोलते-बोलते पात्र परोसना होता है। अतः सब सन्तोषी भोजन करते हैं। भोजन पश्चात महात्मा सबको एकमता कहते हुये उठते या तो नागफनी फिर से बजती है। सब योगेश्वर उठते हैं और हाथ मुंह जल से शुद्धि करते हैं और अपने-अपने आसन स्थान पर लोट पोट करने के लिए चले जाते हैं।

नियम

भण्डार कक्ष के कुछ नियम भी होते हैं—

(१) भण्डार कक्ष में कोई योगेश्वर तथा कोई भी व्यक्ति नंगे सिर प्रवेश नहीं करते सिर के ऊपर साफा या वस्त्र बन्धा हुआ आवश्यक है।

(२) जहां रसोई तैयार होती है वहां कोई भी खाने का पदार्थ जूठा नहीं कर सकते। अगर कुछ खाना हो तो बाहर के भोजन कक्ष में खा सकते हैं।

(३) भण्डार कक्ष में शक्यतों औरतें नहीं आ सकतीं।

(४) सभी १२ पंथी भण्डारी श्री भण्डारी जी के अनुशासन में कार्य करेंगे।

(५) नशीले पदार्थ सर्वथा निषिद्ध हैं।

(६) एक जूठा बर्तन परोसने वाला और किसी पदार्थ युक्त पात्र में मिलाया नहीं जाता।

(७) परोसते समय परोसने के बर्तन नीचे नहीं रखते तथा भोजन पात्र को परोसने के बर्तन, चम्मच कलची इ० स्पर्श नहीं होना चाहिये।

(८) पदार्थ पूछकर परोसे जाते हैं उदाहरण- रोटी को रोटी राम, सब्जीराम, जल राम इ०।

(९) भोजन के पश्चात अपने-अपने भोजन पात्र मिट्टी से या भभूती से साफ करके जल से धोकर शुद्ध रुप में पूर्व नियोजित जगह पर रख देवे या पत्तल हो तो भण्डार से दूर नियोजित स्थान पर डाले। यहां सेवक भी अपनी इच्छानुरूप सेवा कर सकते हैं।

(१०) नागफनी डंका अनुसार भोजन की शुरुआत तथा समाप्ति होती है।

(११) भोजन के समय असभ्य भाषण निषिद्ध है।

(१२) भोजन पूर्ण रुप से ग्रहण करे तथा पात्र में अन्न नहीं रहना चाहिये।

(१३) भण्डार में शुद्धता एवं शान्तता आवश्यक है।

(१४) भण्डारी मुंह पर पट्टी (कपड़ा) बांधकर रसोई बनाये।

(१५) भण्डार में रसोई बनाते हुये भण्डारी अपने हाथ, नाक, कान, आंख इ० शरीर के अंग प्रत्यंग को स्पर्श करना निषेद्ध है तथा किसी वस्त्र को स्पर्श करना वर्जित है।

(१६) रसोई खण्डित अर्थात अपूर्ण होने पर भण्डारी को दण्डित किया जाता है।

(१७) श्री भण्डारी मेला-भण्डारा कुम्भ-भण्डारा इ० बड़े-बड़े भण्डारों में अधिकारी रुप में कार्य करते हैं जिनके अधिकार में बारह पंथ के बारह भण्डारी होते हैं।

(१८) सर्वसाधारण भण्डार में कोठारी जी अधिकार युक्त होते हैं।

(१९) सार्वजनिक भण्डारों में अलग सा कोई पदार्थ तैयार करना या व्यक्तिगत पदार्थ बनाना वर्जित है।

(२०) भण्डारा में भोजन सर्व समान रूप होना आवश्यक है।

(२१) भण्डार रसोई महात्माओं के (योगियों के नियमक) आहार के प्रति हलका फुलका (ज्यादा मसाला, तेल वाला तला हुआ ज्यादा तेज इ० वर्जित होता है। भोजन सर्वमापक होना आवश्यक है इत्यादि और भी नियम होते हैं।

इतना भण्डार कर्म-विधि-नियम सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

सन्ध्या-आरती तथा पूजा पाठ

सभी योगेश्वर मध्यान्ह में लोट पोट विश्राम करते हैं। ३ बजे पुजारी की पूजा कर्म पूर्ववत शुरु होती है। पुजारी गंगाजल पूजा की झारी में भरकर पूजा का बंध बांधता है तथा काया शुद्धि करके पूजा कर्म करते हैं। प्रातः पूजा विधि अनुसार सायं पूजा करते हैं। (या पूर्व पूजा विधि वर्णन किया है) अर्थात धूनी के पुजारी भी धूनी पूजा कर्म में जुड़ जाते हैं। पुजारी पूजा वेदी, गगन मण्डल सिर स्थान, गुरु गोरक्षनाथ प्रतिमा, गुरु पादुका, गुफा, शिवलिंग, समाधि आदि देवता प्रतिमाओं के सम्मुख इ० सभी जगह ज्योत (दीपक) लगा के सजाये जाते हैं। सभी जगह गौघृत की ज्योति लगाते हैं। ज्योति चेतन करने की विधि इस प्रकार है कि धूनी घर में जाकर धूपीया में अंगार भर के लाते हैं। उसमें उद-गुग्गल तथा थोड़ा घृत डालकर पंखा लगाते हैं। जब वह अंगार प्रज्वलित होता है तो उसी से बत्ती सुलगाकर सभी जगह की ज्योत चेतन की जाती है।

धूप से ज्योत चेताने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। चेतन धूनी धूप प्रकाशा कहे पार्वती सुनो महेशा। सोने की धूपीया जरनीका धूप जामे निपजे ज्योति स्वरुप॥ जल सोधो थल सोधो सोधी मेघ मण्डल कैलाश। पांच तत्व का धूपीया सोधो जागै ज्योत प्रकाश॥ आत्मदेव निरन्जन ज्योति, प्रगटै झल मल माणिक मोती॥ ॐ ज्योति पुरुषाय विद्महे महाज्योति पुरुषाय धीमही। तन्नो ज्योति निरन्जन प्रचोदयात।

इस मन्त्र द्वारा ज्योति चेताते हैं। ज्योत का बीज मन्त्र का पाठ भी करते हैं।

ज्योत का बीज मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृ० सं० १९९ पर देखे)

॥ इस प्रकार मन्त्रों द्वारा ज्योति सर्व जगह चेतन करके नमस्कार करते हैं। अतः पुजारी जी संध्या आरती की तैयारी करते हैं। प्रथम धूप आरती होती है फिर पंच ज्योति की आरती होती है। कुछ योगेश्वर नवनाथों के प्रति नव ज्योति आरती करते हैं। पंच आरती पद्धति मुख्यता प्रचलित है। अतः साधक इसी कर्म से आरती पूजा करे।

प्रथम पुजारी जी धूनी पर से लाये हुये अंगार से धुपीया, उद गुग्गल, घी इत्यादि सुगन्धित द्रव्य डालकर धूप चेताते हैं तथा दाहिनी हथेली में चन्दन मिश्रित गंगा जल लेकर मन्त्रों से अभिप्रेरित करके श्री नाथ जी को आवाहित करते हैं और जल प्रतिमा के चरणों में छोड़ते हैं या प्रतिमा के ऊपर छिड़कते हैं। इस समय जल गायत्री तथा गोरक्ष गायत्री (पूर्व भाग में वर्णित है) का पठन करके आवाहन तथा अभिप्रेरित करते हैं। इसी वक्त नाथ योगेश्वर (पूर्व वर्णित) चक्रावली में आकर खड़े होते हैं। इस वक्त विलम्बित लय में धम धम बाजा, बजता है। घड़ियाल, बड़ा घण्टा, डमरु, नागफनी, पुंगी तथा शंख सभी प्रकार के ध्वनी वाद्य जब श्री नाथ योगेश्वर पुजारी जी के हाथ की घण्टी त्रिताल में बजती है तब इसी ताल में बजाते हैं। अतः पुजारी जी धूप की आरती प्रतिमा के सम्मुख करते हैं। धूप चेतन करने का मन्त्र (पूर्व वर्णित) से धूप चेतन करे। अतः आरती प्रतिमा के चरणों से की जाती है। चरणों में चार बार नाभी दिशा में दो बार मुखारबिन्द में एक या तीन बार सर्वांग सर्व प्रतिमा की सात बार या अधिक इच्छानुरुप आरती घुमाने की पद्धति है। ॐ आकार में भी आरती करते हैं। आरती को गोलाई में घुमाते हैं जोकि आरती का घुमाना प्रथम छोटे वर्तुल में या ॐ आकार में बाद में बढ़ते-बढ़ते बड़े से बड़ा वर्तुल घेरा में आरती की जाती है। अर्थात साधक इसी प्रकार आरती करे। निम्न आरती धूप से करे।

आरती श्री नाथ निरन्जन की

नाथ निरन्जन आरती साजै। गुरु के शबद झालरी बाजै ॥टेक ॥
अनहद नाद गगन में गाजे। परम ज्योति तहां आप विराजे ॥१ ॥
दीपक ज्योति अखंडत बाती। परम ज्योति जगे दिन राति ॥२ ॥
सकल भवन उजियारा होई। देव निरन्जन और न कोई ॥३ ॥
अनन्त कला जाकै पार न पावै। शंख मृदंग धूनी बेनि बजावे ॥४ ॥
स्वाति बूंद ले कलश बदाऊं। निरति सुरति ले पहुप चढ़ाऊं ॥५ ॥
निज तत नाव अमूरति मूरति। सब देवां सिरी उद्बुद्धि सूरति ॥६ ॥
आदिनाथ नाती मत्स्येन्द्रनाथ पूता। आरती करे गोरख अवधूता ॥७ ॥
नाथ निरन्जन आरती साजै। गुरु के शबदू झालरी बाजै ॥टेक ॥

तदन्तर पुजारी पंच ज्योत आरती चेतन करते हैं। पंच ज्योत चेतन करने की विधि या पूर्व दी है। मन्त्र द्वारा ज्योत प्रज्वलित करे या निम्न मन्त्र से ज्योत चेते।

आरती ज्योत चेतन करने का ज्योत-महामाया मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृ० सं० १७१ पर देखें)

अत: जोत चेतन के बाद निम्न आरती करे।

गुरु गोरक्ष नाथ जी की संध्या आरती

ॐ गुरु जी शिव जय जय गोरक्ष देवा श्री अवधू हर हर गोरक्ष देवा। सुर नर मुनि जन ध्यावत सुर नर मुनि जन सेवत। सिद्ध करें सब सेवा श्री अवधू सन्त करें सब सेवा। शिव जय जय गोरक्ष देवा ॥१ ॥

ॐ गुरु जी, योग युगति कर जानत मानत ब्रह्मज्ञानी। श्री अवधू मानत सर्वज्ञानी। सिद्ध शिरोमणि राजत सन्त शिरोमणि साजत। गोरक्ष गुणज्ञानी श्री अवधू गोरक्ष सर्वज्ञानी। शिव जय जय गोरक्ष देवा ॥२ ॥

ॐ गुरु जी ज्ञान ध्यान के धारी, गुरु सब के हो हितकारी।

श्री अवधू सब के हो सुखकारी। गो इन्द्रियों के रक्षक सर्व इन्द्रियों के पालक। राखत सुध सारी श्री अवधू राखत सुध सारी। शिव जय जय गोरक्ष देवा ॥३ ॥

ॐ गुरु जी रमते श्री राम सकल युग माही छाया है नाही। श्री अवधू माया है नाही। घट-घट के गोरक्ष व्यापै सर्व घट श्री नाथ विराजत। जो लक्ष मन मांही, श्री अवधू सो लक्ष दिल मांही। शिव जय जय गोरक्ष देवा ॥४ ॥

ॐ गुरु जी भस्मी गुरु लसत सरजनी है अंगे। श्री अवधू जननी है, संगे। वेद उच्चारे सो जानत योग विचारे सो मानत। योगी गुरु बहुरंगा श्री अवधू बाले गोरक्ष सर्व संगा। शिव जय जय गोरक्ष देवा ॥५ ॥

ॐ गुरु जी कंठ विराजत सेली और श्रृंगी जत मत सुखी बेली। श्री अवधू जत सत सुख बेली। भगवा कंथा सोहत गेरुवा अंचला सोहत ज्ञान रतन थैली श्री अवधू योग युगति झोली। शिव जय जय गोरक्ष योगी ॥६ ॥

ॐ गुरु जी कानों में कुण्डल राजत साजत रवि चन्द्रमा। श्री अवधू सोहत मस्तक चन्द्रमा। बाजत श्रृंगी नादा—गुरु बाजत अनहद नादा—गुरु भाजत दु:ख द्वान्दा, श्री अवधू नाशत सर्व संशया। शिव जय जय गोरक्ष देवा।।७।।

ॐ गुरु जी निद्रा मारो गुरु काल संहारो संकट के हो बैरी श्री अवधू दुष्टन के हो बैरी करो कृपा सन्तन पर गुरु दया पालो भक्तन पर शरणागत तुम्हारी। शिव जय जय गोरक्ष देवा।।८।।

ॐ गुरु जी इतनी श्री नाथ जी की संध्या आरती निश दिन जो गावे श्री अवधू सर्व दिन रट गावे। वर्णी राजा रामचन्द्र स्वामी गुरु जपे राजा रामचन्द्र योगी, मनवांछित फल पावे श्री अवधू सुख सम्पत्ति फल पावे। शिव जय जय गोरक्ष देवा।।९।।

ॐ गुरु शिव जय जय गोरक्ष देवा श्री अवधू हर हर गोरक्ष देवा, सुरनर मुनी जन ध्यावत सुरनर मुनि जन सेवत। सिद्ध करे सब सेवा श्री अवधू संत करें सब सेवा। शिव जय जय गोरक्ष देवा।।१०।।

अत: पुजारी चँवर घुमाते हुए मन्त्र बोलते है।

चँवर मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड के पृष्ठ २०५ पर देखें)

इस प्रकार चँवर विधि के पश्चात पुजारी जी गंगा जल हाथ में आचमन लेकर प्रतिमा पर छिड़कते हैं और बाद में सभी योगेश्वर तथा भक्तजनों पर वह शंख जल छिड़क देते है। अत: पुजारी निम्न मन्त्र से कपूर ज्योत लगाते हैं।

कपूर चेतन मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड पृष्ठ संख्या २१५ पर देखें)

अत: पुजारी जी पंच आरती धूप आरती तथा कपूर आरती को दाहिने हाथ में जनेऊ पकड़कर प्रथम गुरु गोरक्षनाथ जी को स्वाहा, स्वाहा कहकर सेकते हैं तथा अचवाकते हैं। बाद में चक्रावली में खड़े सभी महात्मा योगेश्वरों को पंच आरती धूप कपूर से पूर्ववत अचवाकर चक्रावली की दाहिनी दिशा में खड़े होते हैं। यहां सब मिलकर प्रार्थना बोलते हैं। जो प्रात: आरती विधि में वर्णित है। तदन्तर सब योगेश्वर बैठकर जोत माता की रौरास बोलते हैं या

तो पंख जी या पुजारी जी रौरास ऊंची आवाज में बोलते हैं । अन्य सब सुनते हैं तथा यह श्रवण लाभ भक्त गण भी ले सकते हैं ।

जोत माता की रौरास

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । आटी घाटी ब्रह्म कपाटी, अलष पुरुष पौढे निज पाटी । लागी कूंची खुलीया ताला, पिण्ड ब्रह्माण्ड भया उजियाला ॥ आवो चंदा बैठो पास हमको कहो धर्म की बात । सूरजबाला करे विचार, धरती तपे अपरंपार ॥ उत्तर दिशा से धुन्धुकार, ज्योत जगाये किया जयकार । बल बल जाऊं लागु पाऊं, ज्योति भवन में शीश नमाऊं ॥ ज्योत जगे शिरधानमे सूरज कोट समान जो सुख गहरा चाहे तो धरो ज्योति का ध्यान ॥ जागी ज्योत भागी छोत जहां ज्योत तहां उजियाला । तहां बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला ॥ जागति ज्योत धर्म का राज सबके ठंकाल गुरु राखे लाज । दुल्लुक्षेत्रे वैश्वानरी ज्वाला देवी को आदेश । गोरख डिब्बी ज्वाला वहे, जागे ज्योत अखण्डित रहे, कोट कांगड़े भवनेश्वरी लाटावाली को आदेश ।

बाला सुन्दरी जोती ज्वालेश्वरी को आदेश । तारा त्रिपुरा तोतलाम्बा को आदेश । महा माहेश्वरी आद कुवारी माता उदयनाथ पार्वती को आदेश । अयोनी शंकर परदादा गुरु आदिनाथ जी को आदेश ।

मायारुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी को आदेश । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी को आदेश । अष्ट भैरवनाथ ८४ सिद्धों को आदेश । अनन्त कोटी सिद्ध साधका को आदेश । इतना जोत माता रौरास सम्पूर्ण भया । नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

अतः पुजारी जी बन्ध खोल देते हैं । सभी महात्माओं को गुरु गोरखनाथ जी का चरणामृत तथा प्रसाद बांटा जाता है और महात्मा योगेश्वर एक दूसरे को हाथ मिला कर आदेश, आदेश करते हैं । योगेश्वर अपने सतगुरु जी, महन्त जी, पीर जी, भण्डारी जी, कोठारी जी, पुजारी जी सबको योग्यता अनुसार तथा नियमानुसार नादी आदेश, शम्भु आदेश, गुरु वन्दना करते हैं । कुछ योगेश्वर एकत्र बैठकर धूनी पर या मन्दिर में गोरक्षनाथ जी की साखी ऊंची आवाज में बोलते है ।

गुरु गोरक्षनाथ जी की साखी

ॐ जोत जगावा हो रहा जोग जुगति के माही ।
सतगुरु शबद पैचानिया जोति में जोत समाही ॥
अवधू ऐसा ज्ञान विचारी ताथै झिलमिली जोत उजारी ॥१ ॥
जहां जोग तहां रोग न व्यापे ऐसा परखी गुरु करना ।
तन मन सू जे परचा नाही तौ काहे को पचि मरना ॥२ ॥
काल न मिंटया जंजाल न छूटया तपकीर हुआ न सूरा ।
कुल का नाश करो मति कोई, जै गुरु मिले न पूरा ॥३ ॥
वस्ती न शून्य शून्य न वस्ती अगम अगोचर ऐसा ।
गगन मण्डल में बालक खेले, ताका वरण गुण कैसा ॥४ ॥
सप्त घात का काया पिजरा माही जुगति विन सूवा ।
सतगुरु मिलै तो उबरे बाबू नहीं तो परले हूआ ॥५ ॥
कन्द्रव रुप काया का मंडन विरथा काई उलीचौ ।
गोरख कहे सुणो नरलोई अमी इरण्ड कित सीचो ॥६ ॥
गुरुकरणा बाला भोला निगुरा ने रैणा ।
गुरु का सबद चेला अमीरस पीवना ॥७ ॥
दूध धोया कोयला उजला न होयला ।
कागा कंठ पुहप माला हंसला न भयला ॥८ ॥
आमा जैसी रोटली कागा ले जायला ।
पूछौ मारे गुरुवानै कहा वैसी खायला ॥९ ॥
उत्तर दिशा आविला पश्चिम दिशा जाविला ।
पूछा मारे गुरु वानै तहां वैसी खायला ॥१० ॥
चीटीं के नेत्र में गजेन्द्र समायला ।
गावडी के मुख में बाघला व्यायला ॥११ ।
बारह वर्ष बांझ व्याई पूत जाया टूटा ।
कहत गोरखनाथ मछिन्द्रनाथ पूता ॥१२ ॥
मेरा अवधू ऐसी अलख निसानी ज्याने झूने जोगेश्वराने जाणी ॥१३ ॥

उनमन रहना भेद न कहना, पीना निजपथ पाणी ।
गुरु मुख ज्ञान समझ होय रहना सहजै सुरती समानी ॥१४ ॥
शिखर फूटकर गंगा निकली चहू दिस पाणी पाणी ।
पानी में दोय पर्वत निकल्या सायर लहर समाणी ॥१५ ॥
उस पर्वत में दोय पंछी बैठा, ज्यारे लोयण नाही ।
चांच नाहि वोरे पाखंबी नाही अघर झुले जलमाई ॥१६ ॥
सात सात सायर जलहर भरिया, उलटी बंब चलाई ।
तलिकर थंभ शिखर घर बाडी, सहस ढिकलिया ढलाई ॥ १७ ॥
सीचत सीचत उपजन लागा, माणिक मोती हीरा ।
मत्स्येन्द्र प्रसादे जती गोरख बोले, समझ समझ मन धीरा ॥१८ ॥
अवधू हसा नजर नही आया, चांच पांख नहीं काया ।
अवधू पंछी नजर नहीं आया ॥१९ ॥
बिना पाल भव सागर भरीया नीर नजर नहीं आया ।
ऊंवा तीर पर हंसा बैठा वाही बैठ सपडाया ॥२० ॥
बिना शंभ एक देवल देख्या, साज नजर नहीं आया ।
उस देवल पर तपस्वी तापे नहीं रुप नहीं काया ॥२१ ॥
एक गुरु जना पांच चेले, पच्चीस जोगीन लाया ।
मृत्य लोकमें भया अचंबा बेटी बापने जाया ॥२२ ॥
बिना सूढ इक हस्ती देखा पाव नजर नहीं आया ।
मछिन्द्र प्रसादे जती गोरख बोले अंकुश दे समझाया ॥२३ ॥
हेरि मैं झूना जोगी पाया, रमता जोगी पाया ।
तीन ताप भव बन्धन मेटया, सोन शिखर मठ छाया ॥२४ ॥
सर्व घातका कीला बनाया, जहां पर हंस ठहराया ।
वसता सहर उजड़कर दीना सुनमें सहर बसया ॥२५ ॥
जल विच कमल, कमल विच कलिया, जल में ज्योति समाया ।
चांद सूर रा लिया सरोदा, उलट पछिम घर आया ॥ २६ ॥
अनड पंखेड़ू उड़े आकाशा आंख पांख बिन काया ।
चांचा बिन हंसो लाल चुंगता, अणभै मोती पाया ॥ २७ ॥

बिना देहिका सतगुरु भैटया, अंग भभूत रमाया।
अविगतिनाथ अकल अविनाशी गोरख रमता पाया ॥२८॥
जुगत कर कर जाग जोगी मुक्त से परवनी जी।
दया कंथा पहर अवधू नाम है, निरवाणी जी ॥२९॥
मूल बांधो नाभ खोजो पीवो आसा पान जी।
शुष्मना घर करो आसन मिटे आवा गवन जी ॥३०॥
पांच बांधो तीन राखो अष्ट देवो काट जी।
आवो हंसा पीवो पानी त्रिवेणी के घाट जी ॥३१॥
ऐसा जोगी चतुर भेदी, कवन घर से आय जी।
कौन संचे कौन पीवे, कौन रहया समाय जी ॥३२॥
ऐसा जोगी चतुर भेदी गगन मण्डल से आय जी।
सुरती संचे निरति पीवे, सुनमे रहया समाय जी ॥३३॥
मार ममता मेट चिन्ता मैल नाखो धोय जी।
कहे मछिन्द्र जोग ऐसा आपे करता सोय जी ॥३४॥
काया वेलडी रंग वेलडी, ताने विरला जन जानेला जी।
विषियवर वेल बंधी वाड़ी में काट सके कोई काठेलाजी ॥३५॥
सचितड़ा वेल कमलाये, काटया कूपल छोड़ेला जी ॥३६॥
आवेला गढ़वंता माली, जडामूल से खोदेला जी ॥३७॥
पानड़ा लासा सूसिया अवधू वेल अमर फल छोड़ेला जी ॥३८॥
भनत मछिन्द्र नाथ सुनो जती गोरख, वेल अमरफल पावेला जी ॥३९॥
तन मन खोज्या जाने तुरत मिल्याए।
पीव मिल्या हेली म्हाने पीव मिल्याए ॥४०॥
अवगतिनाथ उत्पन्ना आदू हर जी हुआ जद मै भी हुआ।
सपने में सखी दोय जणा देख्या, खुल्या नैण जद एक हुआ ॥४१॥
विन बीज एक वृक्ष देख्या, चौदह लोक में छाय रहया।
धरण गगन दोनों से न्यारो वाही मेरा मन लाग रहाया ॥४२॥

विन पाल एक सरोवर देख्या नीर हिलोड़ा लय रहयोरा ।
एक अचंबा ऐसो डा देख्या बून्द महि समंद समाय रहयोरा ॥४३ ॥
गुलाब नाथ मिल्या गुरु पुरा, भानि नाथ जस गाय रहयो ए ।
मस्तक ऊपर गुरु हस्तक धरीयो जब आपे में ओलख रहयोए ॥४४ ॥
धरहर धरहर अम्बर गरजे, सबदे सबद सनकारा ।
अगद दमादम लागी गगन में चले दमामा हद भारा ॥४५ ॥
गगन मण्डल में जोयले अवधू विन दीपक उजियाला ।
रंगमहल में त्योति झगमगी परखे परखण वाला ॥४६ ॥
अधर तखत पर अनघड़ तापे निराधार निराधार ।
सुरत नुरत नही रुप न रेखा इकरंगी सबसे न्यारा ॥४७ ॥
बिन कारीगर कीमत थारी पारवार नहीं थारा ।
केई बार आगे आरम रचिया चेतन तुम छेजारा ॥४८ ॥
भैरुनाथ शरण सत गुरु की, गुरु गम ज्ञान अपारा ।
माया त्याग भरमें ना भूलो वंचो जमका द्वारा ॥४९ ॥
हो नाथ मेरा, मै झूना झूना गढ पाया नाथ
मेरा मै जोग जुगति मति पाया ॥५० ॥
जल बिच अगन, अगन बिच पानी-पानी में पिण्ड बनाया ।
सप्त घातका घड़या पिंजरा माही भ्रमर लुभाया ॥ ५१ ॥
गगन मण्डल बिच धेनु व्याई, धरती मही जमाया ।
जल की मछली पर्वत व्याई, अध बिच अडा गुडाया ॥५२ ॥
नदी किनारे चुगे मिरगलो खुर बिन मुख बिन काया ।
बिना चुगारे चुगा चुगे है । खोजत विरला पाया ॥५३ ॥
कहे मछिन्द्रनाथ गोरख बूझैत हीर से हीर मिलाया ।
तनका महरम मन्है उपाया, सुन्ये ध्यान लगाया ॥५४ ॥
हो नाथ मेरा सतगुरु पाईया । नाथ मेरा जोग जुगति मैं पाया ॥५५ ॥
इतना श्री नाथ जी की शाखी समाप्त । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । गुरु योगी को आदेश ।

इस प्रकार श्री नाथ जी की शाखी अनन्त है। शबदी है। जब योगेश्वर एक साथ मिलकर शबद में शबद मिलाकर बोलते रहते है। रातों रात बीत जाती है। कुछ योगेश्वर क्षुधा या कुछ जलपान या अल्पोहार लेते हैं और अपने आसनों पर आसनाधीन होते हैं। कुछ योगेश्वर महात्मा अपने गुरुजन शिष्यजन तथा नीतियों से ज्ञान चर्चा भी करते हैं। जब योगेश्वर रमत करते हैं तो रैनी बैनी सैनी सीख जाते हैं। परन्तु कथनी करनी तो केवल सतगुरु जी के सहवास तथा ज्ञान चर्चा और गुरु सेवा में ही प्राप्त होती है। इसलिये सतगुरु या दादा गुरु चाचा गुरु जी इन्हीं से मुखारबिन्द से ज्ञान की बानी तथा नित्य कर्म, नैमेत्तिक कर्म की जानकारी तथा अनुभूति होती है। गुरु लोक योगियों के आदर्श की मूर्ति बनाते हैं।

श्री गुरुजती गोरक्षनाथ जी ने नाथ सिद्धों का परिवार बनाया है। वह कहते हैं कि शब्दी- "करनी करे सो चेला बोलिये। कथनी कथे सो नाती। रहनी रहे तो गुरु हमारा हम रहता के साथी ॥"

अर्थात जो रैनी में (शुद्ध आचरण में रहता है) पूरा है वह गुरु पद लेते हैं और जो करनी में [कर्म (कार्य) करने में प्रवीण तथा तत्पर है] सूरा है वह गुरु जी का चेला (शिष्य) है और जो कथनी में (बताया हुआ ज्ञान में विवेक रखता है) सूझ बूझ रखता है वह नाथ जी का नाति (संगति) होता है। कथनी-करनी एक रस होनी चाहिये। रहता पुरुष अकेला हम रहता के साथी गुरु लोक अच्छे संस्कार डालने के लिये क्रियायें (करनी को) सिखाते हैं। अनेक क्रियाओं के मन्त्र सीखते हैं मन्त्र गुरु मुख द्वारा सुने बिना मन्त्र अधूरा है। मन्त्र शक्ति हीन है। इसलिये सद्गुरु शिष्य को तथा साधक को बहुत सूझ बूझ देते हैं। पुरातन भूतकालीन जो उन्हीं को गुरु लोक आदि परम्परा के योगीयों से तथा स्वः अनुभवी प्राप्त विद्यायें तथा मात्रा मन्त्र क्रियायें इन पर वह प्रकाश डालते हैं। नाथ समाज में मन्त्र तन्त्र क्रियायें कंठस्थ होना परम आवश्यक है। किताबें पढ़कर तोता बोली पर निषेद्ध है।

"पढ़ी देखी पण्डित ही रहि देखी सार, कथनी करनी विन थोथी।"

अर्थात गुरु गोरक्षनाथ शबद परम सत्य है।

उत्तरार्ध कर्म

अतः धूना उत्तरार्ध पूजन कर्म के तरफ प्रकाश डालते हैं। धूना की आरती, भोग के पश्चात योगीश्वर अपने-अपने क्रियायों में व्यस्त होते हैं। ध्यान धारणा, मन्त्र कण्ठस्थ करना, भण्डार कर्म, गुरु सेवा तथा व्यक्तिगत कार्यों में लग जाते हैं। धूना के पुजारी जी (साधक) अपनी बची हुई विधि कर लेते हैं या अलगसा धूना हवन में निम्न क्रियाओं का समावेश है। बलीपात्र विधि, मान दान रुद्र अभिषेक देवता विसर्जन भोजन भण्डारी इत्यादि।

* * *

धूना बली पात्र विधि

पुजारी (साधक) ने धूना हवन् आरती भोग इत्यादि विधि होने के बाद निम्न बलिपात्र की विधि करे।

निम्न मन्त्र पाठ से धूना के सर्व दिशाओं में कोटवालों की सामुपचारे पूजन करे। धूप दीप अक्षदा सिन्दूर हल्दी पुष्प दुर्वा बिल्व इ० से पूजन करे।

(१) पूर्व दिशा को ॐ नमो भानू कोटवाल नमो स्वाहा।
(२) नैऋत्य दिशा को ॐ नमो गणेश कोटवाल नमो स्वाहा।
(३) ईशान्य दिशा को ॐ नमो हनुमन्त कोटवाल नमो स्वाहा।
(४) पाताल दिशा को ॐ नमो शेषनाग कोटवाल नमो स्वाहा।
(५) पश्चिमे दिशा को ॐ नमो चन्द्रमा कोटवाल नमो स्वाहा।
(६) वायव्य दिशा को ॐ नमो भैरो कोटवाल नमो स्वाहा।
(७) उत्तर दिशा को ॐ नमो गरुड कोटवाल नमो स्वाहा।
(८) आकाश दिशा को ॐ नमो इन्द्र कोटवाल नमो स्वाहा।
(९) दक्षिण दिशा को ॐ नमो यम कोटवाल नमो स्वाहा।
(१०) अग्नये दिशा को ॐ नमो अग्नि कोटवाल नमो स्वाहा।

पूजन नमस्कार आदेश के बाद एक पात्र में दही, उड़द की दाल (साबुत), चावल भरके रखे तथा एक पात्र में १० दीपक और एक-एक पुष्प रखे और धूना या धूना (हवनकुण्ड) कक्ष के प्रत्येक दिशा में धूप दीप तथा दही उड़द, चावल पुष्प रखकर नमस्कार पूजन करे।

दस बलि पात्र मन्त्र

धूनी कुण्ड के पूर्व दिशा में—

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ आदिनाथ जी ने बलि पात्र थाप्या, ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे, ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे, ९ करोड़ दुर्गा बैठी प्रथम पूजा पूर्व दिशा भानु कोटवाल की कीजे । संज्ञा देवी भवानी बम माया भरपूर पाटन में कलिंग देश भानु कोटवाल की पूजा रचिजे । पीर तदवीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोटवाल, क्षेत्रपाल राजा प्रजा-यति सती समा चक्र बाल गोपाल के विध्न हरीजे , जो बल मांगे सो बल दीजे, कण्टक मार खप्पर में लीजे दैत्य मार दानव मार बल दीजे । संज्ञा देवी सहजा नन्दी माई ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर सोमवन्ती नाम बाल भानू कोटवाल जीया लेता, बाला तृण चरन्ता पाणी पीवन्ता धरती मुख मुण्डेला हे देवी संज्ञा तेरे कारण पूजा रची मम दोष न दीजिये । एक जीव रक्षन्ते, एक जीव भक्षन्ते एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल-एक जीव मारे पाप न पुण्य । जा जा रे जीव तेरा सूर्य (भानू) लोक में वासा, अनन्त कोट सिद्ध मिल भरे ग्रासा । ओम भानू जी बल भख-बला भख पापी पाखण्डी को भख जती सती को रख कोटयान कोटी भानू जी तृप्तवान, तृप्तवान । बली पात्रा मुक्ता किया कलींग के स्थान । श्री नाथ जी को आदेश ।

धूनी कुण्ड के अग्नेय दिशा में—

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । आदिनाथ जी ने बलि पात्र थाप्या । ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे । ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे ९ करोड़ दुर्गा बैठी, दूसरी पूजा अग्नेय दिशा की अग्निदेव कोटवाल की कीजे । सोमवन्ती अमृता देवी भवानी बम माया भरपूर पाटन ज्वालाजी अग्नि देवकी पूजा पाठ रचिजे ॥ पीर तदबीर , महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, क्षेत्रपाल राजा प्रजा-यति सती समाचक्र बाल गोपाल के विघ्न हरीजे, जो बल मागे सो बल दीजे, कन्टक मार खप्पर में लीजे दैत्य मार दानव मार बल दीजे । सोमवन्ती अमृता ज्वाला जी देवी सहजा नन्दी माई ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर सोमवन्ती नाम बाल अग्नि कोटवाल जीया लेता बाला तृण चरन्ता पाणी

पिवन्ता धरती मुख मुण्डेला—हे देवी सोमवन्ती अमृता ज्वालाई देवी तेरे कारण पूजा रची मम दोष न दीजिये। एक जीव रक्षन्ते, एक जीव भक्षन्ते, एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल—एक जीव मारे पाप न पुण्य, जा जा रे जीव तेरा शिवपुरी में वासा, अनन्त कोट सिद्ध मिल भरे ग्रासा। ॐ अग्निदेवता जी बल भख बला भख, पापी पाखण्डी को भख, जती सती को रख कोटान कोट अग्निदेव तृप्तवान—तृप्तवान। बली पात्रा मुक्ता कराया ज्वालाजी के स्थान। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

धूनी कुण्ड के दक्षिण दिशा में—

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ आदिनाथ जी ने बलि पात्र थाप्या, ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे, ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे ९ करोड़ दुर्गा बैठी। तीसरी पूजा दक्षिण दिशा में राजा यमदेव कोटवाल की कीजे। पाश का पाश काल देवी भवानी बम माया भरपूर पाटन सौराष्ट्र देश मे यमदेव जी की पूजा रचीजे। पीर तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोटवाल, क्षेत्रपाल राजा प्रजा यती सती समा चक्र बाल गोपाल के विघ्न हरीजे जो बल मांगे सो बल दीजे कण्टक मार खप्पर में लिजे दैत्य मार, दानव मार, बल दीजे, काल देवी सहजा नन्दी माई ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर। सोमवन्ती नाम बाल गणेश कोटवाल जीया लेता, बाला तृण चरन्ता पानी पीवन्ता धरती मुख मुण्डेला है। काल देवी तेरे कारण पूजा रची मम दोष न दीजे। एक जीव रक्षन्ते एक जीव भक्षन्ते, एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल एक जीव मारे पाप ना पुण्य जाजा रे जीव तेरा यमपुरी में वासा अनन्त कोट सिद्ध मिल भरे ग्रासा। यमदेवा जी बल भख बला भख पापी पाखण्डी को भख जती सती को रख कोटान कोट यमाय देव तृप्तवान—तृप्तवान। बलिपात्र मुक्ता कराया सौराष्ट्र के स्थान। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अतः धूनी कुण्ड के नैवृत्य दिशा में—

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ आदिनाथ जी ने बलि पात्र थाप्या। ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे। ९ करोड़ दुर्गा बैठी चौथी पूजा नैवृत्य दिशा की गणेश जी कोटवाल की कीजे, ऋद्धि सिद्धि देवी भवानी बम माया भरपूर पाटन में सिद्ध बुद्धि स्थान की पूजा पाठ

रचीजे। पीर, तदबीर, महन्त-कोठारी भण्डारी-कोटवाल-क्षेत्रपाल-राजा प्रजा यती सती समाचक्र, बाल गोपाल के विघ्न हरीजे जो बल मांगे सो बल दीजे। कण्टक मार खप्पर में लीजे, दैत्य मार दानव मार बल दीजे। ऋद्धि सिद्धि देवी सहजा नन्दी माई-ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर। सोमवन्ती नाम बाल गणेश जीया लेता-बाला तृण चरन्ता पानी पीवन्ता धरती मुख मुन्डेला हे देवी ऋद्धि सिद्धि तेरे कारन पूजा रची मम दोष न दीजिये। एक जीव रक्षन्ते एक जीव भक्षन्ते, एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल-एक जीव मारे पाप ना पुण्य जा जा रे जीव तेरा गणेशपुरी में वासा अनन्त कोट सिद्ध मिल भरे ग्रासा। गणेश जी बल भख-बला भख, पापी पाखण्डी को भख जती सती को रख कोटान कोट गणेशनाथ जी तृप्तवान-तृप्तवान। बलि पात्रा मुक्ता किया सिद्ध बुद्ध के स्थान। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

धूनी कुण्ड के पश्चिम दिशा में—

सत्त नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदिनाथ जी ने बलि पात्र थाप्या। ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे। ९ करोड़ दुर्गा बैठी, पाचवीं पूजा पश्चिम दिशा की चन्द्रमा कोटवाल की कीजे। रोहनी देवी भवानी बम माया भरपूर पाटन में जमना तीर क्षेत्र में पूजा पाठ रचीजे। पीर तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, क्षेत्रपाल राजा प्रजा यती सती समाचक्र बाल गोपाल के विघ्न हरीजे जो बल मांगे सो बल दीजे। कण्टक मार खप्पर में लीजे, दैत्य मार दानव मार बल दे। रोहनी देवी सहजा नन्दी माई-ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर। सोमवन्ती नाम बाल चन्द्रमा कोटवाल जीया लेता बाला तृण चरंता पानी पीवन्ता धरती मुख मुन्डेला। हे देवी रोहनी तेरे कारण पूजा रची मम दोष न दीजिये, एक जीव रक्षन्ते एक जीव भक्षन्ते एक जीव शून्य एक जीव स्थूल-एक जीव मारे पाप ना पुण्य। जा जा रे जीव तेरा चन्द्रलोक में वासा। अनन्त कोट सिद्ध मिल भरे ग्रासा। चन्द्रमा जी तृप्तवान-तृप्तवान बलीपात्रा मुक्ता किया जमुना तीर के स्थान श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः धूनी कुण्ड के वायव्य कोने में—

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदिनाथ जी ने बलि पात्रा थाप्या। ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे, ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे, ९ करोड़ दुर्गा बैठी छटी पूजा वायव्य दिशा की भैरो जी कोटवाल की कीजे। काल भैरवी देवी भवानी बम माया भरपूर पाटने में कदली क्षेत्र की पूजा पाठ रचीजे। पीर तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, क्षेत्रपाल, राजा प्रजा यती सती समाचक्र बाल गोपाल के विघ्न हरीजे, जो बल मांगे सो बल दीजे कंटक मार खप्पर में लीजे मद्य मांस का खप्पर भरीजे। दैत्य मार दानव मार, बल दे। काल भैरवी देवी सहजा नन्दी माई ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर सोमवन्ती नाम बाल भैरो जीया लेता बाला तृण चरन्ता पानी पीवन्ता धरती मुख मुण्डेला। हे काल भैरवी देवी तेरे कारण पूजा रची मम दोष न दीजिये। एक जीव रक्षन्ते एक जीवन भक्षन्ते एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल-एक जीव मारे पाप न पुण्य जा जा रे जीव तेरा भैरो पुरी में वासा अनन्त कोट सिद्धों ने मिल भरे ग्रासा। भैरो बल भख-बला भख पापी पाखण्डी को भख-जती सती को रख कोटान कोट भैरवान भैरवी तृप्तवान-तृप्तवान। बलि पात्र मुक्त किया कज्जली के स्थान श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः धूनी कुण्ड के उत्तर दिशा में—

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदिनाथ जी ने बलिपात्र थाप्या। ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे, ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे ९ करोड़ दुर्गा बैठी सातवी पूजा उत्तर दिशा की गरुड कोतवाल की कीजे। काकभुशंडी उपदेशी बम माया भरपूर पाटन में वैकुण्ठ लोक की पूजा पाठ रचीजे। पीर, तदबीर, महन्त कोठारी, भण्डारी, कोतवाल, क्षेत्रपाल-राजा प्रजा, यती सती समाचक्र बाल गोपाल के विघ्न हरीजे। जो बल मांगे सो बल दीजे। कंटक मार खप्पर में लीजे दैत्य मार दानव मार बल दीजे। उपदेशी देवी जहजा नन्दी माई ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर। सोमवन्ती नाम बाला गरुड़ जीया लेता बाला तृण चरन्ता पानी पिवन्ता धरती मुख मुण्डेला-हे देवी उपदेशी तेरे कारण पूजा रची मम दोष न दीजे। एक जीव रक्षन्ते एक जीव

भक्षन्ते, एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल एक जीव मारे पाप न पुण्य जा जा रे जीव तेरा विष्णु पुरी में वासा अनन्त कोट सिद्धों ने मिल भरे ग्रासा। गरुड़ जी बल भख-बला भख पापी पाखण्डी को भख यती सती को रख कोटान कोट गरुड जी तृप्तवान-तृप्तवान। बलिपात्र मुक्ता किया वैकुण्ठ लोक के स्थान। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: धूनी कुण्ड के ईशान्य कोन में—

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदिनाथ जी ने बलि पात्र थाप्या। ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे। ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे ९ करोड़ दुर्गा बैठी अष्टम पूजा ईशान्य दिशा की हनुमन्त जी कोटवाल की कीजे। कदलीबन (स्त्री राज्य में) अनन्त देवी पद्मिनी भवानी बम माया भरपूर पाटन अन्जनेरी क्षेत्र का पूजा पाठ रचीजे। पीर तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोटवाल, क्षेत्रपाल, राजा प्रजा यती सती समाचक्र बाल गोपाल के विघ्न हरीजे जो बल मांगे सो बल दीजे। कण्टक मार खप्पर में लीजे दैत्य मार दानव मार बल दीजे। अनन्त देवी पद्मिनी भवानी सहजा नन्दी माई ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर सोमवन्ती नाम बाला हनुमन्त जीया लेता बाला तृण चरन्ता पानी पिवन्ता धरती मुख मुण्डेला हे देवी पद्मिनी तेरे कारण पूजा रची मम दोष ना दीजिये। एक जीव रक्षन्ते एक जीव भक्षन्ते एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल-एक जीव मारे पाप न पुण्य जा जा रे जीव तेरा हनुमन्त लोक में वासा अनन्त कोट सिद्ध मिल भरे ग्रासा, हनुमन्त जी बल भख बला भख पापी पाखण्डी को भख यती सती को रख, कोटान कोट हनुमन्त जी तृप्तवान-तृप्तवान बली पात्र मुक्त किया अंजनेरी के स्थान। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: धूनी कुण्ड के बाहरी क्षेत्र ब्रह्मासन के बगल में भूमि के ऊपर रखे। (आकाश दिशा।)

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। आदिनाथ जी ने बलिपात्र थाप्या। ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे। ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे ९ करोड़ दुर्गा बैठी। नवमी पूजा आकाश क्षेत्र की इन्द्रदेव कोटवाल की कीजे। इन्द्रानी देवी भवानी बम माया भरपूर पाटन आकाश क्षेत्र की पूजा पाठ रचीजे। पीर

तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोटवाल, क्षेत्रपाल-राजा प्रजा यती सती समाचक्र, बाल गोपाल के विघ्न हरीजे जो बल मांगे सो बल दीजे । कण्टक मार खप्पर में लीजे दैत्य मार दानव मार, बल दीजे । इन्द्रानी देवी सहजा नन्दी माई ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर, सोमवन्ती बाल इन्द्रदेवा जीया लेता बाला तृण चरन्ता पानी पिवन्ता धरती मुख मुण्डेला हे देवी इन्द्रानी तेरे कारण पूजा रची मम दोष ना दीजिये । एक जीव रक्षन्ते एक जीव भक्षन्ते एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल एक जीव मारे पाप न पुण्य जा जा रे जीव तेरा इन्द्रपुरी में वासा । अनन्त कोट सिद्ध ने मिल भरे ग्रासा । इन्द्रदेवा बल भख बला भख पापी पाखण्डी को भख जती सती को रख कोटान कोट इन्द्रदेव इन्द्रानी तृप्तवान-तृप्तवान बलिपात्र मुक्त किया आकाश क्षेत्र के स्थान श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

अतः धूनी कुण्ड के बाहर दक्षिण दिशा में वेदी के बाहर भूमि पर रखे ।

सत नमो आदेश । ॐ गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ आदिनाथ जी ने बलिपात्र थाप्या ब्रह्मा विष्णु महेश बैठे । ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे ९ करोड़ दुर्गा बैठी दसवीं पूजा पाताल क्षेत्र की बासुकि नाग शेष कोटवाल जी की कीजे । नाग लीला नागनी देवी भवानी बम माया भरपूर पाटन में पाताल क्षेत्र पूजा पाठ रचीजे । पीर तदबीर, महन्त, कोठारी, भण्डारी, कोटवाल, क्षेत्रपाल, राजा प्रजा जती सती समाचक्र बाल गोपाल के विघ्न हरीजे । जो बल मांगे सो बल दीजे, कण्टक मार खप्पर में लीजे । दैत्य मार दानव मार, बल दीजे । नाग लीला नागनी देवी सहजा नन्दी माई, ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर सोमवन्ती बाल शेष वासुकि जीया लेता, बाला तृण चरन्ता पानी पिवन्ता धरती मुख मुण्डेला हे देवी नाग लीला नागनी तेरे कारण पूजा रची मम दोष न दीजिये । एक जीव रक्षन्ते, एक जीव भक्षन्ते एक जीव शून्य एक जीव स्थूल, एक जीव मारे पाप ना जा जा रे जीवा तेरा पाताल लोक में वासा, अनन्त कोट सिद्धों ने मिल भरे ग्रासा बासुकि शेष जी बल भख-बला भख पापी पाखण्डी को भख यती सती को रख, कोटन कोट बासुकि शेष नाग, लीला नागनी तृप्तवान-तृप्तवान । बलिपात्रा मुक्ता किया पाताल लोक क्षेत्र के स्थान । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

इस प्रकार बलि भोग सर्व दिशा में देने के बाद पुजारी (साधक) ने सभी दश–कोटवाल जी को नमस्कार तथा आदेश करे और भूमि पर थोड़ा जल छोड़े और निम्न मन्त्र पढ़े।

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ अलख निरन्जन तेरी माया जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात। और ॐ नमो दश कोतवाल नमो आदेश। यह बलिपात्र दान...(साधक का नाम) ....(गुरु जी का नाम)....(पंथ का नाम) ने अर्पण किया।

नवग्रह बलि विधि

पुजारी (साधक) ने इसी प्रकार से नवग्रहों को बलि एक ही तन्त्र से देवे। धूनी कुण्ड के पूर्व दिशा में नवग्रह की चौकी पर स्थापित किये हुए ९ ग्रहों का पूजन करे तथा निम्न मन्त्र पाठ करे।

सूर्य–ॐ ह्रां ह्रीं सः सुर्याय नमः। नमो आदेश।

ॐ भास्कराय विद्महे दिवाकराय धीमही तन्नो सूर्या प्रचोदयात।

चन्द्र–ॐ सौं सोमाय नमः नमो आदेश।

ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे अमृतत्वाय धीमही तन्नो चन्द्र प्रचोदयात।

मंगल–ॐ अं अंगारकाय नमः। नमो आदेश। ॐ अवन्तीका पुत्राय विद्महे अंगारकाय धीमही तन्नो मंगल प्रचोदयात।

बुध–ॐ बं बुधाय नमः। नमो आदेश। ॐ अत्रेय गोत्रेय विद्महे मंगध पुत्राय धीमही तन्नो बुधाय प्रचोदयात।

गुरु–ॐ बृं बृहस्पतये नमः। नमो आदेश। ॐ देवता मुनि गुरु विद्महे त्रिलोक्य गुरु धीमही तन्नो गुरु बृहस्पते प्रचोदयात।

शुक्र–ॐ शुं शुक्रायै नमः। नमो आदेश। ॐ भार्गव गोत्र विद्महे दैत्य गुरु धीमही तन्नो शुक्रायै प्रचोदयात।

शनि–ॐ शं शनैश्चराय नमः। नमो आदेश। ॐ रविपुत्र विद्महे कश्यपा धीमही तन्नो शनैश्वराय प्रचोदयात।

राहु–ॐ राँ राहवे नमः। नमो आदेश। ॐ अर्धकाय विद्महे पैठिन से धीमही तन्नो राहुवे प्रचोदयात।

केतु- ॐ कं केतवे नमः। नमो आदेश। ॐ तारका ग्रहो मस्तक विद्महे रौद्रात्मज धीमही तन्नो केतुवै प्रचोदयात।

इस प्रकार तंत्र मन्त्र तथा बीज गायत्री से सामुपचारे पूजन करे और बलिपात्र में धूप दीप दधि उड़द, चावल रखकर सिन्दूर, अष्टगंध हल्दी अक्षदा पुष्प इ० पूजन करें।

अतः निम्न मन्त्र पढ़कर बलिपात्र से बलि भोग धूनी कुण्ड के पूर्व में ग्रह वेदी के पास रखे।

९ ग्रह बलि पात्र मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ गगन मण्डल में बलि पात्र थाप्या। ७ वार २७ नक्षत्र बैठे, १२ राशि १५ तिथि बैठे। बैठे नवग्रह आसन मार, ३३ करोड़ देवी देवता अपने अपने ग्रहों पर सवार। ॐ पहली पूजा राजा सूरज की कीजे। ऋद्धि सिद्धि से भण्डार भरीजे। दूसरी पूजा सोम चन्द्रमा की कीजे, सोमरस, अमिरस पीजिये। तीसरी पूजा मंगलदेव की कीजे धन धान से भण्डार भरीजे। चौथी पूजा बुध ग्रह की कीजे कला शान्ति रस सुन्दर काया लीजे। पांचवी पूजा गुरुदेव की कीजे ज्ञान कुन्जी के ब्रह्माण्ड देखिये। छटी पूजा दैत्य गुरु शुक्र की कीजे, भूत प्रेत से अनभय होइजे। सप्तम पूजा शनिदेव की कीजे। वज्र हो शरीर यम फास से अमर होइजे। अष्टम पूजा राहु केतु की कीजे। सुख करे, दुःख हरे। नवमी पूजा ९ नाथ ८४ सिद्ध कीजे। दूध पूत से संसार भुरेके खीर खाण्ड से पात्र भरीजे। चले ९ नाथ ८४ सिद्ध पिशोर स्थान, ९ ग्रह बलिपात्र मुक्त कराया कन्जली के स्थान। बलि भख बलाय भख जती सती को रख पापी पाखण्डी को भख। प्रसन्न भये तृप्त भये आकाश मण्डल तृप्यन्ते-तृप्यन्ते। ॐ स्वाहा।

श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। इसके बाद नमस्कार और आदेश करें।

शक्ति बलि विधि

अतः पुजारी (साधक) ने धूनी वेदी पर स्थापित सब शक्ति देवी-कुल देवता, त्रि शक्ति एवं नव दुर्गा की और दस महाविद्या की पंचोपचारे (धूप, दीप, गंध, पुष्प नैवद्य) पूजन नमस्कार करे तथा आचमन, प्राणायाम करके

दाहिने हाथ में अक्षदा, पुष्प, द्रव्य लेकर शक्तियों को बलिदान करने का संकल्प करें।

ॐ आदि शक्ति महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती दस महाविद्या नाथ सिद्ध कुलदेवी, नवदुर्गा को नमो आदेश। हे शक्ति तुम कारण पूजा पाठ, हवन, बलिदान करीजे कारज हमारा पूरण करीजे श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: बलि पूजन के लिये कच्चा नारियल लेवे। छीलके निकालकर पूछ रखे, उसे लाल वस्त्र से लपेट कर धूनी वेदी पर स्थापन करे और गंध पुष्प इ० पंचोपचारे पूजन करें।

श्रीफल स्थापन जाप

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। पीर जी बोलत हैं एक ओंकार। जोगन मन में करे विचार। लाल वस्त्र में श्री फल लिपटया ऊपर अक्षद सिन्दूर बरसा। नीचे पर्वत ऊपर चिन्हा। कहे महादेव यह फल कहासे लाया। सुनो स्वामी जी कहे (जोगन) पार्वती। जोग माया की शक्ति प्रजाली, अहंकार विश्वामित्र ने सृष्टि बनाई। नारियल नर नारी रूप उपजाई। शून्य सृष्टि शून्य अहंकार तब ब्रह्माजी ने दिया वरदान। सुन बा पूता सृष्टि तेरी नर और नार, पूजा पाठ में नारियल तेरा बनेगा आधार। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अत: नारियल फल वेदी पर रखने के बाद निम्न मन्त्र का पाठ करे।

(चक्री) शक्ति बलिपात्र मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदिनाथ जी ने बलि पात्र थाप्या। ब्रह्मा, विष्णु, महेश बैठे, ९ नाथ ८४ सिद्ध बैठे, ९ करोड़ दुर्गा बैठी, त्रिशक्ति कुल स्वामिनी योगिनी बैठी। इति

ॐ पहली पूजा उत्तर की कीजे देवी शारदा नारदा सरस्वती ईश्वरी महामाई भर पात्र पाटन पूजा रखीजे सम्या चक्री पीर, तदवीर, मान महन्त, भण्डारी, कुठारी, बाल गोपाल कोटवाल, क्षेत्रपाल, राजा प्रजा का विघ्न हरीजे दाता दान पतीजे राजा प्रजा का उदर भरीजे जो बल मांगू सो बल दीजे कन्टक मार खप्पर में दीजे। उमा देवी सहजा नन्दी ऋद्ध सिद्ध पुगाओ, सम्या मध्ये

कौन रुप शिव शक्ति भई कौन रुप शिवपुर गई कौन रुप शिवशक्ति लागो पांव पूजा लो शिव शक्ति जी गुरु जी जीया जन्त पशुनाम धरती मुख मण्डते तुम कारण पूजा भई हो देवी पार्वती जी मुझको दोष न दीजे, एक जीव रक्षन्ते, एक जीव भक्षन्ते, एक जीव शून्य, एक जीव स्थूल एक जीव मारे पाप ना पुण्य जा जा जीया आकाश तेरा होय शिवपुरी में वासा अनन्त कोट सिद्ध मिल भरा ग्रास बल भख, जती सती को रख पापी पाखण्डी तेरा भख, खीरे खाण्डे मद्यमासे घृत कुण्डे सर्वंगधार बूंद मात्रेण कोट कोटान भैरवान भैरवी भैर्वांन तृपन्ते-तृपन्ते ॥१ ॥

दूसरी पूजा आकाश दिशा की कीजे । श्री गणेश गजकंथड़ नाथ, ऋद्धि सिद्धि देवी सरस्वती महामाई भर पात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२ ॥

तीसरी पूजा पूर्व दिशा की कीजे बंगाल देश महाकाली देवी, भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३ ॥

चौथी पूजा पश्चिम दिशा की कीजे द्वारका क्षेत्र महालक्ष्मी देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥४ ॥

पांचवी पूजा ब्रह्मलोक महा सरस्वती देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥५ ॥

छठी पूजा पूर्व दिशा की कीजे कामरु देश कामाक्षा देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥६ ॥

सप्तम पूजा अग्नेय दिशा की कीजे । काशी क्षेत्र अन्नपूर्णा माता देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥७ ॥

अष्टम पूजा दक्षिण दिशा की कीजे, तुलजापुर क्षेत्र तुलजा भवानी देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥८ ॥

नवम पूजा नैवृत्य दिशा की कीजे कंदली (सिंहलद्वीप) महामंगला पद्मिनी देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा रचीजे ॥९ ॥

दशम पूजा पश्चिम दिशा की कीजे, आशा देवी हिंगलाज माई भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१० ॥

ग्यारहवीं पूजा वायव्य दिशा की कीजे पुष्कर तीर्थ सावित्री देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥११ ॥

बारहवीं पूजा उत्तर दिशा की कीजे, गोमुख क्षेत्र गंगामाता देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१२ ॥

तेरहवीं पूजा ईशान्य दिशा की कीजे २१वें ब्रह्माण्ड पर महामनसा माता देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१३ ॥

चौदहवीं पूजा अग्नेय दिशा की कीजे सूर्य लोक माता होमियो देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१४ ॥

पन्द्रहवीं पूजा दक्षिण दिशा की कीजे पाताल लोक नाग पद्मिनी देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१५ ॥

सोलहवीं पूजा नैवृत्य दिशा की कीजे । पिशोर स्थान बिमला देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१६ ॥

सत्रहवीं पूजा पश्चिम दिशा की कीजे । उज्जैन क्षेत्र रानी मयनावती देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१७ ॥

अठारहवीं पूजा वायव्य दिशा की कीजे । स्यालकोट क्षेत्र तारा त्रिकुटा देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१८ ॥

उन्नीसवीं पूजा उत्तर दिशा की कीजे । ज्वालाजी क्षेत्र ज्वालामाई देवी भरपूर पाटन में बाल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥१९ ॥

बीसवीं पूजा ९ नाथ ८४ सिद्ध की कीजे । खिरे खाण्ड पात्र भरीजे देवी सरस्वती ईश्वरी महामाई भर पात्र पूजा रखीजे ॥२० ॥

इक्कीसवीं पूजा शैलपुत्री देवी की कीजे । कैलाश पर्वत पर गौरा पार्वती देवी सरस्वती महामाई भरपात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२१ ॥

बाईसवीं पूजा ब्रह्मचारिणी देवी की कीजे । ब्रह्म लोक में परब्रह्म परमात्म देवी सरस्वती महामाई भर पात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२२ ॥

तेईसवीं पूजा चन्द्रघण्टा देवी की कीजे । शिवलोक में पार्वती देवी सरस्वती महामाई भर पात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२३ ॥

चौबीसवीं पूजा कुष्माण्डा देवी की कीजे तीन लोक में कामक्षा देवी सरस्वती महामाई भर पात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२४ ॥

पच्चीसवीं पूजा स्कन्दमाता देवी की कीजे । कार्तिकेय लोक में चण्डीका देवी सरस्वती महामाई भर पात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२५ ॥

छब्बीसवीं पूजा कात्यायनी देवी की कीजे। कात्यायन देश में शाम्भवी देवी सरस्वती महामाई भर पात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२६ ॥

सत्ताईसवीं पूजा कालरात्रि देवी की कीजे। कैलाश धाम में रक्तबीज देवी सरस्वती ईश्वरी महामाई भर पात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२७ ॥

अट्ठाइसवीं पूजा महागौरी देवी की कीजे। ब्रह्मलोक में महाकाली देवी सरस्वती ईश्वरी महामाई भरपात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२८ ॥

उन्नतीसवीं पूजा सिद्धदात्री देवी की कीजे। नाथ घर (सिद्ध लोक) में ऋद्धि सिद्धिदात्री देवी की कीजे। नाथ घर (सिद्धलोक) में ऋद्धि सिद्धि देवी सरस्वती ईश्वरी महामाई भरपात्र पाटन पूजा रखीजे ॥२९ ॥

तीसवीं पूजा पूर्व दिशा की कीजे। बंगालदेश श्मशान क्षेत्र महाकाली देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३० ॥

इक्कत्तीसवीं पूजा आकाश दिशा की कीजे। ब्रह्माण्ड क्षेत्र तारा (त्रिकुटा) देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३१ ॥

बत्तीसवीं पूजा पूर्व दिशा मध्यान्ह समय की कीजे। ब्रह्मपुरी क्षेत्र त्रिपुर सुन्दरी (षोडशी) देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३२ ॥

तैंतीसवीं पूजा पूर्व दिशा प्रातः समय की कीजे। चौदह भुवन क्षेत्र भुवनेश्वरी देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३३ ॥

चौंत्तीसवीं पूजा दक्षिण दिशा की कीजे श्मशान क्षेत्र छिन्नमस्ता देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३४ ॥

पैंतीसवीं पूजा पाताल दिशा की कीजे, सातवें पाताल भैरवी देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३५ ॥

छत्तीसवीं पूजा आकाश दिशा की कीजे। श्मशान क्षेत्र धूमावती देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३६ ॥

सैंत्तीसवीं पूजा दक्षिण दिशा की कीजे, समुन्दर टापू बगला मुखी देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा रचीजे ॥३७ ॥

अड़त्तीसवीं पूजा सुभय धाम की कीजे श्मशान क्षेत्र मातंगी देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३८ ॥

उन्नतालिसवीं पूजा उत्तर दिशा की कीजे । कैलाश क्षेत्र मानस सरोवर कमला देवी भरपूर पाटन में काल भैरव की पूजा पाठ रचीजे ॥३९ ॥

इतना चक्री शक्ति बलिपात्र मुक्त कराया । कन्जली के स्थान । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

अतः साधक ने (कच्चा) नारियल के ऊपर जल छिडके और "आँ हुं फट् स्वाहा" यह कहकर विरासन मुद्रा में बैठकर ॐ काली काली महाकाली, भैरव भैरवी तृप्तवान बलिपात्र मुक्ता कराया कन्जली स्थान । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

यह कहकर नारियल दाहिने हाथ से धरती के ऊपर पटककर फोड़ दे । (नारियल का मुंह-आँखे वाला भाग धूनी वेदी की तरफ और पूंछ अपनी ओर करे ।)

अतः बलि का एक हिस्सा सब देवियों को अर्पण करें और एक हिस्सा, क्षेत्रपाल-भैरव, कोतवाल को अर्पण करे या पशु पंछी कीड़ा मकोड़ा को देवें ।

इति चक्री शक्ति बलिपात्र सम्पूर्ण भया ।

क्षेत्रपाल बलिपात्र

अतः साधक ने अष्ठ भैरव क्षेत्रपालों का बलिपात्र तैयार करे । बास की बनी डालिया हरी पत्तल पर कुशा बिछाकर उस पर एक व्यक्ति का भोजन से २ गुना या ४ गुना या मुख्यता ८ गुना यथाशक्ति उड़द (साबूत काले वाले) चावल (भात) में दही मिलावे तथा कसोरे में जल रखें अब आटे का चार दिशा का चार मुखवाला दीपक बनावे और चार बाती (बत्ती) तथा सरसों का तेल डालकर उसे जलाकर उस पात्र के ऊपर रखे । उस पर सिन्दूर रौली, हल्दी तथा लाल पुष्प युक्त बलिपात्र तैयार करें । अतः अष्ठ भैरव-क्षेत्रपालों का नाम लेकर पूजन तथा नमस्कार करें और दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़े ।

अष्ट भैरो मन्त्र जाप

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ भैरो भैरो आओ भैरो डगर भैरो सहस्त्र मना की माला फेरु फेर फेर कर किया तलाशु चढ़े बंग तेल, मस्तक पर सिन्दूर लाल, गल पुष्प माला, काली का पूता रहे सदा मतवाला

संकट पड़े रक्षा करे तुम हो क्षेत्रपाला। प्रथम पूजा अलील की कीजे सुधबुध भैरो क्षेत्रपाल की कीजे दूसरी पूजा महादेव की कीजे महादेव भैरव क्षेत्रपाल की कीजे। तीसरी पूजा मत्स्येन्द्रनाथ जी की कीजे, मत्स्येन्द्र भैरव क्षेत्रपाल की कीजे, चौथी पूजा चौरंगीनाथ की कीजे चौरंगी भैरव क्षेत्रपाल की कीजे, पांचवी पूजा सतनाथ जी की कीजे। ब्रह्माजी भैरव क्षेत्रपाल की कीजे। छटी पूजा सन्तोषनाथ जी की कीजे विष्णु जी भैरो क्षेत्रपाल की कीजे। सातवीं पूजा शेष नाग की कीजे। बासुकि भैरो क्षेत्रपाल की कीजे। अष्टम पूजा शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की कीजे। गोरक्ष भैरो क्षेत्रपाल की कीजे। श्री भैरव, भैरवी नाथ जी पूजा तेरे कारण रचीजे। कारज हमारा पूरा करीजे। कोटान कोट भैरो भैरवी तृप्यन्ते, तृप्यन्ते। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इस मन्त्र से पूजन करें और हाथ में जल लेकर धरती पर छोड़े। अत: बलि पात्र साधक के मस्तक स्पर्श कराकर लेवे और निम्न मन्त्र से अपने ग्राम के चौराहे पर (जहां चार रास्ते फूटते हैं) वह रख देवे।

भैरो बिलपात्रा मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ काल भैरो, लाल भैरो, घोर भैरो, अघोर भैरो, जल थल में बाल भैरो, भैरो फिरे श्मशान में चंगा, भय करें निर्भय फिरे नवखण्डा की चौक पूरे। उत्तर दिशा से जोगन आवे, काली चण्डी खप्पर भरे। दस दिशा का चौक बान्धू चेतली काली रात बान्धू श्मशान बान्ध चेतला दिन में बीज बान्धू धरती डुबाया भूत पलित बान्धू जले बले काल जंजाल बान्धू–छल चले–बल चले काली दन्त का खडांग चले भैरो बली के आगे धरे। भैरोनाथ की माया चले आद युगादि त्रिकाल भैरो कदली काल देश में आवागमन। भैरो नाथ जी काशी वार्ता बनारस थम्भ क्षेत्रपाल, सदा रहे हम पर कृपाल। लो भैरव पूजा जोत पाट बलिपात्रा। जहां सिमरु तथा भैरो हाजिर हजूर खड़ा। आओ सिद्धों भैरोनाथ जी की पूजा ना मिटे जोगी मेटे ज्ञान ध्यान से जाय। प्रजा मेटे खाया पीया व्यर्थ जाये। राजा मेटे राज पाट से जाय। इतना बलिपात्रा मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अत: बलिपात्रा चौराहे पर रखकर वापसी होये। पीछे बिना देखे अपने द्वार में जल से हाथ पैर मुख धो लेंगे।

गुरु गोरक्षनाथ जी का भोग बलिपात्र

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के भोग बलि पात्र के प्रति रोट का भोग लगाया जाता है तथा नाभि (नाड़ी) काटकर रोट भोग (बलिपात्र) चढ़ाया जाता है। श्री नाथ जी का दो प्रकार का रोट बनता है एक कच्चा रोट तथा पक्का रोट कच्चा रोट मीठा डाले आटे की टिक्कड़ (मोटी रोटी) बनाकर तवे के ऊपर या अंगार में भून लेते हैं। फिर घी में तलकर वही रोट तथा गौ का कच्चा दूध चढ़ाया जाता है।

अत: पक्का रोट की विधि इस प्रकार है—

पक्कारोट— प्रथम १ किलो या अपेक्षित मात्रा में आटा (गेहूं का) लेवे आटे को अच्छी तरह से भूनकर हाथ की मुट्ठी से आटे के गोले बनवाकर गौघृत में लाल रंग होने तक अच्छी तरह से तल लेवे। फिर बड़े गुलदस्ता में बारीक कूट लेवे छाने फिर कूटे फिर छाने। इस प्रकार पूर्ण बारीक पावडर बनावे। फिर उसी प्रमाण में योग्य मात्रायें- बादाम, काजू, पिस्ते, काली मिर्च लवंग इलायची, किसमिस तथा मेवा गोला, खोबरा इ० गुलदस्ते में कूटकर तथा बारीक पीसकर उसे आटे में (कूटा हुआ) मिलाया जाता है। फिर बराबर का (गोले तलकर बचा हुआ) घी मिलाकर तथा बराबर का मीठा (बूरा) डालकर उसे पूर्ण रुप से मिश्रित (हाथ से) करते हैं। यह रोट शक्य तो रात को बनाते हैं। ताकि सुबह भोग लग सके। इस प्रकार पक्का रोट बनने के पश्चात उसे रोट में से एक पात्र में (थाली में) अलगसा रोट भरके ऊपर से दबाव देते हैं तथा उसके बीचोंबीच भण्डारी अपने नादि से दबाकर छोटा गड्डा सा जिसे रोट की नाभी कहते हैं। यह बनाके थाली के ऊपर सफेद वस्त्र से ढक देते हैं। दूसरे दिन सुबह गौ का कच्चा दूध तथा पक्का रोट को भोग लगाते हैं।

भोग लगाना तथा रोट काटकर भोग मुक्ता करना इसका विधि भण्डार कर्म में दिया है जिस प्रकार कच्चा रोट का भोग लगता है। उसी प्रकार पक्का रोट का भी भोग लगाते हैं। नाथ योगेश्वरों को यह रोट बहुत प्रिय है। भोग के पश्चात इसे सबमें बांटा जाता है।

अत: साधक ने (पुजारी) यह पक्का रोट का भोग उसी मन्त्र द्वारा करे जो की भण्डार कर्म में वर्णित है। कच्चा रोट मुख्यता भैरो को लगाते हैं तथा पक्का रोट गुरु गोरक्षनाथ जी को ही लगाते हैं। अत: निम्न मन्त्रों द्वारा भोग बलि पात्र देवे।

रोट को गोदी देने का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं० २०३ पर देखें)

तथा नाभि (नाड़) काटकर रोट को मुक्त किया जाता है।

रोट का मुक्ता का मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं० २०४ पर देखें)

अत: नाद पूजा करे तथा श्री नाथ जी को रोट भोग (बलिपात्र) स्वीकार करने को प्रार्थना करे।

तदपश्चात यह रोट सभी योगेश्वर, भगत इ० को समान रुप से बांट देवे।

इतना रोट (बलिपात्र) विधि सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

धूनी पूर्णाहूतिः

अत: साधक (पुजारी) ने एक नारियल (गीला छीलके वाला नर जातिका) लेकर उसे लाल वस्त्र में लपेटकर ८ बार या २१ बार स्रुवा से घी डालकर षोडशोपचार पूजन करें और निम्न मन्त्र श्लोक कहकर धूनी पूर्णाहूति करें।

गोरक्ष गायत्री

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं० ७ पर देखें)

इस प्रकार नारियल फल का हवन कर देवें। तदन्तर बचे हुए हवनीय सामग्री तथा बचे हुए घी हवन में त्याग करे।

सम्पुष्टी भस्म स्नान

पुजारी (साधक) ने धूनी कुण्ड की प्रदक्षणा करे और नाद पूजा (आदेश) पूर्वाभीमुख होकर करे। तदनन्तर धूनी कुण्ड में से भभूत पात्र में भस्म निकाले औरअपने मस्तक के ऊपर, कंठ स्थान पर (गले पर) दोनों कर्ण के दर्शन तथा

दोनों बाहों पर और दोनों हथेली तथा हृदय स्थान के ऊपर दाहिने हाथ से त्रिपुण्ड भस्म लगावे साथ-साथ भभूत धारण करने का मन्त्र पढ़े।

विभूति मन्त्र

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं० १६१ पर देखें)

इस प्रकार १२ पीर जी महन्त जी कोठारी भण्डारी पंख तथा सभी योगेश्वरों के भस्म धारण करने के लिये प्रार्थना करे।

मान पात्र दान

अत: पुजारी (साधक) ने धूनी के उत्तर दिशा में रखे हुए मान पात्र का दान करे। इस पात्र में जो भी दक्षणा, सोना, चाँदी, ताम्र, हीरे, मोती, मानिक इ० मान स्वरुप दान करे यह दान १२ पंथों के पीर जी जो कि धूनी पूजन हवन में सम्मिलित होकर शोभा बढ़ाई है। उन्हीं को दान करे। मुख्यता सतनाथ ब्रह्म के पीर जी को विशेष रुप से या दुगुना मात्रा में दान करे। प्रथम मान दान का जल हाथ में लेकर धरती के ऊपर छोड़कर संकल्प करे।

संकल्प मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सतगुरु (............) (अपने गुरु जी का नाम) के हम शिष्य हैं......नाथ (अपना नाम) हमारा नाम। धूनी पानी के पूजन कारण १२ पीर जी को दिया मान। महन्त कोठारी पंख भण्डारी और सभी को दिया दान। मान हमारा लीजिये दान हमारा लीजिये। कारज हमारा पूरा कीजिये। शबद सच्चा उपदेश दीजिये। पीर जी महन्त कोठारी भण्डारी पंख सभी को आदेश। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इस प्रकार संकल्प करके धरती के ऊपर जल छोड़े और मान दान की दक्षणा तथा सोना चांदी, रत्न इ० को १२ पीर जी को बाट दीजिए। इतर महन्त कोठारी भण्डारी पंख आदि सभी को मान देकर यथा शक्ति दान देकर सम्मानित करे और नमस्कार तथा आदेश करके आशीर्वाद लीजे।

अत: पूजा स्थल के आचार्य या महन्त हो या अपने सतगुरु हो या मान्यवर अधिकारी सभापति-उप सभापति तथा मन्त्रीजी इनको सभी को अपने-अपने

अधिकार अनुरुप श्रीफल, दक्षणा वस्त्र देकर सम्मानित करे तथा मस्तक पर सबको टीका लगावे सभी को पुष्प माला गले में डालकर सबको प्रसन्न करे।

अतः धूनी पूजन हवन सम्पूर्ण कर्म समाप्त के बाद अपने-अपने यथाशक्ति से सबको भोजन दक्षणा (बिदाई) देवे। इसे नाथ सिद्धों का भण्डारा कहते हैं।

भोजन भण्डारा संकल्प मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ अन्नपूर्णा अन्नदान, अन्न सर्वे भस्मीभूत, श्री महादेव पार्वती दोनों अवधूत जिसका जुन उसी का पुन जोगी अवधूत न्यारे रहे। पाप ना पुण्य, अन्न खाये पीये अलील भोग लगे राजी रहे कोठारी भण्डारी पीर महन्त, खुशी रहे सब नगर खेडे के लोग। कहे महादेव सुन पार्वती अन्नदाता सदा सुखी वस्त्र दाता कमलापति, धातु का दानी भवपती सुखी दे सन्तोषी खाय उसकी वासना तीन लोक में जाये। गुरु शबद से भोजन दीजे। जिसकी रक्षा गुरु गोरक्षनाथ करे। इतना संकल्प सम्पूर्ण भया श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

यह कहकर धरती पर जल छोड़े।

रुद्राभिषेक

प्रथम पुजारी (साधक ने) गंगा जल लेकर जो शंख में हो, या अगर पात्र में हो तो बिल्व पत्र से या पुष्प से सभी पीर महन्त कोठारी भण्डारी अन्य भक्त गणों पर जल सिंचन करे तथा साथ में जल गायत्री कहे और स्वयं ऊपर जल छिड़ककर शुद्ध एवं पवित्र कर लेवे।

जल गायत्री

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं० १७५ पर देखें)

जल सिंचन पश्चात सभी कलश के जल एक ताँबा या कांस्य पात्र में लेवे और उसमें गौ का दूध आधी मात्रा में मिलाकर बिल्व पत्र या पुष्प लेवे और जल में डुबाकर गुरु गोरक्षनाथ जी की मूर्ति के ऊपर छिड़के या जल सिन्चन करे तथा अलील गायत्री मन्त्र का पठन करे।

अलील गायत्री

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं० १७६ पर देखें)

अत: पुजारी (साधक) ने गुरु गोरक्षनाथ जी मस्तक पर ११ रुद्राक्ष की माला गोल गोल करके रखे तथा गले मे रुद्राक्ष की माला डाले (रुद्राक्ष १ मुखी तथा २ या ११ मुखी या निर्मुखी होवे तो उत्तम) और ऊपर पात्र (झरणी) लगावे जिसके नीचे छेद रहे अत: पात्र में रुद्र कलशों का जल तथा गौ दूध चन्दन + काले तिल + इत्तर (गुलाब जल) मिश्रण डाले और छेद द्वारा दूध मिश्रित जल बूंद–बूंद मूर्ति के मस्तक पर रखे हुए रुद्राक्ष के ऊपर गिरे। तब शिव रुद्र गायत्री का पाठ मुख से ऊंची आवाज में उच्चारण करे। अत: यह जल शिंगी से डालना विशेष अभिषेक होता है।

शिव रुद्र गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। अलख निरन्जन निराकर, अविगत पुरुष तत सार, तत्वसार मध्ये ज्योति–ज्योति मध्ये परम ज्योति–परम ज्योति मध्ये उत्पन्न भई। शिव रुद्र गायत्री विशूनि विश्वमूर्ति पाताले ग्रहणी चतुर्थे वेद मुखी, दाहिनी नासिका गंगा–जमना सरस्वती त्रिकुटी देवता देखे चन्द्रमा आद ललाट नक्षत्र पुष्पमाला अठारह भार वनस्पति सेली सिंगी मीन मेखलाधारी हृदय तैंतीस करोड़ देवता कुक्षौ सप्त सागरा रोमावलिते चार खानी चार बानी चन्द्र सूर्य पवन पानी–धरती आकाश पंचतत्व पिण्ड प्राण ले किया प्रकाश। शून्य निरालंब दिशा निवास जती निरालंब जी के चरण कमल को नमस्कार नमाहम। लक्ष चौरासी जिया जून यह मन्त्र घोर मन्त्र क्षीर मन्त्र–बीज मन्त्र अभय जाप जपन्ते, अगम जाप जपन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। ॐ शिव गोरक्षाय नमो नम:।

प्रात: काल से उत्पन्न माता शम्भू शिव गायत्री जटाजुट मुकुट त्रिशूल धारिनी नाद मुद्रा विभूति धारनी रक्त वर्णी वृषभ वाहनी रुद्र देवता की पोषणी ऋद्धि सिद्धि वरदायिनी, सो योगी मोक्ष मुक्त फल दायकम शिवम रुद्रा नमो नम:।

मध्ये काल उत्पन्न भई माता शम्भू शिव गायत्री दण्ड कमण्डल पुस्तक कर धारिनी, स्वेत वर्णी हंस वाहिणी ब्रह्मदेवता की पोषणी ऋद्धि सिद्धि

वरदायिनी। सो योगी नाम मोक्ष मुक्त फल दायकम शिवम रुद्रा नमो नमः।

संध्याकाल उत्पन्न भई माता शम्भू शिव गायत्री शंख-चक्र पदम-धारणी श्याम वर्णी गरुड़ वाहिनी विष्णु देवता की पोषणी ऋद्धि सिद्धि वरदायिनी सो योगी नाम मोक्ष मुक्त फल दायकम शिवोम रुद्राः नमो नमः।

इतना शिव रुद्र गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः साधक ने ऊपर पात्र में त्रिवेणी संगम का जल या समुद्र जल अर्थात इलाहाबाद संगम और गंगासागर का जल होवे तो डाले तथा ११ कमल पुष्प या धतूरा पुष्प यह ना मिले तो ११ बिल्व पत्र लेकर निम्न गोरक्ष कुण्डली पढ़कर एक-एक पुष्प या बिल्वपत्र चढ़ावे अर्थात जल अभिषेक चालू ही रखें।

गोरक्ष कुण्डली

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। प्रथम बोलिये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी, देव विष्णु देव, महेश्वर देव, ब्रह्मदेव, शक्तिदेव, आकाशे पाताले शेष अनन्त कोटि सिद्धों पर कर लो आदेश। (प्रथम पुष्प चढ़ाये)

आरती दर्शन नाम तुम्हारे-आप तरे जगत को तारे ज्ञान खडग ले काल को संहारे-जब हाक पै डंका बजावे खेचरी भूचरी देव और दानव मारे। कार के मारे गोरक्ष जपे अनघड़ काया सोलह कला सम्पूर्ण माला-घट पिण्ड की रक्षा करे-श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। (द्वितीय पुष्प चढ़ाये)

अमरी घो घो पीओ खीर अमर हो देही वज्र हो शरीर। ॐ गुरु जी मीन राय को कर लो आदेश। गौरी शंकर को कर लो आदेश। (तृतीय पुष्प चढ़ाये)

पश्चिम देश देवी उमा आई देखन लक्षन आगे पाछे देवी खेले आगे बैठी मीन मत्स्येन्द्र गोरक्ष योगी। जब देवी ने किया आदेश। नहीं लिया आदेश। नहीं दिया उपदेश। क्रोध देवी हृदय में उत्पन्न देखु गोरख तेरे मना-खंजर बांधू हृदय को गयी। नाथ निरन्जन सही कर लाई। नवमे द्वार ताली लाई-दसवें द्वार अग्नि प्रजाली। जलने लगी तब खडी पछताई। (चतुर्थ पुष्प चढ़ाये)

राख-राख हो श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथ जी राख तुम्हारी हुंगी चेली जगत की हूंगी माई। माई कहे तां भोचर सा-तन का कपट हार श्रृंगार गहू। (पंचम पुष्प चढ़ाये)

ॐ शिव शंकर स्वामी जी। तुम्हारा कौन सा विचार है। हम कुछ नहीं जाने देवी जी। अपना गढ़ा आप ही जानो-ईश्वर गौरा दोनों मिला करे। हाटी ईश्वर गये सातवे पाताल वाले गोरक्ष का अनन्त अपार-काया न माया न छाया कलि विच कहा है। हे देवी जी ! हमको गुरु मुख दिया। तुमको ब्रह्मामुख दिया। (प्रष्टम पुष्प चढ़ावे।)

अनन्त कोटिं सिद्धों में दण्ड कमण्डल मीन आप ही छू गुरुमुखी चिन्ह। घटो-घटो गोरक्षकाचे-काचे कूवे भरे न पानी घटो-घटो गोरक्ष जागन्ता पाप के पहिरे सोवन्ता, धर्म के पहिरे जागन्ता घटो-घटो गोरक्ष भये उदास। (सप्तम पुष्प चढ़ाये)।

पण्डित के हम गुरु मूर्ख के हम दास। घटो-घटो गोरक्ष योग पुकारे, अमर धन कोई विरला ही जाने। इन देव अलील गुफा आये, सूर्य सरीखा तपी नाही चन्द्र सरीखा शीतल नाही। (अष्टम पुष्प चढ़ाये)

इन्द्र राजा बरसन्ते धरती माता सुफल फलन्ते शिव दर्शनी योगी नित्य उठ ध्यान धरन्ते। (नवम पुष्प चढ़ाये)

पदम शिला पर बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी। दुष्ट को मुष्ट को जादू को टोना को मढ़ी को-मसान को-भूत को-प्रेत को बांध-बांध जल्दी जल्दी बांध, रोम-रोम में बांध बाल-बाल में बांध नवनाड़ी बहात्तर कोठा में बांध भस्म-भस्म कर डाल। (दसवें पुष्प चढ़ाये)

नही बान्धे तो माता की दूध की धार हराम। गंगा माता की धार हराम, बरसे गगन की धारा हराम दसवे द्वार में सिद्ध विराम। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। (ग्यारहवें पुष्प चढ़ाइये)

तद उपरान्त गोरक्ष पन्चमात्रा पढ़कर पंचोपचारे पूजन करे।

गोरक्ष पन्चमात्रा

(यह मन्त्र प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं० २२६ पर देखें)

छाया दान

साधक (पुजारी), कांस्य पात्र, सुवर्ण पात्र, चाँदी, ताँबा इ० धातु पात्र अगर उपलब्ध नहीं होये तो मृतिका पात्र में गौघृत (पिघला हुआ) भर लेवे उसे चौकी पर वस्त्र डालकर रख देवे । पंचोपचारे पूजन करे तथा यथाशक्ति दक्षणा रखे । अत: उस पात्र में अपने मुंह (चेहरा) की छाया देखे और सतनाथ ब्रह्मा के पीर जी को दान कर देवे । अर्थात दान कर्म में अपने छाया तक सब कुछ यथार्थ दान करे । अगर सतनाथी ब्रह्मा जी के पीर जी नहीं होंगे तो अपने सतगुरु जी को यह छाया पात्र से छाया दान करे अगर सतगुरु जी नहीं होंगे तो गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर में गुरु गोरक्षनाथ जी को यह छाया दान करे तथा निम्न मन्त्र का पाठन करे ।

छाया मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । ॐ गगन मण्डल पर ब्रह्माण्ड छाया, सप्त पाताल धरती बिछाया । अलील पुरुष-मनसा छाया पृथ्वी पात्र बहु वडीयारा, उपजी सृष्टि शिव-शक्ति की माया । ॐ शिव ने देख्या शक्ति की छाया, नील कण्ठ में नील धारा । नारायण देख्या शेष की छाया, बासुकि कासु क सागर समाया । ब्रह्मा जी पठिया वेद की छाया, उड़ता हंस (मन) पवन की माया । रुद्र ने देख्या रुद्री की छाया, घोर अघोर घोर की छाया । काली ने देख्या काली छाया, काल कंटक काल को मारा । चंडी ने देख्या दैत्य की छाया, भूत प्रेत दानव मारा । भैरो देख्या खप्पर में छाया, मढ़ी मसान में मुर्दा फाड़या । हनुमन्त देख्या सिन्दूर की छाया । सीता सिन्दूर राम की छाया । इन्द्र के वज्र में वरुण उपाया जोगी देख्या जोग की छाया, जीव पिण्ड में शिव समाया । ज्वाला ने जाल्या, बला को दबाया, रक्षा करे जती सती की गोरख बाला । कहे गोरख सुन बा अवधू जोगी ने त्यागा संसार भूत पर ना त्यागा छाया ना रुप । छाया ना मरे ना मेटे, छाया बीन योगी ना रहे । जागे योगी जागे छाया, सोया योगी सोई छाया । चल्याने चले भागे छाया ।

छाया आगे-पाछे कभी ना छोड़े। योगी योग कर छाया समान, गुरु क्या चेला दोनों छाया प्रमाण। ॐ गुरु जी सतगुरु मिलिया शबद की छाया, जोगी रम्या सतगुरु की छाया। अनन्त कोट सिद्ध ने योग लिया, ज्योति स्वरुप मध्ये गुरु गोरक्ष बाला। गोरख कहे अलख निर्वाण जीव शिव छाया का भया प्रणाम। मन्त्र पढ़ छाया दान करे वो नर पाप-पुण्य से न्यारा रहे। बिना मन्त्र छाया दान करे। कुम्भी पाक में सदा रहे। इतना छाया पात्र दान मन्त्र सम्पूर्ण भया।

श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

तदन्तर योग्यतानुरुप आदेश करें और दान दे के दक्षणा देवें।

अतः साधक ने गोरक्षनाथ जी पूजन धूना विधि में कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों को दक्षणा दान वस्त्र बक्षिसी देने का संकल्प करे।

तदपश्चात अपनी यथा शक्ति महात्माओं को गौ का दान कर सकते हैं।

अतः अन्त में सभी आवाहित देवताओं की प्रार्थना करे तथा लाल पुष्प और अक्षदा (डालकर) छिड़कते हुए विसर्जन करे और गंगाजल भूमि पर छोड़ दें।

विसर्जन जाप

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सतगुरु जी ने हुकम फरमाया, पूजा पाटन पूरण होयबा। देवी देवत्या को मान देईबा। सुख उपज्या सुफल होयबा, अपनी अपनी धाम को चलीबा शिव-शिवानी वृषभ वाहिनी, कैलाश धाम चलबा संगिनी। विष्णु के संग कमला रानी चलीबा अपने गरुड़ सवारी। ॐ ब्रह्माजी साथ ब्रह्माणी चलीबा अपने हंस उड़ानी। ऋद्धि सिद्धि को गणेश सिधारे, गण और धन को साथ सिधारें।

ॐ गुरु जी जती गोरखनाथ जी दिया उपदेश, पवन धाम में लिया विश्राम। ज्योत में ज्योति मिल्याया सन्तोष राजी खुशी का दिया आदेश। नवदुर्गा संग अनन्त जोगन, घरा को धारे साज श्रृंगार। नवग्रह, नक्षत्र अनन्त तारे, चालीबा अपने आकाश मण्डले। अनन्त करोड़ नवनाथ चले रमते राम सुमिर को धारे।

ॐ अलख पुरुष ने हुकम चलाया धूनी पानी का एकमता पुकारा-उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम पाताल की अग्नि सन्तोषी खाय, ना जले धरती ना जले आकाश प्रचण्ड धूनी ब्रह्मलोक में जाय।

भैरवनाथ जी हाक पुकारे क्षेत्रपाल कोटवाल चले सिधारे। ॐ गुरु जी कोई चलीबा गुरु स्थान कोई स्वर्ग सिधार, कोई चलिबा देव, देवल कोई, मठ मशान घाट, आकाश लोक पाताल लोक अनन्त माया, अनन्त कोट, साध सन्त ने दिया सन्तोष, सिद्धों जोगी को नमो आदेश। सन्यासी को नमो नारायण पीर फकीर वाले को सलाम। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

इतना देवता विसर्जन मन्त्र जाप समाप्त श्री जती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। आदेश।

अतः साधक (पुजारी) सबको आदेश करे और मानपात्र दान दक्षणा दान तथा हो सके तो गौ दान और सभी को मिष्ठान भोजन दान इत्यादि सब संकल्प अनुसार विधि करे और विदाई देवे।

भोजन भण्डार भव्य करे। वस्त्र सुवर्ण चाँदी इ० धातु दान भरपूर करे। सन्त महात्माओं की संतुष्टि ही आशीर्वाद तथा शुभ लाभ होता है। अनन्त नाथ महात्मा ना मिले तो नौ नाथ स्वरुप ९ नाथ महात्माओं को भोजन देवे। अगर ९ महात्मा ना मिले तो अपने सतगुरु जी को अर्पन करे। अगर कोई भी महात्मा नहीं मिले तो ब्राह्मण भोजन देवे तथा गौ को भोजन देवे। तदन्तर भक्तजनों को मान पान भोज देवे और इस प्रकार श्री गुरु गोरक्षनाथ पूजन विधि तथा धूनी पूजन हवन विधि विधान का समापन करे।

अतः श्री नाथ जी के नित्यकर्म क्रियाओं का बाकी विवेचन करते हैं।

* * *

योग निद्रा विधि नियम

शाम को आरती पाठ तथा अल्पाहार के पश्चात गुरुजनों के साथ ज्ञान चर्चा करते हैं। तदन्तर योगेश्वर रात को ११ बजे वा १२ बजे तक अपने आसनस्थ लोट पोट (विश्राम) करते है। बहुतांशी शिष्य लोक अपने सतगुरु जी की सतगुरु जी निद्रास्थ (इसे योग निद्रा कहते हैं) होने तक गुरु चरण को श्रद्धा से दबाते हैं।

नाथ योगेश्वर (लोटपोट) सोते समय कुछ मन्त्र बोलते है। कुछ योगेश्वर गुरु मन्त्र स्मरण करके सोते हैं। कुछ योगेश्वर अपने आराध्य देव का नाम स्मरण करके सोते हैं। तो कोई योगेश्वर शवासन लगा के योग करते हुए योग निद्रा में जाते है तथा निम्न मन्त्र स्मरण करते हैं।

निद्रा मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। लोटपोट श्री नाथ जी की ओट, पवन की मढ़ी वज्र का कोट। धरती करु बिछावना अम्बर करु गलेफ सौवैं राजा भरतरी रक्षा करे अलेख। नौ नाथ चौरासी सिद्ध की ओट गही जब सोऊ। तीन लोक में योगी को फाका फिकर न कोऊ। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

सोते समय का मन्त्र (छोटा)

सत नमो आदेश। गुरु जी का आदेश। ॐ गुरु जी। नौ नाथ सिद्धों का अनन्त कोट, चौरासी, सिद्ध की ओट। अनन्त करोड़ सिद्धांका मेला घट पिण्ड का गुरु गोरक्षनाथ जी रखवाला। धरती आकाश को आदेश। पावन पवन वज्र को आदेश। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

कुछ योगेश्वर निम्न मन्त्र पाठ करते-करते योग त्रिद्रा में जाते हैं।

निद्रा मन्त्र पाठ (सम्पुष्ट)

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ जल में रमते रक्षा करे मत्स्येन्द्र। स्थल में रमते रक्षा करे भूचर देव। वन में रमता चले सो

रक्षा करे चौरंगीनाथ। निद्रा में रमे योगी तो रक्षा करे भैरवनाथ का कोट। सर्वत्र रमता राम की रक्षा करे जती गोरक्ष। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

यह निद्रा पाठ विशेषत: भ्रमन करने वाले योगेश्वर अपने विश्रान्त या पड़ाव पर या किसी मन्दिर में या किसी वृक्ष के नीचे सोते हुए स्मरण करते हैं। इस प्रकार मन्त्रों द्वारा पाठ स्मरण से हृदयस्त ध्यान करते हैं। अपने श्वासों की हं—सं० शब्द की अनुभूति सुनते—सुनते निद्रा में रमते हैं।

अत: निद्रा के भी योगेश्वरों के नियम होते हैं। गुरु गोरक्षनाथ जी अपने शब्दी में कहते हैं कि

शबदी— लोटिबा पोटिबा सोईबा नाही। खाईवा पियबा धापिबा नाही।
चलिबा फिरिबा धाकिबा नाही। देखिबा भालिबा भूलिबा नाही।

नियम

(१) योगेश्वरों को सोने का आसन कम से कम होता है। (एक कम्बल तथा ओढ़ने के लिये चादर।)

(२) चारपाई खटीया निषेद्ध तथा त्यागी तपस्वी ब्रह्मचारी के लिये गद्दा, बिस्तरा ऊन तथा नरम—नरम आसन पर नहीं सोते।

(३) योगी लोग पाँव पर पाँव रखकर या पाँव पसार कर सोना निषेद्ध है तथा बुरा मानते हैं।

(४) योगी लोग शक्यतो दाहिने करवट सोते हैं।

(५) सोते समय असभ्य वर्तन तथा असभ्य भाषण चर्चा करना निषेद्ध है।

(६) योगेश्वर एक अकेले तथा एकान्त में योग निद्रा लेते हैं।

(७) सोते समय मन्त्र स्मरण, गुरु मन्त्र स्मरण, गुरु स्मरण, आराध्य देव या उनका मन्त्र स्मरण करना इ० अत्यन्त आवश्यक है।

(८) कुछ योगेश्वर दिन में निद्रा पूरी करके रात्रि में एकान्त में अपनी योग क्रियायें करते हैं। कहते हैं दिन में सोना राती को खोना।

९. कोई योगेश्वर सोने से पूर्व अपने दिनचर्या का आत्म चिन्तन करके इष्ट की या सद्‌गुरु को प्रार्थना करते हैं। मुझे सद् विचार और सद्‌गती देना।

१०. कोई योगेश्वर सोने से पूर्व अपनी दिनचर्या का तथा अपने अनुभवों का लेखन करते हैं।

११. रमते योगेश्वर विषेशत: तपस्वी (त्यागी) महात्मा रात्री वृक्ष के नीचे नहीं सोते तो वह अपने नाथ योगी के मठ मन्दिरों में मुक़ाम करते हैं।

(अत: ध्यान साधना पीपल वटवृक्ष, गुलर का पेड़, औदुम्बर के नीचे कुशासन लगाकर कर सकते हैं। जो की वह सक्षम साधना करने वाले हो)

१२. सोने से पूर्व मल मूत्र त्याग कर वातावरण के अनुकूल ठंडे गरम जल से हाथ पैर, मुंह धोकर सोना चाहिये।

इत्यादि नियम पालन करते हैं।

अत: प्रतिदिन नित्य कर्म अनुसार प्रात: ३ बजे उठकर प्रात: स्नान आदि नित्य विधि निवृत्त होकर प्रात: आरंभ में अपने योग प्रक्रियाओं में जुड़ जाते हैं।

जागे योगी भोर ही बैठे आसन मार।
जपा अजपा गायत्री का किया मन्त्र उच्चार।।

फिर अपनी काया के षडचक्र भेदन की योग साधना में लग जाते हैं। योग साधना करते--करते निर्वान पद को प्राप्त करते हैं जिससे योगी मुक्ति पद को प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है।

इस प्रकार गुरु गोरक्षनाथ जी के पूजन तथा धूनी पूजन, हवन एवं योगी नित्यकर्म सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इतना श्री नाथ रहस्य द्वितीय खण्ड समाप्त।
श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।
गुरु गोरक्षनाथ जी के चरण कमल को
आदेश। आदेश।

*****

श्री नाथ रहस्य

(तृतीय खण्ड)

शब्द-निरुक्तिः आदेश

ॐ-शिव-गोरक्ष-नाथ-योगी-आदेश

ॐ

ॐ कार आदिनाथ जी, ॐ कार स्वरुप को आदेश। ॐकार-सत्य-सर्वज्ञ-निर्मल-अविनाशी, अद्वैत, परब्रह्म ॐ कार को आदेश। आदि-अनादि अभेद्य-अवर्णणीय ॐ कार को आदेश। अति सूक्ष्म से सूक्ष्म सर्वत्र व्यापक ॐ कार को आदेश। ॐ नाद में दण्ड-बिन्द में ईश्वर वही जो शिव ॐकार को आदेश। प्रणव रुप ॐ में अकार, उकार, मकार तीनों के योग को आदेश। प्रणव प्राण अकार, उकार, मकार यह तीन मात्राओं से उत्पन्न भया ॐ कार को आदेश। शक्ति स्वरुप अर्धमात्रा के ॐकार को आदेश। शिव तिरोभाव श्री नाथ जी का बिन्दु रुप ॐकार को आदेश। बीजरुप अकार के रजोगुण ब्रह्मा को आदेश। बीज रुप उकार के प्रकृति सत्यगुण हरि को आदेश। बीजरुप मकार के तमोगुण पुरुषोत्तम पुरुष शिव को आदेश। तीनों भाव बिन्द रुप नाद ॐकार को आदेश। ॐकार प्रणव प्राण को आदेश। जिससे शिव ने उत्पन्न की भई सृष्टि को आदेश। अकार श्री ब्रह्मरुप, उकार श्री विष्णु रुप, मकार श्री रुद्र रुप, अर्धमात्रा श्री शक्तिरुप तथा बिन्दु श्री नाथ स्वरुप एता पंच देवता स्वरुप ॐकार को आदेश। ब्रह्मा, विष्णु, महेश स्वरुप ॐकार को आदेश। ब्राह्मी, लक्ष्मी पार्वती स्वरुप ॐ को आदेश। सृष्टि स्थिति प्रलय स्वरुप ॐकार को आदेश। भूत भविष्य वर्तमान स्वरुप ॐकार को आदेश। उत्तम, मध्यम, प्रथम स्वरुप ॐकार को आदेश। स्वर्ग, मृत्यु

मिन...

पाताल स्वरुप ॐकार को आदेश। मुक्त-मोक्ष-आनन्द-परमानन्द कैवल्यानंद ॐ कार को आदेश। सम्पूर्ण मन्त्र-तन्त्र विद्या-शास्त्र-पुराण का महाबीज रुप में ॐकार को आदेश। सम्पूर्ण पूर्ण के सार ॐकार को आदेश। इतना ॐ शब्द निरुक्ति सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

शिव

ॐ अलख निरन्जन शिव को आदेश। अविगत महापुरुष मूल पुरुष, पुरुषोत्तम आद पुरुष शिव को आदेश। ज्योति-परमज्योत-अयोनी रुद्र शिव को आदेश। विशूनी विश्वमूर्ति पाताल ग्रहणी शिव को आदेश। मुखेवेद, पुराण नासिका गंगा-जमना-सरस्वती शिव को आदेश।

ललाटी चंद मस्तके त्रिकुटा देवता धारी शिव को आदेश। नक्षत्री माला, अठारह भार वनस्पति, हृदय के तैंतीस करोड़ देवता धारी शिव को आदेश। सेली सिंगी मीन मेखला बाघाम्बर धारी, रोम-रोम सप्त सागरा शिव को आदेश। शिव के बायीं ओर निर्गुण ब्रह्म दाहिनी ओर शक्ति महामाया बीच में स्वयं पूर्ण अखण्ड ज्योति स्वरुप शिव को आदेश। विभूति धारी, बीज मन्त्र, घोर मन्त्र, अघोर मन्त्र, क्षीर मन्त्र, गायत्री मन्त्र, अभय जाप, तन्त्र मन्त्र, स्वरुप शिव को आदेश। नर नारी, भूत प्रेत, यक्ष, किन्नर इन्द्रादि देवता ब्रह्माण्ड व्यापक शिव को आदेश। साधु संत, योगी-ज्ञानी, तपस्वी, त्यागी, अवधूत हर भक्त के ईष्ट शिव को आदेश। जीवों का आराध्य शिव को आदेश। सूक्ष्म में सूक्ष्म विराटों में व्यापक महातत्व शिव को आदेश। सृष्टि उत्पत्ति संहार-पालन पंच महातत्व शिव को आदेश। चार खानी चार बानी चन्दसूर पवन पानी शिव को आदेश। चराचर सृष्टि का बीज शिव को आदेश। करोड़ों सूर्य प्रकाशनाथ योग आदर्श शिव को आदेश। परमात्मपूर्ण आनन्द-सर्व शक्तिमान-चैतन्य रुप जितेन्द्र-मोक्ष कैवल्य मुक्तिदाता-भिन्न अभिन्न शिव को आदेश। महाज्ञानी कृपा साक्षात्कार शिव को आदेश। सर्वनाथ सिद्धां का सत्गुरु आदिनाथ जी ॐकार शिव को आदेश। इतना शिव शबद निरुक्ति सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

गोरक्ष

गो यानि धरा यानि धारणकर्ता, आश्रय कर्ता को आदेश। जो धारण करे- उसी में विलय होने वाले गो को आदेश। गो यानि पृथ्वी-जल-सूर्य, बैल, यज्ञ, सुरभि, स्वर्ग-दिशा,किरन-नेत्र,बाणी, बाण पशु को आदेश। गो यानि इन्द्रियों को आदेश। इस गो की रक्षाकर्ता को आदेश। इस गो के अश्रित की सुरक्षा के रक्ष को आदेश। वही ज्योति स्वरुप (गो + रक्ष) गोरक्ष को आदेश। वही हंसरुपी अलख निरन्जन गोरक्ष को आदेश। जिनकी काया गायत्री है उस गोरक्ष को आदेश। ॐ में ब्रह्मा सोहं में शक्ति के गोरक्ष को आदेश। अ योणी गोरक्ष को आदेश। अभय पंथ, अचल पदवी जिसका गोत्र निरन्जन है उस आत्म ज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। यही गोरक्ष जहां उत्तर दिशा वायु लोक में आज भी विद्यमान है उस सिद्ध योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश। यही गोरक्ष ज्योति स्वरुप-शिव स्वरुप को आदेश।

इतना गोरक्ष शबद निरुक्ति सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

योगी

योग यानि मन चित्त का निरोध जहां मन उनमन स्थित योगी को आदेश। योग यानि मन शून्य-महाशून्य ज्योति स्वरुप योगी को आदेश, योग यानि अनहद उत्पन्ना आकाश-आकाश उत्पन्ना वायु-वायु उत्पन्ना तेज-तेज उत्पन्ना जल-जल उत्पन्ना पृथ्वी सत तत योगी को आदेश। जहां पृथ्वी देवी का रंग जल ब्रह्मा का वरण तेज विष्णु की माया, पवन विसन की काया-आकाश नाद की छाया जहां पर योग से नाद अवगति उपाया उस योग को आदेश। योग यानि परमभेद आत्मज्ञान-ब्रह्मज्ञान योगी को आदेश। योग यानि दशमुद्रा अवगति पूजा दशद्वार में अमृत पान में बैठे प्राणनाथ योगी को आदेश। योग यानि गंगा जमुना सरस्वती स्नान, गायत्री जाप सहज भाव योगी को आदेश। योग यानि पवन का बंध छ: सौ इक्कीस हजार श्वास योगी को आदेश। शिवमाही शक्ति, शक्तिमाही शिव इस शिव शक्ति मिलन योगी को आदेश।

प्राण अपान के योग को भी आदेश। चन्द्र, सूर्य योग को भी आदेश। हं—सं—के योग को भी आदेश। शिवसामरस्य योग को भी आदेश। शिवसायुज्य शिवत्व योग को भी आदेश। जागती ज्योति योग को भी आदेश। योग यानि शबद उजाला, अनहद नाद जीव का शिव मिलन योगी को आदेश। योगी का योग यानि आदि अनादि का मूल जहां शबद निहशबद स्थिर होता है उस योगी को आदेश। योगी का योग जो काया पिण्ड से काल के काल से परे हो उस योगी को आदेश। योगी का योग अखण्ड ध्यान—परब्रह्म ज्ञान मूलचक्र तहां पलटे बिन्दु पलटे काया को आदेश। योगी का योग अंग भभूति पीवे पवित्र जल, आसन स्थिर अनहद नाद को आदेश।

योगी का योग जहां ब्रह्मपर मन वैराग्य सन्तोषी मुद्रा को आदेश। योगी का योग जहां चन्द सूर गगन में उजाला जहां त्रिकुटी में प्राण को आदेश। योगी का योग जहां होये भ्रम पार गुरुवचन मन का सूर को आदेश। योगी का योग जहां कल्पना संकल्प से परे अनन्त सिद्ध को आदेश। योगी का योग एकान्त वासी—शुष्मणा देवी का भेद, नवदुर्गा चलते साथ जहां बहात्तर बुर्ज पार करें योगी को आदेश। योगी का योग नवखण्ड पृथ्वी, तीन लोक, चवदा भूवन, इक्कीस ब्रह्माण्ड के दरवाजे में षट दर्शन के पथ पर चलकर योगी भिक्षा मांगे उस योगी को आदेश। योगी का योग जहां दश द्वारा का भेद पाकर असंख्य पंखुड़ी गगन में विहार करें। जिसे पाप पुण्य से परे अविचल योगी का आदेश। योगी का योग संसार के समस्त सत्कर्मों में कौशल्य प्राप्त करने वाले योगी को आदेश। योगी का योग जो सम्पूर्ण सोलह कला का ध्यान करे आप वह बालक योगी साक्षात ॐ शिव गोरक्ष योगी को आदेश। इतना योगी शबद निरुक्ति सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

नाथ

ॐ आदि अनादि काल से जो सत है। वह आदिनाथ शिव ॐकार को आदेश। ॐकार से उत्पन्न भया है जो पूर्ण सत्य है। वह है "नाथ" उस नाथ को आदेश। नाथ यानि नाथ—मार्ग (योग) नाथ मत (शबद) को आदेश। जहां पर ना और थ का हुआ है योग उस नाथ को आदेश। "ना" यानि आदि

अनादि सत्यस्वरुप, "थ" यानि स्थापित किया हुआ है जो इस त्रिलोक में सत्य का धर्म जिसे नाथ कहते हैं उस नाथ जो पुर्णत्व की जड़ हैं। उस नाथ को आदेश। यह नाथ केवल योग जिससे उत्पन्ना सत्यनाथ ब्रह्म-मोक्ष-मुक्त-सिद्धता-सिद्धमत-सिद्धमार्ग जो कि याचक को मुक्ति देने वाला-अलख निरन्जन-उस नाथ को आदेश। नाथ यानि याचक भक्त को शुद्ध भाव कल्याण करने वाला-सर्व सिद्धि से पूर्ण सिद्धि दाता जो ऐश्वर्यवान जो कृपा-आशीर्वाद से पूर्ण उस नाथ को आदेश। नाथ जो माया पर विजय पानेवाला-मोक्ष मुक्त का अधिकारी-विकारों पर विजय पाकर भक्त को मोक्षदान करने वाला उस नाथ को आदेश। नाथ यानि हटयोग धारी-तप से ताप दोष वृत्तिया और बुरे संस्कार को भस्म करने वाला उस नाथ को आदेश। नाथ यानि ईश्वर के सर्व सुन्दर सत्य गुणधारी-आत्मज्ञानी-बह्म साक्षात्कारी उस नाथ को आदेश। नाथ यानि भक्ति ज्ञान वैराग्य से पूर्ण, सत्य से पूर्ण उस नाथ को आदेश।

उस नाथ को जो गुरु "ॐ शिव गोरक्ष योगी" को आदेश। आदेश। इतना "नाथ" शब्द निरुक्ति सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

आदेश

आदेश नाम योग-योगेश्वरों का, आदेश नाम सत रुप नाथों का, आदेश नाम पूर्ण सिद्धों का आदेश नाम आत्मा, परमात्मा और जीवात्मा की एकता का। आदेश नाम एक अन्तर आत्मा से दूजा अन्तर आत्मा में योग बन्या ज्योति स्वरुप आत्मा को नमस्कार। आदेश नाम अद्वैत आत्मा-आदेश नाम निर्गुण निराकार अविनाशी आत्मा को इतना आदेश शबद निरुक्ति सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

* * *

सद्गुरु महिमा

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी।

ॐ सतगुरु मिलिया तीन लोकां आधारा। अनन्तकोट ब्रह्माण्ड परमहंस अवतारा। निर्मल ज्योत सतगुरु माही आत्मानन्द अपरंपारा। गुरु गुरु माही सब सृष्टि भयी पुकारा, सतगुरु ज्ञानी सब जगत को उद्धारा।

ॐ अगम निगम-सतगुरु भेद सब जानो। परमात्म अवतार गुरुदेव को ही मानो। सुन बा अवधू सतगुरु मिलिया। सतगुरु किरपा माया जंजाल विनाशा। अवधू महाज्ञान, ब्रह्मज्ञान को पाया। सतगुरु सत् झूठ पारखी परमहंसा। ऐसा सतगुरु दया क्षमा सन्तोष भव मुक्ता। ऐसा सतगुरु सुगति, कुगति को मारग दर्शा। ऐसा सतगुरु जप तप योगी व्यवहारा। ऐसा सतगुरु नियम धर्म संयम आचारा। ऐसा सतगुरु शरण चरण में धाम ठहराया। अवधू ऐसा सतगुरु मिलिया। काया गढ़े जीते कोई बिरला। ज्ञान विचार षड दर्शन करीबा। जीव शिव को एकी कीन्हा। शबद ब्रह्म का भेद बताया। अनहद नाद सहजै बाजा। जीव ईश की ग्रन्थी को खोल्या। घट के भीतरी ब्रह्माण्ड बोल्या। सतगुरु मिलिया, त्रिकुट महल में ज्योत प्रगटाया। नवकोट दस द्वारा खोल्या। गगन मण्डल पवन को बांध्या, गंगा, जमना, सारस्वत स्नान कराया। सतगुरु योगे भव रोग ना व्यापा। ऐसा सतगुरु अखण्ड शिवपुरी का वासा। सुनबा अवधूत भ्रमर गुफा जहां गोरख दिठा। तहां सतगुरु परसाद परमपद को पाया।

सुन बा अवधू-सतगुरु पूता। खोजत-खोजत सतगुरु मिलिया। तन, मन, धन सब अर्पण करीबा। भक्ति भाव सतगुरु प्रीत अनुरागा। निराश झोली माही त्रिलोक भिक्षा। सुबह शाम सतगुरु पद आदेश करीबा। विधि विधि सतगुरु शरण में रहिबा। नित-नित सतगुरु सेवत रहिबा। सद्गुरु धर्म सत सत भाखीबा। सतगुरु बानी शबद सुमिरण करीबा। चारो धाम अरु त्रिवेणी नहावा काशी गंगा सतगुरु धामा। सतगुरु आसरे अवधू रहना, चरण शरण में ईश्वर मिलीया। सतगुरु दरश लिपे न पाप न पुण्य। सतगुरु बिन कोय भये मुक्त । सतगुरु बिन भ्रमे भरमाया। सतगुरु बिन अज्ञान ना

विनाशा । सतगुरु बिन ना आत्म प्रकाशा । सतगुरु बिन जोग अधूरा । सतगुरु बिन शुद्ध ना काया । सद्गुरु बिन ज्ञान का थोटा । सतगुरु बिन न संशय मिटाया । सतगुरु बिन भूत प्रेत ना टाल्या । सतगुरु बिन अमर ना काया । सतगुरु कारण निश्चय करीबा । सतगुरु किरपा ना दुर्लभ खोया । वेद शास्त्र अरु पुराण पढ़िया । मन संतुष्टी बिना सतगुरु किरपा । सतगुरु बिन योगी योग अधूरा ।

सुन बा अवधू सतगुरु माही । परम-पद-पद-सतगुरु मावली । साध सन्त सन्यास बैरागी । तपसी त्यागी ध्यानी अरु ज्ञानी । नाथ सिद्ध अनन्त कोटी, सब कोई सद्गुरु शरण में आयी । ताते जगत में श्रेष्ठ कहाई । नारद शारद यक्ष किंकर ब्रह्मा विष्णु रुद्रदेव देवत्या, इन्द्र चन्द्र सूर तारा मण्डली । यह सब ही सतगुरु की परम उपासी । शेष सहस्त्र मुख गुरु गुणकों गायी । बिन्दु सिन्धु सतगुरु पार न पायी । बिन्द-बिन्द जल थल पाताल गगनी । सतगुरु सुगन्धी अपरम्पार सुवासी । अनन्त कल्प अनन्त ब्रह्माण्ड अरु तीन लोकी । सतगुरु बिन रहया अधूरी ।

सुन बा अवधू धर्म की साखी । सत सत सतगुरां की महिमा भाखी ।

जप, तप, विद्या भया अभिमान्या । चरण में लक्ष्मी सम्पत्ति नाना । जो सतगुरु शरण में कछु नहीं आया । सो नरक भोग अरु दुःख को पाया । जो कोई सतगुरु निन्दा करी बापूडा । सो सहस्त्र कल्प नरक को पाया । सतगुरु निन्दा सूनी-सूनी काना । नीच योनी पशु जनम को पाया । जो सतगुरु अहंकार हृदयी को धार्या । अविचार मूढ मती विवाद समाया । जो सतगुरु सहवास को त्यागा । अती दीन भया, दरिद्र को पाया । जो सतगुरु बानी तानी तोड़या । सों जनम-जनम मती भरमाया ।

सुन बा अवधू सतगुरु पूता । सद्गुरु दर्श बिनु कबहु ना रहना । सतगुरु संगी, सदा सम छाया । सतगुरु चरण में शीश नमाया । सतगुरु सम्मुख नाद बजाया अति नम्र आदेश करीबा । पाव पसारी ना बैठूं अवधूता, पदमासन बैठु दृढ़ मन करीबा । सम्मुख होके ना गमन करीबा । छाया सतगुरु कबहू पाव ना रखीबा । सम्मुख होके नंगा सर (नंगा तन) कबहू ना रहिबा । सुन बा

अवधू, गुप्त बात कछु ना रखीबा। छल कपट ना मिथ्या रहीबा। सतगुरु शबद शबद को सत सत राखीबा। सम्मुख सतगुरु अवर्तन ना करीबा। संकोच विचार कछु ना करीबा। वेद मन्त्र और पण्डिता व्यर्थ ना भखीबा। सतगुरु अवधू परमात्म स्वरुप को जानिबा। त्रिलोक भिष्या कछु पावै सन्तोषा। सतगुरु माही अर्पण करीबा। सतगुरु माही प्रीति भोजन करीबा। सोवत-सतगुरु पद कमल को सेवबा।

सुन बा अवधू सतगुरु मिलिया नाथन के, श्री नाथ। ऋद्धि सिद्धि वरदायक सबहू सतगुरु के साथ। सतगुरु जी का आदेश जो रखिबा लाज। चिन्ता दोष सन्ताप भयै विनाश।

सतगुरु योगे वज्र भयी काया, कटे पाप भव बन्धन मुक्ता। सतगुरु योगे अमिरस पीवना, जरा मरण अनभय करीबा। सतगुरु महिमा गूहय जो कोई जाना, आप ही कर्ता देव समाना।

नित नित पाठ करे जो सतगुरु महिमा। पावे भव सागर मुक्त जहां शिवुपरी में वासा और पठ कथकर सुनी सुनावे नर नार। सतगुरु प्रताप देव देवत्या करी (आदर) सत्कार।

ऐसे महाघोर कलियुग माही।
प्रगटया भयी कृपा सतगुरु माई।
जब जब होत धर्म की हानि।
करी अधर्म मूढ मति प्राणी।
तब तब अवतार सतगुरु माई।
धर्म धुरन्दर श्री नाथ सिद्ध सहाई।

इतना सतगुरु महिमा पाठ सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी को आदेश।

***

सतगुरु दिक्षा विधि

आदि अनादि काल से श्री नाथ सिद्धों में यह गुरु–शिष्य परम्परा चलती आयी है और अनन्त सृष्टि तक चलती रहेगी। यह सृष्टि पर सर्वप्रथम गुरु–आदिगुरु जी का मान अर्थात् श्री आदिनाथ जी भोलेनाथ शिव को दिया जाता है। आदि शक्ति पार्वती को प्रथमत: शिष्य रुप में सम्पूर्ण महाज्ञान का उपदेश दिया था। इस कारण सृष्टि के किसी भी युग वा किसी भी काल का प्रभाव नहीं हो सकता क्योंकि गुरु शिष्य परम्परा यही सृष्टि का मूल आधार स्तम्भ है। सृष्टि के प्रत्येक जीव को ज्ञान केवल सद्गुरु जी देने में समर्थ हैं। एक चेतन दूसरे को चेतन करता है। आगे वह चेतन अगले को चेतन करता है। धर्म–कर्म–योग–साधना–भक्ति–ज्ञान–ध्यान धारणा–त्याग–तपस्या–अच्छा–बुरा विकार–आकार तथा सुर–असुर नर नारी देवी देवता ग्रह तारे आकाश मण्डल–आध्यात्मिक भौतिक जो कुछ भी हो सब कुछ केवल सतगुरु से ही चेतन हैं।

श्रीनाथ सिद्धों में मन्त्र तन्त्र, ऋद्धि सिद्धि कर्मकाण्ड, पूजा पाठ, रीति रिवाज नीति तथा योग साधना ध्यान धारणा इत्यादि प्रत्येक बातों की जानकारी या ज्ञान केवल सतगुरु ही उपदेशामृत स्वरूप में देते हैं और अनन्त गुरु–अनन्त चेले का निर्माण होता है। नाथ सिद्धों में सद्गुरु दो प्रकार के हैं–(१) मन्त्र गुरु (गृहस्थी के लिये), (२) दिक्षा गुरु (संन्यास लेते है उनके लिये)

'सतगुरु बिन ज्ञान नहीं, सतगुरु बिन मुक्ति नहीं'

श्रीनाथ सिद्धों में मुख्यता पांच सतगुरु दिक्षा संस्कार होते हैं। जिनको चोटी गुरु–चिरा गुरु–उपदेशी गुरु बभूती गुरु–लंगोट (बाना) गुरु इन नामों से प्रचलित है।

चोटी गुरु जी

श्री नाथ सिद्धों में सर्वप्रथम मान सतगुरु "चोटी गुरु" को दिया जाता है क्योंकि प्रथम मूल दिक्षा संस्कार शिष्य के प्रति सत्गुरुजी देते हैं तथा साधक के जीवन में परिवर्तन होकर वह शिष्य रुप में प्रथमत: नाथ सम्प्रदाय में प्रविष्ट होता है।

प्रथम साधक का मुण्डन किया जाता है। जहां शीश मध्य में चोटी रखी जाती हैं। तदन्तर साधक अभ्यंग स्नान (गंगा स्नान) करते हैं। उसे भगवा बाना दिया जाता है। अत: स्थान पर जितने साधू महात्मा होते हैं। सब एकत्र होते हैं फिर सतगुरु उच्चासन बैठते हैं। सम्मुख साधक नम्रतापूर्वक बैठता है। सतगुरु साधक के मस्तक पर भस्मी तिलक लगाते हैं। फिर गले में नाद जनेऊ डालते हैं तथा रुद्राक्ष माला (१०८ दाने) देते हैं। तदन्तर सतगुरु धारदार छुरी (चाकू) या आजकल कैंची से अपने बायें हाथ से साधक की चोटी पकड़ते हैं और दाहिने हाथ से चोटी को काटते हैं और निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हैं। कोई प्रगट बोलते हैं कोई मन में ही मन्त्र बोलते हैं।

चोटी काटने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सोंह का भया उजियाला, आया सिद्धों यती गोरक्ष नाथ जी बाला। कहो रे पुरुष कहां से आया, कहां को जाना है। ॐ गुरु जी ऊर्ध्व मुख से आया- गगन मुख को जाना है। हे पुरुष यहां क्यों आया ? मैं तो आप अलष निर्वाण जी के चरणों में शीश देने को आया। कैसे बुलाया-कैसे बिठाया, हित से बुलाया-प्रेम से बिठाया। कौन आसन कौन मूल-कौन बैठे कमल के फूल। धरती आसन ब्रह्मा मूल-अलख निरन्जन बैठे कमल के फूल। कौन मुख छुरी, कौन मुख धार। कौन पुरुष है मुण्डन हार। अग्नि मुख छुरी पवन मुख धार, अलष पुरुष है मुण्डन हार। कौन वृक्ष कौन छाया। किसके नीचे मुण्ड मुण्डाया। अटल वृक्ष-सन्तन की छाया। धर्म के नीचे मूण्ड मुण्डाया। कौन गुरु ने मूण्डे केश-कौन गुरु ने दिया उपदेश। सतगुरु ने काटे केश, अलष पुरुष ने दिया उपदेश। काटो चोटी दिया निवास, चन्द्र सूर्य भरे धर्म की साख। सत्य की छुरी। अमर लोक से आई-हुक्म गुरु से चोटी लाही। रक्षा करें श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी आदि शक्ति महामाई। चोटी मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

कुछ सतगुरु और निम्न मन्त्र से चोटी काटते है।

चोटी काटने का मन्त्र (छोटा)

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी।

कौन आसन कौन मूल, धरती आसन ब्रह्मामूल सत्गुरु जी बैठे कमल के फूल, कौन मुख छुरी कौन मुख धार-अगम मुख छुरी पवन मुख धार कौन पुरुष ने काटे केश कौन पुरुष ने फूंके कान सत् पुरुष ने काटे केश-अलष पुरुष ने फूंके कान इतना चोटी मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अत: चोटी काटने के पश्चात शिष्य का नामकरण होता है। सतगुरु जी प्रसंग के अनुसार या अपने स्व इच्छा से शिष्य को नाम देते हैं। शक्य तो जो पहला शिष्य का नाम होगा उसी के आगे नाथ शबद जोड़कर नामकरण होता है। अत: सतगुरु जी शिष्य को गुरु मन्त्र देते हैं। कुछ सतगुरु जी कान में फूंककर या फूंक मारते हैं। फिर गुरु मन्त्र देते हैं। गुरु मन्त्र वही होता है जो नाथ जी घर के तथा सतगुरु जी के पंथ का जो नाथ परम्परा से रुढी अनुसार चलता आया है तथा सर्व प्रथम मूल मन्त्र होता है। यह मन्त्र शिष्य के प्रति भाव तथा आचरण श्रद्धा तथा विश्वास निर्माण होने के पश्चात दिया जाता है। शुरु-शुरु में श्री नाथ जी का बीज मन्त्र दिया जाता है। अर्थात "ॐ शिव गोरक्ष योगी" तदन्तर शिष्य योग तथा विश्वास पात्र के बाद मूल मन्त्र दिया जाता है। कुछ मन्त्र ऐसे भी हैं—

सतगुरु मन्त्र-१

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सोंह ओंकारा शिव शक्ति का सकल पसारा-अक्षय योगी सबसे न्यारा। गुरुदेव मन्त्र दियो, सतगुरु दियो उपदेश। जो सतगुरु लागे काना सो सतगुरु शिव समाना। हमारे गुरु सिद्ध योगी अर्ज करु सतगुरु संगी। सतगुरु मन्त्र सत्य ले आया शबद से बिठाया। कान फूंककर सर जीवन किया। सो योगी युग-युग जीया। इतना गुरु मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

सतगुरु मन्त्र-२

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। सत्य का मन्त्र, सत्य का शबद सत्य है नाम। सत्य के सतगुरु पूरण भये काज? ॐ सोंह

निर्मल मन शुद्ध हो काया रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। यह मन्त्र सतगुरु बताया। सतगुरु शबद सुरती चेला। पठन्ते गुणन्ते मोक्ष फल पाया। इतना गुरु मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इस प्रकार अपने-अपने क्रिया योग तथा पंथ परम्परानुगत शिष्य का मन्त्र संस्कार किया जाता है। यह चोटी तथा मन्त्र संस्कार होने के वक्त उस शिष्य की पूर्व अच्छे बुरे सभी संस्कार चोटी काटते ही मिट जाते हैं। अर्थात् नया नाम देकर सिद्ध होता है कि शिष्य का नया जन्म (परिवर्तन) हुआ है। अतः शिष्य को सद्गुरु जी के सम्मुख बैठाया जाता है और नादि आदेश (नाद ॐकार बजाके या ॐकार उठाना) करने का प्रथम संस्कार करते हैं।

अतः ॐकार स्वरूप नाद जनेऊ के बारे में सद्गुरु जी शिष्य को जानकारी देते हैं। यह जनेऊ काले भेड़ की ऊन का बारीक धागा बुनके बनाते हैं। यह बारीक (ऊन) धागे से धागे ऐसे सोलह धागे बुन-बुनकर एक लम्बा साढ़े बारह हाथ का धागा बनाया जाता है। फिर उसे छः जती नाम से छः या नवनाथ नाम से नऊ गांठ देकर जोड़ते हैं जिसे ब्रह्मगांठ कहते हैं। फिर तीन लपेटे में समान धागा लेकर विरुद्ध दिशा में जोड़कर मिला लेते हैं। उसके बीच में नीचे की दिशा में पवित्री तथा शिव जी नाम से एक रुद्राक्ष, विष्णु जी नाम से एक स्फटिक ब्रह्मा जी नाम से एक मूंगा के दाने एक धागे में पिरोकर आखिरी में नादी बांधते है। यह नादी को नाद ब्रह्म कहाया है (चित्र देखे)। जनेऊ गले में डालते हैं। नादी शिष्य के नाभी तक आती है। उसे उखडु बिठाकर बायां हाथ धरती के ऊपर हथेली की उंगलीयां ऊपर करके रखते हैं दायें हाथ से नादी मुख में लेकर नादी बजाते हैं। फिर दायां हाथ जनेऊ के साथ नीचे धरती पर बायें हथेली पर स्पर्श करे तब बायें हाथ का अंगूठा ऊपर उठाते हैं बाकि चार उंगलियां बन्द कर लेवें। फिर नादी मुख में बजावे फिर नादी नीचे लेकर बायें हथेली स्पर्श करे। इस प्रकार तीन बार नादी बजाके आदेश करे। इसे ॐकार उठाना या नाद ॐकार भी कहते है। यह नादी आदेश सुबह-शाम सतगुरु के सम्मुख तथा इष्ट देवता के सम्मुख बजाया जाता है। यह नादी पवित्री-चन्दन, लकड़ी हस्ती दन्त, पीपल, सोना, चाँदी, ताँबा इ० में बनाते है।

कोई-कोई योगेश्वर यह जनेऊ जटाओं में बांधते हैं। यह जनेऊ पवित्र शुभ तथा नाथ सिद्धों का चिन्ह मानते हैं इसे औघड़ दर्शनी तथा गृहस्थ जोगी भी पहनते हैं।

तद्पश्चात सतगुरु जी नाद जनेऊ का मन्त्र देते हैं।

नाद जनेऊ का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। आदि में शून्य शून्य में ओंकार। आवो सिद्धों नाद बिन्द का करो विचार। नादे चन्द्रमा-नादे सूर्य नाद रहा घट पिण्ड भरपूर, नाद काया का पेखना, बिन्द काया की राह। नादे बिन्दे, योगिया तीनों एक स्वभाव। बाजे नाद भई प्रतीत। आये श्री शम्भुजती गोरक्षनाथ जी अतीत। नाद बाजे काल भागे, ज्ञान टोपी गोरख साजे। डंकनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्दाई, बाड़े घाटे टल्ल जागे। सुन सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई। टिल्ला शिवपुरी का स्थान चार युग में मान, मूल चक्र मूल थान। पढ़ मन्त्र योगी नाद बजावे, छत्तीस भोजन अमृत कर पावे। बिना पढ़े योगी नाद बजावे, तीन लोक में कहीं ठौर न पावे। जो जाने नाद बिन्द का भेव-आप ही कर्ता आप ही देव। सन्ध्या शिवपुरी का बेला-अनन्त कोटि सिद्धों का युग-युग मेला। इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इस नाद जनेऊ को गूंथकर बनाना हर कोई नहीं जानता। इस विधि को तन्त्र मन्त्र ज्ञानी योगी ही जानते हैं। जनेऊओं के जितने धागे संख्या हैं। उतने ही उसके करम मानते हैं। उसमें निम्न संख्या नाद मन्त्र का विधान हैं। यह मन्त्र जनेऊ गूंथते समय योगी बोलते हैं।

सांख्य-नाद मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सोलह धागा साढ़े बारह हाथ। दोनों गुणा या दो सौ नाद, उसमें बान्धी छटवी गांठ, देखो सिद्धों नाद बिन्द जनेऊ का ठाठ।

ॐ एक ओंकार, दोनों चन्द्र सुर भरे धर्म की साख। तीन लोक में जय जयकार, चार वेद में नाद ओंकार। पंच तत काया है बनी, षड दर्शन में रम्या

है योगी। सप्त सागर सप्त पाताली, अष्ठ कुलीन नागिन चढ़ गयी गगन मण्डली नवनाथ ने नव कोट बान्धी, दसवें द्वारी ग्यारह रुद्र रूपी बैठे शिवजी।

अनन्त सिद्ध बारह पन्थी। तेरा ओंकार नादे ध्वनि। चौदह भुवन में रम्या योगी। तिसकी रक्षा गुरु गोरक्षनाथ जी करी। पन्द्रह तिथ में बन्या जनेऊ। सोलह श्रृंगार में जनेऊ गूंथू, चौसठ जोगन किया कला का धर्म। एता दो सौ नाद जनेऊ का भया कर्म। ६ जती ने या बान्धी ब्रह्म गांठ। तृप्त हो श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। इति सांख्य नाद मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

इस प्रकार १६ धागों का साढ़े बारह हाथ धागा का जनेऊ अर्थात् (१६ x १२.५) = २०० गुण धर्म का जनेऊ बनके ६ जती ब्रह्मगांठ देते हैं। उपरोक्त मन्त्र में संख्य योग १ से १६ तक योग (१ + २ + ३......१६ = १३६) फिर इसमें ६४ जोगन का योग) करे २०० गुण बनते है। ६ जती ब्रह्म गांठ से जनेऊ पूर्ण होता है। इस मन्त्र जाप तथा विधि से योगेश्वर जनेऊ बनाते हैं।

अतः सतगुरु नाद बजाने की पारम्पारिक (मन्त्र) प्रथा शिष्य को सिखाते हैं।

एक ओंकार तेरा आधार। तीन लोक में जय जय कार। नाद बाजे काल भागे। ज्ञान की टोपी-गोरख साजे। गले नाद पुष्पन की माला। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। चार खानी, चार बानी चन्द्र सूर्य पवन पानी एको देवा सर्वत्र सेवा। जोत पाट ले परसो देवा कानन कुण्डल गले नाद करो सिद्धों नादकार। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

अतः कटी हुई चोटी को पीपल-वटवृक्ष या औदुम्बरु इन वृक्ष के नीचे रख देते हैं या बहते जल गंगा जी में छोड़ देते हैं। शिष्य अपने इच्छानुरुप सतगुरु जी को गुरु दक्षिणा देता है। अन्यथा मिठाई पत्र पुष्प चढ़ाते हैं।

अतः शिष्य को सतगुरु जी स्थानधारी हो तो मन्दिर स्थान इष्ट देवता धूना को समाधि के ऊपर जाकर नादी आदेश करते हैं और पूजा प्रसाद दक्षिणा रखते हैं और स्थान में मठ मन्दिर में उपस्थित सभी योगेश्वरों को (चिप्पी) पूजा (मिठाई) प्रसाद शिष्य बनने के उपलक्ष में बांटा जाता है। शिष्य सभी दर्शनी योगेश्वर को शम्भू आदेश तथा औघड़ महात्माओं को हाथ जोड़ आदेश करता

श्री नाथ सिद्धों के नाद जनेऊ का ॐकार स्वरूप रहस्य

- ऊन का जनेऊ
- पवित्रि शक्ति (अर्धमात्रा चिदानन्दा पराशक्ति) पवित्रता
- मूंगा - ब्रह्माजी का - उत्पत्ति - राजोगुण - 'अ'
  (ब्रह्मग्रंथी ब्रह्मानंद) राजस कार
- स्फटिक - विष्णुजी का - स्थिति - सत्यगुण - 'उ'
  (विष्णुग्रंथी महानंद) सत्य कार
- रूद्राक्ष रूद्र (शिव) - संहार - तमोगुण - 'म'
  रूद्रग्रंथी कैवल्यानंद तामस कार



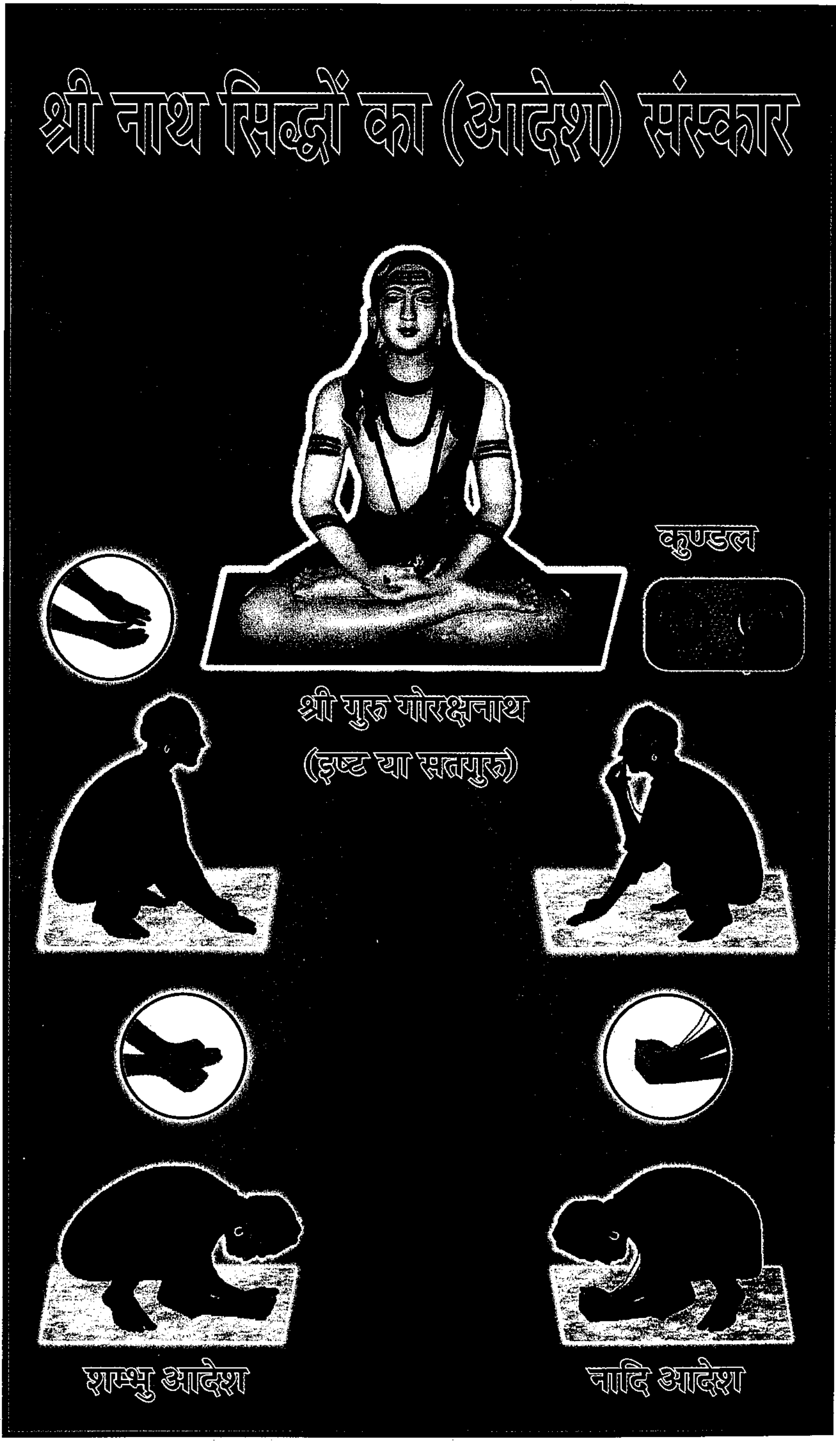
- नादि - नाद - बिन्द - बिन्दी

श्री नाथ सिद्धों की (नाद) बिन्द

समाधि में ॐकार दर्शन से ज्ञान प्रकाश }
समाधि में ॐकार नाद से नाद ब्रह्म } प्राप्ति
समाधि में शून्य अवस्था ही मुक्ति है }

ॐ = ओहं सोहं – प्राण अपान – जपा – अजपा श्वास प्रश्वास – प्रकृति माया = जीवन

केवल योग साधना के द्वारा ही मुक्ति की प्राप्ति होती है = नाथ सिद्धान्त


श्री नाथ सिद्धों का (आदेश) संस्कार
कुण्डल
श्री गुरु गोरक्षनाथ
(इष्ट या सतगुरु)
शम्भु आदेश
नादि आदेश

है। तदन्तर शिष्य को धीरे–धीरे गुरु शिष्य के प्रति धर्म–कर्म तथा यौगिक साधना के विषय में सूचना दी जाती है तथा उसे यौगिक प्राथमिक यम–नियम का पालन कैसे किया जाता है। वह बताते हैं। जैसे– अहिंसा–सत्यता–चोरी न करना–ब्रह्मचार्य–क्षमा–धैर्य, दया–सहनशीलता–सरलता–मिताहार–मन पवित्रता, तप–सन्तोष आस्तिक्य–दान–ईश्वर पूजा जप मतीकी शुद्धि तथा यौगिक क्रियायें, हठयोग साधना–मन्त्र योग इत्यादि सिखाते–सिखाते शिष्य यह शिक्षा लेते–लेते विश्वास पात्र हो जाता है। किसी–किसी शिष्य को १२ साल तक लग जाते हैं। अपने–अपने करनी स्वभाव गुण विशेष आचरण से जब शिष्य पूर्ण रुप से विश्वास पात्र हो जाता है। तब उसे दर्शनी योगेश्वर बनने का सुभाग्य मिलता है।

चिरागुरु जी

प्राचीन काल में माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी ने घोर तपस्या की थी। जब शिवजी प्रसन्न हुए तब मत्स्येन्द्र नाथ जी ने उनका स्वरुप मांगा था तब शिवजी के कानों में कुण्डल थे। वह मत्स्येन्द्र नाथ जी ने प्राप्त किये। आगे अपने शिष्य गुरु गोरक्षनाथ जी को दिये और आगे गोरक्षनाथ जी ने राजा भर्तृहरि जी के कान फाड़कर दर्शन दिलवाये जब से यह प्रथा परम्परायें चलती आयी हैं।

इसे, मुद्रा, कुण्डल, दर्शन, छल्ला इत्यादि नाम से सम्बोधित करते हैं। अत: सत्गुरु विश्वास पात्र शिष्य को कान चिरा देने का निश्चित करते हैं तब उसका पुन: मुण्डण तथा स्नान कराके एक स्वतंत्र और एकान्त कमरे में उखड़ु बिठाते हैं और दोनों हाथ दोनों पावों के (घुटनों के) नीचे से निकाल कर आगे जोड़कर (दोनों हथेली) एक दूसरे में पकड़ाते है। अत: उसके सन्मुख भभूती में करद रखकर कर्ण छेदन करने वाले विशेष प्रविन सत गुरु जी तीन बार उसे पूछते हैं कि "कर्ण छेदन के लिये राजी हो या नहीं" तीनों बार शिष्य वह नीचे भभूति में रखी हुई कर्द (छुरी) गुरु जी के हाथ में देकर हां में जवाब देता है या राजी खुशी हू कहता है तब सतगुरु कान फाड़ने को तैयार होते हैं। अन्यथा कर्ण छेदन करते

नहीं। तदन्तर शिष्य को पूछते हैं कि धरती आसन बैठोगे या आकाश आसन बैठोगे। जवाब के अनुसार सतगुरु हाथ करद (धारदार) से कर्ण छेदन करते हैं तथा शिष्य को चोटी गुरु जी ने दिया हुआ मन्त्र का जाप करने को कहते है (ॐ शिव गोरक्ष योगी) और शिष्य के कर्ण छेदन करते समय चिरागुरु जी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

चिरा देने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सों धुन्धुकारा। गगन मण्डल भया उजियाला। मन्त्र गायत्री गोरखबाला। ॐ कहो रे अवधू किसका बीज, किसका पूत। शिव शक्ति का बीज। सतगुरु का पूत। कौन आसन लिना आधार। कौन वासन किना उद्धार। धरती आसन लीना आधार। सतगुरु वासन कीना उद्धार। कौन करद की कौन धार। सार की करद सत्य की धार। चिरो कान अलष पुरुष निर्वान। पांचवे मुख मुद्रा करी, राखो धरती धारण रुप बनाय। अलष पुरुष को दर्श बताय। सच्चा सत्गुरु शबद सुनाय। बीज मन्त्र का ध्यान लगाय। आन्थबारु धीरज धर्म बसाय। सद्गुरु मेरे भ्रम भगाय। दिद दरर्दा दीदार बताय। सच्चा सुमरु सांचो साच अन्तर हृदय में आग लगाय। संग कला सगुण पाऊ, माई बभूती संग उपाऊ, गायत्री सावित्री पार्वती उपदेश। शिव शंकर गोरखनाथ जी ने दिया आशीष। इतना कान चिरा मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धां में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी ने सुनाया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

सतगुरु शिष्य के कान मध्य में करद (तीक्ष्ण धार वाली बारीक छुरी) से कर्ण छेदन करते हैं। फिर कटे हुये कर्ण के ऊपर भभूती डालते हैं और करद को फिर साफ करके भभूती में रखते हैं। अतः शिष्य के कानों में (छिद्रों में) नीम की घिसी हुई लकड़ी की ठिट्टी (गोलाकर) बिठाते हैं। अतः शिष्य को कमरे में लिटाया जाता है। वस्त्र सम्पूर्ण नये होते हैं। शिष्य कहीं भी भटकता नहीं तथा वह करवट भी नहीं बदल सकता। कर्णो के ऊपर कपड़ा डालते हैं। एक मोर छड़ी से मक्खियां इत्यादि झाड़कर भगाते हैं। उसे पूर्ण सतगुरु मार्ग दर्शन पर रहना पड़ता है तथा निगरानी में रहना पड़ता है। दस दिन पश्चात

नीम के पत्ते पानी में डालकर खूब उबालते हैं और उस पानी से कानों की शिकाई साथ-साथ सफाई की जाती है जिससे कान नरम (मुलायम) होते हैं। अतः कानों के ठिट्टी निकाली जाती है और मृतिका का बड़े छल्ले, दर्शन डालते हैं। इसे योग दण्ड भी कहते है। जो वजन से कानों के ऊपर खिंचाव आता है। अतः शिष्य उठ बैठ सकता है। थोड़ा बहुत घूम भी लेता है। कानों में जब मृतिका की मुद्रायें डालते हैं। तब सतगुरु निम्न मन्त्र बोलते हैं तथा शिष्य को उपदेश कराके निम्न मन्त्र देते हैं। जो मन्त्र शिष्य को अपने कानों में कुण्डल भविष्य में चढ़ाने उतारने के समय बोलना होता है। मन्त्र शिष्य के कान में फूंककर देते हैं। अतः यही सतगुरु शिष्य के चिरागुरु जी कहलाते हैं।

कर्ण दर्शनों का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ नाद सोहं मुद्रा कौन मुद्रा खेचरी बोलिये, कौन मुद्रा भोचरी बोलिये कौन मुद्रा धरे ध्यान। कौन मुद्रा कथे ज्ञान ताम्बे की मुद्रा खेचरी बोलिये स्फटिक की मुद्रा भोचरी बोलिये। गण्डे की मुद्रा धरे ध्यान मृतक की मुद्रा कथे ज्ञान। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के कान नीचे धरती ऊपर आकाश। रक्षा करे श्री दादा मत्स्येन्द्र नाथ। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

इस प्रकार १५, २० दिन तक नीम के जल से सुबह शाम शिकाई तथा सफाई करते हैं। फिर कानों को सरसों का तेल जो नीम पत्ती डालकर खूब उबालते हैं और छानके कानों को लगाते हैं जो जन्तुनाशक तथा कान को नरम सा रखते हैं। इस प्रकार ४१ दिन तक क्रिया चलती है। इस समय शिष्य को गौघृत का हलवा और ठण्डा जल (मटके का) देते हैं। इस कालावधि में कोई स्त्री दर्शन लेने नहीं आ सकती कान पकने का डर होता है। अन्य पुरुष भी मिल नहीं सकते केवल दर्शनी योगेश्वर दर्शन-सेवा कर सकते हैं। कर्ण छेदन के ४१ दिन में उस शिष्य को बाल गोरक्षनाथ स्वरुप माना जाता है और सभी योगेश्वर उन्हें (चिप्पी) मान देकर शम्भु आदेश करते हैं। दिन पूर्ण होने पर शिष्य को गंगाजल (स्नान) किया जाता है। इस समय दर्शन (योगदण्ड)

निकालकर दूसरे मृतिका के छोटे कुण्डल डालते हैं। कुछ योगेश्वर योगदण्ड १२ साल तक रखते हैं।

"दर्शनी योगी शिव की काया" यह उक्ति प्रचलित है। दर्शन धारी (दर्शनी) योगेश्वर ब्रह्म साक्षात्कारी मानते है। कर्ण छेदन काल में शिष्य को अनेक आध्यात्मिक परमार्थीक तथा नाथ सिद्धों की विशेष अनुभूति होती हैं। सिद्ध महात्माओं के दर्शन होते हैं। यह शिष्य के विचार, ज्ञान-आचरण तथा निर्भयता पर निर्भर होता है।

कर्ण संस्कार प्राचीन काल से मृतीका कुण्डल ही पहनते थे। आजकल खण्डित होने के डर से योगेश्वर अन्य धातु के कुण्डल भी पहनते हैं। अपने परिस्थिति अनुरुप सुवर्ण-चाँदी-ताँबा, स्पटिक गैंडा, हस्तीदन्त, बिलौर-नीलम, हिरन के सींग के इत्यादि मुद्रायें पहनते हैं।

शिष्य योगेश्वर अगर १२ साल तक मृतिका के दर्शन पहनकर (बिना बदलते) रहा तो उसे सिद्ध योगेश्वर माना जाता है। अघोरी योगेश्वर (कापालिक) अस्थियों के कुण्डल कानों में तथा गले में माला तथा काले कपड़े डालते हैं।

कर्ण दोनों मुद्रायें-जीवात्मा तथा परमात्मा के प्रतीक रुप हैं। दोनों के योग से मुद्रा कहते हैं। मुद्रा का अर्थ है। आनन्दार्थक मूद और दानार्थक, दानदायक कुण्डलधारी योगेश्वरों का देवी देवता को अति प्रिय है। भूत पिशाचादि कुण्डलधारी योगेश्वरों से डरते हैं। कुण्डलधारी साधना सिद्ध योगेश्वर काल से परे जाता है।

नाथ सम्प्रदाय में कुण्डल कर्ण संस्कार वही करता है जो निर्भय आत्म विश्वासी नाथ प्रिय और मुख्यता सतगुरु कृपा प्राप्त है। कुण्डल धारी योगेश्वर सम्प्रदाय में इष्ट देवता पूजन-धूनी कर्मकाण्ड-भण्डार कर्म-कोठारी पीर महन्त इत्यादि पदों के लिए अधिकार प्राप्त हो जाता है। यह कर्ण छेदन संस्कार औरतों पर भी किया जाता है। वह स्त्री गृहस्थ का पूर्ण त्याग किया हो। तब उसे यह संस्कार दिया जाता है। परन्तु उसे किसी भी अधिकारी का पद नहीं दिया जाता है। सेवा और साधना करना ही उनके लिए उचित है।

यहां खण्डीत कर्ण योगेश्वरों को सम्प्रदाय से बहिस्कृत किया जाता है।

अत: शिष्य पूर्ण साधक तथा विरक्त वृत्ति के उपरान्त वह भभूति काया धारन करने का अधिकारी होता है। अर्थात उसे भभूति गुरु संस्कार करना पड़ता है।

विभूति–सतगुरु जी

यह विभूति संस्कार प्राचीन काल में दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी के शीश पर भभूत डालकर आदिनाथ शिवजी के बड़ी प्रसन्नता से भभूत स्नान कराया था और उपदेश दिया था कि हे मत्स्येन्द्र नाथ जिस प्रकार मेरे भस्मी स्वरुप को मांगा है। तो इस भस्मी में जिस प्रकार काट अग्नि में जलकर भस्मी बनती है इसी प्रकार तुम ज्ञानाग्नि में जलकर अपनी कठोरता तथा सब बुरे संस्कार को जलाकर भस्म करना और धरती रुप भस्मी समान जिसमें मान अपमान से परे यानि सुख दुख के परे हो जाना। तद्पश्चात मत्स्येन्द्रनाथ जी के यही भस्मी स्नान गुरु गोरक्षनाथ जी को कराया। आगे अनंत सिद्धों को कराया और इस प्रकार यह भभूति सतगुरु तथा भस्मी स्नान–गुरु शिष्य परम्परागत से चलती आयी है। अत: शिष्य अवधूत का प्रथम मुण्डन कराते हैं। स्नान सुर्चिरभूत के उपरान्त चेतन धूना पर शिष्य को बुलाते हैं। आदेश नमस्कार के उपरान्त शिष्य मात्र लंगोटी में सतगुरु के सम्मुख आता है। अत: श्री नाथजी सतगुरु भस्म गायत्री मन्त्र द्वारा शिष्य के समस्त काया पर भस्म रमाते हैं। कोई–कोई केवल भस्म त्रिपुण्ड लगाते हैं।

भस्म गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! भभूत माता भभूत पिता, भभूत तरण तारिणी। मनुष्यते देवता करे भभूत कष्ट निवारिणी। सो भस्मंती माई जहां पाई तहां रमाई।

आद के योगी अनाद की भभूत सत के नाती धर्म के पूत। अमृत झरे धरती फूरे सो फल माता गायत्री चरे। गायत्री माता गोवरी करी, सूरज मुख सुखी अग्नि मुख जरी। अष्ट टंक भभूत नव टंक पानी, ईश्वर आनी पार्वती ने छानी। सो भस्मती हस्तक ले मस्तक चढ़ी। चढ़ी भभूत दिल हुआ पाक

अलख निरन्जन आपो आप। इति भभूत चढ़ाने का मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इस मन्त्र द्वारा भभूत रमाने के बाद शिष्य अर्थात अवधूत अपने भभूत सतगुरु जी को नादी बजाके आदेश करता है तथा चेतन धूना जो भभूत संस्कार में साक्षभूत होता है। उस धूना को नाद बजाके आदेश करता है।

अत: सतगुरु जी अवधू के कान में फूंक मारके या एकान्त हो तो प्रगट मुख-शब्द से भभूति का गुरु मन्त्र देते हैं। यह गुरु मन्त्र चार युग की भस्म गायत्री का होता है।

चार युग की भस्म गायत्री

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ प्रथम श्री अलील अनाद उत्पन्न भये, धर्म राजा धर्म गुसांई जी आत्म दृष्टि। त्रिभुवन मध्ये स्थापना थापलो। ॐ स्वामी जी सकल संसार सृष्टि। थाप लो सृष्टि लगाय लो बन्ध। आपौ आप उपायलौ जिन्द। खीर खाण्ड अमृत भोग खावन्ते तौ नर लोक। ते नर लोक मध्ये बयालिस पाखर चौसठ रोग, चौसष्ट रोग मध्ये विसासो द्वारु, विसा सौ द्वारु मध्ये श्री अलील अनाद धर्मराजा-धर्म गुसांई जी नीत प्रत तारन जोग।

बिजली कै चमक कै गुरा कै शबदै हर हर श्री अलील अनाद-धर्मराजा-धर्म गुसांई तुम तजलो प्राण धरलो ध्यान। ब्रह्माजी रुदन करन्ते, विष्णु जी रुदन करन्ते पार्वती जी करुणा करन्ते।

हर हर श्री अलील अनाद धर्मराजा-धर्म-गुसांई जी ऐसी निन्द्रा हम को काहे की लगाय बा हमको त्याग कर, पर घर काहे को जाय बा, ब्रह्मा जी भये, जल रुपी, विष्णु जी भये वसुंधरा स्वरुपी, पार्वती जी भयी अगर चन्दन, केसर कस्तूरी काष्ठभारा, श्री ईश्वर महादेव जी भये पवन स्वरुपी, श्री नाथ जी भये ेत स्वरुपी, पंचदेवता मिलकर भरकर जान बा आगै कान्ध ब्रह्मा जी धरन्तै, न्ध विष्णु जी धरन्तै आड़ा दीया कापड़ा, उभा दिया काठ, श्री अलील अनाद धर्मराजा धर्म गुसांई जी पांच देवता मिलकर ले चले सुरगा पुरी की

वाट। शिर जलन्ते पादुका जलन्ते, नाभी नाही जलन्ते नाभी स्वाहा। गंगा दर्शयान मै दीन्ही प्रवाह, राघो बाघो मच्छकै गर्भ ज्ञान में लिया अवतार। राघो बाघो मच्छकै गर्भज्ञान खीर समुद्र में बैठकर ज्योत कला ले उत्पन्न भये सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ जी। ज्यांसु उत्पन्न भई माता भस्म गायत्री, कोई जान चढ़ावे कोई अनजान चढ़ावे, जान चढ़ावे सो परमपद पावे, अनजान चढ़ावे सो अघोर कुण्ड में वासा वसै।

पूंछते ब्रह्माजी चले, चले गये ईश्वर महादेव जी के पास, हर हर ईश्वर महादेव जी यह भभूत को तुम क्या करबा। यह भभूती हम को देबा। अच्छा-अच्छा ब्रह्माजी तुम कहां जानो हमारी भभूति की सार, हमारी भभूत का करता हरता कुन बोलियै। हमारी भभूत करता, हरता श्रीनाथ निरन्जन श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथ जी देवा।

अच्छा-अच्छा हो ब्रह्माजी तुम को क्या देबा, तुमको देबा चार वेद, चवदा शास्त्र, सात वार, सत्ताईस नक्षत्र, अठारह पुराण, नव-व्याकरण, बारह रास, सोलह कला संध्य तर्पण, सूरज मन्त्र, चौबीस मन्त्र गायत्री एता ए षटकर्म तुम झेलौ हो ब्रह्माजी सूतक पातक, प्राथमिक भार तुम ही जावो मृत लोक में आचार्य होकर घर घर में तुमही पूजावोगै।

हमारा नाम बोलिये, ईश्वर आदिनाथ जी योगी, इन्द्रि के जती जिभ्या कै सती, गले पहैरबा उदासबास कंथा, नगरी खेडे आवैगे दूध-भात मांग-खावेंगे हम नहीं आयेंगे हो ब्रह्माजी तुम्हारा वेद शास्त्र के नेडै ॥१ ॥

पूछन्ते विष्णु नारायण जी चले, चले गये ईश्वर महादेव जी के पास, हर-हर श्री ईश्वर महादेव जी ये भभूति को तुम क्या करैबा। यह भभूति हमको देबा।

अच्छा अच्छा हो विष्णु नारायण जी। तुम कहा जाणौ हमारे भभूति की सार, हमारी भभूति का हरता करता कुन बोलिये। हमारी भभूति का हरता करता श्री नाथ निरंजन श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथ जी देबा।

अच्छा-अच्छा हौ विष्णु नारायण जी तुमको क्या देबा। तुमको देबा राजपाट छत्र सिंघासण, हीरा माणिक मोती भरै भण्डार, सोले सहस्त्रं गोपियों

कै भरतार, तुम को बुलायेंगे, तुमही जावो मृत लोके में भगवान होकर घर घर में तुम ही पूजावोंगे।

हमारा नाम बोलिये ईश्वर आदिनाथ जी योगी इन्द्रि के जती जिभ्या कै सती गलै पहेरबा उदासबास कंथा, नगरी खेड़े आवेंगे दूध भात मांग खावेंगे, हम नहीं आवेंगे हो विष्णु नारायण जी तुम्हारा राजपाट के नेड़े ॥२ ॥

पूछन्ती देवी पार्वती जी चले, चली गई श्री ईश्वर महादेव जी के पास अच्छा अच्छा ईश्वर महादेव जी यह भभूति तुमको क्या करैबा, यह भभूति हमको देबा।

अच्छा अच्छा देवी पार्वती जी तुम कहा जानो हमारी भभूति की सार, हमारी भभूति का हरता करता कोन बोलिये। हमारी भभूति का करता हरता बोलिये श्री नाथ निरन्जन श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी देबा।

अच्छा अच्छा देवी पार्वती जी तुमको क्या देबा तुमको देबा खड खांडा खप्पर माया मोह कनक कामनी, सुरत श्रृंगार भोग विलास। खेडे खेडे बैठकर तुमही पूजा जावेंगे देवी पार्वती जी मृत लोक में जावेंगे तो घर घर में नवदुर्गा ही तुमही पूजावेंगे।

हमारा नाम बोलिये ईश्वर आदिनाथ जी योगी इन्द्री के जती त्रिभ्या के सती गले पहरबा उदास-बास कंथा, नगरी खेडे आवेंगे दूध-भात मांगी खायेंगे हम नहीं आयेंगे देवी पार्वती जी तुम्हारा माया मोह के नेडे ॥३ ॥

पूछते देवी पार्वती जी ईश्वर महादेव जी को यह भभूती तुम क्या करबा, यह भभूती हमको देबा। कहे ईश्वर महादेव देवी पार्वती जी यह भभूती हमारे आसन, यह भभूती हमारे घासन, यह भभूती हमारे हस्तक ले-मस्तक चढ़े, जनम जन्मके पाप कटे, यह भभूत निन्दत सो नरा देवी पार्वती जी ब्राह्मण बनया शूद्र वंश से नरा जावन्ते नरके घोर देवी पार्वती जी।

जल लेत भस्म, थल लेत भस्म, बारेत भस्म, गगनेत भस्म, भस्म भस्म कर जानबा सिद्धों, सरीकत छोड़ फकीरत बांधो ॥ जल स्नान मल त्यागी, भभूत स्नान सदा सूचि ॥ गुरु मन्त्र स्नान हरन्त पापं, ध्यान स्नान लभन्ते

शिवपुरी ॥ शील सन्तोष दो स्नान तृतीय गुरु वाक्यम । चतुर्थ क्षमा स्नान दया स्नान पंचम ॥

यह पंच स्नान नित्य करन्ते देवी पार्वती जी कोन कोन नर राजे असरा, जोग राजेश्वरा, जोगश्वरा हम चलायेंगे । श्री अलील अनाद धर्मराजा धर्म गुसांई जी नित्य प्रति आरंभ जोग ।

ॐ आदिके जोगी अनाद की भभूत । सत के पूत धर्म के नाति, काल मार भये अवधूत ॥ अम्बर बरसे धरती निपजे, सो फल माता गायत्री चरे । गायत्री माता हरी भरी, गायत्री माता करी गोवरी ॥ सूर्य मुख सुखे, अग्नि मुख जरै । अष्टटांक भभूती नव टंक पानी ईश्वर गलेगा गौरजा पार्वती जी मिलकर छानी ॥ अनन्त कोट सिद्धों के आगे हस्तक लो मस्तक चढ़ी ॥ पालो भस्मती बान्धलो गांठ । तजो तजो हो मन्सा देवी जी प्रथमीकि भ्रान्त ॥ पदमकर आसन योग स्थिर । नित्य प्रति बालक रहे शरीर ॥ जाग्रत योगी रैन विहाय, अजरा जरे काल नहीं खाय । सुन्द्र कण्ठी को नर जाने, ते नर जान बसंदर जाने ॥ ईश्वर अम्बर कोट प्रमाणै । ऐसा योगी योग स्थिर भस्म लपेटे गंगा सो नीर । बोले खाल पखाले पानी, श्री गुरु गोरखनाथ जी दुनिया भस्म भस्म करि जानी ॥ अन्तकाल सिद्धों भस्म भस्म में समानी । सब कोई सिद्धों भस्म भस्म के उपाये । श्री नाथ निरन्जन श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथ जी राहे ॥ छत्र होय गुरु वन्दना करें, काटया घाव वज्र होय मिले । माई होय गुरु वन्दना करो दुध पूत लक्ष्मी अखूट रहे ॥ योगी होय गुरु वन्दना करें राधे ऋद्धि सिद्धि सदा सोहले लहै ।

सतयुग मध्ये सत् वाचा देवी पार्वती जी को बुलाय लो ईश्वर महादेव जी की घर घरनी मानस-सरोवर कैलाश बैठ स्नान करन्ती, तैंतीस करोड़ देवी देवता को जपन्ती शिव भस्मासुर मै हि लड़ाया मैं झगड़े सू न्यारी- मैं भस्मती आऊं भाय । राजा प्रजा लागे पाय ॥ मैं भस्मन्ती जस्मनती बज्रर बाला, भौ जोगनी रहता पुरुषनाथ निरन्जन गुरां की चेली जती सती क्रिया षटकर्म देखु तो सिद्धों के संग रमु नाथ जी नहीं तो पांचतत्व गुरु वायकले फिरु अकेली ।

त्रेता युग मध्ये देवी सीता को बुलाय लो राजा रामचन्द्र जी के घर घरनी

सेतुबंध रामेश्वर धनक तीर्थ बैठ स्नान करन्ती राम को जपन्ती रावण को हरन्ती दस शीश बिस भुजा को संहारती मैं झगड़ासू न्यारी । मैं भस्मती आऊ भाय । राजा प्रजा लागे पाय ॥

मैं भस्मन्ती जस्मन्ती मैं बजर बाला भौ जोगनी रहता पुरुषनाथ देखु तो सिद्धों के संग रमु नहि तो पंच तत्व गुरु वायक ले फिरु अकेली ।

द्वापर युग मध्ये सत वाचा देवी द्रुपदा को बुलायलो पांच पाण्डवा की घरघरणी पेवै कुल क्षेत्र बैठ स्नान करन्ति पांच पाण्डव को जपन्ती कौवरा को हरन्ती मैं झगड़ालू न्यारी, मैं भस्मन्ती आऊ भाय, राजा प्रजा लागे पाय । मैं भस्मन्ती मैं जस्मन्ती मैं वज्रबाला भौ जोगनी मैं रहता पुरुषनाथ निरन्जन गुरु की चेली, जती सती क्रिया षटकर्म देखु तो सिद्धों के संग रमु नहीं तो पंच तत्व गुरु बायकले फिरु अकेली ।

कलयुग मध्ये सत् वाचा देवी कालका को बुलाय लो चामुण्डा मेरा नाम अघोर कुण्ड बैठे स्नान करन्ती जती सती के पैरै जागन्ती पापी पाखण्डी दूराचारी को जल बल भस्म करन्ती । राजा रैयत मै ही लड़ाया मैं झगड़े सो न्यारी । मैं भस्मन्ती आऊ भाय । राजा प्रजा लागे पाय ॥ मैं भस्मन्ती मैं जस्मन्ती मैं वज्रबाला भौ जोगनी रहता पुरुषनाथ निरन्जन गुरां की चेली जती सती क्रिया षटकर्म देखु तो सिद्धों के संग रमु नहीं तो पांच तत्व गुरु वायकले फिरु अकेली । भोजन कारण माता बोलिये संध्या कारण भार ज्या । पूजा कारण देवी बोलिये, अन्त काल की कालका ॥ रुख तले बैठाया जाय, पांच घर भिक्षा लाये बा चेताय । अपनी ना करने बा औरो की ना सुन बा, सुनी सुनी हो जोगेश्वरा निरन्जर निराकार होय रहैबा ॥ चाहिये माता भम्मर सैसो सैस कुंवारा । लोहे की कोठी वज्र का ताला जा बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला ॥

हर हर हो श्री अलील अनाद धर्मराजा धर्म गुसांई जी तुम्हारे प्यण्ड प्राण पड़ा का मोक्ष मुक्त फल पावे ढलंत संख पूजिये सार सो जोगेश्वर पाये मोक्ष मुक्त द्वार ।

ॐ शिव शंकर स्वामी जी यह भस्मन्ति किस किसको चढ़े-सुन बा पार्वती कहे महादेव जी।

प्रथम भस्मन्ति चेतन पुरुष को चढ़ै। द्वितीय भस्मन्ति दोय चन्द्र सूर्य को चढ़ै। तृतीय भस्मन्ति तीन लोक को चढ़ै। चतुर्थ भस्मन्ति चारों वेद को चढ़ै। पंचम भस्मति पंचपांडों पंचभूत आत्मा को चढ़ै। सष्टमे भस्मन्ति सष्टदर्शन को चढ़ै। सप्तमे भस्मन्ति, सतनाथ ब्रह्माजी, सप्त वृशी को चढ़ै। अष्टमे भस्मन्ति अष्ट भैरो को चढ़ै। नवमें भस्मन्ति नवनाथ चौरासी सिद्धों को चढ़ै। दशमें भस्मन्ति दश औवतार को चढ़ै। एकादशी भस्मन्ति एकादश रुद्र महादेव को चढ़ै। द्वादशी भस्मन्ति द्वादश पंथ सिद्धों को चढ़ै। त्रैयदशी भस्मन्ति तैंतीस करोड़ देवी देवता को चढ़ै। चौदह भस्मन्ति चौदह भुवन को चढ़ै। पन्द्रह भस्मन्ति पन्द्रह तिथि को चढ़ै। सोलह भस्मन्ति सोलह श्रृंगार को चढ़ै। सत्ररह भस्मन्ति सीतामाता को चढ़ै। अठारह भस्मति अठारह पुराण अठारह भार वनस्पति को चढ़ै। उन्नीसवीं भस्मन्ति अलख पुरुष को चढ़ै। बीसवीं भस्मन्ति विष्णु-भगवान को चढ़ै। इक्कीसवीं भस्मन्ति इक्कीस ब्रह्माण्ड को चढ़ै। अनन्त भस्मन्ति अनन्त श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को चढ़ै। ओं देवी गौरजा देवी जी॥ अलील का प्याला खाकाम्बर बाघाम्बर चोला, पड़े न पिण्ड छीजै न काया, राख राख माता भस्म गायत्री पिण्ड प्राण अघोर पड़न्ता राखी।

भस्मन्ति माई, जस्मन्ति माई, जो राखे माता पुत्र की माई। जो राखे माता गऊ वत्स को गाई, अनन्त सिद्ध की रक्षा करन्ती आई॥ योगी के मस्कद सोहन्ती आई। उल्टन्त भस्मी पलटन्त काया। श्री नाथ जी का मार्ग सिद्धों ने पाया॥ चढ़ै भस्मी घट हुआ निर्माला। जती सती श्री नाथ जी तुम्हारी कला॥ बाजत ताल भान्जत काल, अनन्त कोट सिद्धों के आगे, गुरु गोरखनाथ तुम्हारा राज॥ काल को करकलट करैं, ठिंगाल तो चौकी भरैं। नाद बिन्द अनहद बाजा, जागती ज्योत आदेश करो सिद्धों श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ राजा॥ इति चार युग भस्म गायत्री पढ़न्ते गुणन्ते, साभलन्ते तो मोक्ष मुक्त का फल लभन्ते। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

इस प्रकार मन्त्र सतगुरु जी देकर शिष्य को अवधू पदवी देकर कृतार्थ करते हैं। फिर उसे भभूत कैसे रमाते हैं। काया प्रति योग्य भभूत कैसी बनाते हैं। इसकी क्रिया तथा विधि बताई जाती है।

भभूत बनाने की विधि

सुन बा अवधू—गौ गोबर सूर्य की कड़ी धूप में सुखायी जाती है जिसको कण्डे कहते हैं। धूना में जब वह कण्डे जलाये जाते हैं। तब रक्षा (राख) बनती है। उसे पानी में १०, १२ बार घोलते (मिलाई जाती) है। तदन्तर साफ से वस्त्र में छानते है। फिर छानी हुई (राख) रक्षा सुखायी जाती है। अत: इसमें गौ का दूध में गीला किया जाता है या मक्खन या दूध मलाई में तथा कर्पूर (सुगंधित द्रव्य) में मिलाया जाता है और उनके गोलाये (पिण्डी) तैयार करते हैं। तदपश्चात धूना के अग्नि में वह गोले अच्छी तरह पकाये जाते है। इस प्रकार भभूत बन जाती है और रोज थोड़ी—थोड़ी भभूत लेकर दैनैदिन क्रिया में काया को रमाने में उपयोग करते हैं। यह भभूत बहुत मुलायम, सुगंधित, काया को सुख देने वाली और तेजस्वी करने वाली होती है। यह जटाओं में भी रमाते हैं, जिससे जटा सुनहरी होती है।

अत: यह भस्म काया को रमाते वक्त अवधू अपने भभूत सतगुरु जी ने दिया हुआ मन्त्र का उच्चारण करते हैं तथा उसका पाठ करते हैं। फिर अवधू को भस्मी पलटने का मन्त्र देते हैं। यह मन्त्र भभूत सुखने के पश्चात झाड़ने की क्रिया में प्रयोग करते हैं।

भस्मी पलटने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! उलटन्त भभूत पलटन्त काया, श्री नाथ जी का मारग सिद्धों ने पाया, उलटे—पलटे खण्डे रोग। सत है धरती तत है योग।। चढ़ी भभूत घट हुआ निर्मल। यती सती जती श्री नाथजी तुम्हारी कला।। इतना भस्मी पलटने का मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

इसी प्रकार अवधू को श्मशानी भभूत रमानी हो तो अघोर मन्त्र का प्रयोग करते हैं। यह विधि सिद्ध सतगुरु जी के मार्गदर्शन में करें।

प्रथम निम्न मन्त्र प्रयोग से श्मशान में प्रवेश करें।

श्मशान में प्रवेश करने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी ॐ सुनसान सेवत श्मशान नाचत भूत देखत शैतान, मस्तक बिन्दी भैरव की हृदय वैसे महेश, वज्र काया, कालका माई कवच ठैरे। रक्षा करें गुरु गोरख सद्गुरु तुम्हें आदेश। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

यहां अघोरी भैरव गायत्री (बीज) मन्त्र से भैरव (सिन्दूर) तिलक तथा महाकाली का कवच पढ़कर भस्मी रमाते हैं या निम्न मन्त्र से श्मशान में भस्मी रमाते हैं।

अघोर गायत्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ जौ प्रमाण भक्षन्ते, तिल मात्रा तिलक करन्ते आद धर्म पार ब्रह्म बाला श्री सुन्दरी बाला नमोस्तुते अघोर–अघोर महाअघोर, ब्रह्मा अघोर, विष्णु अघोर, शिव अघोर, शक्ति अघोर, पवन अघोर, पानी अघोर, धरती अघोर, आकाश अघोर, चन्द्रमा अघोर, सूरज अघोर, पिण्ड प्राण हमारे बजर अघोर, आदन्त साधन्त अघोर मन्त्र स्थिरन्त, उठा हाथ की काया, आद का योगी अनाद की भभूत, सत का नाती धर्म का पूत, बिंद होना आई नाद, भूर नाद न किसे का ध्यान, किसे का पूता पानी सेत, न गुद गुद सेत, न हाड़ हाड़ सेत, न चाम चाम पड़े तां धरती माता लाजे पिण्ड पड़े तो सतगुरु राखे ऐसे पद को पूजन्ते, योगी आद अलील अनाहद बरसे अमरी साधे अमर काया, बजरी साधे वज्र काया, हाक मार हनुमन्त आया लोहे का कोट घाव ने आवे, रक्षा करे अचल बनखण्डी पीर, काला खिन्था, काला टोप काला है ब्रह्माण्ड, धर्म धूप खेवन्ते, वासना गई इक्कीसवें ब्रह्माण्ड, धर्म गुसांई जी धोती पखालो, सातवें पाताल–पाताल में परम तत, परम तत मध्ये जोत, ज्योत मध्ये परम ज्योत, परम ज्योत मध्ये उत्पन्न भई माता अघोर गायत्री अजपा जपा जपन्ति, पचास लाख कोट धरती मध्ये फिरन्ती, कुष्टीं का कोढ़ तरन्ति, अचल चल चलंति अभेद मण्डल भिदंति छिदंति अछिंत को पिवन्ति पीव–पीव करन्ति रुद्र देवता के बचने–बचने आपे के काज कुवारी आपे के पशु भरता तीनों जाय तीन पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेश अमर रहे, सेना सुमेर पटन सुनो देवी पार्वती जी आप कहे आप कहावे, आप सुने आप सुनावे, पद्मावती पार्वती श्याम को सलाम गुरा को प्रणाम पण्डित

को प्रमोद करी मूर्ख के हिर्दे न भावी फुरो ऋद्ध फुरो सिद्ध सत् श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अनन्त कोट सिद्धां ले उतरेगी पार मुझको भी ले उतरेगी पार। श्री नाथ जी के चरण कमल पादुका को नमस्ते नामाह्यहम इति घोर गायत्री मन्त्र सम्पूण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

भस्मी स्नान के बाद अघोरी अवधू अपने मंत्र सिद्ध करते हैं। जैसे भैरव, काली, सरभंग गोरक्ष किल फटकार, बन्ध इ० मन्त्र सिद्ध करते हैं।

अत: पुन: सतगुरु जी कुछ तपस्वियों के नियम अवधू को बताते हैं।

नियम

(१) प्रात: सूर्य उदय के पूर्व भभूत स्नान तथा मन्त्र ध्यान जाप विधि करना आवश्यक है। यहाँ त्रिकाल (प्रात:, मध्याह्न, संध्या) भस्मी स्नान भी करते हैं।

(२) तपस्वी मित आहारी शक्यतो फल आहारी रहना आवश्यक है।

(३) तपस्वी उच्च आसन नहीं बैठते खुर्ची तखत चारपाई इत्यादि तथा तपस्वियों को बैठने तथा शयन करने में नरम–नरम गद्दा (बिस्तर) वर्जित है तथा तखत, चारपाई पर शयन करना वर्जित है। तपस्वी को धरती यही आसन वासन होता है। (धरती आसन धरती वासन)

(४) तपस्वी केवल कटी वस्त्र या शक्यतो लंगोटी ऊपर रहें। शक्यतो (शीत काल में) एक कम्बल का उपयोग कर सकते हैं।

(५) शक्यतो तपस्वी खप्पर में भोजन करें।

(६) असभ्य भाषण तथा स्त्रियों से दूर रहते हैं।

(७) सतगुरु जी के आज्ञा का पालन करना अनिवार्य।

(८) यम नियमों से योग साधना नित्य करें इत्यादि नियम होते हैं।

उपदेशी–सत्गुरु जी

श्री नाथ सिद्धों में उपदेशी सतगुरु जी प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण तथा विशेष निरालापन देता है। उपदेशी सतगुरु जी की प्राप्ति नाथ सिद्धों के शंख ढाल क्रिया (योगमाया कर्म) में होती है। शंख ढाल विधि महात्मा के शरीर पूरा होने के बाद साल दो साल में करते हैं। इस विधि में सुवर्ण या चांदी की ७ पैड़ी वाली सीड़ी बनाते हैं और समा गये योगेश्वर नाम से पुतला बनाते हैं। सीड़ी सीधी कैलाश लोक में जाती है। अखण्ड ज्योति अनेक

यन्त्र—यन्त्र पीठ, भण्डार, गणेश अन्नपूर्णा स्थापना, कलश, क्षेत्रपाल दस कोटवाल तथा टैलुआ भण्डारी, कोठारी जती सती आसन क्रिया पुतला ऊपर मन्त्र विधि, चिरा इ०कर्म का समावेश होता है। मन्त्र द्वारा पुतला ७ पैड़ी चढ़कर कैलाश लोक में जाता है। पंच शंख क्रिया इत्यादि कर्म द्वारा शंखा ढाल क्रिया में समा गये योगेश्वर को मुक्ति मिलती है। यह विधि रात्रि में एकान्त में गुप्त रुप में होती है।

जब यह शंखा ढाल विधि होता है इसी विधि में अवधू को उपदेशी सतगुरु प्राप्ति होती है। प्रथम अवधू का मुण्डन कराते हैं। स्नान के उपरान्त उसे अन्दर (विधि के कक्ष में) बुलाया जाता है। फिर टैलुवा देवद्वारे प्रार्थना तथा उसे पूछा जाता है कि—

देवद्वारे समीपे प्रार्थना

ॐ रुपे का देवड़ा सोने सूं जड़िया किवाड़ साधू आया आस कर खोलो धर्म द्वार।।

टैलुवा का प्रश्न—ॐ अवधू किस का बीज किसका तुखम कौन प्रसादे मांग्या हुकम।।

उत्तर—ॐ अवधू शिव का बीज शक्ति का तुखम, सतगुरु प्रसादे मांग्या हुकम।।

प्रवेश—ॐ गत गंगा में जाय के जती गोरखनाथ जी को आदेश। कण्ठे बसे सरस्वती हृदय देव महेश पग पग की रक्षा करे गौरी नन्द गणेश।

फिर आसन मन्त्र से सतगुरु गद्दी समीपे अवधू को बिठाया जाता है। जहां अखण्डी महामाया ज्योत चेतन है।

आसन का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी । मन मारु मैदा करु करु चकनाचूर पांच महेश्वर आज्ञा करे बैठू आसन पूर।।

अतः सतगुरु जी चेतन अखण्डी ज्योति के सामने अर्थात ज्योत साक्ष रखकर अवधू के कान में उपदेशी मन्त्र दिया जाता है। शक्यतो यह मन्त्र अपने परम्परा से गुरु ने दिया हुआ ''गुरु मन्त्र'' ही सदगुरु जी इस अवधू को दिया जाता है। कुछ ज्ञात उपदेशी मन्त्र निम्न प्रकार होते हैं।

उपदेश मन्त्र–१

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सोंह इली क्ली श्री सुन्दरी बाला इत्युपदेश ॥

ॐ चेतन योगी ज्ञान का आधार, नाद मुद्रा का लिया ओंकार। श्रृंगार सिंगी सेली मेखली भूरी बाबरी काया, झमकार दस्तार गुफतार मिल खाक में रहना दिल कर पाक समझ विचार, अन्धेरा तोड़ चानन किया अंगन अंगन में सतगुरु मिले मन की भ्रमणा दई मिटा, गोदावरी क्षेत्र पर बैठकर, श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ जी अपने स्वरुप का धरिया ध्यान। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

योगमाया स्वरुप उपदेशी मन्त्र–२

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सों अलीय-कलीय, तारा त्रिपुरा तोतला। बायें हाथ पुस्तक दायें हाथ माला। जपो तपो श्री सुन्दरी बाला। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। जीव पिण्ड का तुम रखवाला। इतना योगमाया स्वरुप उपदेशी मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

महात्म्य-पाठ

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सोंह अलील अलील कलीय श्री सुन्दरी बाला। कौन जपन्ते ॐ कौन जपन्ते सोंह, ॐ जपन्ते निरन्जन निराकार अवगत स्वरुपी, सोंह जपन्ते, माई पार्वती महादेव ध्यान स्वरुपी। कोन जपन्ते अलीय, कौन जपन्ते कलीय, अलीय जपन्ते, ब्रह्माजी सरस्वती वेद स्वरुपी। कलीय जपन्ते धरती माता अन्नपूर्णा स्वरुपी। कौन जपन्ते सुन्दरी, कौन जपन्ते बाला। बाला जपन्ते, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी शिव स्वरुपी।

ॐ सुन्दरी पूछे देह कौन कौन योगेश्वरा कौन कौन नगेश्वरा आयी ईश्वरी आयी महेश्वरी, बायें हाथ पुस्तक दाहिने हाथ माला। जपो तपो श्री सुन्दरी गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। येता बाला बीज मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्ध में बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने नवनाथ चौरासी सिद्ध को पढ़ कथकर सुनाया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

उपदेश मन्त्र-३

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ गौरी शंकर आप अलेखा ब्रह्मा विष्णु को दिया उपदेश। सत आसन दिया बिछाय सतगुरु बैठे आय, ॐ सिंगी सों नाद बजावे तब ईश्वर गुरु मन्त्र पावे, अलख लखाई विद्महे महा अलख लखाई धीमही तन्नो अलख लखाई प्रचोदयात॥ श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

उपदेश-तारक मन्त्र-४

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ सों काशी क्षेत्र बनारस स्थान। सतगुरु गोविन्द लागे कान। निरन्जन गोरख तारक नाम। पढ़या मंतर त्रिपुण्ड ध्यान। तहां अलख निरन्जन, बैठे निर्वान। जाप जीये मन्त्र फुरे। चन्द सूर साख भरे। इतना तारक मन्त्र अवधू को तारे। सो अवधू मुक्ता फल को पावे। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

इस प्रकार और भी अपनी-अपनी संप्रदाय तथा पंथ तथा गुरु परम्परागत सतगुरु जी अवधू को कान मन्त्र देते हैं। तद्पश्चात जोत माई का पाठ करते हैं।

ज्योत माई का पाठ मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ धर्म तो माता, कर्म तो सती गोरक्ष तो जती बीज तो वनस्पति, मनसा तो जोगनी दोलते का नाम अजरा जोत का नाम, अनूप सत युग मध्ये कौन-कौन जोत बोलिये। शिव पूजन्ती धर्मवन्ती लाभवन्ती इतना पाठ जाप सम्पूर्ण भया। औलाद की मण्डली में बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहाया।

तदन्तर अखण्डी संस्थाप्य महामाया मन्त्र का भी पाठ करते हैं।

अखण्डी संस्थाप्य महामाया मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ असंख्य युग युगंत योग आद जोत युगाद जोत आवे अविनाशी न हले, न चले, न डिंगे, न डोले, न भखे, न चखे आप निरन्जन ने कही कहाई, कहो सिद्धों जोत

कहां से आई। गुरु के वचन धरना से आई आओ सिद्धों भरलो साखी सत सत श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी ने भाखी। उत्तर दिशा से धुन्धुकारा जोत जगाय किया जै कारा सोंह शब्द ले उतरो पारा अन्नपूर्णा अन्नपूरे तत पूरे गणेश, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो जोत जगाय महेश योगी को आदेश। सन्यासी को नमो नारायण, जंगम को शिव शरण, ब्रह्मा को नमस्कार सखेडे को अलख जागे साध को सलाम गत गंगा को हरनाम। इतना अखण्डी संस्थाप्य महामाया मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

इसी प्रकार और भी जोत माता की रौरस भी पढ़ी जाती है। (द्वितीय खण्ड में वर्णित है) अवधू उपदेशी दीक्षित होने पश्चात वह किसी भी शंख ढाल में जाकर रात्रि का कर्म जिसे ''अन्दर का कर्म'' या ''योगमाया पूजन'' कहते हैं। वह करने का अधिकारी होता है और जब अवधू के सतगुरु समा जाते हैं। तब उनकी शंख ढाल भी वह खुद करने का या करवाने का अधिकारी बन जाता है तथा वह भी शंख ढाल में उपदेशी सतगुरु बनने का अधिकारी होता है और दान धर्म इत्यादि कर्म करता है। इस प्रकार अवधू उपदेशी सतगुरु प्राप्त कराके कृतार्थ होता है।

योगमाया पूजन पद्धति कि विस्तृत जानकारी प्रकाशित की हुये श्री नाथ रहस्य खण्ड ४ '' **श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल**'' ग्रन्थ में प्राप्त होगी।

लंगोट (कोपीन—बाना) सतगुरु जी

लंगोट (बाना) सतगुरु की प्राप्ति, अवधू को चोटी सतगुरु प्राप्ति के समय ही हो जाती है क्योंकि उस वक्त मुण्डन तथा स्नान के उपरान्त लंगोट तथा भगवा बाना, चोटी गुरु जी ही प्रदान करते हैं।

कुछ योगेश्वर अलग सा लंगोट तथा बाना का सतगुरु जी बनाते हैं। उस वक्त सतगुरु जी लंगोट पहनने की क्रिया विधि बताते तथा उसका मन्त्र बताते हैं। चेला पक्का लंगोटी का अर्थात ब्रह्मचार्य का ज्ञान देते हैं। उसी तरह भगवे वस्त्र धारण करना (बाना पहनना) इसका भी मन्त्र तथा अन्य नियम देते हैं। अत: निम्न मन्त्र कहकर सतगुरु लंगोट देते हैं और इसी मन्त्र उच्चारण से चेला लंगोट नित्य नियम से पहनता है।

लंगोट का मन्त्र

सत नमो आदेश । गुरु जी को आदेश । ॐ गुरु जी । अजर का वज्र करु, वज्र का बन्द लगाऊँ ॥ शील का लंगोट, सन्तोष का धागा । ऊन का अड़बंद कमर में लागा । नागा पहिरे नागफणि हनुमन्त पहिरे लंगोट । गुरु महाराज का बाल गोपल कोपिन पहिरे, नवनाथ चौरासी सिद्धों की ओट । अदल की कोपीन वज्र का धागा, योगीश्वर कोपीन चढ़ावन लागा । शिव निर्माण पारा डिंगे अलष पुरुष की आन । पारा पारा महा पारा, पारा राखे गुरु हमारा-पारा उतरे सहस्त्रधारा ? सन्त रहे काल से न्यारा । पारा नाक रस्ते उतरे नासकेतु की दुहाई ? कान रस्ते उतरे कर्ण की दुहाई ? मुख रस्ते उतरे ब्रह्मा की दुहाई ? गुदा रस्ते उतरे गणपति जी की दुहाई ? लिंग रस्ते उतरे हनुमन्त यती की दुहाई, उल्टा पारा काया को चढ़े, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई-स्फुरे-इतना लंगोट मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश । आदेश ।

लंगोट ४ या साढ़े चार इंच चौड़ी तथा सवा से डेढ़ मीटर के दो वस्त्र के पट्टे लेवे, एक कमर में लपेटे गठन बान्धते हैं । दूसरा पट्टा आधा तय करे और पहले पट्टे में लपेटे मोड़कर पीछे रीढ़ के नीचे लपेट देवे । इसी प्रकार लंगोट बांधे, लंगोट अति पक्का नहीं बान्धे और ना ही ढीला बांधे । कुछ योगेश्वर लंगोट बना बनाया पहलवान (हनुमन्त) पद्धति से डालते हैं । वस्त्र गाढ़ा लाल या काला होना जरुरी है तथा वस्त्र खादी या खद्दड का होये ।

तदपश्चात सतगुरु जी स्पष्ट रुप से ब्रह्मचर्या का ज्ञान देते हैं । ब्रह्मचर्य यह सम्पूर्ण साधू सन्त योगेश्वरों की मूल आधार शिला है तथा नर नारी समस्त प्राणियों में मात्र में ब्रह्मचार्य अत्यावश्यक नियम है । अर्थात ब्रह्मचर्य यही जीवन है ।

नियम

मानसिक-

(१) मानसिक दृष्टया अवधू का मन और बुद्धि पूर्णता निर्मल, स्वच्छ होना चाहिये और इसलिये साधक हमेशा साधना (मन्त्र जप) भजन में अपने मनको व्यस्त रखे । खाली मन दुश्मन का घर होता है ।

(२) अवधू हमेशा निर्भय तथा निरागस भाव में रहना चाहिये मन बुद्धि पर अति दबाव नहीं होना चाहिये ।

(३) अवधू ने स्त्री से शक्यतो दूर रहना चाहिये । एकान्त में बालिका, कुमारी, औरत से भाषन ना करे । उससे रुप रस गंध स्पर्श इत्यादि से दूर रहे ।

(४) अवधू मानसिक दृष्टि से स्त्रियों को कोई भी भाव में अपनाना नहीं चाहिये । स्त्री के प्रति निरारस तथा कर्तव्य दक्ष होना चाहिये । स्त्री को किंसी भी भाव से देखेंगे तो किसी न किसी रुप से मन, बुद्धि असक्त हो जाती है ।

(५) ब्रह्मचर्य विषय में- पूर्ण आत्म विश्वास, धैर्य होना चाहिये ।

(६) मन चित्त सतगुरु मन्त्र जाप का हमेशा चिन्तन में रखे जिससे काम क्रोध मद मत्सर मोह से अवधू बचता रहे ।

(७) मन-बुद्धि में परिवर्तन होता ही है। इसलिये अवधू ने अपने काम क्रोध मद मोह, मत्सर को आध्यात्मिक क्षेत्र में शक्ति रुप में हमेशा परिवर्तनशील रहने का प्रयास करे ।

(८) मन और चित्त के ऊपर संयम करने के लिये योग साधना ही उत्तम उपाय है ।

(९) अवधू का मन तथा विचार सर्वस्वी व्यापक होना चाहिये सबके प्रति समभाव होना चाहिये ।

शारीरिक तथा आध्यात्मिक

(१) शारीरिक दृष्टि से ब्रह्मचर्य पालन के लिये योग साधना प्रत्येक महात्मा को परम आवश्यक है ।

(२) पंच यम-अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह तथा पंच नियम शौच सन्तोष तप स्वाध्याय-ईश्वर भक्ति तथा आस्तिकता, दान क्षमा घृति मितहार, सिद्धान्त श्रवण हीमती जप-हवन इत्यादि यम नियमों का पालन करने से मानसिक-शारीरिक तथा आध्यात्मिक अवधू योगा वृढ़ होता है ।

(३) कुछ योगासन जैसे– स्वस्तिकासन, कुम्कुटासन, भ्रदासन (गोरक्षासन) तथा प्राणायाम करे ।

(४) षट कर्म- धौति-वस्ति-नेति-त्राटक-नौलिक तथा कपाल भाती ।

(५) मुद्रा- महामुद्रा, महाबन्ध, महावेध, खेचरी, उडयान, मूलबन्ध, जालन्धर बन्ध, विपरीत करनी, वज्रोली, शक्ति चालन १०, मुद्रा करे।

(६) अवधू ने अपने सतगुरु प्रसन्नता अनुग्रहित प्राप्ति करना बहुत जरुरी है। जिससे यह सब यम नियम-योगासन षटकर्म-मुद्रायें, उत्कृष्ट प्राणायाम की प्राप्ति होती है तथा शक्ति प्राणशक्ति जाग जाती है। काया के छह कमलचक्र तथा ब्रह्मा विष्णु महेश ग्रन्थियों का भेद खुल जाता है।

(७) पंच इन्द्रिय स्वच्छता- स्नान, सुबह शाम करे।

(८) अति भोजन, अति निन्द्रा-अति श्रम नहीं करे। फालतू बकवास-अश्लील बातचीत-अश्लील चलचित्र तथा पुस्तकों से दूर रहे।

(९) स्नान वातावरण अनुकूल गरम ठंडा पानी से करे।

(१०) भोजन मास मच्छली, व्यसनी शराब सुलफा तंबाकू बीड़ी सम्पूर्णता वर्ज करे।

(११) अवधू अपनी साधना एकान्त में करे।

(१२) अवधू ने साधना तथा अपने सतगुरु प्रति उत्साह, साहस, धैर्य, निश्चय आत्मविश्वास में रहना चाहिये।

(१३) आत्म-परमात्म परमेश्वर अपने इष्ट देवता के प्रति नितान्त विश्वास और उत्कृष्ट भक्ति होना अनिवार्य है जिससे भक्ति योग में सहज भाव निर्माण होये।

(१४) भक्ति योग में जब भक्ति की परम उत्कृष्ट परम उच्च अवस्था निर्माण होती है। तब अवधू का मन के सम्पूर्ण विकार एवं बुरे संस्कार नष्ट होते है।

(१५) भक्ति योग में अवधू जीव दशा से आत्म दशा में भी आ जाते है।

(१६) हटयोग से ही मन चित्त निग्रह कर सकते है।

इत्यादि नियम सिखाते हैं।

अतः लंगोटी के पश्चात सतगुरु जी अवधू को बाना पहनने का वर्णन करते समझाते हैं।

बाना

आदिकाल में बाघाम्बर तथा (मृग चर्म) मृगछाला का वस्त्र स्वरुप में उपयोग करते थे। मृगछाला कटी वस्त्र रुप में लपेटकर पहनते थे। यह

बाघाम्बर और मृगछाला जप तप के लिये आसन रुप में बिछाते थे। तदपश्चात सतयुग में एक बार आदिनाथ जी ने सती पार्वती को गुह्य ज्ञान तथा योग ज्ञान आत्म ज्ञान का उपदेश सुनाया तब सती पार्वती को ज्ञान के प्रभाव से वैराग्य तथा त्याग भाव निर्माण हुआ तब यह शिव शक्ति ने अपने रक्त से चोला बनाया था। आगे जब गुरु गोरक्षनाथ जी की माता पार्वती ने परीक्षा ली थी। तब गुरु गोरक्षनाथ जी को मां का भाव उत्पन्न हुआ था। माता पार्वती ने बड़ी प्रसन्नता से यह रक्त रुप चोला गुरु गोरक्षनाथ जी को दिया। तबसे यह रक्त रुप में भगवा को नाथ सिद्धों ने अपनाया और सभी साधू सम्प्रदाय में यह भगवा वस्त्र एक विशिष्ट रंग जो कि त्याग और वैराग्य को प्रतीक मानने लगे। अतः इस भगवे को समस्त तीन लोक में सम्मान है। इस भगवा बाना को भूत प्रेत असुरी शक्तियां भय से दूर भागती हैं। ज्ञान वैराग्य त्याग तपस्या ब्रह्मचार्य, सत्य अहिंसा दया-क्षमा, आदर्श मर्यादा शान्ति इत्यादि सभी गुण इस भगवा बाने में विद्यमान हैं। नाथ सिद्धों में निम्न प्रकार से भगवे बाने पहनते हैं। "भेष भगवान" यह नाम भगवा भेष अर्थात् भगवा बाना से ही जुड़ा हुआ शब्द है।

कन्था - यह चोला भगवे लाल (रक्त रंगीन) तथा गेरुए रंग का होता है। पहनने के बाद योगी का गले से लेकर घुटने के नीचे तक सम्पूर्ण काया को ढक लेता है। यह चोला ब्रह्मचारी योगी पहनते हैं। इससे मन्त्र शक्ति, तन्त्र शक्ति, तारण-स्तम्भन शक्ति में विद्या यह कंथा धारण करने से प्राप्त होती हैं।

अल्फि - यह भी कन्था चोला का ही एक प्रकार का वस्त्र है। भगवा-लाल-गेरुआ रंगों का पूर्ण शरीर ढकने वाला बाना होता है। इसमें बड़ी-बड़ी जेब होती हैं। दोनों हाथों में यह खुली बाह वाली अल्फि ज्यादातर तपस्वी योगेश्वर पहनते हैं यह ब्रह्मचर्य-हटयोगी तपस्या का आदर्श मानते हैं। जप साधना तथा उग्र तपस्या की प्राप्ति होती है।

गाति - यह ८-९ मीटर लम्बी धोती होती है। लाल-भगवा-रक्तीला-सफेद तथा गेरुआ रंग की धोती इस प्रकार पहनते हैं कि दोनों हाथों के बगल में से दो छोर निकाल कर वक्षस्थल पर से दोनों कन्धे पर विरुद्ध

दिशा से लपेटकर कमर में गांठ बांधते है। जिससे योगेश्वर चलने फिरने में उठ बैठ मैं आसान लगता है। यह गाति रमते राम योगेश्वर पहनते हैं। कर्म योगी स्थानधारी भी पहनते हैं।

कटी वस्त्र - यह कटी वस्त्र डेढ़ मीटर या दो-तीन मीटर वस्त्र भगवा-लाल रक्तिला-गेरुआ-सफेद रंग का होता है। उसे अंचला भी कहते हैं। केवल कमर में ही लपेटकर बांधते हैं। कमर से घुटने तक पहनते हैं। बाकि शरीर खुला होता है। रम्मत करने वाले महात्मा तथा तपस्वी भी अंचला पहनते हैं।

गूदड़ी-कम्बल - यह गूदड़ी लम्बी चौड़ी शरीर पर ओढ़कर लेते हैं। इसका आसन में बैठने को तथा सोते समय में ओढ़ने को काम आता है। इसी प्रकार कम्बल भी उपयोग में लाते हैं।

पंच बाना - इस पंच बाना में लंगोटी, धोती (कटी वस्त्र), बण्डी-कुर्ता-साफा (सिर के ऊपर का फेंटा या पगड़ी) यह सब पंच बाना भगवा, लाल गेरुआ रंग का होता है। बड़े-बड़े स्थानधारी-मठधारी-महन्त, पीर योगेश्वर बने बनाये सिलाई कराये पहनते हैं।

लंगोटी - कुछ योगेश्वर केवल लंगोटी पहनकर तपस्या तथा भ्रमण करते हैं। त्यागी, तपस्वी, ब्रह्मचारी इस लंगोटी को पहनकर रहते हैं। लाल-काली, सफेद सुती लंगोट पहनते हैं। भगवे वस्त्र के साथ योगेश्वर को चाहे कन्था, अल्फि, गाति, कटिवस्त्र या पंचबाना पहने उसके सिर पर साफा (पगड़ी) जरुर रहता है। योगेश्वर चाहे जटाधारी हो या मुण्डन हार शीश पर कपड़ा जरुर लपेटते हैं। नंगा शीश अशुभ मानते हैं। इस प्रकार और भी भगवे बाना के नियम, गुणधर्म, आचरण इत्यादि का ज्ञान सतगुरु अवधू को देते हैं और निम्न मन्त्रों से बाना पहनते है जो

(१) भगवेबाना मन्त्र. पृ.स. ६ (२) गोरक्ष गायत्री पृ.स. ७ (३) काया गायत्री पृ.स. १७३ तथा निम्न श्री नाथ पंचमात्रा जाप मंत्र से भी बाना पहनते है।

श्री नाथ पंचमात्रा-जाप

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। जाप जपे जाप अलख जगावे। योगी अवधूत सेली सिंगी मेखला पाताल लोक की योग, युगत निरझम कलम स्वासा, मुद्रा चक्र काया, खप्पर त्रिशूल झोली झंडा

हाल मतंगा हाथ का कंगन पाव का लंगर भूज का बाजूबन्द धूरी कटारी भगवा कंथा भाखडा माथे लाल सिन्दूर का तिलक सैली सिंगी, रक्त गाति भगवा साफा, भभूती सिर जटा सिर की टोपी, सिर का बाल चक्कर, त्रिशूल फावड़ी चिमटन गोरख धन्धा तुम्बी चल छड़ी तू क्या पूछे अलष रुप पुरुष की बात, मैं योगी अवधूत तीन युगों से न्यारा खेलू मैं योगी अवधूत आवो सिद्धों बैठो सिद्धों बैठे जंगल की हिरनी। हम क्यों बैठे योगी अवधूत, तीन युगों से न्यारा खेलू योगी अवधूत श्री गोरख अवधूत। पंचमात्रा मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धो में बैठकर त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला पर शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी ने पढ़ कथ कर सुनाया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

अतः हम "गोरख धन्धा" शब्द–उक्ति पर विश्लेषण करते हैं।

।। गोरख धन्धा।।

यह शब्द–उक्ति नाथ सिद्ध सम्प्रदाय में अत्यंत प्रभावी प्रचलित एवं प्रख्यात है जो कि नाथ पंथ के शिष्य, भक्त तथा प्रत्येक अनुयायी बड़ी श्रद्धा से गुरु गोरक्षनाथजी को इष्ट मानकर उनके सभी आयाम के प्रति सम्बोधित करते है। उन्होंने हटयोग साधना के द्वारा योग पक्ष में अनेकों आसनों, प्राणायाम, प्रत्याहार, षटकर्म अनेक मुद्राए ध्यान धारणाएं समाधियों तथा नादनुसंधान इत्यादि कि अनन्त प्रक्रियायें स्वयं अनुभूति द्वारा अनन्त खोज की है और नाथ सम्प्रदाय के सर्वत्र प्रख्यात शाबर एवं साम्भरी मन्त्र तन्त्र यन्त्र की साधनायें जिसमें गुरु–शिष्य परम्परा, भक्त–सेवक तथा सम्प्रदायिक मर्यादायें एवं संस्कार स्थापित किये जिसमें मन–इन्द्रियों देह के ब्रह्मचार्य से संयम करना तथा पूजा पाठ यज्ञ हवन जप तपस्या वैराग्य ज्ञान इत्यादि मंत्र तंत्र कर्मकाण्डों से ईश्वर भक्ति जिसका उद्देश्य जन कल्याण करते हुए मोक्ष मुक्ति तक जाने का रहा है। वह महा सिद्ध थे समय समय पर गुप्त–प्रगट होना, आकाश गमन, रूप बदलना रूप को लघु–विराट करना, परकाया प्रवेश, संजीवन मन्त्र से मृत को जिवित करना, पंचतत्व वशित्व इत्यादि अपने रहस्यमय सिद्धियों से राजाओं, प्रजाओं को प्रभावित करके शिष्य बनाके उन्हे मोक्ष मुक्ति तक भेज दिया अतः इन रहस्यमय योग–सिद्धियाँ तंत्र मंत्र विधि विधान अनेकों शुभ संस्कार इनके अनुभव,

खोज और मुख्यता इनका रहस्य जिसको कोई अन्त नहीं है उस अनन्त रहस्यों को कोई गिन भी नहीं सकता और नाही हर कोई साधारण या आम व्यक्ति समझ सकता, उनकी स्वयं की इच्छा थी कि उनसे सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं को इस प्रकार रहस्यमय बना दिया जाय जो कुछ लोक को समझ में ना आये तो कुछ के समझ में आ जाये इस कारण नाथ सम्प्रदायके लोक, भक्त, शिष्य जिज्ञासु कवि लेखक, साहित्कार, उनकी योग-सिद्धियाँ-खोज-रचानाओं को "गोरख धन्धा" इस शब्द इस उक्ति से संबोधित करने लगे।

अतः उपरोक्त गोरक्ष पंच मात्रा मन्त्र जाप के संकेत अनुसार हमारे नाथ सम्प्रदायके साधु सन्त गोरख नाथजी के स्मरण, चिन्तन एवं जाप करते हुये नाद जनेऊ, झोलियाँ, शैली, अडबंद, भगवा बाना, छड़ीयाँ धागो में धागे बुनबुनकर बनाते है तथा मृतिका के या फत्तरों के कुण्डल तथा विभिन्न धातुओं में त्रिशूल, चिमटे, खप्पर, नागफणियाँ इ० बनाते है। जिनका विनियोग विभिन्न साधना-तपस्या पूजा पाठ यज्ञ हवन कर्मकाण्डों में किया जाता है। जोकि साधु सन्तों को कर्मयोगी भक्तियोगी इ० बनाता है। जोकि यह सभी सुसंस्कारित क्रियायें, मर्यादायें विधि विधानादि कर्मकाण्ड इन सभी विभिन्नता को गुरु गोरखनाथजी द्वारा संस्थापित प्रतिपादित किया गया है अतः इन सभी पक्ष को गुरु गोरखनाथ जी के सम्मान-आदर तथा उनकी महानता के रूप में यह "गोरख धन्धा" शब्द जो उनके ही प्रति सम्बोधित किया जाता है।

इस प्रकार श्री नाथ सिद्धों में पांच सतगुरु बनाने की विधि सम्पूर्ण भया।

सतगुरु पूर्णिमा

सतगुरु पूर्णिमा प्रति वर्ष आषाड मास में आखिर दिन में शुक्ल पक्ष में आती है। यह समस्त नाथ सिद्ध गुरु-शिष्य परम्परा का अति महत्व का दिन होता है। सृष्टि में जहां-जहां गुरु शिष्य हैं। वह सब गुरु पूर्णिमा उत्सव में भक्ति तल्लीनता से मनाते हैं। इस दिन सतगुरु जी के परमप्रिय शिष्य-प्रियभक्त-साधक-सेवक तथा और जन जनता सतगुरु पूजन दर्शन सेवा का लाभ लेते हैं। इस दिन का सतगुरु-शबद-आशीर्वाद तथा उपदेश या गुरु कृपा अनन्त-लाखों मोल की होती है।

गुरु पूर्णिमा को सतगुरु चरण पादुका की पूजा बड़ी श्रद्धा से तथा नाथ सिद्धों के सिद्धान्त रुप विधिवत की जाती है। सतगुरु जी को अभ्यंग स्नान, दूध दही घृत गंगाजल शहद इत्यादि पंचामृत स्नान कराते हैं। सुगन्धित उबटन लगाया जाता है। पवित्र गंगाजल से अभिषेक स्नान होता है। सतगुरु जी को नये भगवे वस्त्र अर्पण होते हैं। सतगुरु जी का आसन जहां तक हो सुवासिक पुष्पों से सजाया जाता है। वह आश्रम (मठ, मन्दिर स्थान) आम्र-निम्ब पल्लवों से पुष्पों से सजाते हैं। दरवाजों में तोरण लगाया जाता है। सतगुरु जी पुष्पों के ऊपर चलकर जहां दरवाजे से लेकर आसन (सिंहासन) तक बिखरे पुष्प डाले होते हुये हैं। सुशोभित आसन गद्दी लोड या बाघाम्बर पर आकर विराजते हैं। इस विधि में भक्तगण सेवक गुरु महिमाओं के मधुर गीत गाते हैं। अतः प्रिय शिष्य गण लौकिक पंचोपचारे पूजन करते हैं। सुगन्धित चन्दन टिका-बिल्वपत्र-कमल पुष्प शीश स्थान चढ़ाते हैं तथा गले में बिल्वपत्र तथा पुष्पों की माला तथा रुद्राक्ष मालायें डालते हैं। धूप दीप नैवद्य अर्पण करते हैं। नाथ सिद्धों में-भगवे वस्त्र, नाद जनेऊ कर्ण कुण्डल (मुद्रायें) रुद्राक्ष माला, खड़ाऊ इ० अर्पण करते हैं। भक्त सेवक अपने प्राप्ति अनुसार पैसे (पूजा) सुवर्ण चाँदी हीरे मोती इ० अर्पण करते हैं। अतः चरण स्पर्श और पूजन के पश्चात मन्त्र पुष्पांजलि आरती की जाती है। चँवर झुलाते हैं। शीश के ऊपर छत्र धरते हैं। इस प्रकार बड़ी श्रद्धा से अपने इच्छानुरुप गुरु पूजन धूमधाम से उत्साहपूर्वक मनाते हैं। फिर नाथ सिद्ध शिष्य गण सतगुरुजी को नादी बजाके आदेश (३ बार) करते हैं। चरण स्पर्श मत्था टेकते हैं। सतगुरु जी कृपा दृष्टि से आशीर्वाद तथा प्रसाद देते हैं। सेवक तथा भक्त गण चरण स्पर्श दर्शन लेकर कृतार्थ होते हैं। अतः सभी सतगुरु जी के सम्मुख बैठते हैं। सभी को सावधान करके सतगुरु जी उपदेशामृत व्याख्यान करते हैं। (सतगुरु जी महिमा में वर्णन किया है) गुरु शब्दार्थ यह है कि "गु" अन्धकार हटाना "रु" याने प्रकाशित करने वाले। अर्थात अज्ञानी जीव को सज्ञानी बनाकर अन्धकार से हटाकर ज्ञान प्रकाश में लाते हैं। नाथ योगेश्वर सतगुरु जी को प्रत्यक्ष अलख निरंजन ज्योति स्वरुप गारेक्षनाथ जी का स्वरुप ही मानते हैं। कर्तव्य-विवेक मुक्त मार्गदर्शक उपदेश देते हैं आदिभौतिक, आदि दैविक

तथा आध्यात्मिक सन्तापों से शीतलता देते हैं। सतगुरु जी ८४ लाख योनि फेरे से मुक्त कराते हैं। भव सागर में डूबे हुये प्राणियों के मार्गदर्शक होते हैं। अपने शिष्य भक्तों, साधक सेवक सबको–आत्मतत्व–ईशतत्व, आत्मज्ञान ब्रह्मज्ञान, सगुण, निर्गुण योग, साधना इत्यादि सभी प्रकार के उपदेश करते हैं। गुरु पूर्णिमा यह गुरु शिष्य एकता का सुगम समय है। सतगुरु जी मन्त्र उपदेश गुरु शिष्य मर्यादा कर्तव्य पर भाषण देते हैं। गुरु बिन ज्ञान नहीं गुरु बिन गति नहीं गुरु बिन शिष्य ही नहीं। तदन्तर शिष्य, भक्त निम्न प्रकार गुरु प्रणाली सतगुरु आरती, सतगुरु महिमा, सतगुरु चालीसा इत्यादि का पाठ करते हैं।

मूल सतगुरु प्रणाली

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! योगी के सतगुरु बोलिये तै कौन–कौन। ॐ योगी के चोटी गुरु बोलिये श्री ॐकार आदिनाथ जी। योगी के (भगवा) बाना गुरु बोलिये उदयनाथ पार्वती जी। योगी के उपदेशी गुरु बोलिये, सत्यनाथ ब्रह्माजी। योगी के भभूती गुरु बोलिये, सन्तोषनाथ विष्णु जी। योगी के कुण्डलीनी गुरु बोलिये, अचल अचम्बेनाथ जी। योग के ऋद्धि सिद्धि गुरु बोलिये गजबेली गजकंथड़नाथ गणेश जी। योगी के धन्वन्तरी गुरु बोलिये सिद्ध चौरंगीनाथ जी। योगी के चिरागुरु बोलिये, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी। तरण तारण जग उद्धारण त्रिलोक सृष्टि गुरु बोलिये। सतगुरु बोलिये शबद गुरु बोलिये। आवै न जावै विनशै न अवतारे। अविनाशी बोलिये। पारब्रह्म अयोनी शम्भुकर्ता हर्ता बोलिये। इतना मूल सतगुरु प्रणाली पढ़न्ते सुनन्ते संभालन्ते। ते नरा पाप न लिपन्ते, पुण्य न हरन्ते मोक्ष मुक्ति फल पावन्ते। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

ॐ नमो शिवाय। दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी को आदेश। गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश।

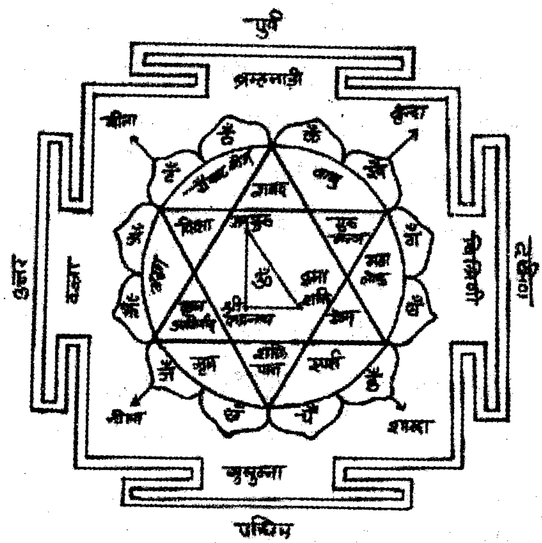
* * *

सतगुरु यन्त्र (अनहद चक्र)

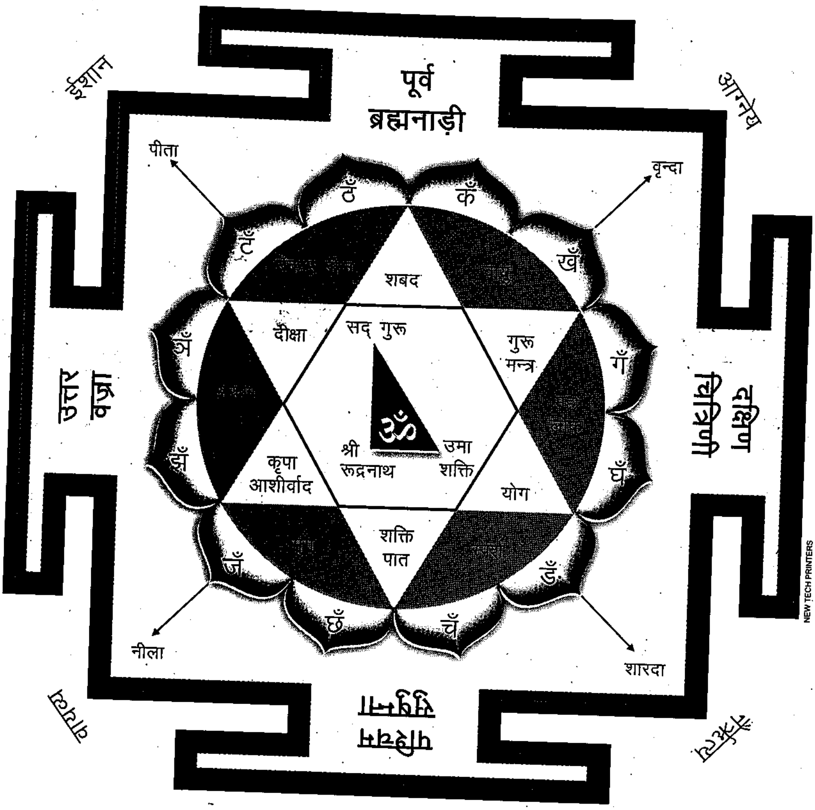
सहृदय नाता होता है, गुरु–शिष्य का भक्ति प्रेम श्रद्धा आद्रता इ० होता है हृदय में। हृदय–प्राण–ज्योत से योग में चेतनता आती है। यह है हृदय का मन्त्र अर्थात अनहद चक्र अर्थात् सतगुरु यन्त्र।

योगेश्वर योगावृढ होता है। प्राण–अपान प्राणायाम से चित्त में एकाग्रता लाता है और अपनी एकाग्रता हृदय स्थान मध्ये केन्द्रित करता है जिसे अनाहद चक्र कहते है। इस चक्र का मुख नीचे है। बारह दल का कमल पुष्प पर विष्णु जी का चक्र विराजमान है। बीज शब्द कँ खँ गँ घँ ङँ चँ छँ जँ झँ टँ ठँ इन दलों पर है। तत्व वायु अर्थात प्राण अपाण है। तत्व का बीज यँ शब्द है। यन्त्र मध्ये में सतगुरु यन्त्र जो मृगावाहन पर आरुढ़ है। खड़े त्रिकोण के ऊपर सतगुरु जी तथा देवता रुद्रनाथ जी (श्री) तथा शक्ति उमा देवी विराजमान है। अर्थात सतगुरु शब्द (मन्त्र) से रुद्र–उमा शक्ति का मिलाकर योगी महः लोक जाकर महानन्द कैवल्यानन्द प्राप्त करता है। ध्यान योग में योगी षटकोण यन्त्र को खडदर्शन स्वरुप में पार करना पड़ता है। अर्थात सतगुरु प्राप्ति दीक्षा, शबद, (गुरु मन्त्र)–प्राप्ति के पश्चात कृपा आशीर्वाद से पूर्ण योग (दृढ़ता) में आता है। तब सतगुरु स्पर्श गुण से शक्तिपात जहां पश्चिम द्वार से निकली हुई सुषुम्ना जागृत करते हैं। पूर्व द्वार से निकली हुई ब्रह्मनाड़ी पर ब्रह्मा आरुढ़ हैं। जिससे ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है तथा उत्तर द्वार में वज्रा और दक्षिण द्वार से निकली हुई चित्रिणी जाग्रत से योगी, ईशत्व सिद्धि को प्राप्त होता है तथा

सद्गुरु यन्त्र (अनहद)



सद् गुरू यन्त्र (अनहद)



चित्रांकन : योगी विलासनाथ

पीला-नीला-वृन्दा-शारदा जाग्रति से काव्य शक्ति बाला को प्राप्त करता है।

इस प्रकार योगेश्वर अपने योग में हृदय के ऊपर ध्यान केन्द्रित कराके पूर्ण समाधि में आनन्द उपभोगते हैं।

यन्त्र विधि

यह यन्त्र शुभ मुहूर्त (गुरु पूर्णिमा) के दिन ताम्र पत्र के ऊपर बनवा लें फिर प्रति दिन पवित्र होकर मृग चर्म पर भगवा वस्त्र डालकर (ऊन का कुशासन भी चलेगा) आसन लगाके उत्तरामुख बैठे भभूत मन्त्र से भभूत त्रिपुण्ड मस्तक ग्रीवा हृदय स्थान हस्त बाहुन, हथेली इ० धारण करे। इस यन्त्र को चौकी के ऊपर सफेद। भगवा वस्त्र पर स्थापन करे। पंचोपचारे पूजन करे धूप गुग्गल का दीप गौघृत का लगावे। लाल कमल फूल चढ़ावे। यन्त्र का पूर्ण (पूर्व कथित) अभ्यास करके चित्त में स्मरण रखे। अतः १०८ पीरों रुद्राक्ष माला से निम्न मन्त्र एक माला जाप करे।

सतगुरु यन्त्र का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी। ॐ आदि अनादि अखण्ड ज्योति। जोत जागे बिन बाती। सतगुरु शिव शक्ति मिल थापना थापी। ब्रह्माजी बैठे ब्रह्मनाडी, रुद्रनाथ जी संग उमा बैठी विषण चक्र, कमल में छत्र। मृगासन दिया बिछाय सतगुरु बैठे हृदय निवास। ॐ रुद्रनाथ जी का शंख बाजे। अनहद नाद का डंका बाजे। ईश्वर गुरु देव ने मन्त्र फूंका। जपो मन्त्र काटो पाप सत्‌गुरु सम्भालो अपना आप। गुरु शबद दीक्षा दीन्ही। इडा पिंगला जोगन भेटी। सुषम्ना मिल्या शिव घर शक्ति बैठी। ज्ञान गुरु मिलीया ज्ञान सिद्धि। पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर महालोक में ईश सिद्धि। सतगुरु मन्त्र शक्ति बाला। रक्षा करे गुरु गोरखनाथ बाला। इतना मन्त्र जपे तपे सुमिरण करे। सो पर काया प्रवेश सिद्धि को पावे। जो ना करे सो भव सागर डूबे। इतना सतगुरु मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

तदन्तर कम से कम एक घण्टा अपने दिये गुरु मन्त्र का जाप करें या "ॐ शिव गोरक्ष योगी" इस बीज मन्त्र का जाप करे। योग क्रिया उपरोक्त वर्णन किया है।

इस प्रकार प्रतिदिन यह योग क्रिया ४१ दिन या सवा वर्ष (१५ मास) या बारह साल करे मन्त्र सिद्धि उपरान्त अनुभूति आयेगी। जब योगी अपनी समस्त शक्ति इस अनहद सतगुरु यन्त्र में केन्द्रित करता है। तब इन्द्रिय संयम अहंकार रहित–इच्छायें रहित शान्ति को प्राप्त करता है। चित्त शक्ति केन्द्रित अनहद चक्र जाग्रत होने पर शिव शक्ति मिलन अनुभूति होती है।

उतरोत्तर साधना बढ़ाने से उच्च अवस्था में योगी ईशात्व सिद्धि को प्राप्त करता है और उच्च अवस्था में काव्य शक्ति निर्माण होती है। गुरु कृपा इष्टदेवता आशीर्वाद तथा योग साधना की परम उच्च अवस्था (कुण्डलीनी अनहद चक्र भेदन) में योगी परकाया प्रवेश सिद्धि को प्राप्त करता है।

यह सिद्धि मायारुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी को प्राप्त थी। जो कि गुरु यन्त्र स्वरुप में प्रत्यक्ष शिव लिंग बनाके हृदयस्थ (अनहद चक्र में) ध्यान शक्ति को केन्द्रित करके परमोच्च अवस्था को प्राप्त किया था।

यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर कन्हेर या आंख के कलम से केशर से लिखकर गले में बान्धने से भव दुःख निवारण होके शन्ति को प्राप्त होती है। यह विधि गुरु पूर्णिमा, श्रावण सोमवार (तीसरा) या सोमवती अमावस्या को करे।

यह सतगुरु यन्त्र साधना करने पर जिसको गुरु प्राप्त नहीं हो उसे योग्य सतगुरु प्राप्ति होती है। प्रथम दृष्टान्त (जाग्रत) में मन्त्र देते हैं और प्रगट सतगुरु संस्कार यन्त्र सिद्धि के पश्चात होती है।

यन्त्र पूजन जाप के पश्चात निम्न सतगुरु महिमा जाप का पाठ करे।

सतगुरु जी महिमा जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐगुरु एक ओंकार तेरा आधार तीन लोक में जय जय कार, गुरु जी की महिमा अपरम्पार। गुरु विश्वम्भर, गुरु मुख ज्ञान, गुरु बिन कदे न हो कल्याण। गुरु महाराज गुरु देवन के देव। गुरु कामधेनु गुरु कल्पवृक्ष, गुरु अलख पुरुष सतगुरु कृपा से परमेश्वर मिले। सतगुरु शबद मस्तक धारे। गुरु गंगा, गुरु गोदावरी, गुरु ज्ञान गुरु ध्यान, गुरु नेम, गुरु धरम, सतगुरु जी पारब्रह्म अवतार। गुरुजी सबके

सर्जन हार। सतगुरु महिमा आप समाई ऋषि नारद ने ऐसी किनी ले लक्षा दे दिक्षा दीनी तन वश करके नाम जपा में लक्ष चौरासी पढ़न्ते, तुरुत छुटाये अभय निर्भय धूपा धूयी मिन मठ परशाये। सतगुरु जी के चाहे हुए सकाले। कहे, महादेव सुन पार्वती, सतगुरु जी का द्रोही सो हर का द्रोही, उसका मुख देखे ना कोई, मुख देखे तो लगे कलंक, पढ़लो, सतगुरु जी का सत संग जो गुरु महिमा जाप सुने सुनावे कहे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज आवागमन मिट जावे प्रभाते पढ़न्ते ऋद्धि सिद्धि पावन्ते मध्याने जपन्ते बैकुण्ठ पदारन्ते संध्या ने जपन्ते शिवपुरी को पवन्ते। इतना सतगुरु जी महिमा जाप सम्पूर्ण भया। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र अनुपान शिला कौलागढ़ पर्वत पर बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने अनन्त कोट सिद्धों को पढ़ कथकर सुनाया। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।

* * *

नवनाथ (उत्पत्ति) गायत्री जाप

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरु जी कहां थे नाद, कहां थे अनाद, कहां थे आकार, कहां थे निराकार, कहां थे जल, कहां थे थल, कहां थे मूल, कहां थे डाल, कहां थे वृक्ष, कहा थी छाया, कहा थे नर कहा थी नारी भेदा न भेद, नहीं शून्य, नही बिन्द, नहीं देही, नहीं देवरा, नहीं पूजा, नहीं पाती नहीं दिन, नहीं राति, नहीं थे सूर्यज नहीं थे चन्द्रमा नहीं थे नवलक्ष तारा मण्डल।

ॐ गुरु जी अकार-उकार-मकार, त्रिकुटी ढुण्डो जय ॐकार। अलख पुरुष ने ध्यान लगाया, ब्रह्माण्ड भया उजियाला। नाभ कमल में अगन प्रजाला, रज रुपै ब्रह्मा आया। ब्रह्मग्रंथी-ब्रह्मज्ञान, जल तत में आन समाय। हृदय देश में तेज उजाला, सत्य रुपै विषण की काया। विष्ण ग्रन्थी बैकुण्ठ धाम, आत्मज्ञान भये प्रमान। त्रिकुटी-भ्रुकुटी ॐकार ध्यान, तम् रुपै रुद्र निर्वाण। रुद्रग्रन्थी शिव का मेल, महा-आनन्द कैवल्य धाम। अर्धा मात्रा निजा शक्ति मही रुप सती पार्वती। इच्छा शक्ति प्रगटया ज्ञान, करनी कथनी पिण्ड प्राण।

ॐ धर्म सो पिता कर्म तो सती, उपजा तीन लोक की थापना थापी। आत्मज्ञान इच्छा शक्ति पिण्डे-पिण्डे सकल सृष्टि। सृष्टि-सृष्टि जिन्दा खीर खाण्ड खाये, अलील पीवन्ते, अमृत भोग खावन्ते पीवन्ते जिन्दा नर नार पिण्ड प्राण पड़न्ते तिसकी रक्षा सत का धर्म तरण तारण नवनाथ सिद्धां का योग करन्ते।

ॐ ईश्वर महादेव, गौरजा पार्वती मिल संसार धर्म भये करतार। आवो देवी देखो देवी अलख निरन्जन भये परम ज्योत स्वरुपी। ॐकार आदिनाथ योग युक्त सदा सन्तोषी भरे धर्म की साख। सृष्टि संसार (स्थिति) थापना थापी-तिरोभाव-दीक्षा-शिक्षा एकों पांच महेश्वर ने योग जताया। संसार उपजे सृष्टि उपजे, सती पार्वती जा बैठी शिव के संग ओ हर हर हरेश्वर महादेव हमको महायोग ज्ञान का ध्यान देबा। ॐ देवी पार्वती तुम का जानो हमारे महायोग ज्ञान का ध्यान। हमारे महायोग ज्ञान का कौन करीबा ध्यान। हमारे महायोग ज्ञान का श्री नाथ निरन्जन करीबा ध्यान। तुमको लेबा नाद जनेऊ झोली झण्डा। हाथ खप्पर कन्नी मुद्रा। रोट लंगोट भगवा बाना। नवखण्ड बैठकर तुमको पुजायेंगे देवी पार्वती मृत लोक में जावेगी। धरती स्वरुप अवतार लेगी। तुमरेकारण भया प्रथम ज्ञान उदय सो घर घरा में उदयनाथ जी नाम से तुमको पूजायेंगे। हम ईश्वर आदिनाथ, गुरु सब सिद्धांका। हम योगी, इन्द्री के जती, वाचाने सती, अंग पहेरबा भगवा कंथा। नगर खेड़े अलख जतायेंगे। हम आदगुरु तुम्हारा देवी पार्वती लेबा वरदान हमारा।

पूछैं देवी पार्वती या महाज्ञान ध्यान कैसा करीबा। शिव संग पार्वती क्षीर समुन्दर जा बैठकर उत्पन्ना भया गुप्त ज्ञान। गुरौं शबद योगमाया पार्वती भयी योग निंद्रा, राघौ बाघौ मच्छके गर्भ ज्ञान क्षीर समुद्र में बैठकर ज्योत स्वरुप से उत्पन्न भया सिद्ध मछन्दरजी तिस रक्षा करे अलख निरन्जन निर्वान। आगछ आगछ माया मछन्दर तुम पूत योगमाया भया अवतार। हर हर हरेश्वर महादेव हमको महायोग ज्ञान का ध्यान देबा। ओ माया मछन्दर तुम का जानो हमारे महायोग ज्ञान का ध्यान। हमारे महायोग ज्ञान का कौन करीबा ध्यान। हमारे महायोग ज्ञान का श्री नाथ निरंजन करीबा ध्यान। तुमको लेबा नाद

जनेऊ झोली झण्डा। हाथ खप्पर कन्नी मुद्रा। रोट लंगोट भगवा बाना। नवखण्ड बैठकर तुमको पूजायेंगे माया मछन्दर म्रत लोक में जावोगे। माया स्वरुप अवतार लेंगे भया मत्स्य गर्भ जनम सो घर घरा में माया मत्स्येन्द्र नाथ जी नाम से तुमको पूजायेंगे। हम ईश्वर आदिनाथ जी गुरु सब सिद्धांका हम योगी, इन्द्री के जती, वाचाने सती, अंग पहिरबा भगवा कंथा। नगर खेड़े अलख जतायेंगे। हम आदगुरु तुम्हारा माया मछन्दर लेबा वरदान हमारा।

ॐ थरै धरत्री थरै आकाश थरै ब्रह्माण्ड सारा। अलख निरंजन ने खेल रचाया। रजो ब्रह्मा सत विषण को भरमाया। कौन गुरु कौन चेला, तू तू मै मै क्रोध अगण भरीया। कैलाशगिरि से शिवजी आया। बिच लिंग का प्रचण्ड थम्ब बनाया। गगन मण्डल चढ़ गये ब्रह्मा, खोजत पाताल से विष्णु जी आया। अनंत योजन पर भेद थम्ब का नहीं उपाया। बिन भेद ब्रह्मा पुष्प ले आया। देखा ईश्वर महादेव ने आनी मन में रीस लियो खन्जर। रुद्ररुप-काटया एको शीश। ब्रह्मा, विष्णु रुदन्ते ईश्वर महादेव की करुणा भाखन्ते। विष्णु जी चलन्ते ईश्वर महादेव जी के पास पूछन्ते। हर हर हरेश्वर महादेव जी हमको महायोग ज्ञान का ध्यान देबा। ॐ विष्णु जी तुम का जानो हमारे महायोग ज्ञान का ध्यान। हमारे महायोग ज्ञान का श्री नाथ निरंजन करीबा ध्यान। तुमको लेबा, नाद जनेऊ, झोली, झण्डा, हाथ, खप्पर, कन्नी मुद्रा रोट लंगोट भगवा बाना। नवखण्ड बैठकर तुम ही पूजायेंगे। मृत्युलोक में जावेंगे तेज स्वरुप अवतार लेवेंगे तुम सत्य से हम भये सन्तोषी। सो घर घरा में सन्तोषनाथ जी नाम से पूजायेंगे। हम ईश्वर आदिनाथ जी गुरु सब सिद्धां का। हम योगी इन्द्री के जती वाचा के सती, अंग पहिरबा भगवा कथा। नगर खेड़े अलख जतायेंगे। हम आदगुरु तुम्हारा सन्तोषनाथ विष्णु जी लेवा वरदान हमारा।

ॐ ब्रह्मा जी चलन्ते ईश्वर महादेव जी के पास पूछन्ते हर हर हरेश्वर महादेव जी हमको किरपा करीबा महायोग का ज्ञान ध्यान देबा। ॐ ब्रह्मा जी तुम का जानो हमारा महायोग ज्ञान का ध्यान। हमारे महायोग ज्ञान का कौन करीबा ध्यान। हमारे महायोग ज्ञान का श्री नाथ निरंजन करीबा ध्यान। तुमको लेबा नाद, जनेऊ, झोली, झण्डा। हाथ खप्पर, कन्नी मुद्रा। रोट लंगोट भगवा बाना।

नवखण्ड बैठकर तुम ही पूजायेंगे। मृत्युलोक में जावेंगे जल स्वरुप अवतार लेवेंगे। सत्य आत्मज्ञान पाठ सुनायेंगे। सो घर घरा में सत्यनाथ जी नाम से पूजावेंगे। हम ईश्वर आदिनाथ जी गुरु सब सिद्धां का। हम योगी इन्द्री के जती वाचा के सती, अंग पहिरबा भगवा कंथा। नगर खेड़े अलख जतायेंगे। हम आद गुरु तुम्हारा सत्यनाथ ब्रह्माजी लेबा वरदान हमारा।

ॐ प्रथमे सुमरिये देव महेश जा बैठे सती पार्वती संगी घरबारी। योगमाया ने माया प्रजाली। हिरक मन-अगर-सिन्दूर-केशर-चन्दन मिलीया, डिब्बी किन्ना टीका किन्ना मन्त्र दीन्हा अमर सेंचो जीवन जीव संचिया शक्त स्वरुपी हाथ धरीया। नाम धरीयो श्री गणपत नाथ। पूता जी बैठो स्थान मैं जावा नहावना आवन जावन किसी को न दीजिये। अंकस मार पर संग लीजिये। बनखण्ड से आये श्री ईश्वर महादेव छूटी ललकारी ईश्वर देव बालक कोप भरीया। ज्यो घृत बसन्त धरीया शिवजी आनी मन में रिस फिरीयो चक्र ले गयो शीश तीन लोक भई हलूल माई पार्वती कहने लागी स्वामी जी पुत्र मारीला तिसका कौन विचार। देवी जी मैं नहीं जानो तुम्हारा पूत मैं जानो कोई दैत्यन दूत गज हस्ती का शीश ले आन अलख निरन्जन के पोस बैठाऊ ल्याये हस्ती का शीश आकाश तत मन्त्र बोल्या संजीवन माई पार्वती करी असीस, जहां गणपत उठन्ते खेलन्ते महिमा उवरन्ते, गणपत बैठे शिव पार्वती संग पूछन्ते हर हर हरेश्वर महादेव हमको महायोग ज्ञान का ध्यान देबा। ओ गणेश गजहस्ती जी तुम का जानो हमारा महायोग का ध्यान। हमारे महायोग-ज्ञान का कौन करीबा ध्यान। हमारे महायोग ज्ञान का श्री नाथ निरन्जन करीबा ध्यान। तुमको लेबा नाद जनेऊ, झोली, झण्डा। हाथ खप्पर, कन्नी मुद्रा, रोट, लंगोट, भगवा बाना। नवखण्ड बैठकर तुमको प्रथम पूजावेंगे, गणेश जी मृत्यु लोक में जावेंगे, आकाश स्वरुप अवतार लेवेंगे। गजहस्ती स्वरुप को सो घर घरा से गजबेली गजकन्थड नाथ नाम से पूजायेंगे। हम ईश्वर आदिनाथ गुरु सब सिद्धां का। हम योगी, इन्द्रि के जती, वाचा ने सती अंग पहेरबा भगवा कंथा। नगर खेड़े अलख जतायेंगे। हम आदिगुरु तुम्हारा गजबेली गजकन्थडनाथ जी लो वरदान हमारा।

ॐ देव-दैत्या ने मिल थाप्या मन्थन। क्षीर सागर उपजै चौदा रतन। हलाहलू विष का भया उत्पन्न। तीन लोक भान तप्ता भये। जीव जले, जीव भखे। तिसकी रक्षा अलख निरन्जन करें। बिच-विष पी पीयाले नीलकंठ, तप्ता काया दाह अगण। मन्थन से निकल्या शित-शीतल चन्द, जा बैठा जटा शीश शिवा संग। सप्त पाताल शेष राजा नीलकण्ठ में भये अस्वार में अगन बूझू-तप्ता बूझू तृप्यन्ते तृप्यन्ते, शिवदाह शीतल करन्ते। चन्द शीतल अमिरस बरसन्ते। चन्द शेष बिच जहरी खाय। शीतल भये शिव शंकर, मन माही बहु प्रसन्न। जहां शिवजी कहे कौन घट माही कौन वरदान। तहां चन्द, शेष पूछन्ते जा बैठ शिवा के संग। हर हर हरेश्वर महादेव हमको महायोग-ज्ञान का ध्यान देबा। ओं शेष जी तुम का जानो हमारा महायोग-ज्ञान का ध्यान। हमारे महायोग-ज्ञान का कौन करीबा ध्यान। हमारे महायोग-ज्ञान का श्री नाथ निरन्जन करीबा ध्यान। तुमको लेबा, नाद, जनेऊ, झोली, झण्डा। हाथ खप्पर, कन्नी मुद्रा, रोट लंगोट, भगवा बाना। नवखण्ड बैठकर तुम्हीं पुजायेंगे, शेष जी मृत्युलोक जावेंगे, वायु (धरा) स्वरुप अवतार लेवेंगे। कण्ठ में बैठे तहां हम भये, अचल सो घर घरा में अचल अचम्बे नाथ जी नाम से पूजायेंगे। हम ईश्वर आदिनाथ गुरु सब सिद्धांका। हम योगी इन्द्री के जती वाचा के सती अंग पहेरबा भगवा कंथा। नगर खेड़े अलख जतायेंगे। हम आदगुरु तुम्हारा अचल अचम्बे नाथ लो वरदान हमरा। तहां चन्द्र मन माही ईर्ष्या भयी उत्पन्ना। आगे पाछे मन में किया विचार। हम शीतल समुद्र रत्न, हम सोलह श्रृंगार पूर्ण। छल कपट चन्द पूछन्ते जा बैठे शिव के संग। हर हर हरेश्वर महादेव हमको महायोग-ज्ञान का ध्यान देबा। ओं चन्द्रमा तुम का जानो हमारे महायोग-ज्ञान का ध्यान। हमारे महायोग-ज्ञान का कौन करिबा ध्यान। हमारे महायोग-ज्ञान का श्री नाथ निरंजन करिबा ध्यान। मन भेद जानु खेद मानु। जा जा तू मृत लोक में जावेगा। साल वाहन धरा सोलह श्रृंगार जन्मा लेबा। रानी सतिमा तेरे हाथ पैर कटायेगा। जंगल कुंआ में रहे निवासा। जहां चेला मछन्दर तुम्हें बचायेगा। दीक्षा शिक्षा उद्धार गुरु गोरख करेगा। तहां अठारह

भार वनस्पति स्वरुप को पावेगा। घर घरा में सिद्ध चौरंगीनाथ नाम से पूजायेगा। हम ईश्वर आदिनाथ गुरु सब सिद्धां का। हम योगी, इन्द्री के जती, वाचाके सती। अंग पहेरबा भगवा कंथा। नगर खेड़े अलख जतायेंगे। हम आदगुरु चेला मछन्दर तुम नाती लो शाप भया वरदान हमारा।

ॐ गुरु जी। ॐ शिव गोरक्ष योगी को करलो आदेश। हर हर हरेश्वर शिव शक्ति माया को करालो आदेश। ॐ पश्चिम देश आई पार्वती देवी आगे बैठी मीन मत्स्येन्द्र गोरक्षयोगी। जहां देवी ने किया आदेश। पर नहीं लिया आदेश। नहीं दिया उपदेश। तहां देवी क्रोध में आई खन्जर बांध हृदय को गई। श्री नाथ निरन्जन सही कर लाई। नवमे द्वारे ताड़ी लाई-दसवें ब्रह्म अग्नि पर जाली, जलने लगी तब खड़ी पछताई। राख राख हो श्री शम्भुजती गुरु गोरक्ष नाथ जी राख तुम्हारी हूंगी चेली जगत की हूंगी माई। माई कहे तां भोचर सा तन का कपट हार श्रृंगार गहूँ। शिव शंकर स्वामी जी। तुम्हारा कौन सा विचार है। हम कुछ नहीं जाने देवी जी अपना गढ़ा आप ही जानो-ईश्वर गौरां दोनों मिला करें। हाटी ईश्वर जी गये सातवें पाताल वाले गोरक्ष का अनन्त अपार काया न माया न छाया कली विच कहा है। हे देवी जी ! हमको गुरुमुख दिया। तुमको ब्रह्मा मुख दिया। अनन्त कोटि सिद्धों में दण्ड कमण्डल मीन आप ही छू गुरु मुखी चिन्ह। जहां गौरा पार्वती देवी शक्ति घरा बैठू ईश्वर के पास पूछन्ते। शिव, गोरख गोरख योगी का भेद का हम नहीं जानों स्वामी जी। तहां कहे महादेव सून पार्वती देवी- यह सिद्ध भया तुम माया बिना योगी का योग युग युग रहया अखण्ड। चेला मछन्दर ने किया घोर तपस्या भये हम प्रसन्न। तहां वरदान दिया हम मृतलोक में तेरा चेला बनेंगे। जती गोरख नाम से पूजायेंगे। हम ईश्वर आदिनाथ गुरु सब सिद्धां का। हम योगी, इन्द्री के जती, वाचा के सती। अंग पहेरबा भगवा कंथा। नगर खेड़े अलख जतायेंगे।

स्वामी जी लो जी हम तो हारे। शिव गोरख स्वरुप का भेद बताये। सुन देवी पार्वती। ज्योति स्वरुप शिव गोरख मेरा ही स्वरुप जाने। ॐकार निरन्जन निराकार सुन जिसकी माता बोलिये। अविगत जिसका पिता बोलिये।

अभय जिसका पंथ बोलिये । अचल जिसकी पदवी बोलिये । गोत्र जिसका निरन्जन बोलिये । विहंगम जिसकी जाति बोलिये, जिसके प्रवर असंख बोलिये । जिसके शाखा अनन्त बोलिये । जिसका सूक्ष्म वेद-आत्मज्ञान-ब्रह्मज्ञान अखण्ड प्रकाश बोलिये । जिसको श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ मेरा ही स्वरुप बोलिये जिसके नवनाथ सिद्ध मेरा ही अंश बोलिये । हम ईश्वर आदिनाथ गुरु सब सिद्धां का हम योगी, इन्द्री के जती, वाचा के सती । अंग पहेरबा भगवा कथा । नगर खेड़े अलख जतायेंगे ।

ॐ गुरु जी असंख्य युग में अलील पुरुष का ध्यान, जती सती खडदर्शन अनहद नाद का भया प्रवाण । देवी मनसा के घर भिक्षा लायबा, शून्य ध्यान निरन्जन निराकार होयबा । सतयुग में ईश्वर आदिनाथ जी का ध्यान, जती सती खड्दर्शन कैवल्य धाम का भया प्रवाण । देवी पार्वती के घर भिक्षा लायबा शून्य ध्यान निरन्जन निराकार होयबा । त्रेतायुग में अवगति नाथ जी का ध्यान, जती सती खड़दर्शन ब्रह्माण्ड का भया प्रवाण । देवी तारा त्रिकुटा के घर भिक्षा लायबा, शून्य ध्यान निरन्जन निराकार होयबा । द्वापर युग में दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी का ध्यान, जती सती खड़दर्शन योगमाया का भया प्रवाण । देवी महामंगला पद्मिनी के घर भिक्षा लायबा, शून्य ध्यान निरन्जन निराकार होयबा । कलयुग में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी का ध्यान, जती सती खड़दर्शन ज्योति स्वरुप का भया प्रवाण । देवी सन्तोषी (बिमला) के घर भिक्षा लायबा, शून्य ध्यान निरन्जन निराकार होयबा । नाथ जी गुरु जी को आदेश ।

जो इतना नवनाथ गायत्री जाप पढ़न्ते सुनन्ते कैलाश धाम में मुक्ता फल को लभन्ते । इतना नवनाथ गायत्री जाप सम्पूर्ण भया । श्री नाथ जी । गुरु जी को आदेश ।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी को आदेश । ॐ नमो शिवाय ।

* * *

नवनाथ बोध

(सतगुरु-शिष्य संवाद)

ॐ सतगुरु परमानन्द तिनको आदेश करु मैं । शिष्य जो सों सतगुरु जी को आदेश करु मैं । शबद एक पूछिबा करो कृपा दया दृष्टि, बिनती करु मैं ।

शिष्य— ॐ गुरु जी कैसे सतगुरु कैसे चेला, कैसे अवधू कैसे साधू ?

सतगुरु जी— सुन पूता शबदी सतगुरु सूरती चेला योगी अवधू सरलता में साधू ।

शिष्य— ॐ गुरु जी कौन-कौन स्वरुप नवनाथ सिद्ध बोलिये ?

सतगुरु जी— अवधू ॐ आदिनाथ ॐकार स्वरुप बोलिये । उदयनाथ पार्वती धरत्री स्वरुप बोलिये । सत्यनाथ ब्रह्माजी जल स्वरुप बोलिये । सन्तोष नाथ विष्णु जी खण्ड खाण्डा तेज स्वरुप बोलिये । अचल अचम्बेनाथ जी शेष स्वरुप बोलिये । गजबेली गजकन्थड़नाथ गणेश जी गजहस्ती स्वरुप बोलिये । ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ जी अठारह भार वनस्पति स्वरुप बोलिये । माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी माया स्वरुप बोलिये । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ अलख निरन्जन शिव स्वरुप बोलिये ।

शिष्य— ॐ गुरुजी कौन-कौन अवतार नवनाथ सिद्ध बोलिये ?

सतगुरु जी— अवधू ! ॐ आदिनाथ पारब्रह्म ॐकार अवतार बोलिये । उदयनाथ जी पार्वती शक्ति अवतार बोलिये । सत्यनाथ जी बह्मा जी अवतार बोलिये । सन्तोषनाथ जी श्री विष्णु जी अवतार बोलिये । अचल अचम्बेनाथ जी शेष अवतार बोलिये । गजबेली गजकन्थड़ नाथ जी श्री गणेश जी अवतार बोलिये । सिद्ध चौरंगीनाथ जी चन्द्र अवतार बोलिये । दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी मत्स्य अवतार बोलिये । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अलख निरंजन शिव अवतार बोलिये ।

शिष्य— ॐ गुरु जी कौन-कौन तत्व नवनाथ सिद्ध बोलिये ?

सतगुरु जी— अवधू । ॐकार आदिनाथ ॐकार प्रणव तत्व बोलिये । उदयनाथ पृथ्वी तत्व बोलिये । सत्यनाथ जलतत्व बोलिये । सन्तोषनाथ तेज तत्व बोलिये । अचल अचम्बेनाथ-वायु तत्व बोलिये । गजबेली गजकन्थड़

नाथ आकाश तत्व बोलिये । सिद्ध चौरंगीनाथ सृष्टि (वनस्पति) तत्व बोलिये । दादा मत्स्येन्द्रनाथ माया तत्व बोलिये । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ ज्योति परम ज्योति तत्व बोलिये ।

शिष्य— ॐ गुरु जी । कौन-कौन गुण नवनाथ सिद्ध बोलिये ?

सतगुरु जी— अवधू आदिनाथ तमोगुण बोलिये । उदयनाथ जड़ गुण बोलिये । सत्यनाथ रजोगुण बोलिये । सन्तोषनाथ सत गुण बोलिये । अचल अचम्बेनाथ ज्ञान गुण बोलिये । गजबेली गजकन्थड़नाथ निर्मल गुण बोलिये । सिद्ध चौरंगीनाथ शीतल गुण बोलिये । दादा मत्स्येन्द्रनाथ बहुगुण बोलिये । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी सूक्ष्म गुण बोलिये ।

शिष्य— ॐ गुरु जी कौन-कौन वर्ण नवनाथ सिद्ध बोलिये ?

सतगुरु— अवधू । ॐकार आदिनाथ जी नील वर्ण बोलिये । उदयनाथ जी पीत वर्ण बोलिये । सत्यनाथ जी श्वेत वर्ण बोलिये । संतोषनाथ जी रक्त वर्ण बोलिये । अचल अचम्बेनाथ नील वर्ण बोलिये । गजबेली गजकन्थड़ नाथ जी काला वर्ण बोलिये । सिद्ध चौरंगीनाथ जी शुभ्र वर्ण बोलिये । दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी बहु-वर्ण बोलिये । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी सूक्ष्म वर्ण बोलिये ।

शिष्य—ॐ गुरु जी । कौन-कौन स्वाद नवनाथ सिद्ध बोलिये ?

सतगुरु जी— अवधू । ॐ आदिनाथ सर्व उत्तम स्वाद बोलिये । उदयनाथ मधुर स्वाद बोलिये । सत्यनाथ खारा स्वाद बोलिये । सन्तोषनाथ तीखा स्वाद बोलिये । अचल अचम्बेनाथ जी खट्टा स्वाद बोलिये । गजबेली गजकन्थडनाथ मिल-बला स्वाद बोलिये । सिद्ध चौरंगीनाथ रसीला स्वाद बोलिये । दादा मत्स्येन्द्रनाथ अनन्त स्वाद बोलिये । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ अमृत स्वाद बोलिये ?

शिष्य— ॐ गुरु जी । कौन-कौन स्वभाव नवनाथ सिद्ध बोलिये ।

सतगुरु जी— अवधू । ॐकार आदिनाथ भोला (सरल) स्वभाव बोलिये । उदयनाथ बैठा स्वभाव बोलिये । सत्यनाथ जी शीतल स्वभाव बोलिये । सन्तोषनाथ सन्तोषी स्वभाव बोलिये । अचल अचम्बेनाथ चंचल

स्वभाव बोलिये । गजबेली गजकन्थड़ नाथ ऊभा स्वभाव बोलिये । सिद्ध चौरंगीनाथ शीतल स्वभाव बोलिये । मत्येन्द्रनाथ ठगनी स्वभाव बोलिये । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ उर्ध्व स्वभाव बोलिये ।

शिष्य— ॐ गुरु जी । कौन गुरु कौन देवता नवनाथ सिद्ध बोलिये ।

सतगुरु जी— अवधू ॐकार आदिनाथ ॐकार गुरु, परमात्म देवता बोलिये । उदयनाथ मन गुरु, वाचा (शिव-शबद) देवता बोलिये । सत्यनाथ चन्द्र गुरु, बुद्धि देवता बोलिये । सन्तोषनाथ सूर्य गुरु, अनादि देवता बोलिये । अचल अचम्बेनाथ, अवकाश गुरु, ॐकार देवता बोलिये । गजबेली गजकन्थड़नाथ गोरक्ष गुरु, अवगति देवता बोलिये । सिद्ध चौरंगीनाथ गोरक्ष गुरु, अवगति देवता बोलिये । मत्स्येन्द्रनाथ शिव गुरु, शक्ति (माया) देवता बोलिये । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ मत्स्येन्द्र गुरु, परमात्म देवता बोलिये ।

शिष्य— ॐ गुरु जी । कौन-कौन भरिज्या नवनाथ सिद्ध बोलिये ?

सतगुरु जी— अवधू । ॐकार आदिनाथ जी भरिज्या शून्य निरंकार । उदयनाथ जी भरिज्या आसा धनवन्ती । सत्यनाथ जी भरिज्या मनसाचोरटी । संतोषनाथ जी भरिज्या कल्पना चाण्डाली । अचल अचम्बेनाथ जी भरिज्या चिन्ता डाकनी । गजबेली गजकन्थड़नाथ जी भरिज्या शंका शिलवन्ती । सिद्ध चौरंगीनाथ जी भरिज्या सोलह कला श्रृंगारी । मत्स्येन्द्रनाथ जी भरिज्या माया ठगनी । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी भरिज्या जोग कुण्डलीनी ।

शिष्य— ॐ गुरु जी । कौन चक्र कौन स्थान नवनाथ सिद्ध का वासा ?

सतगुरु जी— अवधू । ॐ कार आदिनाथ जी आज्ञा का चक्र वासा भ्रूमध्य स्थान । उदयनाथ जी का गर्भ चक्र वासा, गर्भ स्थान । सत्यनाथ जी का स्वाधिष्ठान चक्र वासा, लिंग स्थान । सन्तोषनाथ जी का मणिपूर चक्र वासा, नाभि स्थान । अचल अचम्बेनाथ जी का अकुल कुण्डलीनी चक्र वासा, भाल ऊपरी स्थान । गजबेली गजकन्थड़नाथ जी का मूलाधार चक्र वासा, गुदा स्थान । सिद्ध चौरंगीनाथ जी का अमृत चक्र वासा, भाल प्रदेश स्थान । दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी का लिंग चक्र वासा, लिंग स्थान । श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी का ब्रह्मरन्ध्र तालु चक्र वासा, तालिमा स्थान ।

शिष्य— ॐ गुरु जी। योगी योग में रम्या ध्यान। सतगुरु शबद का भया ज्ञान। तहां नवनाथ सिद्धां का कैसे परचीती कैसा ज्ञान?

सतगुरु जी— अवधू। सतगुरु क्रूपा, युग-युग योगमे रम्या योगी-तहां हृदय स्थान में ज्योति प्रगटी। अवल ग्रन्थि में सूरज प्रभासी। शिख मण्डल में कैलाश धाम की प्रचिति। अनहद स्थान में ब्रह्मनाद प्रचिति। मस्तक स्थान में त्रिकुटा प्रचिति। रुद्रग्रन्थि में कैवल्य-आनन्द प्रचिति। एता षष्टम प्रचिति का ज्ञान जहां ॐकार आदिनाथ जी का लाग्या ध्यान।

सतगुरु किरपा युग-युग योगमे रम्या योगी तहां गर्भ स्थान में पिण्ड प्राण प्रचिति। कण्ठ स्थान में आदशक्ति परमवाक् प्रचिति। गलस्थानमे परम शक्ति की प्रचिति। चिबुक स्थान में सरस्वती प्रचिति। भ्रमर गुफा में महामाया अकला प्रचिति। अनहद स्थान में परा-पश्चन्ति प्रचिति। एता षष्टम, प्रचिति का ज्ञान जहां पर उदयनाथ पार्वती का लाग्या ध्यान।

सतगुरु किरपा युग-युग योगमे रम्या योगी तहां लिंग स्थान में सावित्री शक्ति। गर्भ स्थान में अग्न प्रचिति। सुष्मना में उर्ध्व रेता प्रचिति। ब्रह्मा ग्रन्थि में आत्मानन्द प्रचिति। एता चतुर्थ प्रचिति का ज्ञान, जहां पर सत्यनाथ ब्रह्माजी का लाग्या ध्यान।

सतगुरु किरपा युग-युग योगमे रम्या योगी तहां नाभि स्थान में उडयान बन्ध प्रचिति। कटी प्रदेश में (अग्नि) तेज प्रचिति। अवलग्रन्थ में सूरज प्रभा प्रचिति। विष्णु ग्रन्थि में परमानंद प्रचिति। एता चतुर्थ प्रचिति का ज्ञान जहां पर सन्तोषनाथ विष्णु जी का लाग्या ध्यान।

सतगुरु किरपा युग-युग योग में रम्या योगी तहा अकुल ग्रन्थि में सूरज प्रभा प्रचिति। भाल ऊपरी कुण्डलीनी जाली। कुण्डलीनी नागन अमर भया योगी। एता तृतीय प्रचिति का ज्ञान जहां पर अचल अचम्बेनाथ जी का ध्यान।

सतगुरु किरपा, युग-युग योगमे रम्या योगी तहां पर मूलाधार में सिद्ध बुद्धि प्रचिति। भ्रूमध्य ऊपरी ब्रह्मकाश प्रचिति। एता द्वि प्रचिति का ज्ञान जहां पर गजबेली गजकन्थड़नाथ जी का लागा ध्यान।

सतगुरु किरपा, युग-युग योगमे रम्या योगी तहां अमृतचक्र में अमिरस

पात्र, पूजा, आरती, चक्रावली, नाद ओंकार आदेश, इत्यादि विधि से कद्र मठ में पात्रदेवता की स्थापना होती है। राजाजीओं का राज्यभिषेक विधिवत करके सिंहासनारुढ़ होते हैं। रोट भोजन भण्डारा इ० समारोह सम्पन्न होकर महाशिवरात्रि के बन्धन से तथा राजा का पट करके चूरी चीपी छुटका नथाना प्राप्त होने पर झुण्डी का बन्धन से सब योगेश्वर, मानधारी मुक्त होते हैं तथा मठ के कानूनी कागजात रजिस्ट्री करके राजा जी का शपथ पत्र लेते हैं।

अत: झुण्डी का सम्पूर्ण कार्यक्रम समाप्त होता है। त्र्यंबक मठ तथा भेष योगी सभा की साहित्य छड़ी, तूरी, छत्र इत्यादि वापस भेजने की व्यवस्था होती है। तद्पश्चात पंच मानधारी योगेश्वर अपने-अपने निज स्थानों को चले जाते हैं या इतरत्र विचरते हैं। इस प्रकार अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा पात्रदेव यात्रा तथा कुम्भ पर्व सम्पूर्ण सम्पन्न होता है।

पुन: पांच दिन, जो कि कटे पूजा नमस्कार नाम से प्रसिद्ध है। यह कार्यक्रम अग्रिम १२ वर्ष प्रति होता है।

* * *

महाकुम्भ पर्व हरिद्वार

पौराणिक पहचान

पुरातन काल से ऋषि-मुनी-साधु-सन्यासी तथा नाथ सिद्ध-देवी देवताओं की बसी हुई नगरी, जो उत्तर हिमालय गोमुख गंगोत्री से आई हुई गंगा धारा के किनारे बसी हुई, जिसे उत्तराखण्ड के गंगोत्री, जमनोत्री, बद्री, केदार इन ४ पवित्र धामों का मुख्य द्वार, बिल्व पर्वत तथा नील पर्वत के बीच बसा हुआ यह अनन्य धार्मिक क्षेत्र जिसे हरिद्वार, गंगाद्वार, मायापुरी, कुम्भ नगर, मयुरपुर, भगवापुर (गेरुये रंग में अनेक महात्मा विचरते हैं) पुण्य नगरी, तीर्थनगरी, शिव की राजधानी इत्यादि नामों से प्रसिद्ध है।

श्री रामचन्द्र के पूर्वज राजा सगर ने अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा अपने साठ हजार पुत्र के साथ दिग्विजय हेतु छोड़ा था। राजा इन्द्र ने वह घोड़ा चुराकर हरिद्वार स्थित कपिलमुनी आश्रम में रखा, खोज के उपरांत सगर पुत्र कपिल

आश्रम में आये और कपिल मुनी को विवेकहीन होकर दोष दिया। अत: कपिलमुनि ने शाप देकर भस्म कर दिया आगे राजा भगीरथ तपस्या से गंगाजी ले आये तब रास्ते में यहीं हरिद्वार में वह सगर पुत्रों को गंगाजल के स्पर्श से मुक्ति मिली, जबसे यहां मृत परिजनों की अस्थियाँ गंगा जी में प्रवाहित करने की प्रथा प्रचलित हुई। रावण वध के उपरांत ब्रह्महत्या पाप मुक्ति हेतु श्री रामचन्द्र हरिद्वार गंगा स्नान कर देव प्रयाग में तपस्या के लिये गये थे।

हरिद्वार (कनखल) में सती पिता दक्ष-यज्ञ हुआ, बिना आमन्त्रण शिव-अपमान, सती ने अग्निकुण्ड में प्राण का त्याग किया। शिवगण क्रोधित भये यज्ञ का विध्वंस किया, दक्ष का सिर काटकर यज्ञ कुण्ड में फेंक दिया। शिवजी आये क्षमा याचना करने पर दक्ष को बकरे का सिर लगाकर जीवनदान दिया। सती का शव लेकर भ्रमण करने लगे शिव क्रोध से बचने के लिये विष्णु जी ने चक्र छोड़कर शव के टुकड़े- टुकड़े कर बिखेर दिया। यह टुकड़े जहां-जहां गिरे वहां शक्तिपीठ बनें। हरिद्वार में सती का हृदय और नाभी स्थल गिरा वह हरिद्वार के बीचों-बीच मायादेवी मन्दिर रूप में प्रतिष्ठित है और पश्चाताप होकर दक्ष ने यहीं तपस्या की जो कि दक्षेश्वर महादेव नाम से विख्यात है।

महाभारत में राजा दिलीप गंगातट पर तपस्या कर रहे थे। तब गंगा रुपसी बन के दिलीप से प्रणय की याचना की दिलीप ने उसे अपनी पुत्र वधू होने का आशीर्वाद दिया आगे गंगा शांतनु विवाह तथा भीष्म पुत्र दिया। वीर भीम के घोड़े की ठोकर से बना भीमगोडा, विदुर ने मैत्रेय ऋषि को, महाभारत सुनाया वह स्थल, जहां नारद जी ने सप्तर्षियों को ही महाभारत सुनाया था। ब्रह्मकुण्ड महाराजा श्वेत की तपस्थली, कुशावर्त घाट जहां दत्तात्रेय ने तपस्या की कनखल में सनत्कुमार सिद्ध हुये। महाभारत महायुद्ध में बचे हुए योद्धा पाप-प्रक्षालन हेतु हरिद्वार ही आये थे।

ऐतिहासिक महत्व

ऐतिहासिक दृष्टि से जैन तीर्थ कर आदिनाथ यहां आये थे। चीनी यात्री ह्वेंगसांग, शुर्फुद्दीन, तैमूर, अकबर, राजा मानसिंह, यूरोपीय यात्री टॉम कारयट,

जहांगीर, सम्राट औरंगजेब, आचार्य गरीबदास, विवेकानंद मुगल सम्राट शाह आलम और माधव जी सिंधीया इत्यादि ऐतिहासिक हस्तियां हरिद्वार पावन भूमि पर आयी थीं।

नाथ सिद्ध योगियों प्रति हरिद्वार

श्री नाथ सिद्ध ८४ सिद्ध योगियों में श्री सिद्ध योगी भर्तृहरि नाथ एवं गोपीचंद नाथ जी अपना अवन्तिका का राजपाट त्याग कर जीवन का उत्तरार्द्ध हरिद्वार में ही बिताया। यहां उन्होंने श्रृंगार, नीति, वैराग्य शतक जैसे ग्रन्थों की रचना की वहीं "भर्तृहरि गुफा" गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) नाम से आज तक प्रचलित है। यहां पर भर्तृहरि नाथ जी ने घोर तपस्या की और गुरु गोरक्षनाथ जी ने शिव स्वरुप में दर्शन देकर अनुपम उपदेश किया। उसी गुफा में शिवलिंग स्थापित करके भर्तृहरि नाथ जी ने नाथ परम्परा का ध्वज लहराया। महाराजा विक्रमादित्य जिनको भर्तृहरि नाथ जी ने अवन्तिका सिंहासन पर बिठाया था। वह दर्शन मेला हेतु हरिद्वार में आये तब सिद्ध योगी भर्तृहरि नाथ जी ने पतित पावन गंगा स्नान महात्म्य का पाठ सुनाकर विक्रमादित्य को गंगा तट पर हरि की पौड़ी बनाने का आदेश दिया था। राजा विक्रमादित्य ने हर की पौड़ी पर सर्वप्रथम सीढ़िया (पैड़ियां) बनवाकर भर्तृहरि की पैड़ियां नाम दिया। आगे कालांतर वश "हर की पौड़ी" नाम प्रचलित हुआ। विक्रमादित्य के राजकवि कालिदास भी हरिद्वार पधारे थे। गुरु गोरक्षनाथ जी ने गोपीचंद भर्तृहरि को वरदान दिया था कि जब तक धर्ती है तब तक गोपीचंद भर्तृहरि अपितु आज भी गोपीचंद (भांजा) भर्तृहरि अमर है।

अतः इस हरिद्वार में भर्तृहरि गुफा का अर्थात् गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर का भव्य निर्माण हुआ है तथा अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ (योगी महासभा) का प्रधान कार्यालय स्थापित हुआ है।

इसे नाथों का दलीचा भी कहते हैं। यहां अपितु अखिल सम्पूर्ण नाथ, सिद्ध योगेश्वर एकत्रित होकर हर १२ साल में महाकुम्भ पर्व तथा हर ६ साल में अर्द्धकुम्भ पर्व बड़ी श्रद्धा से तथा धूमधाम से सम्पन्न करते हैं।

पात्रदेवता स्थापना तथा पात्रदेव यात्रा

प्रत्येक १२ वर्ष में महाकुम्भ पर्व पर नाथों के दलिचे में पात्रदेवता स्थापना सम्पन्न होती है। यह वैशाखी स्नान कुम्भ पर्व पर, ढाई दिन पात्रदेवता स्थापन होती है। अत: पात्रदेवता मानधारियों का चुनाव तथा पात्रदेव स्थापना, धूप दीप पूजन विधि, प्रात: संध्या आरती, चक्रावली, आदेश गायत्री, रौरास अष्टक, चालीसा, आरती साखी इ० पाठ तथा रोट, भोग, भोज भण्डार इत्यादि सभी कर्म विधिवत (विधि त्र्यंबक महाकुंभ पर्व में वर्णन किया है) होते हैं।

कुछ साल पूर्व में दलीचे से पात्रदेव यात्रा झुण्डी उठती थी। गंगा के स्त्रोत सभी नाथ सिद्धों के स्थान मकानों, मठ मन्दिरों की व्यवस्था तथा नाथ सिद्धों का योग, प्रचार, धर्म प्रचार होता था। अत: यही कार्य संस्था के कार्यकारिणी मण्डल जो चुनाव द्वारा योगी महासभा नाम से स्थापित होता है। इन्हीं के द्वारा स्थान-स्थान में समय-समय अनुसार व्यवस्था तथा धर्म प्रचार होता है यहां सम्प्रदायिक-पुस्तकें पुरातन ग्रन्थ (पुस्तकालय) तस्वीरें-संगीत इ० द्वारा धर्म प्रचार प्रसार किया जाता है। यह व्यवस्था केवल गंगा स्त्रोत स्थान की नहीं बल्कि अखिल भारत स्थापन सभी स्थान मकान की जबाबदारी, योगी महासभा पर निर्भय है।

योगी महासभा कार्यकारिणी समिति पदाधिकारियों का चुनाव

"योगी महासभा" कार्यकारिणी समिति पदाधिकारियों का चुनाव महाकुम्भ पर्व या अर्द्धकुम्भ हरिद्वार या प्रयाग में होने वाले महासभा के अधिवेशन में होता है। यहां नाथ सम्प्रदाय के आये हुए प्रत्येक (१२ पंथ) पंथ से दो-दो सदस्य उसी पंथ द्वारा प्रतिनिधि स्वरुप निर्वाचित होते हैं। इस प्रकार २४ निर्वाचित सदस्यों की एक कार्यकारिणी समिति होती है। अगर किसी पंथ में योगेश्वर का अभाव होगा। उस पंथ के प्रतिनिधि के रुप में अन्य पंथों के योग्य एवं चरित्रवान योगेश्वर कार्यकारिणी द्वारा मनोनीत किए जाते हैं। यहां आये हुए प्रत्येक पंथ के सदस्य कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का निर्वाचन करती है। यह निर्वाचित सदस्य नाथ सम्प्रदाय के १२ पंथ के मान्य

प्रतिनिधि होते हैं। यह योगेश्वर सर्वसम्मति से या बहुमत से जो प्रस्ताव पारित करते हैं उसका अनुसरण प्रत्येक सदस्य को करना पड़ता है। इस प्रकार से बनायी गई कार्यकारिणी समिति उन सदस्यों में से निम्न पदाधिकारियों का चुनाव करती है—

(१) एक सभापति (२) दो उप सभापति (३) एक प्रधान महामन्त्री (४) एक मन्त्री (५) पांच सहायक मंत्री (प्रांतीय)

आवश्यकता पड़ने पर इन २४ के अतिरिक्त दो योग्य चरित्रवान योगेश्वर को कार्यकारिणी को नामजद करने का अधिकार होता है। कार्यकारिणी के सदस्य के अतिरिक्त मनोनीत मंत्री कार्यकारिणी की बैठक में विचार विनिमय में भाग ले सकेंगे लेकिन मत नहीं दे सकते। आवश्यकता पड़ने पर सदस्य प्रतिनिधि द्वारा मतदान कर सकते हैं।

महासभा के अधिवेशन के लिये सभी स्थान सभी पंथ सदस्यों की सभी पंथों की उपस्थिति अनिवार्य होती है तथा कार्यकारिणी बैठक में अधिकारी वर्ग (सभापति एवं प्रधानमंत्री) के अतिरिक्त पांच सदस्यों की उपस्थिति पर्याप्त होगी। अपर्य्राप्त उपस्थिति के कारण स्थगित बैठक लिखित सूचना देकर पुनः बुलाई जायेगी। यदि फिर भी अपर्याप्त संख्या होये तो बैठक कार्यवाही सम्पन्न कर दी जाती है, जो सर्वमान्य होती है।

किसी कारण वश कार्यकारिणी का कोई सदस्य दिवंगत हो जाये अथवा नाथ पंथ सिद्धांत के विरुद्ध आचरण के कारण पदच्युत हो जाय या स्वेच्छा से कोई त्यागपत्र दिया जाये तो उस रिक्त स्थान की पूर्ति साधारण सभा के सदस्यों में से कार्यकारिणी समिति के बहुमत से उसी पंथ से की जाती है। लगातार तीन बार कोई सदस्य कार्यकारिणी की बैठक में अनुपस्थित हो जाये तो कार्यकारिणी समिति उसे सभा से अलग कर देती है।

जिस स्थान मठ में या गुरुद्वारा में उत्तराधिकारी नियुक्त न किया तो वहां उसी के योग्य चरित्रवान शिष्य को समिति नियुक्त करती है। यदि कोई शिष्य योग्य न मिले तो उस स्थान पर पंथ का योग्य चरित्रवान योगेश्वर नियुक्त किया जाता है। यह पूर्ति की व्यवस्था कार्यकारिणी बैठक तक सभापति तथा प्रधानमंत्री करते हैं।

शेष १२ पंथ या महासभा द्वारा नियुक्त किसी महन्त, पीर, राजा, राजगुरु, प्रबन्धक, मठाधीश को किसी भी अवस्था में सभा विरुद्ध न्यायालय में जाने का अधिकार नहीं होता। अगर इस नियम का उल्लंघन किया तो उसे पदच्युत किया जाता है। यदि किसी को किसी विषय पर गंभीर निर्णय प्राप्त करना हो तो वह अपना प्रस्ताव कार्यकारिणी बैठक में प्रस्तुत करना पड़ता है और कार्यकारिणी समिति का निर्णय उसे मान्य करना पड़ता है।

सम्प्रदाय के प्रत्येक स्थानधारी योगेश्वर स्थानीय आवश्यकता से बची हुई धनराशि को योगधर्म संस्कृति प्रचार प्रसार तथा हिन्दी व संस्कृत से उत्थान हेतु व्यय कर सकेगा तथा अन्नक्षेत्र, सदावर्त, औषधालय गौशाला इत्यादि जनहित कार्य में व्यय कर सकता है। इस प्रकार चुनाव होता है।

संस्था का नाम– अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा देकर संक्षिप्त नाम "योगी महासभा" दिया जाता है।

मुख्य कार्यालय– श्री गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) अपर रोड, हरिद्वार यही होगा।

उप कार्यालय– श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

प्रांतीय कार्यालय– (१) श्री विट्ठल योगेश्वर मठ ता० वटवाल दक्षिण कन्नड कर्नाटक (२) काल भैरव मन्दिर ताँबा काटा पायधूनी मुम्बई-३ (३) भीड़ भंजन महादेव जैतपुर सौराष्ट्र-गुजरात (४) गोरख डिब्बी, ज्वाला जी हिमाचल प्रदेश (५) श्री देवी पाटन तुलसीपुर जिला गौंडा, उ०प्र०

उपरोक्त पांच प्रांतीय महासभायें अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा के निर्देशन में कार्य करती हैं जो कि सम्पूर्ण देश, विदेश में योगी महासभा का कार्य सुचारू रुप से चले तथा पंथ के समस्त मठ, मन्दिर, गुफा, आश्रम, धूना का विधिवत देखरेख एवं महंत, राजा, राजगुरु, पीर तथा स्वामियों पर नियंत्रण करे तथा प्रति १२ वर्ष कदली यात्रा इष्ट देव पात्र देवता के साथ धर्म प्रचार हेतु यात्रा होती है तथा मठों आदि के प्रबंध हेतु राजा, महंत, कारबारी, कोठारी इ० राजगुरुओं की नियुक्ति होती है परंतु उक्त झुण्डी केवल भ्रमण काल तक ही महंत राजा आदि को पदासीन एवं पदनिवृत्त करने के

लिये अधिकृत होती है । झुण्डी की यात्रा समाप्त होने के पश्चात १२ वर्ष तक झुण्डी द्वारा बैठाये हुये राजा महंत पीर आदि से बराबर हिसाब-किताब लेने तथा स्थान सम्पत्ति का अपव्यय करने वाले एवं चरित्रहीन मठाधीशों को पदच्युत करने का अधिकार योगी महासभा को होता है ।

पात्रता

अवधूत योगी, नाथ, तपस्वी, स्थानधारी, दर्शनी, औघड़ जो सभा के नियमों का पालन करने वाला हो, सदाचारी, चरित्रवान किसी कारण पंक्ति बहिष्कृत न हो, ऐसा कोई भी महंत, राजा, राजगुरु, पीर, मठाधीश, औघड़, महासभा का सदस्य नहीं हो सकेगा जो सम्प्रदाय सिद्धांतों की अवहेलना करना ही कर्तव्य पालन करने में पागलपन आदि के कारण कार्य संचालन में असमर्थ हो तथा स्थान की आय का दुरुपयोग करता हो तथा मादक पदार्थों का सेवन करता हो सम्पत्ति अपने सम्बन्धियों तथा अन्य व्यक्तियों में वितरण करने वाला हो ।

हरिद्वार कुम्भ पर्व पर दलीचा १२ पंथ योगी महासभा, बाहर से आने वाले योगेश्वरों तथा भक्तज़नों के लिये साधारणतया निम्न प्रकार की सुव्यवस्था करनी पड़ती है ।

सुचारुबद्ध सुव्यवस्था

(१) श्री नाथ मन्दिर तथा सम्पूर्ण आश्रम रंग रोगन, खिड़की दरवाजे, कुण्डे इत्यादि रिपेरिंग करके उन्हें आकर्षक बनाना ।

(२) दलीचे के मुख्य दरवाजे में और इतरत्र स्वगतार्थ सुस्वागतम तथा अन्य प्रकार की सूचनायें बोर्ड बनाकर लगवाना ।

(३) दलीचे के बड़े-बड़े चौकों में बड़े पण्डाल लगाना तथा छत के ऊपर टेन्ट, तम्बुओं की व्यवस्था करना ।

(४) धर्मार्थ औषधालय तथा डॉक्टर की व्यवस्था करना ।

(५) दलीचे में जल तथा बिजली रोशनी की उत्तम व्यवस्था करना ।

(६) दलीचे में बिस्तर, दरीयां, चद्दर, तकीये, गद्दे, कम्बल इत्यादि की व्यवस्था करना ।

(७) बाहर से आने वाले सज्जन सद्गृहस्थ एवं भक्त मण्डलों की साधु संत योगेश्वरों की रहने की उत्तम व्यवस्था करना।

(८) शौचालय, स्नानघरों की ज्यादा व्यवस्था लगाना।

(९) सेवार्थ कर्मचारीयों का प्रबंध करना।

(१०) सभायें, सम्मेलन, धर्म उपदेश, प्रवचनार्थ, सभा मण्डल सुंदर तथा आकर्षक बनाना।

(११) ध्वनि विस्तारक यंत्र तथा स्टेज की व्यवस्था करना।

(१२) श्री नाथ जी के भण्डार में रसोई बनाने हेतु व्यास लकड़ी बड़े-बड़े बर्तन, थाली, ग्लास, कटोरी इत्यादि व्यवस्था करना।

(१३) ज्यादा से ज्यादा व्यक्ति एक समय में भोजन कर सकें इतनी बड़ी जगह भोजन के लिये बनाना।

(१४) १२ योगेश्वर भण्डारी १ श्री भण्डारी, कर्मचारी नियुक्त करना।

(१५) श्री नाथ जी के मंदिर में आकर्षक रोशनी कर सजाना पात्रदेव स्थापन व्यवस्था करना, दैनिक पूजन आरती चक्रावली सत्संग की व्यवस्था करना।

(१६) कथा-कीर्तन, प्रवचन, भाष्य, योग प्रचारार्थ शिक्षा आदि के प्रति मंदिर चौक में पंडाल बनाना। धूना पर कंडे लकड़ी धूप दीप इत्यादि व्यवस्था करना तथा १२-१८ के महंतों की तथा तपस्वीयों फलहारी खडेश्वरों इ० की सुचारुबद्ध व्यवस्था करना।

(१७) दैनिक हिन्दी समाचार पत्रिकायें सभी प्रकार की धार्मिक समाचार पत्रिकायें तथा अंक इत्यादि की व्यवस्था करना।

(१८) सार्वजनिक वाचनालय की व्यवस्था करना तथा नाथ सिद्धों के साहित्य, फोटो कलेण्डर इ० व्यवस्था करना।

(१९) गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर सुबह शाम आरती पूजा चालीसा अष्टक इ० पाठ योगेश्वरों के लिये आवश्यक करना।

(२०) आने वालों का मुख्य द्वार में स्वागत करना।

(२१) विशेष रूप से शहर के बाहर एक ऐसी जगह का प्रबंध करे जो

कि आश्रम में आने वालों के वाहन मोटर कार, गाड़ियां इत्यादि पार्किंग हो जायें।

(२२) आवश्यकता पड़ने पर बाहर ज्यादा जगह तथा टैंट तंबू का प्रबंध करे।

(२३) कमजोर शारीरिक अपंग तथा वयोवृद्ध योगेश्वरों तथा भक्तों की सेवार्थ खास कर्मचारी की व्यवस्था करे।

(२४) अधिकारी, मानधारीयों के लिये अलगसा खास व्यवस्था करे जो कि सम्मेलन, सभा मिटिंग, मेल—मिलाप दर्शन के लिये सुचारु बद्धता आये।

(२५) और भी बहिस्त सतपुरुष सिद्ध योगेश्वरों को भी आने की व्यवस्था करे।

(२६) स्नान, ध्यान, पूजन रोट, रसोई भण्डारे, देवता को भोग, आरती पाठ, साखी, प्रवचन धार्मिक उपदेश, कीर्तन संत सत्संग, योग शिविर इत्यादि जितना भी यथा योग्य सुनिश्चित तथा सुव्यवस्थित करने का प्रयास करे।

महाकुम्भ पर्व उज्जैन (अवन्तिका)

स्थान महात्म

उज्जैन क्षेत्र का पूर्व नाम अवन्तिका नगरी था। सप्तपुरियों में अवन्तिका एक पुरी क्षेत्र है। श्रृती की कहनी है की अवन्तिका समस्त पृथ्वी की नाभि देश है। मृत्युलोक में स्वामी महाकालेश्वर, १२ ज्योर्तिलिंग में से एक महत्वपूर्ण स्थान है। यहां रुद्रसागर के पास हरसिद्धि देविका पीठ है जो कि ५१ शक्तिपीठों में से जहां सती का कर्पूर (केहुनी) गिरा था। जहां मूर्ति के बदले केहुनी की पूजा होती है। इसका मूल स्थान सौराष्ट्र द्वारिका—समुद्र खाड़ी में पर्वत पर है। राजा विक्रमादित्य इसे अपनी आराध्य देवी मानते थे तथा इस देवी को प्रसन्न कर उज्जैन लाये थे।

द्वापर युग में महर्षि सान्दिपनि आश्रम में भगवान श्री कृष्ण, बलराम, सुदामा, शिष्य रुप में यहीं रहे। श्री कृष्ण ने १८ विद्यायें ६४ कलाएं यहीं सीखी थी। भगवान विष्णु के देह से उत्पन्न हुई क्षिप्रा नदी यहां बहती है। शिव के

जल भिक्षा मांगने पर विष्णु ने तर्जनी अंगुली दिखला दी । शिव जी ने क्रोध से उसे काटा और रक्त धारा के नीचे अपना कपाल लगाया फिर भी रक्त बहता रहा तभी से इसे क्षिप्रा कहते हैं । नदी पर सुन्दर विशाल घाट है । क्षिप्रा के पूर्व किनारे पर सिद्ध वटवृक्ष है । जहां वैशाखी स्नान यात्रा होती है तथा नागबलि नारायण बलि इत्यादि विधिकार्य होते हैं । उज्जैन नगरी में चित्रगुप्त ने यज्ञ किया था जहां चित्रगुप्त तीर्थ कहते हैं । भक्त प्रह्लाद ने यहां स्नान कर हरिहर के प्रत्यक्ष दर्शन किये थे । बौद्ध धर्मियों के पाली भाषा का यहीं जन्म हुआ । यहां जैन धर्म संस्थापक स्वामी महावीर ने २४ तीर्थ करके श्मशान में तपस्या की जब यहां जैन शासन काल था । तबसे अवन्तिका को उज्जैन नाम मिला । नवग्रहों में मंगल ग्रह की यह जन्म भूमि है । जहां मंगलनाथ मंदिर है । पूर्वकाल से यह ज्योतिष शास्त्र पारंगत प्रधान स्थान है । राजा जयसिंह ने यहां यंत्र महल बनाया । जो ग्रह-नक्षत्रों की गति जानने का यंत्र है । भूमध्य रेखा यहीं से होकर गई है ।

यहां मौर्य वंशज भी रहे । सम्राट अशोक युवराज काल में रहे । गन्धर्वसेन, परमार वंश के राजा भोज, भर्तृहरि, विक्रमादित्य, नवरत्न मुसलमान, मराठे (होलकर-सिंधिया) इत्यादियों ने यहां राज सुख भोगा । अनंत यात्री यहां आकर यात्रा का लाभ उठाते हैं । पंचकोशी, यात्रा, अष्टविश तीर्थ यात्रा क्षेत्रयात्रा, प्रदक्षणा, द्वादश यात्रा, सप्तसागर यात्रा, अष्ट महाभैरव यात्रा, एकादश रुद्रयात्रा तथा देवी शक्ति यात्रा इ० यात्रा बड़ी श्रद्धा से करते हैं ।

कुम्भ महापर्व योग

उज्जैन (अवन्तिका) नगरी में प्रति १२वें वर्ष महाकुम्भ पर्व तथा ६ वर्ष बाद अर्द्धकुम्भ पर्व का मेला लगता है । जब कि बृहस्पति का सिंहस्थ योग और चंद्र सूर्य का मेषस्थ योग होने का सुयोग होता है ।

नाथ सिद्ध प्रति उज्जैन नगरी

श्रीनाथ सिद्ध योगेश्वरों में योगी भर्तृहरि नाथ प्रसिद्ध तथा अमर पद प्राप्त किये हुये हैं जो कि यही अवंतिका नगरी के राजा थे । जब एक बार जंगल में हिरन का शिकार करते वक्त सिद्धयोगी गुरु गोरक्षनाथ जी से इनकी भेंट हुई । अपने योग चमत्कार से मृत मृग को जीवित करके दिखलाकर

गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा कि जो जीवन दान देता है वही प्राणी को मार सकता है और इससे प्रभावित होकर भर्तृहरि आगे, गोरक्षनाथ जी से दीक्षित हुये तथा तपस्या में लीन रहे वही गुफा उज्जैन क्षेत्र में आज भी क्षिप्रा तट के ऊपरी भाग पर है। यह एक संकुचित भूगर्भ में जाना पड़ता है। कहते हैं कि यह भर्तृहरि की समाधि है तथा यहां से चारों धाम जाने का मार्ग भी है जो कि बन्द है। अब गुफा के ऊपर समीप में श्री गुरु गोरक्षनाथ जी का भव्य मंदिर है। जो नाथ सम्प्रदाय से जुड़ा हुआ है। यहीं से समीप काल भैरव मंदिर है। जो प्रत्यक्ष मदिरा-पान करने में प्रसिद्ध है। अत: हर १२ साल कुम्भ महापर्व यहीं भर्तृहरि गुफा गोरक्ष मंदिर में सम्पन्न होता है। जहां सभी नाथ सम्प्रदाय एकत्रित होते हैं। स्थानधारी, तपस्वी, रमते योगी इ० यहां क्षिप्रा स्नान कुम्भ पर्व पर स्नान करते हैं। यहां पर कुम्भ पर्व योगी महासभा के अधिकार में सम्पन्न होता है। योगी महासभा के सभापति उपसभापति तथा मंत्री महामंत्री और स्थान-स्थान के सभी प्रकार के योगेश्वर यहां पर उपस्थित होते हैं।

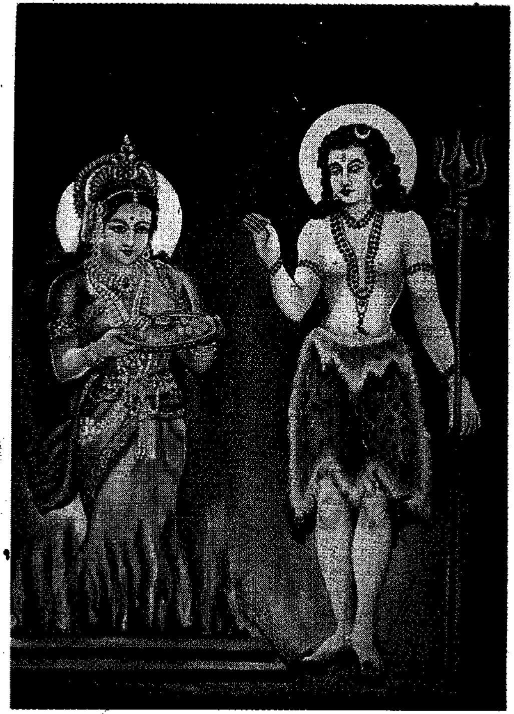
पात्र देवता स्थापना

अवन्तिकापुरी में सिंहस्थ पर्व में शुभ मुहूर्त पर ढाई दिन पात्र देवता स्थापन होती है। स्थापन पूजन धूप, दीप, रोट भोग संध्या प्रात: आरती चक्रावली आदेश गायत्री, रौरास- अष्टक चालीसा पाठ साखी इत्यादि तथा मानधारियों के चुनाव भोजन भण्डार सब विधिवत (विधि त्र्यम्बक महाकुंभ में वर्णित है) होता है।

यात्रा

पूर्वकाल में उज्जैन कुम्भ पर्व में नाथ सिद्धों की पात्रदेवता यात्रा निकलती थी और धर्म प्रचार, योग साधना प्रचार, स्थान मठ मंदिरों की व्यवस्था होती थी। अत: पात्रयात्रा की यह प्रचार-प्रसार विस्तार कार्य अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष १२ पंथ योगी महासभा के ऊपर निर्भर है। अर्थात् पात्रदेव यात्रा उज्जैन क्षेत्र में ही मर्यादित रही।

अत: स्थित पात्र देवता के सन्मुख योगी महासभा के अधिवेशन तथा सभा में ठराव, ठहराना प्रस्ताव रखना, लेखा जोखा लेन देन इत्यादि पर चर्चा होती है। स्थान मठ मंदिर इ० की व्यवस्थापना लगा देते हैं। भोग, भण्डारे,



श्री ज्वालाजी माता
शक्तिपीठ ज्वालाजी (हि०प्र०)

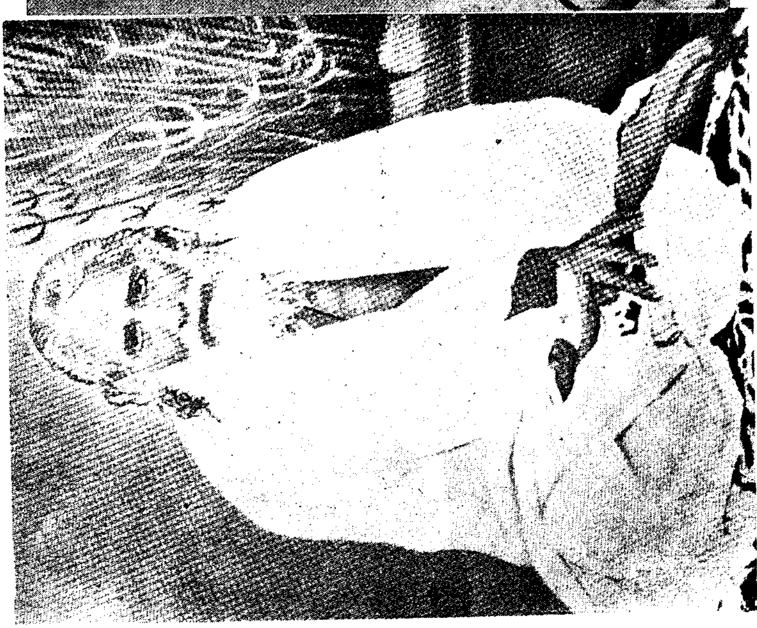


क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर से कदली मठ तक नासिक महाकुम्भ
अवसर पर कदरी पात्रदेव यात्रा

प्रीति भ
स्थान ध
रोट प्रस
लौटते है



सिद्ध योगी शील नाथ जी
पन्थ–रामके



सिद्ध योगी गम्भीर नाथ जी
पन्थ–धर्मनाथ

प्र
सप्तपुरी
संगम मे
समान है
(१
करने से
सृष्टी के
प्रयाग
महापाप
प्र
बोला
श्यामल
ब्रह्महत्
शयन
स्नान
प्र
और क
तक मा
जब प्री
होता है
मानते

ोजन दान दक्षिणा इत्यादि दर्शन मेला होता है। संत योगी महात्मा
यान आदि सत्कर्म करते हैं। ढाई दिन पश्चात पात्र देवता उठती है।
ाद बांटकर नथाना मुक्ता करते हैं। योगेश्वर अपने-अपने स्थान पर
ईं। अन्य रमते राम होते हैं।

महाकुम्भ पर्व-प्रयागराज

स्थान महात्म

ागराज समस्त तीर्थों का तीर्थराज है। प्राण है, नाथ है, राजा है और
इनकी रानीयाँ हैं। गंगा, जमुना तथा सरस्वती (गुप्त) महानदी त्रिवेणी
ों बसा हुआ प्रयाग तीन भागों में बाँटा गया, जो अग्नि स्वरुपी धूनी
है।

) गार्हपत्याग्नि (२) आवाहनीय अग्नि (३) दक्षिणाग्नि यहां निवास
यह तीनों अग्नि धूनी का फल प्राप्त होता है। इस पवित्र भूमि पर
आदि में श्री ब्रह्मा जी का प्रकट यज्ञ सम्पन्न हुआ था। जब से इसे
नाम प्राप्त हुआ, इसका इलाहाबाद भी नाम है। त्रिवेणी स्नान करने से
ों से मुक्त होकर पुण्य तथा मोक्ष प्राप्त होता है।
याग क्षेत्र में श्री माधव १२ रुप में विराजमान हैं। जो कि वैष्णव पीठ
जाता है। इसके दर्शन मात्र से सिद्धि प्राप्ति होती है। मुख्यतया यहां
अक्षय वटवृक्ष छाया में प्राणी को दिव्य सत्वगुण प्राप्ति होती है और
या का पाप नष्ट होता है। इस वटवृक्ष के पत्ते के ऊपर भगवान विष्णु
करते हैं। यहां प्रभु रामचंद्र जी, सीता जी, लक्ष्मण जी, हनुमान जी ने
का लाभ लिया। यहां मृत्यु आने पर प्राणी को मुक्ति मिलती है।
याग क्षेत्र में प्रति माघ मास में स्नान होता है जिसे कल्पवास कहते हैं
ल्पवास में कोई सौर मास की मकर संक्रान्ति से कुम्भ की संक्रान्ति
नते हैं और कोई चन्द्रमास के अनुसार माघ महीने भर की मानते हैं।
ति १२ वें वर्ष में बृहस्पति वृषभ राशि में और सूर्य मकर राशि में सुयोग
तब प्रयाग में महाकुंभ पर्व होता है तथा छटे वर्ष में अर्द्धकुम्भ भी
हैं। कुम्भ महापर्व में अति विशाल मेला होता है। ऐसे शुभ अवसर

पर पुरखों से महान साधु संत महात्मा सन्यासी, ब्रह्मचारी, ध्यानी, ज्ञानी बैरागी, त्यागी, विरागी, योगी सिद्ध महासिद्ध योगी इत्यादि आते हैं। त्रिवेणी स्नान, यज्ञ याग, ध्यान दान, भोज भण्डारे होते हैं। कथा, कीर्तन, भजन, प्रवचन इत्यादि का लाभ भक्त सेवक लेते हैं। नदियों के किनारे बड़े-बड़े पुल, असंख्य टैंट, धर्मशालायें अपने-अपने साज सज्जा के बसते हैं तथा रोशनी, असंख्य भगवे ध्वज, बड़े-बड़े जुलूस, साधु संतों के झुण्ड के झुण्ड यहां निवास करते हैं। ढोल ढमाके बजाते हैं, शंख ध्वनी भजनों के स्वरों इन सभी से प्रयाग में स्वर्ग उतरता है।

इसी क्षेत्र में श्री नाथ सिद्ध योगेश्वरों का भी कुम्भपर्व सम्पन्न होता है। देश-देश के हर क्षेत्र से असंख्य योगेश्वर, सिद्ध महात्मा यहां संगठित होते हैं। जबकि यहां कुम्भ पर्व में एक सवा महीना निवास करना पड़ता है और सभी की पूजन विधि निवास, भोजन इत्यादि का प्रबंध योगी महासभा को करना पड़ता है।

योगी महासभा कुम्भ प्रबंध

प्रथम योगी महासभा के अध्यक्ष की अनुमति से प्रधानमंत्री गंगा पट्टी में जमीन ली जाती है। जमीन के बीचोंबीच एक चबूतरा बनाते हैं और बड़ा लम्बा खम्बा खड़ा किया जाता है जिस पर ध्वजा-रोहण करना होता है। एक तरफ नाथ जी का पंचायती (१२-१८ के) धूना लगाते हैं जहां बाड़ा बनाया जाता है। भण्डार (गृह) टैन्ट लगाके बनाते हैं, ध्वज चबूतरे के सन्मुख कथा सत्संग प्रति पण्डाल बनता है। योगेश्वरों के निवास के लिये अनेक टैन्ट लगाते हैं। मानधारीयों के लिये अलग से टैन्ट लगाये जाते हैं। प्रचार-प्रसार साहित्य प्रदर्शनी चारों तरफ झण्डीया इत्यादि सजाते हैं। बिजली, नल पानी, शौचालय, चटाईयां, बिस्तरे, बर्तन, लकड़ी इत्यादि सभी व्यवस्थापन किया जाता है। दूर ध्वनी भाष्य फूल हार ढोल ढमाके इत्यादि से आगमनार्थ साधु संतों का स्वागत होता है।

चुनाव

सभी योगेश्वर संगठित होने के पश्चात मानधारीयों का चुनाव १२ पंथ सदस्य तथा योगी महासभा की अध्यक्षता में सम्पन्न होता है। पीर, महंत,

कारबारी, कोठारी, पुजारी, पंख, श्री भण्डारी, १२ पंथ के १२ भण्डारी, पंच इत्यादि नियमानुसार (पूर्व वर्णित) चुने जाते हैं और पदासीन होते हैं ।

ध्वजारोहण पूजन

इलाहाबाद (प्रयाग) महाकुम्भ पर्व में पात्र पूजा के बदले में श्री नाथ जी की ध्वज-पूजा विधि की परम्परा है । मध्य चबूतरे पर खड़े खम्बे के नीचे गुरु गोरक्षनाथ जी की प्रतिमा या मूर्ति या तस्बीर या पादुका स्थापन करते हैं तथा धूप या दीप, आरती, घण्टी, शंख इत्यादि पूजा साहित्य रखते हैं । यह सब पुजारी तथा पंख मिलकर करते हैं । फूल पुष्पहारों से दीप चेतन करके अनेक झण्डीया इत्यादि लगा के चबूतरे को सुशोभित करते हैं । मानधारीयों तथा १२-१८ के महंत आदि योगेश्वर स्पर्श से श्री नाथ जी की स्थापना तथा श्री गणेश स्थापना करते हैं । पुजारी पूजन विधि, पंचोपचारे या शोडषोपचारे (पूर्व प्रथम खण्ड में वर्णित) करते हैं ।

अत: योगी महासभा की अध्यक्षता में, सभापति या उप सभापति या मंत्री जी सदस्य मानधारी, १२-१८ के महंत तथा अनंत योगेश्वरों की उपस्थिति में श्री नाथ जी का ध्वजारोहण सम्पन्न होता है जो कि नाथ सिद्ध योगेश्वरों का ध्वज (भगवा) गेरुवा रंग में बड़े से बड़े वस्त्र में बनाते हैं । उस पर "ॐ शिव गोरक्ष योगी" लिखते हैं । ध्वजारोहण के समय शंख ध्वनि, नागफनी ध्वनि तथा जय जय कार की घोषणा में सम्पन्न होता है । पुजारी पूजन के पश्चात ध्वज पूजन करते हैं । अत: भण्डारी रोट का भोग लगाते हैं और पुजारी आरती के लिये शंख ध्वनि फूंकता है । मानधारी खड़े होते हैं, योगेश्वर चक्रावली में खड़े होते हैं । पंख कोटवाल छड़ी चंवर के साथ खड़े हो जाते हैं । पुजारी वास धूप ले के ध्वज इष्टदेवता तथा सभी को सेकता है । तदन्तर आरती होती है ढोल ढका की आवाज शंख श्रृंगी नागफनी की ध्वनियों में घंटा घड़ियाल बजते हैं । ऊंचे आकाश में श्री नाथ जी का ध्वज लहराता है । वातावरण में चैतन्य निर्माण होता है । आरती के उपरांत पंख हाथ में छड़ी लेकर खड़े रहे ऊंची आवाज में "आदेश गायत्री" मन्त्र बोलता है । फिर नाद मंत्रों से सभी योगेश्वर इष्ट को तथा ध्वज को आदेश गुरु वंदना करते हैं । फिर पण्डाल में बैठकर सभी योगेश्वर आरती अष्टक चालीसा, नाथ

साखी इत्यादि का पाठ करते हैं। इस प्रकार प्रातः संध्या में ध्वज पूजन आरती होती है।

इसी प्रकार १२-१८ के महंत जी अपने धूना क्षेत्र वाड़ा में धूना की आरती पूजा प्रातः शाम में करते हैं। तदपश्चात सभी योगेश्वर देवता मानधारी-योगी महासभा के मान्यवर अपनी-अपनी मान मर्यादानुरुप आदेश करते हैं।

तदपश्चात भोजन के लिये नागफनी बजती है। सब साथ पंक्ति में भोजन करते हैं इस प्रकार एक, सवा मास श्री नाथ जी के कुंभ पर्व पार पड़ता है। इस कुम्भ पर्व की सम्पूर्ण जबाबदारी अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष १२ पंथ योगी महासभा पर निर्भर होती है। सुबह शाम आरती २, ३ समय चाय नाश्ता, दूध फल, दो समय का भोजन तथा सभी योगेश्वर भक्तजन सेवक इनकी निवास योजनाबद्ध करना पड़ता है। सभी स्थान पर्व पर स्नान करते ध्यान पूजन में मग्न होते हैं। योग अभ्यासी नाथ सम्प्रदाय के साहित्य में अध्ययन करते हैं जो कि पुस्तकालय प्रदर्शनी भी प्रचार-प्रसार हेतु पण्डाल बनाके रखते हैं।

इलाहाबाद कुम्भ में मुख्यतया नाथ योगेश्वरों के अधिवेशन, चुनाव, साम्प्रदायिक प्रस्तावों पर विचार विमर्श, स्थान अस्थान व्यवस्था तथा योगेश्वरों की सुख-सुविधा पर संगठित होकर चर्चा होती है, यह भी योगी महासभा की अध्यक्षता में होता है।

मेले में आये हुये सिद्ध महात्मा पण्डाल में दिन भर कथा, कीर्तन, प्रवचन करते हैं तथा रात्रि आरती भोजन के पश्चात धर्मोपदेश देते हैं। दर्शनार्थीयों का अनेक प्रकार का सत्संग होता है।

पदयात्रा

प्रयागराज कुम्भ पर्व पर नाथ सिद्धों की पदयात्रा पुराने जमाने में झुण्डी रुप में अनेक साधु संत योगेश्वर मानधारी १२-१८ की जमात समेत निकलती थी और देश के पूर्व दिशा के समस्त स्थानों की, मठ मंदिरों की व्यवस्था तथा धर्म प्रचार-प्रसार की सुरक्षा होती थी। अपितु यह नाथ समाज कार्य अतः योगी महासभा के उप कार्यालय गोरखपुर जो पूर्व दिशा में है तथा इसी प्रदेश के प्रांतीय कार्यालय के ऊपर निर्भर हैं।

कहते हैं कि अभी भी पूर्व दिशा के हुगली महानाथ मठ में इस अवसर में पात्र देव और राजा जी की स्थापना होती है। इस प्रकार प्रयागराज कुम्भ पर्व पूर्ण एक या सवा महीना बड़ी धूम धाम से सम्पन्न होता है। पर्व समाप्ति पर सभी योगेश्वर वापसी स्वस्थान चले आते हैं। बाकी व्यवस्था साहित्य पुनः हरिद्वार दलीचे में वापस आता है।

इस प्रकार नाथ सिद्ध योगेश्वरों के चारों स्थान महाकुम्भ पर्व सम्पन्न होते हैं।

पात्रदेवता का अन्यत्र महत्व

दक्षिण में कद्री यात्रा और पूर्व में महानाथ बंगाल में जिस प्रकार पात्रदेवता व राजा जी की स्थापना होती है। उसी प्रकार उत्तर भारत में पीर की स्थापना से पात्रदेव यात्रा आरंभ होती थी। पीर-शब्द स्तुति प्रशंसा के अर्थ में नाथ सिद्ध, योगी पूज्यपाद पीर शब्द काम में आते थे। पीर यह सम्मानित पूजनीय शब्द है।

पात्रदेवता-पेहवा

यह पेहवा दलीचा क्षेत्र पर १२-१८ के योगीओं का सम्मेलन होता है तथा पात्र देवता स्थापन विधि होती थी। पेहवा महाभारत की युद्ध भूमि से निकट विश्राम तथा तटस्थ महारथी का आश्रय स्थान है। बलराम यहीं रहे, सरस्वती नदी से ब्राह्मण उत्पत्ति यहीं हुई कार्तिक स्वामी ने यहीं तपस्या की थी। जबकि शिवजी आदिनाथ जी नवनाथ तथा अनंत कोट सिद्ध के साथ यहां आगमन हुआ था। तबसे यहां पात्रदेवता की स्थापन पूजा हुई। सत्यनाथ ब्रह्माजी बहुत काल तक यहीं योगस्थ रहे तथा यज्ञ याग करने से कुरुक्षेत्र हुआ। यहां गरीब नाथ जी भी रहे, द्रौपदी ने यहीं भस्म धारण किया था। इस सिद्धपीठ में सतनाथ ब्रह्मा के योगेश्वर रहते हैं। इन्हीं सतनाथ के पीर जी के स्वाधीन होता है। चैत्र अमावस्या में मेला होता है। पात्रदेवता का चढ़ावा सम्पत्ति पीर जी को मिलती है।

बांगर क्षेत्र

हरियाणा बांगर क्षेत्र में भी सिद्धों का क्षेत्र है जहां १४ सौ गुप्त १४ सौ प्रगट सिद्ध हैं। यहां आठ मान थे। राजा मानसिंहादिक द्वारा सम्मानीय थे। यहां के सिंहासन पूर्व काल से पूजे जाते हैं। ८मानपीरों में ४ अठारह के और

४ बारह के पीर जी हैं। अस्थल बोहर तथा कोथकला के आई पन्थ, उझाना तथा कुपकला के कपलानी पन्थ और अठारह के रायसन तथा पेहवा के सत्यनाथ पन्थ, धनौरी के राम पन्थ तथा सौकल के धर्मनाथ पन्थ इत्यादि।

इस पेहवा पात्र देवयात्रा की पद यात्रा यहीं बांगर मंडल, ३२ धूनी, मरुस्थल कोलायत, पुष्कर तक तथा पुष्कर से मारवाड़, मेवाड़, मालवा, नागपुर, ओंकारेश्वर, आबू दलीचा (दूलेश्वर), गोरख मठी गिरनार तक ये दोनों पात्रदेव यात्रा चलती थी।

पुष्कर

पुष्कर क्षेत्र में ब्रह्मा की विशेषता है। यहां भी पात्रदेव स्थापन पूजन विधि हर एक वर्ष में होती है। पात्रदेवता स्थापना ढाई दिन तक रहती हैं पात्र यात्रा भी निकलती थी अपितु यात्रा बंद है।

*

पात्र—छत्र स्थापन पूजन

नाथ सिद्धों में स्थानीय पात्रदेवता तथा छत्र स्थापना पूजन प्रचलित है। कुरुक्षेत्र पेहवा में पात्र स्थापना होती थी, पात्रयात्रा समस्त पंजाब, सिन्ध राजस्थान, सौराष्ट्र आदि प्रदेशों में जाकर मठ मन्दिरों की व्यवस्था देखरेख करती थी।

छत्र स्थापना—पूजन यह शक्ति उपासना है। नाथ सिद्ध योगेश्वरों के कुलदेवता सिद्धपीठों में यह छत्र पूजन होता है। यह छत्र पूजन अत्यंत कष्टदायक तथा नियमपूर्वक और बड़ी श्रद्धा से करते हैं। इससे नाथ सिद्धों की तंत्र—मंत्र क्रियायें सिद्ध होकर शक्ति वरदान प्राप्त करते हैं।

पात्र—छत्र उपासना पूजन वर्ष के अश्विन मास तथा चैत्र मास में शक्ति के नवरात्र मध्ये दीपोत्सव मना के ज्योति ज्वाला की विशेष रुप से पूजा विधि करते हैं। शक्ति—छत्र उपासना नव दुर्गा व्रत स्वरुप में करते हैं। सिद्ध शक्तिपीठ में सभी पंथ के नाथ सिद्ध योगेश्वर आते हैं। एकत्रित योगेश्वरों का चुनाव होता है और चुने हुये अधिकारियों को छत्र पात्र के सन्मुख आसन (गद्दी) दी जाती है जिन्हें मानधारी कहते हैं। इनमें राजा जी या पीर जी (कपलानी आदि

पंथ के) महन्त जी, (आई पंथ के), कारबारी (धर्मनाथी), कोठारी (सतनाथी) पुजारी (नटेश्वरी पंथ के) रोट भण्डारी तथा १८ के रमतों के महंत (राम के पंथ के) श्री भण्डारी (गंगनाथी या बैराग पंथ के) पंच (१२ पंथों के) औघड़ों का महंत (कपिल पंथ का) इत्यादि मानधारी छत्र-पात्र पूजन तथा यात्राओं की व्यवस्था करते हैं तथा योगी महासभा की अध्यक्षता में सम्पन्न होता है। सिद्ध योगेश्वर ९ दुर्गा ९ रात्र में एक आसन में बैठकर रहना पड़ता है। व्रतस्थ सभी योगेश्वरों का खान पान, उठना बैठना, बोलना, चालना, रहनी, सहनी, करनी कथनी सब पर नियम बंधन आता है। नवदुर्गा शक्ति तंत्र-मंत्र अनुष्ठान, नवदुर्गा जाप-ध्यान तथा शक्ति पीठ पूजन-छत्र-पात्र पूजन विधि तथा प्रातः संध्या आरती चक्रावली, धूप दीप यज्ञ धूनी हवन, चण्डी, महाचण्डी शत चण्डी इत्यादि हवन क्रियायें होती हैं। भोग, भण्डारे, बलि पूजन बलिपात्र तथा मान पान, चिप्पी दान, सभी विधिवत योगेश्वर बड़ी श्रद्धा से करते हैं। अर्थात यह नव दुर्गा शक्तिपीठ पात्र-छत्र विधि योगी महासभा अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष १२ पंथ के अधिकार में होता है जिसे रमतों के महंत के निर्देशन पर निर्भर होता है।

ज्वाला जी शक्तिपीठ

कांगड़ा ज्वाला जी ५१ शक्तिपीठ में से एक है। यहां सती की जिह्वा गिरी थी। यह एक मंदिर है ऊपरी भाग सोने का है। मन्दिर के भीतर पृथ्वी में से मशाल रुप में (ज्योति) ज्वालायें भूमि में से उत्पन्न होती हैं। इसे ज्वाला देवी जी कहते हैं। मन्दिर के पीछे एक छोटा मंदिर है। जहां कुंआ है उसमें से ही प्रकाश पुंज निकलते हैं। पास में दूसरे कुंए से उबलता जल दिखता है। इसे गोरख डिब्बी कहते है। यहां ज्वाला जी क्षेत्र में गोरक्षनाथ रमते हुए आये थे। जब ज्वाला देवी जी ने आदर आतिथ्य कर भोजन लेने को कहा तब गोरक्षनाथ जी ने हम मित आहारी तथा योगी बतलाते हुए तामसी भोजन नहीं करेंगे, (जो कि वहां बलि चढ़ाते है) इसलिये हम थोड़ी खिचड़ी खायेंगे। देवी ने अभिमान से कहा मैं पूर्ण पर्वत को जला सकती हूँ। तो यहां यह डिब्बी (कुण्डी) उबलती है आप खिचड़ी बना लो। तब खिचड़ी हेतु मैं चावल भिक्षा ले आता हूँ कहकर गोरक्षनाथ जी ने उस डिब्बी के उबलते हुए पानी में थोड़ी

भस्मी डाली तब जल ठंडा हो गया लेकिन पानी उबलता दिखाई पड़ता है। अतः गोरक्षनाथ भिक्षार्थ रमते-रमते गोरखपुर आये और रमणीय क्षेत्र में तपस्या में लीन हो गये। जब से ज्वाला जी में यह उबलता हुआ पानी जो कि ठंडा ही रहता है। आज तक मौजूद है। योगी लोग यह सिद्ध पीठ मानते हैं अतः नवरात्र में यहां पात्र-छत्र पूजा होती है ९ दिन बड़ा योगी सिद्धों का मेला होता है। रोट भोग भण्डारे सभी योगेश्वरों को भरपूर चिप्पी दान तथा मान-पान होता है। शक्ति साधना सभी करते हैं। साल में दो बार नवरात्र मेला होता है। पात्र-छत्र यात्रा की परंपरा भी थी अपितु मर्यादित है।

पात्रपूजन यात्रा दांग क्षेत्र से देवी पाटन

पूर्वकाल पाटन में भगवती सती का वाम स्कन्ध सहित पट गिरा था। जहां गुरु गोरक्षनाथ जी ने साधना की थी। यह सिद्ध हाजी पीर रतननाथ जी जिनके गुरु श्री गुरु गोरक्षनाथ जी थे इन्होंने शक्तिपीठ देवी पाटन मंदिर का निर्माण कराया था।

गोरखा राज्य दांगदेश में चौघड़ा नाम स्थान में गुरु गोरक्षनाथ जी की अर्चित पात्रदेव हाथों में धारण किया था, युग-युग परंपरा रुप यह पात्रदेव यात्रा देवी पाटन में आती है। यह देवी पाटन, बाबा रतननाथ जी की शक्ति उपासना स्थान है। दांग से पाटन ७५ किलो मीटर अन्तर है। देवी ने रतन नाथ जी को वरदान दिया था कि तुम जबही यहां आवोगे तो तुम पूजे जावोगे। अतः जब पात्रदेवता लेकर बाबा रतननाथ जी की सवारी चौघरा दांग स्थान से प्रत्येक वर्ष चैत्र शुक्ल पंचमी को देवी पाटन में आती है और नवरात्र में पाटन में छत्र पूजन के साथ निवास करके एकादशी को वापस जाती है। नवरात्रि में यह पात्रदेव तथा छत्र पूजा बड़ी श्रद्धा से होती है यह परंपरा पात्र यात्रा आज भी चली आती है। देवी पाटन में पात्र छत्र पूजन तांत्रिक विधि से होती है। शक्ति पीठ में यंत्र रूप रचना से, छत्र की स्थापना होती है। ६-६ से ८-८ घण्टे तक पूजा चलती है। सभी महात्मा व्रतस्थ रहते हैं। कठिन नियम विधि से होते हैं। यज्ञ याग, हवन, रोट भोग कच्ची पक्की रसोई भण्डारे, बलि पूजन इत्यादि विधि होता है। तदपश्चात पात्रदेव यात्रा वापसी दांग के

लिये प्रस्थान करती है। दांग में पात्रदेव स्थापन पूजन तथा सिंहासनाधीन होती है।

किसी काल में रतननाथ जी की पात्र यात्रा खुराशान, काबुल, कंधार, मक्का मदीना तक भी होती थी। मक्का मदीना में बाबा रतननाथ जी ने तीन साल तक निवास किया था।

काठमाण्डु मृगस्थली पात्रदेव यात्रा

काठमाण्डु में पशुपतिनाथ जी गोरक्षनाथ मंदिर का नाम है। सिद्धाचल मृगस्थली क्षेत्र में गुरु गोरक्षनाथ जी की तपोभूमि है। आज मृगस्थली गोरक्ष सिद्धपीठ नाम से प्रसिद्ध है यहां भी पात्रदेव यात्रा की परंपरा है। आषाढ़ शुक्ल ११ से यह यात्रा प्रारंभ होकर पीर पीटी काठमाण्डु, नील कण्ठ होकर मुक्तिनाथ (नेपाल) में आती है। यहां छत्र पूजन होकर पुनः कार्तिक कृष्ण ११ के दिन संध्या समय मृगस्थली, प्रत्यावर्तन कर नवरात्रावसान विजयादशमी में सम्पूर्ण होती है किसी काल में योगियों की यह झुण्डी, भोट, तिब्बत, चीन, महाकाल तक जाती थी।

कामाख्या शक्तिपीठ

पूर्व में कामरुदेश कामाख्या शक्तिपीठ विख्यात है। यहां मायारुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी ने कामाख्या क्षेत्र में (त्रिराज्य ब्रह्मपुत्रा नदी क्षेत्र में) शाबर मंत्र सिद्धता के उद्देश्य से व्रत एवं तपस्या की थी। नवरात्रियों में यहां (कामाख्या में) भी साधू संत व्रतस्थ होते हैं नाथ साम्प्रदायिक योगेश्वर अपने तांत्रिक योग सिद्धि के लिये कामाख्या तथा देवी पाटन तथा महाकाली बंगाला में नवरात्रि पर्वो में जप तप होम हवन मंत्र तंत्र इत्यादि कर्म करते हैं। यहां सती का गुहय अंग गिरा था। यह सभी शक्ति पीठों में महापीठ माना जाता है। अतः यहां महात्मा वैयक्तिक साधना करते हैं।

गुरु गोरक्ष काली प्रसंग

बंगाल प्रदेश में (कलकत्ता) एक बार गुरु गोरक्षनाथ जी रमते–रमते दर्शनार्थ गये। वहा महाकाली खप्पर धारी माई ने गुरु गोरक्षनाथ जी से भिक्षा मांगी, गुरु गोरक्षनाथ जी ने न भिक्षा दी ना ही उपदेश दिया, माई मक्खी (मक्षिका) रुप धारण कर श्री नाथ जी की काया में प्रवेश किया। गुरु गोरक्षनाथ जी ने आसन लगाकर अपनी योग शक्ति द्वारा समस्त काया को तपाया, काया

में मक्खी रुप काली माई तड़पने लगी दशों द्वार खोलकर बाहर आना चाहती थी । तब गुरु गोरक्षनाथ जी की शरण में आयी । अतः नासिका द्वारे झींक (छत्र) बोलकर उसे काया से बाहर लायी । अतः वार्तालाप हुआ एक दूसरे की शक्ति अवतार का ज्ञान हुआ माई ने अपनी १० महाविद्या का विस्तार दिखलाया तथा गुरु गोरक्षनाथ जी ने अपने शिव स्वरुप की पुष्टि दी । अतः माता महाकाली ने कहा कि जिस प्रकार मुझे झींक (छत्र) से बाहर निकाल कर मुक्त किया इसलिये जहां आपका पात्र पूजेगा वहां मेरा छत्र भी पूजा जायेगा ।

अतः ९ रात्रि में महाकाली की बहुत बड़ी पूजा होती है यहां भी तांत्रिक पूजा होती है । इस शक्ति पीठ की ख्याति दूर-दूर तक है । यहां का आदिकाली प्राचीन मंदिर है । यहां सती के दाहिने पैर को चार अंगुलियां (अंगूठा छोड़कर) गिरी थी । इसलिये इसे शक्तिपीठ मानते हैं । काली मंदिर को भी शक्ति पीठ मानते हैं तथा दक्षिणेश्वरी मंदिर है जो विख्यात है ।

इस प्रकार नाथ सिद्धों ने अपने-अपने गुरु शिष्य परंपरागत शक्तिपीठों में साधना तथा उपासना कराके अनेकों सिद्धियां प्राप्त की हैं । दक्ष प्रजापति यज्ञ में सती का आत्मदाह हुआ दक्ष-यज्ञ नष्ट कर सती मृत शव लेकर क्रोधित, शिवजी, सर्वत्र भ्रमण करने लगे, समस्त सृष्टि भी दाह होने लगी देवताओं की प्रार्थना सुनकर विष्णु जी ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शव को छिन्न-छिन्न कर दिया और शव के विभिन्न अंग पृथ्वी पर जहां-जहां पर गिरे वहां-वहां शक्तिपीठ बने और यह भूमि वर्ण समाग्नाय स्वरुप है । भिन्न वर्ण शक्तियां भिन्न देवता की हैं । इसलिये उन उन वर्णों, पीठों, शक्तियों एवं देवताओं का परस्पर सम्बन्ध है। जिसके वहां ज्ञान, अनुष्ठान, व्रत तथा उपासना, साधना, योग, तपस्या यह सब वहीं-वहीं पीठों में साधकों ने, योगीयों ने करने से अति शीघ्र सिद्धियां प्राप्त होती हैं ।

अतः निम्न प्रकार सती के शरीर के अंग (खण्ड) तथा आभूषण ५१ स्थानों पर गिरे । उन स्थानों पर एक-एक शक्ति तथा एक-एक भैरव भी नाना प्रकार के स्वरुप धारण करके स्थित हुए । उन स्थानों को महापीठ कहा गया तथा वर्ण और स्थान महात्म्य से विशेष सिद्धि प्राप्ति कराते हैं । महापीठों के साथ साथ कुछ उप पीठ भी स्थित हैं ।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
१	योनि लोम	कामगिरी कामरुदेश उपपीठ वंश	आसाम गोहाटी के पास कामाख्या मन्दिर	'ॐ'कार –	कामाख्या –	उमानाथ –	कौल–विद्या, अणिमादि सिद्धियां साबर मंत्र सिद्धियां प्राप्त होती हैं।
२	वाम स्तन	जालंधर (पंजाब)	जालंधर पंजाब प्रांत	'आ'कार	त्रिपुर मायीनी	भिषन	वाम मार्ग के मंत्र सिद्धियां
३	दक्षिण स्तन	रानगिरी पीठ	मध्य प्रदेश मैहर के शारदा मंदिर तथा चित्रकूट में	–	शिवानी	चण्ड	दक्षिण मार्ग के मन्त्र सिद्धियां महादेवी शक्ति से दुःख शोक विनाश
४	वाम गण्ड (कपोल) (गाल)	गोदावरी पीठ अर्बुदाचल पीठ	आन्ध्र प्रदेश, राजमहेन्द्री के पास गोदावरी स्टेशन के पास, कुक्बुरकोटी तीर्थ के पास	'ऋ'कार	विश्वेशी रुक्मिणी	दण्डपाणी वत्सनाभ	अम्बिका शक्ति तथा वाममार्गी सिद्धियां प्राप्त होती हैं।
५	दक्षिण गण्ड (कपोल) (मुख मण्डल)	गण्ड की पीठ अम्रातकेश्वर पीठ	नेपाल में मुक्तिनाथ गण्ड की नदी के उद्गम स्थान के पास	'लृ'कार	गण्डकी	चक्रपाणी	धन –सौख्य प्राप्ति यक्षिणी सिद्धि प्राप्ति, काली शक्ति प्राप्त होती है।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
६	गुह्य भाग	नेपाल पीठ (काठमाण्डु)	नेपाल के दक्षिण दिशा में	'इ'कार	महामाया	कपाल	५६ लाख भैरव भैरवी २ हजार शक्ति ३०० पीठ एवं १४ श्मशान हैं दक्षिण मार्गे सिद्धिदायक,वैदिक मंत्र सिद्धि। गुह्यश्वरी महामाया प्रत्यक्ष दर्शन देती है।
७	त्रिनेत्र	करविर रौद्र पर्वत	महाराष्ट्र कोल्हापुर महालक्ष्मी मन्दिर (अंबा जी का मंदिर)	'ई'कार	महिषामर्दिनी	क्रोधीश	वामाचार तथा दक्षिण मंत्र सिद्धि, होकर त्रिकाल देवता दर्शन देते हैं यमघण्ड शक्ति दर्शन।
८	वाम कर्ण दक्षिण कर्ण	कश्मीर पीठ कर्नाट	काश्मीर शहर में गंगा जमना के मध्य में अन्तर्वेदी	'ॐ'कार 'ॐ'कार	जयदुर्ग जयदुर्ग	अभीस अभीस	सर्व विधि मन्त्रों की सिद्धि द्वारवासिनी शक्ति कृपा। वैदिक मन्त्रों की सिद्धि प्राप्त।
	कर्ण मल	इन्द्रप्रस्थ (उप)	–	'ॐ'कार	–	–	वेद उत्पत्ति पुनावृत्ति शांकरी देवी रक्षा करती है।
९	नासिका	सुगन्धा	बंगलादेश,खुलना स्टेशन से बरीसाठ यहां से १३ मील पर शिकारपुर गांव में सुनंदा नदी	'ऋ'कार	सुनन्दा	त्र्यैंबक	योग सिद्धि, मंत्राधिष्ठातृदेव प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं। शंखीनी शक्ति कृपा। दर्शन प्राप्त होता है।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
			के किनारे उग्रतारा मंदिर में				
	नख	एकाम्रपीठ (उप)	–	'लृ'कार	शुलेश्वरी	–	विद्या ज्ञान सिद्धि, शुलेश्वरी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है।
	त्रिवलिके वस्त्र के तीन खण्ड	त्रिस्रोत पीठ पूर्व पश्चिम दक्षिण उपपीठ	–	'लृ'कार	–	–	ग्रहस्थ द्विज को पौष्टिक मंत्रों की सिद्धि।
१०	नाभी	उत्कल पीठ कामकोटि पीठ (उप) हरिद्वार	जगन्नाथपुरी जगन्नाथ मंदिर में विमला देवी (उड़ीसा) मंदिर में, मायादेवी मंदिर	'ऐं'कार	विमला	जगन्नाथ	काम मंत्रों की सिद्धि, सुंदर अप्सरायें प्रसन्न होती हैं। माता कामिनी देवी दर्शन देती हैं।
	वाम हस्तागुली	हिमालय पर्वत कैलाश पीठ (उपपीठ)	तिब्बत कैलाश पीठ	'ओं–कार	ललीता	भव	करमाला मंत्र जाप करने से तत्क्षण सिद्धि प्राप्त होती है।
११	दक्षिण हस्तागुली दोनों हाथ की अंगुलियां	प्रयाग अजमील (उप)	उत्तर प्रदेश वाराणसी अक्षय वटवृक्ष के पास, ललिता देवी मंदिर	'ओं'कार	ललीता	भव या भर	जीव मुक्ति प्राप्त होती है।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
१२	उर्ध्वदन्त पंक्ति	शुची	कन्याकुमारी से ८ मील सुचंद्रिम में शिवमंदिर	'ॐ'कार	नारायनी	संहार	वैदिकादि मंत्र सिद्धि होते हैं। कौमारी शक्ति प्राप्त होती है।
१३	अधोददन्त पंक्ति	पंचसागर, भृगुपीठ	भृगुपीठ द्विप	'ॐ'कार	वाराही	महारुद्र	शाबर मंत्र सिद्धि होती है।
१४	अर्ध्व ओष्ठ	भैरव पर्वत	अमिधान–क्रोश में उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर भैरव पर्वत पर तथा (गीरनार में)	–	अवन्ती	लम्ब्कर्ण	मौन सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है। चर्चिका शक्ति देवी रक्षा करती है।
१५	अधोद ओष्ठ	अट्टाहास जैन पर्वत	अहमदपुर, कटवा लाईन लाभपुर स्टेशन के पास पश्चिम बंगाल	–	फूल्लरा	विश्वेश	मौन व्रत सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है। अमृतकला शक्ति प्राप्त होती है।
	जिव्हाग्र भाग	गीरी पीठ (उपपीठ)	ज्वाला जी	'ल'कार	सिद्धिदा (अम्बिका)	उन्मत्त	जप तप से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है। सरस्वती देवी प्रसन्न होती है।
१६	जिह्वा	ज्वालाजी पीठ	हिमाचल प्रदेश ज्वालाजी पीठ	'ल'कार	सिद्धिदा	उन्मत्त	वाक सिद्धि जल्द प्राप्त होती है।
	वक्षः स्थल		" "	'ग'कार	–	–	अग्नि ने तपस्या की तो देवता मुखत्व को प्राप्त
	करतल (दक्षिण)	केदारपीठ(उप)	केदारनाथ मंदिर, उ.प्र.	'अ'कार	–	–	प्रायः सर्वमंत्र सिद्धि होती है

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
	कंगण (उप)	अगस्ती आश्रम पीठ (उपपीठ)	महाराष्ट्र, मनमाडसे ६ मील अनकाई स्टेशन से ३ मील पर है।				सौख्य प्राप्ति।
	मुद्रीका (उप)	इन्द्राक्षी पीठ (उपपीठ)					सुख, सौख्य, धन प्राप्ति।
	वलय	राजराजेश्वरी पीठ (उपपीठ)	रेवती नदी के तट पर				यक्षिणी सिद्धि प्राप्ति।
१७	कण्ठ	अमरनाथ गुफा	कश्मीर में	–	चण्डिका	भीरुक	ज्ञान–अष्ट सिद्धियां प्राप्ति है। ज्ञान सिद्धि से अमरत्व प्राप्ति चण्डीशक्ति प्राप्त होती है।
१८	ग्रिवा	श्री शैल या श्री हट्ट	श्रीशैल गांव में मल्लीकार्जुन मंदिर में भ्रमराम्ब देवी मंदिर नंदयाल स्टेशन से जंगल मार्ग या सिकोट के जैनपूर में	–	महालक्ष्मी	सवरानंद (ईश्वरानंद)	मन्त्र सिद्धि प्रत्यक्ष शिव दर्शन स्वर सिद्धि, प्राप्ति, देवी भद्रकाली दर्शन देती है।

क्र0 सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
१९ ब्रह्मरन्ध्र	हिंगुला (हिंगलाज)	(पाकिस्तान) कराची से ९० किमी० बलुचीस्तान के सातबेला स्थान में	'क' कार	भैरवी	भिमलोचन	ब्रह्म विद्या ब्रह्मशक्ति दर्शन। काया कल्प प्राप्त होता है। उमा शक्ति कृपा, शिव का दर्शन।
मस्तक पत्रवल्ली	श्रीपीठ (उपपीठ)	—	'ॐ'कार	अष्टभैरव	रुद्र	कलियुगी जीव का यहां पहुंचना दुर्लभ है। ब्रह्मज्ञान, पवनहारी, अमृतपान, ज्योति स्वरूप, यहां पवनहारी सिद्ध योगी जा सकता है।
२० कर्ण कुण्डल (भरन) कर्णाद्धा भगण	वाराणसी (काशी)	उत्तर प्रदेश का काशी में मणीकर्णी के पास काशी विश्वेश्वर मंदिर से गंगा की तरफ जाते हुए आधा फर्लांग पर स्थान विशालक्षी मंदिर में।	—	विशालाक्षी	कालभैरव	मंत्र सिद्धि, मुख शुद्धि करी शक्ति, कौमारी शक्ति, अन्नपूर्णा शक्ति, दूरीश्रवण सिद्धि प्राप्त होती है। जीव मुक्तावस्था में हो जाता है।
२१ कण्ठ हार	नन्दिपुर पीठ	हावड़ा क्युब लाईन पर सैधीया स्टेशन पर वट वृक्ष के नीचे	'क' कार	नन्दिनी	नंदिकेश्वर	इन्द्रजाल विद्या वैष्णवी शक्ति प्राप्त होती है। वाराह शक्ति प्राप्त होती है।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
२२	केश कलाप(भार)	वृदावन क्षत्रीपीठ	मथुरा वृदावन रोड पर कृष्ण जन्मभूमि के पास रेलवे क्रास पर भुनेश्वर महादेव मंदिर में जल–कुंड (कुंआ)	'क्ष'कार	उमा	भुनेश	समस्त सिद्धियां शीघ्र प्राप्ति तहां महालक्ष्मी शक्ति प्राप्ति कुबेर शक्ति प्राप्त होती है।
२३	मस्तक भरण (किरीट)	किरीट पीठ	हावड़ा बहरवा लाईन खगराघाट रोड स्टेशन से बटनगर में गंगा तट पर	'क'कार	विमला (भुवनेशी)	संपर्त	चामुण्डा शक्ति शूद्र देवता सिद्धि कर प्राप्ति, राजयोगी, योगी को प्राप्त।
	कन्चुकी	नर्मदा पीठ (उपपीठ)	नर्मदा नदी का परीसर (परिक्रमा)	'ख'कार	–	–	ज्योर्ति मंत्र सिद्धि, यहां तपस्या करने से जीव मुक्ति प्राप्त होती है।
२४	वाम स्कन्ध	मिथिलापीठ (अवध) मालवपीठ	बिहार में सरहना स्टेशन के पास उग्रतारा मंदिर तथा नेपाल जनकपुर से ३२ मील पर दुर्गा मंदिर में उच्चैठ में (पूर्व में)	'घ'कार	उमा	महोदर	गन्धर्व की राग सिद्धि प्राप्ति खण्ड गिनी शक्ति उमा कृपा प्राप्त करते हैं।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
२५	दक्षिण स्कन्ध	रन्तावली पीठ	आंध्रा में मद्रास	'घ'कार	कूमारी	शिव	१६ कला सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्ति वज्र शरीर होता है।
	जठर	गोकर्ण पीठ (उपपीठ)	हुबली से १०० मील पर है।	'छ'कार	चंद्रभागा	वक्रतुण्ड	ऋद्धि–सिद्धि प्राप्ति
२६	दक्षिण बाहु (कक्ष)	चट्टल (कोट्टकपीठ)	बांगलादेश चटगांव से २४ मील पर सीता कुण्ड स्टेशन से चन्द्र–शेखर पर्वत पर भवानी मंदिर	'च'कार	भवानी	चन्द्रशेखर	राक्षसी माया सिद्धि प्राप्ति वज्रेश्वरी (वज्र धारण करने वाली) शक्ति रक्षा करती है।
२७	वाम बाहु (कक्ष)	बहुला कुलंतक पीठ	पश्चिम बंगाल अहमदपुर से कटवा रेलवे लाइन पर केतुब्रह्म गांव में।	'ङ'कार	बहूला (चण्डिका)	भिरुक	विद्वेषण, उच्चारण, मारण प्रयोग सिद्धियां प्राप्ति।
	प्रथम जठर वलिका	मातुरेश्वर पीठ (उपपीठ)		'ज'कार			शैव मंत्र शीघ्र सिद्ध होते हैं।
	अपर जठर वलिका	अट्टहास पीठ (उपपीठ)		'झ'कार			गणेश मंत्र शीघ्र सिद्ध होते हैं।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
	तीसरी वलिका	विरजपीठ (उपपीठ)		'त्र'कार			विष्णु मंत्र शीघ्र सिद्ध होते हैं।
	बस्तिपात क्षुद्र घण्डिका	राजगृह पीठ घण्टिका पीठ (उपपीठ)		'ट'कार			वेदार्थ–ज्ञान सिद्धि प्राप्ति ऐतद जालीक मंत्र सिद्ध होते हैं।
२८	अस्थी (कंकाल)	कांची (पुरी क्षेत्र)	मद्रास के पास कांची पुरम मध्य शिव कांचीम काली मंदिर		देवगर्भ	रूरू	श्मशानी, मृतात्मे वश होते हैं तथा सात्विक मंत्र सिद्ध होते हैं।
२९	वाम नितम्ब या दाया कांछ	काल माधव	महापत पीठ में	'ठ'कार	काली	असितांग	देह सौख्य, प्रलुभ्यक अघोरादि मार्ग चलत।
३०	दक्षिण नितम्ब	शोण या नर्मदा	मध्य प्रदेश, अमर कंटक नर्मदा उगम स्थान पर	'ख'कार	–	भद्रसेन	वेदमार्ग ज्ञान प्राप्ति।
३१	उद्र	प्रभास पीठ या सोमनाथ	गिरनार पर्वत पर काली शिखर के पास काली मंदिर	'ग'कार	चंद्रभागा	वक्रतुण्ड	योगीक सिद्धियां, ईशत्व प्राप्त होता है। त्रिशूल धारणी शक्ति प्राप्त होती है। वैदिक तथा दक्षिण मार्ग सिद्धियां

क्र० सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
३२ हृदय	वैद्यनाथ हरिद्वार	पश्चिम बंगाल वैद्यनाथ धाम में मायादेवी मंदिर तथा हरिद्वार (उ०प्र०)	य कार य कार	जयदुर्गा जयदुर्गा	वैद्यनाथ वैद्यनाथ	स्वर ज्ञान, वचन रचना ईशत्व सिद्धि काव्य शक्ति, परकाया प्रवेश सिद्धि समस्त माया सिद्धि,ललीत देवी प्रसन्न
३३ मन	वक्त्रेश्वर पीठ	औढाल–सैंधीया लाईन पर दुबराजपुर स्टेशन से ७ मील उत्तर दिशा श्मशान में पश्चिम–बंगाल	ॐ कार	महिशमर्दिनी	वक्त्रानाथ	योगी सभी इन्द्रियों पर विजय पाता है। तंत्र मंत्र सिद्धि से दानव दैत्य भूतप्रेत वश में होते हैं। मन पवनहारी होता है। इ० सिद्धियां प्राप्त शोक बिना शनी शक्ति दर्शन।
३४ पृष्ठ	कन्याश्रम	कन्याकुमारी, भद्रकाली मंदिर, कन्याकुमारी में कुमारी मंदिर	भ कार	शर्वाणी	निमीष	समस्त मायाओं की सिद्धि।
वाम पृष्ठीका दक्षिण पृष्ठीका	उपपीठ मायापुर षष्ठीश पीठ (उपपीठ)		म कार ब कार			पादुका मंत्रों की सिद्धि होती है।
जघन का पात दक्षिण अरू	कैलागिरीपीठ(उप) रालापुर पीठ(उप)		ङ कार ढ कार			वन देवता मंत्र शीघ्र सिद्धि।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
	वाम अरू	कलेश्वर पीठ (उपपीठ)		ण कार			आयु वृद्धिकारक मृत्युंजय मंत्र सिद्धि प्राप्त होती है।
३५	जानु (दक्षिण) जानु (वाम)	जयंति पीठ उज्जैनी पीठ, नेपाल	नेपाल(काठमांडु) पशुपतिनाथ में बागमती नदी के तट पर गुह्येश्वरी मंदिर में	'त'कार 'थ'कार	महामाया	कपाल	लक्षवेध शक्ति प्राप्त होती हैं कवच मंत्र सिद्ध होते हैं। स्व रक्षण होता है।
३६	दक्षिण जंघा	योगिनी पीठ (मगध पीठ)	पटना शहर में बड़ी पटनेश्वरी मंदिर में	'द'कार	सर्वानदकरी	व्योमकेश	कौलिक मंत्र सिद्ध होते तथा कामना पूर्ति होती है।
३७	वाम जंघा	जयन्ती	आसाम में शिलांग से ३३ मील पर जयंती पर्वत पर बाउरग्राम में।	'थ'कार	जयंती	क्रमदीश्वर	वैतालिक और शाबर मंत्र सिद्धि होती है। महाबला शक्ति वरदान देती है।
	गुल्फ पतन (दक्षिण)	हस्तिानपुर पीठ कुरुक्षेत्र (उपपीठ)	मेरठ से २२ मील पर हरियाणा कुरुक्षेत्र द्वैपायन सरोवर के पास शक्तिपीठ है।	'न'कार	सावित्री	स्थाणू	सूर्य गायत्री मंत्र सिद्धि (वैदिक शाबर)।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
३८	वाम गुल्फ	विभाष	बंगाल मिदनापुर जिला पंचकूला स्टेशन से तमलूक ग्राम में काली मंदिर	'प'कार	कपालिनी (भिमरुपा)	सर्वानंद (कपाली)	सुरज वसी सिद्धि। त्राटक क्रिया जाप किया।
		उड्डीश पीठ (उपपीठ)	ओरीसा	'प'कार	–	–	उड़ीसा महातंत्र सिद्धि।
३९	नुपुर	नुपुरार्ण पीठ लंको	लंका द्वीप (सिहलद्वीप)	–	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर	सूर्य मंत्र सिद्धियां।
	दूसरा नुपुर	डामर पीठ (उप)		'प'कार	इन्द्राक्षी	साक्षसेश्वर	उड़ीसा महातंत्र सिद्धि प्राप्त।
४०	नला (उदरकी)	नलहाटी	पश्चिम बंगाल में हावड़ा क्यूब लाइन पर नलहाटी स्टेशन से २ मील पर शक्तिपीठ है। नैऋत्य कोन में एक टिले पर	'ह'कार	कालीका	योगीश	मंत्र जाप से कालीका (पार्वती) स्वरूप में प्रसन्न होती है।
	धमनी का पतन	अत्रि पीठ (उपपीठ)	मण्डलचट्टी से अमृतकुण्ड क्षेत्र में पर्वतीय रुद्रनाथ मार्ग पर (हिमालय)	'ह'कार	पार्वती	रुद्रनाथ	यावत् सिद्धियां प्राप्त होती है।

क्र० सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता–मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
देहरस	प्रयाग पीठ	इलाहाबाद उत्तर प्रदेश				
	बगलो उपपीठ	गंगा नदी के पूर्व दिशा में	'फ'कार	महालक्ष्मी	सवरानंद	यहां साधना/भक्ति करने से जीव मुक्ति–मोक्ष तथा जीव चर्तुमुख होकर स्वर्ग को जाता है। सती पार्वती/ महालक्ष्मी कृपा।
	चामुण्डा उपपीठ	" " उत्तर दिशा में		बगलामुखी	भैरव	
	राजराजेश्वरी उपपीठ	गंगा जमना के मध्य में		चामुण्डा	क्रोधीश	
	भुवनेशी उपपीठ	जमना के दक्षिण दिशा में				
रक्त पतन	मलयपीठ (उपपीठ)	मद्रास–मंगलौर लाइन पर ३४ मील पर मोरपुर स्टेशन से १७ मील पर पर्वत	'म'कार	पार्वती	रूद्र	रक्ताम्बरादि बौद्ध मंत्रसिद्धि पार्वती कृपा।
पित्त पतन	श्री शैल पीठ (उपपीठ)		'य'कार	नारायनी	संहार	वैष्णव मंत्र सिद्धि प्राप्त

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता—मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
	मेद पतन	हिमालय मेरु पीठ (उपपीठ)		'र'कार	अम्बिका	अमृत	स्वर्णाकर्षण भैरव सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती हैं।
	मज्जा पतन	माहेन्द्र पीठ (उपपीठ)		'व'कार			शाक्त मंत्र जाप से सिद्धि।
४१	दक्षिण पादांगुष्ठ	युगाद्या पीठ वामपीठ उप	पश्चिम बंगाल बर्दवान स्टेशन से २० मील उत्तर में क्षीर ग्राम में	'श'कार	भुतधात्री	क्षीरकंटक (युगाधा)	समस्त मंत्र सिद्धि।
४२	वाम पाद उंगलियां	विराट पीठ हिरन्यपुर पीठ	जयपुर से ४० मील वैराट ग्राम में (उत्तर में)	'ष'कार	अम्बिका	अमृत या अमृताक्ष	वाममार्गी सिद्धि लाभ श्री देवी, साधना में रक्षा करती है।
४३	शेष पाद अंगुली दक्षिण पाद की चार अंगुली	काली पीठ	कलकत्ता कालीघाट का काली मंदिर (बंगाल) तथा आदि काली मंदिर टालिगंज के बाहर	'ह'कार	कालिका	नकुलिश	अघोर सिद्धियां प्राप्त होती हैं। माँ कलिका दर्शन देती है।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता—मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
४४	दक्षिण पाद	त्रिपुरापीठ	त्रिपुरा राज्य में राधा किशोरपुर गांव से डेढ़ मील पर्वत पर		त्रिपुर सुंदरी	त्रिपुरेश	नारसिहीं तथा तैजसी शक्ति प्राप्त होती है।
४५	वाम तल्प	करतोय तटपीठ	बांगलादेश में बोगडा स्टेशन से २० मील भवानीपुर गांव में		अपर्णा	वामन	उमा शक्ति, अपर्णा शक्ति प्राप्ति, काम पर विजय।
४६	दक्षिण तल्प	श्री पर्वतपीठ	लद्दाख में (कश्मीर पास में) सिलहट (आसाम) २ मील पर जैनपुर में		श्री सुंदरी	सुंदरानंद	ब्रह्मविद्या प्राप्ति माहेश्वरी शक्ति, बाला सुंदरी कृपा।
४७	चिबुक	जनस्थान पीठ	नासिक (महाराष्ट्र) पंचवटी में भद्रकाली मंदिर		भ्रामरी	विकृताक्ष	देवी कामाक्षी प्रसन्न होती है। भ्रामरी शक्ति प्राप्त होती है। शाबर मंत्र सिद्धि प्राप्ति।
४८	कर्पूर कोहनी	उज्जैन पीठ	उज्जैन में रुद्र सागर के पास महाकाल मंदिर के नजदीक हरसिद्धि के मंदिर में		मांग्यल्य चण्डीका	कपीलांबर	तपस्या से मुक्ति प्राप्त।

क्र०	सती के अंग अलंकार पतन	स्थान शक्तिपीठ	पता—मार्ग	वर्ण	शक्ति	भैरव	विशेष तथा सिद्धियां प्राप्ति
४९	दोनो मणीबंध	मणीवेदीक	राजस्थान पुष्कार तीर्थ में गायत्री मंदिर (गायत्री पर्वत पर)		गायत्री	सर्वानंद	२४ गायत्री मन्त्र सिद्धि प्राप्त।
५०	हथेली (दक्षिण)	मानस	तिब्बत में मानस सरोवर के पास		दाक्षायणी	अमर	तपस्या से शिव—पार्वती दर्शन तथा साधना से मुक्ति प्राप्त।
५१	हथेली (वाम)	यशोर	बंगलादेश में खुलना जिला ईश्वरीपुर में (जैसोर)		यशोरेश्वरी	चण्ड	वाम पंथी सिद्धि साधनायें यशस्वी होती है।
५२	वाम पाद	त्रिस्रोता पीठ	बंगाल के जलपाईगुडी जिले के बोदा इलाके में शालवाडी ग्राम में तिस्ता (त्रिस्रोता) नदी के तट पर		भ्रामरी	ईश्वर	सात्विक साधनायें तथा योगीक सिद्धियाँ प्राप्ति होती है।
	रूचि (शोभा)	महालक्ष्मी पीठ (उपपीठ)		'स'कार			सर्व सिद्धि (अष्ट सिद्धि) प्राप्त होती है।
	छाया (सम्पात स्थान)	छाया पीठ (उपपीठ)		'क'कार	छत्रेश्वरी		छाया सिद्धि (शिव पुराण में विश्लेषण है) व छत्रेश्वरी शक्ति प्राप्त होती है।

इस प्रकार योगीश्वर तथा भक्त, अनुष्ठानादि कर्म करके ऐसे शक्तिपीठों में महाशक्तियों तथा सिद्धियां को प्राप्त कर सकते हैं ।

नाथ सिद्ध योगेश्वर महाशक्ति पीठ में विशेषता: देवी पाटन, ज्वाला जी में शंख ढाल की क्रियायें करते हैं । शंख ढाल का विधिवत कर्म उपदेशी गुरु समाधिस्थ (मृतहुवे हुये) होने के पश्चात उपदेशी शिष्य को करनी पड़ती है । नाथ सिद्धों में यह अतिगुप्त क्रिया विधि है । रात्रि में एक बंद कमरे में या छोटे खानी मंदिर में समाधिस्थ (मृतहुवे हुये) योगेश्वर की आत्मा आवाहित करके बने बनाये पुतले में प्रविष्ठ होकर पुतला सीढ़ी की ७ पौड़ीया चढ़कर कैलाश को जाता है और मुक्ति को पाते हैं इ० कर्म विधि मुख्यता शक्तिपीठों में नवरात्रों में करते हैं चिप्पी भोजन भंडारे होते हैं ।

जब कोई साधक शिष्य बनता है कान फाड़कर दर्शनी होता है । तब उसे त्याग बैराग चुकाना अति आवश्यक होता है । यह त्याग बैराग केवल पात्र छत्र देवता के सन्मुख होती है । अर्थात कुम्भ पर्व पर होती है । त्याग बैराग यानि गुरु नाम से शिष्य इस नाम से बना है । स्थान, पंथ इत्यादि रजिस्टर में नोंद होती है तथा पात्र देवता पर पूजा चढ़ानी पड़ती है । पंख उपरोक्त गुरु का नाम, शिष्य का नाम, पंथ पूजा इत्यादि ऊंची आवाज में हांक देता है ।

***

नाथ सिद्ध योगेश्वरों की जमात

नाथ सिद्धों की जमात यह एक तपस्वी साधू महात्माओं का (संच) झुण्ड होती है । यह योगेश्वर अखण्ड भस्मधारी, ध्यानी ज्ञानी, त्यागी तपस्वी, विशाल अंत:करण, समदर्शी और योगी होते हैं । यह जमात के दो महंत होते हैं । एक १२ के महंत अर्थात गोरक्ष योगी के पंथ कपलानी, गंगनाथी, नरेश्वरी आई, बैराग, रावल इन छह पंथों में से चुने जाते हैं और दूसरे १८ के महंत अर्थात शिव योगी के जो कि राम के, पाकल, पांव, धर्मनाथी, मन्नाथी इन छह पंथों में से चुने जाते हैं । चुने हुए महंत जो की पंचों को स्वीकार किया हो । इस जमात के १२-१८ के महंत ऐसे होने चाहिये, भस्मधारी, तपस्वी, न्यायी,

ज्ञानी, ध्यानी, मानी, भजनानंदी, समभाव, धूनी पानी योग युक्ति विधि विधान—वयोवृद्ध, यौगिक ज्ञानी, मधुरभाषी, शुद्ध सनातन, पवित्र आचार—विचार के होते हैं। १२ की और १८ की ऐसी दो धूनीयां चेतन करते हैं। १२—१८ का भी एक धूना होता है। देवता इष्ट गुरु गोरक्षनाथ जी की प्रतिमा एक पादुका हमेशा साथ रहते हैं। ये जमात हमेशा देश भर में भ्रमण करते रहते हैं। जहां भी स्थान में अपना मुकाम रहेगा वहां अपना धूना चेताते हैं। देवता स्थापित करेंगे। देवता के दांये बांये दोनों महंतों के आसन लगाते हैं। बाकी तपस्वीयों के धूना के चारों तरफ अपने आसन लगाते हैं। जमात में धूना के पुजारी पंथ नटेश्वरी का होता है। पुजारी प्रातः तथा संध्या में धूना तथा देवता की आरती करते हैं तथा भण्डारी बैराग पंथ का होता है। अन्य भी लायक भण्डारी होते हैं। जमात भोजन व्यवस्था दोनों समय करते हैं। जमात में सेवार्थ कुछ औघड़ भी होते हैं। महंत जी हिसाब—किताब लेन—देन के लिये कारबारी भी रखते हैं। प्रातः चार बजे उठकर सब भस्मी स्नान करते हैं। आरती में सभी खड़े होकर चक्रावली के साथ होती है। फिर सब बैठकर श्री नाथ जी की आरती बालाष्टक, चालीसा, साखियाँ, कुंडली, गायत्रीयों इत्यादि का पाठ करते हैं। कुछ योगेश्वर ध्यान धारणा इ० करते हैं। दूध अल्पोहार होता है। कुछ वार्तालाप फिर भोजन विश्रान्ति शाम को संध्या आरती होती है। रात्रि धर्म, योग, ज्ञान, चिंतन सभी चर्चाएं होती हैं। ग्रामवासी भक्त सेवक को महंत जी योग ज्ञान, साधु, संत मर्यादा प्रवचन इत्यादि करते हैं। शुद्ध सनातनी आचार विचार व्यवहार करते हैं। महंत जी अपने जमातीय योगेश्वरों को भी कुछ क्रियायें रहनी सहनी, कथनी करनी, करना कराना, निद्रा आहार, आलस मोड़ना गुरु परम्परा की मर्यादा क्रमागत कथा आदि से परिचित करना, धूने में सचेत सावधान रहना इत्यादि सिखाते हैं। तपस्वी जिस धूनी के सन्मुख आसन लगाते हैं। उसी एक आसन में रहते हैं। नागफनी, शंख, डमरु, त्रिशूल, झोली, झण्डा इत्यादि अनेक साधन साथ ले के चलते हैं। महंतों को प्रत्येक योगेश्वरों के आचरण (रहनी सहनी) पर निगरानी रखनी पड़ती है।

नाथ सिद्ध तपस्वी फक्कड़ स्वभाव के साफ और खरी बात कहने में नहीं हिचकिचाते । वह सत्य कथन में योगी खाये बिना रहे जाय पर कहे बिना ना रहे ।

जमात मुख्यता योगी महासभा के सहयोग तथा निर्देशन में चलती है । इनका कार्य है देशभर में जगह-जगह घूमकर योग धर्म का प्रचार करे । नाथ सिद्धों के स्थान मकान मठ-मंदिरों की देखभाल करना, अनुचित स्थान धारी को त्वरित बदलना, गलत योगेश्वरों को दण्डित कर योगी समाज के बाहर करना इसे चिलम साफी बंद कराना कहते हैं । जिसे योगी अपने योगी सम्प्रदाय में से बहिष्कृत होता है । स्थान मठ मंदिरों की देखभाल तथा सुनिश्चित व्यवस्था करना । जनता जनार्दन को योग्य धार्मिक एवं यौगिक मार्गदर्शन करना । जब श्री नाथ सिद्धों के स्थान मठों, मंदिरों में बड़े से बड़े मेले बड़े से बड़े भण्डारे हों या कोई भी धार्मिक उत्सव हों वहां यह जमात पहुँच जाती है । स्थान धारी योगेश्वर तथा ग्रामवासी इनका यथा योग्य स्वागत करके आदर से खान पान रहन-सहन इत्यादि की व्यवस्था कराते हैं । पूर्व जमाने में जमात पैदल ही प्रवास करती थी । अत: जमात के लिये वाहन की सुविधा की गयी है । १२-१८ की जमात विशेषत: त्र्यंबक कुंभ मेले में कद्री यात्रा में विशेष सहयोग करते हैं । ज्वाला जी नवरात्र मेले में भी विशेष ध्यान देते हैं । ८ मान भण्डार, शंख ढाल ३२ धूनी भण्डारा, मूर्ति स्थापन मंदिर उद्घाटन तथा स्थानीय मेले भंडारे इन सभी की जानकारी तथा स्थान पर पहुंचने का समय सब कुछ सुचारुबद्ध कार्यक्रम बनाते हुये जमात अखण्ड रम्मत करती रहती है । जमातीय संघ के योगेश्वरों की संख्या कम तो कभी ज्यादा भी होती है । १२ के तथा १८ के महंतों के चुनाव होते हैं । जब किसी ने किसी कारणवश निवृत्त होने का अर्ज दिया तथा अनुचित वर्तनुक से भी योगी महासभा आने वाले मेले में चुनाव कराके उसी पंथ के महंताई को चुनते हैं ।

संगठित होकर चलना, सहयोग देना, अमृत भाष्य बोलना, धर्म रक्षा वर्तनुक करना, गुरु परंपरा की मर्यादा पालन करना । निस्वार्थ सेवा भाव ज्ञान विवेक चर्चा योग्य सात्विक तथा सत्य मार्गदर्शन इत्यादि गुणों से यह जमात देश के हर स्थान पर जाती है और अपने नाथ योग धर्म का पालन करती है ।

समाधि
(उत्तर क्रिया विधि)

समस्त प्राणी के जीवन में मृत्यु एक बार और आखरी बार आती है परन्तु सिद्ध योगेश्वर दो बार मरता है। पहली बार वह योग साधना के समाधिस्थ होकर मरता है, जब वह जीवमुक्त अवस्था पाकर अमृत्वपद को पाता है और यह मरना अत्यंत मीठा तथा मधुर होता है जोकि उस ध्यान साधना में मधुर मीठा अमृतपान करता है। गुरु गोरक्षनाथ कहते हैं कि– **मरौ वै जोगी मरौ मरण है मीठा। तिस मरणी मरौ जिस मरणी गोरख मरी दीठा।।**

हे अवधू! योग करो, साधना करो, योग साधना के ध्यान समाधि में मर जावो मीट जीवो, जहां मरण एक मीठा अमृत हो। ध्यान समाधि की वह परम उच्च अवस्था है जहां योगी अपना चित्त निरोध होकर जीव अवस्था मृत होकर अन्तरआत्मा अवस्था में जाता है। अर्थात उसको अपनी काया इन्द्रियों का कोई भी ज्ञान नहीं रहता। इस समाधि अवस्था में वो अमृत पान करता है। जैसे उपरोक्त (शब्दी) गुरु गोरक्षनाथ जी ने स्वयं की अनुभूति बताई है।

अत: योगी दूसरी बार मरता है जो कि इहलोक में अपने काया इन्द्रियों तथा मोहमाया को त्यागकर परलोक सिधार जाता है। पूर्व काल, सतयुग में नाथ सिद्ध योगेश्वर प्रयाण काल में अदृश्य् या लुप्त हुये या अर्न्तध्यान होते थे जैसे नवनाथ, त्रेतायुग में वह स्व शरीर आकाश में पवन रुप होकर स्वर्ग में उड़ जाते थे तो किसी को पुष्पक विमान लेने आते थे तो कोई धरती फाड़कर पृथ्वी में समा जाते थे। जैसे माता सीता। द्वापार युग में नाथ जीवित जल या थल समाधि लेने लगे जैसे श्री कृष्ण सागर में समा गये आगे कलियुग में प्राकृतिक मृत्यु को प्राप्त होने लगे किन्तु कोई कोई पहुँचे हुये सिद्ध महात्मा अदृष्य होते तो कोई आकाश गमन करते थे जैसे योगी सुन्दरनाथ जी क्योंकि वह अपने तपोबल या, साधनाबल या सिद्धियाँ बल से करते थे।

आगे–आगे समय अनुसार स्व इच्छा से योगेश्वर जीवित जल या थल समाधि लेने लगे आज भी लेते हैं। कुछ महात्मा सिद्ध योगी स्वेच्छा से अर्थात्

शरीर का सभी कर्म, व्यवहार को सम्पूर्ण त्यागकर केवल ईश्वर चिन्तन करते करते जीवन त्यागते हैं और भी कोई साधु संत अपना उत्तरार्ध जीवन पर्वतीय क्षेत्र हिमालय या किसी धाम में या पुरी में जहां मुक्ति प्राप्ति स्थान हो वहां बिताते हैं। अन्त काल में पांच पाण्डव तथा शंकराचार्य इत्यादियों ने हिमालय क्षेत्र में प्रयाण किया था।

बहुत से सिद्ध योगी अपनी मृत्यु की सूचना मृत्यु से पूर्व ही जानते हैं और वह शिष्य एवं प्रिय भक्तों को समाधि का दिन वर्ष यहां तक कि समय भी बताते हैं तथा अपने मन में जो सूझबूझ हो करना कराना हो, बातें कह देते हैं, लेन देन धूनी पानी समाधि उत्तर क्रिया कैसे निभाया जाये इत्यादि विषय का स्पष्टीकरण पहले ही कर देते हैं। इस प्रकार बाद में किसी को कोई संदेह ना रहे तथा ऐसे सारे प्रश्न पहले ही हल कर देते हैं। अपने पास जो कुछ भी हो सब सत्कर्म में लगा के समाधि लेना, आशा पाश तोड़ना, माया मोह से निवृत्त होना ताकि मृत्यु पश्चात मुक्ति प्रद जावे।

मुख्यतया नाथ सिद्ध भेष बारह पंथ में पंथ सतनाथ (ब्रह्मा के) योगेश्वर को सम्प्रदाय के सभी पंथ के समाधि विधियों का विधि विधान करने का अधिकार है अगर सतनाथ पंथ के योगेश्वर उपलब्ध नहीं हो तो मृत योगेश्वर के शिष्य भी यह विधि कर सकते हैं या कोई भी ना हो तो मृतक के भक्तजन भी यह विधि कर सकते हैं। आजकल थल समाधि और जल समाधि विशेष प्रचलित है।

थल समाधि विधि

जब योगेश्वर समा जाने के (मृत) पश्चाद् माननीय साम्प्रदायीक अधिकारी तथा विशेषत: सतनाथ पंथ के योगेश्वर, मृत योगेश्वर के शिष्य एवं भक्त मण्डल, सेवक इत्यादि सभी को बुलाया जाता है। मृत योगेश्वर को आसन ऊपर पदमासन लगाये बिठाया जाता है और आधारी (कुबड़ी) उनके ठोडी को आधार देकर खड़ी कर देते हैं ताकी मुख सीधा (सरल) रहे। अत: मृत योगेश्वर को समाधिस्त करने हेतु जो भूमि निश्चित की जाती है वहां कम से कम ५X५ फुट चौड़ा एवं ७, ८ फुट ऊंचाई का गड्डा तैयार

करते हैं वहां ईंट, पत्थर, मिट्टी, एक बोरी चीनी, पांच शेर घी, मिट्टी का ठिकरा, मिट्टी का दीपक, मिट्टी का लोटा पाणी वाला गीला नारियल, तसला फावडा इत्यादि साहित्य रखते हैं।

अत: मृत योगेश्वर को स्नान हेतु चौकी उपर बिठाकर चारों दिशा में पडदा लगाते हैं वातावरण के अनुकूल गरम या ठंडा जल द्वारा सब मिलकर स्नान कराते हैं, यहां अधिकारी निर्देशन अनुसार कर्म करते हैं तथा सतनाथ ब्रह्मा के योगेश्वर मन्त्र क्रिया (उच्चारण) करते हैं। अत: बना बनाया गौ पंचगव्य जिसमे गौघी, गौ–दूध, गौ का दही, गौ का थोड़ा गोबर, और गौ का थोड़ा मूत्र यह सब एक पात्र में मिलाकर तैयार करते हैं वह मृत योगेश्वर के शीश–शरीर पर डालते हैं, तदनंतर गंगाजल डालते हैं, अत: पूर्ण शुद्ध जल से स्नान कराते हैं उन्हें नया लंगोट बांधते हैं, नये वस्त्र डालते हैं, शीश पर साफा बांधते हैं, योगेश्वर दर्शनी हो तो कानों में मृतीका के कुण्डल जो कलीयुग में मान्य एवं शुभ माने जाते है,वह डाले जाते हैं। नादिपवित्री जनेऊ पहनाते हैं, बाये भुजा में (कंधे में) भगवे वस्त्र की झोली डालते हैं, झोली में पांच बून्दी के लड्डु, सवा रुपया, तथा योगेश्वर को प्रिय पदार्थ या तो कोई व्यसन हो तो वहां थोड़ा सुलफा या गांजा इ० रखते हैं अत: योगेश्वर को भस्मी का त्रिपुण्ड लगाया जाता है, शरीर उपर सुगंधी अत्तर छिडकांते हैं, फूल या पुष्प माला चढ़ाते हैं। अत: योगेश्वर को उच्च आसन के ऊपर ठोडी को कुबडी लगाके बिठाते हैं या तो गोबर से लिपे हुये जो दर्भसन या कुश से बिछौने से संस्कार किये हुये भूमी स्थान पर मृत योगेश्वर हो बिठावे क्योंकि इस संस्कारित भूमि मण्डल के सामीप्य ब्रह्मा विष्णु रुद्र एवं अग्नि बैठते है। बिना मण्डल करणे से पिशाच राक्षस भूत प्रेत और यम के दूत प्रवेश करते हैं। मृत योगेश्वर के मुख में स्वर्ण रत्न डाले या तो १ मुखी रुद्राक्ष का अभिषेक किया हुआ (गंगाजल) जल मुख में डाले जिससे मृत योगेश्वर पवित्र होकर पुर्नजन्मों के योनियों से छूटकर शिवलोक को जाता है। (मृत्यु के समय गंगा मां का केवल नाम स्मरण करने से मोक्ष मुक्ति को जाता है। "हे गंगामाता मुझे शिवलोक में ले चलने की कृपा करें।" ऐसे

कहकर जो मृत होता है वह शिव लोक में जाता है।) इसके पश्चात गोरक्ष गायत्री, नवनाथ जाप, गोरक्ष स्त्रोत, या ४०सा का पाठ करे। या वेद, उपनिषद के पाठ करने से मृतात्मा की मुक्ति होकर वायु लोक में तथा शिवलोक में जाते हैं।

योगी लोग तालु के छिद्र से प्राण छोड़ते हैं अपान वायु से मिले हुये प्राण सहस्रार चक्र से सूक्ष्म रूप से तालु से निकल जाते हैं। वहां मृत पुण्यात्मा, पूर्ण योगी, तपस्वी पूर्ण वैरागी को धर्मात्मा को सुन्दर दिव्य देहधारी देवता तथा दिव्य सत–महात्मा दिव्य विमान में बैठाकर ले जाते हैं।

(अगर योगेश्वर विदेश–जंगल या एकान्त में मृत हो गये और उनकी देह न मिली तो जिस दिन उनके मरण का सन्देश मिले उस दिन गोबर या बभूती का या धान्य का पुतला करके पूर्वोक्त विधि से समाधि (जल या थल) करें।)

यहां पर प्रत्येक कर्म में सतनाथ पंथ के योगीश्वर मन्त्र उच्चारण करते हैं। आसन के समय आसन मन्त्र (पृष्ठ ९) स्नान के समय जल गायत्री (पृष्ठ १७५) या आलिल गायत्री (पृष्ठ १७६) लंगोट डालने के समय लंगोट मन्त्र (पृष्ठ १८२) भगवा वस्त्र चढ़ाते समय भगवा मन्त्र (पृष्ठ १८५) तथा झोली मन्त्र (पृष्ठ २०५) कुण्डल मन्त्र (पृष्ठ १८६) नाद–जनेऊ मन्त्र (पृष्ठ १८७) भस्मी मन्त्र (पृष्ठ १८३) अतर मन्त्र (पृष्ठ १९६) कुबडी मन्त्र (पृष्ठ २१३) इत्यादि कर्म मन्त्र के साथ भक्त, सेवक तथा शिष्य करते हैं।

अत: उच्चासन बिठाने के बाद प्रथम मृत योगेश्वर के शिष्य तथा अन्य नाथ महात्मा नादि आदेश करके चिप्पी दान कराके मान देते हैं, तदपश्चाद भक्त सेवक नमस्कार करते हैं। भक्त लोग पुष्प, पुष्पमाला चिप्पीदान चढ़ाते हैं। कोई चदर, कम्बल भगवा वस्त्र इत्यादि चढ़ाते हैं। उपरोक्त सभी समाधि कर्म सनई या बाजा या ढोल, शंख बजाके करते हैं। आवश्यकता के अनुसार इतरत्र दर्शन हेतु जुलुस भी निकालते हैं।

अत: मृत योगेश्वर को समाधि स्थान में लाते हैं जहां गड्डा बना है, प्रथम गड्डे में नीचे भूमि ऊपर पांच दस ईंटे बिछाकर उसके ऊपर भगवा वस्त्र

बिछाकर आसन बनाते हैं। अत: सतनाथ के योगेश्वर निम्न मंत्र कहकर मृतक योगेश्वर को आसन ऊपर पदमासन लगाके बिठाते हैं। जो बराबर गड्ढे के बीचोबीच आवे। अत:

मृतक के आसन बिठाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। ॐ गुरुजी। बीज मन्त्र तत परवाना काया खोजो जोत समाना। अलख कूट अलख उपाया। तीन लोक ब्रह्मा मिल छाया। तीन लोक त्रिकुटि द्वारा। जगमग जोत हुई प्रकाशा। इस बीज मंत्र का अंत किस विरले ना पाया। गुरु वचन योगेश्वर को पात्रासन बिठाया। श्रीनाथ गुरुज़ी को आदेश।

अत: सतनाथ के योगेश्वर मृतक योगेश्वर के सम्मुख एक मिट्टी का लोटा (मटका) जल भरके रखते हैं और उसके ऊपर (पाणिवाला) नारीयल रखकर निम्न समाध गायत्री बीज मन्त्र बोलते हैं।

समाध गायत्री बीज मन्त्र

ॐ गुरुजी पानी का बून्द पवन का थंबा देवल देख भया अचम्बा। जागत नगरी दीजै वास हंसा छोड़ चल्या कैलाश।। आओ सिद्धो जोगी जमाति सोधो धर्ती खोदो समाधी। कितनी समाध बोलिये कितनी गुफा बोलिये। अहूठ हाथ समाध बोलिंये, सवा हाथ कि गुफा बोलिये। सवा हाथ का हाड़ बोलिये चार अंगुल का मास बोलिये।। तिल भर चाम बोलिये, चार अंगुल रोमावली बोलिये। सुन नासिका सुन समाध, शब्द बोलिये एकोंकार।। जपो समाध बीज गायत्री पीवो दूध दोहो धरित्री। ब्रह्मा धर्ती विष्णु कुदाली ईश्वर गौर माटी डाली।। पढ़ गुण मन्त्र समाधि दीजै तैयाका भण्डारा कीजै।। दूध भात का भोग लगाया प्राण पुरुष अमरा पुरहया।। जोगी पूजै पाँव परवाली चूरी चिप्पी चादर थाली। बिना मन्त्र समाधि देवे सो प्राणी जमपुरी में रोवै।। पढ़ो समाध गायत्री सार, प्राणी पावै मोक्ष द्वार।। इतना समाध बीज गायत्री मन्त्र जाप सम्पूर्ण भयी। अनन्त कोट सिद्धों में श्री नाथजी गुरुजी ने कहाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: सतनाथ के योगी कलश के सम्मुख एक मिट्टी का दिपक (गौघृत का) जोत जगाने का बीज मन्त्र (पृष्ठ १९९) बोलकर चेतन करते हैं तथा साथ में धूप या अगरबत्ती लगाते हैं और उसे चारों तरफ ईंटे रखकर उसे घोंसला बनाते हैं, अत: मृतक योगेश्वर के शिश ऊपर (माथे ऊपर) मिट्टी का खप्पर (ठीकरा) निम्न ठीकरे का मन्त्र उच्चारण करके वह पलटा मारके रखते हैं।

ठीकरे का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! पढ़ो पढ़ो महेश्वर करनी से उतरो पार करनी होय तो पौढ़ी चढ़े बिन करणी कहो गुरुजी कैसे तरे। ओं ठीकरा नहीं कोई ठाठ है। पांच तत का घाट है। धरती मुख उत्पन्ना, पवन मुख सुखा अग्नि मुख जरा सो ठीकरा सब सन्तन के आगे चला हाथ में चलावे राजा प्रजा को चितावे। शिर पर धारे तो समाधि करे। ओ किसने मुकुट मान्या कौन जगाई ज्योत। कौन तेरी साख भरे, कौन रहते तेरे कोल। शिव ईश्वर मुकुट मान्या, शक्ति जाई जोत ब्रह्मा तेरी साख भरे, विषण रहे तेरे कोल। अमर जोगी अमरापुर चढ़े सत्य शबद की ओट। सत्य का शबद का करो विचार, करनी अपनी उतरोगे पार। ॐ सोहं ठीकरा जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: मृतक योगेश्वर के चारों ओर थोड़ी नून शक्कर डालते हैं तथा थोड़ा घी डालते हैं फिर मिट्टी डालते हैं। और साथ–साथ ईंट, पत्थर चारों तरफ रचनात्मक ढंग से रखते रखते मृतक की समाधि भरते रहते हैं। साथ में शंख, बाजा ढोल इत्यादि बजाते रहते हैं। भक्त, शिष्य सेवक फूल अक्षत डालते हैं, और मृत योगेश्वर के नाम का जयघोष करते हैं और अन्य योगेश्वर, शिष्यगन एवं अधिकारी पांच–पांच मुट्ठी नून शक्कर मिली मिट्टी तथा घी डालते रहते हैं साथ में सतनाथ पंथ के योगेश्वर निम्न मन्त्र समाध गायत्री का पाठ करते हैं उच्चारण करते हैं। यहां पर धरत्री गायत्री (पृष्ठ सं० ४५) द्वादश मंत्र भी बोलते हैं।

समाधी गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! मैं तेरा पूत तू मेरी माता, आदि की धर्ती अनादि की माया। सत्य का योगी वज्र की काया। अमर होय धर्ती वज्र हो काया। फुरो फुरो ज्वालामुखी तू फूरो। ऋद्धि फुरे सिद्धि फुरे, अगम निगम माता धर्ती कहे पिण्ड प्राण बालक स्वरूपी सदा रहे मारिया। मरे नहीं काटेया कटे नहीं गाड़ेया, गड़े नहीं किसने कही किसने खुदाली किसने उसमें मिट्टी डाली। ब्रह्मा कही विष्णु खुदाली। ईश्वर गौरा मिट्टी डाली। आओ ईश्वर जी करो विचार। इस प्राणी को दीजे मोक्ष मुक्ति फल द्वार। ईश्वर सदाशिव सिमरु तोहे, ब्रह्मा पढ़े पाठ धर्ती माता राह देवो मोहे। एक राह उत्तर को गया। एक राह पश्चिम का गया। एक राह दक्षिण को गया। एक राह पूर्व को गया। चार दिशा चार खूंट राह देवो मोहे। दूहे धर्ती पावे खीर अमर हो काया वज्र हो शरीर। मांस गले मच्छन्द्र लाजे, हाड गले गोरक्षनाथ लाजे, जिभ्या गले सद्गुरु लाजे, यम को मार काल को भखे। अपना शरीर आग ही रखे। इस पिण्ड हो आकुल व्याकुल करे तो कोटान कोट श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई। धर्ती माता जी के चरन कमलों में नमस्ते। ॐ गुरुजी। प्रथमे धर्ती माता बोलिये, द्वितीय नाम आकाश। तृतीये सिद्धि किया प्रकाश। चतुर्थे आदि अलिल, पांचवे पांच भूत धर्मराजा। धर्म गुसांई सुध बुध भरो सन सेजा माई, हम तुम न होय तो तीन लोक धर्ती प्रलय हो जाये। पहिली मुट्ठी उठाई ॐकार ने खबर पाई—धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।१।।

दूसरी मुट्ठी उठाई चन्द्र सूर्य ने खबर पाई, धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।२।।

तीसरी मुट्ठी उठाई तीन लोक के वासुकि नाग ने खबर पाई। धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास ब्रह्मा विष्णु महेश्र साख।।३।।

चौथी मुट्ठी उठाई, चार वेद के ब्रह्मा ने खबर पाई। धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।४।।

पांचवी मुट्ठी उठाई, पांच तत्वों ने खबर पाई। धर्ती माता पिण्ड प्राणी

आये तेरे पास ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।५।।

पांच तत्व में रूप न रेख, भज ले बन्दे आप अलेख। समाधि धरती, समाधि आकाश, समाधि जल पवन प्रकाश। इतना समाधि जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

इस प्रकार ईंट, पत्थर एवं नून शक्कर घी मिट्टी से जब मृत योगेश्वर पूर्ण रूप से ढक जाता है तब उपर से मिट्टी तथा थोड़ा—थोड़ा जल जल गायत्री या अलिल गायत्री बोलकर वह समाधि युक्त गड्डा पूर्ण भरते हैं। अन्त में समाधि उपर ईंटों का घोसला बनाकर घी या तेल का एक दिपक चेतन कर रखते हैं। जो ३ दिन अर्थात तीया तक जलता है। इत्यादि क्रिया होने के बाद उनके निकट शिष्य अथवा भक्त समाधि स्थान उपर अथवा जहां योगेश्वर की मृत्यु हुयी है उस स्थान उपर एक चौड़े मिट्टी के कसोरे में वस्त्र से छानी हुई भभूत रखते हैं तथा दीपक चेतन कराके रखते हैं। भभूत का पृष्ठ भाग थपाकर रखते हैं जो कि कोई भी निशान दिख सके। अतः दूसरे या तीसरे (तिया) के दिन उसके (भभूत) के ऊपर जो भी निशान (आकृति) आयेगा उस निशान के जरिये उस महात्मा को गति प्राप्त हुई है यह अनुमान लगाते हैं, अर्थात उदाहरणार्थ—शिवलिंग के निशान आये तो शिवलोक गये चक्र का निशान आये तो विष्णु लोक गये, शब्द या कमल पुष्प आये तो ब्रह्म लोक गये, चन्द्र निशान से चन्द्र लोक, सूर्य निशान से सूर्यलोक इत्यादि निशान वा आकृति अनुसार उक्त योगेश्वर प्रति अनुमान लगा लेते हैं। तिया के दिन मुख्यता सतनाथ (ब्रह्माजी) पंथ के योगेश्वर को या सतनाथ पंथ योगेश्वर नहीं होवे तो मृत योगेश्वर के प्रिय शिष्य को या शिष्य ना होवे तो मृत योगेश्वर के पंथ के योगेश्वर को वस्त्र दान, दक्षिणा, (मृतक के प्रिय) भोजन, बर्तन कम्बल इत्यादि उसी समाधि सन्मुख बैठकर दिया जाता है। बाकी अन्य महात्माओं को मीठा मिष्ठान्न युक्त (खिर खाण्ड) भोजन—भण्डारा एवं चिप्पी देते हैं। तदउपरान्त साम्प्रदायिक (योगी महासभा) अधिकारी मृतक योगेश्वर शिष्य, भक्तों, सेवकों तथा गांव पंचायती या सम्बन्धित माननीय गांव के सभी लोग एकत्र बैठकर विचार

विनिमय का गद्दी पत्र करार इत्यादि से सम्प्रदाय अधिकारी या महन्त या उत्तराधिकारी रूप में लायक योगेश्वर को नियुक्त करते हैं फिर वह मृत योगेश्वर शिष्य हो या शिष्य नहीं हो तो सम्प्रदाय अधिकारी अपने अधिकार से सर्व सम्मति से नियुक्ति कर सकते हैं। जबकि वह स्थान योगी महासभा का होये।

आगे भविष्य में कुछ दिन पश्चात मृत योगेश्वर मुक्ति हेतु शंखा ढाल क्रिया–भण्डारा भव्य रूप से मनाते हैं। शंखा ढाल गुप्त क्रिया, मुक्तिप्रद एवं एक तांत्रिक क्रिया–कर्म है।

जीवित (जिन्दा) थल समाधि

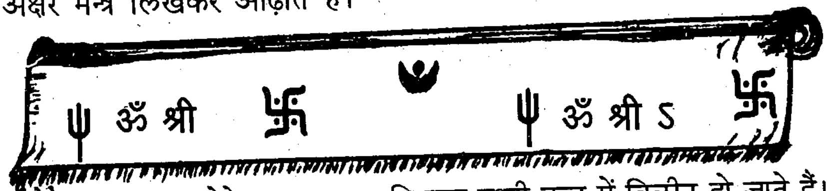
कुछ योगेश्वर जिन्दा थल समाधि लेते हैं। इसमें समाधि का दिन समय निश्चित कराके, शिष्य सेवक जुलूस निकालते हैं। समाधि स्थान पर जोगी गुफा या जमीन में ६X६ फुट का गड्डा बनाते हैं। योगेश्वर उसमें आसन सिद्धासन या पद्मासन जो भी हो जो सिद्ध हुआ हो वह आसन लगा के बैठते हैं और प्राणायाम क्रिया योग बल से योगेश्वर अपने भ्रूमध्य त्रिकुटी में प्राण लाकर समाधिस्थ होता है जबकि खान पान सभी क्रिया त्यागकर बैठते हैं। जिस दिन वह योगेश्वर काया त्याग कर परलोक जाता है उसी दिन शिष्य या भक्त वह गड्डा बंद कर देते हैं या गुफा हो तो बड़ा सा पत्थर लगा के गुफा का मुंह बंद करा देते हैं। कुछ योगी समय से पूर्व बताकर बैठे आसन में ही योग बल से (प्राणायाम से) काया को त्यागते हैं तद्पश्चात चेले समाधि बनाते–पूजते हैं।

इस प्रकार की जिन्दा थल समाधि बाबा मस्तनाथ जी के शिष्य रनपत–मानधाताओं ने अस्थल बोहर (हरियाणा) में ली है तथा महाराष्ट्र में सन्त योगी ज्ञानेश्वरनाथ जी ने तथा त्र्यंबकेश्वर में योगी निवृत्तिनाथ जी ने ली है।

कुछ योगेश्वर गड्डे में बैठकर गड्डा बंद करने को कहते हैं। अंदर से एक नली लगाते हैं जिसका एक छोर अपने मुंह में और दूसरा छोर गड्डे के बाहर निकालते हैं। अत: नित्य रोज उस नली में दो या १ समय दूध अथवा पानी डालते हैं जो कि महात्मा अंदर से उसे पी लेता है जिस दिन दूध या

पानी पीना बंद होता है। उसी समय सब जान जाते हैं कि गड्डे के अंदर के योगेश्वर मृत हो गये हैं।

इस प्रकार योगेश्वर थल समाधि अथवा जिन्दा थल समाधि लेने के पश्चात, लोग उस जगह ऊपर समाधि ईंट पत्थर लगवा के बनाते हैं उसकी नित्य धूप दीप पुष्प पूजा करते हैं और मृतक का तिया, भण्डारा इत्यादि विधि पूर्वोक्त विधि से करते हैं। अतः उस समाधि के ऊपर चद्दर या शाल ओढ़ाते हैं। समाधि पीर जी, महंत, मठाधीश होते हैं तो चद्दर के ऊपर निम्न अक्षर मन्त्र लिखकर ओढ़ाते हैं।



इस प्रकार योगेश्वर थल समाधि द्वारा पृथ्वी तत्व में विलीन हो जाते हैं।

जल समाधि विधि

जल समाधि विशेषता बड़ी नदी किनारे निवास करने वाले महात्मा अपनाते हैं। (गंगा, जमुना इत्यादि) जब योगेश्वर का शरीर पूरा होता है। तब आसन बैठाना, आदेश इत्यादि क्रिया पूर्वोक्त विधि से करने के पश्चात शव का जुलूस निकालकर अथवा किसी वाहन द्वारा नदी के किनारे श्मशान घाट ले जाते हैं। शव को आसन में बिठाकर शव के सिर पर मिट्टी का ठीकरा चढ़ाते हैं। कहते हैं खोपड़ी फूटकर हंस उड़ता है। योगेश्वर अंत समय योग द्वारा प्राण को सहस्रार या ब्रह्मरन्ध्र में अर्थात मस्तक में प्राण लाकर रखते हैं। ठीकरा मस्तक चढ़ने पर प्राण सुरक्षित होते हुये योगी की समाधिस्थ अवस्था में शीघ्र ही मुक्ति होती है।

अतः शीश ठीकरा रखते समय निम्न मंत्र सतनाथ पंथ के योगेश्वर या मृत योगेश्वर का शिष्य अथवा पंथ अनुयायी बोलता है।

ठीकरा मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी।

ॐ ठीकरा सोंह ठीकरा धर्ती ठीकरा ठाट।।

सों ठीकरा आगे धरा गत गंगा के घाट।।

पवन मुख सुखा, अग्नि मुख जरा सो ठीकरा ले माथे धरा। ठीकरा नहीं यह ठाट है। उरध घाटिका बाट है।। पढ़ो गुणों योगेश्वर ठीकरे का तत्सार। सत की पौड़ी पग धरे हंसा उतरे पार।। इतना ठीकरा मंत्र जाप सम्पूर्ण भया। अनंत कोट सिद्ध में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।

अत: ४–६ योगेश्वर शव को गंगा जी में प्रवाहित (बहाकर) कर देते हैं या गहरे जल में डुबो देते हैं तथा सतनाथ पन्थ के योगेश्वर मन्त्र पढ़ते हैं।

जल समाध गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी!

ॐ आदि में सत्य, सत्य की धरती, धरती माता तोय पीवे, तोया तेज में जले बले, तेज वायु वासना वासलै। वायु ग्रास लै आकाश गलै। हंस उड़ै, सत्त की काया गले। तिसकी रक्षा जती गुरु गोरक्षनाथ जी करे। ॐ जले हिन्दु मुसलमान को दबाया। अलील पुरुष तुम जागो योगेश्वर तुम्हारे शरण में आया। कहोरे बालका कहां से आना कहां जाना है। ॐ गुरुजी। अगम से आया, निगम को जाना है!

मांस गलै अलील पुरुष लाजै। चाम गलै तो महादेव लाजै। हाड़ गलै तो गुरु गोरक्षनाथ जी लाजै। पड़े पिण्ड निरंजन लाजै।

पड़े पिण्ड उड़े हंस सद्गुरां का हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति गुरु शबद का वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड उड़े हंस मनसा अलील ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति अलीलपुरी में वासा रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड उड़े हंस विष्णु महालक्ष्मी ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति विष्णुपुरी का वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड, उड़े हंसा ब्रह्मा सावित्री ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति ब्रह्मपुरी में वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड उड़े हंस, शिव शक्ति ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी

मोक्ष मुक्ति शिवपुरी में वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्डे उड़े हंस अंत गोरखनाथ ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति परम धाम में वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

इतना जल समाध मंत्र जाप सम्पूर्ण भया। अनंत कोट सिद्ध में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी पढ़ कथ कर सुनाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

तदपश्चात सतनाथ पन्थ के योगेश्वर जल गायत्री कहकर हाथ पैर धो लेते हैं या स्नान कर्म करते हैं। इस जल समाधि क्रिया विधि में जल गायत्री अथवा अलील गायत्री भी (प्रथम खण्ड में पृष्ठ सं० १७५ या १७६) बोली जाती है।

जीवित (जिन्दा) जल समाधि

कुछ योग सिद्ध योगेश्वर जीवित जल समाधि लेते हैं। कोई प्रदर्शनी (जुलूस, गले में फूल माला इत्यादि) तो कोई अकेले एकांत में जल समाधि लेते हैं। सर्व इच्छा त्याग कर केवल जल तत्व में विलीन होकर मुक्ति पाना यही आखिरी इच्छा से जल समाधिस्थ होते हैं।

सिद्ध योगी अपने योग द्वारा (श्रेष्ठ प्राणायाम) प्राण को सहस्त्रगार चक्र शीश मध्य में स्थिर करके जल के अन्दर आसन लगा के बैठते हैं। कुछ वजन से जड़त्व प्राप्त कर लेते हैं। ताकि जल के पृष्ठ भाग पर ना तैरे। शरीर पैरों से लेकर धीरे–धीरे सुन्न (चेतना रहित) होता है। प्राण त्यागने के पश्चात वजन छूट जाता है। शव तैरते हुए बह जाता है। काया धीरे–धीरे गल जाती है। जलचर प्राणी भी शव को खा जाते हैं।

१. इस प्रकार की जीवित जल समाधि त्रेता युग में प्रभु रामचन्द्र जी ने अयोध्या नगरी के शरयु नदी में सब भक्त–सेवकों की उपस्थिति में ली थी।

२. इस प्रकार की जीवित जल समाधि कलयुग में श्री दशेरानाथ जी ने कोलायत बिकानेर के पास तालाब में जिन्दा जल समाधि ली है। (दशेरानाथ समाधि स्थान)

इन योगेश्वरों की तीया तथा शंख ढाल क्रिया होती है। इस प्रकार योगेश्वर अपने योग द्वारा मृत जीवित जल तत्व में विलीन होते हैं। मृत्यु चाहे प्राकृतिक हो चाहे स्वइच्छा से हो मृत्यु सबको आनी है। अगर मृत्यु का अधिकार है तो मुक्त होने का अधिकार भी सबको मिलता है। मुक्ति यही अंतिम ध्येय होता है। चाहे एक जन्म में हो या अनेक जन्म में हो कभी न

कभी इंसान को मुक्त होने की इच्छा प्रगट होती ही है और मुक्ति मोक्ष का सुगम मार्ग है योग, इसलिये योग करो योग के लिए ही मरो। पशु पंछी, कीटक इनको मुक्ति नहीं मिलती। मनुष्य मात्र जन्म में ही मुक्ति पा सकता है।

कुछ नाथ सिद्धों की प्रचलित बोली भाषा तथा उनका अर्थ

निम्न प्रकार के संक्षिप्त शब्द (बोली भाषा) नाथ योगेश्वर—बड़े मेले में, दर्शन मेला, तीर्थाटन मेल—मिलाप—जहां भी योगेश्वर एकत्र होते हैं, वहां इन शब्दों में एक दूसरे से बोलते हैं। विशिष्ट क्रिया—साधनों में भी यह कोड भाषा बोलते हैं और इस शब्द भाषा से ज्ञान, वैराग्य, योग, नाथ परम्परा एवं मर्यादा, आदर्श, नि:स्वार्थ, स्नेह, प्रेम, आदर, स्वाभिमान और गलत आचरण में सुधार इत्यादि गुणों का बोध होता है।

(१) सत है—सत्य है।

(२) गुरु मेहेर—सदगुरु, कृपा, आशीर्वाद

(३) गुरु—चेला (शिष्य)—नाती—गुरु, शिष्य तथा भक्त नाती है।

(४) शबदी—सद्‌गुरु मुख बोली (प्रत्यक्ष अथवा किताबों में)

(५) योग पट या जोग पट—अपना खुद का (शिष्य का) नाम

(६) प्रेमपट—अपने (शिष्य के) सद्‌गुरु का नाम

(७) फुलपट या ज्ञान पट—अपने (शिष्य के) दादा गुरु का नाम

(८) गुरु वन्दना—सद्‌गुरु सन्मुख प्रार्थना या सद्‌गुरु स्मरण

(९) गुरु मन्त्र—सद्‌गुरु मुख से लिया हुआ मंत्र

(१०) मन्त्र दिक्षा—मन्त्र देकर शिष्य बनाते हैं। गृहस्थी भी मंत्र दिक्षा लेकर शिष्य बन सकते हैं।

(११) आदेश—(१) सद्‌गुरु के सन्मुख तथा देवता के सन्मुख नाद बजाकर तीन बार आदेश अर्थात नमस्कार करना ॐकार उठाना।

(२) बड़ों से आज्ञा मिलती है उसे भी आदेश कहते हैं।

(३) शिष्य के प्रति आदेश मतलब आशीर्वाद है।

(४) वेदों में आदेश का अर्थ—ना आदि ना अंत को समस्त विश्व को जानना। इस स्थापथ्य को आदेश बोलते हैं।

(५) आत्मा—जीवात्मा—परमात्मा इस तीनों का आदेश शबद से बोध होता है।

(१२) दिक्षा (शिक्षा) लेना—सम्पूर्ण त्याग कर सद्गुरु शरण में समर्पित होकर शिष्यत्व स्वीकारणा या चेला बनना।

(१३) नादपूजा—आदेश (प्रणाम) करने की नाथ सिद्धों की एक पारम्परिक पद्धति जो कि उखड़ु बैठकर तीन बार नादी बजाकर फिर स्वयं खड़ा होके दायें से घूमकर फिर उखड़ु बैठना और फिर ३ बार नादी बजा के आदेश करना।

(१४) भेटपूजा—(चिप्पी) दक्षिणा दान तथा मान देकर आदेश करना यह भी नाथ परंपरा है।

(१५) बिदाई—स्थान छोड़कर जाते समय योगेश्वर को बिदाई (दक्षिणा) देना यह भी नाथ परम्परा है।

(१६) अवधू—महाज्ञानी, आजीवन, आजन्म अविवाहित रहकर अनुष्ठानी, योग साधना (हटयोग) व्रत करने वाले महात्मा।

(१७) अवधूत—समस्त कामनाओं को भस्म कर (त्यागकर) अखण्ड भस्म लेपन करके व्रतस्थ रहने वाला सुविचारी ज्ञानी, यह पूर्वकाल (भूतकाल में) में गृहस्थी धर्म का पालन करके अपने उत्तरार्थ काल में भस्म धारण कर (त्यागकर) अवधूत बनते हैं।

(१८) सिद्ध—सद्गुरु मर्यादा पालक—अवधू भेष से सुसंस्कृत, नाथ घर की सभी क्रियायें तथा कर्मकाण्ड जानने वाला, अन्दर बाहर से पूर्ण अवधू वह महात्यागी सिद्ध होता है।

(१९) साधक—जिज्ञासु भक्त

(२०) भगत सेवक—गृहस्थी, नाथों के नाती, सेवाधारी

(२१) शाबरी—नाथ सिद्धों की भाषा

(२२) योगी—दर्शनी (कान कुण्डल धारी) नाथ सम्प्रदाय का अनुयायी।

(२३) जोगी—गृहस्थ नाथ, यह घर बार त्यागकर अवधूत बन सकते हैं।

दर्शनी योगी बन सकते हैं। (पूर्वकाल में योगी को जोगी कहने की प्रथा थी)

(२४) घर का जोगी या जोगी घरका–जन्मता जोगी या नाथ घरके

(२५) बिन्दु–पारा–बिन्द–पुरुष वीर्य (पुष्ट) को कहते हैं तथा कुण्डलीनी उत्थान को भी कहते हैं।

(२६) कुण्डलीनी उत्थान–कुण्डलीनी शक्ति जाग्रत करना यह प्रत्येक पुरुष के मूलाधार चक्र में सर्पाकृति मण्डल डालकर बैठी हुई होती है तथा वीर्य उध्वरेता क्रिया को भी कुण्डलीनी कहते हैं।

(२७) खडदर्शन–६ चक्रों की जाग्रती तथा छह चक्र दर्शन

(२८) दर्शनी योगी शिव की काया–शिव स्वरुप जो दर्शनी योगेश्वर होते हैं उनको कहते हैं।

(२९) इन्द्रि के जती–वाचा के सती (या जती सती) अखण्ड ब्रह्मचारी एवं सत्यवादी

(३०) शक्ति पात–सद्गुरु स्पर्श द्वारा तथा अपने योग शक्ति द्वारा शिष्य को कृपा कटाक्ष शक्ति देते हैं। वह शक्ति पात तथा शक्ति सन्क्रमण भी कहते हैं।

(३१) स्थान मकान–मठ, मंदिर, टिल्ला, दरगाह, दलीचा, समाधि धूना (यज्ञकुण्ड) नाथ सम्प्रदायिक इष्ट देवी देवता के मूर्ति या चरण पादुका स्थापित स्थान।

(३२) दर्शन मेला–भेंट मुलाकात तथा धार्मिक यात्रा स्थान भेंट

(३३) मत्था टेक–नाथ सम्प्रदायिक पंथों के मुख्य गद्दी स्थान में जाकर दर्शन करना। इसे सिर मत्था टेक भी कहते हैं।

(४०) फक्कड़–त्यागी अवधू (पूर्ण विरागी)

(४१) राजी खुशी–हालचाल

(४२) जुकती–मुकती–साधु वृत्ति से रहना। (आचरण शुद्ध)

(४३) लेखा–जोखा–हिसाब किताब (लेन देन)

(४४) धूनी चेतन करना–धूना (यज्ञ) जागृत करना।

(४५) अखण्ड धूना–पूर्व काल से चेतन (प्रज्वलित) धूना रखना और

आगे भी चेतन रखना।

(४६) आकाश वृती में रहना—योगेश्वर जंगल, गुफा, विराण में रहते हुये सभी व्यवहार खानपान लेन देन इत्यादि सब कुछ निसर्ग अर्थात प्रकृति परमेश्वर ऊपर निर्भर होता हैं वह न किसी से न कुछ मांगता है और नाही कुछ कहता था जैसे दिया तो भला नहीं दिया तो भी भला।

(४७) विभूति आसन विभूतीघासन—सम्पूर्ण भस्मरत तपस्या।

(४८) तपस्वी—धूना तपाके भस्मीधारी तपस्या करने वाला।

(४९) जटाधारी—जटा युक्त अवधू।

(५०) मौनी—मौन (न बोलना) व्रत धारी अवधू।

(५१) खडेश्वरी—खड़ी तपस्या का व्रतधारी अवधू।

(५२) फलाहारी, दूधाधारी—फल या केवल दूध पर रहने वाले।

(५३) खप्परधारी—केवल खप्पर में खानपान एवं खप्पर सिद्ध करने वाले, वानप्रस्थी, तपस्वी योगेश्वर

(५४) बर्फानी—बर्फ (हिमालय) में तपस्या करने वाले

(५५) थानी मकानी—स्थान मकान में रहने वाले

(५६) मठाधीश या मठधारी—मठ मन्दिर आश्रम में रहने वाले

(५७) नागे—निर्वाणी—नग्न व्रतधारी अवधू।

(५८) धूनी पानी सिद्धों की बानी—धूना कर्म विधिवत करना तथा धूना के प्रति अखण्ड श्रद्धा।

(५९) आसन चेतन करना—आसन सिद्ध तथा जाग्रत करना।

(६०) स्थान मकान चेतन करना—स्थान जाग्रत (प्रगति) करना।

(६१) महंत—पीर, राजा, गुरु, मठाधीश, स्थान का संचालन संस्थापक तथा प्रबंध कर्ता इत्यादि।

(६२) बाना पहनना या बाना लेना—भगवे वस्त्र धारण करने तथा दीक्षा लेने के पश्चात बाना लिया कहते हैं।

(६३) पोता चेला—अपने चेले का चेला को पोता चेला कहते हैं।

(६४) चाचा गुरु—सद्गुरु जी के गुरु भाई को कहते हैं।

(६५) दादागुरु—सद्‌गुरु जी के गुरु जी को कहते हैं।

(६६) पड़दादा गुरु—दादा गुरुजी के गुरु जी को कहते हैं।

(६७) कथनी करनी—जैसे कहा वैसे ही करना नाथ घर की मर्यादा है।

(६८) रहनी सहनी—नाथ घर का आचरण से रहना और सहन करना।

(६९) रमते राम—फिरस्ति या भ्रमण करने वाले अवधू।

(७०) जमाती (जमात)—भ्रमणशील साधुओं का संगठन।

(७१) रम्मत करना—सर्वत्र भ्रमण (अकेला) करना इसे फक्कड़ भी कहते हैं।

(७२) सुल्फीय्या—(सुलफा) दम मारने वाले या चिलम पीने वाले।

(७३) चिलम साफी—सिद्धों का प्याला।

(७४) चिलम साफी बंद करना—नाथ सम्प्रदाय से बहिष्कृत करना।

(७५) चिलम साफी खुलना—दया/क्षमा करके नाथ सम्प्रदाय, अपने सम्प्रदाय में सम्मिलित करते हैं।

(७६) चिलम भरना—चिलम में नशा या तमाखू भरके देना।

(७७) लगे दम मिटे गम दुनिया कमाये खाये हम, बोलो बम्ब—दम मारने वाले दम मारते—मारते ऐसे उत्किया बोलते रहते हैं।

(७८) सौघर भटके, नाथ घर अटके—औघड़ प्रति बोलते हैं।

(७९) नाथ जी का एक घर औघड़ के सौ घर—औघड़ प्रति बोलते हैं।

(८०) मन मिले तो मेला किजे, चित्त मिले तो चेला नहीं तो सबसे भला अकेला—यह उक्ति नाथ लोक शिष्य बनाने के व्यवहार में बोलते हैं।

(८१) गुरु शबद सुरती चेला—गुरु शिष्य का नाता

(८२) भेष (भेख) भगवान—योगी महासभा या सम्पूर्ण नाथ सम्प्रदाय का इष्ट

(८३) पातर देवता—नाथ सिद्धों की इष्ट देवता आराध्य देवता।

(८४) छतर पूजन—शक्ति की पूजा

(८५) पात्र यात्रा—अपने इष्ट पात्र देवता के साथ पद यात्रा (कुम्भ पर्व के अवसर पर)

(८६) जंठी या झुण्डी—फिरता (भ्रमन्ती) नाथ सिद्धों का समूह—कुम्भ पर्व में पात्र यात्रा निकलती है। उसे झुण्डी कहते हैं।

(८७) नाके घाटे–कुम्भ क्षेत्र व पात्र देव क्षेत्र में नथाना लेकर रहना।

(८८) नथाना लेना तथा मुक्त होना–पात्र देवता स्थापना तथा यात्रा में बंधन में रहना तथा बंधन मुक्त होना।

(८९) मानधारी–कुम्भ पर्व में पात्र देवता पूजन–यात्रा में चुनाव करके मानधारी चुनते है जो कुम्भ काल मर्यादित होते हैं।

(९०) रोट ज्योत लगाना–रोट का भोग तथा बनाने की विधि।

(९१) रोटक व्रत – प्रत्यक्ष गोरक्षनाथजी ने शिव स्वरुप में परशुराम जी को पापक्षालन के लिये यह व्रत बताया था जिसमें ढाई मन का रोट ज्योत पूजा–पाठ से श्री नाथजी को अर्पण करते है।

(९२) दीपचक्र–संध्या आरती में सभी देवी देवता समाधि पादुका धूना इत्यादि चेतन स्थानों पर दीपक ज्योत चेतन करने की विधि।

(९३) पंच परमेश्वर–१२–१८ के पंच (चुनाव में चुने हुये)

(९४) पांच महेश्वर–(१) सृष्टि (२) स्थिति (३) संसार (४) तिरोभाव (५) अनुग्राहित, यह पांच मुख वाले महेश्वर आदिनाथ जी संसार का पंचमुख से संचालित करते हैं।

(९५) त्याग बैराग चुकाना–पात्रदेवता के सम्मुख गुरु शिष्य के नाम से पंख जी पूजा चढ़ाकार आवाज देते हैं तथा कारबारी रजिस्ट्री नोट करते हैं।

(९६) चले सूरा बैठ पूरा–नाथ घर में कहावत है कि जो चलते में थकते नहीं बैठते में पूरा (पूर्ण समय तक) बैठते हैं।

(९७) बैठा अवधू लोहे की खूंटी, चलता अवधू पवन की मूठी–पदयात्रा में या रम्मत में कहावत है अर्थात् बैठने वाला (आसन) लोहे समान पक्का और चलने वाला (रम्मत) पवन के वेग समान तेज चलने वाला।

(९८) खड़े सिद्ध बैठे पाषाण तहां आये श्री शम्भुजति गुरु गोरक्षनाथ निर्वाण।–यह कहावत पंख ने सर्वप्रथम घोषित की थी। जब गोरक्षनाथ अनुपान शिला त्र्यंबक में अनंत सिद्ध को उपदेश दे रहे थे। जितने योगी खड़े है अर्थात सावधान हैं वह सिद्ध हैं और बैठे योगी (असावधान) पाषाण है।

(९९) गोरख धंधा–गुरु गोरक्ष नाथजी ने योग साधना में जिसमें योगासनों, मुद्रायें बन्द, प्रत्याहारों–ध्यानों के अनन्त प्रकार समाधियाँ,

नादानुसंधान इत्यादि हटयोग पक्ष पर इतनी खोज की है इतने प्रयोग सिद्ध किये है कि उन्हे हम गिन नहीं सकते, उसी प्रकार शाबरी और सांभरी मंत्र तंत्र यंत्र की अनन्त रचनायें की है। जो आज तक खत्म नहीं होती इसे बड़ी आदर से "गोरख धन्धा" इस शब्द-उक्ति से सम्बोधित करते है।

(१००) दिन में सोना रात्री को खोना-दिन में सोकर रात्री में योग करना

(१०१) श्वास निद्रा-सचेत रहकर निंद्रा लेना (योग निंद्रा)

(१०२) कहावत-एक देश हरियाणा जहां सिद्धों का थाना। वहां दूध दही का खाना। भैंस का दूध जोहड़ का पानी काटा कंटक सहे तो बाँगर में रहे। यह एक लोकोक्ति है। हरियाणा में १४ सौ गुप्त १४ सौ प्रकट सिद्धों की समाधियां है।

(१०३) कहावत-हरिद्वार हर की पौड़ी लगा कुम्भ का मेला।

अब तक गुरु न रगड़ी, अब रगड़ेगा चेला।।

यह कहावत जब गुरु शिष्य की कुण्डली जागृत करते हैं अतः गुरु शिष्य परम्परा का कर्म यह कुण्डलीनी जागृत (रगड़ना) करने को कहा जाता है।

कहां थे गुरु कहां थे चेला। जब भरा कुम्भ का मेला-नाथोक्ति

(१०४) कहावत-खाना सरिकतका बैठना फरीकत का-खाना पीना सब नाथ जी बांटकर खाते पीते हैं। भोज भण्डार-सार्वजनिक भोजन।

(१०५) नाथ जी का भण्डार-नाथ सिद्धों का सार्वजनिक भोजन।

(१०६) भण्डार घर-नाथ जी का रसोई घर

(१०७) भण्डार कर्म-नाथ जी के रसोई घर में श्री गणेश, अन्नपूर्णा माता का पूजा पाठ इ० कर्म करने को कहते हैं।

(१०८) आठमान पीरों का भण्डारा-आठ स्थान के आठ मानधारी पीर जी आमंत्रित करके धूनी पानी इत्यादि विधिवत भण्डारा करते हैं।

(१०९) ३२ धूनी भण्डारा-३२ पीर जी ३२ धूना के साथ मानदान- भोजन-पूजा पाठ इत्यादि कर्म करते हैं यहाँ १०८ धूनी भण्डार भी होते हैं तथा देश भण्डारा-देश के समस्त दिशा के मंडल के योगेश्वरों को आमंत्रित किया जाता है।

(११०) एकमता-नाथों घर में भण्डार भोजन पंक्ति में बैठने के वक्त पर भोजन उपरान्त के वक्त एकमता कहकर सर्व भोजन समाप्त कर उठते हैं।

(१११) खेदा खेदी-जिद्दो जिद्दी-आग्रह पूर्वक, जबरदस्ती।

(११२) झाड़ा फूका—रोगी को मन्त्र द्वारा झाड़ा मारते हैं।

(११३) कान मंत्र—कान में मन्त्र बोलते हैं।

(११४) योग माया कर्म—शक्ति उपासना।

(११५) ब्रह्मलीन होना—अधिकारी तथा मानधारी के मृत्यु को प्राप्त होने के पश्चात यह शब्द प्रयोग करते हैं।

(११६) शरीर पूरा होना—मृत योगेश्वर के लिये शबद प्रयोग होता है।

(११७) समा गया—जल या थल समाधि लेना।

(११८) तिया—मृत्यु उपरांत तीसरे दिन खान पान भण्डार देते हैं।

(११९) संख्या ढाल—मृत योगी को मृत्युयोनी से मुक्त करना, साधु अपने भजन प्रताप से मृत योगेश्वर को मुक्त कराते हैं। यह गुप्त क्रिया विधि होती है।

(१२०) अन्दर का करम—यह संख्या ढाल क्रिया को बोलते हैं।

(१२१) इच्छा समाधि—इच्छानुरुप मृत्यु।

(१२२) बनमुखी—बहरुपिया (साधु भेष में शैतान) ठग।

(१२३) मन्त्र—मनन शक्ति का नाम मन्त्र है। जितना मनन करोगे उतनी शक्ति बढ़ेगी और मंत्र का प्रभाव उतना ही प्रबल होगा। देवी देवता मन्त्राधीन होते हैं। श्रद्धा, विश्वास को भी मंत्र माना गया है।

(१२४) त्रिपुरा सुंदरी (बाला सुंदरी)—गत गंगा में महाज्योत (ज्योति) है। बाला सुंदरी त्रिपुरा सुंदरी है। यह शक्ति रुप, जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती रुप तीन पुरों की अधिष्ठात्री देवता होने से त्रिपुरा कहते हैं। यह बाला है सुंदर है। यह कभी वृद्ध नहीं होती और इस योग शक्ति का नाम त्रिपुर सुंदरी है।

(१२५) जपो तपो श्री सुंदरी बाला—जप तप शक्ति का अंश है। बाला सुंदरी शिव की शक्ति है और "ॐ शिव गोरक्ष योगी" इस मन्त्र का जाप करती है। शिव निर्लेप है उसे प्राप्त करना योग है। ध्यान है, समाधि है, तप उनके स्वरुप का अनुसंधान है। शक्ति शिव का अंग है। क्रियाओं का संबंध शक्ति के साथ है। शिव निर्गुण है तथा बाला सुंदरी सगुण और सक्रिय है और शक्ति की शिव के साथ प्रतिष्ठा है जो कि जप तप से योग—७६ योग से समाधि सें ब्रह्मरन्ध्र शक्ति (कुण्डलीनी) प्रवेश कर शिव को मिलती है।

(१२६) बायें हाथ पुस्तक दायें हाथ माला—बायां अंग शक्ति का और दायां अंग शिव का माना जाता है। विद्या को शक्ति का स्वरुप मानते हैं। इसलिये पुस्तक (विद्या प्रतीक) बायें हाथ में शोभा देता है। माला फेरना (जाप) दाहिने हाथ से होता है। इसलिये दाहिने हाथ माला कहा है।

(१२७) रक्षा करें गुरु गोरक्ष नाथ जी बाला— जो "ॐ शिव गोरक्ष योगी" इस मंत्र का जाप करता है उसकी रक्षा श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी करते हैं और योग करने से जीव पिण्ड का रखवाला है।

(१२८) आप दिया तो दूध बराबर मांग लिया तो पानी।
झगड़ लिया तो रक्त बराबर ऐसी भिक्षा नहीं खानी।।

(१२९) सुरति— स्मरण या याद करना।

(१३०) निरति— द्रष्टा होकर आने वाला अनुभव, देखना या करके जानना।

(१३१) निमंत्रण— अध्यात्मिक विषय में बुलावा, आमंत्रण या आवाहन।

(१३२) ओखाल— वमन क्रिया से उदर शुद्धि (धौलि)।

(१३३) पखाल— शौच क्रिया से उदर शुद्धि (नौलि)।

(१३४) खौखाल— नेति धौलि नौलि क्रिया से।

(१३५) कर पखाल— शौच के बाद हाथ धोना।

(१३६) जगेसर— जगेश्वर अर्थात योगेश्वर।

(१३७) नाथ— (शैव) योगी।

(१३८) परमहंस— जपा—अजपा में परम अवस्था।

(१३९) कप्पड़ धारी— वस्त्र धारी (भगवा)।

(१४०) दिगम्बर— नग्न (अवस्त्र)।

(१४१) टकसाली— मुण्डन किया अवधू।

(१४२) मूर्ति— व्यक्ति (साधू—सन्त) को कहते हैं।

(१४३) युक्तिमान— विचार वन्त, बुद्धिवान।

(१४४) टहल— सेवा करने वाला (औघड़ को कहते हैं)।

(१४५) टहल्या— सेवा करने वाला (औघड़ को कहते हैं)।

(१४६) कंटक– जिद्दी (अविस्वासु)।

(१४७) सगुरा– चेला (आज्ञाधारी) को कहते हैं।

(१४८) निगुरा– बिना गुरु का साधक को कहते हैं।

(१४९) सेवक– नाथजी के भक्त को कहते हैं।

(१५०) चीरा गुरु– कान फाड़ने वाले गुरुजी को कहते हैं।

(१५१) गुरु भाई– अपने गुरु जी के शिष्य को कहते हैं।

(१५२) बंकनाथ– (वीर बंकनाथ) हनुमान जी को कहते हैं।

(१५३) गुरु पक्ति– गुरु परम्परा (१) ॐकार स्वरुप–आदिनाथ जी (२) धरत्री स्वरुप–उदयनाथ जी (पार्वती) (३) जल स्वरुप–सत्यनाथ जी (ब्रह्माजी) (४) तेज स्वरुप–सन्तोषनाथ जी (विष्णुजी) (५) हस्ती स्वरुप–गज कन्थड़नाथ जी (गणेश जी) (६) अठारह भार वनस्पति स्वरुप–चौरंगीनाथ जी (चन्द्रमा जी) (७) शेष स्वरुप–अचल अचम्भेनाथ जी (लक्ष्मण जी) (८) माया स्वरुप– मत्स्येन्द्रनाथ जी (मत्स्य) (९) अटल अविनाशी घट–घट व्यापक अनन्त नाथ–गुरु बाल रुपी गोरक्षनाथ जी इनके आगे ८४ सिद्धों कि परम्परा हुयी तदनन्तर अनन्त कोट सिद्धों की भी परम्परा हुयी।

(१५४) कुबेर नाथ– भोजन–भजन में ऋद्धि–सिद्धि युक्त।

(१५५) पंच प्रधान– नाथ सम्प्रदाय में चुने हुये पांच अधिकारी।

(१५६) टुकुरा– छोटा भण्डारा (अन्नदान) करते हैं।

(१५७) रौरास (रास)– ऊँची आवाज में मन्त्रना करना।

(१५८) चक्रावली– इष्ट, देवी देवता, ध्वजारोहण, पात्र देवता आदि स्थानो में आरती के समय नाथ सम्प्रदाय के सभी नियम पूर्वक योगी (नाथ सिद्ध) लोक अर्ध–चक्री में खड़े होते हैं।

(१५९) रोट प्रसाद– विधि पूर्वक धूनी में तैयार किया गया पूजा विधि में काम आने वाला नैवेध (भोग)।

(१६०) काया पात्र (काया पात्री)– खप्पर जैसा तथा उसी आकार का विशिष्ट धातु का पात्र जो भोग लगाने के काम आता है।

(१६१) झारी (करुंआ)– पूजा का जल पात्र जिसके आगे टोंटी होती है।

(१६२) खप्पर (चीपी)– यह समुद्री ठोस कड़क जीव (कीड़ा) का बना हुआ पात्र पूर्ण होता है वह चीपी, आधा होता है वह खप्पर। खप्पर धारी इसका व्रत करते हैं।

(१६३) चीला– एकान्त में बैठा हुआ अवधू (नाथ सिद्ध) जो किसी का न दर्शन करता है न स्पर्श करता है।

(१६४) जाग्रण (जागरण)– पूजा, कर्म काण्ड, भजन, योग, साधना, अनुष्ठान इत्यादि उपासना हेतु रात भर जागना।

(१६५) छुरी (करद)– चाकू, दुधारी शस्त्र, विशेषता कर्ण छेदन के उपयोग में लाते हैं।

(१६६) सैली (शैली)– एक सौ बीस जनेऊ (जो कि एक जनेऊ साढ़े बारह हाथ का होता है अर्थात १५०० सौ हाथ का) कि ऊन की रस्सियाँ बना के उनको एक दूसरे में जालीदार, नक्षीदार बुनते हैं और यह पीर जी के शीश पर या इष्ट के शीश में या जटाओ में बांधते हैं।

(१६७) नाद (नादि)– नाद पूजा–शब्द–ध्वनि निर्माण होने वाली विशिष्ट धातु की चीज होती है इस नाद को शब्द ब्रह्म या नाद बह्म कहते हैं। जिसे शिव का स्वरुप भी मानते हैं।

(१६८) पवित्री– इसी धातु कि वर्तृलाकार वस्तु जिसमें जनेऊ पिरोकर डालते हैं इसे अर्धमात्रा चिदानन्दा शक्ति स्वरुप मानते हैं।

(१६९) जनेऊ– भेड़ के ऊन का धागा, साड़े बाराह हाथ का होता है। उसे छः लड़ियों में करके नादि पवित्री रुद्राक्ष, मूंगा, स्फटिक में पिरोकर गले में पहनते है। जिसे ॐकार स्वरुप मानते हैं और नाद जनेऊ कहते हैं।

(१७०) मढ़ीदार (मड़ीदार)– पीर या महन्त का सेवादार।

(१७१) कोठारी– स्थान की सभी चीज वस्तु संभालना और वितरण करने वाले महात्मा।

(१७२) पुजारी– देवता इष्ट, पत्र छत्र, धूनी पानी का प्रबन्धक या पूजन करने वाले महात्मा।

(१७३) भण्डारी– पाकशाला का प्रबन्धक या रसोई बनाने वाले महात्मा।

(१७४) ठोकारी (ठुकारी)– मुख्य व्यक्ति की अनुपस्थिति में कार्य करने वाला कोठारी पुजारी भण्डारी का सहायक महात्मा।

(१७५) नाद जनेऊ– ॐकार तथा शिवशक्ति का स्वरुप या कुण्डलिनी रहस्य तथा अवलम्बन करने के प्रेरणा हेतु यह नाद जनेऊ पहनते हैं।

(१७६) आड़बंद (अड़बन्ध)– यह काले ऊन का मोटा सा बुनकर बनाते हैं और महात्मा विशषेत: तपस्वी लंगोटी कसने हेतु कमर में (पट्टे जैसा) बांधते है।

(१७७) नागफणी– नाग (सांप) के आकार का विशिष्ट धातु का बाजा जो मुंह से पूजा, धार्मिक उत्सव, भण्डारा (मेला) में बजाते हैं।

(१७८) नागन (सेली)– ये भी ऊन की रस्सी से बनाते हैं। इसमें २,४ प्रकार होते हैं।

(१) साड़े पांच हाथ नागन (सैली)– हाथों में मनीबंद में या दंडों में बांधते हैं और उस पर रुद्राक्ष माला (सुमीरणी) को पहनते हैं।

(२) सवा नौ हाथ नागन (सैली)– यह गले में पहनते हैं।

(३) साढ़े बारह हाथ नागन (सैली)– ये भी गले में नाद जनेऊ रुप में पहनते हैं।

(४) एक सौ बीस जनेऊ की नागन (सैली)– पीर जी के शीश में बांधते हैं। उस पर रुद्राक्ष माला भी डालते हैं।

(५) सवा चौबीस हाथ नागन (सैली)– यह मुलायम ऊन का बनाते हैं और कमर से लेकर छाती तक लपेटकर बांधते हैं। विशेषत: दक्षिण क्षेत्र के योगेश्वर यह पहनते हैं। (इसे अड़बंद भी कहते हैं)।

उपरोक्त सैली या पहनने से अवधू स्फूर्ति, तेजस्वी, सावधान, आनन्द में रहता तथा सदा जाग्रत रहता है।

(१७९) मार्गी गायन— उत्सव में या जागरण में गाये जाने वाले शब्दों को कहते हैं। रात्री के योगमाया कर्म को भी मार्गी पूजन कहते हैं। पश्चिम—मध्य क्षेत्र में गायन करने वाले सारंगी, एक तारी भजनों को शब्दों को यह कहा जाता है।

कहावतें—

(१८०) गुरु ज्ञान में, रमता चेला। जब भरा था, कुम्भ का मेला।।

(१८१) जब रमे चेला नाथ सिद्ध की टोली। तभी जानेगा नाथ सिद्धों की बोली।।

(१८२) कानन कुण्डल कुण्डलीनी योग। कहे गोरख ब्रह्म रस भोग।।

(१८३) पहले किया सो अब भुगतावे। जो अब करे सो आगे पावे।।
जैसा दीजै तैसा लीजै। ताठे तन धन नीका कीजै।।

(१८४) काया माया न लीजै भोग। मन पवन ले साधो योग।।
सत सत सिद्धों मते हो पार। न मरे योगी न ले अवतार।।

(१८५) बिन मांगे मोती मिले मांग लिया सो पानी।
खेंचातानी जो मिले सो रक्त बराबर जानी।।

(१८६) बिन मांगे मोती मिले। मांगे मिले ना भीख।।
कर्म करे सो फल मिले। यह नाथ सिद्धों की सीख।।

(१८७) दिया तो भला ना दिया तो भी भला।
अलख निरन्जन यह तो माया जंजाल की बला।।

इतना श्री नाथ रहस्य तृतीय खण्ड समाप्त

श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के चरण कमल को आदेश। आदेश। आदेश।

❀❀❀❀❀

उपसंहार

ॐकार आदिनाथ गुरौं सकल सिद्धांका।
गुरु गोरख बाला, मत्स्येन्द्र पूता।
प्रगटया योग अनन्त सिद्धांका।।
होईबा किरपा, गोरख ध्यान।
योग-योग का भया उद्धार।।
मिलिया सतगुरु दिनी दीक्षा।
गुरु शबद का विचार करीबा।।
उत्तम करनी हो गयी किरपा।
गुरु प्रसादे भनत, भनत लिखीबा।।
रहिबा उदास करिबा ध्यान।
नित-नित करीबा पूजा और पाठ।।
सगुन सिडिया निर्गुण निर्वान।
यौ वन्दत विलास गुरु आनन्द का दास।।

इति श्री नाथ रहस्य ग्रन्थे वैवस्वत मन्वन्तरे नाथ सिद्ध महात्मे

श्री नाथ पूर्ण संस्कार तृतीये खण्डः

श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश।

ॐ शिव गोरक्ष योगी।

* * *

श्री नाथ रहस्य

(प्रथम तथा द्वितीय खण्ड)

पूजन तथा हवन सामग्री

क्र.सं.	विवरण	संख्या/प्रमान
१.	पुस्तकें—श्रीनाथ रहस्य,चोपड़ी पंचांग इ०	१या अनेक
२.	प्रतिमायें (मूर्ति) गुरु गोरक्षनाथ जी की, गणेश गौरी, अन्नपूर्णा माता, इ० (धातु—सुवर्ण चांदी, ताम्र, मृतिका, स्फटीक, संगमरमर इ०)	
३.	चरण पादुका—चन्दन या धातु की खडावा	१ या २१
४.	तस्वीरें—गोरक्ष, गणेश गौरी, अन्नपूर्णा माता पंच सतगुरु इ०	१ या २१
५.	रुद्राक्ष दाने, छोटे/बड़े, १ से २१ मुखी की तथा रुद्राक्ष मालायें, निर्मुखी, गणेश (अर्धनारी नटेश्वर)	१०८ या पूजानुरुप
६.	सुपारी बारीक तथा बड़ी	१०८ या ५ सेर
७.	पाटले आसन के तथा छोटी चौकियाँ	१०८ या पूजननुरुप
८.	आसन—बाघाम्बर—मृगासन—कुशासन—कम्बल ऊन की या (वस्त्र की) सूती	१या १०८ या पूजननुरुप
९.	सुमिरणी रुद्राक्ष की (२७ दाने की)	१ या १३
१०.	दीपक छोटे, बड़े	२१
११.	भभूती—धूना की तथा श्मशान की	२,३कटोरे भरके
१२.	भस्मी—काया लेपन की	२,३ गोले
१३.	धूप—उद्—गुग्गल—सुगंधित,.	आधा सेर
१४.	कलश—सुवर्ण चांदी, ताम्र,पीतल इ०	१ या १०
१५.	ईंटें या (अग्निकुण्ड—लोहे का, ताम्र का, मिट्टी का)	२१ या ५१ या
१६.	रेता (बारीक) या मृतीका—गंगा तट की संगम, तालाब, गोशाला, राजद्वार, चौराहा, शमशान भूमि, हाथी घोड़े के तबेले की दीमक (वाल्मीकि)	पूजा अनुसार
१७.	कुशा	१०८
१८.	रंग—लाल, भगवा, नीला, हरा, पीला, काला, भभूती	सब ५०, ५० ग्राम
१९.	जल—गंगाजल, त्रिवेणी संगम, ७ कुवे का समुद्र का, नारियल का जल इ०	
२०	नारियल, कच्चे पानी वाले	१ या १०८

क्र.सं.	विवरण	संख्या/प्रमान
२१.	पंचपल्लव-आम, बड, पीपल (खाने) पान	प्रतिदिन २५
२२.	सप्त धान्य-गेहूँ, चावल, ज्वार, उड़द, जौ, तिल, बाजरा इ०	
२३.	गौ घृत	सवा ५ सेर
२४.	गौ-गोबर	
२५.	तिल्ली का तेल	सवा सेर
२६.	सरसों का तेल	सवा सेर
२७.	अक्षदा	सवा ५ सेर
२८.	कुकुम (गंध)	१ पाव
२९.	अष्ठगंध	आधा सेर
३०.	चन्दन-बारीक, पिसा हुआ, लकड़ी के टुकड़े	सवा सेर
३१.	केशर	आधा पाव
३२.	पत्र-ताम्र पत्र, सुवर्ण चांदी, पत्र, भोजपत्र	११ या २१
३३.	ताम्बुल-लवंग, इलायची,सुपारी, केशर इ०	सवा सेर
३४.	जायफल	२१
३५.	आटे के दीपक	१ या ११ या २१
३६.	लाल धागा	२, ३ बण्डल
३७.	मधु (शहद)	सवा सेर
३८.	दधि	सवा सेर
३९.	दूध	सवा पांच सेर
४०.	पंचामृत (घी, मधु, दही, दूध, चीनी इ०)	आधा पाव
४१.	अत्तर सुगंधित	४, ५ शीशी
४२.	साप की कंजली	१
४३.	कलम-बड़, आँख, कनेर, अनार इ०	१
४४.	स्याही-अष्ठगंध	१ शीशी
४५.	वस्त्र-लाल, सफेद, भगवे (छोटे, बड़े)	प्रत्येक सवा ५
४६.	भगवे बाने-कन्था, अल्फी, कटी वस्त्र, लंगोट, अचला साफा इ०	
४७.	भोग-मिष्ठान-खीर-हलवा, पूरी, खिच्चड़	५ सेर
	कच्चा रोट-पक्का रोट	सवा ५ सेर
	पंच मेवा, मिश्री इ०	
४८.	फल-पंचफल, आम्रफल, बिल्वफल, केला, जातीफल, अंगूर इ०	६ दर्जन
४९.	पुष्प-सुगन्धित पुष्प तथा पुष्प मालायें	१०८ (५ सेर)
	लाल पुष्प (५ सेर) कमल कट्टा (१०८) गेन्दा फूल (१०८)	
	लाल कमल (१०८)पलाश पुष्प (सवा ५ सेर)	

क्र.सं.	विवरण	संख्या/प्रमान
	धतुरा पुष्प (सवा ५ सेर) डाक पुष्प (सवा ५ सेर) तण्डोली पुष्प (सवा ५ सेर) मलिका पुष्प (सवा ५ सेर) ब्रह्मवृक्ष के पुष्प (१०८) कमल पुष्प (१०८) गुलाब पुष्प (१०८) चमेली के पुष्प (सवा सेर) सूर्यफूल (१०८) तथा इन फूलों की पंखडी भी चलेगी	
५०.	दूर्वा	१०८
५१.	लाल चन्दन	आधा पाव
५२.	तुलसी दल	१०८
५३.	समीधा-नवग्रह लकड़ी-मन्दार (१०८) (अर्क) आंक (१०८) पलाश (१०८) खैर (१०८) अपामार्ग (१०८) पीपल (१०८) गूलर (१०८) शमी (१०८) बड वृक्ष (१०८) काष्ठ (१०८)	
५४.	अमर बेल	१०८
५५.	कर्पूर	सवा सेर
५६.	हल्दी	सवा पाव
५७.	अगर-तगर-जटामासी-बेला	
५८.	हवनीय सामग्री-खीर (पायस)	सवा सेर
५९.	साकल्य (तिल+जौ+चावल+शक्कर)	सवा सेर
६०.	गीलाय टुकड़े	१०८
६१.	राई	सवा सेर
६२.	ढाक के टुकड़े	१०८
६३.	निम्ब सैलोक्त	१०८
६४.	तेलोक्त लवंग	१०८
६५.	कदली फल	१०८
६६.	सिन्दूर (हनुमान)	आधा पाव
६७.	मानपात्र (खप्पर या धातु, सुवर्ण, चांदी इ०)	१
६८.	कास्य का कटोरा, थाली इ०	४ या ५
६९.	कमण्डल	२ या ५
७०.	जनेऊ (नादी पवित्री सहित)	१ या २१
७१.	छत्र-चवर (सुवर्ण, चांदी, ताम्र इ०)	१ या ५
७२.	झोली, खप्पर, चिमटा (धातु में)	१ या ११
७३.	त्रिशूल, डमरू, कमण्डल	१ या ११
७४.	शंख दक्षिण मुखी, इ०	१ या ५
७५.	भैरव दण्ड, भैरव मतंगा कडे	१ या ४, ५
७६.	नागफनी, तुम्बा, कुबड़ी	१ या ५

क्र.सं.	विवरण	संख्या/प्रमान
७७.	धूनी का अंगार	
७८.	नींबू तथा नींबू मालायें	१ या ११
७९.	खडांग या छुरी	१
८०.	खनिज–धातु–धातु तांबा, सुवर्ण, चांदी	
८१.	कुण्डल (धातु–तांबा, सुवर्ण, चांदी इ०) मृतीका	१ या ५१
८२.	अलंकार, सुवर्ण चांदी इ०	१ या ५
८३.	करद (चाकू) या कैंची इ०	१ या २
८४.	दक्षणा (चिप्पी)	इच्छानुरूप
८५.	पंच आरती, दानी ९ आरती दानी (पीतल, सुवर्ण, चांदी)	१ या २
८६.	धूपीया	१ या २
८७.	घण्टी–घडियाल, ढोल ढक्के, शंख इ०	१ या २
८८.	जल झारी, कमण्डल	
८९.	थालियां–कटोरियां, जलपात्र, चम्मच, भगोना कढ़ाई इ०	पूजनारूप
९०.	भगवा वस्त्र का ध्वज बड़ा	सवा मीटर
९१.	पंचपात्र, आचमनी, पूज्यादि	
९२.	पंचरत्न (सोना, हीरा, मोती, पुखराज, नीलम)	१
९३.	शिवलिंगी फल	१०८
९४.	उड़द दाल (साबुत)	सवा सेर
९५.	बास बनी डालीया	४४
९६.	रौली	
९७.	पत्तल, हरी	इच्छानुरूप
९८.	कदली खम्बे	४

इत्यादि सामग्री अपने इच्छानुरुप भी ले सकते हैं।

(तृतीय खण्ड)

सामग्री

विधि	सामग्री
१. शिष्य बनाने की विधि चोटी काटने की विधि	(१) आचमन (२) मुण्डन व्यवस्था (३) भगवा बाना (४) भस्मी (५) नाद जनेऊ (६) रुद्राक्ष माला (१०८ दाने की) (७) चाकू या कैंची
२. जनेऊ बनाने की सामग्री	(८) भेड़ की ऊन, फिरकी (पाण्डा या गिट्टियां)

विधि	सामग्री
	६. १०. लकड़ी या लोहे का घोड़ा, मिट्टी या १ रुद्राक्ष, • १ स्पटीक, १ मूंगा १ नादि पवित्री इ० (६) मिठाई (१०) गुरु दक्षिणा (११) पंचोपचार पूजन इ०
३. चिरा लेना विधि	(१) स्वतन्त्र, एकान्त कमरा (२) करद (३) भभूती (४) ठिट्टी (नीम की लकड़ी गोल आकार में) (५) नये वस्त्र (भगवे) ओढने, बिछाने के लिये (६) पतला मुलायम कपड़ा (७) मोर छड़ी (८) नीम के पत्ते से उबाला हुआ जल (६) मृतीका के बड़े कुण्डल (योगदण्ड)-२ (१०) सरसों का तेल, नीम के पत्ते में उबला हुआ १ शीशी (११) पंछी का छोटा पंख (तेल लगानेका) (१२) भोजन-हलवा (गौ घृत का), घी की रोटी, मटके का शुद्ध जल (१३) मृतीका के दो छोटे कुण्डल (१४) गंगाजल इ०
४. भभूत बनाने की विधि	(१) गौ गोबर के कण्डे (२) धूनी (३) जल, पतला वस्त्र (छानने के लिये) (४) गौ का दूध (५) कटी वस्त्र (६) लंगोटी (७) खप्पर (८) कम्बल इ०
५. उपदेशी शिष्य बनाने के लिये	(१) शंख-ढाल विधि (सिडी पूतला दीपक इ०) (२) कुशासन (३) अखण्ड ज्योति इ०
६. बाना (लंगुटी) के शिष्य बनाने की विधि	(१) वस्त्र (लंगोटी) (२) बाना, कंथा, कटीवस्त्र, गाती, पंचबाना, कम्बल इ०
७. सतगुरु पूर्णिमा विधि	(१) अभ्यंग स्नान-पंचामृत (दूध, दही, घृत, शहद गंगाजल) उबटन शुद्ध गंगाजल (२) नये भगवे वस्त्र (बाना) (३) आसन (सिंहासन) सुगंधित पुष्प ४ सेर (४) आम-निम्ब पल्लव डाली (५) रोशनाई (६) गद्दी-लोड-बाघाबंर-मृगछाला (७) पूजन-धूप दीप नैवैद्य, बिल्वपत्र, पुष्प मालायें, रुद्राक्ष मालायें, कर्ण कुण्डले (सुवर्ण चांदी इ०) नाद जनेऊ, खडाऊ, चवर छत्र, कर्पूर, मिठाई या रोट इ० महादान दक्षिणा
८. सद्गुरु यन्त्र विधि	(१) ताम्र-भोज-सुवर्ण, चांदी इ० पत्र, भगवा वस्त्र-आसन, भभूती, (२) पंचोपचारे पूजन-धूप, दीप, नैवेद्य, गुग्गल, लाल कमल पुष्प, रुद्राक्ष माला (३) कन्हेर, आँख, केशर इ०
६. सिद्धियाँ विधि	(१) विभिन्न प्रकार के कुण्डल (२) खप्पर काला बाना मेखला, घुघरु (३) त्रिशूल, चिमटा, धूना, गौघृत (सवा सेर) भैरव पूजन-तिल्ली का तेल-लाल पुष्प माला,

विधि	सामग्री
	सरसों का तेल, दीपक, लवंग, इलायची, मिठाई या रोट कच्चा या पक्का (सवा सेर) रुद्राक्ष माला (४) भैरव डंडा-भभूती-धूना-गौघृत-कच्चा दूध-फल-दूध-भण्डार-सवा सेर रोट, लंगोट, भगवा बाना, पंचफल पुष्प, भण्डारा, भूमि पर गड्डे, मटके, ४ लोहे की कील, गौ का कच्चा दूध।
१०. मुहम्मद बोध	(१) साधना कक्ष-गोरक्षनाथ जी की मूर्ति या तस्वीर या पादुका-कलश-आसन-दूध-रोट-फल-मीठी खिचड़
११. पात्रदेवता विधि	(१) गंगाजल-चौकी (पाटला)-गद्दियाँ, भगवे वस्त्र-२, ३ (२) दीपक-२, चौकी-२, गौघृत-बत्ती, (रूई की) तेल-आसन-४, गद्दी लोड-४, तूम्बा आलाबु पात्र (घीया का) दान-महादान-(सुवर्ण, चांदी, ताम्र, रुपया, हीरे इ०) केशर तिलक कुण्डल (मृतीका) सैली (टोपी) रुद्राक्ष (१ मुखी या निर्मुखी)-नादी पवित्री-जनेऊ-रोट भोग (कच्चा) तथा पक्का रोट, करद (चाकू), नारियल ११, अष्ठगंध बिल्व-पुष्प मालायें, अत्तर, कर्पूर इ० चदरे ४, धूप, दानी, ढोल, घड़ियाल, ध्वनि का शंख, दक्षिण मुखी शंख घण्टी चँवर, छत्र इ०
१२. थल समाधि	(१) आसन पंचगव्य, नये वस्त्र-आधारी (कुबड़ी) कर्ण के लिये मृतीका कुण्डल, चदर या नया वस्त्र, जुलूस यात्रा (आवश्यक हो तो) ठीकरा (मिट्टी का खप्पर), फल फूल पुष्प मालायें, नून शक्कर, मिट्टी, जल, मिट्टी का कसोरा भरके छानी हुई भभूती, दीपक, वस्त्र, दक्षिणा, भोजन, बर्तन, खीर, खाण्ड, भण्डारा, शंख, ढाल, समाधि, ईंटें पत्थर इ०
१३. जल समाधि	ठीकरा तथा उपरोक्त थल समाधि की सामग्री

सूचना—यह सामग्री पूजन—हवन इ० साधक अपनी इच्छा अनुसार वरण एवं देव द्रव्य में वृद्धि कर सकते हैं जिससे सहस्त्र—लक्ष—कोटि पूजन—हवन होता है।

विशेष महात्म्य

यह श्री नाथ रहस्य ग्रंथ के स्तवन पूजन, हवन पूजन, पाठ विधि इत्यादि कर्मों को साधकों ने प्रतिदिन नित्यकर्म से मानस पूजा हेतु केवल चिन्तन तथा पठन या कथन करने पर भी महापुण्य तथा मोक्ष मुक्ति की प्राप्ति होगी।

"पढ़न्ते–सुनन्ते मोक्ष मुक्ति फल को लभन्ते। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।"

आवश्यक सूचना

१. इस ग्रंथ की सभी तन्त्र–मन्त्र क्रिया साधनायें अतिषय गुप्त एवं गोपनीय हैं। अत: सद्गुरुजी के उपदेश या मार्गदर्शन या सद्गुरु जी के आज्ञा के बिना कर्म–साधना करना अनुचित होगा।

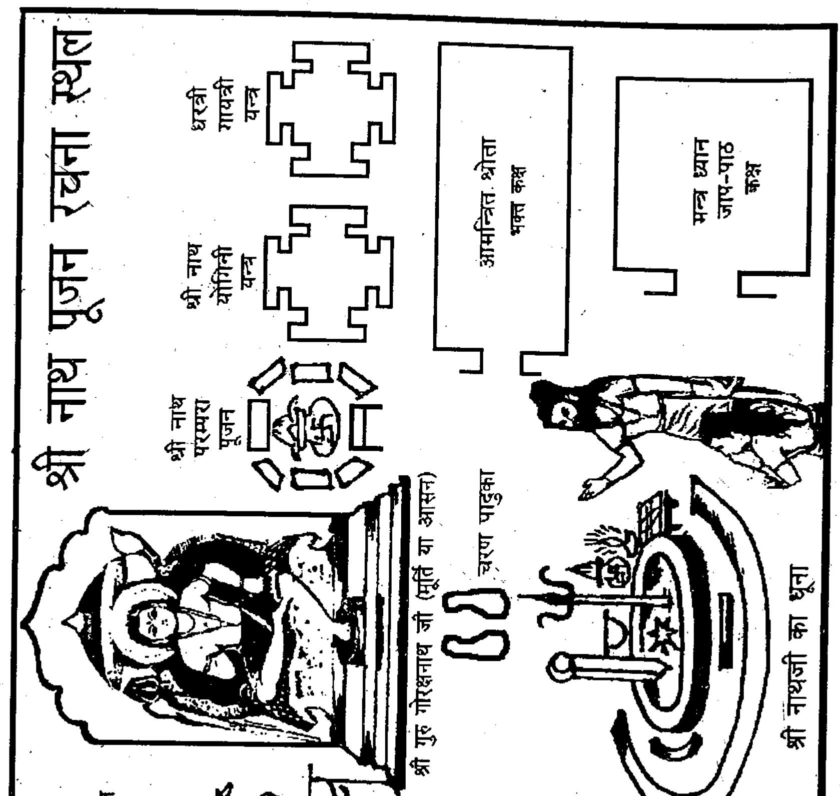
२. इस ग्रन्थ के विधि विधान का उपयोग केवल अच्छे सत्कर्म के लिए ही करना उचित होगा।

३. यह सभी क्रिया साधनायें शक्यतो एकान्त एवं पवित्र स्थल में करना उत्तम होगा।

४. किसी भी जगह कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति से इस ग्रंथ के साधना एवं मन्त्र–तन्त्र सिद्धियों का व्यर्थ वाद–विवाद करना शाबर तन्त्र शक्ति का अपमान होगा। इसे सद्भाव एवं आदर दो वह अवश्य लाभान्वित सहयोग करेगी।

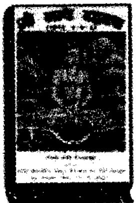
५. कूटनीति या कपट विचार या किसी को अपमानित या नीचा दिखाने के लिये या अहंकारवश इत्यादि दुर्गुनों के सहारे इस ग्रन्थ का उपयोग ना करें अन्यथा यह शाबर शक्ति विपरीत कार्य करेगी।

६. इस ग्रन्थ से सूचना और नियम के अनुसार एवं आपकी साधना प्रणाली तथा श्रद्धा भक्ति विश्वास के योग्यता अनुसार फल प्राप्ति होगी।


श्री नाथ पूजन रचना स्थल
"ॐ शिवगोरक्ष योगी"
ध्वज
कलश पूजन
महारुद्र ९ नाथ ८४-सिद्ध चक्र
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
गणेश गौरी
प्रधान कलश
श्री नाथ भण्डार घर
अन्नपूर्णा
कोठार
रसोई कक्ष
भोजन कक्ष
श्री गुरु गोरक्षनाथ जी (मूर्ति या आसन)
चरण पादुका
श्री नाथजी का धूना
श्री नाथ परम्परा पूजन
श्री नाथ योगिनी यन्त्र
धरती गायत्री यन्त्र
आमन्त्रित श्रोता भक्त कक्ष
मन्त्र ध्यान जाप-पाठ कक्ष

श्रेष्ठतम् श्री नाथ सम्प्रदाय साहित्य

लेखक-योगी विलासनाथ


श्री नाथ रहस्य


श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल


Sri Nath Siddha Kavacam

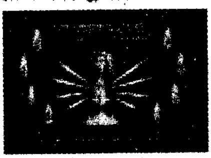

श्री नाथ सिद्ध कवचम्


श्री नाथ सिद्ध पाठ


श्री गोरक्ष तंत्रम्


प्राचीन भर्तृहरि गुफा महात्म्य


श्री नाथ सम्प्रदाय
आरती भजन संग्रह (जपमाला)


नवनाथ


श्री गोरक्षनाथ सिद्ध चालीसा


श्री नाथ सिद्ध
तन्त्र-मन्त्र-टोटके


श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि

नोट - अपेक्षित साहित्य के मूल्य का मनिऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट भेजने पर साहित्य पोस्ट V.P.P. द्वारा भेजा जायेगा। अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का ऑर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

-: पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401

फोन : 01334-226583

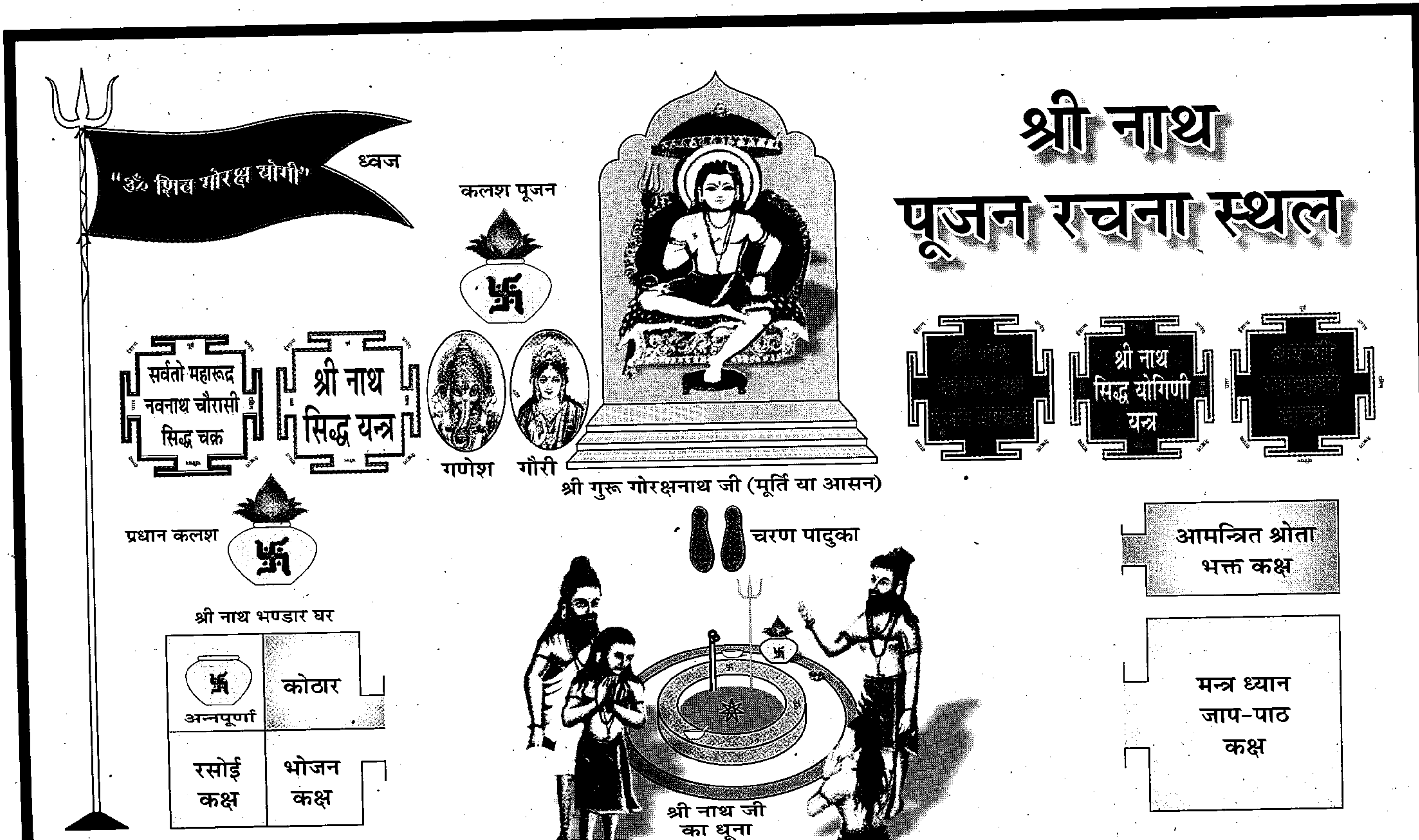
website : www.yogigorakshnath.org

e-mail : media@yogigorakshnath.org

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह. जिला रोहतक (हरियाणा)

फोन: 234804


श्री नाथ
पूजन रचना स्थल
"ॐ शिव गोरक्ष योगी"
ध्वज
कलश पूजन
सर्वतो महारूद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध चक्र
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
गणेश
गौरी
श्री गुरू गोरक्षनाथ जी (मूर्ति या आसन)
श्री नाथ सिद्ध योगिणी यन्त्र
चरण पादुका
प्रधान कलश
श्री नाथ भण्डार घर
अन्नपूर्णा
कोठार
रसोई कक्ष
भोजन कक्ष
श्री नाथ जी का धूना
आमन्त्रित श्रोता भक्त कक्ष
मन्त्र ध्यान जाप-पाठ कक्ष

श्री नाथ सिद्ध यंत्र का कार्य,

१. श्री नाथ सिद्ध यन्त्र के प्रति पूर्ण विश्वास, श्रद्धा एवं भक्ति होना अनिवार्य है।

२. स्थान में स्थापित यन्त्र का पूजन पृष्ठ सं० १०३ के अनुसार करें या संक्षिप्त पंचोपचारे या शोडोषचारे पूजन करके यन्त्र सन्मुख अपने गुरु मन्त्र या "ॐ शिव गोरक्ष योगी" इस बीज मन्त्र का या अपने इष्ट देवी-देवताओं का या इच्छित कार्यानुसार लिये हुये मन्त्र का जप कम से कम १०८ बार या इच्छानुरूप ज्यादा समय करें। ऐसा नित्य नियम करने से यन्त्र महाचेतन होकर शीघ्र फल देगा।

३. इस यन्त्र में सभी देवी-देवता एवं नाथ सिद्ध अधिष्ठित हैं। इसलिये यह यन्त्र किसी भी देवी देवता, सिद्ध महात्माओं के पूजन हवन या उत्सव में स्थापना कर पूजन कर सकते हैं। उदाहरण-नाथ सिद्ध नवनाथ पाठ-पूजन, नवदुर्गा (दश महाविद्या) नवरात्री तथा गुरु गोरक्षनाथ पूजन (गोरक्ष जयन्ती) तथा अन्य समाधि पूजन, गणेश पूजन (उत्सव) होली-दशहरा-दीपावली (लक्ष्मी पूजन) सोमवती अमावस्या, पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, श्रावण मास, चार्तुमासादि सब व्रत विधि में तथा भैरव (भैरवाष्टमी), काली, तन्त्र पूजन, सिद्धि विधि में, रामायण पाठ, श्रीमद् भागवत पाठ, गीता-ज्ञानेश्वरी पाठ, शिव पुराण नाथ पुराणादि सभी पुराण पाठों में तथा किसी भी हवन विधि में स्थापन करने से यथा योग्य फल प्राप्त कर देगा।

४. इसमें अस्त्र, शस्त्र, क्षेत्रपाल, रक्षपाल, कोटवाल, दस महाविद्या, नाथ सिद्ध जोगन इत्यादि महाशक्तियों का अनुष्ठान होने से तन्त्र-मन्त्र साधना एवं सिद्धियां, शक्ति साधना को पूर्ण सुरक्षा एवं शुभ फल तथा पूर्ण सुयश देता है।

५. खास अनुष्ठान, तपस्या, सिद्धि प्राप्ति देवी देवता, सिद्ध महात्माओं के दर्शन अनुभूति इत्यादि के लिये भी यह यन्त्र सुयश देगा।

६. इस यन्त्र में सर्व सिद्धियां एवं कुण्डलिनी चक्रों के अधिष्ठित देवी-देवताओं का अनुष्ठान होने से साधक यन्त्र स्थापन सन्मुख योग साधना, हठयोग, चक्र जागृति, कुण्डलिनी योग, ध्यान धारना समाधि सिद्धि प्राप्ति, जप-भजन इत्यादि कर्म साधना में शीघ्र लाभ एवं अनुभूति देता है तथा साधक ज्योति दर्शन ज्योति स्वरूप ब्रह्माण्ड भ्रमण इत्यादि का भी अनुभव आता है।

७. साधना में या शुभ कार्यो में, काम, क्रोध, मत्सर सताते होंगे तो ६ मुट्ठी भस्मी से यन्त्र का अभिषेक करें और वह भस्मी सर्वांग लेपन करें या माथे पर बाहु वक्षस्थल, नाभि स्थान, हाथ-कलाई इत्यादि पर भस्म त्रिपुण्ड लगाकर कर्म करें शुभ कार्य सफल होगा आध्यात्मिक अनुभूति होगी तथा भूत प्रेतादि अनिष्ट विद्या सताती हो तो यही भस्मी जल में प्राशन करें और उपरोक्त शुभ दिन तथा उपरोक्त (पृष्ठ सं० १०३ के अनुसार) विधि कर ७ मिस्त्र मिठाई सवा किलो कच्चा या पक्का रोट का भोग लगावें उद, गुग्गल धूप दीप से पूजन एवं गुरु मन्त्र से जप करे बाहरी बाधा अनिष्ट संकट टल जायेगा। विशेषतः यन्त्र के मन्त्रों से

हवन करें तो शीघ्र प्रभाव पड़ेगा।

८. यह यन्त्र मठ मन्दिर आश्रमों दर्गा-दरबार में तथा घर के पूजा स्थान में, दुकान, गाड़ी-वाहनों में, चलते-फिरते व्यवसाय में शुद्ध स्थान, शुद्ध स्वरूप में रखें अवश्य लाभ होगा।

९. कोर्ट-कचहरी कार्य, किसी से महत्वपूर्ण कार्य बातचीत, चर्चा हो, सम्मेलन, स्पर्धा, सत्संग, लेन-देन व्यवहार तथा सम्बन्धी संवाद तथा स्कूल-कालेज के विद्या अभ्यास में यह यन्त्र अपने जेब में या बैग में रख सकते हैं। अवश्य कार्य फल-लाभ देगा।

१०. अगर कोई जटिल समस्या या प्रश्न हो जिसका कोई हल नहीं है तो रात्री सोने से पूर्व इस यन्त्र को वह समस्या का (हल) जबाब पूछकर एवं प्रार्थना कर अपने सिरहाने में रखकर सोयें रात्री में स्वप्न या दृष्टान्त में वह जरुर जबाब देगा इसमें कम से कम ७ या ९ दिन (रात्री) का अवकाश होगा।

११. अगर कोई बीमार हो तो इस यन्त्र के अभिषेक का जल या पंचामृत उन्हें पीने को दो बीमारी ७ से ९ दिन में ठीक हो जायेगी।

१२. घर में कलह, अशान्ति हो तो यन्त्र मन्त्रों से (विशेषतः शनिवार को) अभिषेक कर शान्ति हवन करें तो शान्ति अवश्य होगी।

१३. समृद्धि के लिये घी या पायस (खीर) से अभिषेक, हवन करके सबको प्रसाद रूप में खाने में दो समृद्धि आयेगी।

१४. शुभ मंगल कार्यों में अत्तर या गुलाब जल का उपयोग करें।

१५. यन्त्र हमेशा सुरक्षित एवं पवित्र स्थान में रखें।

१६. मांस-मछली, मीट, शराब पूर्ण निषेध है तथा यन्त्र उपलक्ष में कोई भी अनुचित कार्य या अनुचित संकल्प ना करें। कूटनीति, कपट, संशय नहीं करे अन्यथा यन्त्र अनुचित कार्य करेगा।

सूचना–श्री नाथ सिद्ध यन्त्र ताम्र तथा ताम्र के ऊपर चाँदी लेपन किये हुये छोटे-बड़े आकार में बने बनाये और समयानुकूल मूहुर्त में विधि विधान से सिद्ध किये हुये प्राप्त कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान-

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार

विशेष–उपरोक्त विनियोग नाथ सिद्ध एवं भक्त अनुयायिओं के अनुभव उपरान्त इस द्वितीय संस्करण में विश्लेषण दे रहे हैं।

इति शुभम्

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

पुस्तक प्राप्ति स्थान-

[redacted]

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड) फोन : 01334-226583
website : www.yogigorakshnath.org e-mail : media@yogigorakshnath.org

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह० जिला-रोहतक (हरियाणा)

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

	पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	200/-
2.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	250/-
3.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	400/-
4.	श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	65/-
5.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
6.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	125/-
7.	श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	35/-
8.	श्री प्राचीन भर्तृहरी गुफा महात्म्य (देश-विदेश के नाथ सिद्धों के तीर्थ स्थलों के पते/ विवरण)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	50/-
9.	श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	6/-
10.	श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	70/-
11.	श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना-साधना)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	50/-
12.	श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
13.	श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके (गुरु योगी विलासनाथ जी पुजारी)	महावीर सैनी	150/-
14.	योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	30/-
15.	गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	15/-
16.	श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
17.	शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	10/-
18.	गुरु गोरक्षनाथ शब्दावली (भजन)	महन्त सेवानाथ जी	15/-
19.	अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	10/-
20.	भर्तृहरि निर्वेदनाटकम्	महाकवि हरिहर रचित	5/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
21. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	70/-
22. सिद्ध प्रयोग चिकित्सा	योगी वीरनाथ जी	8/-
23. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	20/-
24. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
25. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	15/-
26. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
27. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
28. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
29. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
30. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
31. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
32. गोरखबाणी	रामलाल श्रीवास्तव	50/-
33. गोरख चरित्र	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
34. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी)	अक्षय कुमार बेनर्जी	90/-
35 गोरख दर्शन	विजय पाल	50/-
36. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
37. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य	डा. दिवाकर पाण्डेय	40/-
38. आदर्श योगी	अक्षय कुमार बेनर्जी	25/-
39. योगासन	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
40. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
41.गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह	रामलाल श्रीवास्तव	40/-
42. हटयोग प्रदीपिका	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
43. योग बीज	रामलाल श्रीवास्तव	15/-
44. नाथ योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	15/-
45. अमनस्क योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	20/-
46. गोरक्ष पद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
47. गोरक्ष शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
48. वैराग्य शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
49. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत	वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी	20/-
50. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)	योगी आदित्यनाथ	20/-
51. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)	मनोहर द्विवेदी	15/-
52. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
53. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
54. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)	गोरखनाथ मन्दिर	40/-
55. योगवाणी (शिव संहिता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
56. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
57. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
58. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
59. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
60. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
61. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
62. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
63. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
64. योगवाणी (विशेषांक 1994)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र

(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3×3 इंच	50/-	60/-
5×5 इंच	70/-	80/-
7×7 इंच	90/-	110/-
9×9 इंच	300/-	325/-
12×12 इंच	425/-	450/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P / C = 5 " X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB / C = 10 " X 5"	25/-	-
बड़ा फोटो B,B,B / C = 10 " X 8 "	35/-	

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD VCD
अमृतांजलि (भाग-1) गोरक्ष चालीसा, भजन इत्यादि	गायक-सोमनाथ शर्मा	35/-	50/-
अमृतांजलि (भाग-2) चौरासी सिद्ध चालीसा, भजन इ०	भजन रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्रीनाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)कम्प्यूटर फ्लॉपी	रचना-योगी विलासनाथ	45/-	

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5"X3.5"	3/-	-

यन्त्र- (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	10/-	70/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	10/-	70/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	40/-	300/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक-सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य-नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

विवरण	मूल्य
लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	5/-, 10/-, 15/-, 20/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट	10/-, 15/-, 20/-, 30/-
(नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	10/-, 20/-, 25/-, 40/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में छोटे, बड़े	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के	1500/-, 1800/-
आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ (धातु में)

नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9 "	2 Kg	1100/-	800/-
2. गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6 "	1 Kg.	800/-	700/-
3 आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10 "	1.300gm.	1100/-	800/-
4. आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6 "	600gm.	500/-	
5. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9 "	2 Kg.	1100/-	800/-
6. बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6 "	1 Kg.	800/-	700/-

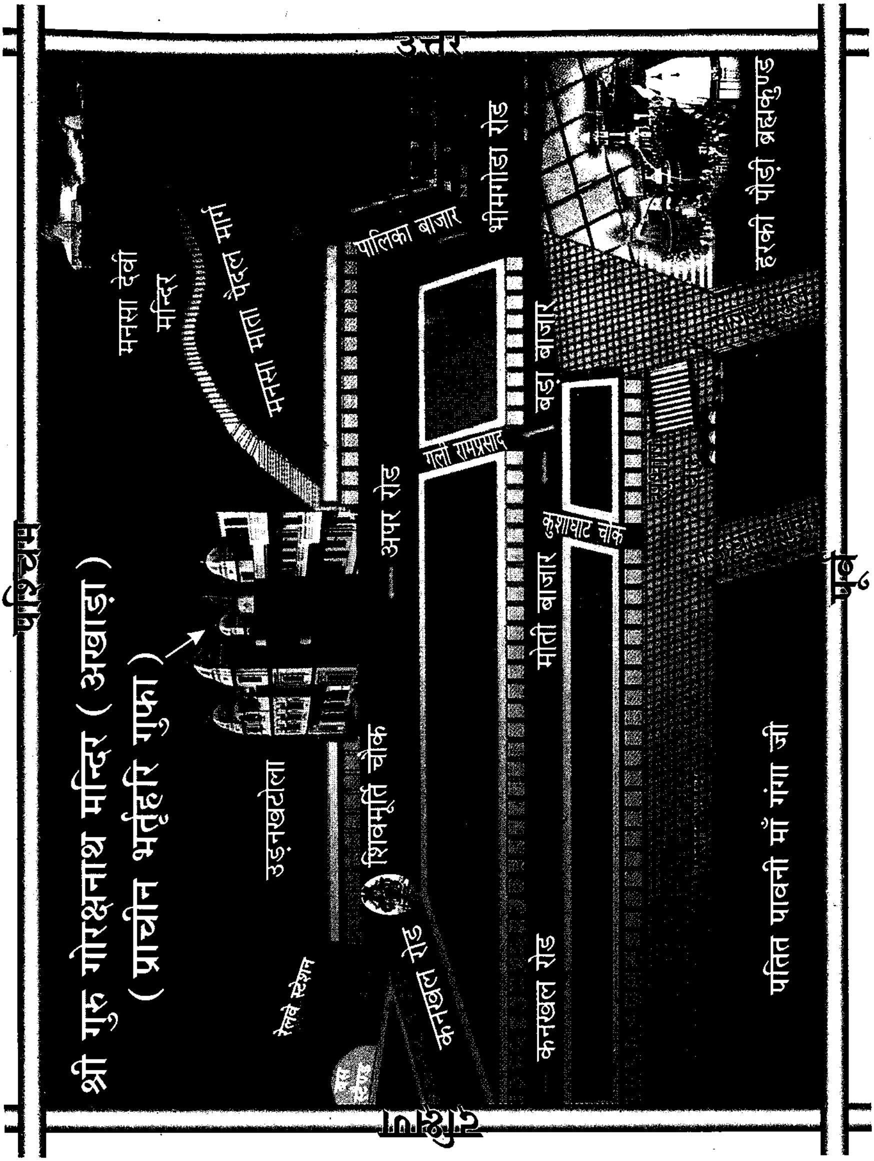
शीशे के फ्रेम, मन्दिर

विवरण	मूल्य
गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	25/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 250/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम D. D. भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा V.P. L ., V.P.P. से भेजा जायेगा।

अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।



पुस्तक प्राप्ति स्थान—

1. श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर

अपर रोड, हरिद्वार फोन : 01334–226583

2. श्री बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक (हरियाणा)





श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

राजा भर्तृहरि नीति, वैराग्य, शृंगार तीनों के रचियता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। उज्जैन मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण करके यहाँ तपस्या की थी। उस समय से यह मन्दिर व गुफा विद्यमान है। हरकी पैड़ी का राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से निर्माण किया था।

नोट–हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

पुस्तक प्राप्ति का स्थान–

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार

मुद्रक–शिव शक्ति प्रिन्टर्स, पालीवाल धर्मशाला, अपर रोड, हरिद्वार